Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी शिक्षण विधि

लेखक
डॉ. रघुनाथ सफाया

पंजाब किताब घर
जालन्धर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी शिक्षण विधि

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No....3478.........
Dated.....2002.......
52 (III)
491.43
Sa17H

डा० रघुनाथ सफाया
एम० ए० (संस्कृत तथा हिन्दी)
पी० एच० डी०, पी० ई० एस०
प्रिंसीपल
राजकीय कालिज ऑफ एजूकेशन
चण्डीगढ़

G.M.C.E.J
3478

पंजाब किताब घर
जालन्धर — देहली — रोहतक

मूल्य : 60-00

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशक

पंजाब किताब घर

माई हीरां गेट, जालन्धर।

फोन : कार्यालय : 281578

घर : 210185

G.M. College of Education
Bantalab
Jammu.
Acc. No. 3113
Dated 20.2

Selling Agents

HARYANA KITAB GHAR

Model Town Rohtak,

Phone : Off. : 42824

Resi. : 42772

Printed at :

Erima Offset & Printers

Dada Building, Near Sodal Railway Crossing,

Jalandhar, Ph. : 291630

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्यारहवें संस्करण की भूमिका

हिन्दी-शिक्षण विधि का ग्यारहवां संस्करण आप के सम्मुख है। दस संस्करण समाप्त हो गए, मुझे इसका परिवर्धित और संशोधन संस्करण निकालने की प्रेरणा मिली। अध्यापकों, प्रशिक्षण-छात्रों और शिक्षाचार्यों ने इस पुस्तक का जितना सम्मान किया मुझे उतनी आशा नहीं थी। देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में इसका विशेष स्वागत हुआ, और प्रशिक्षण विद्यालयों और महाविद्यालयों में अनुशंसित हुई। मैं उन सभी अध्यापकों, विद्वानों और अन्य पाठकों का आभारी हूं, जिन्होंने इसका स्वागत करके मुझे ग्यारहवां परिवर्धित संस्करण प्रस्तुत करने की ओर प्रोत्साहित किया।

तृतिय संस्करण में नवीन अध्याय जोड़े गए थे, और प्रत्येक अध्याय के अन्त में अभ्यासात्मक प्रश्न और सहायक पुस्तकों की सूची दी गई थी। अन्त में परिभाषिक शब्दावली और बृहत् सूची भी दी गई थी।

चतुर्थ सस्करण में कुछ नवीन सामग्री उपस्थित की गई ताकि पुस्तक सामयिक (up-to-date) बन जाए। राजभाषा आयोग की सिफारिशों का विशेष ध्यान रखा गया। केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रकाशित पारिभाषिक शब्दावली का ही अनुसरण किया गया।

वर्तमान ग्यारहवें संस्करण में निम्न प्रकार का संशोधन किया गया :—

1. समस्त पुस्तक की पाठ्य-सामग्री को अध्यायों के अतिरिक्त अनुभागों में विभक्त किया गया है। कुल अनुभाग 200 हैं। अध्यायों के अन्त में दिए गए अभ्यासात्मक प्रश्नों के आगे तत्सम्बन्धी अनुभागों की ओर संकेत किया गया है ताकि छात्र को प्रश्न का उत्तर ढूंढने में सहायता मिले।

2. प्रत्येक अध्याय में कुछ नवीन सामयिक सामग्री जोड़ी गई हैं। ताकि भाषा शिक्षण की कोई भी समस्या ऐसी न रहे जिस पर प्रकाश न डाला गया हो।

3. कई नए अध्याय जोड़े गए हैं, जैसे अध्याय 53 "इतर भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की समस्याएं।" रचना के अध्याय में रचना के अभ्यासों के नमूने दिए गए हैं। देवनागरी लिपि के अध्याय में लिपि का इतिहास और केन्द्रीय सरकार द्वारा लिपि का सुधार भी व्याख्यात है। पाठ-योजना के नए नमूने दिए गए हैं।

4. यत्र-तत्र जहां नई सामग्री जोड़ी गई है, वहां कुछ नई पुस्तकों का हवाला दिया गया है। आवश्यक स्थलों पर नई तालिकाएं भी जोड़ी गई हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुस्तक का कलेवर पहले की अपेक्षा बहुत बढ़ गया है। पुस्तक अधिक अध्यापकों के हाथ लगे, इस अभिप्राय: से पुस्तक का मूल्य कलेवर के अनुपात से कम रखा गया है। कतिपय तालिकाएं और चित्र भी जोड़े हैं। कुल मिला कर 28 तालिकाओं और 16 चित्रों का सामावेश किया गया है।

इस पुस्तक की रचना में देश-विदेश के विद्वानों और दो सौ के लगभग लेखकों की कृतियों (जिस की सूची अन्त में दी गई है) तथा अन्य गवेशणाओं में सहायता प्राप्त की है। मैं उन सभी महानुभावों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट किए बिना नहीं रह सकता। मैं श्री अमींचन्द सूरी मालिक 'पंजाब किताब घर' जालन्धर का बहुत आभारी हूं कि इसके शीघ्र प्रकाशन में योगदान दिया।

मुझे आशा है यह ग्यारहवां संस्करण अध्यापकों और हिन्दी प्रेमियों को पहले संस्करणों की अपेक्षा अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

रघुनाथ सफाया

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कतिपय सम्मतियां

(Opinions of Schools)

1. J. P. Vyas. *M .A. B. T., P. E. S. Professor, Prantiya Shikshan Mahavidyalya*, **Jabalpur.**

The book deals with almost all the varied aspect of Teaching Hindi Infact while Principles of Language learning remain more or less the same, whether it be a mother-tongue or a foreign languge, difference tend to creep in, the details of actual-room procedures. The author has pointedly drawn the attention of the teaching profession to this vital aspect. The chief merit of the book accordingly lies in provoking a Hindi teacher to think about his business. The author has placed before him all possible devices and it is for a discerning teacher to capitalise on the tips given. The book furnishes an excellent hypothesis for further experimentation in Teaching Hindi in the new national content.

2. Dr. Kailash Nath Bhatnagar. *Fromerly Head of Sanskrit Department University Camp College*, **New Delehi.**

I congratulate the author for producing an original books of such an outstanding merit, Though there are several books of this type available, yet this book is a distinct improvement on the old ones. The subject matter is perfect in all respects, has been put in a simple and lucid style intelligible to an average reader.

3. गणेश प्रसाद सिंह हिन्दी प्रोफेसर, गवर्नमेंट सैन्ट्रल पडागाज़िकल इन्स्टिट्यूट इलाहाबाद :—

पुस्तक उपयोगी है और मेरा दृढ़ विश्वास है कि विभिन्न स्तर के छात्राध्यापक इस का प्रयोग अवश्य ही करेंगे ।

4. Dr. L. C. Khurana, *M. A. Ph. D.* **(London)** *P. E. S.* (*Retired*

The book is indeed a marked improvement on his predecessors and I should strongly recommend it to teachers of Hindi at all stages and also all Hindi students in teacher's training colleges for whom it is primary designed.

5. पं० गौरी शंकर एम० ए० डी० लिस्ट (आक्सन) पी० ई० एस (रिटायर्ड,

श्री रघुनाथ सफाया जी ने इस प्रस्तुत पुस्तक में हिन्दी भाषा शिक्षण पद्धति तारतम्य तथा तुलनात्मक रीति से प्रतिपादन करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है जो अध्यापक वर्ग के लिए एक ही जगह बहुत भाषा-सिद्धान्तों का एक समीकरण के रूप में लाभदायक सिद्ध होगा । 38 प्रकरणों में हिन्दी शिक्षण विधि के प्राय: समस्त सिद्धान्तों का सामावेश किया गया है । हिन्दी जनता तथा अध्यापक वृन्द सफाया जी के आभारी हैं कि उन्होंने प्रशिक्षण परिक्षोपयोग पुस्तक लिख कर हिन्दी साहित्य की अभिवृद्धि की है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. Prof Ram Chand Khanna, *M. A. P. E.* S. (*Retired*)

I have gone through हिन्दी शिक्षण विधि by **Dr. R. N Safayn** *M.A. P. E.* S. The author,s clear-cut and lecid presentation of the various aspects of Hindi teaching coupled with his high practical hints for the teachers has made the book an invaluable guide for staff and students of teachers training instituions. I have been deeply impressed by the balanced views of the author and his readable style. I strongly recomend the book to all interested in scientific study of the national language.

7. Education Lucknow—

The table of contents will show the comprehensive dealing that has been made by the author in the work. The book fills a long-felt need for so for there have been very few comprehensive book on the teaching of Hindi which has now rasied to the status of the federal language. The book fills that need and as such will surely be welcome to training college students specialising in Hindi and to language teachers in general.

8. Educational Forum Central Institute of Education, Delhi.

The book is exhaustively written for pupil-teachers offering Hindi as one of the teaching subjects It serves an important purpose in the sense that there are only a few books written in Hindi for the teaching of this common language, now a Subject of growing interest.

It seems that the writer is fully aware of the various problems regarding language and its teaching in the school all over India and he has made apprecible effort in this conscientionn by suggesting solutions and treating the suject-matter conscientiously rather than emotionally. He also seems to be well conversant with the multifarious duties of a language teacher, to arouse enthusiaism for creative work to provide incentive for developing cirtical thinking to develop art of oral and written expression and to train the mind to make use or the linguistic abillity in the day-to-day work and behaviour.

9. Journal of the Mysore State Education Federation.

Shir Raghuuath Safya-is eminentlg qualified on account of his deep scholarship in Hindi and rice experience as a trained teacher to deal diffeult Subject——Principles of teaching Hindi. The book is addresed to Hindi teachers and students in training college taking Hindi as special subject. The approach to the subject is a departure from the traditional one, the author. having in view the moost recent thoughts on the subject, viz. Methods of Teaching Indian Languages. —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय तालिका

पहला खण्ड

(साध्य तथा सिद्धान्त)

अध्याय 1. भाषा शिक्षण, महत्त्व तथा उद्देश्य

अनुभाग	पृष्ठ
1. भाषा किसे कहते हैं ?	1
2. भाषा के आधार	6
3. भाषा की प्रकृति	6
4. भाषा के विविध रूप	7
5. भाषा का महत्त्व	9
6. भाषा शिक्षण के उद्देश्य	14
7. (क) भाषा क्यों पढ़ाई जाए ?	16
(ख) भाषा के सम्बन्ध में गलत धारणाएं	16

अध्याय 2 हिन्दी शिक्षण, महत्त्व तथा उद्देश्य

अनुभाग	पृष्ठ
8. हिन्दी की वर्तमान अवस्था	18
9. भारतीय भाषाओं में हिन्दी का स्थान	19
10. संसार की भाषाओं में हिन्दी का स्थान	21
11. हिन्दी के तीन रूप	22
12. हिन्दी की महत्ता	27
13. अन्य भाषा तथा राष्टभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की महत्ता	24
14. हिन्दी की शिक्षा के उद्देश्य	30
15. त्रिभाषा सूत्र और हिन्दी	43
16. राष्ट्र भाषा के रूप में	44

अध्याय 3. हिन्दी भाषा की उत्पत्ति और विकास

अनुभाग	पृष्ठ
17. भारत-यूरोपीय भाषा	49
18. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल	
19. मध्यकालीन भारतीय आर्य	50
भाषा काल	50
20. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल	51
21. हिन्दी शब्द समूह	52

अध्याय 4. शिक्षा का माध्यम

अनुभाग	पृष्ठ
22. समस्या का महत्त्व	56
23. शिक्षा का माध्यम ...	56
24. प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा का माध्यम हों	58
25. हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम हो	60
26. हिन्दी को माध्यम बनाने से लाभ	63

अध्याय 5. भाषा शिक्षण का मनोवैज्ञानिक आधार

अनुभाग	पृष्ठ
27. भाषा के दो आधार	65
28. भाषा और मानसिक विकास	66
29. कुछ मनोवैज्ञानिक तथ्य	71

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय 6. भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धांत

अनुभाग	पृष्ठ
30. (क) भाषा शिक्षण में सिद्धान्तों की आवश्यकता	73
(ख) स्वाभाविक प्रवृत्ति	74
31. स्वाभाविक विधि	76
32. क्रियाशीलन और अभ्यास	77
33. बोल-चाल का सिद्धान्त	78
34. अनुपात और क्रम	79
35. बहुमुखी प्रयास	80
36. वैयक्तिक विभिन्नता	81
37. रुचि या प्रेरणा	81
38. सिद्धान्त-सूत्र	83

दूसरा खण्ड

भाषा शिक्षण के साधन

अध्याय 7. हिन्दी भाषा का अध्यापक

39 वर्तमान अवस्था	86
40. हिन्दी शिक्षक के गुण	86
41. हिन्दी शिक्षक का कर्त्तव्य	90
42. वर्तमान अवस्था को सुधारने के उपाय	91
43. हिन्दी शिक्षकों की कठिनाइयां	93

अध्याय 8. भाषा शिक्षण के विभिन्न साधन

44. विभिन्न साधन	95

अध्याय 9. पाठ्य पुस्तक

अनुभाग	पृष्ठ
45. महत्त्व तथा प्रकार	102
46. पाठ्य पुस्तकों के आवश्यक गुण	103
47. उचित विषय	103
48. उपयुक्त भाषा और शैली	107
49. पाठों का क्रम तथा परिणाम	109
50. व्याख्या, टिप्पणी तथा अभ्यास	110
51. छपाई	111
52. प्रकाशन तथा सम्पादन	112
53. सहायक पुस्तक	113

अध्याय 10 हिन्दी शिक्षण और पुस्तकालय

54. आवश्यकता और महत्ता	115
55. पुस्तकालय की सामग्री	115

अध्याय 11. दृश्य-श्रव्य साधन

56. महत्ता और आवश्यकता	119
57. प्रयोग में सावधानी	120
58. वर्गीकरण	121
59 प्रयोग	121
60. विभिन्न अंगों के लिए उपकरण	125

तीसरा खण्ड शिक्षण विधियां

अध्याय 12. बोल-चाल की शिक्षा

61. दैनिक जीवन में बोल-चाल का महत्व	129
62. भाषा की शिक्षा में बोल-चाल का महत्त्व	130
63. बोल-चाल की शिक्षा के उद्देश्य	131
64. बोल-चाल के गुण	131
65. बोल-चाल के आधार	132
66. प्रारम्भिक अवस्था के साधन	136
67. उत्तरावस्था के साधन	140
68. बोलचाल की भौतिक त्रुटियां	145

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुराग पृष्ठ

अध्याय 13. उच्चारण की शिक्षा

69. महत्त्व 150
70. उच्चारण दोष के कारण 152
71. उच्चारण दोष के प्रकार 153
72. उच्चारण दोष के सुधार के उपाय 155
72. (क) उच्चारण के सम्बन्ध में निर्देश 163

अध्याय 14. वाचन की शिक्षा

73. वाचन क्या है ? 168
74. वाचन का महत्त्व 170
75. वाचन की प्रक्रिया 170
76. वाचन की अवस्थाएं 173
77. वाचन शिक्षण के उद्देश्य 174
78. वाचन पर प्रभाव डालने वाले तत्त्व 175
79. वाचन शिक्षण के साधन 175
80. वाचन सिखाने का क्रम 176
81. प्रथम अवस्था— तैयारी 176
82. द्वितीय अवस्था-अक्षर ज्ञान 177
83. तृतीय अवस्था—स्वतन्त्र पढ़ने का अभ्यास 185
84. चतुर्थ अवस्था—अर्थ सहित अध्ययन 186
85. वाचन में मन्दता 187

अध्याय 15. देवनागरी लिपि

86. लिपि का विकास 191
87. देवनागरी का उद्भव 192
88. देवनागरी की विशेषताएं 195
89. देवनागरी के दोष 196
90. देवनागरी में सुधार 197

अनुराग पृष्ठ

91. शिक्षा मन्त्रालय द्वारा स्वीकृत सुधार 199
92. देवनागरी लिपि द्वारा सामान्यीकरण 200

अध्याय 16. लिपि की शिक्षा

93. लिपि की शिक्षा का महत्त्व 203
94. लिपि शिक्षण की अवस्थाएं 204
95. प्रथम अवस्था, लिखने की तैयारी 204
96. द्वितीय अवस्था – अक्षर रचना 205
97. अक्षर रचना की सुन्दरता के साधन 209
98. तृतीय अवस्था, वाक्य रचना 210
99. लिपि संशोधन 212
100. चतुर्थ अवस्था, आदर्श लिपि 214
101. लिपि की शिक्षा के सम्बन्ध में शंकाएं 214
102. लिपि की शिक्षा की व्यवस्था 214
103. सुन्दर लिपि के गुण 215
124. लिपि शिक्षण की वर्तमान अवस्था 217

अध्याय 16. अक्षर विन्यास की शिक्षा

105. अशुद्धियों के कारण 219
106. अशुद्धियों के आधार 219
107. हिन्दी अक्षर विन्यास की मानव पद्धति 224
108. अशुद्धियां दूर करने के उपाय 22[illegible]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय 18. गद्य पाठ की शिक्षा

अनुभाग		पृष्ठ
109.	पाठ्य-पुस्तकों में गद्य का स्थान	229
110.	वाचन	231
111.	व्याख्या	233
112.	विचार-विश्लेषण	243

अध्याय 19. कविता का स्वरूप

113.	कविता क्या है ?	246
114.	कविता का प्रयोजन	247
115.	कविता की शिक्षा के उद्देश्य	249
116.	कविताओं के प्रकार	250

अध्याय 20. कविता की शिक्षा के अंग

117.	वाचन	253
118.	शब्दार्थ की व्याख्या	255
119.	भाव-विश्लेषण तथा समीक्षा	256

अध्याय 21. कविता शिक्षण प्रणालियां

120.	गीत तथा नाट्य प्रणाली	260
121.	शब्दार्थ-कथन प्रणाली	261
122.	प्रश्नोत्तर या खण्डान्वय प्रणाली	263
123.	व्याख्या प्रणाली	263
124.	कविता पाठ मे ध्यान देने योग्य बातें	267
125	अभिरुचि बढ़ाने के साधन	268

अध्याय 22. नाटक की शिक्षा

126.	नाटक किसे कहते हैं	272
127.	नाटक के उद्देश्य	272
128.	नाटक शिक्षण प्रणाली	273

अध्याय 23. सहायक पुस्तकें तथा द्रुत पाठ

अनुभाग		पृष्ठ
129.	सहायक पुस्तकों का स्थान	277
130.	द्रुतपाठ का महत्त्व तथा उद्देश्य	277
131.	सहायक पुस्तकों के आवश्यक गुण	278
132.	सहायक पुस्तकों के विषय	279
133.	द्रुतपाठ की शिक्षण विधि	279
134.	द्रुतपाठ की जांच	281
135.	स्वाध्याय की आदत डालने के उपाय	281

अध्याय 24. व्याकरण का स्वरूप

136.	ऐतिहासिक दृष्टिकोण	284
137.	व्याकरण की आवश्यकता	285
139	व्याकरण की न्यूनताएं	287
140.	भाषा शिक्षा में व्याकरण का स्थान	288

अध्याय 25 व्याकरण की शिक्षण प्रणालियां

141.	अव्याकृतिक प्रणाली	291
142.	प्रयोग प्रणाली	291
143.	सहयोग प्रणाली	293
144.	पाठ्यपुस्तक प्रणाली	293
145.	सूत्रप्रणाली	294
146.	व्याकरण की शिक्षा प्रणालियों का क्रम	295
147.	अन्य ज्ञातव्य बातें	295

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्याय 26. प्रयोगात्मक व्याकरण

अनुभाग	पृष्ठ
148 प्रयोगात्मक व्याकरण क्या है	298
149. अशुद्धियों के प्रकार	298
150. प्रयोगात्मक व्याकरण के अंग	307
151. प्रयोगात्मक व्याकरण की शिक्षण विधि	308

अध्याय 27. रचना स्वरूप तथा उसके प्रकार

152. रचना क्या है ?	310
153. लिखित रचना के उद्देश्य	310
154. लिखित रचना के विशेष गुण	311
155. लिखित रचना के साधन	311
156. सुन्दर रचना के गुण	312
157. उच्च कक्षाओं की रचना की विभिन्न शैलियां	313
158. रचना शिक्षण की प्रक्रिया	313
159. रचना के विषय	314
160. प्रारम्भिक कक्षाओं में रचना के विषय	314
161. माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में रचना के विषय	315

अध्याय 28. रचना शिक्षण प्रणालियां

162. विभिन्न प्रणालियां	317
163. निबन्ध लिखने की प्रक्रिया	318
164. रचना की शिक्षा में ध्यान देने योग्य बातें	319
165. लेख का संशोधन	321
166. संशोधन कार्य को सरल बनाने के उपाय	322
167. रचना की सामान्य त्रुटियां	322
अनुभाग	पृष्ठ
168. संशोधन की विधि	323
169. लिखाई की मन्दता	324
170. अभ्यासों के नमूने	325

अध्याय 29. मातृ-भाषा का हिन्दी शिक्षण में स्थान

171. मातृभाषा की आवश्यकता	335
172. मातृभाषा का भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रयोग	336

अध्याय 30. नवीन शिक्षण पद्धतियां और भाषा शिक्षण

173. भूमिका	341
174. शिक्षा में नवीन सिद्धान्त	342
175. मोंटेसोरी पद्धति	343
176. बालोद्यान पद्धति	344
177. डाल्टन पद्धति	345
178. प्रोजैक्ट पद्धति	347
179 खेल पद्धति	350

अध्याय 31. समवाय प्रणाली

180. समवाय की परिभाषा	353
181. समवाय के उदाहरण	354
182. समवाय शैक्षणिक प्रक्रिया की पराकाष्टा है	355
183. समवाय का व्यापक रूप	358
184. भाषा शिक्षण में समवाय का रूप	358
185. समवाय की आवश्यकताएं	359
186. समवाय के अवसर	360
187. समवाय के केन्द्र	363

चौथा खण्ड : व्यवस्था

अध्याय 32. परीक्षा तथा मूल्यांकन

188. सामान्य परीक्षाएं गुण-दोष	365

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुभाग	पृष्ठ
189. वर्तमान परीक्षाओं की न्यूनताएं	366
190. परीक्षाओं में वांछित सुधार	367
191. हिन्दी परीक्षा की व्यवस्था	368
192. परीक्षा के विविध प्रकारों का भाषा में प्रयोग	372
193. प्रश्न-पत्र रचना के सोपान	375
अध्याय 33. इतर भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की समस्याएं	
194. समस्याएं	380
अध्याय 34. हिन्दी शिक्षण में प्रयोग तथा शोध	
195. शोध कार्य की आवश्यकता	389
हिन्दी में शोध कार्य की आवश्यकता	390
196. हिन्दी शिक्षण में अनुसंधान के क्षेत्र	391
197. अनुसंधान की विधियां	392
अध्याय 35. पाठ योजना	
198. सामान्य परिचय	395
199. पाठ योजना की रूप रेखा	396
200. योजना का उचित प्रयोग	401
अध्याय 36. पाठ-योजना के नमूने	
पाठ-योजना 1. श्रुत लेख	403
,, 2. गद्य	404
,, 3. निबन्ध	4.5
,, 4. हिन्दी कहावतें	410
,, 5. हिन्दी पद्य	414
,, 6. हिन्दी व्याकरण	420
,, 7. हिन्दी (एकांकी नाटक)	426
,, 8. हिन्दी मुहावरे	432
,, 9. हिन्दी गद्य पाठ	440
परिशिष्ठ 1. नवीन वस्तुगत प्रश्न-पत्र	448
,, 2. पारिभाषिक शब्दावली	451
परिशिष्ट 3. पुस्तक सूची	
(क) अंग्रेज़ी पुस्तकें	455
(ख) हिन्दी पुस्तकें	462
(ग) प्रतिवेदन पुस्तक	463
(घ) पत्रिकाएं	464

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालिकाओं की सूची

तालिका		पृष्ठ
1.	भाषा के दो रूप	5
2.	भाषा-योग्यता के रूप	15
3.	प्रादेशिक भाषाएं	21
4.	हिन्दी भाषी जनसंख्या	23
5.	भाषा शिक्षण के उद्देश्य	32
6.	इतर भाषा के रूप में हिन्दी का स्तर	47
7.	भारत-योरोपीय भाषा-परिवार	53
8.	हिन्दी का उद्गम	54
9.	शब्दावली का विकास	68
10	मानसिक विकास और भाषा विकास	68
11.	भाषा शिक्षण पर प्रभाव डालने वाले तत्त्व	71
12.	पाठ्य पुस्तक के गुण	103
13.	बोल-चाल के आधार	136
14.	अभिव्यक्ति के साधन	147
15.	जिह्वा और मुंह की स्थिति के अनुसार स्तर	165
16.	ध्वनियों का वर्गीकरण	165
17.	अक्षर-ज्ञान की विधियां	185
18.	देवनागरी का उद्भव	195
19.	वर्णों के पुराने तथा नए रूप	199
20.	पाठों के प्रकार	229
21.	शब्दों के प्रकार	231
22.	शब्दों की व्याख्या	241
23.	काव्य सौंदर्य के अंग	259
24.	कविता शिक्षण प्रणालियां	267
25.	व्याकरण शिक्षण प्रणालियां	290
26.	मूल्यांकन के साधन	375
27.	उद्देश्यानुसार अंकविभाजन	375
28.	प्रश्न पत्र रूपरेखा	376

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्रों की सूची

चित्र		पृष्ठ
1.	भाषाओं का कोटिक्रम	10
2.	शब्दावली की वृद्धि का ग्राफ	18
3.	भाषा शिक्षण अधिगम त्रिकोण	73
4.	अनुभव का शंकु	120
5.	अनुतान	159
6.	ध्वनियन्त्र तथा उच्चारण स्थान	161
7.	जिह्वा और मुंह की स्थिति के अनुसार स्वरों का विभाजन	163
8.	वाचन-प्रक्रिया	169
9.	दृष्टि विरामों की संख्या	171
10	दृष्टिकेन्द्र और दृष्टि विराम	172
11.	ब्राह्मी लिपि का विकास	194
12.	सरल रेखाओं के नमूने	207
13.	अक्षर विन्यास के चित्र	227
14.	अर्थ क्षेत्र	238
15.	संशोधन चिन्ह	333
16.	मूल्यांकन कोण	365

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा-शिक्षण

पहला-खण्ड

साध्य तथा सिद्धान्त

(Aims and Principles)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1

भाषा शिक्षण : महत्त्व तथा उद्देश्य

§ 1. भाषा किसे कहते हैं

संसार में जितनी भी वस्तुएं हैं, वे या तो परमात्मा निर्मित हैं या मानव-निर्मित। पृथ्वी, वायु, जल, आकाश और सूर्य, चांद, तारे, पर्वत, समुद्र, जंगल और सभी प्राकृतिक वस्तुएं परमात्मा निर्मित हैं। लेकिन मकान, सड़कें, पुल, रेलवे लाईन, नगर, फैक्ट्रियां, संस्थाएं आदि असंख्य वस्तुएं मानव-निर्मित है। मानव परमात्मा का ही प्रतिबिम्ब है, इसलिए मानव में भी निर्माण की शक्ति पाई जाती है। परमात्मा की सृजनात्मक शक्ति (Creative power) असीम है, परन्तु मानव में भी सृजनात्मक शक्ति हैं यद्यपि वह सीमित है। इस शक्ति का वह जितना विस्तार करता है, उतना ही उसकी सभ्यता का विकास होता जाता है। आज का मानव प्राचीनकाल के मानव की अपेक्षा अधिक सभ्य है। वास्तव में देखा जाए, सभ्यता का स्रोत ज्ञान है। मानव का ज्ञान जितना बढ़ता जाता है, उतना ही वह अधिक सभ्य बनता जाता है। यदि पूछा जाए कि ज्ञान का प्रमुख साधन क्या है तो इसका उत्तर है कि ज्ञान का प्रमुख साधन भाषा है। यदि भाषा न होती तो मानव का संसार पशु-पक्षियों तथा गूंगों का संसार होता और उनकी सभ्यता पशुओं की सभ्यता से भिन्न न होती। इसलिए कहा गया है कि भाषा का इतिहास मानव जाति की सभ्यता का इतिहास है।[1] वेदों में लिखा है कि यदि भाषा का प्रकाश न होता तो मानव का संसार अन्धकारपूर्ण होता, अथवा हर तरफ अविद्या और अज्ञान का अन्धकार ही अन्धकार होता[2]। एक पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिक की उक्ति है कि भाषा संस्कृति का सर्वस्व है (Language is the

1. "The Story of language is the story of civilization."

—Mario A. Pei

2. इदमन्धतमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम् यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरात्संसार न दीप्यते।

– काव्हदर्श 1. 4.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

flesh and blood of culture.) तात्पर्य यह है कि भाषा ऐसी वस्तु है जिसके सहारे हम सभ्य बने हैं। अब प्रश्न पैदा होता है कि भाषा है क्या ? इस पर भी थोड़ा-सा विचार करते हैं : –

भाषा के दो अर्थ

'भाषा' शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है—1. व्यापक रूप में और 2. संकुचित रूप में :

1. **व्यापक रूप में**—मानव सामाजिक प्राणी है, अत: उसे अपने समाज के सदस्यों के साथ विचारों और भावों का आदान-प्रदान करना पड़ता है। व्यापक रूप में 'भाषा' उन सभी साधनों को कहते हैं जो मानव समाज में विचार-विनिमय के लिए प्रयुक्त होते हैं। यह विचार-विनिमय कभी सिर हिलाने से ही होता है, कभी हाथ के और आँख के इशारे से, कभी चुटकी बजाने से, कभी गहरी सांस लेने से, कभी उंगली दबाने से, कभी झंडियां दिखाने से अथवा सीटी बजाने से (जैसे स्काऊट लोग करते हैं) और कभी ध्वनि समूहों से।

2. **संकुचित रूप में**—व्यापक रूप में विचार-विनिमय के इन सभी साधनों को भाषा कहते हैं, परन्तु साधारणतया भाषा का इतना विस्तृत अर्थ नहीं। उपर्युक्त साधनों में ध्वनि समूहों को छोड़ कर शेष सभी साधन पशुओं, बहरों, गूंगों तथा असभ्य जातियों अथवा आदिवासियों में प्रयुक्त होते हैं। सभ्य जातियों में बोली जाने वाली ध्वनियों से और इन ध्वनियों के प्रतिनिधि लिपि अक्षरों से काम लिया जाता है। भाषा प्रधानतया इन्हीं ध्वनि समूहों को कहते हैं, जिनकी सहायता से मानव अपने भाव विचार को प्रकट करता है।

भाषा की परिभाषा—

पतंजलि मुनि के अनुसार भाषा वह व्यापार है जिससे हम वर्णनात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।[1]

भाषावैज्ञानिक स्वीट महोदय (Sweet) के अनुसार भाषा ध्वनियों द्वारा मानव के भावों की अभिव्यक्ति है।[2]

एक भाषा वैज्ञानिक इस परिभाषा का थोड़ा-सा परिष्कार करके भाषा की परिभाषा निम्न रीति से देते है : --

"भाषा मानव मस्तिष्क और हृदय की चेरी बनती हुई ध्वनि रूप में या लिपि रूप मे विचारों और भावों की अभिव्यक्ति है।[3] आटो जस्परसन (Otto Jesperson) के

1. "व्यक्ता वाचि वर्णा येषां त इमे व्यक्तवाच"—(महाभाष्य 1/3/48)
2. Language is the expression or thought by speeth sound—Sweet.
3. A language is the vocal or written expression of thought emotion, constituting itself, as it does the hand maid of the intellect and the heart.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुसार भाषा ऐसी मानवीय वृत्तियों का समूह है जिसका उद्देश्य है भाषा और विचारों की अभिव्यक्ति तथा दूसरों तक प्रसार ।[1]

भाषा के दो रूप—

निश्चय ही भाषा का ध्वनि रूप प्रधान है और लिपि रूप गौण । परन्तु व्यवहार की दृष्टि से देखा गया है कि आजकल के वैज्ञानिक तथा सभ्य जगत में ध्वनिरूप उतना ही प्रधान नहीं, जितना कि लिपी-रूप । ध्वनि रूप तब आता है जब हम एक-दूसरे से वार्तालाप करते हैं, भाषण देते हैं, पढ़ाते हैं, किसी सभा में अपने विचार प्रकट करते हैं, प्रश्न पूछते हैं या प्रश्नों का उत्तर देते हैं और प्रतिदिन के छोटे-मोटे कामों में एक-दूसरे के साथ बोलते हैं ।

परन्तु कार्यालयों में दूर-दूर के व्यापारियों के साथ व्यापार करने में, शिक्षा देने में और न्यायालय में भाषा की लिपी रूप की आवश्यकता है । ध्वनि-रूप तभी काम आ सकता है जब बोलने वाला और सुनने वाला आमने-सामने हों । परन्तु जब हम अपने विचारों को उनके सामने व्यक्त करना चाहते हैं, जो हम से दूर हों या अलग-अलग स्थानों पर बैठे हों, तो ध्वनि रूप काम नहीं आ सकता । वहां हमें अपने विचार भेजने होंगे । एक लेखक अपने विचार लिखता है, पुस्तक के रूप में प्रकाशित करता है । तो असंख्य व्यक्ति उसके विचारों को पढ़ते हैं । इस प्रकार विचार-विनिमय का काम लिपी-रूप भाषा से सुगम बन गया है । निम्न तालिका से यह स्पष्ट है :—

तालिका 1 भाषा के दो रूप

भाव-विचार
↓
ध्वनि
↓
लिपि
↓

↓	↓
भाषा का ध्वनि रूप	भाषा का लिपि रूप
जैसे	जैसे
बोल चाल	पत्र व्यवहार
सम्भाषण	लेखा
भाषण	पुस्तक रचना
टैलीफोन पर बात-चीत	शिला लेख
टेप	

1. Language is a set of human habits, the purpose of which is to give expression to thoughts and feelings and especially to impart them to others.
—Otto Jesperson.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 2. भाषा के आधार

ऊपर कहा गया है कि भाषा विचारों को व्यक्त करने का व्यापार है। लेकिन ये विचार कहाँ पैदा होते हैं, ये विचार मन में पैदा होते हैं। हमारे मन में सोचने की शक्ति न होती तो भाषा का नाम भी न होता। एक पशु बहुत कम सोच सकता है, इसलिए वह भाषा-हीन है। इन विचारों को हम व्यक्त कैसे करते हैं? हम बोलते है, बोलने में हमारे मुख के अंग काम आते हैं। यदि हमारी जुबान में बोलने की शक्ति न होती तब भी हम भाषा का प्रयोग न कर सकते। इस प्रकार भाषा के लिए कई आवश्यक साधन हैं, जिनके बिना भाषा का अस्तित्व असम्भव है। इन साधनों को हम 'आधार' कहते हैं।

भाषा के दो आधार हैं :—1. मानसिक आधार (Mental basis) 2. भौतिक आधार (Physical basis)।

1. **मानसिक आधार**—मानसिक आधार में दो बातें आती हैं। प्रथम वे विचार जो मन में उत्पन्न होते हैं और जिनके बिना भाषा का कोई अस्तित्व ही नहीं। द्वितीय वह मानसिक क्रिया जिनके द्वारा हम सोचते हैं, सुनते हैं, पढ़ते हैं या लिखते हैं। विचार भाषा की आत्मा है। ध्वनियां विचारों को व्यक्त करने के लिए केवल माध्यम है।

2. **भौतिक आधार**—ध्वनियां भाषा का भौतिक आधार हैं। सुनने वाले और बोलने वाले के कान और मुख भी भौतिक आधार हैं। इनके अतिरिक्त भाषा लिखने वाले हाथ भौतिक आधार हैं। भाषा की शिक्षा के लिए इन दोनों प्रकार के आधारों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

§ 3 भाषा की प्रकृति—

भाषा का भी अपना स्वभाव है, अपनी प्रकृति है। इसके स्वभाव या इसकी प्रकृति के बारे में भाषा वैज्ञानिकों ने कतिपय सिद्धान्तों की व्याख्या की है। तीन प्रमुख सिद्धान्त नीचे व्याख्यात हैं :—

(क) **भाषा अर्जित सम्पत्ति है**—भाषा पैतृक सम्पत्ति नहीं। शिशु अपने माता-पिता से या वातावरण से ही भाषा सीखता है। यदि उसे अनुकूल वातावरण न मिले तो वह गूंगा ही रहेगा वह जिस भाषा के वातावरण में रहेगा वैसी ही भाषा अर्जित करेगा। अर्जन करने का साधन उसका सामान है।

(ख) **भाषा का अर्जन अनुकरण से होता है**—नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के अनुकरण द्वारा ही भाषा सीखती है। शिशु अपने माता-पिता से और बालक के माता-पिता अपने बड़ों, मित्रों तथा शिक्षक से उनकी वाणी का अनुकरण करके भाषा सीखता है, मातृ भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाएं भी अनुकरण द्वारा ही सीखी जाती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ग) भाषा परिवर्तनशील है—अनुकरण में कुछ न कुछ कमी रहती है और इस प्रकार कालांतर में भाषा परिवर्तित रूप धारण करती है। उस पर प्राय: बाह्य प्रभाव भी पड़ता हैं, नए शब्द भी समाविष्ट हो जाते हैं और नित्य-प्रति नया वातावरण भी उपस्थित हो जाता है, जिस कारण से इसका कोई अन्तिम रूप नहीं, वरन् यह प्रवाहिनी नदी के समान बहती ही चली जाती है। किसी भाषा का विकास उसी प्रकार होता है, जिस प्रकार शिशु की भाषा का विकास। किसी जाति की भाषा भी शिशु की भाषा की भान्ति प्रारम्भिक टूटे-फूटे शब्दों से प्रारम्भ होकर कालान्तर में धीरे-धीरे वृद्धि पाकर नई शब्दावली प्राप्त करके विकसित हो जाती है। उसका अर्जन ज्ञान की अपेक्षा बहुत मंद-गति से होता है। भाषा का परिवर्तन बहुत ही मन्द गति से होता है, परन्तु होता अवश्य है।

(घ) भाषा मूलत: मौखिक साधन है—भाषा का प्रारम्भिक रूप मौखिक है। प्राचीन प्राकृएतिहासिक काल में मौखिक रूप में ही प्रस्फुटित हुआ, और मानव की शैशवावस्था में भी मौखिक रूप ही विकसित होता है। भाषा का लिखित रूप सभ्यता और संस्कृति की देन है। अब भी संसार की कई अर्ज-विकसित जातियों की भाषा केवल मौखिक रूप में है। न उनकी कोई लिपि है और न लिखित ही।

(ङ) भाषा चिन्हात्मक (Symbolic) है—भाषा का लिखित रूप चिन्हों (Symbolic) से बनता है। इन चिन्हों को याद रखना और सीखना पड़ता है। 'कमल' एक फूल है, जिसकी आकृति हमें मालूम है। इस फूल का नाम कमल है, जो तीन ध्वनियों के मेल से बनता है। ये ध्वनियां भी एक प्रकार के स्वर-चिन्ह ही हैं, जिनका प्रयोग मौखिक रूप में कमल के लिए होता है। आगे, इन्हीं स्वर चिन्हों को हम लिपि चिन्हों में बदलते हैं और 'कमल' लिखते है। इन लिपि-चिन्हों को जानना पड़ता है और पढ़ते हुए ग्रहण करना पड़ता है कि ये लिपि-चिन्ह किस विचार के लिए प्रयुक्त होते हैं। सक्षेप में भाषा की प्रक्रिया हैं प्रथम विचार, द्वितीय विचार को व्यक्त करने वाले स्वर चिन्ह (sound symbols) और तृतीय, उन स्वर-चिन्हों का प्रतिनिधित्व करने वाले लिपि-चिन्ह (script symbols.)

(च) भाषा सभ्यता की चितेरी है—भाषा अपनी सभ्यता का जिसमें उसका विकास हुआ है, चित्रण करती है और उस सभ्यता से प्रभावित भी होती है। बेन जानसन (Ben Jonson) के अनुसार भाषा समाज का साधन मात्र (instrument of society) है।

§ 4. भाषा के विविध रूप

भाषा के विविध रूपों की विशेषताएं और तदनुसार उनकी पृथक-पृथक शिक्षण-विधियां शिक्षक को जाननी पड़ती हैं। जिस प्रकार की भाषा हो, उसी के अनुसार उसके पढ़ाने के उद्देश्य होंगे। मातृ-भाषा, प्रादेशिक भाषा, राष्ट्र-भाषा, विदेशी भाषा, राज्य-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा आदि के पढ़ाने के ढंग एक-दूसरे से विभिन्न हैं। अत: भाषा के निम्न रूपों की व्याख्या की जाती है—

1. मूल भाषा यह प्राचीन भाषा है, जो कालान्तर में भौगोलिक परिस्थितियों के प्रभाववश विभिन्न शाखाओं में बंट गई और जिन्होंने आधुनिक भाषाओं के किसी वर्ग को जन्म दिया। इस प्रकार मूल-भाषा किसी भाषा-परिवार की आदि जन्मदात्री होती है। उत्तरी भारत की आर्य भाषाओं की मूल-भाषा प्राचीन संस्कृत है। अंग्रेजी, जर्मन, ग्रीक, लैटिन, फारसी और संस्कृत की मूल-भाषा प्राचीन भारत यूरोपीय भाषा (Indo-Europen Languaue) है।

2. मातृ भाषा (Mother Langue)— किसी वर्ग या समुदाय, समाज या प्रान्त की बोली जाने वाली भाषा उनके सदस्यों की मातृ-भाषा है। बच्चा जन्म लेकर अपनी माता से उसी भाषा को ग्रहण करता है। आगे चलकर, घर के भीतर और बाहर, मित्रों में, विद्यालय में, निकटवर्ती समाज में वह इसी भाषा का प्रयोग करता है। माता के समान मातृ-भाषा भी वन्दनीय है। मातृ-भाषा की शिक्षा परमावश्यक है। अधिकतम शिक्षा और ज्ञान मातृ-भाषा द्वारा ही सुलभ और सुगम हो सकता है।

3. प्रादेशिक भाषा (Regional Langue)—यह किसी प्रदेश की, बहुत वर्ग विशेष की, जो उस प्रदेश में रहता है, साधारणतया बोली जाने वाली भाषा है। दूसरे शब्दों में यह उस प्रदेश की मातृ-भाषा है। परन्तु कभी ऐसा भी होता है कि किसी विशाल प्रदेश में एक छोटे समाज की मातृ-भाषा इस प्रदेशिक भाषा से भिन्न होती है। आंध्र प्रदेश की प्रादेशिक भाषा तेलगू है, परन्तु वहां पर बहुत से लोगों की मातृ-भाषा उर्दू है। मध्यप्रदेश की प्रादेशिक भाषा हिन्दी है, परन्तु वहाँ पर लोगों की मातृ-भाषा मराठी है। जहां किसी प्रदेश की समस्त जनता की मातृ-भाषा वही प्रादेशिक भाषा है, वहां शिक्षक को कठिनाई नहीं। परन्तु जहां मातृ-भाषा प्रादेशिक भाषा से भिन्न होती है, वहां शिक्षक को सावधानी से काम करना पड़ता है और दोनों भाषाओं को काम में लाना पड़ता है।

4. बोली (dialect)— एक सीमित क्षेत्र की उपभाषा को बोली कहते हैं जिसके बोलने का उच्चारण एक-सा हो तथा जिसमें शब्द समूह आदि समान हों। पंजाबी एक भाषा है, परन्तु जम्मू में बोली जाने वाली उपभाषा 'डोगर' भाषा नहीं वरन् वह पंजाबी का ही रूप है। अत: वह 'बोली' कही जाएगी। बोली भाषा का एक रूप है। ब्रज हिन्दी की एक बोली है। इस प्रकार एक भाषा के अन्तर्गत विभिन्न बोलियां आ जाती हैं, परन्तु उन बोलियों में विशेष अन्तर नहीं होता। बोली भाषा का वह रूप है जिसका आगे विभाजन नहीं होता।

5. आदर्श भाषा (Standard Language)—कभी एक भाषा-क्षेत्र में जिसमें कई बोलियां हों एक बोली आदर्श मान ली जाती है और वह पूरे क्षेत्र के उच्च वर्ग के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोगों की भाषा हो जाती है। राजकीय कामों में और शिक्षालयों में उसी का प्रयोग होता है। हिन्दी के अन्तर्गत विभिन्न बोलियां आती हैं, परन्तु आदर्श रूप से उनका प्रतिनिधित्व खड़ी बोली ही करती है। आदर्श भाषा का उच्चारण, व्याकरण और शब्दावली, निश्चित हो कर यह प्रयोग में लाई जाती है शिक्षक इसी बोली को आदर्श मानकर शिक्षा देता और तत्काल अपनी बोली या विद्यार्थियों की बोली को (जो आदर्श बोली से भिन्न हो सकती है) गौण स्थान देता है। आदर्श बोली अन्य सभी बोलियों पर अपना प्रभाव डालती है।

6 राष्ट्रभाषा (National Language) - जैसे आदर्श बोली विभिन्न बोलियों में प्रमुख होती है, इसी प्रकार राष्ट्रभाषा देश की विभिन्न भाषाओं में प्रधान होती है। वह अपने क्षेत्र की मातृ-भाषा या प्रादेशिक भाषा तो होती है, परन्तु राजकीय कामों में तथा सार्वजनिक कामों में समस्त देश में प्रयुक्त होने के कारण सारे देश की राष्ट्रभाषा बन जाती है। आज हिन्दी को भारतवर्ष में यही गौरव प्राप्त है। वह अपने परिवार के अहिन्दी प्रान्तों (काश्मीर, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल आदि) तथा अन्य भाषा परिवार के प्रान्तों (तमिलनाडू) आदि में भी व्यवहार में लाई जाती है।

7. अन्तर्राष्ट्रीय भाषा (International Language) - विभिन्न देशों, राष्ट्रों और जातियों में राजकीय कामों, व्यापार, संचार आदि में प्रयुक्त होने वाली सर्वसाधारण भाषा, किसी एक देश की राष्ट्र-भाषा भी होकर बहुत से देशों की अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बन जाती है। आजकल अंग्रेजी को यह स्थान प्राप्त है। इसकी शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों के लिए, विदेशों से ज्ञानोपलब्धि के लिए तथा विदेशों में सम्पर्क रखने के लिए दी जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय भाषा की शिक्षा इन्हीं उद्देश्यों को दृष्टि में रख कर दी जाती है।

8 सांस्कृतिक भाषा (Cultural Language) - यह भाषा किसी जाति की सभ्यता और संस्कृति, ज्ञान और कला, आचार तथा विचार का प्रतिनिधित्व करती है। उस जाति या देश का समस्त ज्ञान भण्डार ऐसी एक प्रचीन सांस्कृतिक भाषा में होता है। भारत की सांस्कृतिक भाषा संस्कृत है और यूरोप की लैटिन और ग्रीक। अपनी संस्कृति, प्राचीन इतिहास, चिरसंचित ज्ञान और जातीय गरिमा से परिचय प्राप्त करने के लिए इसकी शिक्षा प्राप्त की जाती है हमारे देश में संस्कृत भाषा का यद्यपि व्यावहारिक प्रयोग नहीं परन्तु फिर भी इसका सांस्कृतिक महत्त्व अद्वितीय है।

§ भाषा का महत्त्व

मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास में भाषा का इतना हाथ है कि भाव की कहानी को सभ्यता की कहानी कहा जाता है।[1]

---

1. "The story of Language is the story of civilization" Mario A Pei, "the story of language" P. 188

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानव का बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास इस बात पर निर्भर है कि भाषा और इसके साहित्य का प्रयोग विकास के साधन के रूप में किस सीमा तक रहता है। शिक्षा के क्षेत्र में भाषा व्यक्तित्व के विकास में अत्यन्त सहायक है। दैनिक कार्यकलाप में भी भाषा व्यावहारिक योग्यता प्रदान करती है। भाषा-ज्ञान प्रदान करती है, आलौकिक आनन्द का स्रोत बनती है और रचनात्मक भाव-प्रकाशन के लिए अवसर समुपस्थित करती है।

मानव व्यक्तित्व की शक्तिशालीनता भाषा के प्रभावोत्पादक प्रयोग पर ही निर्भर हैं [1] यदि शिक्षा से तात्पर्य है जीवन के लिए तैयारी, तो भाषा उसके लिए एक प्रमुख साधन है। शिक्षा के माध्यम के रूप में यह ज्ञान-विज्ञान के प्रत्येक विषय के क्षेत्र में प्रवेश करती है। यही कारण है कि औपचारिक शिक्षा का एक प्रमुख भाग साधन के रूप से 'भाषा' का ज्ञान प्रदान माना गया है। महात्मा गांधी ने मातृ-भाषा की महत्ता के सम्बन्ध में ठीक कहा है— "मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृ-भाषा उतनी ही जरूरी है जितना कि बच्चे के भौतिक विकास के लिए मां का दूध। शिशु प्रथम पाठ अपनी मां से ही पढ़ता है, इसीलिए उसके बौद्धिक विकास के लिए उसके ऊपर मातृ-भाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा थोपना मैं मातृ-भाषा के विरुद्ध पाप समझता हूं।"

जैसा ऊपर कहा गया है, भाषा के विभिन्न रूप हैं। परन्तु इन सभी रूपों में से मातृ-भाषा मानव व्यक्तित्व पर सबसे अधिक प्रभाव डालती है। प्रभाव और शिक्षा

चित्र 1. भाषाओं का कोटिक्रम

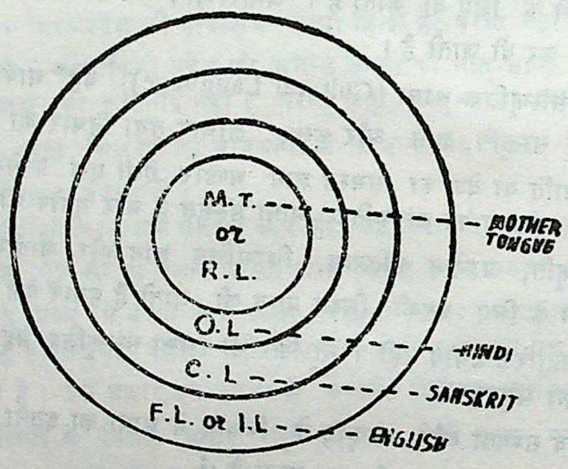

1. "The dynamism of human personality has much to do with effective use of language."

—Joshua Whatmough—"Language a Modern Synthesis." P. 87

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की दृष्टि से भाषाओं का कोटिक्रम निम्न है– मातृ-भाषा, प्रादेशिक भाषा, राष्ट्र भाषा, सांस्कृतिक भाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, वैदेशिक भाषा। हमारे देश में मातृ-भाषा के उपरान्त सांस्कृतिक भाषा संस्कृत की बारी आती है और तदुपरान्त अन्तर्राष्ट्रीय विदेशी भाषा अंग्रेजी की। पृष्ठ 10 पर दिए हुए चित्र से यह कोटिक्रम स्पष्ट है।

संक्षेप में भाषा की निम्न विशेषताएँ हैं जिनके कारण आधुनिक जगत में इसको विशेष महत्त्व प्राप्त है—

(क) भाषा मानव विचार विनिमय का सर्वोत्कृष्ट साधन है।

(ख) भाषा ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है।

(ग) भाषा द्वारा किसी जाति या समाज का ज्ञान सुरक्षित रहता है।

(घ) भाषा राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व की प्रतीक है।

नीचे इन सभी विशेषताओं की व्याख्या की जाती है :—

(क) भाषा मानव विचार-विनिमय का सर्वोत्कृष्ट साधन है—भाषा के अभाव से मानव पशु से ऊँचा नहीं। समाज का समस्त कार्य भाषा द्वारा होता है। मानव समाज के प्रत्येक व्यवहार में जैसे गृहस्थ में, सामाजिक कार्यों में, व्यापार में, व्यवसायों में, पत्र-व्यवहार तथा राजशासन में भाषा की परमावश्यकता है। यदि भाषा न होती तो यह संसार मूक-संसार या अन्ध-संसार बन जाता।[1] प्राचीनकाल में भाषा में मौखिक रूप से ही काम चल जाता था, परन्तु आजकल की जटिल सभ्यता में साक्षरता के बिना जीवनयापन असम्भव सा हो गया है। भाषा के मौखिक रूप के ज्ञान के बिना कोई व्यक्ति गूंगा या जंगली कहलायेगा। मातृ-भाषा बोलने वाले निरक्षर व्यक्ति के सामने भी विकट समस्याएँ आती हैं जब वह न पत्र लिख-पढ़ सकता है, न तार भेज सकता है, न मनी-आर्डर भेज सकता है, न रसीद लिख सकता है, न साइनबोर्ड पढ़ सकता है और न हस्ताक्षर कर सकता है।[1]

(ख) भाषा ज्ञान प्राप्ति का प्रमुख साधन है—शिशु हो या प्रौढ़, ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रमुख साधन भाषा है। शिशु अपने साधारण भावों का प्रकाशन संकेतों से, हंसने से या रोने से करता है, परन्तु कालान्तर में शब्दों का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। बालक और प्रौढ़ भी नई बातों को जानने के लिए अपने ज्ञान की वृद्धि के लिए भाषा का सहारा लेते हैं। सारी शिक्षा भाषा द्वारा ही होती है। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक बैलार्ड (Ballard) भाषा और ज्ञान को अन्योन्याश्रित समझते हैं। विचारों का विकास भाषा पर निर्भर है और भाषा का विकास ज्ञानवृद्धि पर। उनके शब्दों में, "विचार और भाषा सन्निकट रूप से सम्बद्ध हैं। वे साथ ही घटते और बढ़ते जाते हैं और बिना एक दूसरे के विकास नहीं कर सकते।" अत: मातृ-भाषा जिसमें बालक सोचता और

---

1. इदमंधतमः कृत्स्नं जायते भुवनत्रयम्,
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसार न दीप्यते। —काव्यादर्श 1, 4।

'वह समस्त संसार अन्धकार में लिपटा रहता, यदि शब्दों की ज्योति न होती।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

इसी प्रकार वृहदारण्यक उपनिषद् में कहा है ...

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कल्पना करता है---शिक्षा का प्रमुख अंग और मानव संस्कृति का उत्कृष्ट साधन बनती है। इसके फलस्वरूप मातृ-भाषा के शिक्षण के द्वारा व्यक्तित्व का पूर्ण विकास हो जाता है। भाषा द्वारा नये विचार अर्जित किए जाते हैं और उनका बौद्धिक विकास सम्भव है। इसी प्रकार भाषा द्वारा भावनाओं का विकास होता है। साहित्य की अनुपम कृतियों के पढ़ने से हृदय में स्थित भाव जागृत होते हैं और उनका रसपरिपाक हो जाता है। इस प्रकार श्रेयमय रचनाओं को पढ़ कर सच्चरित्र, नागरिकता आदि समाजानुकूल गुणों का विकास होता है।

(ग) **भाषा द्वारा किसी जाति या समाज का ज्ञान सुरक्षित रहता है**—आधुनिक जगत का क्या, प्राचीन जगत से लेकर आज तक समस्त ज्ञान भण्डार भाषा के लिपिबद्ध रूप में अर्थात् पुस्तकीय रूप में ही उपलब्ध है। पुरानी पीढ़ियां नष्ट हुईं, परन्तु उनके सभी विचार हमारे पास उपस्थित हैं। अन्य देशवासी हम से दूर हैं, परन्तु उनके विचार, उनका दिया हुआ ज्ञान पुस्तक के रूप में हमारे पास मौजूद है। 'भाषा और साहित्य के विज्ञान-भवन के निर्माण में प्रत्येक मानव ने एक ईट-पत्थर रखकर अपना योगदान दिया है[1]।' भाषा का इतिहास, सभ्यता का इतिहास, है[2] भाषा न होती तो ऋग्वेद की रचना न होती और उस काल का तथा आर्य जाति का ज्ञान हमें तनिक भी न होता। पशु के समान हमारा इतिहास-शून्य होता। व्यक्तिगत रूप में हो या सामूहिक रूप में, हमारा परम्परागत ज्ञान भाषा द्वारा पुस्तकों में लिपिबद्ध होकर स्मृति रूप में चला आता। हमारी सभ्यता और हमारे सुख-सौन्दर्य के साधन की उत्पत्ति भाषा के समुचित आदान-प्रदान से ही सम्भव हो सकती है। भाषा के अज्ञान के कारण ही हम भारतीय अपनी सभ्यता से अनभिज्ञ हैं।

(घ) **भाषा राष्ट्रीय एकता और अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुत्व का प्रतीक है**—सामाजिक प्राणी के नाते मानव अपने विचारों का आदान-प्रदान समाज के दूसरे सदस्यों के साथ करने पर बाध्य है। समाज के प्रत्येक वर्ग में कोई भाषा विचार-विनिमय का साधन बनती है। यह भाषा ही समाज के सदस्यों को एक सूत्र में बांधती है। किसी जन-समुदाय को पृथक् रूप देने में भाषा का इतना हाथ है कि बहुधा उसका नामकरण भी भाषा के नाम पर ही किया जाता है जैसे पंजाबी, गुजराती,। एक समाज का पृथक् रूप देने में समान भू-भाग, समान इतिहास, समान धर्म, समान सभ्यता और समान शासन का उतना हाथ नहीं जितना समान भाषा का। हिन्दू हो या मुसलमान, आर्य जाति का हो या मंगोल जाति का, शिक्षित हो या अशिक्षित, यदि भाषा काश्मीरी बोलता है तो उसे काश्मीरी कहेंगे। इस प्रकार एक सामाजिक वर्ग का निर्माण अधि-

---

1. Language is the city to the building of which every human being brought a stone'—Emerson.
2. 'The Story of language is the story of Civilization'-Miero A. Pei

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कांश भाषा के आधार पर होता है। भारत में राज्य पुनर्गठन भी प्रान्तीय भाषाओं के आधार पर ही हुआ। संसार के जिस-जिस भू-भाग में पृथक् भाषा का प्रयोग है, उनके निवासियों का एक अपना जातीय अस्तित्व है, अपना जातीय चरित्र है।

किसी एक देश में कई प्रान्तों को मिलाने वाली कोई एक राष्ट्र भाषा होती है, जो प्रान्तीय सीमा को लांघकर राष्ट्रीय एकता का द्योतक बनती है और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण करती है। ऐसी राष्ट्रीय भाषा समस्त राष्ट्र के जातीय गुणों, मान्यताओं, विश्वासों और चारित्रिक विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करती है। राष्ट्र भाषा के अभाव में देश की एकता पर ही आधारित है। जिस देश में प्रान्तीय भाषा के अतिरिक्त एक राष्ट्र भाषा होती है, उसके निवासियों का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध रह सकता है, जिसके फलस्वरूप देश की आर्थिक, व्यावारिक, प्रशासनिक, शैक्षणिक, वैज्ञानिक, औद्योगिक और आध्यात्मिक उन्नति द्रुतगति से होती है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और सोवियत रूस इस बात के ज्वलंत उदाहरण हैं। अमेरिका में विभिन्न भाषा-भाषी थे। जैसे फ्रांसीसी, स्पेन, जर्मनी, पुर्तगाली, इटालवी और अंग्रेज। परन्तु स्वतन्त्रता के अग्रदूत जार्ज वाशिंगठन ने राष्ट्रीय एकता के प्रतिष्ठापन के लिए अंग्रेज़ी भाषा को राष्ट्र-भाषा घोषित किया। आज अंग्रेज़ी भाषा अमेरिका की जीवनदायिनी है और समस्त वाणिज्य, उद्योग, शिक्षा और प्रशासन की भाषा है। भारत में भी अंग्रेज़ी शासन में अंग्रेज़ी विदेशी भाषा होने पर भी एकता का द्योतक रही है। कांग्रेस का स्वतन्त्रता का आन्दोलन का सारा कार्यक्रम अंग्रेज़ी में होता रहा। आज भी अंग्रेज़ी प्रशासन की भाषा है परन्तु शीघ्र ही सम्पूर्ण रूप में इसका स्थान हिन्दी ले रही है। अंग्रेज़ी केवल शिक्षित जनता में ही (जो देश की जनसंख्या का एक प्रतिशत है) विचार-विनिमय का साधन बनी। परन्तु हिन्दी उच्च से लेकर नीच तक सभी देशवासियों की समान भाषा है। भावात्मक एकता (emotional integration पैदा करने में इसका सबसे बड़ा हाथ है। राष्ट्र की सामुदायिकता संकट और व्यवस्था राष्ट्र-भाषा के बिना असम्भव है। प्रान्तीय भेद-भाव, संकुचित जातीयता, संकीर्ण दृष्टिकोण हार्दिक असहिष्णुता, बन्धुत्व-हीनता, निजभाषा मोह और अन्य भाषा के विरोध की भावना को मिटाने के लिए राष्ट्र भाषा की शिक्षा अनिवार्य है।

जिस प्रकार राष्ट्र-भाषा राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है; उसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय भाषा अन्तर्राष्ट्रीय बन्धुता की प्रतीक है। अन्तर्जातीय सद्भावना और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना तभी पैदा हो सकती है जब हम अन्य देशों की भाषा और तत्सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन करके अपने दृष्टिकोण को विशाल बनाएँ और साथ ही ऐसी विदेशी भाषा द्वारा अन्य देशवासियों के साथ साहचर्य-सम्बन्ध स्थापित करें जिसके फलस्वरूप हम उनके साहित्य, संस्कृति, सभ्यता और सामाजिक गठबन्धन को समझ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकें। सबसे अधिक तनाव एक-दूसरे को न समझने से पैदा हो सकता। भाषा विभिन्न राष्ट्रों को एक-दूसरे को समझने में सहायक है। जहां राष्ट्र-भाषा विभिन्न प्रान्तों को एक सूत्र में बांधती है, वहां अन्तर्राष्ट्रीय भाषा विभिन्न राष्ट्रों का एकीकरण कर सकती है। कामनवैल्थ के सभी राष्ट्रों में जो एकता है वह अंग्रेजी भाषा के कारण है। इस प्रकार व्यापक रूप में भाषा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय एकता की द्योतक है। इस दृष्टि से भाषा सारे विश्व को आलोकित करती है।[1]

§ 6. भाषा शिक्षण के उद्देश्य

भाषा की महत्ता जानने से भाषा शिक्षण की आवश्यकता का ज्ञान हो जाता है। इसके साथ ही शिक्षक को उन सभी उद्देश्यों के विषय में भी पूर्ण परिचित हो जाना चाहिए जिनके लिए वह भाषा पढ़ाना चाहता है। तभी वह सफल शिक्षक हो सकता है। वे उद्देश्य भिन्न हैं—

1. **व्यावहारिक योग्यता** (Practical Efficiency) **या कौशल प्राप्त करना** – भाषा सीखने का परम् उद्देश्य है समाज के प्रत्येक व्यवहार में अपने विचारों के आदान-प्रदान में भाग लेने की क्षमता प्राप्त करना। भाषा के सहारे, कोई व्यक्ति अपने मन की बात कह सकता है, अपना सुख-दु:ख दूसरे व्यक्ति को सुना सकता है और दूसरों की बातें स्वयं समझ सकता है। दूसरे शब्दों में वह अपने भीतर (क) आत्माभिव्यक्ति की शक्ति पैदा करता है और उसका उपयोग कर सकता है, तथा (ख) दूसरों के विचारों को ग्रहण करने की शक्ति उत्पन्न करता है।

आत्माभिव्यक्ति दो प्रकार से होती है – (i) बोलने से और (ii) अपने विचारों को लिखने से।

दूसरों के विचारों को ग्रहण करने की शक्ति भी दो प्रकार से होती है—

(i) सुनने और (ii) पढ़ने से।

सक्षेप में सुनना, पढ़ना, बोलना और लिखना, भाषा के चार अंग हैं, जिनका सम्यक् ज्ञान ही व्यावसायिक कुशलता का द्योतक है और पढ़ना ज्ञानात्मक है, बोलना और लिखना कौशलात्मक है। व्यवहार की दृष्टि से भाषा-प्रयोग के दो व्यवहार हैं। प्रथम व्यवहार है सुनना और बोलना। प्रारम्भिक व्यवहार मौखिक है। इस के उपरान्त लिपि की बारी आती है। लिपि के प्रयोग से भाषा का दूसरा व्यवहार पढ़ना और लिखना है। इस विषय का चित्रण अग्र-तालिका द्वारा हो सकता है—

---

1. महो अर्णः सरस्वती, प्रचेतयति केतुना।
धियो विश्वा विराजति॥ —ऋग्वेद 1-3-12

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

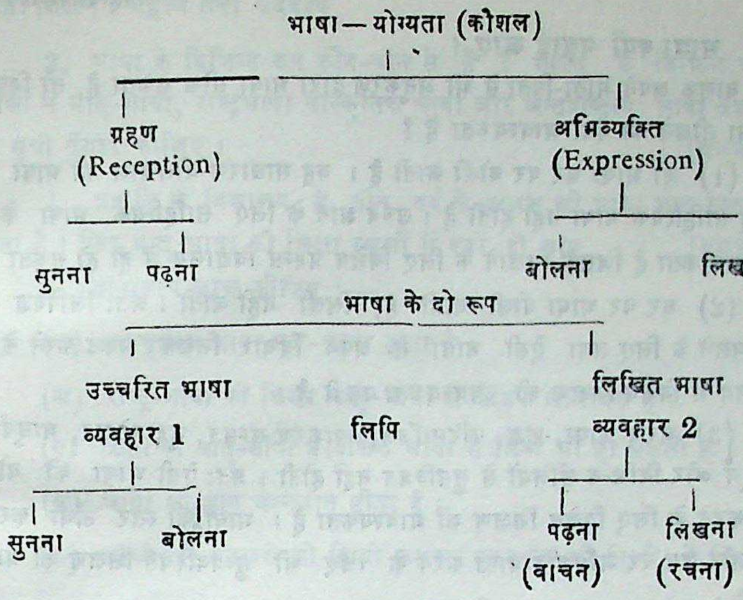

तालिका 2. भाषा-योग्यता के रूप

2. **प्रभावोत्पादन**—केवल अपने विचारों को अभिव्यक्त करना ही भाषा शिक्षण का प्रयोग नहीं। विचारों को साधारण रीति से अभियक्त करना मामूली बात है। बहुधा अपने विचारों को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए प्रभावोत्पादक भाषा शैली का अवलम्बन करना पड़ता है। अत: मधुर, आकर्षक; प्रभावशाली और सशक्त भाषा की आवश्यकता है। भिन्न-भिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न प्रकार की भाषाओं का प्रयोग करना पड़ता है। अवसरानुकूल भाषा का समुचित प्रयोग करना भी लक्ष्य प्राप्ति का साधन हो जाती है।

3. **विद्यार्थी की मनन-शक्ति और विचार-शक्ति का एवं व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना**--भाषा के ध्वनि तत्त्वों द्वारा व्यक्ति के विचारों को ग्रहण करके उनकी व्यवस्था करता है; उनका संगठन करता है और उनको मस्तिष्क में सुरक्षित रखता है। भाषा के बिना विचारों को याद रखना भी असम्भव है। भाषा सीखने से विद्यार्थियों में लिखने और पढ़ने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होनी चाहिए। भाषा के ज्ञान से बौद्धिक संवेगात्मक (Emotional), सामाजिक (social)) और रचनात्मक विकास संभव है।

4. **भाषा शिक्षण, साहित्य और कला की प्रगति का आधार हैं**—भाषा विद्यार्थी का उत्कृष्ट साहित्य की ओर आकृष्ट होना और कलात्मक निपुणता प्राप्त करके साहित्कार या कलाकार बनना समाज की दृष्टि से बहुत ही आवश्यक है। ललित कलाओं की प्रगति भाषा पर अवलम्बित है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2

हिन्दी शिक्षण : महत्त्व तथा उद्देश्य

§8. हिन्दी की वर्तमान अवस्था :—

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। लगभग 20 करोड़ भारतवासी इसका दैनिक प्रयोग करते हैं। जहां पर हिन्दी मातृ-भाषा नहीं वहां पर भी कुछ प्रयोग कम नहीं। हमारे संविधान के अनुसार भी यह राज्य भाषा घोषित हो चुकी है। अंग्रेजों का स्थान पूर्ण रूप से लेने के लिए और समस्त राजकीय कार्यों में प्रयुक्त होने के लिए हिन्दी को संविधान के आरम्भ से पन्द्रह वर्ष की अवधि दी गई।[1] बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से और व्यावहारिक दृष्टि से यही भाषा राष्ट्र-भाषा के गौरवान्वित पद पर आरूढ़ होने की अधिकारिणी है। इसका प्रकार और प्रचार देश की राष्ट्रीय प्रगति के लिए परमावश्यक है। अंग्रेजी का स्थान लेने के समर्थ बनाने के लिए हिन्दी भाषा की सर्वांगीण उन्नति राजकीय और सार्वजनिक संस्थानों के द्वारा सम्पन्न हो रही है। भारत की प्रधान प्रादेशिक भाषाओं की संख्या 14 है परन्तु हिन्दी उन सब में प्रधान है। उसका स्पष्टीकरण नीचे किया जाता है। हमारे भारतीय संविधान में सभी राज्यों (states) में सुविधा प्रदान की गई है कि अपनी इच्छानुसार अपने-अपने राज्य में प्रशासनिक भाषा चुन लें। प्रत्येक राज्य ने अपनी प्रशासनिक भाषा चुन ली है, जो निम्न तालिका में उल्लिखित है :—

राज्य का नाम	प्रशासनिक भाषा
1. हिमाचल प्रदेश	हिन्दी
2. हरियाणा	हिन्दी
3. राजस्थान	हिन्दी
4. उत्तर-प्रदेश	हिन्दी
5. मध्यप्रदेश	हिन्दी
6. बिहार	हिन्दी

1. भारतीय संविधान, अधिनियम 343-344

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7.	जम्मू कश्मीर	सरल उर्दू
8.	अण्डमान निकोबार	हिन्दी/अंग्रेजी
9.	दिल्ली	हिन्दी
10.	पंजाब	पंजाबी
11.	उड़ीसा	उड़िया
12.	बंगाल (पश्चिमी)	बंगाली
13.	आसाम	असामी
14.	गुजरात	गुजराती
15.	महाराष्ट्र	मराठी
16.	आंध्र	तेलुगू
17.	तमिलनाडू	तमिल
18.	कर्नाटक	कन्नड़
19.	केरल	मलयालम
20.	मेघालय	अंग्रेजी

§9. भारतीय भाषाओं में हिन्दी का स्थान

भारतीय भाषायी सर्वेक्षण (Survey) के अनुसार आजकल भारत में 544 बोलियां बोली जाती हैं। उनमें से 14 भाषाएं प्रधान हैं। सभी बोलियों को 4 वर्गों में बांटा जा सकता है।

1. आर्य भाषा परिवार
2. द्राविण भाषा परिवार
3. आष्ट्री भाषा परिवार
4. तिब्बत चीनी परिवार

1. **आर्य भाषा परिवार**—उत्तरी भारत की लगभग सभी भाषाएं इसके अन्तर्गत आ जाती हैं। काश्मीर में काश्मीरी, पंजाब में पंजाबी, राजस्थान में राजस्थानी, सौराष्ट्र में गुजराती, बम्बई राज्य या महाराष्ट्र में मराठी, बिहार में बिहारी, उड़ीसा में उड़ीया बंगाल में बंगला, आसाम में आसामी और दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा प्रान्त तथा बिहार के कई क्षेत्रों में हिन्दी बोली जाती है। ये सभी भाषाएं संस्कृत से निकली हैं।

2. **द्राविण भाषा परिवार**—इसके अन्तर्गत तमिल, तेलगू, कन्नड़ और मलयालम 4 भाषाएं आ जाती हैं। तमिलनाडु (मद्रास राज्य) में तमिल, आन्ध्र में तेलगू, केरल तथा पश्चिमी तट पर मलयालम और वर्तमान कर्नाटक (मैंसूर राज्य) में कन्नड़ बोली जाती है। ये सभी भाषाएं उस प्राचीन द्राविड़ भाषा से निकली हैं जो आर्यों के बसने से पहले यहां के मूल-निवासी द्राविड़ों की थी। उत्तरी भारत में भी द्राविड़ भाषाओं के कतिपय अवशेष विद्यमान हैं, जैसे मध्य प्रदेश में गोंड़ी। एक और द्राविड़ भाषा है सिंहाली जो श्रीलंका (Ceylon) राज्य में वहां के निवासियों की मातृ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा है। परन्तु श्रीलंका राजनैतिक दृष्टि से भारतवर्ष से अलग है, अत: हम सिंहाली का यहां वर्णन नहीं करते।

3. **आस्ट्री भाषा परिवार**—आस्ट्री परिवार में संथाली, मुण्डारी, खाशी और ऐसी ही बोलियां हैं जिनको छोटा नागपुर, मध्य प्रदेश के जंगलों के आदिवासी बोलते हैं। इनका सम्बन्ध भारत की अन्य भाषाओं के साथ न होकर एशिया के दक्षिण पूर्वीय द्वीपों की भाषाओं के साथ है।

4. **तिब्बत चीनी परिवार**—भारत की उत्तरी सीमा पर नेपाल, आसाम और लूशाई पहाड़ियों के आसपास तथा मनीपुर में जो भाषाएं बोली जाती हैं, उनका सम्बन्ध तिब्बत और चीनी भाषाओं के साथ है। वास्तव में भाषाएँ नहीं बोलियां हैं, जिनकी संख्या 126 है। ये केवल थोड़े से आदिवासियों की बोलियां हैं।

इन चारों भाषा परिवारों में आर्य और द्राविड़ परिवार प्रधान है। शेष दो परिवारों की भाषाएं बोलने वालों की संख्या 2% जनसंख्या से भी कम है। 73% भारतवासी आर्य-भाषाएं बोलते हैं और 25% द्राविड़ भाषाएं। बीस करोड़, भारतवासियों की मातृ-भाषा हिन्दी है। नौ करोड़ और जनता उसका व्यावहारिक प्रयोग करते हैं। कुल मिलाकर 29 करोड़ जनता हिन्दी से परिचित है और उसका व्यावहारिक प्रयोग करती है। उत्तरी भारत में यह प्रत्येक स्थान में समझी जाती है। उत्तरी भारत की शेष भाषाएं आर्य भाषा परिवार में होने के कारण हिन्दी के बहुत ही निकट हैं। बहुत से प्रदेशों में जैसे पंजाब, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश और बम्बई के लोग दो भाषाएं बोलते है, एक मातृ-भाषा और दूसरी हिन्दी। इस प्रकार उत्तर भारत में हिन्दी प्रमुख बन गई है। परन्तु दक्षिणी भारत में जहाँ की द्राविड़ भाषाएं आर्य भाषा से भिन्न होकर हिन्दी के निकट नहीं हैं, हिन्दी का प्रयोग न्यून है। किन्तु कालान्तर में हिन्दी के प्रसार कार्य के फलस्वरूप यहां भी हिन्दी मातृ-भाषा के अतिरिक्त दूसरी व्यावहारिक भाषा बन जाएगी। जहां उत्तरी भारत की भाषाएं बोलने वाले 25 करोड़ लोग उसको अपना रहे हैं, वहां देश की एकता के लिए शेष भारतवासियों को हिन्दी सीखनी पड़ेगी। भारत में अनेक प्रादेशिक भाषाओं के होते हुए राष्ट्र भाषा की अत्यन्त आवश्यकता है जो समस्त देश को सभी देशवासियों को एक सूत्र में बांध ले। इस कार्य के लिए हिन्दी ही समर्थ है। जनसंख्या की दृष्टि से यही प्रधान है। फलत: हिन्दी शिक्षा का प्रसार भारत के कोने-कोने में होना चाहिए। कहीं मातृ-भाषा के रूप में और कहीं पर राष्ट्र-भाषा के रूप में। 1961 की जनगणना के अनुसार प्रादेशिक भाषाओं की तुलना अग्रवर्णित है :—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा	बोलने वालों की संख्या	समस्त भारतीय जन-संख्या का प्रतिशत
1. हिन्दी	13,32,35,000	40.0
2. तेलगु	3,76,68,000	8.6
3. बगला	3,38,89,000	7.7
4. मराठी	3,32,87,000	7.6
5. तामिल	3,05,63,000	7.0
6. उर्दू	2,33,23,000	5.3
7. गुजराती	2,03,05,000	4.6
8. कन्नड़	1,74,16,000	4.0
9. मलयालम	1,70,16,000	3.9
10. उड़िया	1,57,19,000	3.6
11. पंजाबी	1,09,51,000	2.5
12. आसामी	68,03,000	1.6
13. काश्मीरी	19,56,000	0.4
14. संस्कृत	3000	.0
15. अन्य उपभाषाएं	5,66,03,000	12.2
जोड़	43,89,37,000	100

तालिका 3 प्रादेशिक भाषाएं

1971 की जनगणना के अनुसार प्रमुख भाषाओं की तुलना निम्न है :—

हिन्दी—1620 लाख

बंगला—448 ,,

तेलुगू—448 ,,

मराठी—423 ,,

तमिल—377 ,,

उर्दू —286 ,,!

कुल जनसंख्या—5474 लाख

1981 की जन-गणना के अनुसार देश की जनसंख्या 69 करोड़ से ऊपर चली गई है।

§ 10. संसार की भाषाओं में हिन्दी का स्थान

हिन्दी भारतीय भाषाओं में ही प्रधान नहीं संसार की भाषाओं में इसकी प्रतिष्ठा ऊँची है। कुल मिलाकर संसार की 106 भाषाएं हैं। जनसंख्या की दृष्टि से सबसे अधिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी को तीसरा स्थान प्राप्त है।[1] सर्वप्रथम चीनी भाषा आ जाती है, जिसके बोलने वाले 45 करोड़ से अधिक है, द्वितीय अंग्रेजी भाषा है, जिस का प्रयोग 25 करोड़ व्यक्तियों द्वारा होता है और उसके उपरान्त हिन्दी का नाम आता है जो 20 करोड़ भारतवासियों की मातृ-भाषा है और जिससे 9 करोड़ और भारतवासी परिचित हैं। स्वाधीनता के उपरान्त भारत संसार के स्वतन्त्र राष्ट्रों से तथा राजनैतिक क्षेत्र में प्रतिष्ठित पद प्राप्त कर चुका है। भारतीय राष्ट्र-भाषा हिन्दी का प्रयोग भी रूस, अमेरिका, यूरोप के राज्यों, चीन आदि प्रमुख देशों में बढ़ रहा है। विदेशी साहित्य का अनुवाद हिन्दी में हो रहा है, हिन्दी साहित्य का अनुवाद विदेशी भाषाओं में हो रहा है। हिन्दी भाषा का समुचित प्रबन्ध अमेरिका, संयुक्त राष्ट्र और रूस के विभिन्न विश्व विद्यालयों में किया जा रहा है। सोवियत रूस की आध्यात्मिक शालाओं में भी हिन्दी की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध है। तुलसी साहित्य, प्रेमचन्द्र साहित्य और हिन्दी के प्रमुख ग्रन्थों का रूसी अनुवाद भी हो चुका है। भारतवासियों के साथ निकटतम सम्पर्क स्थापित करने के लिए विदेशियों का यह कदम प्रशंसनीय है। राजनीतिक, सामाजिक, व्यापारिक और साहित्यिक दृष्टि से विचार करने पर हिन्दी अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनने की अधिकारिणी है।

§ 11. हिन्दी के तीन रूप

मातृ-भाषा, प्रादेशिक भाषा, राष्ट्र-भाषा

संक्षेप में हिन्दी भाषा की स्थिति निम्न है—

1. **मातृ भाषा के रूप में**—उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश और हरियाणा में मातृ-भाषा है। इन प्रदेशों में प्रारम्भिक श्रेणियों में प्रविष्ट होने वाला बालक हिन्दी से पहले ही परिचित होता है। शिक्षक वहां बोल-चाल की भाषा सिखाने की अपेक्षा लिपि ज्ञान से ही भाषा शिक्षण आरम्भ करता है। 1971 के भारतीय भाषायी सर्वेक्षण के अनुसार हिन्दी 16 करोड़ 20 लाख अथवा 30 प्रतिशत जनता की मातृ-भाषा है। परन्तु आजकल अनुमान के अनुसार 20 करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा हिन्दी है।

2. **प्रादेशिक भाषा के रूप में**—कई स्थानों या प्रान्तों में हिन्दी मातृ-भाषा न होकर प्रादेशिक भाषा है। पंजाब में पंजाबी और हिन्दी, दोनों भाषाए प्रयुक्त होती हैं। परन्तु बोलने वालों के लिए यह भाषा उतनी सुगम नहीं जितनी उनकी मातृ-भाषा पंजाबी है। मध्यप्रदेश में मराठी बोलने वालों को भी यही कठिनाई है। जिस विद्यालय में पंजाबी बोलने वाले भी हों और हिन्दी बोलने वाले भी वहां शिक्षक हिन्दी का समान

1. 1961 की जनगणना के अनुसार प्रादेशिक भाषाओं की तुलना निम्न है

चीनी—45 करोड़	अंग्रेजी—25 करोड़
हिन्दी—14 करोड़	रूसी—14 करोड़
स्पेनी—11 करोड़	जर्मन—10 करोड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
स्तर नहीं रखता। क्योंकि दोनों को पढ़ाई के अलग उद्देश्य और अलग स्तर होंगे। इसी प्रकार राजस्थान में हिन्दी ही प्रादेशिक भाषा है। वर्तमान बम्बई राज्य में मराठी और गुजराती दो प्रादेशिक भाषाएं हैं। परन्तु विद्यालयों पांचवी श्रेणी से हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाती है। बिहार की प्रादेशिक भाषा वैसे तो बिहारी है, परन्तु वहां भी हिन्दी अनिवार्य विषय है।

3. राष्ट्र भाषा के रूप—वैसे तो हिन्दी समस्त भारत की राष्ट्र-भाषा है, परन्तु यहां उसके रूप से तात्पर्य है, जिसमें मातृ-भाषा का रूप या प्रादेशिक भाषा का रूप सम्मिलित नहीं। अहिन्दी-भाषी प्रदेश है जैसे बंगाल, आसाम, गुजरात, बम्बई, दक्षिण भारत में हिन्दी न मातृ-भाषा है और न प्रादेशिक-भाषा है। इन प्रदेशों में हिन्दी राष्ट्रभाषा होने के नाते ही पढ़ाई जाती है। शिक्षक को ऐसे प्रदेशों में हिन्दी की शिक्षा प्रदान करना बड़ा कठिन है। परन्तु यहां हिन्दी की शिक्षा का स्तर उतना ऊंचा नहीं होंगा जितना हिन्दी भाषी प्रदेशों में।

प्रदेश	हिन्दी बोलने वालों की संख्या	प्रदेशों की कुल जनसंख्या का प्रतिशत
उत्तर प्रदेश	6,29,74,000	85.4
मध्य प्रदेश	2,13.27,000	65.9
बिहार	2,05,68.000	44.3
पंजाब	1,12,99,000	55.6
राजस्थान	1,13,86,000	56.5
महाराष्ट्र	12,30,000	3.1
बंगाल	18,98,000	5.4
अन्य प्रान्त	27,53,000	
जोड़	13,34 35,000	

तालिका 4 हिन्दी भाषी जनसंख्या

1. 1961 की जनगणना के अनुसार विभिन्न प्रान्तों में मातृ-भाषा के रूप में हिन्दी बोलने वालों संख्या तलिक नं० 4 में दी गई है :—

2. 1961 की जनगणना के अनुसार स्तर भाषा के रूप जितने भी व्यक्ति हिन्दी जानते हैं उनका 50.4 प्रतिशत हिन्दी भाषी प्रदेशों में हैं और शेष 49 6 प्रतिशत अहिन्दी भाषी प्रदेशों में। इससे स्पष्ट हैं कि अहिन्दी-भाषी प्रदेशों में भी हिन्दी की प्रधानता कम नहीं। महाराष्ट्र में मराठी और हिन्दी की एक लिपि होने के कारण हिन्दी तथा मराठी दोनों भाषाएं जानने वाले बहुत हैं। पश्चिमी बंगाल के भी शिक्षित क्षेत्र में हिन्दी का प्रचार बढ़ता जा रहा है। इसके अतिरिक्त लगभग 3 करोड़ व्यक्ति उर्दू बोलते हैं। वास्तव में देखा जाए तो उर्दू और हिन्दी दो भिन्न भाषाएं नहीं हैं। उर्दू में फारसी शब्दों की बहुलता है और लिपि फारसी है। परन्तु उर्दू जानने वाला हिन्दी भी समझता है। दोनों का वाक्य गठन (Structure) एक है। अत: 3 करोड़ उर्दू भाषी को हिन्दी वर्ग में भी जोड़ा जा सकता है। अशिक्षित उर्दू भाषी और अशिक्षित हिन्दी भाषी वास्तव में एक ही भाषा का घरेलू प्रयोग करते हैं। जहां लिपि का प्रश्न उठता है और भाषा साहित्यिक बनने लगती है, वहां इन दो भाषाओं में अन्तर दीखने लगता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी पढ़ाने से पहले शिक्षक का यह कर्त्तव्य है कि वह इस सम्बन्ध से परिचित हो जाए कि उसे किस उद्देश्य से और किस रूप में पढ़ानी है ।

§ 12 हिन्दी शिक्षण की महत्ता

(क) मातृ-भाषा के रूप में

मातृ-भाषा और शारीरिक विकास—मातृ-भाषा को यथार्थ रूप में पालने की भाषा या हिंडोले की भाषा (Language of the cradle) कहा गया है । प्रारम्भिक अवस्था में वह लोरी का रूप धारण करके शिशु को सुखमय निद्रा में निमग्न कराती है और तत्पश्चात् तोतली बोली का रूप धारण करके शिशु के भाव प्रकाशन का साधन बनती है । यही भाषा प्यारी माता और प्यारे बच्चे की प्रिय अलाप के रूप में दोनों को आनन्द विभोर करती है । भाव प्रकाशन को एक निहित प्रवृत्ति के फल-स्वरूप और पूर्वश्रुत भाषा ध्वनियों के निरन्तर अनुकरण की प्रक्रिया के द्वारा शिशु की मौखिक अभिव्यक्ति की शक्ति का विकास होता है । विकास की यह प्रक्रिया नैसर्गिक और क्रमिक है । कैनेडा के एक नाड़ी-विशेषज्ञ विल्डर पेनफील्ड (Wilder Penfield) इस प्रक्रिया की व्याख्या करते हैं । उनके अनुसार प्रारम्भिक अवस्था में शिशु अपने मस्तिष्क में ध्वनि-इकाइयां (language units) संग्रह करता है, जिनके सहारे वह बाद में नई शब्दावली सीखता है और बोलता है । ये इकाइयां उच्चारण तथा अर्थ बोध की इकाइयां होती हैं । ये सभी इकाइयां मस्तिष्क के नाड़ी-कोषों (Nerve Cells) में अंकित हो जाती हैं । जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में एक शिशु एक विशेष भाषा बोली बोलने वाले जनसमुदाय के सम्पर्क में आता है । वह इस भाषा की इकाइयों का संग्रह करता है । कालान्तर में इकाइयों में निरन्तर रूप से वृद्धि होती है । जब तक कि बच्चा अपनी मातृ-भाषा से पूर्ण रूप से परिचित हो जाता है । दस वर्ष की अवस्था तक उपयुक्त कोषों का निर्माण सुविधा के साथ होता है । प्रौढ़ व्यक्ति को ऐसी शारीरिक सुविधा नहीं मिलती । इस चर्चा का तात्पर्य यह है कि प्रारम्भिक अवस्था में जो भी भाषा लिखी जाती है । वह शिशु के मस्तिष्क का स्थायी अंकण के साथ एक आवश्यक भाग बन जाती है । इस प्रकार यह अभिव्यक्ति भाव प्रकाशन और विचार-विनिमय का प्रमुख साधन बन जाती है ।

(2) मातृ-भाषा में बौद्धिक विकास—शिशु के मस्तिष्क में ध्वनि-कोषों की रचना की जो भौतिक प्रक्रिया होती है उनके फलस्वरूप विचार रचना की मानसिक प्रक्रिया भी सम्पन्न हो जाती है । यह प्रक्रिया अर्थ सहित चिन्हों की रचना की ओर अग्रसर हो जाती है जो अर्थ बोध और अभिव्यक्ति के लिए अपने आप ही काम करने लग जाती है । प्रारम्भ से प्रत्यक्ष वस्तुओं की पहचान हो जाती है और उन वस्तुओं का सम्बन्ध नाम शब्दों के साथ जुड़ जाता है । कालान्तर में नाम शब्दों के अतिरिक्त अमूर्त विचारों का सम्बन्ध भी उनके प्रतीक ध्वनियों के साथ जुड़ जाता है । निश्चय ही नए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विचारों का संग्रह तत्सम्बन्धी ध्वनि शब्दों के द्वारा ही जोड़ा जाता है। इन शब्दों को यदि याद न रखा जा सके तो अमूर्त विचारों के क्षेत्र में प्रवेश करना असम्भव होता है। इस प्रकार मानसिक विकास और भाषा विषयक का चोली-दामन का साथ रहता है। बालक के जीवन में मानसिक विकास की अभिव्यक्ति शक्ति के संग्रह और वृद्धि में सहायक है और अभिव्यक्ति-शक्ति अपनी बारी से जटिल विचार प्रक्रिया के द्वारा मानसिक क्षितिज के विस्तार में सहायक बनती है। इस प्रकार मातृ-भाषा की शिक्षा मानसिक विकास का साधन है।

सभी मानसिक शक्तियों जैसे स्मृति, विवेक, तर्क, अनुशीलन, तुलना और साहचर्य (association) की वृद्धि मातृ-भाषा के ज्ञान के बिना असम्भव है।

(3) **मातृ-भाषा और भावात्मक विकास**—प्रत्येक बालक अपने माता-पिता भाई-बहिन और सगे-सम्बन्धियों के संसर्ग द्वारा अपनी मातृ-भाषा के साथ भावात्मक सम्बन्ध जोड़ता है। भाषा-साम्य एक वर्ग है। सदस्यों को बाल्य जीवन के अतिरिक्त युवावस्था में भी परस्पर संगठित करने में आवश्यक भाग लेना है। हृदय के अन्तस्तल में माता मातृ-भाषा और मातृ-भूमि के प्रति चिरस्थायी अनुराग रहता है।[1] एक ऐसे वातावरण में जहां बालक अपनी मातृ-भाषा का स्वच्छन्द रूप से प्रयोग करता है, वहां अपने आप को सुखी पाता है और वह दूसरों के साहचर्य से आनन्द लाभ उठाता है। मातृ-भाषा में लोकगीत और काव्य साहित्य के रूप में सुख-दुख, आशा-निराशा, हर्ष-विनोद, भय-कोध, रोचकता-अरोचकता आदि जन-जीवन के रागात्मक पहलू का चित्रण मिलता है, जिसके रसास्वादन के पाठकों को आलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है।

(3) **मातृ-भाषा और सामाजिक विकास**—प्रत्येक बालक एक सामाजिक वातावरण में जन्म लेता है। मातृ-भाषा उस वातावरण का एक प्रमुख भाग और साधन है। इस प्रकार भाषा की शिक्षा उस समूची प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण भाग है जिसके द्वारा वह सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण के प्रभाव को आत्मसात् कर लेता है। यह बालक की प्राथमिक संकल्पना परिष्कार करती है, समाज के आदर्शों के अनुसार आदतों के विकास में सहायक बनती है और साथ ही उसे समाज का योग्य सदस्य बनने में सहायता प्रदान करती है। अपने सामाजिक क्षेत्र में उस से यह आशा की जाती है कि वह बोलने-चालने, सोचने-समझने और दूसरों के साथ व्यवहार करने में समुचित ढंग अपनाए। इस कारण से एक शिक्षित व्यक्ति ही जो बोलने, पढ़ने और लिखने में अभ्यस्त हो समाज में उचित स्थान प्राप्त कर सकता है। निरक्षरता न केवल निरक्षर व्यक्ति के लिए अभिशाप है, जनतन्त्रात्मक समाज के लिए भी व्याधि है जिस

---

1. 'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी। और
'निज भाषा उन्नति है सब उन्नति की मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय के सूल।।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में प्रत्येक प्रौढ़ सामाजिक प्राणी को अपने अधिकार और कर्त्तव्य समझना आवश्यक है। प्राथमिक सामाजिक विकास घर पर ही सम्पन्न होता है और तदुपरान्त स्कूल में । घर से निकल कर स्कूल जाने पर बालक को जो बेचैनी होती है उसको दूर करने के लिए कोई न न कोई साधन चाहिए। स्कूल के वातावरण के साथ रम जाने में जो कठिनाई होती है। उनको दूर करने का प्रथम साधन मातृ-भाषा है जो घर और स्कूल दोनों में समान है। स्कूल के वातावरण में मातृ-भाषा से भिन्न भाषा एकमात्र प्रयोग बालक के ि ए अशान्ति और चिन्ता का कारण बन जाता है । मातृ-भाषा द्वारा ही घर के वातावरण से स्कूल के वृहद् वातावरण में सुगम संक्रान्ति सम्भव है । आगे चल कर स्कूल के सामाजिक वातावरण में प्रवेश करने में भी यही काम आती है।

(4) **मातृभाषा और शैक्षणिक विकास**—प्राय: घर और स्कूल में दी जाने वाली शिक्षा के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता है। ऐसे माध्यम के रूप में जो स्थान मातृ-भाषा ले सकती है वह अन्य भाषा नहीं ले सकती। क्योंकि सभी विषय मातृ-भाषा के द्वारा ही सुगम रीति से पढ़ाए जा सकते हैं, मातृ-भाषा के ज्ञान से किसी भी प्रकार की कमी विभिन्न विषयों की शिक्षा में रुकावट पैदा करती है। विभिन्न विषयों को समझने के लिए एक निश्चित विस्तार की शब्दावली, ग्रहण शक्ति और अभिव्यक्ति शक्ति चाहिए, पाठ्य पुस्तकों को पढ़ने, पाठ्य-विषय को समझने, विचार को अभिव्यक्ति करने तथा व्यवस्थित करने के लिए मातृ-भाषा का समुचित ज्ञान चाहिए। नहीं तो बौद्धिक और शैक्षणिक विकास में त्रुटियां रहेंगी।

कविता पाठ भावनाओं के विकास में सहायक है। बोलचाल की शिष्टता, मधुरता और प्रभाव पर ध्यान देना आवश्यक है। मनोविनोद के लिए मातृ-भाषा में लिखी गई कथा-कहानियां तथा नाटक आदि पर्याप्त है। रचनात्मक कार्य के लिए भाषा-रचना एक उत्तम माध्यम है। इसी प्रकार उत्सुकता की तृप्ति के लिए बाल साहित्य और किशोर साहित्य महत्त्वपूर्ण है।

(5) **दैनिक व्यवहार** भाषा या मातृ-भाषा के ज्ञान के बिना कोई भी व्यक्ति असभ्य, जंगली और पशु कहलाएगा। घर के भीतर या बाहर बाजार में, यात्रा में, सभाओं में एवं वृहद् समाज में भाषा के प्रयोग के बिना व्यवहार असम्भव है। मानव सामाजिक प्राणी है । सामाजिक कार्यों में विचारों के आदान-प्रदान की आवश्यकता है। भाषा के प्रयोग के बिना विचारों का आदान-प्रदान असम्भव है। आजकल के जटिल जीवन में मातृ-भाषा का मौखिक प्रयोग ही पर्याप्त नहीं। साक्षरता के बिना गुजारा नहीं हो सकता। एक निरक्षर व्यक्ति न पत्र व्यवहार कर सकता है, न समाचार पत्र पढ़ सकता है, न विद्या ग्रहण कर सकता है और न ही सामाजिक कार्यों में भाग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ले सकता है ।[1]

(7) **ज्ञानोपार्जन का साधन** – मातृ-भाषा घर में, विद्यालय में, अपने गांव या नगर में ज्ञानोपार्जन का प्रमुख साधन हैं। शिशु ही नहीं प्रौढ़ भी भाषा के द्वारा ही अपने निकटतम वातावरण सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करते हैं। कालान्तर में प्रौढ़ शिक्षित देश-विदेश की वार्ताएं पढ़ कर, इतिहास, भूगोल, समाज शास्त्र, 'विज्ञान, साहित्य आदि विषयों के सम्बन्ध में पुस्तकें पढ़ कर मातृ-भाषा को ज्ञानोपार्जन का प्रथम माध्यम बना लेता है। विद्यालयों की प्रारम्भिक कक्षाओं में गणित, दैनिक विज्ञान, समाज शिक्षा आदि सभी मातृ-भाषा द्वारा ही पढ़ाए जाते हैं।

(8) **सांस्कृतिक महत्ता** — मातृ-भाषा और उसका साहित्य अपनी जातीय संस्कृति और सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, उसका संरक्षण करता है और साथ ही जाति के सदस्यों के संगठन का साधन बन जाता है। मातृ-भाषा सामाजिक सदस्यों के लिए परस्पर मिलने वाली श्रृंखला है। एक ही भाषा बोलने वालों के बीच प्रेम, साहचर्य, सद्भावना, सहानुभूति और सहकारिता उत्पन्न करने के लिए मातृ-भाषा उत्तरदायी है। मातृ-भाषा में लिखा हुआ साहित्य अपने समाज का दर्पण है। समाज की मान्यताएं, रीति-रिवाज, आदर्श, कला आदि को समझने के लिए मातृ-भाषा के साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है। वास्तव में मातृ-भाषा साहित्य और कला की प्रगति का आधार है। तभी प्रसिद्ध अंग्रेज़ी कवि कौलरिज ने कहा है। मातृ-भाषा हृदय के स्पंदन की भाषा है।[2] यदि कोई जाति जीवित रह सकती है, तो उस जाति की भाषा के साहित्य द्वारा।

1.4 अन्य भाषा तथा राष्ट्र भाषा के रूप में

भारत के जिन प्रदेशों में हिन्दी मातृ-भाषा नहीं है, वहां पर हिन्दी राष्ट्र-भाषा होने के नाते इतर भाषा (Second Language) के रूप में पढ़ाई जाएगी भारत की चौदह प्रादेशिक भाषाओं में हिन्दी एक है।[3] परन्तु हमारे संविधान के अनुसार यह

---

1. वाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्वते, (काव्यादर्श 1/3—4)

ऐतरेय आरण्यक में भी कहा गया है "वाग्वै सर्वान् कामान् दूहे" 1/3/2), अर्थात् भाषा ही सभी कामनाओं की पूर्ति करती है।

'एक शब्द : सुप्रयुक्त: सम्यक् ज्ञात: शास्त्रान्वित: स्वर्गे लोके कामधुग् भवति।"

महाभाष्य

2. Mother tongue is the language of the pulasting heart of man ……Coleridge.

3. प्रादेशिक भाषाएं निम्न हैं —आसामी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, काश्मीरी, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, तमिल, तेलुगू, उर्दू और सिन्धी। —भारतीय संविधान, आठवीं अनुसूची।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समस्त भारत की राजकीय भाषा या राष्ट्र-भाषा घोषित हो चुकी है। भारतीय गण-राज्य के प्रशासन कार्य में यह भाषा केन्द्रीय सरकार और विभिन्न राज्यों की सरकार के बीच संचारण में प्रयुक्त होगी, साहित्य, भाषा, जनसंख्या आदि कितने ही दृष्टिकोण से हिन्दी इस गौरवान्वित पद की अधिकारिणी है। संक्षेप में राष्ट्र-भाषा के नाते हिन्दी की महत्ता नीचे दी गई है—

1. **प्रशासनिक महत्ता**—हिन्दी राजकीय प्रशासन का माध्यम बनती जा रही है। अतः सभी सरकारी कर्मचारियों के लिए हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करना नितान्त आवश्यक है। अंग्रेज़ी का स्थान लेने वाली भाषा हिन्दी का प्रसार भी उतना होना चाहिए जितना राजकीय कार्यों में अंग्रेज़ी का प्रसार हुआ है।

(2) **राजकीय महत्ता**—राष्ट्र-भाषा होने के नाते हिन्दी भारत की समी राज-नैतिक इकाइयों (अथवा राज्यों) के एकीकरण के लिए एक सामान्य श्रृंखला है। 69 करोड़ भारतवासियों को एक सूत्र में बांधने वाली हिन्दी भाषा के बिना भारत की राजनैतिक और सामाजिक एकता स्थिर नहीं रह सकती। भाषा रीति-रिवाज, रहन-सहन, धर्म, जाति व्यवसाय आदि की विविधता होने पर भी भारत के प्रत्येक खण्ड को एक,दूसरे के साथ मिलाने के लिए और एकीकरण करने के लिए अंग्रेजों ने जो कार्य किया वही कार्य करने की क्षमता हिन्दी भाषा भी रखती है। देश में भावात्मक एकता (Emotional Interagation) का सर्वप्रथम साधन राष्ट्र-भाषा हिन्दी है। अतः प्रत्येक भारतवासी के लिए मातृ-भाषा के अतिरिक्त हिन्दी का व्यावहारिक प्रयोग अपेक्षित है। अपने प्रदेश से बाहर दूसरे प्रदेशों में हिन्दी ही काम आ सकती है, अपनी मातृ-भाषा नहीं। बंगाली, गुजराती, मद्रासी, पंजाबी, काश्मीरी आदि हिन्दी के द्वारा ही एक-दूसरे के साथ मेलजोल रख सकते हैं। भाषाओं की विविधता में प्रांतीयता और साम्प्रदायि-कता की सीमाओं को तोड़ने के लिए एक सामान्य भाषा अपेक्षित है। 'एक राष्ट्र एक भाषा' का सिद्धान्त सर्वमान्य है। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे भी हिन्दी ही हमारा प्रतिनिधित्व कर सकती है।

(3) **सांस्कृतिक महत्ता**—हिन्दी हमारी सांस्कृतिक भाषा है। हमारी सांस्कृतिक भाषा संस्कृत से जन्मी होने के कारण यह भारतीय संस्कृति का दर्पण है। हमारा दर्शन, आदर्श, विचार-धाराएँ, मान्यताएं, भावनाएं, रीति-रिवाज, धार्मिकता, आध्यातिमकता संक्षेप में भारतीय संस्कृति का सब कुछ, हिन्दी साहित्य में प्रतिबिम्बित है। मीरा, सूर, तुलसी, प्रसाद, महादेवी आदि हमारे जातीय धर्म के चितेरे हैं। अपनी संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए यदि हम संस्कृत साहित्य का अध्ययन न कर सकें तो हिन्दी साहित्य का अध्ययन नितांत आवश्यक होगा।

(4) **व्यायवसायिक महत्ता**—राष्ट्र-भाषा होने के नाते हिन्दी कितने ही नए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यवसायों के लिए अवसर प्रदान करती है। हिन्दी भाषा में सम्पादन, पत्रकारिता, अनुवाद, अनुसंधान, अध्यापन आशुलिपिकता (stenography) आदि कितने ही नए व्यवसायों का दिन-प्रतिदिन प्रसार हो रहा है। राजकीय नौकरियों के लिए भी हिन्दी वालों के लिए अधिक सुअवसर हैं।

(5) **भाषा विषयक महत्ता**—मातृ-भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा का ज्ञान रखने वालों को अन्तर्निहित भाषा-शक्तियों के विकास में वृद्धि होती है। अपनी भाषा के अतिरिक्त दूसरी भाषा के ज्ञान से भाषा सीखने की शक्ति में, भाषा के रूप और संगठन के समझने में, भाषा के शुद्ध व्यवहार से आत्माभिव्यक्ति में, बोलने और लिखने के अभ्यास में सहायता मिलती है। किसी सीमा तक एक भाषा के प्रशिक्षण का स्थानांतरण (Transfer of training) दूसरी भाषा में हो जाता है। दूसरी भाषा के ज्ञान से अपनी भाषा के ज्ञान में भी स्थिरता और दृढ़ता आ जाती है। भाषाओं के आदान-प्रदान से भाव-प्रकाशन के नए ढंगों का ज्ञान हो जाता है। अपनी मातृ-भाषा के प्रयोग में हिन्दी भाषा से बहुत कुछ सीखना होगा। सीखना होगा—नया वाक्य विन्यास, नई शब्दावली, नए मुहावरे और सूक्तियां, नई शैलियां, काव्य के नए रूप और नए भाव।[1]

(6) **साहित्यिक महत्ता**—मातृ-भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा का अध्ययन विशेषत: हिन्दी साहित्य के लिए किया जा सकता है। मातृ-भाषा के साहित्य के अध्ययन के आनन्द का क्षेत्र दुगुना बन जाता है। दूसरी भाषा के साहित्य के अध्ययन से आनन्द प्राप्त होता है वह सीमित ही है। दूसरी भाषा के साहित्य के अनुवाद के बदले मूल पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है और साहित्यिक ज्ञान की वृद्धि हो जाती है।

मातृ-भाषा और राष्ट्र-भाषा के अतिरिक्त विदेशी भाषा के रूप में भी हिन्दी अपनी महत्ता रखती है। भारत के बाहर के देशों के लिए हिन्दी एक विदेशी भाषा है। भारतवासियों के निकटतम सम्पर्क रखने के लिए, भारतीय साहित्य संस्कृति के अध्ययन के लिए तथा राजनीतिक और सामाजिक कारणों से विदेश वासियों को हिन्दी भाषा का विदेशी भाषा के रूप में (as a foreign language) अध्ययन करना होगा। बहुत से विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था चालू हो चुकी है।

---

1. The study of the language other than the mother tongue requires the learner to compare and to discriminate, thus training the analytic and reflective faculties...... It gives him a new insight into the possible resources of expression cultivate precision of thought and expression......20th Centnry Modern Language Teaching.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 14. हिन्दी की शिक्षा के उद्देश्य

(क) मातृ-भाषा के रूप में

मातृ-भाषा के रूप में हिन्दी के उद्देश्यों की व्याख्या तीन सोपाकमनों में कम की जा सकती है—

पहले सामान्य उद्देश्य (Major objective) दिए जाएगे।

तदुपरान्त प्रत्येक सामान्य उद्देश्य को विभिन्न प्रकार के विशिष्ट उद्देश्यों (minor objectives) में बांटा जाएगा।

इसके पश्चात् प्रत्येक विशिष्ठ उद्देश्य का स्पष्टीकरण किया जाएगा।

हिन्दी शिक्षण के सामान्य उद्देश्य पांच हैं --

1. ज्ञान (Knowledge)
2. कौशल (ability and skill)
3. सौन्दर्यबोध (Appreciation)
4. वृत्तियों का विकास (Attitude formation) तथा
5. मनोविनोद प्राप्त करना (Recreation)

1. ज्ञान

1. भाषा ज्ञान सीखने वाला छात्र निम्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त करता है—

(क) भाषा के तत्त्वों (Elements of langage) का ज्ञान।

(ख) विषय वस्तु (Content) का ज्ञान।

(ग) रचना कार्य के विभिन्न रूपों (Forms of composition) का ज्ञान।

(घ) साहित्य के विभिन्न रूपों का ज्ञान।

भाषा के तत्त्वों में ऐसी बातें सम्मिलित हैं, जिनके ज्ञान के बिना विद्यार्थी भाषा का प्रयोग नहीं कर सकता है जैसे उच्चारण, वर्तनी, शब्द-भेद, शब्द-रचना, मुहावरे और काव्य-रचना।

विषय वस्तु में वे बातें सम्मिलित हैं जो भाषा और साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होती हैं, जैसे लेखक की अनुभूतियां, सांस्कृतिक मूल्य, तथ्य, घटनाएं पौराणिक गाथाएँ, चरित्र चित्रण, भौतिक और सामाजिक वातावरण की जानकारी और व्यवहारिक बातें।

रचना कार्य तथा साहित्य के विभिन्न रूपों में गद्य, पद्य, निबन्ध, कहानी, उपन्यास एकांकी, नाटक, जीवनी, आत्मकथा, पत्र, सार, लेखन, वार्तालाप, भाषण, वाद-विवाद और सेवाएँ आदि सम्मिलित हैं।

2. कौशल

भाषा के सम्बन्ध में कौशल दो प्रकार का है ग्रहण (reception) और अभिव्यक्ति (expression)। पीछे कहा गया है कि ग्रहण की शक्ति दो प्रकार से होती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है—(i) सुनने से और (ii) पढ़ने से । इसलिए ग्रहण के अन्तर्गत, भाषा शिक्षण के निम्न दो विशिष्ट उद्‌देश्य हैं —

(क) साधारण गद्य-पद्य सुनकर अर्थ-ग्रहण करने की योग्यता प्राप्त करना,

(ख) साधारण गद्य-पद्य पढ़कर अर्थ-ग्रहण करने की योग्यता प्राप्त करना ।

गद्य-पद्य पढ़ने को वाचन भी कहते हैं। वाचन दो प्रकार का होता है—(i) यान्त्रिक वाचन (Mechanical reading) और (ii) अर्थ-ग्रहण सहित वाचन (reading with Comprehension)। जब छात्र केवल लिपि पढ़ता है और शब्दों के अर्थ की ओर ध्यान नहीं देता तो उसकी उस प्रक्रिया को यांत्रिक वाचन (Mechanical reading) कहते हैं।

अभिव्यक्ति (expression) के भी दो प्रकार हैं—(i) बोल-चाल या मौखिक-कार्य द्वारा अभिव्यक्ति (expression through speech) और (ii) रचना द्वारा अभिव्यक्ति । इसलिए अभिव्यक्ति के अन्तर्गत भी हिन्दी-शिक्षण के दो विशिष्ट उद्‌देश्य सम्मिलित हैं—

(क) शुद्ध बोलकर भाव अभिव्यक्त करने की योग्यता प्राप्त करना ।

(ख) शुद्ध लिखकर भाव अभिव्यक्ति करने की योग्यता प्राप्त करना ।

रचना द्वारा अभिव्यक्ति करना भी तीन प्रकार का है—(i) साधारण रचना द्वारा (ii) अनुवाद द्वारा और (iii) सृजनात्मक रचना (Creative writing) द्वारा अपने मौखिक विचारों और भावनाओं को कलात्मक ढग से व्यक्त करना ।

3. सौंदर्यबोध

इनमें निम्न योग्यताएँ हैं—

(i) काव्य सौंदर्य से प्रभावित होकर काव्य के प्रति रुचि ।
(ii) कवि की अनुभूतियों को ग्रहण करने की शक्ति ।
(iii) काव्यानन्द की रसास्वादन की योग्यता ।
(iv) काव्य के सौंदर्य परखने की योग्यता ।
(v) साहित्य भावनाओं और रसात्मक प्रवृत्तियों का उद्‌बोधन ।

4. वृत्तियों का विकास

इनमें निम्न बातें शामिल हैं—

(क) भाषा और साहित्य में रुचि लेना ।

(ख) सद्‌प्रवृत्तियों का विकास (Development of desirable attitudes)

तात्पर्य यह है कि भाषा के अध्ययन द्वारा छात्र में आस्था, श्रद्धा, देश-प्रेम, मानव प्रेम, साहित्य प्रेम, सुहृदयता, सम्वेदनशीलता और शुद्ध भावनाओं का विकास होना चाहिए ।

5. मनोविनोद

किसी भी भाषा का साहित्य मनोविनोदात्मक विधाओं द्वारा विपुल मनोरंजन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रदान करता है। इसलिए कविता, कहानी, उपन्यास, एकांकी, नाटक आदि का सेवन किया जाता है।

भाषा-शिक्षण के सभी उद्देश्यों को नीचे दी गई तालिका द्वारा स्पष्ट किया जाता है—

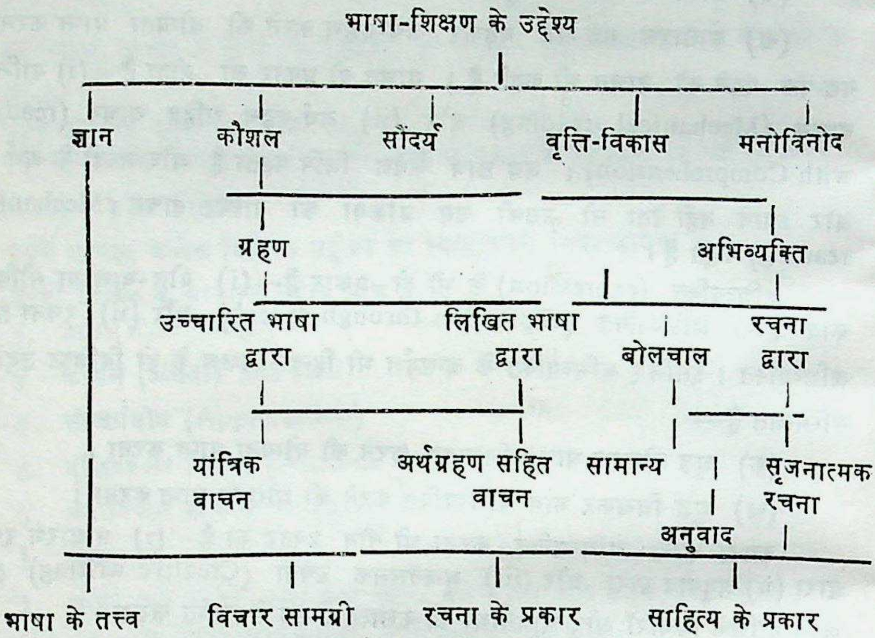

तालिका 5. भाषा शिक्षण के उद्देश्य

मातृ-भाषा की शिक्षा के ऊपर दिए गए सभी उद्देश्य सभी कक्षाओं के लिए समान महत्त्व के नहीं हो सकते। प्राईमरी या जूनियर बेसिक कक्षाओं में केवल मोटे-मोटे उद्देश्य होंगे। उच्च कक्षाओं में सभी विशिष्ट उद्देश्य तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म उद्देश्यों का पालन किया जा सकता है।

प्राईमरी की विभिन्न कक्षाओं के लिए पंजाब शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रम।

पहली श्रेणी

मौखिक अभिव्यक्ति—(क) अपने अनुभव के विषय तथा स्कूल, घर, अड़ोस-पड़ोस के क्रिया कलाप के सम्बन्ध में बातचीत करने की योग्यता।

(ख) किस चित्र को देखना और उसके विषय में कुछ कहना।

(ग) छोटी-छोटी कहानियां कहना।

(घ) बच्चों के काम-धन्धे के सम्बन्ध में कहानियों या झांकियों का अभिनय करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ङ) अकेले या इकट्ठे मिल कर साथ पढ़ना, लोरियों के गीत गाना या सरल कविताएं सुनाना या साधारण जनता के रोचक गाने गाना।

पढ़ना — सरल संक्षिप्त वाक्यों को पढ़ना जिनका सम्बन्ध स्कूल जीवन से हो तथा सिर, माथा, दूध, खीर, हलवा, कोट, फराक, मारना, छोड़ना, गिरना इत्यादि।

लिखना — श्यामपट पर पहले पढ़े हुए शब्दों और वाक्यों को कापी पर उतारना, शब्दों की बनावट और उसकी रचना पर प्रारम्भ से ही ध्यान देना। जो कुछ लिखवा सुलेख लिखना।

दूसरी श्रेणी

मौखिक विवरण शक्ति और अधिक विकसित की जाए। बालकों में इतनी योग्यता आ जानी चाहिए कि इस सहज रूप से स्पष्ट और पूर्णतया अपने स्कूल, घर और अड़ोस-पड़ोस के अनुभवों में आने वाली वस्तुओं और पदार्थों तथा लोगों और घटनाओं का वर्णन कर सकें।

पढ़ना — शब्द भण्डार की वृद्धि। कुछ नए शब्दों यथा कृपाल, अवगुण, सिगनल, रसोई, खिलौना, सफाई, सुन्दर, घोंसला आदि का ज्ञान।

पाठ्य पुस्तक तथा एक या दो उसी योग्यता और उसी शब्द भण्डार वाली सरल पुस्तकें स्वतन्त्र रूप से समझते हुए और शुद्ध रूप से आनन्द लेते हुए ऊंचा पढ़ना।

मौन रूप से पढ़ने से अभ्यास करना जिससे पढ़ने से उत्तरोत्तर क्रम अनुसार बुद्धि-पूर्वक तीव्रता और समझने की योग्यता आ सके।

लिखना—बच्चों में इतनी योग्यता आ जानी चाहिए कि वे कुछ छोटे-छोटे और सरल वाक्य अपने काम धन्धों के सम्बन्ध में लिख सकें। वर्ष के अन्त में इन्हें दैनिक वृत्त लिखने की योग्यता आ जानी चाहिए। पहले पढ़े हुए अवतरणों को देखकर कापी में उतारना या श्रुत द्वारा लेख लिखना। लेखन कार्य में शब्दों की शुद्ध रचना पर ध्यान देना।

तीसरी श्रेणी

पढ़ना—(क) शब्द भण्डार में वृद्धि।

(ख) सरल पुस्तक पढ़ना।

(ग) स्पष्ट शुद्ध उच्चारण और अभिव्यक्ति का ध्यान रखते हुए जोर से ऊंचे आवाज में पढ़ना।

(घ) मौन पढ़ना (समझते हुए और अधिक तीव्रता से)।

(ङ) मौखिक पढ़ना और अभिनय करना, कविताएं याद करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आत्माभिव्यक्ति—

1. मौखिक—दूसरे विद्यार्थियों से श्रेणी के काम-धन्धे प्रस्तुत करते समय स्वतन्त्र रूप से बात करना और उत्तर देना। कहानियां, कथाएं तथा सरल पहेलियां कहना।

2. लिखना—

(क) सरल प्रश्नों का उत्तर देना।

(ख) श्रेणी के काम-धन्धे से सम्बन्धित विषयों का संक्षिप्त वर्णन।

(ग) दैनिक रोज नामचा रखना।

(घ) सरल चिट्ठियां और प्रार्थना पत्र।

(ङ) छोटे-छोटे अनुच्छेदों का श्रुत लेख द्वारा लिखना।

चौथी श्रेणी

पढ़ना—(क) स्कूल कार्य से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़ना।

(ख) बाल-उपयोगी समाचार-पत्र पढ़ना।

(ग) सर्व साधारण पुस्तकें और कहानियों की पुस्तकें पढ़ना।

(घ) कम से कम चार कविताएं याद करना।

आत्माभिव्यक्ति—

(क) मौखिक—

(1) वर्ग में वाद-विवाद।

(2) किए गए कार्य का मौखिक वर्णन।

(3) स्कूल, समाज और श्रेणी में दिए हुए विषयों पर संक्षिप्त वक्तृताएं करना।

(ख) लिखना—1. स्कूल के काम-काज का संक्षिप्त वर्णन।

2. सरल चिट्ठियां और प्रार्थना-पत्र लिखना।

3. दैनिक रोज़ नामचा और मासिक कार्यक्रम का ब्योरा रखना।

4. साप्ताहिक बैठकों के लिए उचित विषयों पर लिखना।

5. श्रुत लेख।

पाँचवीं श्रेणी

पढ़ना—1. स्कूल के पुस्तकालय से अध्यापक की अध्यक्षता में सर्वसाधारण पढ़ना।

2. बालोपयोगी पत्रिकाएं तथा हितकारी संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत साहित्य पढ़ना।

3. अध्यापक बालकों की अभिव्यंजन द्वारा सरल गद्य, पद्यात्मक साहित्यिक अनुच्छेद पढ़कर सुनाएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. कोष, विषय सूची और अनुक्रमणिका का उपयोग।

5. मौन पाठ में उचित तीव्रगति प्राप्त की जाए ।

आत्माभिव्यक्ति—

(क) मौखिक—1. सम्पूर्ण किए काम का मौखिक विवरण प्रस्तुत किया जाए ।

2. प्रारम्भ करने वाले काम का मौखिक विवरण करना।

3. प्रति वर्ष कम से कम मात-भाषा में एक नाटक का अभिनय प्रस्तुत करना।

(ख) लिखना -1. श्रेणी और स्कूल सम्बन्धी काम का विवरण लिखना और नये काम का अ... लिख कर करना।

2. सामान्य व्यावहारिक पत्र तथा निमन्त्रण पत्र लिखना।

3. दी हुई बातों को क्रम-पूर्वक लिखना।

4. श्रेणी के साप्ताहिक क्षेत्र या अन्य पत्रिका के लिए लिखना।

व्याकरण—सरल वाक्यों की बनावट का ज्ञान।

2. शब्दों के मुख्य भेदों का ज्ञान।

3. लिंग और वचन।

4. काल।

भाषा के प्रत्येक अंग को पढ़ाने के लिए दो प्रकार के उद्देश्य हैं—सामान्य उद्देश्य और प्रत्येक सामान्य उद्देश्य के सम्बन्ध में विशेष उद्देश्य। इसका विवरण प्रत्येक उद्देश्य में अपने-अपने स्थान पर दिया जायेगा। प्रत्येक उद्देश्य के अन्तर्गत कई योग्यताएँ या शिक्षानुभव (learning experiences) आ जाते हैं, जिनको सामने रखकर भाषा शिक्षण की प्रक्रिया तथा शिक्षण-विधियां निश्चित की जाती हैं। ये अनुभव या अपेक्षित परिवर्तन नीचे दिए गए हैं। शिक्षण-विधियों को कार्य रूप देने अथवा समुचित ढंग से पढ़ाने के बाद जांच (evaluation) की बारी आती है। शिक्षा-शास्त्रियों का आधुनिकतम विचार यह है कि उद्देश्य (objectives) शिक्षानुभव (learning experiences) और जांच (evaluation) शिक्षा के त्रिकोण की तीन भुजाएँ हैं।

हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य और अपेक्षित परिवर्तन

उद्देश्य—

1. भाषा के तत्त्वों का ज्ञान।

2. विषय वस्तु का ज्ञान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. रचना के विविध रूपों का ज्ञान।
4. साहित्य की विविध विधाओं का ज्ञान।
5. सुनकर अर्थ ग्रहण करना।
6. पढ़कर अर्थ ग्रहण करना।
7. बोलकर अभिव्यक्त करना।
8. लिखकर अभिव्यक्त करना।
9. अनुवाद करने की योग्यता प्राप्त करना।
10. भाषा और साहित्य में रुचि लेना।
11. सद्प्रवृत्तियों का विकास करना।
12. राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता की भावना उत्पन्न करना।

1. भाषा के तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करना, स्पष्टीकरण

(अ) भाषा के तत्त्व	आपेक्षित परिवर्तन
उच्चारण (स्वराघात, बलाघात,	1. विद्यार्थी उनका प्रत्याभिज्ञान कर सकेगा।
स्वर का उतार चढ़ाव आदि	2. वह इनका पुनस्मरण कर सकेगा।
बर्तनी)	3. वह उनके अशुद्ध रूपों में त्रुटियां पकड़ सकेंगा।
शब्द भेद	4. वह उनके उदाहरण दे सकेगा।
रूपान्तर	5. वह उनकी तुलना कर सकेगा।
शब्द भण्डार (शब्द, मुहावरे,	
लोकोक्तियां, वाक्यांश के लिए	6. वह इनमें परस्पर अन्तर कर सकेगा।
एक शब्द आदि)	7. वह उनका परस्पर सम्बन्ध बना सकेगा।
(आ) उपसर्ग, प्रत्यय, सन्धि,	1. विद्यार्थी उन्हें पहचान सकेगा।
समास, रूपान्तर	2. वह इनका प्रत्याभिज्ञान कर सकेगा।

2. विषय वस्तु का ज्ञान प्राप्त करना।

स्पष्टीकरण :—

विषय वस्तु	आपेक्षित परिवर्तन
पाठ्यक्रम में निर्धारित पाठों में	1. विद्यार्थी इन्हें पहचान सकेगा।
निहित	2. वह इनका प्रत्याभिज्ञान कर सकेगा।
सांस्कृतिक मूल्य	3. वह इनके अशुद्ध रूपों में त्रुटियां पकड़
जीवनगत अनुभूतियां	सकेगा।
पौराणिक गाथाएँ	4. वह इनके उदाहरण दे सकेगा।
राष्ट्रीय भावनाएं	5. वह इनकी तुलना कर सकेगा।
सदाचार	6. वह इनमें परस्पर अन्तर कर सकेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

व्यावहारिक ज्ञान	7. वह इनका परस्पर सम्बन्ध बता सकेगा।
तथ्य व घटनाएं	8. वह इनका विश्लेषण कर सकेगा।
	9. वह इनका संश्लेषण कर सकेगा।
	10. वह इनका वर्गीकरण कर सकेगा।

3. रचना कार्य के विभिन्न रूपों का ज्ञान प्राप्त करना।

स्पष्टीकरण:—

रचना कार्य के विभिन्न रूप	आपेक्षित परिवर्तन
लिखित : निबन्ध, पत्र,	1. विद्यार्थी इन्हें पहचान सकेगा।
सारलेखन, संवाद, कहानी,	2. वह इनका पुनस्मरण कर सकेगा।
आत्मकथा	3. वह इनके अशुद्ध रूपों में त्रुटियां पकड़ सकेगा
मौखिक : वार्तालाप	
स्वरवाचन, लघु भाषण	4. वह इनके उदाहरण दे सकेगा।
	2. वह इनकी तुलना कर सकेगा।
	6. वह इनमें परस्पर अन्तर कर सकेगा।
	7. वह इनका सम्बन्ध बता सकेगा।

4. साहित्य की विधि विधाओं का ज्ञान प्राप्त करना।

स्पष्टीकरण :—

श्रुत सामग्री	आपेक्षित परिवर्तन
सरस वाचन, वार्तालाप,	1. वह धैर्यपूर्वक सुनेगा।
आदेश, निर्देश, लघु भाषण	2. वह सुनने के शिष्टाचार का पालन करेगा।
कविता,	
आकाशवाणी से प्रसारित	3. वह मनोयोगपूर्वक सुनेगा।
विभिन्न कार्यक्रम	4. वह ग्रहणशीलता को मनोस्थित बनाये रखेगा।
	5. वह शब्दों, मुहावरों व उक्तियों का प्रसंगानुकूल अर्थ व भाव समझ सकेगा।
	6. वह स्वराघात, बलाघात व स्वर के उतार-चढ़ाव के अनुसार अर्थ ग्रहण कर सकेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. वह श्रुतसामग्री के विषय को जान सकेगा।
8. वह महत्त्वपूर्ण विचारों, भावों एवं तथ्यों का चयन कर सकेगा।
9. वह विचारों, भावों एवं तथ्यों का परस्पर सम्बन्ध समझ सकेगा।
10. वह सारांश ग्रहण कर सकेगा।
11. वह केन्द्रीय भाव या विचार को ग्रहण कर सकेगा।
12. वह वक्ता के मनोभावों को समझ सकेगा।
13. वह भावानुभूति कर सकेगा।
14. वह अभिव्यक्ति के ढंग को समझ सकेगा।
15. वह भावों, विचारों व तथ्यों का मूल्यांकन कर सकेगा।

6. पढ़कर अर्थ ग्रहण करने की योग्यता प्राप्त करना।

स्पष्टीकरण :—	आपेक्षित परिवर्तन
कहानी, नाटकांश, निबन्ध, आत्मकथा, लघु, कविता	1. विद्यार्थी शुद्ध उच्चारण, उचित स्वराघात, बलाघात व स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ सकेगा।
	2. वह विषयानुसार गतिपूर्वक पढ़ सकेगा।
	3. वह धैर्यपूर्वक पढ़ेगा।
	4. वह मनोयोगपूर्वक पढ़ेगा।
	5. वह ग्रहणशीलता की स्थिति बनाये रखेगा।
	6. वह भावानुरूप सस्वर वाचन कर सकेगा।
	7. वह शब्दों, मुहावरों, उक्तियों व वाक्यांशों के स्थानीय मान को समझेगा।
	8. वह शब्दों, मुहावरों व उक्तियों का प्रसंगानुकूल अर्थ व भाव समझ सकेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. वह उचित शीर्षक दे सकेगा।
10. वह महत्त्वपूर्ण विचारों, एवं तथ्यों का चयन कर सकेगा।
11. वह विचारों, भावों एवं तथ्यों का परस्पर सम्बन्ध समझ सकेगा।
12. वह सारांश ग्रहण कर सकेगा।
13. वह केन्द्रीय भाव या विचार ग्रहण कर सकेगा।
14. वह लेखक के मनोभाव को समझ सकेगा।
15. वह भाषा शैली को समझ सकेगा।
16. वह भावों, विचारों तथा तथ्यों का मूल्यांकन कर सकेगा।
17. वह पठित अंश की पूर्व पठित अंश से तुलना कर सकेगा।

7. बोलकर अभिव्यक्त करने की योग्यता प्राप्त करना।

स्पष्टीकरण :—

मौखिक अभिव्यक्ति के रूप	आपेक्षित परिवर्तन
वार्तालाप लघु भाषण, कविता-पाठ, आदेश-निर्देश	1. विद्यार्थी सुश्रव्य वाणी में बोल सकेगा। 2. वह प्रसंगानुसार उचित गति के साथ बोल सकेगा। 3. वह शुद्ध उच्चारण व उचित स्वराघात व बलाघात व स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ बोल सकेगा। 4. वह उचित विराम के साथ बोल सकेगा। 5. वह प्रवाह के साथ बोल सकेगा। 6. वह व्याकरण सम्मत भाषा का प्रयोग कर सकेगा। 7. प्रसंगानुकूल उचित शब्दों, मुहावरों तथा सूक्तियों का शुद्ध प्रयोग कर सकेगा। 8. सरल मुहावरेदार भाषा प्रयोग कर सकेगा। 9. वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्य का अर्थानुकूल क्रम रख सकेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. वह विभिन्न रचना वाले वाक्यों का शुद्ध गठन कर सकेगा।
11. वह अभीष्ट सामग्री प्रस्तुत करेगा।
12. वह क्रम-बद्धता बनाये रखेगा।
13. वह सुसंबद्धता बनाये रखेगा।
14. वह विषय की एकता को अक्षुण्ण बनाये रखेगा।
16. वह आवश्यक पुनरावृत्ति ही करेगा।
17. वह भाषा की दृष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता ला सकेगा।
18. वह शिष्टाचार का पालन करेगा।
19. वह प्रसंग तथा विषयों के अनुकूल शैली का प्रयोग कर सकेगा।

8. लिखकर अभिव्यक्ति करने की योग्यता प्राप्त करना।

स्पष्टीकरण :—

लिखित अभिव्यक्ति के रूप-पत्र, प्रार्थना-पत्र लघु निबन्ध, लघु आत्मकथा, छोटी कहानी, सरल संवाद

1. वह सुपाठ्य लेख लिख सकेगा।
2. वह प्रसंगानुसार आवश्यक गति से लिख सकेगा।
3. वह शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिख सकेगा।
4. वह विराम चिन्हों का यथोचित प्रयोग कर सकेगा।
5. वह लेखन कार्य में परिच्छेद ठीक प्रकार बना सकेगा।
6. व्याकरण सम्मत शुद्ध भाषा का प्रयोग कर सकेगा।
7. वह प्रसंगानुसार शब्दों, मुहावरों तथा सूक्तियों का शुद्ध प्रयोग कर सकेगा।
8. वह सरल मुहावरेदार भाषा का प्रयोग कर सकेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. वह वाक्यों में शब्दों, वाक्यांशों तथा उपवाक्यों का क्रम अर्थानुकूल रख सकेगा।

10. वह विभिन्न रचना वाले वाक्यों का शुद्ध गठन कर सकेगा।

11. वह अभीष्ट सामग्री प्रस्तुत करेगा।

12. वह क्रमबद्धता बनाये रखेगा।

13. वह सुसंबद्धता बनाये रखेगा।

14. वह शिष्य की एकता को अक्षुण्ण बनाये रखेगा।

15. वह आवश्यक पुनरावृत्ति ही करेगा।

16 वह भाषा की दृष्टि से अभिव्यक्ति में संक्षिप्तता ला सकेगा।

17. वह लिखित अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों की तकनीक का विधिवत पालन कर सकेगा।

18. वह लिखित अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों के माध्यम से ही अभिव्यक्ति कर सकेगा।

19. वह विषय तथा अभिव्यक्ति के रूपों के अनुसार शैली का प्रयोग कर सकेगा।

9. अनुवाद करने की योग्यता प्राप्त करना

स्पष्टीकरण :—

आपेक्षित सामग्री	आपेक्षित परिवर्तन
मूल भाषा अनूदित भाषा मूल भाषा में अभिव्यक्ति विषय वस्तु	1. विद्यार्थी मूल भाषा के शब्दों तथा प्रयोगों के लिए अनूदित भाषा के पर्यायवाची शब्द तथा प्रयोग दे सकेगा। 2. वह मूल भाषा के मुहावरों और लोकोक्तियों के लिए अनुदित भाषा के पर्यायवाची मुहावरे व लोकोक्तियाँ यथा संभव दे सकेगा। 3. वह मूल भाषा के वाक्य-विन्यास के अनुकूल अनूदित भाषा के उपयुक्त रचना वाले वाक्य दे सकेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. वह अनूदित भाषा की प्रकृति के लिए अनावश्यक मूल भाषा के ढांचागत शब्दों का परिहार कर सकेगा।
5. वह मूल भाषा में न होने पर भी अनुदित भाषा की प्रकृति के लिए आवश्यक ढांचागत शब्दों को ला सकेगा।
6. वह मूल भाषा के विचार क्रम को बनाये रखेगा।
7. वह मूल भाषा के विचार क्रम को अक्षुण्ण रख सकेगा।

10. भाषा और साहित्य में रुचि लेना।

आपेक्षित सामग्री	आपेक्षित परिवर्तन
भाषा और साहित्य	1. विद्यार्थी पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य पुस्तक पढ़ेगा।
	2. वह अच्छी-अच्छी कविताएं कण्ठस्थ करेगा।
	3. वह कक्षा व विद्यालय की पत्रिका में योगदान देगा।
	4. वह कक्षा व विद्यालय में होने वाले कार्यक्रम में भाग लेगा।
	5. वह विद्यालय से बाहर होने वाले साहित्यिक कार्यक्रम में भाग लेगा।
	6. वह साहित्यकारों के चित्र एकत्रित करेगा।
	7. वह साहित्यिक महत्त्व की पत्रिकाएं एकत्रित करेगा।
	8. वह साहित्यिक महत्त्व के अनेक चित्र एकत्रित करेगा।
	9. वह अपना एक पुस्तकालय बनायेगा।
	12. वह साहित्यिक संस्थाओं का सदस्य बनेगा।
	11. वह अपने मित्रों तथा संसर्ग में आने वाले व्यक्तियों में भाषा और साहित्य के प्रति रुचि जागृत करने का प्रयास करेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11. राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता की भावना पैदा करना।

स्पष्टीकरण :–

आपेक्षित सामग्री	आपेक्षित परिवर्तन
आस्था, श्रदा, प्रेम-	1. विद्यार्थी संस्कृति और सौन्दर्य में आस्था रखेगा।
(साहित्य प्रेम, देश-	2. वह आदर्श के प्रति श्रद्धा रखेगा।
प्रेम, मानव-प्रेम) सहृदयता	3. वह सामाजिक मान्यताओं में आस्था रखेगा।
संवेदन शीलता	4. वह साहित्य-प्रेम, देश-प्रेम तथा मानव-प्रेम की ओर अग्रसर होगा।
	5. वह वातावरण के प्रति संवेदनशील व सहृदय होगा।
	6. वह सद्प्रवृत्तियों में सम्मत विचार रखेगा।
	7. वह सद्प्रवृत्तियों से सम्मत क्रियाएं करेगा।

प्रारम्भिक कक्षाओं, माध्यमिक कक्षाओं और उच्च कक्षाओं में भाषा शिक्षण के उद्देश्य समान होंगे, केवल स्तर (Standard) भिन्न होगा। उदाहरणार्थ प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए जिस पुस्तकालय की कल्पना की जाएगी उस में केवल बालोपयोगी साहित्य होगा, प्रौढ़ साहित्य नहीं। प्रारम्भिक कक्षाओं में बाल गीतों का रसास्वदन किया जाएगा साहित्यक गीतों का नहीं। पंजाब शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रम ऊपर दिया गया है।

§ 13. त्रिभाषा सूत्र और हिन्दी

हिन्दी को पाठ्यक्रम में क्या स्थान दिया गया है, इसके सम्बन्ध में केन्द्रीय परामर्श-दाता समिति (Cental Advisory Board of Education) की सिफ़ारिश उल्लेखनीय है। समिति ने जो फार्मूला पेश किया है उसको त्रिभाषा सूत्र (Three language Formula) कहते हैं क्योंकि उसमें तीन भाषाओं की शिक्षा अनिवार्य की गई है।

प्रथम भाषा–(i) मातृ-भाषा अथवा (ii) प्रादेशिक भाषा अथवा (iii) मातृभाषा तथा प्रादेशिक भाषा का संयुक्त पाठ्यक्रम अथवा (iv) सांस्कृतिक भाषा (Classical language) और मातृभाषा प्रादेशिक या संयुक्त पाठ्यक्रम है।

द्वितीय भाषा अंग्रज़ी अथवा वर्तमान भारतीय यूरोपीय भाषा।

तृतीय भाषा–(i) अहिन्दी भाषी क्षेत्र के लिए हिन्दी और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) हिन्दी प्रदेश के लिए कोई अन्य वर्तमान भारतीय भाषा।

उपरोक्त सूत्र के अनुसार हिन्दी की स्थिति निम्न है। हिन्दी भाषा क्षेत्र में हिन्दी मातृ-भाषा के रूप में पढ़ाई जाएगी। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान और हरियाणा में हिन्दी प्रथम भाषा। दूसरी अंग्रेजी। तीसरी भाषा के रूप में अन्य वर्तमान भारतीय भाषा होनी चाहिए। परन्तु सूत्र का उल्लंघन करके उस प्रदेश में प्राय: संस्कृत ही तृतीय भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है। लेखक इस अवस्था से सहमत है, क्योंकि अन्य भारतीय भाषा के रूप में संस्कृत की पढ़ाई वर्जित नहीं होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त संस्कृत हमारी सांस्कृतिक भाषा है। समस्त भारतीय भाषाओं की जननी या पोशाक है। अत: हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत का क्रम उपयुक्त है।

अहिन्दी भाषी क्षेत्र में मातृ-भाषा या प्रादेशिक भाषा प्रथम भाषा है, अंग्रेजी द्वितीय और हिन्दी तृतीय। इस प्रकार का त्रिभाषी सूत्र सर्वमान्य है:

जून 1966 में भारतीय शिक्षा आयोग (Indian Education Commission) ने अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए इस त्रिभाषी सूत्र में परिवर्तन की सिफारिश की थी। इसमें आयोग ने द्वितीय भाषा के रूप में अहिन्दी भाषी क्षेत्र के लिए अंग्रेजी अथवा हिन्दी पढ़ाने का सुझाव दिया था। मगर इस सुझाव में त्रुटि थी। अंग्रेजी हिन्दी के लिए अवांतर भाषा (alternate language) नहीं हो सकती। जो अंग्रेजी पढ़ेंगे वे हिन्दी से अनभिज्ञ रहेंगे और जो हिन्दी पढ़ेंगे वे अंग्रेजी में। परन्तु शिक्षा तथा व्यवसाय के लिए दोनों की आवश्यकता है। अत: पहला सूत्र ही (किंचित परिवर्तन के साथ) समीचीन है।

§ 16. राष्ट्र-भाषा के रूप में—

राष्ट्र-भाषा के रूप में हिन्दी में निम्न उद्देश्य हैं —

1. **व्यवहारिक उद्देश्य**—अहिन्दी-भाषी हिन्दी की शिक्षा पाकर हिन्दी का व्यावहारिक प्रयोग कर सकें, वे हिन्दी भाषियों की भाषा सुगमता से समझ सकें और स्वयं हिन्दी के माध्यम से उनके साथ विचार विनिमय कर सकें। लक्ष्य यह है कि हिन्दी का ऐसा देश-व्यापी प्रयोग हो कि केरल से कश्मीर तक, मणिपुर से अमृतसर या पोरबन्दर तक कोई भी व्यक्ति कहीं भी चला जाए उसे चलने-फिरने, बसने, व्यवहार करने तथा अन्य सामाजिक कार्यों में भाषा सम्बन्धी कोई भी कठिनाई न हो। उसकी मातृ-भाषा कुछ भी हो, वह अन्य प्रान्तों में हिन्दी से काम चला सके। सभी देशवासियों को एक-दूसरे के सम्पर्क में लाने की क्षमता के कारण हिन्दी को सम्पर्क-भाषा (Link language) भी कहते हैं।

2. **राजकीय उद्देश्य**—भारत की राजनैतिक सामाजिक एकता का पोषण करने के लिए, स्थिर रखने के लिए तथा चिर स्थायी बनाने के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की शिक्षा अनिवार्य है। हिन्दी सीख कर भारतवासी समस्त देश को एक समझें। हिन्दी राष्ट्रीय एकता की प्रतीक है। हिन्दी शिक्षण का यह प्रमुख उद्देश्य है कि देश की विभिन्न जातियों, धर्मावलम्बियों, प्रान्त-वासियों, समुदायों और वर्गों में एक भाषा द्वारा भावात्मक एकता, राष्ट्र-प्रेम, राष्ट्रीय गौरव सहकारिता, भ्रातृत्व और बन्धुत्व की वृद्धि हो जिससे समस्त राष्ट्र अधिक सुसंगठित बन जाए और साथ ही आन्तरिक भेद भाव और संकीर्ण प्रान्तीयता का समूल नाश हो जाए।

3 **प्रशासनिक उद्देश्य**—हिन्दी शिक्षण का प्रशासनिक उद्देश्य यह है कि शिक्षित भारतवासी तथा सरकारी कर्मचारी हिन्दी के प्रयोग में इतने प्रवीण बन जाएं कि देशव्यापी समस्त प्रशासनिक और राजकीय काम अंग्रेजी के बदले हिन्दी के माध्यम से कर सके। सचिवालय, न्यायालय, डाक, रेलवे, सूचना-प्रसार तथा अन्य सभी राजकीय विभागों में हिन्दी का प्रयोग तभी हो सकता है जब कर्मचारी हिन्दी का ज्ञान रखते हों। पिछले कई वर्षों से केन्द्रीय सरकार तथा प्रान्तीय सरकारों की ओर से कर्मचारियों के लिए हिन्दी सिखाने का प्रबन्ध होता रहा। वर्तमान कर्मचारियों के लिए इस दिशा में प्रयत्न श्लाघ्य है। परन्तु आने वाले कर्मचारियों की हिन्दी शिक्षा स्कूलों और कालिजों में ही हो सकती है। अतः विद्यालयों के सभी विद्यार्थियों के लिए हिन्दी की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।

4. **व्यावसायिक उद्देश्य**—जैसा पहले ही कहा गया है ऐसे कितने ही व्यवसाय हैं जिनके लिए हिन्दी की शिक्षा आवश्यक है, जैसे सरकारी नौकरी, सम्पादन पत्रिकारिता, शिक्षण आशुलिपिकता (Stenography), अनुसंधान, अनुवाद, नकल-नवीसी आदि। हिन्दी के प्रचार और प्रसार के साथ राष्ट्र-भाषा सम्बन्धी नये व्यवसायों का निर्माण होगा।

5. **साहित्यिक उद्देश्य**—देश के विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं का अपना-अपना साहित्य है, और ऐसे प्रत्येक साहित्य की अपनी विशेषताएं हैं।

हिन्दी अन्य प्रान्तीय भाषाओं के साहित्य से बहुत कुछ ग्रहण कर सकती है जिस से इसका साहित्य अधिक विशाल, समृद्धशाली और प्रगाढ़ बन सकता है। अब तक भी हिन्दी, बंगला आदि कई भाषाओं के साहित्य की ऋणी रही है। इस प्रकार अन्य भाषाएं भी हिन्दी साहित्य से बहुत कुछ ग्रहण कर सकती हैं। भाषाओं के साहित्य इस आदान प्रदान के द्वारा न केवल भारतीय भाषाएं पुष्ट होंगी, समस्त भारतीय साहित्य भी एक रूपता को ग्रहण करेगा और उन्नतशील होगा। इसके निमित्त यह आवश्यक है कि सभी अहन्दी भाषी हिन्दी साहित्य का अध्ययन करके अध्ययन-लाभ प्राप्त करें, अपने साहित्य को पुष्ट करें और आंचलित हिन्दी साहित्य का निर्माण करके हिन्दी साहित्य की अधिक अभिवृद्धि में सहायक सिद्ध हों। इस समय भी कितने ही गुजराती, मराठी, दक्षिण भारतीय, बंगाली, पंजाबी और कश्मीरी लेखक अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा के अतिरिक्त हिन्दी में रचनाएं लिखते हैं। इस समय भी प्रत्येक प्रांत की हिन्दी को पर्याप्त देन है। परन्तु हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रचार के साथ हिन्दी सभी देशवासियों की साहित्यक भाषा बनेगी और हिन्दी साहित्य में केवल उत्तर-प्रदेश वालों का ही एकाधिकार (Monoply) नहीं रहेगा।

6. **सांस्कृतिक उद्देश्य** हिन्दी भारतीय संस्कृति का दर्पण है अतः हिन्दी के अध्ययन से हमारे छात्र भारतीय धर्म, संस्कृति, इतिहास, भारतीय दर्शन और भारतीय साहित्य से परिचित होंगे। प्रत्येक छात्र को संस्कृत साहित्य के अध्ययन की सुविधाएं नहीं मिल सकतीं। परन्तु समस्त संस्कृत साहित्य हिन्दी में अनूदित हो रहा है। हिन्दी के माध्यम से प्राचीन भारतीय साहित्य का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

7. **भाषा विषयक उद्देश्य**—जैसा पहले कहा गया है कि विभिन्न भाषाओं के ज्ञान से बौद्धिक क्षितिज (Intellectual horizon) का विस्तार हो जाता है। दूसरी भाषा के ज्ञान से अपनी भाषा में दृढ़ता आ जाती है, नई शैलियों का ज्ञान हो जाता है और नए वाक्य प्रयोग सीखे जाते हैं। अहिन्दी भाषी अपनी भाषा के अतिरिक्त जब हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करेगा, तो वह नई शब्दावली, नए मुहावरे और नए प्रयोग सीखेगा। वह दो भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी कर सकेगा।

भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में प्रत्येक को द्विभाषी (Bilingual) बनना पड़ेगा। एक शिक्षित व्यक्ति जितनी अधिक भाषाएं सीख लेगा उतना अच्छा है।

जब हिन्दी इतर भाषा तथा राष्ट्र-भाषा के रूप में पढ़ाई जाए, तो उसकी शिक्षा का स्तर ऊंचा नहीं रहेगा जितना मातृ-भाषा की शिक्षा का। साधारणतया अहिन्दी-भाषा प्रदेशों में हिन्दी शिक्षण का आरम्भ चौथी कक्षा में किया जाता है; अतः चौथी कक्षा की हिन्दी का स्तर पहली कक्षा की मातृभाषा के स्तर के बराबर होगा। आठवीं कक्षा की हिन्दी का स्तर पांचवीं की मातृ-भाषा के स्तर व समान होगा। उच्च माध्यमिक विद्यालयों (Higher Secondary Schools) में नहीं, दसवीं और ग्यारहवीं कक्षा में हिन्दी का स्तर छठी, सातवीं और आठवीं की मातृ-भाषा के स्तर के समान होगा। इसका स्पष्टीकरण दी गई सारिणी से होगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालिका 6—इतर भाषा के रूप में हिन्दी का स्तर

कक्षाओं का नाम	कक्षाओं की सख्या	हिन्दी का स्तर मातृ-भाषा के रूप में	हिन्दी का स्तर इतर भाषा के रूप में
	1	1	
	2	2	
प्राइमरी या	3	3	
जूनियर बेसिक	4	4	1
	5	5	2
मिडिल या	6	6	3
सीनियर बेसिक	7	7	4
	8	8	5
हायर सैकेण्ड्री	9	9	6
या	10	10	7
उच्च माध्यकिक	11	11	8

ऊपर हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य मातृ-भाषा के रूप में तथा राष्ट्रीय-भाषा के रूप में दर्शाये गये हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी शिक्षण की दो और परिस्थितियां हैं। अब विदेशियों को हिन्दी सिखाने की आवश्यकता आरम्भ हुई है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा के कार्य-क्रम (National Adult Education programme) में व्यस्कों को हिन्दी सिखाने के लिए विशिष्ट विधि का अवलंबन करना पड़ेगा।

सारांश यह है कि हिन्दी सीखने वालों के निम्नलिखित वर्ग हैं :—

1. जिनकी मातृ-भाषा हिन्दी है उन्हें सिखाना।
2. अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों में हिन्दी के शिक्षण की उपयुक्त व्यवस्था।
3. विदेशियों को हिन्दी सिखाना।
4. वयस्कों को हिन्दी सिखाना।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. 'एक राष्ट्र एक भाषा' के सिद्धान्त का समर्थन करते हुए हिन्दी को राष्ट्रीय महत्ता पर एक लेख लिखें। (§ 13)

2. हिन्दी शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए। स्कूलों में हिन्दी की वर्तमान स्थिति में उन उद्देश्यों की पूर्ति कहां तक होती है ? (§ 14)

3. मातृ-भाषा की शिक्षा पर विद्यार्थियों का मानसिक और बौद्धिक विकास निर्भर है। इस कथन की विवेचना कीजिए और स्कूलों में मातृ-भाषा की शिक्षा पर ध्यान न देने का बुरा परिणाम समझाइए। (§ 14)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. भारत के अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी की स्थिति क्या है । वहां पर हिंदी शिक्षण के उद्देश्य क्या हैं और उसका स्तर कितना ऊंचा होगा ? (§ 13, § 15)

5. वर्तमान भारतीय भाषाओं में हिन्दी का क्या स्थान है ? राष्ट्रीय भाषा के पद पर यह कैसे आरूढ़ हुई ? (§ 12)

6. हिन्दी शिक्षण के मातृ-भाषा के रूप में तथा राष्ट्रभाषा के रूप में विभिन्न उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए । (§ 14 § 16)

सहायक पुस्तकें

1. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्य — आर्य-भाषा और हिन्दी ।
2. धीरेन्द्र वर्मा — हिन्दी भाषा का इतिहास
3. A. R. Wadia — Future of English in India.
4. W. S. Gray. — Teaching of Reading and Writing.
5. UNESCO — Teaching of Modern Langvages.s Ch. Special problems of language
6. Maxim Newmark — 20th century Modern language Teaching, philosophical Library New York Ch.
7. Vernon Mallinson — Teaching a Modern language,
8. Ministry of Eduction New Delhi — Hand book for Teachers of Basic School. pp. 178, 291.
9. ,, ,, ,, — Secondary Education Commission Report. Ch. V. study of Languages.
10. ,, ,, ,, — Report of the official Language Commission 1956.
11. The Dept. of Extension Services P. S. M. Jubbalpur — Report of the all India Seminar on teaching of Indian Languages.

————

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति और विकास

§ 17. भारत यूरोपीय भाषा—

~~भारत~~ भाषा एक प्रकार अर्जित सम्पत्ति है। प्रत्येक भाषा का सम्बन्ध उस भाषा को बोलने वाले समाज की प्राचीन भाषा के साथ अवश्य होता है। उस प्राचीन भाषा में कालानुसार परिवर्तन होते रहते हैं। भाषा एक बहती हुई नदी के समान समय-समय पर और स्थान-स्थान पर अपना रूप बदलती रहती है। हिन्दी भाषा का जो रूप हमारे साने उपस्थित है। वह एक प्राचीन भाषा का शताब्दियों और सहस्त्रों वर्षों बाद का आधुनिक रूप है। भाषा परिवर्तनशीलता के कारण उससे कुछ पुराने तथ्य लुप्त हो जाते हैं और कुछ नए तथ्यों का आविर्भाव हो जाता है। इस प्रकार हिन्दी के आधुनिक रूप में उस प्राचीन भाषा के कई तथ्य लुप्त हो गए हैं और कालानुसार उसमें कुछ नये तथ्य आ गए हैं।

यह प्राचीन भाषा जिसके साथ हम हिन्दी भाषा का सम्बन्ध स्थापित करते हैं, भारत-यूरोपीय भाषा है। संसार की समस्त भाषाएं एक दर्जन के लगभग प्राचीन भाषा परिवारों के साथ सम्बन्ध रखती हैं। उन भाषा परिवारों में भारत यूरोपीय भाषा-परिवार प्रमुख स्थान रखता है। इस भाषा-परिवार से सम्बद्ध भाषाएं समस्त यूरोप, उत्तर-भारत, अफगानिस्तान तथा ईरान में बोली जाती हैं। संस्कृत, पाली, पुरानी ईरानी, ग्रीक, लेटिन आदि प्राचीन भाषाएं इसी कुल की थीं। आजकल इस कुल से अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, रोमन, नई ईरानी, हिन्दी, मराठी, बंगाली, पंजाबी आदि भाषाएं हैं।

भारत यूरोपीय भाषा आर्य जाति की प्राचीन भाषा थी। यह भाषा उस समय प्रचलित थी जब आर्य जाति एक ही स्थान पर निवास करती थी। वह मूल निवास स्थान भारत था, या मध्य एशिया था, अथवा यूरोप था। यह बात आज भी विवादास्पद है। अपने मूल निवास स्थान से आर्य-जाति दूर-दूर तक फैल गई और इसकी भाषा स्थानीय भेदों कारण विभिन्न शाखाओं में विभक्त हुई। इन दो शाखाओं के प्रधान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वर्गों का नाम भाषा वैज्ञनिकों ने केण्टुम वर्ग और शतम वर्ग रखा है । केण्टुम वर्ग की भाषाएं यूरोप में फैल गई और इन्हीं से वर्तमान अंग्रेजी, जर्मन, इटेलियन, फ्रैंच, यूनानी आदि यूरोपीय भायाएं निकली हैं । शतम वर्ग की प्रधान भाषा भारत, ईरानी भाषा है आर्यों की जो शाखा ईरान और भारत में बस गई, इस भाषा को भारत.ईरानी भाषा कहते हैं । भारत-ईरानी उपकुल में तीन शाखाएं हैं । प्रथम में भारतीय आर्य भाषाएं, दूसरी में इरानी भाषाएं और तीसरी में दर्द या पैशाची भाषाएं आ जाती है । भारतीय आर्य भाषाओं का प्राचीनतम रूप वेदों में पाया जाता है । वेदों के समय से आज तक इस भारत-उपकुल में समय के अनुसार अनेक परिवर्तन हुए हैं । परिवर्तन के साथ एक ही वैदिक भाषा की कितनी ही शाखाएं बन गई हैं । आधुनिक उत्तरी भारत की सभी भाषाएं वैदिक संस्कृत से निकली हैं । यद्यपि वेदों की रचना के सम्बन्ध में कोई निश्चित तिथि निर्धारित नहीं की जा सकती, तथापि विद्वान् इस बात पर एक मत हैं कि आज से पांच हज़ार वर्ष पूर्व वेदों की रचना अवश्य हो चुकी थी । इन पांच हज़ार वर्षों में भी अनेक परिवर्तन हुए । इस सारी अवधि को हम तीन कालों में विभक्त कर सकते हैं—प्राचीन, काल, मध्य काल और आधुनिक काल ।

§ 18. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा

प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा काल में सर्व प्रथम हम वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ और उपनिषदों की भाषा पाते है । वेदों में सबसे प्राचीन ऋग्वेद है और उसकी भाषा प्राचीनतम है, जो प्राचीन ईरानी भाषा अवेस्ता के निकट है । उपनिषद आदि रचनाओं के बाद वेदांग साहित्य और तत्पश्चात् सूत्र साहित्य की रचना हुई । अब तक वैदिक भाषा में इतना परिवर्तन हुआ था कि पाणिनी जैसे व्याकरणाचार्य को इस भाषा को नियमबद्ध बनाने की आवश्यकता पड़ी । पाणिनी के बाद यही भाषा नियमबद्ध और परिमार्जित होने के कारण संस्कृत भाषा कहलायी । रामायण और महाभारत की रचना संस्कृत भाषा में हुई । संस्कृत भाषा एक समय उत्तरी भारत की बोलचाल की भाषा थी परन्तु कालानुसार यह भी बिगड़ गई । यद्यपि साहित्य और राजकीय भाषा नियमबद्ध संस्कृति ही रही, परन्तु जनसाधारण की भाषा बिगड़ी हुई बोली बनने लगी । गौतमबुद्ध के समय में जनसाधारण की बोली साहित्यक संस्कृत में पर्याप्त अन्तर उत्पन्न हो गया था । गौतमबुद्ध के समय से भारतीय आर्य भाषा का मध्यकाल आरम्भ होता है ।

§ 19. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल—

यह काल ई० पू० 500 से 10000 ई० तक माना जाता है । इस काल में सर्व प्रथम पाली भाषा और अशोक की धर्मलिपि की भाषा उदाहरण रूप में आती हैं । अशोक की धर्मलिपियों में उत्तरी भारत की भाषा में तीन विभिन्न रूप पूर्वी, पश्चिमी और पश्चिमोत्तरी अवश्य थी । लोगों की बोली में बराबर परिवर्तन होता रहा । अशोक धर्मलिपियों की भाषाएं ही बाद की 'प्राकृत' के नाम से प्रसिद्ध हुई । इस काल में संस्कृत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के साथ-साथ साहित्य में इन प्राकृतों का भी व्यवहार होने लगा। इसमें कितने ही काव्यग्रन्थ और धर्म पुस्तकें लिखी गईं। संस्कृत नाटकों में उनका प्रचर प्रयोग हुआ। इस समय की बोलियों के चार रूप मिलते हैं। पश्चिमी भाषा का मुख्य रूप शौरसेनी प्राकृत था, पूर्वी का मागधी प्राकृत (अर्थात मगध या दक्षिण बिहार की भाषा), इन दोनों के बीच में अर्ध-मागधी (जो इनका मिश्रित रूप था) और चौथी दक्षिण रूप महाराष्ट्री प्राकृत थी, प्राकृति भाषाओं का समय 500 ई० तक है। इसके उपरान्त इन भाषाओं में इतने परिवर्तन आ चुके थे कि साहित्य में प्रयुक्त होने वाले नियमबद्ध प्राकृति और जनसाधारण को प्राकृत में पर्याप्त अन्तर दृष्टिगोचर होने लगा। जिसके फलस्वरूप इन बिगड़ी हुई प्राकृत बोलियों का नाम अपभ्रंश पड़ा। अपभ्रंश भाषाओं का का काल 500 से 1000 ई० तक है। प्रत्येक प्राकृत का एक अपभ्रंश रूप आ रहा है।

§ 20 आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा काल –

इस काल में अर्थात् 1000 ई० से वर्तमान समय तक भारत की वर्तमान आर्य भाषाओं से हुई है। शौरसेनी अपभ्रंश से हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी और पहाड़ी भाषाओं का सम्बन्ध है। पूर्वी हिन्दी का सम्बन्ध अर्धमागधी अभ्रंश के साथ है। बिहारी, बंगला, आसामी और उड़िया का सम्बन्ध मागधी अपभ्रंश से है और मराठी का महाराष्ट्री अपभ्रंश के साथ।

इस प्रकार हमारी हिन्दी भाषा का जन्म शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। हिन्दी साहित्य का आरम्भ ग्यारहवीं शताब्दी से होता है। इस भाषा का प्रारम्भिक रूप हम 'खुमान रासो', 'बीसलदेव रासो' और 'पृथ्वीराज रासो' नामक वीर-रसपूर्ण काव्य ग्रंथों में देखते हैं। आरम्भ काल से वर्तमान काल तक हिन्दी भाषा के रूप में अनेक परिवर्तन हुए तथा उसके कई भेद-उपभेद बने। हिन्दी के प्रमुख भेद हैं—पूर्वी और पश्चिमी हिन्दी। पश्चिमी हिन्दी मध्यप्रदेश (अर्थात् दिल्ली, अम्बाला का ज़िला और उत्तर प्रदेश का पश्चिमी भाग) की भाषा है। मेरठ तथा दिल्ली के निकट बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी के ही एक रूप खड़ी बोली से वर्तमान साहित्य उर्दू तथा हिन्दी की उत्पत्ति हुई। इसकी एक दूसरी बोली ब्रजभाषा मथुरा के आस-पास बोली जाती है। इन दो बोलियों के अतिरिक्त पश्चिमी हिन्दी में बांगरू, कन्नौजी और बुन्देली बोलियां भी सम्मिलित हैं। हमारी राष्ट्रीयभाषा का वर्तमान साहित्यिक खड़ी बोली का ही वर्तमान रूप है। पूर्वी हिन्दी में अवधी प्रमुख है, जो अवध के आस-पास जन-साधारण की बोली है। 2000 वर्षों के हिन्दी विकास में हिन्दी का जो रूप बना वह इसकी जननी संस्कृत पाली से भिन्न बना। इसने नया रूपधारण किया, नया व्याकरण ग्रहण कर लिया। संस्कृत संश्लेषणात्मक भाषा है, हिन्दी विश्लेषणात्मक है। संस्कृत के वर्णों के 300 रूप हैं। और हिन्दी में केवल 64 रह गए हैं। संस्कृत में दो स्वर पास-पास नहीं आते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कृत में व्यंजन पास-पास नहीं आते। हिन्दी में भी दो स्वर पास-पास नहीं आते और सन्धि नहीं होती। सन्धि केवल उत्सम शब्दों में होती है। हिन्दी ध्वनियों में भी कई परिवर्तन हुए हैं। संस्कृत के ऋ, ॠ, ऌ, ॡ और ज्ञ का उच्चारण हिन्दी में वैसा नहीं रहा। ॠ तथा ॡ का प्रयोग नहीं रहा। श और ष का अन्तर भूल गए। ह्रस्व ए तथा ओ की ध्वनियां आ गईं। अन्तिम 'अ' का उच्चारण लुप्तप्राय हुआ। शब्द के बीच में भी अ का उच्चारण लुप्त हो गया जैसे चलता-फिरता का उच्चारण 'चलता-फिर्ता' है 'चल्अता-फिर्अता' नहीं।

हिन्दी का भी लिंग, वचन और कारक संस्कृत से भिन्न हैं। 'ने' और 'को' का प्रयोग जटिल है। हिन्दी में संस्कृत तत्सम् शब्दावली के अतिरिक्त तत्भव, देशी और विदेशी शब्दों का प्रयोग है। अंग्रेज़ी के शब्दों की नहीं। हिन्दी के वाक्य-गठन पर अंग्रेज़ी वाक्य गठन का प्रभाव पड़ा है। अंग्रेज़ी के अनुवाद करने के कारण अंग्रेज़ी प्रकार के जटिल वाक्य हिन्दी में भी आ गए हैं।

हिन्दी का शब्दार्थ—

हिन्दी शब्द फारसी भाषा का शब्द है। फारस में हिन्दी का शब्दार्थ हिन्दी से सम्बन्ध रखने वाला है। हिन्दी संस्कृत के 'सिन्धु' का ईरानी रूप है। 'सिंधु' शब्द का तात्पर्य सप्त सिन्धु अर्थात् भारतीय आर्यों का प्राचीन देश (पंजाब) अथवा समस्त भारत है। हिन्दी शब्द मुसलमानों ने ईरान से आकर भारत की भाषा के अर्थ में प्रयुक्त किया। हिन्दी पर अधिकार जमाने के उपरान्त मुसलमानों ने दिल्ली के आसपास की भाषा का नाम हिन्दी रखा, जो शब्द आज तक प्रचलित है। इस प्रकार ब्रज अवधी और खड़ी बोली हिन्दी के अन्तर्गत आई। आजकल हिन्दी का जो रूप राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचलित है, वह खड़ी बोली का ही आधुनिक रूप है। ब्रज और अवधि का साहित्य लुप्तप्राय: सा हो गया और वे केवल ग्रामीण बोलियां ही रह गईं। खड़ी बोलियों का आधुनिक रूप टकसाली हिन्दी या स्टैंडर्ड हिन्दी है।

§ 21 हिन्दी शब्द समूह

यद्यपि हिन्दी भाषा की उत्पत्ति प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं से हुई है, फिर भी इसका समूह प्राचीन आर्य भाषाओं के अतिरिक्त और भी भाषाओं के प्रभाव से बना है। साधारण हिन्दी शब्द समूह तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

(क) भारतीय आर्य भाषाओं का समूह।

(ख) भारतीय आर्य भाषाओं से आए हुए शब्द।

(ग) विदेशी भाषाओं के शब्द।

(क) भारतीय आर्य भाषाओं के तत्सम् और तद्भव शब्द हिन्दी में प्रचुरता से पाये जाते हैं। तत्सम् का अभिप्राय संस्कृत के विशुद्ध शब्दों से है। जैसे 'अमृत', 'धर्म'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

देखिए : धीरेन्द्र वर्मा की हिन्दी भाषा का इतिहास : (हिन्दी की बोलियां)।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्द जो संस्कृत से आए हुए हैं और ज्यों के त्यों हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं । तद्भव वे शब्द हैं जो मध्यकालीन आर्य भाषाओं अर्थात संस्कृत और प्राकृत से आए हुए हैं और परिवर्तित रूप में हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं । हिन्दी का सांप शब्द संस्कृत के 'सर्प' और प्राकृत के 'सप्प' से निकला है । इसी प्रकार 'कन्हैया' या 'कान्हा' कृष्ण से निकल कर तद्भव रूप से हिन्दी में प्रयुक्त होता हैं ।

(ख) भारतीय अनार्य भाषाओं से आए हुए शब्द या तो दक्षिण की द्राविड़ बोलियों । (तामिल, तेलगु, कन्नड़ और मलयालम) से हिन्दी में घुस गए हैं, अथवा मुण्डा और कोल जाति की प्राचीन भाषाओं से निकले हैं ।

(ग) विदेशों भाषाओं के शब्दों से तात्पर्य है—

(1) फारसी, अरबी, तुर्की और पश्तो भाषाओं से आए हुए शब्द, जैसे—कैंची चाकू, लाख, किताब, बादशाह, फौज, मालिक आदि ।

(2) अंग्रेजी और यूरोपीय भाषाओं से आए हुए शब्द, जैसे-स्कूल, बोतल, अंग्रेजी रेडियो आदि । अंग्रेजी भाषा से आए हुए शब्दों की संख्या हिन्दी में कुछ कम नहीं ।

इस प्रकार हिन्दी ने भारतीय आर्य भाषा से उत्पन्न होकर देशी और विदेशी शब्दों से सम्पन्न होकर आधुनिक विकसित रूप धारण किया है । निम्न दी गई तालिकाओं के द्वारा हिन्दी का उद्गम स्पष्ट होगा—

भारत यूरोपीय भाषा परिवार

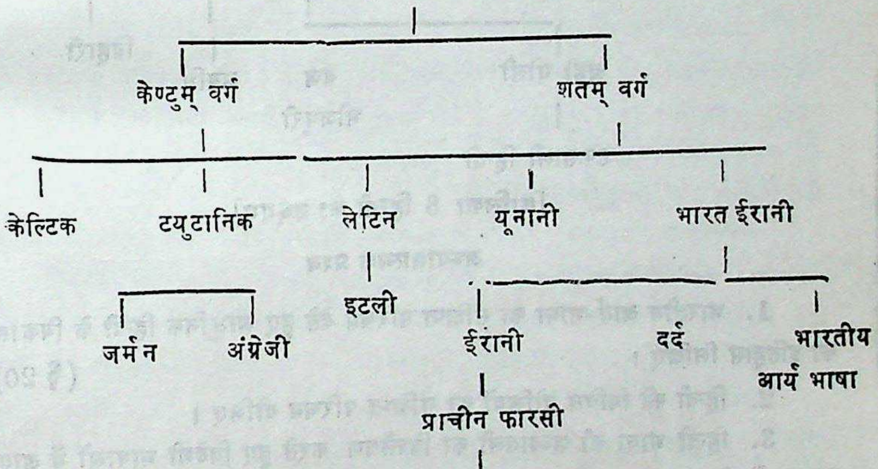

[तालिका—7 भारत-यूरोपीय भाषा परिवार]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतीय आर्य भाषा

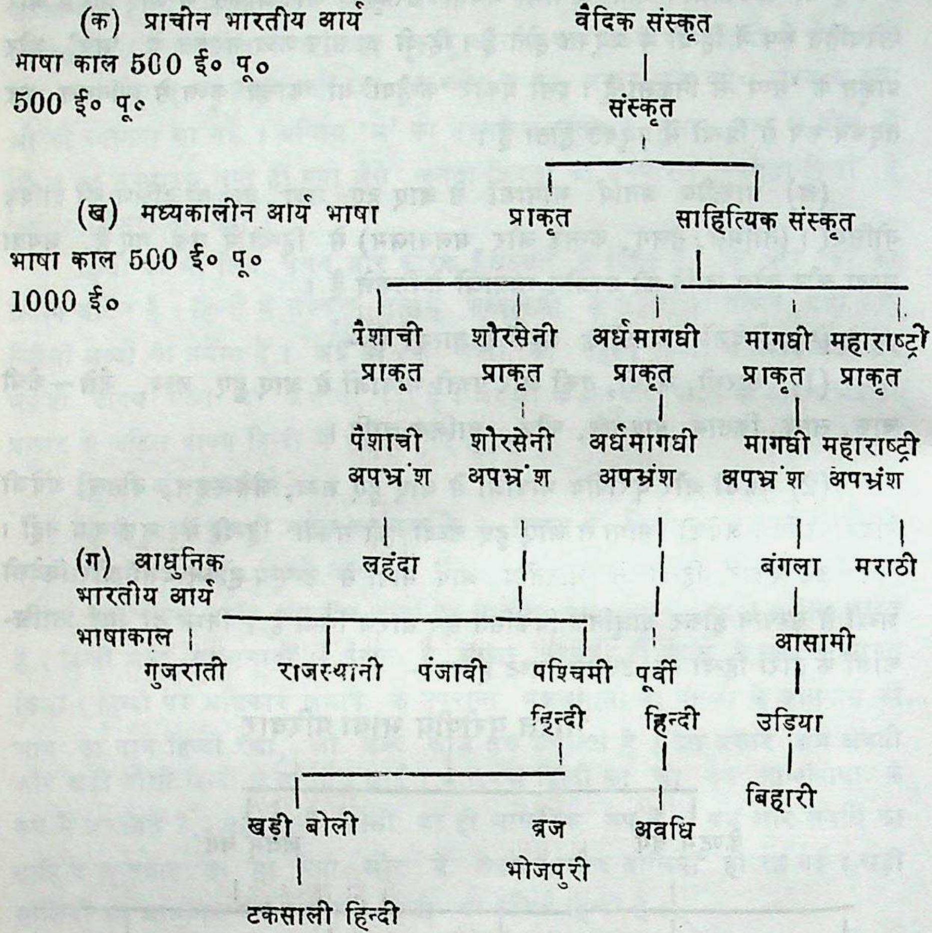

[तालिका 8 हिन्दी का उद्‌गम]

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. भारतीय आर्य-भाषा का संक्षिप्त परिचय देते हुए आधुनिक हिन्दी के विकास का इतिहास लिखिए। (§ 20)

2. हिन्दी की विविध बोलियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

3. हिन्दी भाषा की शब्दावली का विश्लेषण करते हुए विदेशी भाषाओं में आए हुए शब्दों की एक विस्तृत सूची दीजिए। (§ 21)

4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए
शौरसेनी, खड़ी, टकसाली, हिन्दी, अपभ्रंश शतम् वर्ग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. वर्तमान काल में हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास पर एक लेख लिखें।

(पंजाब बी० एड० 1958)

6. वर्तमान काल तक हिन्दी भाषा के उद्‌गम और विकास पर एक लेख लिखें।

(पंजाब बी० एड० 1957, 1958)

सहायक पुस्तकें

1. धीरेन्द्र वर्मा — हिन्दी भाषा का इतिहास
2. भोलानाथ तिवारी — भाषा विज्ञान
3. S. K. Chatterji — Indo Aryan and Hindi.
4. Woclner, A. C. — Introduction to Prakrit.
5. Linguistic Society of India, Calcutta — Indian Lingusities. Vols 1—14, 1931—54
6. मैक्समूलर — भाषा विज्ञान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4
शिक्षा का माध्यम

§ समस्या का महत्त्व

भारतीय शिक्षा के पुनर्निर्माण क्षेत्र में शिक्षा-प्रौढ़ों और शिक्षा व्यवस्थापकों के सम्मुख माध्यमिक स्तर और विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा के माध्यम की समस्या है। विदेशी शासन के हटने और भारतीय स्वाधीनता के नवीन स्वर्णयुग के उदय होने के साथ ही यह समस्या उत्पन्न हो गई है। पाश्चात्य मिशनरियों का अंग्रेज़ी शासकों ने भारत पर सांस्कृतिक आधिपत्य जमाने तथा प्रशासन के निमित्त अंग्रेज़ी भाषा भारत-वासियों पर थोपी थी। लार्ड मैकाले का अभिप्राय उसी के स्पष्ट शब्दों में यह था कि अंग्रेज़ी भाषा द्वारा भारतीय का ऐसा वर्ग बनाया जाए जिसके सदस्यों की रगों में भारतीय खून हो, किन्तु जो रुचि, आचार और सभ्यता की दृष्टि से अंग्रेज़ वर्ग जैसा हो। यह वर्ग अंग्रेज़ी शिक्षा को जनता में फैलाता चलेगा। मैकाले का यह स्वप्न सत्य निकला, क्योंकि आजकल हम अधिकांश शिक्षित वर्ग अंग्रेज़ी तथा पश्चिम का अन्धानुकरण करने, अंग्रेज़ी वेश-भूषा पहनने, अंग्रेज़ी भाषा बोलने में गर्व अनुभव करते हैं और केवल क्लर्की की योग्यता रखते हैं। आज अंग्रेज़ी भाषा शासन की भाषा, संचार की भाषा, शिक्षा, के माध्यम की भाषा बन गई है। ऐसी अवस्था कब तक रहनी चाहिए? इसलिए हमारे संविधान में भी पन्द्रह वर्ष के भीतर हिन्दी का अंग्रेज़ी भाषा का स्थान लेना निश्चित हुआ था। शासन में ऐसा होना अनिवार्य है, परन्तु शिक्षा में यह समस्या अब भी वैसी ही है।

समस्या के तीन रूप – शिक्षा के माध्यम की समस्या के तीन सुझाव हैं—

(1) शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी हो।

(2) शिक्षा का माध्यम प्रादेशिक भाषाएं (Regional Languages) हों।

(3) शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो।

आइये इन मतों पर हम विचार करें।

§ 23. शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी

इस मत के अवलम्बी बहुत से विद्वान् हैं, उनकी अपनी युक्तियां हैं। परन्तु हमें इस समस्या पर गम्भीरता के पक्षपात-शून्य होकर विचार करना होगा। सत्य तो यह है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि एक विदेशी भाषा को शिक्षा का माध्यम रखना मूर्खता है। शिक्षण विधि की दृष्टि से विदेशी भाषा में शिक्षा देना व्यर्थ है। विदेशी भाषा न तो ज्ञान-प्राप्ति का सरल साधन है और न ही अभिव्यक्ति का सीधा माध्यम। प्रायः बुद्धिमान् बालक भी विदेशी भाषा की कठिनाइयों के कारण शिक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। एक विदेशी भाषा के माध्यम द्वारा पढ़ना शक्ति का व्यर्थ नाश नहीं, तो और क्या है? एक विद्वान् की यह उक्ति कि अंग्रेज़ी भाषा उच्च वैज्ञानिक और दार्शनिक विचारों की अभिव्यक्ति के साधन के रूप में प्रतिष्ठित भाषा है, सर्वथा भ्रान्तिपूर्ण है। उच्च विचारों के लिए हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत, अंग्रेज़ी से अधिक श्रेष्ठ है और संस्कृत से उत्पन्न उत्तरी भारत की आधुनिक भाषाएं भी इस क्षेत्र में कम उपयोगी नहीं। वैज्ञानिक उच्च बौद्धिक विषयों में अंग्रेज़ी काम आए, परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि अंग्रेज़ी शिक्षा का ही माध्यम बन जाए। इस विषय में राजभाषा आयोग की निम्न उक्तियां पठनीय हैं—

'लेकिन किसी विदेशी भाषा के खास उद्देश्यों से कुछ विशिष्ठ वर्गों द्वारा द्वितीय भाषा के रूप में व्यवहार करने में और शिक्षा के या देश के दैनिक कार्यों को चलाने के लिए मुख्य या एक मात्र माध्यम के रूप में प्रयोग करने में बहुत अन्तर है।'

'इसलिए डेढ़ सौ वर्ष तक प्रशासन उच्च शिक्षा अदालतों और सामान्य सार्वजनिक जीवन में अंग्रेज़ी भाषा के एकमात्र माध्यम रहने पर भी 6 करोड़ साक्षरों में केवल 38 लाख लोग ही ऐसे निकले जिन्हें अंग्रेज़ी का पर्याप्त ज्ञान है।

''स्पष्ट है कि प्रारम्भिक शिक्षा के बाद बालक को यदि चौदह वर्ष की अवस्था तक द्वितीय भाषा के रूप में अंग्रेज़ी पढ़ाई जाए तो उसे अंग्रेज़ी भाषा का इतना ज्ञान न हो पाएगा कि वह उसे जीवन पर्यन्त याद रखे, क्योंकि विदेशी भाषा सीखने में एक तो यों ही कठिनाई होती है, दूसरे अंग्रेज़ी भाषा की विशिष्टताओं का भारतीय भाषाओं से दूर का भी नाता नहीं।''[1]

हमारी भारतीय भाषाओं की आधुनिक शोचनीय दशा का कारण यह है कि चिरकाल तक उनकी उपेक्षा की गई है। उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाने का उत्तरदायित्व अब हम पर है।

विदेशी माध्यम की इस बात का महान् कारण है कि भारतीय जनता का एक छोटा भाग केवल 15% शिक्षा की ओर आकृष्ट है। यदि शिक्षा का माध्यम एक भारतीय भाषा हो तो विद्यालय अधिक लोगों को आकृष्ट कर सकते हैं। अतः विदेशी माध्यम हमारे शिक्षा प्रसार में सबसे बड़ा विघ्न है।

विदेशी माध्यम से प्रत्येक पीढ़ी की शक्ति का निरर्थक उपयोग होता है। ज़रा सोचिए और तोलिए कि अंग्रेज़ी भाषा के एक शब्द को सीखने के लिए भारतीय जनता प्रत्येक पीढ़ी कि कितनी शक्ति व्यय हो जाती है? एक करोड़ विद्यार्थियों में प्रत्येक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

1. देखिए, राजभाषा आयोग का प्रतिवेदन, पृष्ठ 28-29।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्यार्थी अंग्रेज़ी के सैकड़ों और सहस्रों शब्दों को सीखता जाता है और इस प्रकार अपनी शक्ति का ह्रास करता है। यह शक्ति हिन्दी भाषा के सीखने में लगाई जा सकती है जिससे देश के महान् उपकार होगा।

यदि सांस्कृतिक दृष्टि से देखा जाए तो अंग्रेज़ी भाषा विदेशी संस्कृति का ही माध्यम बन सकती है, भारतीय संस्कृति का माध्यम नहीं। हमारे भारतीय आदर्श, रूढ़ियां, प्रथाएं, परम्पराएं, विचार, दर्शन, धर्म आचरण, आदि भारतीय भाषा द्वारा ही सिखाए जा सकते हैं और यह भी लज्जा की बात है कि हम अपनी भाषा को छोड़कर विदेशी भाषा को अपनाएं विशेषकर जब हमने विदेशी शासन से मुक्ति प्राप्त करके स्वायत्त शासन की नींव डाली है।

§ 24 प्रादेशिक भाषाएं शिक्षा का माध्यम हों

अंग्रेज़ी भाषा के विरोधियों में बहुत से विद्वान् प्रादेशिक भाषाओं (Regional Languages) को शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते हैं। उनकी युक्ति यह है कि भारत के प्रत्येक प्रदेश (Region) में कोई न कोई भाषा बोली जाती है, जो उस प्रदेश के निवासियों की मातृ-भाषा है। मातृ-भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने में पाठन-विषय सुगम और सुबोध बनता है। इस मत की युक्ति में कुछ सत्य है, परन्तु अन्य कारणों से यह सुझाव भारत के लिए तथा शिक्षा के लिए भयंकर हानिकारक और विष-वर्धक है। प्रादेशिक भाषाओं का स्थान केवल प्राईमरी स्कूलों के शिक्षा के माध्यम के रूप में होना चाहिए। मिडिल, हायर सैकेण्डरी तथा कालेजों में राष्ट्र-भाषा ही उपयुक्त माध्यम है। प्रादेशिक भाषाओं की स्थिति निम्न है—

(1) प्रत्येक प्रान्त की अपनी-अपनी प्रादेशिक भाषा है। यदि प्रादेशिक भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए, तो एक प्रान्त के अध्यापक, जो अपनी मातृ-भाषा में शिक्षण ग्रहण करते हैं, तथा एक प्रान्त के विद्यार्थी, जो अपनी मातृ-भाषा में पढ़ाने में समर्थ हैं, दूसरे प्रान्तों में पठन-पाठन का काम नहीं कर सकते। इस प्रकार शिक्षा का भी प्रान्तीय विभाजन होगा।

(2) प्रत्येक प्रान्त में प्रत्येक विषय के लिए पृथक्-पृथक् साहित्य का निर्माण करना पड़ेगा। आजकल तो अकेली भाषा हिन्दी में ही सभी विषयों में उपयुक्त पाठ्य पुस्तकें बनाने के लिए पर्याप्त साधन और धन नहीं, तो चौदह प्रादेशिक भाषाओं में विद्यार्थियों के लिए पठन-सामग्री तैयार करने के लिए कितना धन और समय चाहिए, यह विचारणीय विषय है।

(3) प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने पर हिन्दी क्षेत्र के विद्यार्थी हिन्दी के समुचित ज्ञान के कारण अन्य प्रदेशों के विद्यार्थियों से नौकरी आदि में बाज़ी लेंगे। दक्षिण भारत के विद्यार्थी हिन्दी भाषा से या तो अनभिज्ञ रहेंगे अथवा हिन्दी भाषा का न्यून ज्ञान रखेंगे। उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी हिन्दी में पत्र-व्यवहार और शासन कार्य करने में पूर्ण समर्थ होंगे। यह एक ऐसी विषमता होगी जिसको दूर करने का कोई उपाय नहीं होगा।

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(4) प्रत्येक राज्य में प्रशिक्षण-महाविद्यालय (Training Collage) खोलने में भी यही कठिनाई उपस्थित होगी कि उनमें प्रादेशिक भाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाने से एक प्रदेश के अध्यापकों को छोड़ कर अन्य प्रदेश के अध्यापक न अध्ययन कर सकेंगे और न नौकरी कर सकेंगे।

(5) अंग्रेज़ी के हटाने से अंग्रेज़ी पारिभाषिक शब्द (Technical Terms) प्रादेशिक भाषाओं में पढ़ने पढ़ेंगे, जो सरल कार्य नहीं। राष्ट्रभाषा में पारिभाषिक शब्द बनाने का कार्य अभी भी पूरी तरह से सम्पादित नहीं हुआ, तो प्रत्येक प्रादेशिक भाषा में ऐसा कार्य समाप्त करना कितना दुष्कर होगा।

(6) प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की पृष्ठ-भूमि में केवल साम्प्रदायिक प्रान्तीय भावना कम कर रही है। यही प्रान्तीय भावना देश को खण्ड-खण्ड करने और भाषा-प्रान्तों के रूप में विभक्त करने की मांग उत्पन्न करने के लिए उत्तरदायी है। यह मांग निराधार और निर्मूल है। यदि सरकार प्रान्तीय भावना वाले सम्प्रदायों से दब कर उनकी मांग पूरा करने पर विवश हो जाए, तो निश्चय ही देश की एकता नष्ट हों जाएगी। 1954 में हुए, केन्द्रीय सरकार के अधीन माध्यमिक शिक्षा आयोग ने इस समस्या को हल करने की कोशिश की परन्तु खेद है, आयोग ने भी प्रादेशिक भाषाओं पर बल दिया। इसके उपरान्त राज्य आयोग पुनर्संगठन (States Reorganisation Commission) ने भी प्रादेशिक भाषाओं पर अधिक बल दिया। निश्चय ही इन आयोगों का निर्माण विषयगत (Subjective) और एकांकी है। उस विषय में केन्द्रीय सरकार की ओर से एक सशक्त नीति का अभाव है। संविधान में अधिनियम 343 में हिन्दी के अंग्रेज़ी का स्थान लेने के लिए 15 वर्ष की अवधि निश्चित हुई परन्तु यह निश्चित नहीं किया गया है कि 15 वर्ष की अवधि के बाद अंग्रेज़ी अवश्य हटेगी। उसका परिणाम यह निकला कि आज भी 1986 में हिन्दी वहीं पर है जहां 1947 में थी। राज्यों को अपनी सीमाओं के भीतर प्रादेशिक भाषाओं के स्वच्छन्द प्रयोग की अनुमति दी गई। इससे भी हिन्दी का पक्ष दुर्बल हो जाता है। रूस में भी 150 प्रादेशिक भाषाएं हैं, परन्तु राष्ट्रीय एकता के निमित्त केवल रूसी भाषा ही प्रशासनिक कार्यों में प्रयुक्त की जाती है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका द्वारा भी पिछली शताब्दी में प्रादेशिक भाषाओं का झगड़ा मिटाया गया और अंग्रेज़ी को सर्वोच्च स्थान दिया गया।

स्मरण रहे कि जार्ज वाशिंगटन ने जब संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा की तो उसी समय उस ने राष्ट्र की राष्ट्रभाषा का भी निर्णय घोषित किया कि सभी राज्यों (Stats) में चाहे उनकी क्षेत्रीय भाषा फ्रैंच है या जर्मन या स्पेनिश या पुर्तगीज़ या अंग्रेज़ी, राजशासन की भाषा तथा शिक्षा का माध्यम केवल एक भाषा होगी और वह होगी अंग्रेज़ी। आरम्भ में अंग्रेज़ी से भिन्न भाषा बोलने वालों को अपनी मातृ भाषा के अतिरिक्त अंग्रेज़ी अनिवार्य रूप से सीखनी पड़ी। कालान्तर में अथवा तीन, चार पीढ़ियों के पश्चात् उनकी मूल मातृ भाषा लुप्तप्राय: हो गई और घरेलू व्यवहार में भी अंग्रेज़ी भाषा ही चल पड़ी। आजकल वहां पर वे सभी नागरिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इटली में शिक्षा का स्तर ऊंचा नहीं ? वहां भी तो अंग्रेज़ी भाषा शिक्षा का माध्यम नहीं ।

(च) कई विद्वानों का आक्षेप है कि संस्कृत के पण्डितों ने हिन्दी भाषा को संस्कृत गर्भित बना कर बोल-चाल की भाषा से बहुत कठिन बनाया है । परिभाषिक शब्द भी संस्कृत से खोज कर लाकर इतने कठिन बनाए हैं कि उनको हृदयंगम करके प्रयुक्त करना टेढ़ी खीर है । अंग्रेज़ी के नित्यप्रति प्रयोग में आने वाले शब्द भी संस्कृत के कठिन शब्दों से बदलाए जा रहे हैं । उदाहरण के रूप में 'बाईसिकल' के लिए 'द्विचक्र' 'रेल' के लिए 'लोहपथ गामी' 'रेशमी टाई' के 'रेशमी कंठलंगोट' कहना कठिन ही नहीं उपहासास्पद भी है । यह आक्षेप बहुत कुछ ठीक है । साधारण प्रयोग में आए हुए शब्दों को बदलना भाषा-सिद्धान्त के विरुद्ध है । रेल, गिलास, टैलीफोन, कोट आदि सहस्रों अंग्रेज़ी शब्द, ज़रूर, उस्ताद, किताब आदि सहस्त्रों अरबी फारसी शब्द, जो दैनिक प्रयोग में आते हैं, भाषा में से निकाल देने से और उनके बदले संस्कृत के कठिन शब्द रखने से कोई लाभ नहीं । कोषकारों को चाहिए कि ऐसे शब्दों को छोड़ कर, शेष आवश्यक विदेशी शब्दों का रूपान्तर करें । इसी विचार को दृष्टि में रखकर केन्द्रीय सरकार ने डॉ० रघुवीर के कोष के होते हुए भी कोष-कार्य अपने हाथ में लिया । परन्तु एक भ्रांति की दूर करने की आवश्यकता पड़ती है । ऐसा हो नहीं सकता कि प्रशासन और विज्ञान-ज्ञान के लिए जो भाषा प्रयोग में लाई जाएगी, वह उतनी ही सरल हो, जितनी प्रेमचन्द्र के उपन्यासों की । क्योंकि ऐसा प्राय: देखा गया है कि किसी देश में दो प्रकार की भाषाएं प्रयोग में लाई जाती हैं एक सरल, सुबोध, बोलचाल की भाषा दूसरी ज्ञान-विज्ञान के साहित्यिक भाषा जो जनसाधारण की भाषा से कठिन होती है । एक अंग्रेज किसान अपनी अंग्रेज़ी भाषा के लेखक बर्ट्रण्ड रसल (Bertrand Russel) की किसी पुस्तक का एक अक्षर भी नहीं समझ सकता । इस प्रकार हमारी प्रशासन और साहित्य में प्रयोग आने वाली भाषा जन-साधारण की भाषा से अवश्यमेव कठिन होगी और ऐसी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रत्येक शिक्षित और विशेषकर शिक्षक को तैयार होना चाहिए ।

उपयुक्त आक्षेपों का उत्तर देने के पश्चात् उच्च शिक्षा स्तर पर हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने के निम्न लाभ दिये जाते हैं । इन लाभों से सिद्ध होता है कि हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम बनने की अधिकारिणी है

§ 26. हिन्दी के शिक्षा का माध्यम बनने से निम्न लाभ प्राप्त हैं—

(1) हिन्दी राष्ट्र भाषा है, जो प्रशासन और राष्ट्रीय कार्यों में अंग्रेज़ी का स्थान ले रही है । भविष्य में प्रत्येक सरकारी कर्मचारी के लिए हिन्दी का ज्ञान अनिवार्य होगा । इसके लिए समस्त देश में अभी से हिन्दी में शिक्षा देने की आवश्यकता है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(2) जैसे अंग्रेज़ी भाषा भारत के भिन्न-भिन्न प्रांतों और खण्डों को एक

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संगठन में बांधने में समर्थ थी, वैसे ही हिन्दी भी एकता उत्पन्न करने में समर्थ है।

(3) हिन्दी को ही शिक्षा का माध्यम बनाने से समस्त भारत के लिए एक ही पाठ्यक्रम, समान ग्रन्थ-संग्रह और समान स्तर होगा। ऐसा अन्य प्रकार से दुर्लभ है।

(4) एक ही भाषा हिन्दी की शिक्षा का माध्यम बनाने से, एक ही भाषा हिन्दी में पाठ्य पुस्तकें बनाने की आवश्यकता है और उसके लिए केन्द्रीय सरकार सुगमता से प्रबन्ध कर सकती है।

(5) अध्यापक और विद्यार्थी भारत के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक किसी भी स्थान पर पठन-पाठन कर सकते हैं, यदि शिक्षा का माध्यम एक ही भाषा हिन्दी हो।

(6) शिक्षा में अनुसंधान, शोध कार्य आदि के लिए भिन्न-भिन्न प्रांतों से सहयोग प्राप्त किया जा सकता है, नहीं तो एक प्रांत का शोधक दूसरे प्रांत के शोधक के साथ भाषा की भिन्नता के कारण विचार-विनिमय नहीं कर सकता।

(7) हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाने से उत्तर भारत और दक्षिण भारत के शिक्षित एक ही स्तर पर आ जायेंगे, अन्यथा अहिन्दी भाषी हिन्दी भाषा में अपने आप को अभिव्यक्त न कर सकने के कारण हिन्दी भाषी शिक्षितों के सम्मुख त्रुटिपूर्ण रहेंगे। अवसर की समानता तभी होगी जब शिक्षा का माध्यम एक हो।

इस वाद-विवाद का सार यह है कि शिक्षा का माध्यम बनाने के लिए हिन्दी ही उपयुक्त है। अंग्रेज़ी या प्रादेशिक भाषाएं नहीं। यू. पी., राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, हरियाणा और पंजाब में, हिन्दी शिक्षा के माध्यम के रूप में रखी गई है। अन्य प्रदेशों को भी प्रांतीय या अंग्रेज़ीपन की संकीर्ण भावना को छोड़कर इसका अनुकरण करना चाहिए। बुनियादी स्कूलों या प्राथमिक स्कूलों में प्रादेशिक भाषाओं की शिक्षा का माध्यम स्वीकार करने में कोई आपत्ति नहीं। परन्तु हायर सैकेण्डरी और कालिज की कक्षाओं में हिन्दी ही उपयुक्त माध्यम है।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. यदि हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए तो उनका प्रभाव स्कूलों में हिन्दी शिक्षण पर क्या पड़ेगा ?

2. माध्यम तथा विश्वविद्यालय स्तर की कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम कौन भाषा में होना चाहिए -- प्रादेशिक भाषा या अंग्रेजी या हिन्दी ? युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. प्राथमिक शिक्षा में मातृ-भाषा को ही उपयुक्त शिक्षा का माध्यम क्यों समझा जाता है ? हिन्दी को मातृ-भाषा के रूप में पढ़ाने के क्या-क्या उद्देश्य हैं ?

4. निम्न प्रांतों में से किन-किन प्रांतों में महाविद्यालय स्तर पर शिक्षा का माध्यम हिन्दी है।

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश बिहार।

5. गुजरात, महाराष्ट्र और बंगाल में महाविद्यालय स्तर पर क्रमशः गुजराती, मराठी और बंगला शिक्षा का माध्यम है। इससे शिक्षक समुदाय और विद्यार्थी समुदाय को कौन सी कठिनाइयां आ रही हैं।

सहायक पुस्तकें

1. Ministry of Education. Govt. of India. — Report of the Secondary Education Commission Ch. V.
2. Ministry of Education. Govt of India. — Report of the Official Languag Commission.
3. Manager of Publications Govt. of India. — The Constitution of India.
4. A. R. Wadia. — Future of English in India.
5. Ministry of Education Govt. of India. — Report of the Indian Education Commission. (1964-66)

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5

भाषा शिक्षण का मनोवैज्ञानिक आधार

§ 27. भाषा के दो आधार—

पीछे कहा गया है भाषा के दो आधार हैं - भौतिक और मानसिक।[1]

(क) **भौतिक आधार**—श्रोता और वक्ता के क्रमशः कान और मुख भाषा के भौतिक आधार हैं। इनके अतिरिक्त लिपिबद्ध भाषा को पढ़ने के लिए आखें और लिखने के लिए हाथ भी भौतिक आधार हैं। मुख के अन्तर्गत मुख और नासिका के वे सभी अंग आ जाते हैं, ध्वनि के उच्चारण में जिनकी आवश्यकता पड़ती है। शब्दोच्चारण कैसे होता है अर्थात् ध्वनि कैसे पैदा होती है ? बोलने वाला जब बोलने की कोशिश करता है तो उसके फेफड़ों से निकलती हुई वायु में प्रकम्पन पैदा होता है। आगे चलकर मुख के उच्चारण स्थानों के साथ प्रतिघात होने पर विविध ध्वनियों की अभिव्यक्ति होती है।[2] हमारी श्रवणेन्द्रियां इन्हीं ध्वनियों को ग्रहण करती हैं। लिखते समय हमारी उंगलियों ध्वनियों के प्रतिरूप लिप्यक्षरों का रूप बनाती हैं और इस प्रकार अपनी चेष्ठा-शक्ति या प्रेरक शक्ति (Motor Power) काम में लाती है। पाठक के नेत्र उन्हीं लिपिबद्ध अक्षरों को पहचानते हैं और इस प्रकार वाचन क्रिया होती है परन्तु ये सभी शारीरिक अवयव आत्मनिर्भर नहीं। इसके पीछे एक सबसे बड़ा यन्त्र काम करता है वह है मानव मन। मानसिक व्यापार के बिना बोलना और सुनना असम्भव है। ध्वनियां भौतिक हैं, परन्तु तत्सम्बन्धी अर्थ और विचार मानसिक हैं। वास्तव में ध्वनिया और अर्थ अन्योन्याश्रित हैं ?[3]

---

1. पृष्ठ 2, भाषा के आधार।
2. किमिदमुच्चारण नामेती ? विवक्षाजनितेत प्रयत्नेत कोष्ठ्यस्य वायोः प्रेरितस्य कण्ठताल्वाद्यभिघातः यथास्थानप्रतिघाताद्वर्णाभिव्यक्तिः, "— (न्यायसूत्रवात्सायन भाष्य 2/2/ 18)
3. 'वागर्थाविव संपृक्तो' (रघुवंश 1/1)

एकस्यैवात्मनो भेदौ शब्दार्थौ पृथक् स्थितौ'—(वाक्यपदीय 2,31)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(ख) मानसिक आधार —अर्थ और विचारों का व्यापार हमारे मन में होता है। अर्थ से ही भाषा बनती है। अर्थ के बिना भाषा की भौतिक ध्वनियों की महत्ता नहीं। ध्वनियां केवल माध्यम हैं अर्थ या विचार ग्रहण और अभिव्यक्ति करने के लिए। संक्षेप में भाषा के मानसिक आधार में दो बातें आ जाती हैं।

(1) वह मानसिक क्रिया जिसके द्वारा हम बोलते हैं, सुनते हैं, पढ़ते और लिखते हैं।

(2) भाषा का अर्थ और विचार, जिसके बिना भाषा का कोई अस्तित्व नहीं।[1] प्रत्येक शब्द का कुछ न कुछ अर्थ होता है। शब्द जहां अपने भौतिक रूप 'ध्वनि' को प्रकट करता है, वहां अपनी आत्मा, 'अर्थ' को भी व्यक्त करता है। शब्द सुनते ही हमारे मन में विचार-प्रतिभाएं (Images of Ideas) उत्पन्न होती हैं। वे विचार प्रतिमाएं अत्यन्त सूक्ष्म होती हैं।

भाषा शिक्षण में भौतिक और मानसिक आधार का महत्त्व

भाषा शिक्षण में भाषा के दोनों आधारों पर पूरा ध्यान देने की आवश्यकता है। भौतिक आधार का ध्यान देने से तात्पर्य है मुख के अवयवों के ठीक प्रयोग, शुद्ध उच्चारण शुद्ध अक्षर-विन्यास और शुद्ध लिपि पर ध्यान देना। इसी प्रकार मानसिक आधार के सम्बन्ध में यह देखना है कि बालक की मानसिक क्रिया कैसे होती है, वह कैसे सोचता हैं, उसमें अर्थ ग्रहण करने की शक्ति कैसे बढ़ती है और उसके मानसिक विकास के साथ-साथ उसकी भाषा का विकास कैसे होता है। बच्चा शैशवकाल से लेकर प्रौढ़काल तक जिस क्रम में भाषा सीखता है उसका विवरण नीचे दिया जाता है :—

§ 28 भाषा और मानसिक विकास—

बच्चों के मानसिक विकास के साथ-साथ भाषा के विकास का अध्ययन कई पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने किया है। उन्होंने भाषा के निम्न पांच अंगों पर ध्यान दिया—

(1) शब्दावली (2) अभिव्यक्ति, (3) वाक्य विन्यास, (4) वाचन (5) लिपि।

(1) शब्दावली —शिशु प्रथम छः माह तक बोलने की कोशिश नहीं करता। छः माह की अवस्था में वह बोलने लगता है। एक वर्ष की अवस्था में एक दो वस्तुओं के नाम बोलता है। धीरे-धीरे वह नये-नये शब्दों को सीखता है और अपनी शब्दावली की वृद्धि आगे दिए गए क्रम से करता है—

1. आत्मरूपं यथा जाने ज्ञेयरूपं च दृश्यते ।।
अर्थरूपं तथा शब्दे स्वरूपं च प्रकाशते ।। वाक्यपदीय 1, 50

मन और वचन का परस्पर सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण है। इसके बारे में पढ़िये—
वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता
मनो मे वाचि प्रतिष्ठितम्—ऐतरेयोपनिषद्।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) प्रथम छः माह में वह शारीरिक कष्ट के अनुभव पर मौलिक ध्वनियों निकालता है। उसकी प्रारम्भिक ध्वनियां स्वर, पवर्ग (मव, पप जैसे द्वित्व कर्ण फ, व) क और न होती है।

(ii) द्वितीय छः माह में वह मामा, बाबा, काका, दादा जैसे द्वित्व वर्ण बोलने लगता है।

(iii) दूसरे वर्ष में वह निकटतम वस्तुओं के नाम बोलते लगता है। शब्द संख्या लगभग 30 होती है। उसके बहुत से शब्द जातियों को प्रकट करते हैं, व्यक्तियों को नहीं, जैसे सभी पक्षियों को कौआ, सभी पशुओं को गाय, सभी स्त्रियों को ममी, सभी बच्चों को काका कहना।

(iv) तीसरे वर्ष में 300 के लगभग साधारण वस्तुओं के नाम सीखता है, जैसे आलू, कलम, जूती, दाल, रोटी।

(v) चौथे वर्ष में लगभग 800 शब्द सीखता है, जिसमें वर्तमान, बहुवचन भूतकाल के शब्द, अंकों के नाम दस तक गिनती सम्मिलित हैं।

(vi) पांचवें वर्ष में सभी साधारण वस्तुओं रंग, पशुओं आदि के अन्य नाम सीखता है। अब तक वह 1500 शब्द जानता है।

(vii) छठे वर्ष में उसकी शब्दावली 2400 या लगभग ढाई हज़ार तक पहुंचती है, जिसमें साधारण संज्ञाएं, विशेषण, सर्वनाम, भूत और भविष्य का प्रयोग, सिक्कों के नाम, दिनों के नाम सम्मिलित हैं।

(viii) छः वर्ष से लेकर नौ वर्ष तक उसकी शब्दावली 2400 से 5000 तक पहुंचती है, जिसमें लगभग 60 संज्ञाएं होती हैं और 20 क्रियाएं। इस अवधि में शब्दावली की न्यून अधिक वृद्धि विद्यालयी शिक्षा पर निर्भर है।

(ix) नौ वर्ष के उपरान्त ऐसे ही क्रम व शब्दावली की और वृद्धि होती है।

एक बात स्मरणीय है कि शब्दों की संख्या सामान्य वर्ग के बच्चों के लिए इसी प्रकार बढ़ती है, परन्तु असामान्य वर्ग के बच्चों के बारे में घटती-बढ़ती हो सकती है। यदि वातावरण दुर्बल होगा तो घटती, प्रबल होगा तो बढ़ती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीचे दी हुई तालिका से शब्दावली का विकास स्पष्ट होगा :—

	अवस्था	शब्दों की संख्या
1	प्रथम छः मास	केवल मौलिक ध्वनियां
2	द्वितीय छः मास	द्वित्व वर्ण, मामा, पापा आदि
3	दूसरा वर्ष	30 शब्द
4	तीसरा वर्ष	300 ,,
5	चौथा वर्ष	800 ,,
6	पांचवां वर्ष	1500 ,,
7	छठा वर्ष	2400 ,,
8	सांतवां वर्ष	3300 ,,
9	आठवां वर्ष	4000 ,,
10	नौवां वर्ष	5000 ,,

तालिका—9 शब्दावली का विकास

(2) **वाक्य विन्यास**—प्रारम्भ में बच्चा एक शब्द का वाक्य बोलता है । जैसे 'लोटी' (अर्थात मां मुझे रोटी दो) ढाई वर्ष तक दो या तीन शब्दों का वाक्य बनता है । साढ़े तीन वर्ष का बालक चार शब्दों का पूरा-वाक्य बोलता है । 5 वर्ष से 9 वर्ष तक 5 से 6 शब्दों की रचना हो सकती है ।

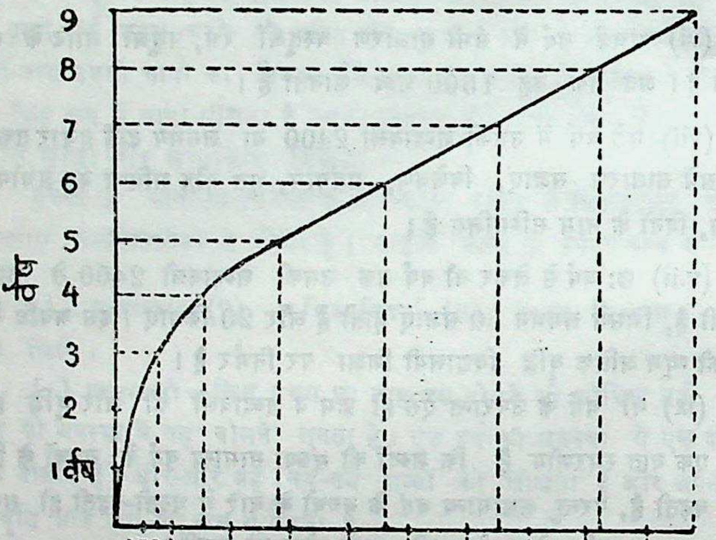

शब्दावली संख्या

(3) **अभिव्यक्ति**—आरम्भ में 3 वर्ष पर्यन्त बच्चे की भाषा अ
है । वह तोतली भाषा बोलता है । बहुधा उसकी बातें समझ में नहीं आतीं । 3 वर्ष से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6 वर्ष तक उसकी वाणी में स्पष्टता और शुद्धता आती है। 9 वर्ष तक वह अमूर्त वस्तुओं तथा अदृश्य घटनाओं का वर्णन करता है। 9 वर्ष के आगे वह तर्क-वितर्क में भाग ले सकता है।

(4) **वाचन**—वाचन के लिए 5 वर्ष की अवस्था उपयुक्त है। 5 वर्ष की अवस्था में वह वाचन की तैयारी करता है, जैसे चित्रों को रुचि के साथ देखता है और भली-भांति पहचानता है, छपे हुए अक्षरों को देखता है, कोई पत्रिका या पुस्तक हाथ में लेता है मानो कि वह पढ़ने लगता है, चित्रों वाली पुस्तक (Picture book) देखता है और कभी वैसे बुड़बुड़ाता है। 6 वर्ष की अवस्था में पढ़ने के लिए बिल्कुल तैयार होता है, परन्तु छोटे अक्षरों के बदले समूचे अक्षर वर्गों को पहचानता है। धीरे-धीरे वह अर्थ सहित वाचन करने लगता है। 11 वर्ष की अवस्था में वह स्वाध्याय कर सकता है।

(5) **लिपि**—छ: वर्ष की अवस्था से पहले कापी या तख्ती पर लिखने के लिए बच्चे के स्नायु विकसित नहीं होते। अत: वह रेत पर उंगली फेर सकता है, कागज काट कर अक्षर बना सकता है, चाकू से रेखाएं खींच सकता है, ब्रुश से चित्र बनाने का प्रयत्न कर सकता है। सरल रेखाओं के खींचने के बाद वह अक्षर लिखना सीखता है, तदुरांत वाक्य लिखना। प्रारम्भिक कक्षाओं में अपनी रचना में वह उतने शब्द का प्रयोग नहीं कर सकता जितना बोल-चाल में।

बच्चे के मानसिक विकास पर ध्यान देने से यह निष्कर्ष निकलता है कि भाषा सीखने में एक क्रम होता है, ज्यों-ज्यों बच्चे का मानसिक विकास होता है, उसकी भाषा सीखने की शक्ति बढ़ती जाती है। शिक्षक को मानसिक विकास के स्तर के साथ-साथ भाषा के स्तर का क्रम रखना चाहिए। जिस मानसिक अवस्था में बालक गुज़र रहा है, उसी अनुसार उसकी भाषा का विकास होना चाहिए, न उससे अधिक विकास का प्रयत्न करना चाहिए और न उससे कम विकास पर सन्तोष करना चाहिए।

भाषा के सीखने पर प्रभाव डालने वाले तत्त्व

सभी बच्चों की भाषा समान गति से विकसित होनी चाहिए। परन्तु प्राय: ऐसा नहीं होता है, क्योंकि कई तत्त्व उसके भाषा- विकास पर अपने प्रभाव डालते हैं। वे तत्त्व निम्न हैं :—

(1) **शारीरिक विकास**—शारीरिक विकास की गति तीव्र या मन्द होने का प्रभाव भाषा-विकास पर भी पड़ता है। दुर्बल बालक अभिव्यक्ति में भी दुर्बल रहता है।

(2) **मानसिक विकास**—इसी प्रकार यदि किसी बच्चे का मानसिक विकास किसी अवधि में रुक जाए या मन्द पड़ जाए तो उसकी भाषा पर भी इसी के अनुरूप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रभाव पड़ता है। जिन बच्चों की बुद्धि-उपलब्धि (Intelligence-Quotient) सामान्य से न्यून होती है, उनकी भाषा अभिव्यक्ति भी उसी के अनुरूप होती है। प्रखर बुद्धि वाले अधिक अभिव्यक्ति दर्शाते हैं।

(3) **रुचि और भावनाएं**—यदि बालकों में भाषा सीखने के प्रति रुचि न हो, तो उसका प्रभाव सीखने पर पड़ता है। लिखी हुई भावनाओं या मनोभावों का प्रभाव अच्छा पड़ता है। मानसिक द्वन्द्व के कारण बच्चे हकले (Stammerers) बन जाते हैं।

(4) **अभ्यास**—अभ्यास की न्यूनता और अधिकता से भाषा-ज्ञान में क्रमशः कमी या वृद्धि हो जाती है।

(5) **प्रशिक्षण का स्थानांतरण** (Transfer of Training)—एक भाषा का ज्ञान दूसरी भाषा के सीखने में सहायक है। अनेक भाषाओं की शिक्षा से बोल-चाल तथा अभिव्यक्ति में स्पष्टता आ जाती है। एक भाषा के व्याकरण के द्वारा तुलनात्मक रीति से दूसरी भाषा का व्याकरण शीघ्र सीखा जा सकता है। अनुवाद और तुलना से विभिन्न भाषाओं की शब्दावली, मुहावरे, सूक्तियां आदि कण्ठस्थ हो जाती हैं।

(6) **सामाजिक विकास**—समाज में अधिक सम्पर्क से भाषा का ज्ञान बढ़ जाता है, नए-नए विचार ग्रहण होते हैं और अभिव्यक्ति को अभ्यास का अवसर मिलता है। बोल-चाल, सम्वाद, यात्रा, मेल-जोल, भाषा शिक्षण में सहायक है। बाल समाज में भी सामाजिक कार्यों पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

(7) **लिंग**—शिक्षा-विचारकों ने प्रयोग और अनुसंधान द्वारा इस बात की खोज की है कि लड़कियां लड़कों की अपेक्षा भाषा जल्दी सीखती हैं।

(8) **व्यतिक्रम** - (Interference)—एक भाषा की शिक्षा कभी दूसरी भाषा की शिक्षा में रुकावट भी पैदा करती है। मातृ-भाषा के उच्चारण का दुष्प्रभाव दूसरी भाषा के उच्चारण पर पड़ता है। विभिन्न भाषाओं का शब्द क्रम और वाक्य-विन्यास विभिन्न प्रकार का होता है और सीखने वाला एक भाषा के प्रभाव से दूसरी भाषा के प्रयोग में अशुद्धियां करता है। अपनी भाषा के शब्दों का दूसरी भाषा में प्रयोग करना सर्वसामान्य है। अंग्रेजी बोलते समयहम कभी हिन्दी के ढंग के वाक्य बनाते हैं, और हिन्दी बोलते समय अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं। मानसिक विकास के साथ भाषा विकास का सम्बन्ध अग्र तालिका से स्पष्ट होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानसिक विकास

↓

भाषा विकास

मौखिक — लिखित

शब्दावली I — वाक्य-विन्यास II — वाचन IV — लिपि V

अभिव्यक्ति

[मौखिक और लिखित]

III

तालिका 10—मानसिक और भाषा विकास

भाषा के लिखने पर जो तत्त्व प्रभाव डालते हैं, उनका स्पष्टीकरण निम्न तालिका से हो सकता है।

भाषा शिक्षण पर प्रभाव डालने वाले तत्त्व

↓

शारीरिक विकास	मानसिक विकास	मनोभाव	सामजिक विकास	लिंग	व्यतिक्रम	प्रशिक्षण का स्थानांतरण	अभ्यास
I	II	III	Iv	V	VI	VII	VIII

तालिका 11 भाषा शिक्षण पर प्रभाव डालने वाले तत्व

§ 29. भाषा सीखने के सम्बन्ध में कुछ मनोवैज्ञानिक तथ्य

(1) भाषा सीखने का मनोवैज्ञानिक क्रम है—सुनना—बोलना पढ़ना—लिखना।

(2) भाषा का मानसिक आधार विचार है। विचार से ही वाक्य की उत्पत्ति होती है। भाषा की इकाई वाक्य है। हम वाक्यों में ही सोचते हैं, शब्दों में नहीं।[1]

अत: भाषा सीखने के लिए वाक्यों से आरम्भ करना चाहिए। पृथक शब्दों से नहीं।

(3) एक भाषा के सीखने से दूसरी भाषा के सीखने में सहायता मिलती है। दूसरी भाषा सीखने के लिए मातृ-भाषा से पूरी सहायता लेनी चाहिए।

(4) शब्द और मुहावरे प्रंसग के बिना याद नहीं रह सकते।

(5) शब्द सीखने की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है अत: भाषा स्वाभाविक विधि से सिखाई जानी चाहिए।

(6) भाषा सीखने में अभ्यास और रुचि सहायक हैं।

---

1. ''पद समूहों वाक्यमर्थपरिसमाप्तौ'' (न्यायसूत्र वात्सायन भाष्य, 2. 1,55)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(7) भाषा सीखने की अयोग्यता (Linguististic incapacity)

इस सिद्धान्त में कुछ भी सत्य नहीं। प्रत्येक व्यक्ति एक से अधिक भाषाएं सीख सकता है।

(8) प्रारम्भिक अवस्था में भाषा सीखने की योग्यता अधिक होती है। बाल्य-काल में सीखी हुई भाषा की छाप अमिट होती है।

(9) भाषा सीखने के लिए अनुकूल वातावरण चाहिए।

(10) बुद्धि, लिंग, रुचि आदि के प्रभाववश बच्चों की भाषा की विकास की गति एक समान नहीं होती। अत: उनकी व्यक्तिगत भिन्नता पर ध्यान देना चाहिए।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. अध्यापक को विद्यार्थियों के बौद्धिक और मानसिक विकास के अनुसार भाषा शिक्षण का कार्यक्रम रखना चाहिए। इस कथन की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

2. भाषा के मानसिक आधार से क्या तात्पर्य है? भाषा की शिक्षा में इस आधार से किन तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए।

3. भाषा और मानसिक विकास पर एक सारगर्भित लेख लिखें।

सहायक पुस्तकें

1. A. F. Watt — Lnnguages and Mental Development of Children. George C. Harrap and Co. Ltd Bombay.

2. Maxim Newmark — 20th Century Modern Language Teaching New York.
See PartV—Pshychology of Language learning.

3. Otto Jesperson — Language its Nature Development and Origin

4. Gardener — Theory of Speech and Language.

5. Buhlar — Children's Development from Birth to School age.

6. Piaget — Language and thought of the Children.

7. Ballard — Language and Thought. (University of London Press)

8. Eisnososen J — Speech Correction in The school Ch. IV,

9. Valentine — Phychology of Early Childhood.

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6

भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

§ 30 (क) भाषा शिक्षण में सिद्धान्तों की आवश्यकता

ऊपर दर्शाया गया है कि भाषा छात्र और शिक्षण के बीच विचारों-भावों के आदान-प्रदान की वस्तु है। तैतिरेय उपनिष्द् में भी कहा गया है आचार्य:पूर्व रूप, अन्तवासी उत्तररूपम्। प्रवचनं संधानं, विद्या संधि:।। अर्थात् शिक्षण-अधिगम (Teaching learning) प्रक्रिया में शिक्षक पूर्व रूप है, छात्र उत्तर रूप, दोनों का परस्पर मौखिक संवाद दोनों को जोड़ता है, और विद्या द्वारा यह जोड़ प्रतिष्ठित हो जाता है। पाश्चात्य विचार भाषा-शिक्षण-अधिगम (Language Teaching Learning or L T L) का एक तिकोण द्वारा समझते हैं जिसका एक सिरा शिक्षक है, दूसरा सिरा छात्र, और तीसरा सिरा भाषा है। इस तिकोण के बीच में तीन चीजें आती हैं-पाठ्य-क्रम उपकरण और शिक्षा सिद्धान्त। पाठ्यक्रम भाषा शिक्षण के लिए आधारभूत सामग्री है। इसको प्रस्तुत करने के लिए पाठ्यपुस्तक तथा दृश्य-श्रव्य साधन (Audio visual aids) की आवश्यकता है और ठीक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए कतिपय सिद्धान्तों और शिक्षण विधियों का अवलम्बन करना पड़ता है।

भाषा-शिक्षण अधिगम तिकोण
(LTL Triangle)

प्रमुख सिद्धान्त आगे दिए गए हैं, और शिक्षण-विधियां जोकि उन्हीं सिद्धान्तों पर निर्भर हैं, अगले अपदायों में वर्णित हैं। सामने एक रेखा-चित्र द्वारा इन सभी बातों का सम्बन्ध स्पष्ट होगा।

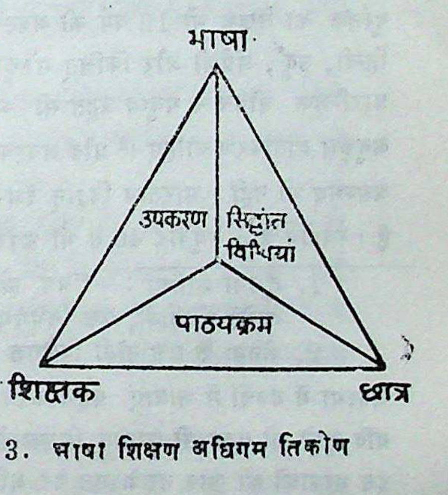

चित्र 3. भाषा शिक्षण अधिगम तिकोण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 30 (ख) स्वाभाविक प्रवृत्ति

आत्माभिव्यक्ति मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसी आत्माभिव्यक्ति के निमित्त वह भाषा का प्रयोग करता है। भाषा सीखने की प्रवृत्ति भी उसकी आन्तरिक प्रवृत्ति है। इसी आन्तरिक प्रवृत्ति के अनुसार यह शैशवकाल में ही अपने माता-पिता से प्रारम्भिक भाषा सीखता है और अपनी तोतली भाषा में अपने भावों को व्यक्त करता है। अनायास की वह इस कला को सीखने लगता है। यदि वह स्वाभाविक प्रवृत्ति न होती, तो कदाचित यह मानव संसार पशु-जगत् के समान गूंगों का संसार ही होता। हम जिस वातावरण में जन्म पाते हैं, उस वातावरण में प्रयुक्त होने वाली ध्वनियों को अनायास ही हम ग्रहण करते हैं, और अनुकरण की स्वाभाविक प्रवृत्ति द्वारा उन ध्वनियों को अपनी जबान से बोलने लगते हैं। अनजाने ही हम ध्वनियों को ग्रहण करते हैं, अनुकरण करते हैं और बोलने लगते हैं।[1] प्रसिद्ध भाषा शास्त्री गेटनबी (E. V. Gatenby) के अनुसार भाषा सीखनेमें शिशु की प्रकृति अत्यन्त सहायक है। किंडर-गार्डन कक्षा में जहां वीस बच्चे पढ़ते हों, वे प्रतिदिन एक शिक्षक के सम्मुख 3 घण्टे पढ़ते हुए तीन वर्ष में नई भाषा सुविधाजनक सीख सकते हैं। मिडल कक्षाओं में भी प्रतिदिन 1 घण्टा पढ़ते हुए, तीन वर्ष में नई भाषा सुगमता से सीखी जा सकती है। मातृ-भाषा के स्वाभाविक रीति से सीखने का यही रहस्य है। मातृ-भाषा ही क्या, कोई अन्य भाषा भी हम इसी रीति से सीख सकते हैं और एक साथ दो से अधिक भाषाएं भी सीखी जा सकती हैं। कोई बालक बंगाल में उत्पन्न होने के कारण वातावरण के प्रभाववश बंगला सीखता है। उसकी माता मराठी बोलती है और पिता पंजाबी। बस बालक बंगला, मराठी, पंजाबी तीनों भाषाएं सीख सकता है। यदि विद्यालय में उसे हिन्दी और अंग्रेजी सिखाई जाए तो वह पांच भाषाएं जान सकता है। इस पुस्तक का लेखक भी 12 वर्ष की अवस्था में मातृ-भाषा (जो हिन्दी से भिन्न थी): हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और किंचित् संस्कृत पांच भाषाएं जानता था। तात्पर्य यह है कि प्रारम्भिक जीवन में मनुष्य बहुत सी भाषाएं सीख सकता है, केवल सीखने के लिए अनुकूल वातावरण चाहिए।[2] प्रौढ़ अवस्था में ऐसा कर पाना उतना सरल नहीं, परन्तु असम्भव भी नहीं। भारतीय विद्वान् देश-विदेश की कुल मिलाकर तीस भाषाएं जानते हैं। स्वर्गीय डॉ० रघुवीर 40 से भी ऊपर भाषाएं जानते थे। विद्वानों का मत है कि अन्य

1. तुलना कीजिए :—"यत्र ह्येव मनस्तद् वाक्। यत्र वै वाक् तमन्तः। इत्येते द्वे योनी, एकं मिथुनम्" (गोपथब्राह्मण 1/33)

2. कैनेडा के एक नाड़ी विशेषज्ञ विल्डर पेनफील्ड ने दर्शाया है 10 वर्ष की अवस्था में बच्चों में भाषाएं ग्रहण करने की शक्ति अधिक होती है। इस अवस्था तक यदि बच्चे को बहुत सी भाषाएं सिखलाई जाएं तो वह सभी भाषाएं सीख लेता है और इन भाषाओं की छाप उसके मन पर अमिट रहेगी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विज्ञान और कलाओं की अपेक्षा विभिन्न भाषाओं को सीखना सरल है। विज्ञान और कला सीखने के लिए विशेष शिक्षा-दीक्षा की आवश्यकता है परन्तु भाषा अनजाने ही मानसपटल पर अंकित हो जाती है और अनुकरण करने से प्रस्फुटित हो जाती है। पाश्चात्य भाषा में दैनिक भाषा का विश्लेषण कैसे करते हैं, भारतीय स्फोटवाद के अनुसार भाषा की उत्पत्ति कैसे होती है—इन गहरे दार्शनिक और वैज्ञानिक विचारों में जाने की यहां आवश्यकता नहीं, परन्तु संक्षेप में शिक्षक के पथ-प्रदर्शन के लिए भाषा की सहज प्रवृत्ति के सम्बन्ध में निम्न बातें बतलाई जा सकती हैं :—

(i) प्रत्येक बालक में भाषा सीखने और बोलने की सहज प्रवृत्ति पाई जाती है।

(ii) इस सहज प्रवृत्ति को काम में लाने के लिए उचित वातावरण की आवश्यकता है। माता-पिता, मित्र-बांधव, स्कूल तथा नगर-ग्राम भाषा सीखने के लिए सहायक हैं। क्योंकि ये ऐसे ही वातावरण उपस्थित करते हैं।

(iii) मातृ-भाषा सीखने में देर नहीं लगती परन्तु अन्य भाषाएं भी उचित वातावरण के उपस्थित होने पर मातृ-भाषा के समान प्रारम्भिक अवस्था से सीखी जा सकती हैं।

(iv) कला और विज्ञान की अपेक्षा भाषा जल्दी सीखी जा सकती है।

इस कथन से यह अर्थ कभी नहीं लिया जा सकता कि भाषा के सीखने में तनिक भी प्रयास की आवश्यकता नहीं और न ही व्यवस्थित शिक्षण की कोई आवश्यकता है। इस विषय में यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि —

(i) मातृ-भाषा घर पर स्वाभाविक रीति से जितनी सीखी जाती है वह आगामी जीवन में व्यवहार में लाने के लिए पर्याप्त नहीं। भाषा का लिखित रूप तो विशेष प्रयास और अध्यवसाय के बिना सीखा नहीं जा सकता, साथ ही मौखिक रूप भी व्याकरणबद्ध, विभिन्न शैलियों से सुसज्जित और अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण-पर्याप्त तभी हो सकता है; जब उसकी व्यवस्थित शिक्षा प्राप्त हो।

(ii) अन्य भाषा भी मातृ-भाषा के समान उचित वातावरण में थोड़ी-सी सीखी जा सकती हैं। परन्तु यदि घर पर ऐसा समुचित अनुकूल वातावरण न मिले, तो विद्यालय में शिक्षक द्वारा सिखाने की आवश्यकता पड़ती है।

(iii) सारा ज्ञान-विज्ञान भाषा शिक्षा पर अवलम्बित है। अतः इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए भाषा को पर्याप्त रूप में सीखने की आवश्यकता पड़ती है। इसी कारण से शिक्षक बालक की भाषा सीखने की स्वाभाविक गति को त्वरित करने के लिए और उसको भाषा द्वारा ज्ञान-विज्ञान सीखने के योग्य बनाने के लिए सुव्यवस्थित शिक्षा का प्रयास करता है।

अब प्रश्न यह है कि शिक्षक का प्रयास कैसे सफल हो सकता है। शिक्षक को जहां भाषा पर पूर्णाधिकार होना चाहिए, वहां भाषा सिखाने के अच्छे ढंगों और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिद्धान्तों से परिचित भी होना चाहिए। नीचे भाषा सिखाने में विभिन्न सिद्धांतों का संक्षिप्त विवेचन दिया जाता है। भाषा-शिक्षण के कई सामान्य सिद्धान्त (General Principles) हैं जो किसी भी भाषा पर लागू हो सकते हैं। उन सामान्य सिद्धान्तों के अतिरिक्त भाषा के विभिन्न अंगों तथा विभिन्न परिस्थितियों के लिए विशेष सिद्धान्तों का ब्योरा आगे दिया जाएगा।

भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त निम्न हैं—

(1) स्वाभाविक विधि (Natural Method)
(2) क्रियाशीलन और अभ्यास (Activity and Drill)
(3) बोल-चाल (Oral Work)
(4) अनुपात और क्रम (Proportion and Gradation)
(5) बहुमुखी प्रयास (Multiple pronged attack)
(6) वैयक्तिक विभिन्नता (Individual Diffferences)
(7) सिद्धान्त सूत्र (Maxims)
(8) रुचि या प्रेरणा (Motivation)

§ 31. भाषा स्वाभाविक विधि से सिखाई जानी चाहिए—

बालक का भाषा सीखने का एक स्वाभाविक क्रम है, जिस क्रम से वह घर पर भी अपनी मातृ-भाषा सीखता है। इस क्रम के अनुसार बोलना और समझना पहले पढ़ना और लिखना बाद में आता है। बोलने में भी उच्चारण सीखने का स्थान, पहले आता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में उच्चारण पर अधिक बल देना चाहिए। यदि कहीं पर उच्चारण दोष रह गया तो बाद में उसे ठीक करना कठिन हो जाता है। जो आदतें बचपन से डाली जाती हैं वे अधिक दृढ़ होती हैं। अत: प्रारम्भ में ही उच्चारण की शुद्ध आदतों पर बल देने से भारी कठिनाई दूर हो जाती है। इसके अतिरिक्त बोलने में भी वाक्यों का स्थान पहले आता है, शब्दों और पृथक ध्वनियों का बाद में। यह बात याद रखनी चाहिए कि भाषा की ईकाई वाक्य है न कि शब्द। वाक्य निरपेक्ष अकेले शब्द का कोई अर्थ नहीं। हम वाक्यों में ही बोलते हैं और वाक्यों में ही सोचते हैं। वाक्य स्वाभाविक सहजात है, परन्तु शब्द तो हमने बना लिए हैं। व्याकरण में लिखा होता है—'वाक्य शब्दों का समूह है', परन्तु वास्तव में ऐसा कहना चाहिए शब्द वाक्य का खण्ड है।' वाक्य शब्द का भी हो सकता है। बालक का मां को यह कहना 'रोटी से तात्पर्य है मुझे रोटी दो' बच्चा जब भाषा सीखता है, वह वाक्य से आरम्भ करता है, क्योंकि वाक्य में उनका पूर्ण भाव प्रकट होता है। इसी प्रकार विद्यालयों में भी भाषा सिखाने के लिए वाक्य से शब्द की ओर जाना चाहिए। संक्षेप में शिक्षण की स्वाभाविक विधि में निम्न बातें आ जाती हैं—

(i) बोलना और समझना पहले, पढ़ना और लिखना बाद में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) उच्चारण पर प्रारम्भ में ही ध्यान देना चाहिए ।

(iii) वाक्य से शब्द की ओर जाना चाहिए ।

§ 32. क्रियाशीलन और अभ्यास का सिद्धान्त

भाषा एक ऐसी कला है, जिसमें सतत् अभ्यास की आवश्यकता है। इस दृष्टि से भाषा एक कला है, विज्ञान नहीं, यद्यपि इसका एक वैज्ञानिक अंश भी है इसका वैज्ञानिक अंश उतना महत्त्वपूर्ण नहीं, जितना कलात्मक अंश । प्रत्येक कला और शिल्प में अभ्यास की आवश्यकता है । तैरने में प्रवीणता तभी आती है, जब स्वयं तैरने का अभ्यास किया जाए, इस विषय पर पुस्तकें पढ़ने से नहीं ।[1]

संगीत का शास्त्रीय ज्ञान कुछ और है प्रत्यक्ष अनुभवजन्य ज्ञान कुछ और। बाईसिकल की सवारी में संतुलन (balance) कैसे रखा जा सकता है; अभ्यास में ज्ञात हो जाता है, अध्ययन से नहीं । भाषा में भी अध्ययन की अपेक्षा अभ्यास की अधिक आवश्यकता है । निरन्तर अभ्यास से हमारे कान सुनने और सुनते हुए भाषा को समझने में हमारी जबान निर्बाध गति में बोलने तथा विचारों को स्पष्ट रीति से व्यक्त करने में हमारे हाथ लिखने में प्रावीण तथा प्रशिक्षित (trained) हो जाते हैं। भाषा प्रशिक्षण में अध्यापक गणित की भान्ति दो चार महत्त्वपूर्ण गुर (important formula) नहीं बता सकता, जिनको समझने पर काम बन जाए । यहां निरन्तर अध्यवसाय, अभ्यास और ड्रिल (drill) की आवश्यता है । कहीं अभ्यास टूट गया तो पुराना भूल गए । इस कारण से इतिहास, भूगोल आदि विषयों की अपेक्षा भाषा सीखने के लिए अत्यधिक समय परिश्रम और अभ्यास की आवश्यकता है जो भाषा में दुर्बल हो वह दो-तीन महीनों में ही साल भर की कमी को पूरा नहीं कर सकता जैसा वह अन्य विषयों में घर पर अध्ययन करके, कर सकता है । कक्षा में केवल सुनने और चुपचाप पढ़ने से काम नहीं चलता, बोलने की आदत डालने के लिए प्रश्नोत्तर प्रणाली को अपनाना पड़ता है, और लिखने की आदत डालने के लिए स्कूल में भी और घर पर भी रचना कार्य पर बल देना पड़ता है। व्याकरण का ज्ञान, भाषा का ज्ञान, शब्दावली का ज्ञान—सब निष्फल हो जाता है । यदि अभ्यास न हो । अन्य विषय में भी काम द्वारा शिक्षा (learning by doing) की आवश्यकता होती है परन्तु भाषा में इस विधि की अन्य विषयों से अधिक आवश्यकता है । जहां अन्य विषयों में काम बिना भी काम चल सकता है, वहाँ भाषा में काम बिना काम नहीं चल सकता ।

इस प्रकार क्रियाशीलन और अभ्यास भाषा शिक्षण का महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है ।

---

1. "He who only gets the tip of his fingers dipped in the water three times in twenty weeks will never learn how to swim". —Otto 'How to read a Forpeingn Language' P. 132)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 33 बोल-चाल का सिद्धान्त

पुरानी पाठन विधि में सब से बड़ा दोष है बोलचाल का अभाव। पाठ्यपुस्तक पढ़ाना हो, व्याकरण पढ़ाना हो, अथवा रचना सिखानी हो अध्यापक स्वयं बोलता जाता है और विद्यार्थी सुनते रहते हैं। परिणामत: विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता बनते हैं और अध्यापक क्रियाशील वक्ता। विद्यार्थी को बोलने का भी अवसर ही नहीं मिलता। किसी कठिन शब्द का अर्थ बताने, व्याकरण के नियमों को दुहराने, कोई कविता कंठस्थ करके सुनाने अथवा महीने में एक-आध बार संवाद में भाग लेने के अतिरिक्त उसे बोलने का अवसर नहीं मिलता। विद्यार्थियों का बोलना कक्षा के अनुशासन के विरुद्ध समझा जाता है। पुरानी परिपाटी के अध्यापक के मत में कक्षा में मसान की निस्तब्धता (silence of the grave) ही पूर्ण अनुशासन का प्रमाण है।

आजकल के भाषा शास्त्री भाषा सीखने के लिए तथा भाषा में प्रवीणता प्राप्त करने के लिए बोल-चाल पर अधिक बल देते हैं। कक्षा में भाषा सिखाते समय विद्यार्थी ही अधिक बोलें अध्यापक कम। विद्यार्थियों को अधिक से अधिक बोलने का अवसर देना चाहिए। पढ़ने और लिखने की अपेक्षा बोलने से ही भाषा शीघ्र सीखी जा सकती है। मातृ-भाषा हो या अन्य भाषा बोलना भाषा शिक्षण में सब से अधिक आवश्यक है। प्रश्नोत्तर करने और बोलने के लिए प्रोत्साहित करने में भाषा शीघ्र सीखी जा सकती है। प्रारम्भिक कक्षाओं में इसके बिना काम नहीं चल सकता और उच्च कक्षाओं में इससे प्रवीणता आ जाती है। संक्षेप में बोलने के निम्न लाभ हैं।

(i) भाषा का सम्बन्ध अधिकतर कान और जबान के साथ है, आंख और हाथ के साथ नहीं। भाषा का आरम्भ ही कान और ज़बान से हुआ।[1] लिपि का आरम्भ बाद में हुआ। कान और जबान जल्दी प्रशिक्षित (trained) हो जाते हैं। प्राय: देखा गया है कि विदेशी भी भारतवासियों के बीच चिरकाल तक रहने के कारण भारत की भाषाओं में इतने प्रवीण बन गये हैं कि हम सन्देह करने लगते हैं कि इनकी मातृ-भाषा कौन सी है। पढ़ने की अपेक्षा हम किसी भाषा के व्यावहारिक वातावरण में उस भाषा पर अधिकार प्राप्त कर सकते हैं।

(ii) बोलचाल द्वारा भाषा सीखने में कम समय लगता है। जिनकी हिन्दी मातृ भाषा है, वे साधारण और ग्रामीण हिन्दी को छोड़कर उच्च साहित्यक हिन्दी का ज्ञान नई शब्दावली, नए मुहावरे, नया वाक्य विन्यास तथा शैलियां बोच-चाल द्वारा शीघ्र सीख सकते हैं। हिन्दी जिनकी मातृ-भाषा नहीं, वे शुद्ध उच्चारण, शब्दावली, वाक्य विन्यास और भाषा का शुद्ध रूप बोलचाल द्वारा जल्दी सीख सकते हैं।

(iii) बोल-चाल द्वारा सीखा हुआ भूला नहीं जाता। कान और जबान एक बार

1 'अग्निर्वाग् भूत्वा मुख प्रविशत्'—ऐतरेक्योपनिषद्।
श्रोत्रग्रहण हि अयं लोके शब्द: प्रसिद्ध:—मीमांसा सूत्र। 1, 5

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रशिक्षित हो गये, उन पर एक बार भाषा का मुद्रांकन हुआ, एक बार ध्वनियों की छाप पड़ गई, फिर वह छाप मिट नहीं सकती। पढ़ कर सीखी हुई भाषा अभ्यास के द्वारा स्थायी रहती है। यदि सीखी जाने वाली मातृ-भाषा न हो, तो बोल-चाल का सब से अधिक महत्त्व है।

(iv) बोल-चाल में विद्यार्थी अधिक ध्यानपूर्वक रहते हैं। उनकी उत्सुकता और रोचकता बढ़ती रहती है। वे पाठ में सक्रिय भाग लेते हैं। अध्यापक के लिए भाषा की घण्टी में विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करना बड़ा कठिन है। पाठ में ध्यानकर्षण और रुचि पैदा करने के लिए और श्रव्य सामग्री का इतना हाथ नहीं, जितना प्रश्नोत्तर द्वारा विद्यार्थियों को बोल-चाल में व्यग्र रखने का। बोल-चाल द्वारा विद्यार्थी जितना अधिक भाग ले लें, पाठ उतना सफल होगा।

(v) बोल-चाल से शुद्ध उच्चारण, लय मात्रा आदि का अभ्यास हो जाता है। अध्यापक को उच्चारण की अशुद्धियां दूर करने का अवसर मिलता है तथा पद्य-पाठ में सस्वर पाठ तथा छन्दानुकूल मात्रा, स्वर और यति आदि सिखाने का सुअवसर प्राप्त होता है।

(vi) बोल-चाल से विद्यार्थियों की, अपने-अपने विचारों को व्यक्त करने की शक्ति बढ़ती है। अभिव्यक्ति (expression) पढ़ने-लिखने से उतनी नहीं बढ़ती, जितनी बोलने से। प्रश्नोत्तर द्वारा, सम्वाद द्वारा, कहानी के वर्णन द्वारा, वाद-विवाद तथा वितरण (narration) द्वारा ही प्रभावशाली, शुद्ध और सुन्दर भाषा में भाव-विचार अभिव्यक्त करने की शक्ति बढ़ती है।

अत: बोल-चाल द्वारा विद्यार्थियों को ध्यानस्थ रखने और उनकी अभिव्यंजना शक्ति बढ़ाने में ही अध्यापक की इतिकर्त्तव्यता है।

§ 34 अनुपात और क्रम का सिद्धान्त (Proportion and Gradation)

अध्यापक भाषा सिखाने के लिए पाठ्य-पुस्तक के एक दो पृष्ठ पढ़ने, व्याकरण के नियम बताने और रचना के लिए काम देने के अतिरिक्त अपना कर्त्तव्य और कुछ भी नहीं समझता। परिणामत: भाषा के सभी अंगों की शिक्षा अधूरी रहती है। पहले कहा जा चुका है कि भाषा सिखाने के केवल व्यावहारिक उद्देश्य के लिए भी बोल कर समझाने, लिख कर समझाने और सुन कर समझाने तथा पढ़ कर समझाने की आवश्यकता है। भाषा शिक्षण के दो अंग हैं ग्रहण (reception) और अभिव्यक्ति (expression)। दूसरों के विचारों को ग्रहण करने की प्रक्रिया दो प्रकार से होती है:

(i) सुनने से और (ii) पढ़ने से।

इसी प्रकार अपने विचारों को प्रकट करने की प्रक्रिया भी दो प्रकार से होती है :—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) बोलने से और (ii) पढ़ने से।

संक्षेप में विद्यार्थी के सामने भाषा सीखने के चार उद्देश्य हैं—

(i) दूसरों के मुख से सुनकर समझने की योग्यता प्राप्त करना।

(ii) स्वयं बोलने की योग्यता प्राप्त करना।

(iii) पुस्तक आदि को पढ़ने और पढ़कर समझने की योग्यता प्राप्त करना।

(iv) तथा अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए लिखने की योग्यता प्राप्त करना।

भाषा के इन चार अंगों में उपयुक्त क्रम ही आपेक्षित हैं—अध्यापक को यही क्रम ध्यान में रखना चाहिए। सिखाने के लिए क्रम यह है—प्रथम अध्यापक का बोलना और विद्यार्थी का समझना, द्वितीय विद्यार्थी का अनुकरण करना और बोलने का अभ्यास करना, तृतीय विद्यार्थी का पुस्तक पढ़ना, शब्दावली आदि के ज्ञान की वृद्धि करना, व्याकरण सीखना, समझने की योग्यता प्राप्त करना और चतुर्थ रचना द्वारा अपने विचारों को शुद्ध भाषा में प्रकट करना। जहां हिन्दी मातृ-भाषा नहीं, वहां प्रारम्भिक कक्षाओं का निर्बाध विधि (Direct Method) द्वारा संवाद तथा प्रश्नोत्तर द्वारा समझने और बोलने पर बल देना चाहिए। पढ़ना-लिखना, सुनने बोलने के बाद आरम्भ करना चाहिए। साथ ही उच्च कक्षाओं में पढ़ने, पढ़ने-लिखने का पूरा अभ्यास दिलाना चाहिए। जहां हिन्दी मातृ-भाषा है वहां प्रारम्भिक कक्षाओं में निर्बाध-विधि को कोई आवश्यकता नहीं परन्तु उच्चारण की शुद्धता तथा अक्षर ज्ञान कराने के लिए विद्यार्थियों को बोलने में मग्न रखना चाहिए और यह प्रश्नोत्तर द्वारा हो सकता है। उच्च कक्षाओं में स्कूल में बोलने पर बल देना चाहिए और साथ ही पढ़ने के में रुचि तथा अभ्यास पैदा करने के द्रुतपाठ की अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ने के लिए देनी चाहिएं, जिससे स्कूल में सीखी हुई शब्दावली आदि का ज्ञान अभ्यास के द्वारा पूरा हो जाएं।

जैसा कि अध्यापक को भाषा के सर्वांगीण (Allround) शिक्षण पर ध्यान देना चाहिए। उच्चारण, शब्दावली, अक्षर, विन्यास, व्याकरण, सम्वाद, वाचन आदि सभी तत्वों पर अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार अनुपात का ध्यान रखना चाहिएं भाषा के सभी उद्देश्यों की ओर ध्यान रखते हुए, बालकों की मानसिक अवस्था, कक्षा का स्तर और अवसर की मांग को सामने रख कर अध्यापक भाषा के विविध अंगों का अनुपात स्वयं स्थिर करके अपना कर्त्तव्य निभा सकता है।

§ 35. बहुमुखी प्रयास (Mnlliple Pronged attack)

इससे तात्पर्य यह है कि भाषा का कोई भी अंग या पाठ पढ़ाने के लिए कई प्रकार से प्रयास करना चाहिए। एक कठिन वाक्य पढ़ाने में निम्न प्रक्रियाएं आवश्यक हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) वाक्य का वाचन करना और कठिन शब्द के उच्चारण का अभ्यास करना-

(ii) कठिन शब्दों का अर्थ श्यामपट पर लिखना, उनका वाक्य प्रयोग करना।

(iii) वाक्य का भाव स्पष्ट करना।

(iv) छोटी कक्षाओं में वाक्य कापी पर लिखना, वाक्य प्रयोग भी लिखना, और अक्षर विन्यास नोट करवाना।

(v) व्याकरण की बातें स्पष्ट कराना।

इस प्रकार एक ही विषय के सम्बन्ध में उच्चारण, वाचन, शब्दावली, व्याकरण, श्रुतलेख और रचना सिखाई जा सकती है।

§ 36. शिष्यों की वैयक्तिक विभिन्नता (Individual Differences) पर ध्यान देने का सिद्धान्त

अध्यापक सभी बालकों को एक ही लाठी से नहीं हांक सकता। सारी कक्षा में सभी विद्यार्थी समान योग्यता नहीं रखते[1]। इसके अतिरिक्त किसी विद्यार्थी की भाषा में अपनी विशेष कठिनाइयां होती हैं। किसी की उच्चारण की कठिनाई होती है, किसी को अक्षर ज्ञान करने में अधिक देर लगती है, किसी की लिखावट भद्दी होती है, किसी को बोलना नहीं आता, कोई मौन पाठ कर सकता है, परन्तु उच्च स्वर से बोलते समय पाठ समझ नहीं सकता, किसी का ध्यान मौन पाठ करते समय स्थिर नहीं रहता, कोई व्याकरण की अशुद्धियां अधिक करता है और कोई रचना में दुर्बल होता है। अध्यापक को प्रत्येक विद्यार्थी पर वैयक्तिक ध्यान देना चाहिए, उसकी अशुद्धियां दूर करनी चाहिएं, शुद्ध बोलने, पढ़ने और लिखने में उसे प्रोत्साहन देना चाहिए और भाषा में अधिकाधिक प्रवीणता प्राप्त करने में मार्ग-निर्देश करना चाहिए। समय-समय पर जांच परीक्षा लेते रहना चाहिए और शिष्यों की वैयक्तिक त्रुटियां दूर करनी चाहिएं।

§ 37. रुचि पैदा करने का सिद्धान्त या प्रेरणा का सिद्धान्त (Principle of motivation)—

भाषा की शिक्षा तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक विद्यार्थियों के मन में भाषा-सीखने की रुचि पैदा न हो जाए। यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है। इस दिशा में अध्यापक को निम्न आदेश दिये जा सकते हैं :—

(i) पाठ में रुचि पैदा करने के लिए, पाठ के आरम्भ में विद्यार्थी से उसके पूर्वज्ञान सम्बन्धी प्रश्न पूछने चाहिएं और इस प्रकार पृष्ठ-भूमि बनाकर उन्हें नए पाठ के लिए तैयार करना चाहिए।

(ii) श्रव्य और दृश्य साधनों (Audio Visual Aids) का पूरा-पूरा प्रयोग करना चाहिए।

---

[1]मुण्डे मुण्डे मतिर्भिन्ना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) पाठ के भीतर प्रश्नोत्तर प्रणाली द्वारा उत्पन्न की हुई रुचि स्थायी रखनी चाहिए ।

(iv) पाठ का विद्यार्थियों के अपने जीवन (भौतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण अथवा किसी शिल्प) के साथ सम्बन्ध जोड़ना चाहिए । प्रारम्भिक कक्षाओं के प्रति दिन काम में आने वाली वस्तुओं या घटनाओं द्वारा भाषा सिखानी चाहिए । दैनिक व्यवहार के कार्यों और वस्तुओं से भाषा में जान आती है । समवाय (Correlation) रुचि उत्पन्न करने में अधिक सहायता देता है ।

(v) जहां तक हो सके पाठ में विविधता लानी चाहिए । परन्तु इस विविधता में भी एकता होनी चाहिए। उदाहरण के रूप में पद्यपाठ पढ़ाते समय शब्दावली, उच्चारण व्याकरण सम्बन्धित प्रसंग आदि का समावेश करते हुए भी प्रस्तुत मुख्य पाठ पढ़ने के उद्देश्य को भूलना नहीं चाहिए ।

(vi) विद्यार्थियों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए । सहानुभूति के साथ उनको प्रोत्साहन देना चाहिए । अध्यापक के साथ विद्यार्थी का जितना निकट सम्बन्ध हो उतना ही पाठ सफल हो सकता है ।

(vii) त्रुटियों के लिए दण्ड नहीं देना चाहिए और पारितोषिक प्राप्त करने की आकांक्षा भी नहीं बढ़ानी चाहिए ।

(viii) खेल द्वारा शिक्षा देनी चाहिए । खेल द्वारा खेल (Play Way Method of Learning) आजकल का सबसे आवश्यक सिद्धान्त है । इसके अतिरिक्त क्रियाशीलन द्वारा शिक्षा (Learning by doing) भी रुचि से सम्बन्ध रखती है । उदाहरणत: अक्षर विन्यास सिखाने के लिए कई खेलों से काम लिया जा सकता है, जिनका वर्णन आगे किया गया है । शब्दावली पढ़ाने के लिए भी कितने ही खेल खिलाए जा सकते हैं ।

(ix) शिष्यों को व्याकरण एक जटिल और नीरस विषय दिखाई देता है । इसमें रुचि पैदा करने के लिए आगमन निगमन प्रणाली से काम लेना चाहिए और गद्यपाठ के साथ इनका सम्बन्ध जोड़ना चाहिए । नियमों की अपेक्षा प्रयोगात्मक व्याकरण (Applied Grammar) पर ही बल देना चाहिए ।

(x) रचना कार्य में चित्र आदि का प्रयोग करना चाहिए और सम्वाद, नाटक, वादविवाद, कथा वर्णन आदि से उनकी अभिव्यक्ति बढ़ानी चाहिए । 'दीपावली पर एक निबन्ध घर से लिख कर लाओ' ऐसा आदेश देने से विद्यार्थी रचना कार्य में तनिक भी रुचि नहीं रख सकते । इसके बदले उन विधियों को अपनाना चाहिए, जो आगे वर्णित हैं (देखिए अध्याय 17) ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 38 सिद्धान्त सूत्र (Maxims of Teaching)—

(क) ज्ञात से अज्ञात की ओर (From Known to Unknown)—विद्यार्थियों के वर्तमान ज्ञान को आधार मान कर अध्यापक नवीन ज्ञान का परिचय करा सकता है। पूर्व ज्ञान की सहायता से नवीन तथ्य को समझा सकता है। वह ज्ञात और अज्ञात वस्तुओं में तुलना करा सकता है। विद्यार्थी का ज्ञान अधूरा होता है, अत: एक कुशल अध्यापक पहले यह जान लेता है कि उनको प्रस्तुत विषय का कितना ज्ञान है और उसके पश्चात् ज्ञात वस्तुओं और विचारों द्वारा अज्ञात वस्तुओं और विचारों का परिचय देता है।

उदाहरण—विद्यार्थियों ने कुर्ते की राम कहानी लिखी है उसी ढंग पर वे आम की राम कहानी भी लिख सकते हैं।

(ख) सरल से जटिल की ओर (From Simple to Complex) - अध्यापक किसी कठिन विषय के बारे में मोटी-मोटी बातें पहले बता सकता है और विस्तार की बातें बाद में। वह सबसे पहले सरल प्रकरण ला सकता है और कठिन प्रकरण बाद में। सबसे पहले सरल भाव आने चाहिएं बाद में कठिन।

उदाहरण—पुस्तक में से पहले सरल पाठ पढ़ाने चाहिएं और बाद में कठिन। पहले सरल शब्दों को लेना चाहिए और बाद में कठिन।

(ग) मूर्त से अमूर्त की ओर (From Concrete to Abstract)—विद्यार्थी आरम्भ में अमूर्त भावों और विचारों को समझ नहीं सकता। उसके सामने मूर्तभाव और विचार अधिक सरल होते हैं। अध्यापक मूर्त और स्पष्ट उदाहरणों द्वारा अमूर्त बातों का ज्ञान करा सकता है।

उदाहरण—व्याकरण के नियम अमूर्त हैं। स्पष्ट उदाहरणों को उपस्थित करके इनसे नियम निकलवाने पर अमूर्त विचार-गतार्थ हो जाते हैं।

(घ) विशेष से सामान्य की ओर (From Particular to General)—बच्चों को सामान्य सिद्धान्त का नियम बता देने से पहले विशेष तथ्य और उदाहरण देने चाहिएं। विद्यार्थी उन सब उदाहरणों से स्वयं नियम निकाल सकते हैं।

उदाहरण—दीर्घ सन्धि के दस विशेष उदाहरण उपस्थित होने पर व्याकरण का एक सामान्य नियम निकाला जा सकता है कि यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, अथवा ऋ के परे सवर्ण स्वर हों तो दोनों के स्थान पर क्रमश: दीर्घ स्वर आ जाता है।

(ङ) आगमन से निगमन की ओर (Inductive to Deductive)—विद्यार्थी उदाहरणों के द्वारा एक व्यापक नियम निकाल सकता है। उदाहरणों से निरीक्षण द्वारा नियम निकालने की विधि को आगमन विधि कहते हैं। नियम निकालने के बाद इसकी पड़ताल हो सकती है और इनको अन्य उदाहरणों में प्रयुक्त कर सकते हैं, इस विधि को निगमन विधि कहते हैं। व्याकरण पढ़ाने की यही शुद्ध और सरल विधि है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. मातृ-भाषा हिन्दी की शिक्षा देते समय किन सामान्य सिद्धान्तों का ध्यान रखा जाना चाहिए ?

2. यदि हिन्दी अन्य भाषा (Second Language) के रूप में पढ़ाई जाए तो भाषा शिक्षण के किन सिद्धान्तों या नियमों का पालन करना आवश्यक होगा ?

3. भाषा शिक्षण में रुचि पैदा करने की क्या आवश्यकता है ? रुचि पैदा करने के लिए किन उपायों को काम में लाया जा सकता है ? (§ 37)

4. "बालक के भाषा-ज्ञान तथा व्यक्तित्व विकास के लिए बोल-चाल सर्वप्रथम साधन है।" इस कथन की विवेचना कीजिए। (§ 34)

5. सिद्धान्त सूत्र किसे कहते हैं। भाषा शिक्षण के संक्षेप में किन-किन सिद्धान्त सूत्रों का अनुसरण करना चाहिए ?

6. 'भाषा' कृतात्मक विषय है या कौशलात्मक विषय ? इसके सीखने में स्मरण (remembering) की अधिक आवश्यकता है या अभ्यास (Practice) की युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।

सहायक पुस्तकें

1. Palmer, Harold E :— (1) Oral Method of Teaching Langauge.
(2) Principles of Language Study.
(3) Scientific Study of Teaching of Language.

2 West Michael ;— Language in Education.

3. UNESCO :— Teaching of modern Language.
Ch. 'Methodology' of languages Teaching.

4. Herrick and Jacoss :— The Language Arts (Prentice Hall)

5. Ballard :— Language and Thought.

6. Tidyman and Butterfield :— Teaching the Language Arts (MD. Grow Hill Series Chapter 20).

7. Wilder Penfield Learning a Second Language. (Air Series, All India Radio) (The Publication Division)

8. M. M. Lewis Language in the School, ch. 2 The Spoken World.

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूसरा खण्ड

भाषा-शिक्षण के साधन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7

हिन्दी भाषा का अध्यापक

§ 39. वर्तमान अवस्था

हिन्दी भाषा का प्रचार और हिन्दी की शिक्षा योग्य शिक्षकों पर निर्भर है। परन्तु खेद है कि आजकल के तथाकथित हिन्दी शिक्षक इस महान् उत्तरदायित्व को निभाने में प्राय: असमर्थ हैं। जिन शिक्षकों से हिन्दी पढ़ाने की आशा रखी जानी है वे स्वयं हिन्दी से अनभिज्ञ हैं। योग्य शिक्षकों का बहुधा अभाव है। अध्यापकों की नियुक्ति उचित ढंग से नहीं होती। कई शिक्षक हिन्दी की बड़ी-बड़ी उपाधियां धारण किए हैं, परन्तु उन्हें शिक्षण विधि का ज्ञान और अनुभव नहीं। कई शिक्षक जो चिरकाल से पढ़ाते आए हैं, हिन्दी का थोड़ा ज्ञान रखते हैं। कई प्रदेशों में हिन्दी शिक्षकों को अंग्रेज़ी या गणित के शिक्षकों की अपेक्षा निम्न दर्जे का माना जाता है। वर्नाक्यूलर टीचर (vernacular teacher) कह कर उनका वेतन-दर न्यून रखा जाता है जिसके परिणामस्वरूप योग्य अध्यापक वर्नाक्यूलर टीचर बनना नहीं चाहते और जो बनते भी हैं वे असन्तुष्ट, उदासीन, प्रमादी और अयोग्य होते हैं। बहुत से प्रदेशों में भाषा शिक्षकों के प्रशिक्षण का संतोषजनक प्रबन्ध नहीं। इस प्रकार विशेषज्ञ अध्यापकों की आजकल कमी है। भाषा-शिक्षकों की ऐसी शोचनीय दशा को सुधारने के लिए माध्यमिक शिक्षा आयोग (Secondary Education Commission) और अन्तर्राष्ट्रीय समिति International Team) ने अनेक सिफारिशे उपस्थित की हैं। आशा है कि हिन्दी की सुचारु शिक्षा के लिए ऐसे शिक्षकों की व्यवस्था हो जाएगी जिनमें वे सारे गुण होंगे जो हिन्दी शिक्षण के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं। उन गुणों का संक्षिप्त व्योरा नीचे दिया जाता है।

§ 40. हिन्दी शिक्षक के गुण

हिन्दी शिक्षक में प्रथम वे सारे सामान्य गुण होने चाहिए जो एक सफल शिक्षक में होने चाहिएं। इसके अतिरिक्त उसमें ऐसे विशेष गुण होने चाहिएं जो हिन्दी पढ़ाने के लिए आवश्यक हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) सामान्य गुण (जो सभी शिक्षकों में होने चाहिएं)।

(1) व्यक्तित्व—अध्यापकों का व्यक्तित्व ऐसा होना चाहिए कि उसका प्रभाव विद्यार्थियों पर अच्छा पड़े उनके व्यक्तित्व में निम्न बातें सम्मिलित हैं :—

(i) शारीरिक स्वास्थ्य, चाल-ढ़ाल और स्फूर्ति।

(ii) मानसिक योग्यता—तीव्र बुद्धि, अध्ययन की ओर रुचि, निरीक्षण-शक्ति, धैर्य और प्रसन्नता।

(iii) नैतिक बल,—शिष्ट व्यवहार, शुद्ध आचरण, सच्चरित्र, विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति और प्रेम।

(2) शिक्षा तथा उपाधियां—विश्वविद्यालयी उपाधियां और विश्वविद्यालयी शिक्षा पर्याप्त नहीं। अध्यापकों की पाठान्तर क्रियाओं (Cocurricular activities) जैसे स्काउटिंग, समाज-सेवा, साहित्य-परिषद्, खेल-कूद, व्यायाम आदि का पूरा अनुभव होना चाहिए।

(3) पाठन अनुभव—अध्ययन का आधार अनुभव है। सफल अध्यापक वही बनता है जो तत्परता और जिज्ञासा से जन-जीवन तथा अध्यापन का अधिकाधिक अनुभव प्राप्त करता रहे।

(4) प्रशिक्षण—किसी प्रशिक्षण विद्यालय में शिक्षा के सिद्धान्तों और शिक्षा की प्रक्रिया का ज्ञान करना अध्यापक के लिए नितांत आवश्यक है। प्रत्येक व्यवसाय के लिए व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता है। अध्यापक के लिए उसकी दुगनी आवश्यकता है क्योंकि अध्यापक यन्त्रों या कागजों जैसे निर्जीव पदार्थों के साथ काम करने के बदले बालक जैसे सजीव व्यक्ति के साथ काम करता है। प्रशिक्षण के उपरान्त अध्यापक को अध्यापन का अभ्यास प्राप्त करना चाहिए।

(ख) विशेष गुण (जो हिन्दी शिक्षकों में विशेषकर होने चाहिए)।

(5) हिन्दी भाषा पर अधिकार—हिन्दी शिक्षक तब तक सफल शिक्षक नहीं बन सकता जब तक वह स्वयं हिन्दी का पूरा ज्ञान नहीं रखता। उसका उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। उसकी वाणी में प्रवाह होना चाहिए। वह सफल वक्ता हो। उसे वाचन में पूरा अभ्यास होना चाहिए। उसे हिन्दी व्याकरण का पूरा ज्ञान होना चाहिए। बहुधा हिन्दी शिक्षक व्याकरण से अनभिज्ञ होते हैं या व्याकरण की ओर उदासीन होते हैं। जिसके फलस्वरूप वे व्याकरण की शिक्षा छोड़ ही देते हैं। जब तक अध्यापक हिन्दी व्याकरण का ज्ञान नहीं रखता वह न तो व्याकरण पढ़ा सकता है, न विद्यार्थियों की व्याकरण की अशुद्धियों का संशोधन कर सकता है और न उनकी शुद्ध रचना में सहायता दे सकता है। व्याकरण के ज्ञान के अतिरिक्त हिन्दी शिक्षक स्वयं एक अच्छा लेखक होना चाहिए, तभी वह शिष्यों को लेखक बना सकता है। अत: वह हिन्दी भाषा के बोलने, पढ़ने और लिखने में निपुण होना चाहिए।

(6) हिन्दी साहित्य का विस्तृत ज्ञान—हिन्दी कवियों, उपन्यासकारों,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानीकारों, नाटककारों और अन्य प्रसिद्ध लेखकों की जीवनियों, प्रसिद्ध रचनाओं, साहित्यिक विशेषताओं, शैलियों आदि से परिचित होना हिन्दी पढ़ाने की प्रथम आवश्यकता है। अध्यापक को हिन्दी साहित्य की प्रसिद्ध रचनाओं का सूक्ष्म अध्ययन करना चाहिए। साहित्य के इतिहास, कविता के विभिन्न-वाद, छन्द, अलंकार, आलोचना और भाषा विज्ञान का ज्ञान, कोष आदि प्रकरण पुस्तकों का प्रयोग, पुस्तकालय का प्रयोग, हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का निरन्तर और नियमित अध्ययन, बाल साहित्य और किशोर साहित्य का परिचय उनके लिए परमावश्यक है। शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित निम्न शिक्षा सामग्री हिन्दी शिक्षकों के लिए उपयोगी है :—

1. बुनियादी हिन्दी शब्द माला, जिसमें 2000 बुनियादी हिन्दी शब्दों की एक प्रयोगात्मक सूची प्रस्तुत की गई है।

2. बुनियादी हिन्दी व्याकरण, जो नितान्त नए ढंग से लिखा गया है। इसकी विशेषताएं ये हैं—

(i) इसमें हिन्दी ध्वनियों का ध्वन्यात्मक विकास स्पष्ट किया गया है।

(ii) व्याकरण की शब्दावली का सरलीकरण किया गया है।

(iii) सन्धियों की संख्या उतनी ही रखी गई है जितनी कि वास्तव में प्रयुक्त होती हैं।

3. अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के लिए हिन्दी रीडर।

4. दक्षिण भारतीय भाषाएं सीखने के लिए द्विभाषी स्वयं शिक्षक प्राईमरें।

5. विदेशियों के लिए हिन्दी प्राइमरें।

6. द्विभाषी वर्णमाला चार्ट।

7. स्कूलों के लिए निम्न पाठ्य पुस्तकें जो शिक्षण अनुसन्धान और प्रशिक्षण की राष्ट्रीय परिषद् (N C. E. R. T) ने तैयार की हैं :—

काव्य संकलन, गद्य संकलन, एकांकी संकलन, जीवनी संकलन, कहानी संकलन, हिन्दी साहित्य का इतिहास, काव्य के अंग।

हिन्दी शिक्षक के निर्देश के लिए दिन-प्रतिदिन काम आने वाली कुछ उपयोगी प्रकरण की पुस्तकों की सूची नीचे दी जाती है :—

1.	हिन्दी व्याकरण	क़ामता प्रसाद गुरु (नागरी प्रचारिणी सभा, काशी)
2.	अच्छी हिन्दी	रामचन्द्रवर्मा (साहित्य रत्न माला कार्यालय बनारस)
3.	भार्गव शब्द कोष (हिन्दी से अंग्रेजी)	आर. सी. पाठक
4.	नालंदा अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोष	न्यू इम्पीरियल बुक डिपो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. वृहत पर्यायवाची कोष — भोलानाथ तिवारी (किताब महल, इलाहाबाद)
6. शब्दों का जीवन — भोलानाथ तिवारी (किताब महल, इलाहाबाद)
7. हिन्दी साहित्य की अंतर्कथाएं — भोलानाथ तिवारी (किताब महल, इलाहाबाद)
8. भाषा-विज्ञान — भोलानाथ तिवारी (किताब महल, इलाहाबाद)
9. प्रबन्ध सागर — ब्रह्मदत्त शर्मा (आतमराम एण्ड सन्ज)
10. आदर्श पत्र-लेखन — ,,
11. भाषण और भाषण-कला — ,,
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास — रामचन्द्र शुक्ल
13. हिन्दी साहित्य और साहित्यकार — सुधाकर पांण्डेय
14. हिन्दी व्याकरण — रघुनाथ सफाया (पंजाब किताब घर, जालन्धर)
15. हिन्दी शिक्षण-विधि — रघुनाथ सफाया (पंजाब किताब घर, जालन्धर)
16. हिन्दी अक्षर-विन्यास — रघुनाथ सफाया (पंजाब किताब घर, जालन्धर)
17. भाषा और साहित्य का विवेचन — रघुनाथ सफाया (एस. चांद एण्ड को. दिल्ली)
18. हिन्दी कविता पाठन — रजनी कान्त शूर, ब्रजभूषण शर्मा
19. कविता की शिक्षा — शिवनारायण श्रीवास्तव
20. समवाय — द्वारिका सिंह
21. शब्द साधना — रामचन्द्र शर्मा
22. हिन्दी विश्व कोष — केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय
23. ,, विश्व भारती — ,,
24. ,, ज्ञान सरोवर — ,,
25. भारतीय संस्कृत कोष — केन्द्रीय हिन्दी मंत्रालय

7. साहित्यिक प्रवृत्ति (Literary taste)—रुचि और योग्यता एक ही सिक्के के दो पार्श्व हैं जो जिस विषय में अधिक रुचि रखता है उस विषय में वह अधिक योग्यता प्राप्त करता है। उसका तात्पर्य यह नहीं कि हिन्दी शिक्षक वही बन सकता है जो स्वयं कवि या साहित्यकार हो। प्रत्येक शिक्षक से ऐसी आशा नहीं रखी जा सकती। परन्तु वही शिक्षक हो सकता है जो हिन्दी साहित्य में अभिन्न रुचि रखता हो। वही शिक्षक कविता के मर्म को पहचान सकता है; और फलतः विद्यार्थियों को भी काव्य सौंदर्य परखने के योग्य बना सकता है। विद्यालय में बाल सभा, कवि गोष्टी, कवि दरबार, नाटक आदि साहित्यिक कार्यों में वही अध्यापक दिलचस्पी लेगा जिसे साहित्य के साथ प्रेम हो। उससे आशा की जाती हैं कि वह बालकों के निकट साहित्य का निर्माण कर सके।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(8) **भाषा शिक्षा की विधियों का ज्ञान**—शिक्षक कला के ज्ञान और अनुभव के अतिरिक्त हिन्दी शिक्षण को भाषा (विशेष कर हिन्दी) और भाषण शिक्षण के सामान्य सिद्धान्तों और विधियों का ज्ञान और अनुभव होना चाहिए। अपने अनुभव की वृद्धि करने में उसे सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए। जिज्ञासा वृत्ति के साथ उसे हिन्दी के क्षेत्र में अनुसंधान में संलग्न रहना चाहिए। उसके अतिरिक्त हिन्दी शिक्षण की कितने आवश्यकता है। अनुसंधान के अध्याय में उनका विवरण दिया जाएगा। हिन्दी शिक्षक को ऐसे अनुसंधान में संलग्न रहना चाहिए। उसके अतिरिक्त हिन्दी शिक्षण के जितने भी साधन हैं उनका उपयोग करने में वह कुशल होना चाहिए।

§ 41. हिन्दी शिक्षक का कर्त्तव्य

संक्षेप में हिन्दी के दायित्व तथा वियोग में निम्न कार्य सम्मिलित कर सकते हैं :—

(1) **योजना तैयार करना** (Planning) - शिक्षक को चाहिए कि वह पढ़ाने से पहले एक पूरी योजना तैयार करे जिसमें निम्न बातें शामिल हैं —

(क प्रत्येक कक्षा के हिन्दी के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को मासिक, साप्ताहिक तथा दैनिक इकाइयों में बांटना।

(ख) प्रत्येक पाठ के लिए अपेक्षित दृश्य-श्रव्य साधनों की सूची तैयार करना, उन साधनों को जुटाना और उपलब्ध करना।

(ग) साप्ताहिक समय सारिणी में गद्य, पद्य, व्याकरण, रचना आदि के लिए घण्टियां निश्चित करना।

(घ) वाद-विवाद, भाषण, बालसभा आदि पाठान्तर-क्रियाओं का आयोजन करना।

(2) **पढ़ाना** - अर्थात् कक्षा में उपयुक्त शिक्षण विधियों के अनुसार सुचारु ढंग से पढ़ाना।

(3) **व्यवस्था करना**—अर्थात् कक्षा-कार्य, गृह-कार्य, पाठान्तर क्रियाओं, मूल्यांकन, अशुद्धि-संशोधन आदि की उचित व्यवस्था करना।

(4) **निरीक्षण,**—अर्थात् छात्रों के ग्रहकार्य और रचना कार्य का निरीक्षण करना प्रत्येक छात्र पर वैयक्तिक ध्यान देना और वैयक्तिक कठिनाइयों को दूर करना, हिन्दी उच्चारण, लिखाई, अक्षर, विन्यास, कविता पाठ तथा व्याकरण का अभ्यास करना।

(5) **निर्देशन** (Guidance) अर्थात् उच्चारण, वर्तनी आदि सम्बन्धी वैयक्तिक कठिनाइयों के लिए छात्रों को उपचार (remedial measure) की व्यवस्था करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(6) अभिलेख तैयार करना (recording), अर्थात्

(क) छात्रों के दिन-प्रतिदिन के कक्षा-कार्य, गृह कार्य, जांच पत्रों और अंकों का रिकार्ड रखना।

(ख) प्रगति पत्र (Progress raports) तैयार करना।

(ग) विकास अभिलेख (Cumulative records) तैयार करना।

(7) मूल्यांकन (evaluation) अर्थात्

(क) पाक्षिक या मासिक परीक्षा के लिए जांच-पत्र, प्रश्न पत्र तैयार करना।

(ख) परीक्षा की व्यवस्था करना।

(ग) उत्तर संचिकाओं को जांचना और

(घ) प्रत्येक परीक्षा के आधार पर प्राप्त अंकों का लेखा तैयार करना।

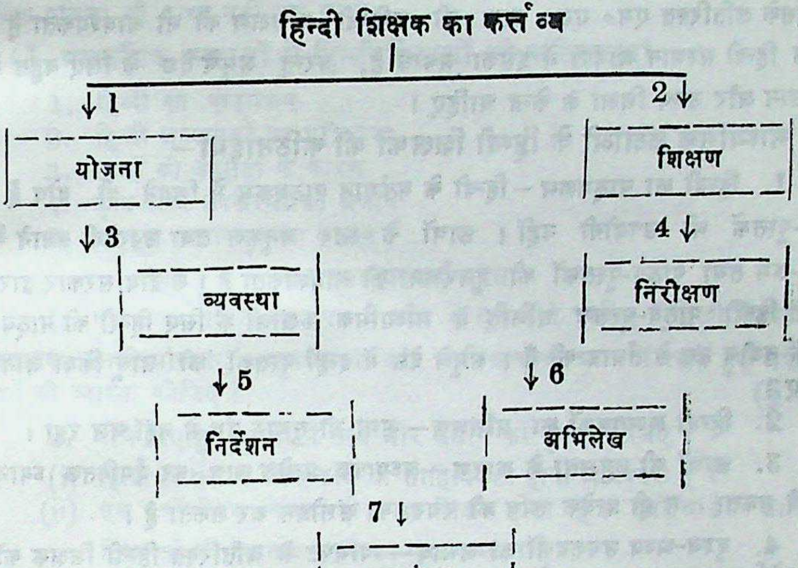

तालिका 10 - हिन्दी शिक्षक का कर्त्तव्य

§ 42. हिन्दी शिक्षकों का वर्तमान अवस्था को सुधारने के उपाय

(1) हिन्दी शिक्षकों को उपयुक्त प्रशिक्षण—हिन्दी शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण विद्यालयों की संख्या में वृद्धि होनी चाहिए। कई प्रशिक्षण विद्यालय ऐसे होने चाहिएं जिनमें हिन्दी शिक्षकों को ही प्रविष्ट किया जाए और हिन्दी-शिक्षण के लिए प्रशिक्षित किया जाए। ऐसे प्रशिक्षण विद्यालयों में उन हिन्दी शिक्षकों को प्रशिक्षण की सुविधा मिलेगी जो बी० ए० न होते हुए प्रभाकर, शास्त्री या साहित्य-रत्न हों।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी शिक्षकों के प्रशिक्षण की निम्न आवश्यकताएं हैं । प्राईमरी कक्षाओं के लिए ऐसे मैट्रिक-पास शिक्षक चाहिए, जिनको हिन्दी का समुचित ज्ञान हो, और जिन्होंने दो साल की जूनियर ट्रेनिंग प्राप्त की हो । मिडिल कक्षाओं के लिए बी० ए० पास शिक्षक चाहिए । हाई कक्षाओं के लिए बी० ए०, बी० एड० चाहिएं । वर्तमान ट्रेनिंग कालेजों में हिन्दी शिक्षण की जो व्यवस्था है वह संतोषजनक नहीं । हिन्दी-शिक्षण का एक पूरा पर्चा नहीं होता है । केवल पंजाब में 100 अंकों का पूरा पर्चा होता है । इसके अतिरिक्त अहिन्दी भाषी प्रदेशों के लिए हिन्दी शिक्षक प्रशिक्षित करने की सुविधाएं बहुत कम हैं । केन्द्रीय सरकार ने आगरा में केन्द्रीय हिन्दी संस्थान खोलकर इस दिशा में केवल आरम्भ किया है । हाल ही में दिल्ली और कतिपय अन्य स्थानों में ऐसे महाविद्यालय खोले गए । प्रत्येक अहिन्दी प्रदेश में ऐसे महाविद्यालय खोलने की भी आवश्यकता है । इसके अतिरिक्त एम० एड० स्तर की अहिन्दी प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है । केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा में इसका प्रबन्ध है, परन्तु समूचे देश के लिए बहुत से अनुसंधान और उच्च शिक्षा के केन्द्र चाहिए ।

माध्यमिक कक्षाओं के हिन्दी शिक्षकों की कठिनाइयाँ—

1. **हिन्दी का पाठ्यक्रम**—हिन्दी के वर्तमान पाठ्यक्रम में कितने ही दोष हैं । पाठ्य-पुस्तकें भी उपयोगी नहीं । छात्रों के स्तर अनुकूल तथा उपयोगी बनाने के पाठ्य-क्रम तथा पाठ्य-पुस्तकों की पुनर्रचना की आवश्यकता है । केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्मित हिन्दी पाठ्य-पुस्तक समिति ने माध्यमिक कक्षाओं के लिए हिन्दी की पाठ्य-पुस्तकें नवीन ढंग से तैयार की हैं । समूचे देश में इन्हीं पुस्तकों को लागू किया जाना चाहिए ।

2. **हिन्दी अध्यापकों का प्रशिक्षण**—अभी भी सुचारु ढंग से नहीं चल रहा ।

3. **छात्रों की बहुलता के कारण**—अध्यापक प्रत्येक छात्र पर वैयक्तिक ध्यान नहीं दे सकता । न ही प्रत्येक छात्र की रचना का संशोधन कर सकता है ।

4. **दृश्य-श्रव्य उपकरणों का अभाव**—श्यामपट के अतिरिक्त हिन्दी शिक्षक को और कोई उपकरण उपलब्ध नहीं ।

5. **अनुकूल वातावरण का अभाव**—श्यामपट के अतिरिक्त हिन्दी की शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण नहीं । अंग्रेजी के शिक्षकों को अधिक श्रेय दिया जाता है । हिन्दी शिक्षकों का वेतन स्तर उनसे निम्न हैं । भाषा-शिक्षक को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है ।

उपर्युक्त कारणों से हिन्दी शिक्षण की वर्तमान अवस्था असन्तोषजनक नहीं है । हिन्दी शिक्षकों की व्यावसायिक वृद्धि (professional growth) के लिए सरकार की ओर से कोई सहायता का साधन उपलब्ध नहीं । ऊंचे निर्देश के लिए बहुत कम गोष्ठियों सैमीनार या शिविरों का आयोजन होता है ।

(2) **हिन्दी शिक्षकों की नियुक्ति**—सिफारिश या पक्षपात के आधार पर नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होनी चाहिए। ठीक उपाधि, शिक्षण-अनुभव, रुचि और योग्यता की परख के बाद ही हिन्दी शिक्षकों की नियुक्त होनी चाहिए।

(3) **वेतन में वृद्धि** और अन्य आर्थिक या सामाजिक सुविधाओं से हिन्दी शिक्षक की प्रतिष्ठा बढ़ जाएगी, उसकी आर्थिक कठिनाइयां दूर हो जाएंगी और वह अपने नियोग में अधिक रुचि दिखाएगा।

(4) **परिचर्चा** (Seminar) पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण (Refresher Course), कार्य-शाला (Work-shop), शिक्षा यात्रा (Educational tour), व्याख्यान, यात्राएं, वादविवाद प्रतियोगिताओं आदि का प्रबन्ध भी हिन्दी शिक्षकों के लिए होना चाहिए।

(5) **हिन्दी शिक्षकों के लिए पुस्तकालीय सुविधाएं** सुलभ होनी चाहिए। गांव के उन हिन्दी शिक्षकों की दशा शोचनीय है जो अपने गांव में साहित्यिक पुस्तकें तो क्या दैनिक पत्रिका भी प्राप्त नहीं कर सकते।

§ 43 माध्यमिक कक्षाओं में हिन्दी शिक्षाकों की कठिनाइयां

1. हिन्दी का पाठ्यक्रम
2. हिन्दी अध्यापकों का प्रशिक्षण
3. छात्रों की बहुलता के कारण
4. दृश्य-श्रव्य उपकरणों का अभाव
5. अनुकूल वातावरण का अभाव

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. एक आदर्श हिन्दी अध्यापक में कौन से गुण होने चाहिएं ? हिन्दी के वर्तमान अध्यापक, उनकी योग्यता, उपलब्धियां और प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुए अपेक्षित गुणों की व्याख्या कीजिए ? **(§ 40)**

2. नीचे दिए हुए कथनों में सत्य और असत्य को पृथक् कीजिए।

(i) हिन्दी शिक्षक के लिए कवि या साहित्यकार होना आवश्यक है।

(ii) एक धर्मोपदेशक निश्चय ही सफल शिक्षक होता है। क्योंकि उसे धार्मिक सिद्धान्तों की व्याख्या करने का पूरा अभ्यास है।

(iii) व्याकरण के ज्ञान के बिना हिन्दी पढ़ाना असम्भव है।

(vi) जिसकी मातृ-भाषा हिन्दी नहीं, वह सफल हिन्दी शिक्षक नहीं बन सकता।

(v) हिन्दी शिक्षक को अधिक वेतन दो, तो वह योग्य बन जाएगा।

(vi) एक हिन्दी एम० ए० निश्चय ही सफल हिन्दी शिक्षक होगा।

(vii) पाठान्तर क्रियाओं का ज्ञान हिन्दी शिक्षक के लिए सहायक है।

3. हिन्दी शिक्षक के सम्बन्ध में नीचे कई गुण दिए हुए हैं जो गुण अनावश्यक है, उनके आगे 'अ' लिखें।

(i) लम्बा कद, जिसमें वह सारी कक्षा पर प्रभाव डाल सके।

(ii) सुरीला कंठ, जिससे वह हिन्दी कविता गा सके।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) सुलेख; जिससे उसका श्यामपट पर लिखा हुआ पढ़ा जा सके ।

(vi) कठोरता, जिससे वह अनुशासन रख सके ।

4. वर्तमान ट्रेनिंग कालिजों में भाषा शिक्षक को जो ट्रेनिंग मिलती है उसका मूल्यांकन कीजिए । इसमें आप क्या-क्या सुधार करना चाहेंगे ?

5. हिन्दी शिक्षकों के विविध कर्त्तव्यों की व्याख्या कीजिए ।

6. यदि आप किसी माध्यमिक स्कूल में हिन्दी के अध्यापक हैं आपके सामने कौन सी कठिनाइयां आती हैं ।

सहायक पुस्तकें

1.	Ministry of Education	Report of the Secondary Education Commission
2.	Ford Foundation	Teachers and Curricula in Secondary School.
3.	UNESCO	Teaching of Modern Language Ch. Training of Modern Language Teacher
4.	Curray	Teaching of English as a foreign Language.
5.	I. A. A. M.	Teaching of Modern Language (University of London Press) School.
6.	Faye L. Bumpass	Teaching of English as a Foreign language Ch. VII.
7.	Raghunath Safaya	School Organisation.

— — — —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

8

भाषा शिक्षण के विभिन्न साधन

§ 44.

अब तक शिक्षकों का यह दृष्टिकोण रहा है कि शिक्षा का एक मात्र साधन स्कूल है। परन्तु वर्तमान नवीन शिक्षण-पद्धति के अनुसार शिक्षा के अनेक साधन हैं, स्कूल जिनमें एक है। वास्तव में शिक्षा जीवन के लिए तैयारी ही नहीं, शिक्षा ही जीवन है शिक्षा समाज से प्राप्त की जाती है और स्कूल समाज का ही एक कृत्रिम लघुरूप है। स्कूल में भी कक्षालयी शिक्षा (Class Teaching) विद्यालयी शिक्षा का एक न्यून अंश है। आजकल शिक्षा के लिए कक्षा के भीतर और बाहर, विद्यालय के भीतर और बाहर अनेक साधनों का प्रयोग किया जाता है। भाषा की शिक्षा के लिए कक्षा में पाठ्य-पुस्तक की शिक्षा देना केवल एक साधन है। भाषा की शिक्षा तभी सम्पूर्ण हो सकती है जब पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त पुस्तकालय, बालसभा, कवि सम्मेलन आदि विभिन्न साधनों का प्रयोग किया जाए। नीचे इस बात की व्याख्या की जाती है कि भाषा शिक्षण में कौन-कौन से साधन अपनाये जाएं और उनका प्रयोग कैसे किया जाए।

(1) **पाठ्य पुस्तकें**—भाषा की शिक्षा में दो प्रकार की पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग हो सकता :—

(क) **भाषा की पाठ्य-पुस्तकें**—जैसे गद्य की पाठ्य-पुस्तकें, पद्य की पाठ्य-पुस्तक अथवा ऐसी पाठ्य-पुस्तक जिस में गद्य और पद्य दोनों ही द्रुत पाठ के लिए सहायक पुस्तक (Supplementary Reader), व्याकरण की पाठ्य-पुस्तक और उच्च कक्षा के लिए रचना तथा निबन्ध की पाठ्य-पुस्तक तथा छन्द अलंकार की पाठ्य-पुस्तक। इन पाठ्य-पुस्तकों में कौन-कौन से गुण होने चाहिएं और इनका प्रयोग कैसे किया जाना चाहिए, अगले अध्याय में इनका वर्णन किया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) **अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तक**—जैसे भूगोल, इतिहास, सामाजिक शास्त्र, दैनिक विज्ञान की पाठ्य-पुस्तकें। स्मरण रहे कि सभी पुस्तकें मातृ-भाषा में लिखी होती हैं और इनके सूक्ष्म अध्ययन से भाषा के अर्थ सहित वाचन में पर्याप्त अभ्यास हो जाता है। परन्तु खेद है कि भाषा के अध्यापक इन पुस्तकों से उदासीन हैं। अन्य विषयों के अध्यापक भी अपना ही विषय पढ़ाते हैं और अपने ही राग अलापते हैं और भाषा की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते। सिकन्दर महान् की कहानी सुनाते या लिखते समय विद्यार्थी उच्चारण अक्षर विन्यास या व्याकरण की अनेक अशुद्धियां दर्शाता है परन्तु इतिहास का अध्यापक उन अशुद्धियों का सशोधन करवाना अपना कर्त्तव्य नहीं समझता। जब तक भाषा के अध्यापक और अन्य विषयों के अध्यापक में समन्वय (Cordination) न हो तब तक विद्यार्थी अभीष्ट प्रगति नहीं कर सकते। गणित के प्रश्न करते समय विद्यार्थी अशुद्ध इबारत लिखता है। परन्तु गणित का अध्यापक इसका संशोधन क्यों करें? भूगोल की पाठ्य-पुस्तक में कठिन शब्द आ जाते हैं। भाषा का अध्यापक इन कठिन शब्दों का अर्थ क्यों बताये? यह तो भूगोल के अध्यापक का काम है। सारांश यह है कि प्रत्येक विषय की पाठ्य पुस्तक जो मातृ,भाषा या हिन्दी में लिखी गई हो, हिन्दी शिक्षण के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन है। उसमें आए हुए कठिन शब्द कठिन वाक्य और मुहावरे समझाए जाने चाहिएं। अभ्यासात्मक प्रश्न कराते समय विद्यार्थी को शुद्ध भाषा पर ध्यान देना चाहिए आवश्यकतानुसार संशोधन कराते रहना चाहिए। भाषा की पाठ्य-पुस्तकों और अन्य विषयों की पाठ्य-पुस्तकों में उसी प्रकार समन्वय की आवश्यकता है।

(2) **पुस्तकालय**—प्रत्येक स्कूल में एक-एक पुस्तकालय जिनमें विभिन्न विषयों की बालोपयोगी पुस्तकें, चित्र, कोष, आदि प्रकरण की पुस्तकें और अन्य पाठ्य-सामग्री हो। पुस्तकाल की व्यवस्था और प्रयोग के सम्बन्ध में आगे कहा जायेगा।

(3) **वाचनालय** प्रत्येक स्कूल की आवश्यकता है। इसमें दैनिक समाचार-पत्र, साप्ताहिक या मासिक पत्र तथा पत्रिकाएं होनी चाहिएं। एक घण्टी वाचनालय के लिए निश्चित होनी चाहिए, जिसमें विद्यार्थी पत्र-पत्रिकाओं की पढ़ाई करें। समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं के अध्ययन से न केवल मनोरंजन प्राप्त किया जाता है वरन् जन-जीवन की वार्ताओं का ज्ञान, समाज में सम्पन्न हो रहे आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों का ज्ञान, भाषा के वाचन में अभ्यास, शब्दावली की वृद्धि और ऐसे अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। वाचनालय में निम्न प्रकार की पत्र-पत्रिकाएं होनी चाहिएं :—

(i) बाल पत्रिकाएं जैसे चन्दामामा, चुन्नू-मुन्नू, बाल भारती, पराग, बालसखा कहानियों की पुस्तकें आदि।

(ii) किशोरों और प्रौढ़ों के लिए, सरस्वती, माधुरी, विशाल भारत, सरिता, नवनीत, आजकल, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दोस्तान आदि।

(iii) दैनिक समाचार पत्र जैसे हिन्दोस्तान, नवभारत टाइम्ज, वीरभारत, मिलाप, पंजाब केसरी आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) गैर सरकारी संस्थाओं की प्रचारात्मक-पत्रिकाएं और समाचार पत्र जैसे योजना, कुरुक्षेत्र, कल्याण, सर्वोदय आदि।

(v) सरकारी संस्थाओं की पत्रिकाएं जैसे केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय से प्रकाशित 'भाषा' त्रैमासिक, 'हिन्दी समाचार जगत', 'यूनेस्को कैरियर' आदि।

वाचनालय का कमरा स्वच्छ और हवादार होना चाहिए। छोटे बच्चों के लिए छोटी कुर्सियां और कम ऊंची मेजें होनी चाहिएं। विद्यार्थियों को विभिन्न पत्रिकाओं में अपने लेख भेजने में प्रोत्साहित करना चाहिए। वे अपनी लिखी कविताएं, कहानियां, पहेलियां, चुटकले, व्यंग्यचित्र (कार्टून) आदि भेजें। भेजने से पहले अध्यापक आवश्यकतानुसार संशोधन भी करें। वाचनालय में विभिन्न पत्रिकाओं (जैसे साप्ताहिक हिन्दुस्तान में बच्चों की फुलवाड़ी) में तथा दूसरे सहपाठियों के लेख तथा फोटो देख कर बच्चों को कितना हर्ष होता है उसकी सम कल्पना नहीं कर सकते।

(5) **समाचार पत्र**—जब से समाचार पत्र सुलभ हो गये हैं, समाचार पत्रों का वाचन एक सार्वभौम प्रातःकालीन क्रिया बनी है। प्रत्येक शिक्षित अपनी प्रथम जिज्ञासापूर्ण दृष्टि समाचार पत्रों के मोटे अक्षरों पर डालता है, निश्चय ही यह एक शिक्षाप्रद लाभकारी आदत है। विचारों का संकलन, संसार में नित्य प्रति घटने वाली घटनाओं की जानकारी, राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक, परिस्थितियों की जांच-पड़ताल, मत-मतान्तरों की आलोचना, राष्ट्रीय चेतना और जागरूकता के अतिरिक्त समाचार पत्रों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि भाषा के ज्ञान की उत्तरोत्तर वृद्धि हो जाती है, नए शब्द सीखे जाते हैं, वाचन का अभ्यास हो जाता है, और अर्थबोध की क्षमता बढ़ती है। अतः स्कूल में छात्रों को समाचार पत्र पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। छात्रों को बारी-बारी आदेश देना चाहिए कि वे समाचार पत्र पढ़कर मोटी खबरें समाचार-बोर्ड पर लिखें। समाचार पत्र पढ़ना भी एक कला है। छात्रों को समझाना चाहिए कि इतने वृहद समाचार पत्र में कौन-कौन से स्तम्भ पढ़ने चाहिएं और कौन से छोड़ने चाहिए। सम्पादकीय कहां पर होते हैं, विज्ञापन कहां पर और लेख कहां। कभी-कभी व्यापारिक विज्ञापनों पर भी ध्यान केन्द्रित कराना चाहिए। विज्ञापन का उद्देश्य क्या है, और कहां तक सफल होता है? आरम्भ होता है रोचक कहानी से और अन्त में होता है वनस्पति का प्रोपोगण्डा।

(5) **विद्यालयी पत्रिकाएं** (School Magazines) :—

विद्यार्थियों को रचना का कार्य और आत्माभिव्यक्ति (Self Expression) में प्रोत्साहन देने के लिए विद्यालयी पत्रिकाओं का आयोजन करना चाहिए। ऐसी पत्रिकाओं में विद्यार्थियों के लेख प्रकाशित होंगे। ऐसी पत्रिकाएं निम्न प्रकार की होंगी :—

(i) **कक्षा पत्रिका** - प्रत्येक कक्षा के विद्यार्थी (प्रारम्भिक कक्षाओं को छोड़कर) अपनी कक्षा की एक पत्रिका निकाल सकते हैं, जिसमें उसी कक्षा के विद्यार्थियों के लेख (कविताएं, कहानियां, निबन्ध, चुटकले, पहेलियां आदि) प्रकाशित होंगे। यह आवश्यक नहीं कि पत्रिका मुद्रित हो। एक पाण्डुलिपि ही तैयार होकर वाचनालय में रखी जा सकती है। पत्रिका मासिक हो, त्रैमासिक हो या वार्षिक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) **भित्ति पत्रिका** (Wall Magazine)—कागज़ के टुकड़ों पर विद्यार्थियों की सुन्दर रचनाएं लिखी जा सकती हैं और दीवार पर उन तख्तों को प्रदर्शित किया जा सकता है। लेखों के साथ उचित चित्र भी होने चाहिएं। इसके प्रकाशन का काम सारे विद्यालय की एक प्रकाशन समिति को सौंपना चाहिए।

भित्ति-पत्रिका पर रचनाएं प्रदर्शित करने के सम्बन्ध में निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए। जिस कागज़ पर रचना लिखी जाए, वह मोटा लकीरों वाला और सुन्दर होना चाहिए। उसके चारों तरफ हाशिया (Margin) छोड़ना चाहिए। प्रत्येक रचना के लिए अलग-अलग पृष्ठ का प्रयोग करना चाहिए और प्रत्येक पन्ना समान आकार का होना चाहिए। बोर्ड पर चिपकाने में भी सावधानी से काम लेना चाहिए। रचनाओं का कोई तरकीब या क्रम होना चाहिए। प्रत्येक रचना के नीचे लेखक का नाम होना चाहिए।

(iii) **स्कूल पत्रिका** (School Magazine) प्रत्येक हाई स्कूल की अपनी पत्रिका होनी चाहिए, जिसका मुद्रण और प्रकाशन का भी प्रबन्ध होना चाहिए। भाषा शिक्षण का यह एक उत्तम साधन है। अपने नाम को और अपने लेख को छपा हुआ देखकर बच्चों को असीम उल्लास प्राप्त होता है। इसलिए उनमें उत्तमोत्तम रचनाएं लिख कर भेजने की होड़ सी लगी रहती है। पत्रिका का सम्पादक एक योग्य विद्यार्थी होना चाहिए जो अध्यापक की सरक्षता में काम करे। ऐसी पत्रिकाओं को प्रकाशित करना विद्यार्थियों को योग्य लेखक बनाने के लिए तैयार करना है। इस कार्य को एक प्रोजेक्ट (Project) के रूप में लेना चाहिए।[1]

(8) **डायरी या दैनिकी**—विद्यार्थियों से डायरी लिखवाना एक नवीन विधि है। आत्म प्रकाशन प्रत्येक व्यक्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। हम अपने सुख-दुख को बोलकर या लिखकर वर्णन करने में संतोष प्राप्त करते हैं। प्रत्येक बालक अपने अनुभव बोलकर या लिखकर अभिव्यक्त करना चाहता है, वह अनुभव कितना ही तुच्छ क्यों न हो। विद्यालय में उसकी प्रवृत्ति को विकास मार्ग मिलना चाहिए। अत: तीसरी-चौथी श्रेणी से लेकर ही डायरी लिखवानी चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी के पास एक कापी या डायरी हो। उसमें वह निम्न प्रकार की बातें दिन-प्रतिदिन लिखता रहे :—

(i) औद्योगिक कार्य का वर्णन अर्थात् आज उद्योग का कौन-सा काम कितना और कैसे किया।

(ii) विद्यालयों की दैनिक क्रियाओं का वर्णन, जिन क्रियाओं में विद्यार्थी ने भाग लिया हो, आज वाद-विवाद में किसने अच्छा भाषण दिया और उसने क्या कहा, होली का उत्सव कैसे मनाया, आज के फुटबाल मैच में कौन-सी टीम जीती…… …इत्यादि।

(iii) अपने व्यक्तिगत अनुभव—कभी विद्यार्थी उपने सहपाठियों के साथ व्यवहार

1. देखिये : स्कूल प्रशासन, अध्याय: पाठान्तर क्रियाएं (लेखक रघुनाथ सफाया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में, स्कूल में, बाजार में, घर में, दूसरे नगर या ग्राम में, यात्रा में उत्सव में अथवा किसी अवसर पर जो व्यक्ति अनुभव प्राप्त पैदा करे, नए विचार ग्रहण करे और नए भावों का भोगी बने, उनका प्रकाशन भी डायरी में हो सकता है।

(iv) स्वास्थ्य की टिप्पणियां—पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तकें और भाषा साहित्य का अध्ययन करने के उपरान्त, नए सीखे हुए शब्द मुहावरे, नई सुन्दर उक्तियां नई कहानियां और तत्सम्बन्धी नए विचार टिप्पणियों के रूप में डायरी में दर्ज किए जा सकते हैं।

डायरी पद्धति अत्यन्त ही लाभकारी पद्धति है। अध्यापक को चाहिए कि वह कभी-कभी डायरियां देखे और ठीक ढंग से लिखने में सहायता दे।

(7) **पत्र-व्यवहार** (Correspondence)—यों तो पत्र लिखने की शिक्षा रचना की घण्टी में दी जाती है परन्तु यहां पर उस प्रकार के पत्र लिखने से तात्पर्य नहीं। यहां यह तात्पर्य है कि स्कूल में दैनिक कार्यक्रम में कभी-कभी ऐसे अवसर उत्पन्न करने चाहिएं जब विद्यार्थियो को घरेलू, व्यापारिक या सरकारी पत्र लिखने पड़ें। विद्यार्थियों के लिए पुस्तकें खरीदनी हैं, स्टेशनरी लानी है, स्वास्थ्य अधिकारी से बी. सी. जी. का टीका लगवाने के लिए प्रार्थना करती है, उपज के विक्रय के लिए विज्ञापन देना है, गांव में आए हुए किसी महान् नेता या विद्वान् को निमन्त्रण पत्र भेजना है, उनके भाषण का आयोजन करके गांव-वासियों को सूचना भेजना है, परीक्षा में सफल होने के उपरान्त अपने माता-पिता को पत्र लिखना है, यात्रा से लौटने पर अपने मित्र को उसका वर्णन सुनाने के लिए चिट्ठी लिखनी है, कभी तार भेजना है, कभी शोक पत्र लिखना है, कभी इश्तहार प्रकाशित करना है, कभी अभिनन्दन पत्र लिखना है, कभी कार्टून बनाना है, कभी दूसरे गांव की हाकी टीम को चुनौती भेजनी है आदि कितने ही अवसरों पर विद्यार्थी अपनी भाषा के ज्ञान को क्रियात्मक रूप देंगे।

(8) **बाल सभा**—प्रति सप्ताह किसी घण्टी में बाल-सभा का आयोजन करना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को अपनी कविताएं सुनाने, लेख पढ़ने, कहानियां और चुटकले सुनाने, वाद-विवाद करने, भाषण प्रतियोगिता में भाग लेने, पढ़ी हुई सहायक पुस्तकों का विवरण पढ़ने, अपने अनुभव सुनाने, अपनी डायरी के रोचक पन्ने पढ़ने और इस प्रकार अपनी अभिव्यक्ति-शक्ति की वृद्धि करने का सुअवसर प्राप्त हो। जहां अन्य घण्टियों भाषा शिक्षण का सैद्धान्तिक कार्य होता है, वहां उस घण्टी में वास्तविक प्रयोगात्मक कार्य होता है जिसका मनोवैज्ञानिक, मनोरंजनात्मक और शैक्षणिक महत्त्व बहुत है।

(9) **कवि सम्मेलन तथा कवि दरबार**—कविता में रुचि बढ़ाने के और काव्य सौंदर्य परखने का ज्ञान प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन है। कवि सम्मेलन का आयोजन करना। कवि बाहर के हों तो अच्छा है नहीं तो विद्यार्थी ही अपनी कविताएं सुना सकते हैं। कवि दरबार में दिवगंत कवियों का नाट्य विधि से सम्मेलन रखा जाता 'कविता में अभिरुचि बढ़ाने के साधन' के प्रकरण में इसकी व्याख्या की गई है।

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 3478
Dated 2002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(10) **प्रतियोगिता**—(Competition)—किसी न किसी प्रकार की प्रतियोगिता जैसे वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, कहानी प्रतियोगिता, निबन्ध प्रतियोगिता, विद्यार्थियों की आत्माभिव्यक्ति और भाषा के व्यवहारिक प्रयोग के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। प्रतियोगिता का क्षेत्र अपने विद्यालय के अतिरिक्त, एक जिला या छोटा प्रदेश भी हो सकता है। इसके द्वारा भी विद्यार्थी अच्छे वक्ता और लेखक बन सकते हैं। 12 वें अध्याय में इस पर प्रकाश डाला गया है।

(11) **संग्रह** (Collection)—विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के लेखकों के संग्रह करने में भी प्रोत्साहन देना चाहिए जैसे कहानी संग्रह, चुटकला संग्रह, कहावत संग्रह, कवि चित्र-संग्रह आदि।

(12) **दृश्य श्रव्य उपकरण** (Audio Visual Aids)—इसका वर्णन आगे पृथक् रूप में किया गया है।

(13) **नाटक**—नाटक विद्यालय का जीवित रूप है। उसके द्वारा विद्यार्थियों की अपनी कामनाएं और विचार मनोरम ढंग से प्रकाशित करने का सर्वश्रेष्ठ अवसर प्रदान होता है। बालकों और किशोरों के नाट्य प्रदर्शन सर्वोत्तम विनोदात्मक और साहित्यिक व्यापार है।

उपार्जित ज्ञान को जीवित रूप देने के लिए नाटक खेलना पर्याप्त है। नाटकीय दृश्य न केवल दर्शक बालक के लिए लाभदायक हैं, अपितु नाटकीय पात्र भी शुद्ध उच्चारण सीखने, अभिनय सीखने, बोल-चाल में अभ्यास प्राप्त करने, सहकारिता सीखने और भाषा व्यावहारिक प्रयोग में अभ्यास प्राप्त करने के लिए उत्तम अवसर है अत: प्रत्येक विद्यालय में वर्ष में कई बार नाटक खेले जाने चाहिएं। इसकी व्यवस्था अध्यापक कर सकता है। उसका काम है सुन्दर, सरल और शिक्षाप्रद नाटक चुनना, विद्यार्थियों में से अच्छे पात्र चुनना, प्रत्येक पात्र को अपना-अपना भाषण तथा सम्वाद का अंश याद करने के लिए देना, पदों की ओर पात्रों के परिधान की व्यवस्था करना, पात्रों से कई अभ्यास करवाना और उनकी जांच तथा संशोधन करना आदि।

निम्न प्रकार के नाटक खेले जाते हैं :—

(i) सम्पूर्ण नाटक, जिस में एक से अधिक अंश हों।

(ii) एकांकी नाटक, जिसमें केवल एक अंश हो।

(iii) आत्म-भाषण (Soliloquy), जिसमें पात्रों के बदले कठपुतलियां काम करती हों।

(iv) छाया नाटक (Shadow Play), जिस पात्र के बदले उसकी छाया दृश्यमान हो।

(v) नृत्य नाटक, जिसमें नृत्य की प्रधानता हो।

(vi) पेजंट (Peagent), जिस में दृश्य की प्रधानता हो और कथोपकथन का अभाव हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(vii) मूक-नाटक (Pantomime), जिसमें अभिनय की प्रधानता हो और कथोपकथन का अभाव हों ।

(viii) अंग्रेजी में इसके अतिरिक्त 'Histrionics और 'Tableau' आदि अनेक प्रकार के नाटक खेले जाते हैं । रेडियो नाटक का अनुकरण भी किया जा सकता है ।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. प्रचलित हिन्दी शिक्षण का एक मात्र साधन पाठ्य-पुस्तक है, जिसके कारण इसका नाम 'पस्तकावलम्बी' (bookish) और 'एकांगी' (onesided) पड़ा है । इस दोष को दूर करने के लिए पाठ्य-दुस्तक को छोड़ कर किन-किन अन्य साधनों का उपयोग किया जाना चाहिए ।

2. बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में पाठ्य-पुस्तकों के स्थान की ओर एक आवश्यक प्रतिक्रिया हुई । शिक्षक को अध्ययन कार्य सौंपा गया, परन्तु उसके लिए पुस्तकें अधिकार वर्ग की वस्तु न होकर एक सहायक वस्तु ही रह गई । इस सिद्धान्त की संक्षिप्त व्याख्या कीजिए और स्पष्ट कीजिए कि यह भारतीय स्कूलों में किस प्रकार लागू हो सकता है ?

3. शिक्षण में समाचार पत्र तथा मैगज़ीन के क्या लाभ हैं । दैनिक पत्रों की सहायता से आप किन-किन विषयों को पढ़ा सकते हैं और कैसे ?

4. नाटक खेलने के साधन का हिन्दी शिक्षण में या भाषा शिक्षण में क्या महत्त्व है ? इस साधन के प्रयोग के लिए आप कैसे व्यवस्था करेंगे ?

5. हिन्दी की शिक्षा में निम्न कार्यों के विभिन्न लाभों की व्याख्या कीजिए—

(i) (क) वाद-विवाद (ख) रचना (ग) पुस्तकालय (घ) लोकगीत और लोक गाथाएं ।

(ii) (क) पुस्तकालय (ख) व्याकरण (ग) कहानी (घ) संवाद (ङ) श्रुतलेख ।

सहायक पुस्तकें

1. T. Raymonc — Modern Education its aims and methods,
2. Edgar Dale — Audio Visual Methods in Teaching.
3, Johan Adams — Modern Development in Eductional Practice.
4. I. A. A. M. — Teaching of Modern Languages.
5. D. C. Whimster — Teaching of English in school Ch. II (Macmillan Co.)
6. Mckown & Roberts — Audio Visual Aids to Instruction (Mcgraw Hill Company)
7. Wittich and Schuller — Audio Visual Material (Harper and Brothers)
8. Tidyman and Butterfield — Teaching the Language Art. Ch. 1?.
9. Mrs. Swaminathan — New Way to Drama.

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9
पाठ्य-पुस्तक

45 महत्त्व तथा प्रचार

भाषा-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक को बड़ा महत्त्व प्राप्त है। पाठ्य-पुस्तक भाषा के सभी अंगों के पढ़ाने का केन्द्र है। व्याकरण, रचना, उच्चारण, बोल-बाल आदि सिखाने के लिए पाठ्य-पुस्तक एक सर्वसाधारण साधन है। अध्यापक और विद्यार्थी दोनों की कार्य-सिद्धि की कुञ्जी है। परन्तु खेद है कि आजकल जो पाठ्य-पुस्तकें बाजार में उपलब्ध है और जो सरकार द्वारा स्वीकृत हैं, वे विभिन्न दोषों के कारण भाषा-शिक्षण के उद्देश्य की पूर्ति नहीं करतीं। विद्यार्थियों के लिए जो पाठ्य-पुस्तकें तैयार की गई हैं, उनमें न विषयों का उपयुक्त चुनाव है, न उचित भाषा शैली है, न क्रम है, न व्यावहारिकता और न उचित छपाई। परिणाम-स्वरूप पाठ्य-पुस्तकों की इस दयनीय दशा से हिन्दी शिक्षण को हानि पहुंच रही है।

हिन्दी पाठ्य पुस्तकों का प्रकार—

(1) सूक्ष्म अध्ययन ((Intenstive study) के लिए वाचन की पाठ्य-पुस्तक जिसमें गद्य और पद्य का समावेश है।

(2) द्रुत पाठ (Rapid Reading) के लिए सहायक (Supplementary reader)।

(3) हाई कक्षाओं के लिए कहानी. नाटक या कविता की पृथक्-पुस्तकें।

(4) व्याकरण की पाठ्य-पुस्तक (जिसका प्रयोग हाई कक्षाओं में होना चाहिए।)

(5) रचना और व्याकरण के लिए वर्क-बुक्स (Wook s books) या अभ्यास पुस्तकें, जिनका प्रयोग स्वतन्त्र अध्ययन और व्याकरण तथा रचना के अभ्यासों के लिए होता है। अंग्रेज़ी में इनका विशेष प्रयोग होता है, परन्तु हिन्दी में उनका प्रायः अभाव ही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन सब प्रकार की पाठ्य-पुस्तकों में वाचन की पाठ्य-पुस्तक ही अधिक महत्त्व-पूर्ण है ।

वाचन के लिए एक सफल हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में निम्न गुणों का होना आवश्यक है ।

§ 46 पाठ्य-पुस्तक के आवश्यक गुण—

पाठ्य-पुस्तकों के दो पहलू होते हैं –1. आंतरिक पहलू और 2. बाह्य पहलू ।

1. आंतरिक पहलू में निम्न गुण आ जाते हैं । (क) 'उचित विषय' (ख) उपयुक्त भाषा-शैली, (ग) पाठों का उचित क्रम और परिणाम, (घ) व्याख्या टिप्पणी अभ्यास तथा चित्र ।

2. बाह्य पहलू में निम्न बातें समाविष्ट है (ङ) छपाई (कागज, कवर, टाइप आदि) प्रकाशन तथा सम्पादन । छपाई, आकार, चित्र आदि बाहरी रूप के लिए अंग्रेजी का एक शब्द फार्मेट (format) प्रचलित हैं । (च) प्रकाशन तथा सम्पादन ।

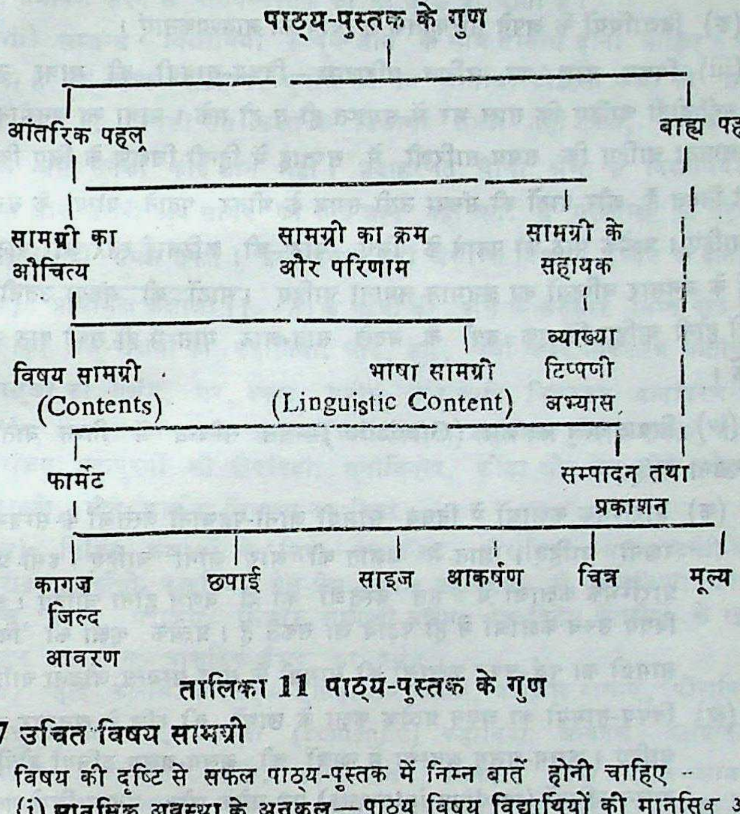

तालिका 11 पाठ्य-पुस्तक के गुण

§ 47 उचित विषय सामग्री

विषय की दृष्टि से सफल पाठ्य-पुस्तक में निम्न बातें होनी चाहिए –

(i) मानसिक अवस्था के अनुकूल—पाठ्य विषय विद्यार्थियों की मानसिक अवस्था के अनुकूल होना चाहिए । प्रारम्भिक कक्षाओं में घर, बाजार, निकट वातावरण तथा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रतिदिन व्यवहार में आने वाली बातों का समावेश होना चाहिए। उच्च कक्षाओं में ही साहित्यिक निबन्ध रचनाओं को पढ़ाया जा सकता है।

प्रायः देखा गया है कि तीसरी श्रेणी की पाठ्य-पुस्तक में कबीर के दोहे रखे गए हैं और आठवीं की पुस्तक में हितोपदेश की एक कहानी। ऐसी दशा में विषय विद्यार्थियों की मानसिक अवस्था के अनुकूल नहीं रहता।

(ii) **उद्देश्य के अनुकूल विषय वस्तु**—प्रत्येक कक्षा के विषय-वस्तु का चयन निम्न आवश्यक तत्त्वों के आधार पर करना चाहिए।

(क) उस कक्षा को हिन्दी पढ़ाने के विभिन्न शैक्षणिक उद्देश्य (जो ऊपर अध्याय 2 में वर्णित हैं);

(ख) राष्ट्रीय शिक्षा के उद्देश्य (national goals of education)

(ग) सम्पूर्ण शिक्षा (curriculum) की आवश्यकताएं;

(घ) इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि अन्य विषयों की आवश्यकताएं;

(ङ) विद्यार्थियों के अपने सांस्कृतिक समुदाय की आवश्यकताएं।

(iii) **विषय वस्तु का उचित परिणाम**—विषय-सामग्री की मात्रा उतनी अधिक नहीं होनी चाहिए कि साल भर में समाप्त ही न हो सके। मात्रा का अनुमान इस ढंग से लगाना चाहिए कि समय-सारिणी में सप्ताह में हिन्दी शिक्षण के लिए कितनी घण्टियां नियत हैं, और पाठों की संख्या उसी समय के भीतर पढ़ाने योग्य के बराबर होनी चाहिए। प्रत्येक पाठ को पढ़ाने के लिए, पाठ की कठिनाई स्तर और पाठ की लम्बाई के अनुसार घण्टियों का अनुमान लगाना चाहिए। पाठों की संख्या उतनी कम भी नहीं होनी चाहिए कि एक वर्ष के बदले सात-आठ मास में ही सभी पाठ पढ़ाये जा सकें।

(iv) **विषय वस्तु का क्रम** (Gradatior)—इस सम्बन्ध में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(क) प्रारम्भिक कक्षाओं में विषय सामग्री जानी-पहचानी वस्तुओं के सम्बन्ध मे रखनी चाहिए। ज्ञात से अज्ञात की ओर जाना चाहिए। इसी प्रकार प्रारम्भिक कक्षाओं में मूर्त वस्तुओं का ही वर्णन होना चाहिए। अमूर्त विषय उच्च कक्षाओं में ही पढ़ाये जा सकते हैं। प्रत्येक कक्षा की विषय-सामग्री का पूर्व-अपर कक्षाओं की सामग्री के साथ सम्बन्ध जोड़ना चाहिए।

(ख) विषय-सामग्री का चयन प्रत्येक कक्षा के छात्रों की रुचि के अनुसार करना चाहिए। अलग-अलग अवस्था में छात्रों की अलग-अलग रुचियां होती है। वाचन रुचियों (reading inteɔests) पर अनेक शोध प्रबन्ध लिखे गए हैं, और उनके आधार पर प्राईमरी, मिडिल आदि कक्षाओं के छात्रों की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुचियों का विभाजन हो सकता है ।[1]

(v) **विषयों में विविधता**—तात्पर्य यह है कि पुस्तक में सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण के विविध विषयों से सम्बन्धित लेख, कहानियां, कविताएं, सम्वाद, निबन्ध आदि होने चाहिएं। उदाहरण के रूप में एक चौथी श्रेणी की पाठ्य-पुस्तक में निम्न विषय होने चाहिएं। प्रकृति के किसी दृश्य या पदार्थ का वर्णन, घर, स्कूल या गांव का वर्णन, स्वास्थ्य, शिल्प, त्यौहार, कहानी, गीत, देश-विदेश की कोई वार्ता, साधारण विज्ञान, महापुरुषों की जीवनी तथा प्राचीन भारत की कोई सांस्कृतिक या शिक्षाप्रद कहानी। विषयों की विविधता से जहां ज्ञान की वृद्धि हो जाती है, वहां रोचकता उत्पन्न हो जाती है।

(iv) **समवाय**--विषयों का अन्य विषयों के साथ समवाय होना चाहिए। इतिहास, भूगोल, नागरिकता, साधारण विज्ञान तथा साहित्य की रोचक बातों का पाठ्य-पुस्तक में समावेश करने से पाठ्य-पुस्तक की भी वृद्धि हो जाती है।

(vii) **सम्बन्ध**--विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान के साथ सम्बन्ध होना चाहिए। प्राय: देखा गया है कि लेखक इतिहास, भूगोल की उन वार्ताओं को ईसी कक्षा की पाठ्य-पुस्तक में लाते हैं, जिनको उस कक्षा के विद्यार्थी समझ नहीं सकते, क्योंकि उनके सम्बन्ध में अभी उनको कोई ज्ञान नहीं। उदाहरणत: चौथी श्रेणी के विद्यार्थियों को साईबेरिया और उत्तरी ध्रुव सागर का कोई ज्ञान नहीं अत: वे 'एस्कीमो की कहानी' अच्छी प्रकार नहीं समझ सकते। इसी प्रकार छटी श्रेणी के विद्यार्थी इंग्लैंड के इतिहास

---

1. (क) प्राथमिक कक्षाओं (1--5) के छात्रों की रुचि के अनुसार निम्न पाठ होने चाहिएं पशु-पक्षियों की कहानियां, चांद, सूर्य, वर्षा आदि निकटतम वातावरण वस्तुओं का वर्णन, घर, स्कूल, पड़ोस, गांव आदि निकटतम वातावरण का वर्णन; राजा, रानी आदि सम्बन्धी बालोपयोगी कहानियां; लोक-कथाएं; यात्रा-पराक्रम; महापुरुषों की जीवनियां; मनोविनोद, क्रीड़ा और खेल; मेले-त्यौहारों; चुटकले, गीत; कार्टून; चित्रमय कहानियां।

(ख) मिडिल कक्षाओं के लिए--सामाजिक, पौराणिक, युद्ध-सम्बन्धी और पराक्रम-सम्बन्धी कहानियां; देश-प्रेम तथा महापुरुषों की जीवनियां; क्रीड़ा-खेल, यात्रा, पराक्रम, शिकार सम्बन्धी वर्णन; देश-विदेश के लोगों के रहन-सहन का वर्णन; प्राकृतिक वैभव का वर्णन।

(ग) हाई कक्षाओं के लिए—ऐतिहासिक कथाएं, पराक्रम गाथाएं, पौराणिक, जासूसी, तिलस्मी, रोमानी (romantic) कहानियां; अन्वेषण--आविष्कार; जीवनी--आत्मकथा; प्रकृति- जंगली-जीवन, शिकार, यात्रा--खोज सम्बन्धी वर्णन; जगत, समाज, संस्कृति, युद्ध, राजनीति, धर्म और व्यवसाय लेख; साहित्य संगीत-कला; हास्य-व्यंग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से अपरिचित है अतः 'किंग आर्थर', 'फलोरेंस नाईटिंगेल', 'जोन आव आर्क' जैसी कहानियों में आये हुए ऐतिहासिक प्रसंगों को नहीं समझ सकते। पांचवीं श्रेणी में आप यूनान के दार्शनिक 'सुकरात की कहानी,' 'जगदीशचन्द्र बोस के आविष्कार', 'कुतुबमीनार,' 'झांसी की रानी' जैसे पाठ सुगमता से नहीं पढ़ा सकते, क्योंकि इनमें आये हुए प्रसंग उच्च कक्षाओं के स्तर के ऐतिहासिक और भौगोलिक ज्ञान से सम्बन्धित हैं।

(viii) **रुचिकर और मनोरंजक** लेखक को विद्यार्थियों की रुचियों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। पांचवीं श्रेणी की पुस्तक में निम्न विषय थे जो विद्यार्थियों को बिल्कुल पसन्द न थे – 'कुत्ता', 'सफाई' 'गोबिन्द रानाडे' 'चुम्बक', 'मक्की' 'जापान' इत्यादि। कभी विषय रोचक होते हैं, परन्तु उनका वर्णन अरोचक होता है। हां अरोचक विषयों को भी वर्णन द्वारा रोचक बनाया जा सकता है।

(ix) **पद्य का समावेश** – सुन्दर और सरल गीतों तथा कविताओं से पाठ्य-पुस्तक की रोचकता बढ़ती है। गीत ऐसे होने चाहिएं जो कण्ठस्थ भी हो सकें। संगीत के बिना गीतों से भी कोई लाभ नहीं। उन कविताओं से भी कोई लाभ नहीं जो गद्य से मिलती-जुलती हों 'एक किसान और राजा' का लम्बा चौड़ा पद्यात्मक सम्वाद निरर्थक है। गीतों में विचित्रता होनी चाहिए। देश भक्ति के गीत, प्रकृति सम्बन्धी गीत, कथात्मक गीत पुस्तक की सुन्दरता को बढ़ाते हैं। साधारण तुकबन्दियां ही पर्याप्त नहीं, विषय भी रोचक होने चाहिएं।

(x) **उपदेश का परिहार** – पाठ्य-पुस्तक भाषा शिक्षण के लिए है, उपदेशों के लिए नहीं। अतः कोरे उपदेशों का परिहार करना चाहिए। उपदेश देना उपदेशक का काम है, भाषा शिक्षक का नहीं। यदि किसी कहानी से कोई शिक्षा (या सीख) मिलती हो तो हितोपदेश या पञ्चतन्त्र की कहानियों को दूसरी, तीसरी श्रेणियों की पुस्तकों में रखने में कोई आपत्ति नहीं परन्तु कहानियों के अन्त में यह लिखना 'बच्चों को इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है', ठीक नहीं। इसके बदले कहानी के अन्त में दिए हुए अभ्यासात्मक प्रश्नों में एक प्रश्न भी रखना चाहिए, 'इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है? इससे विद्यार्थी को स्वयं सोचने-विचारने का अवसर मिलेगा।

(xi) **कवियों और लेखकों के उचित लेखों का समावेश** – कबीर से लेकर प्रसाद तक कितने ही कवि हुए हैं परन्तु उनमें किसी-किसी कवि की कोई-कोई रचना ही विद्यार्थियों की किसी-किसी कक्षा में पढ़ाई जा सकती है। कठिन, जटिल, नीरस, प्रसंगात्मक दार्शनिक तथा उच्च पद्यों के समावेश से कार्य सिद्धि नहीं हो सकती।

उदाहरण – (1) पांचवीं श्रेणी को कबीर का पद्य 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' कैसे पढ़ाया जा सकता है?

(2) छठी को तुलसी का 'राम-राज वर्णन' पढ़ाना जरा कठिन है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) आठवीं के लिए जायसी का 'राजा या जोगी होना' समझना कठिन है, क्योंकि विद्यार्थी अवधी भाषा से परिचित नहीं।

(4) दसवीं को महादेवी वर्मा की 'मैं बीन भी हूं, रागिनी भी' जैसी रहस्यवादी कविता नहीं पढ़ाई जा सकती। पाठ्य-पुस्तक का सम्पादक इन पद्यों को क्यों रखता है? सम्भवत: वह महत्त्वाकांशी है अथवा संकलन करते समय उसके हाथ में किसी प्रसिद्ध कवि की जो भी कविता आती है उसे रख लेता है।

इसी प्रकार देखा गया है कि हिन्दी के प्रसिद्ध गद्य लेखकों के गद्यात्मक कठिन लेख भी प्रमाद या महत्त्वाकांक्षा के कारण संकलित किए जाते हैं। अध्यापक आठवीं श्रेणी को महावीर प्रसाद द्विवेदी का एक लेख 'साहित्य की महत्ता' नहीं समझा सकता।

सारांश यह है कि विद्यार्थियों को हिन्दी के महान लेखकों का परिचय उनकी कठिन कृतियों द्वारा नहीं वरन् विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल सरल कृतियों द्वारा करना चाहिए।

(xii) **अवैज्ञानिक तथा काल्पनिक विषयों का परिहार**—जादूटोना, जिन्न-परियों की कहानियां, भूत-प्रेत आदि विषय, कितने भी रोचक हों परन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बच्चों के मन पर इतना गहरा प्रभाव डालते हैं कि बच्चे आगे भी इन पर विश्वास करने लगते हैं। यदि बच्चों का दृष्टिकोण वैज्ञानिक बनाना हो तो उन्हें सच्ची और वास्तविक कहानियां सुनानी चाहिए।[1]

(xiii) **नैतिक शिक्षा तथा चरित्र-विकास**—शिक्षा का उद्देश्य तथा नैतिक चारित्रिक विकास भी है, इस दृष्टि से हिन्दी की पाठ्य-पुस्तक में इस उद्देश्य की पूर्ति कराने वाली ऐसी कहानियां और लेख होने चाहिए जिनके पढ़ने से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से निम्न नैतिक तथा चारित्रिक गुण अंकित हो जाए—

सच्चाई, प्रेम, अहिंसा, आज्ञाकारिता, कर्त्तव्यता, ईमानदारी, सहिष्णुता, क्षमा, धैर्य, समाज सेवा, देश प्रेम, सहकारिता, दया, निश्चय, साहस, वीरता, परिश्रम, कार्यकुशलता, आत्मविश्वास, नम्रता, सहानुभूति, मानवता, बुद्धिमता, उदारता, कृपालुता, सतर्कता।

§ 48 उपयुक्त भाषा तथा शैली—

भाषा-शैली की दृष्टि से निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(i) पाठ्य-पुस्तक की भाषा-शैली **सरल से जटिल की** ओर जानी चाहिए। प्रारम्भ में सरल शब्द मुहावरे तथा वाक्य होने चाहिए, धीरे-धीरे ऊंची-ऊंची कक्षाओं में कठिन शब्द और लम्बे मिश्रित वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए और प्रारम्भिक पाठ की पाठ्य-पुस्तक में भी इस नियम का पालन करना चाहिए और प्रारम्भिक पाठ अन्तिम पाठों से सरल रखने चाहिए।

---

1. देखिए—maria montessori—The montessori method.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) **तद्भव से तत्सम** की ओर जाना चाहिए। प्रारम्भिक कक्षाओं में संस्कृत के कठिन तत्सम् शब्दों का परिहार करना चाहिए और दैनिक जीवन में काम आने वाले तथा बोले जाने वाले शब्दों का ही समावेश करना चाहिए। धीरे-धीरे उच्च कक्षाओं में साहित्यिक तथा तत्सम् शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। किंकर्त्तव्य विमूढ़' 'घृणित' 'अमृत-सदृश', 'उत्तरोत्तर', 'विह्वल' महत्त्वपूर्ण आविष्कार', 'उपादेय' 'उद्भिज्ज', 'अम्बर' ऐसे तत्सम् शब्द हैं जो तीसरी श्रेणी में न पढ़ाए जाने के बदले मिडिल श्रेणी में पढ़ाए जाने चाहिएं।

(iii) **मुहावरे तथा उक्तियां** भी प्रारम्भिक कक्षाओं में घरेलू ही प्रयुक्त होनी चाहिएं। साहित्यिक उक्तियों का प्रयोग उच्च कक्षाओं में नहीं होना चाहिए। बताइए निम्न साहित्यिक उक्तियां छोटी कक्षाओं में कहां तक उपयोगी हैं—

'ये कुसुम-हास सुकुमार है', ऐसा ताण्डव नृत्य दिखा दूंगा', 'अधिकार लक्ष्य-भ्रष्ट हो गया', चिन्ता सागर में डूबे हुए' प्रतिभा-सम्पन्न तथा सिद्धहस्थ', 'जीवन का पल्लवित कुसुमित उद्यान'

(iv) **कठिन शब्दों का क्रमिक प्रयोग**—प्रायः देखा गया है कि पाठ्य-पुस्तक के लेखक कठिन शब्दों को अव्यवस्थित रूप में और किसी क्रम के बिना प्रयुक्त करते हैं। वे किसी निश्चित क्रम के अनुसार शब्दावली की सूची नही बनाते। शब्दावली की व्यवस्था निम्न प्रकार से की जानी चाहिए—

(क) प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए अधारभूत शब्दावली (Basic Vocabulary) निश्चित करनी चाहिए। ऐसी शब्दावली में निकटतम वातावरण के शब्द, साधारण प्रयोग में लाये जाने वाले शब्द तथा साधारण विचारों को सरल भाषा में प्रकट करने के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द ही समाविष्ट होने चाहिएं। इस शब्दावली को उत्तरोत्तर कठिनाई की दृष्टि से विभिन्न कक्षाओं के लिए विभिन्न भागों में विभक्त करना चाहिए। उच्च कक्षाओं के लिए भी शब्दावली निश्चित करनी चाहिए। शब्दावली का चुनाव करते समय उपयोगिता, विद्यार्थियों का मानसिक स्तर, उच्चारण और लिपि की कठिनाई आदि का ध्यान रखना चाहिए। केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मन्त्रालय (Education ministry) के हिन्दी विभाग ने 2000 शब्दों की एक आधारभूत शब्दावली का (या बुनियादी शब्द माला Basic Vocabulary) तथा 500 शब्दों की उससे भी संक्षिप्त आधारभूत शब्दावली का निर्माण किया है। विभिन्न राज्यों में प्रारम्भिक कक्षाओं की पाठ्य-पुस्तकों में इसी शब्दावली का किंचित परिवर्तन के साथ) प्रयोग होना चाहिए। स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार शब्दावली के किंचित परिवर्तन में कोई आपत्ति नहीं। इस कार्य की सहायता के लिए केन्द्रीय सरकार ने सराहनीय काम किया है। शिक्षा मन्त्रालय के हिन्दी अनुविभाग ने ऐसे शब्दों की सूचियां प्राप्त की हैं जो हिन्दी तथा अन्य भाषाओं में सर्वसामान्य हैं। स्थानीय शब्दों (Local words) का समावेश अवश्य होना चाहिए। ऐसे शब्दों का परिहार करना चाहिए, जो उन विचारों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या वस्तुओं से सम्बन्ध रखते हों, जिनसे विद्यार्थी अपरिचित है ।[1]

(ख) किसी कक्षा में जिस शब्दावली का परिचय कराना है। उसको विभिन्न पाठों में विभक्त करना चाहिए । इस पाठ में दस के लगभग नए शब्द आने चाहिए ।

(ग) नए शब्दों को पाठ के आरम्भ में या पाठ के अन्त में मिलाना चाहिए । यदि हो सके तो नए शब्द के अर्थ भी लिखने चाहिए ।

(घ) किसी एक पाठ में जो भी नया शब्द आता है, उसका प्रयोग उसी पाठ में तथा आगे के पाठों में बार-बार दिखाना चाहिए, इससे वह शब्द जल्दी भुलाया नहीं जा सकता। विद्यार्थियों में नए शब्दों को याद करते-करते पुराने शब्दों को भूलने की प्रवृत्ति पाई जाती है । एक कुशल सम्पादक पुराने शब्दों को बार-बार प्रयोग में लाता है और नए शब्दों से भी परिचय कराता है, किन्तु फिर भी ऐसा प्रतीत नहीं होता कि शब्दों का प्रयोग बनावटी है ।

(v) **कथात्मक तथा सम्वाद शैली का अधिक प्रयोग**—रोचकता और सरलता की दृष्टि से विभिन्न शैलियों में से कथात्मक और सम्वाद शैली विद्यार्थियों के अधिक अनुकूल है । 'नागरिक जीवन' जैसे विषय पर निबन्धात्मक शैली की अपेक्षा पिता-पुत्र के परस्पर सम्बाद की शैली अधिक सुरुचिपूर्ण है । वर्णनात्मक शैली (Descriptive Style) भी उतनी रोचक नहीं बनती जितनी विवरणात्मक शैली (Narrative Style) किसी पर्वत की घाटी का वर्णन रोचक हो सकता है, परन्तु उससे 'अमरनाथ की यात्रा या 'मंसूरी की सैर' कथात्मक ढंग से अधिक रोचक बनती है, क्योंकि उसमें जीवन के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है ।

(vi) **अश्लीलता आदि दोषों का परिहार**—किसी पाठ में कोई शब्द, अंश या उक्ति ऐसी न हो जिसकी व्याख्या करने में अश्लीलता की ध्वनि आ जाए । श्रृंगारिक भावनाओं के बदले भक्ति, वीर तथा वात्सल्य भावनाओं पर बल देना चाहिए ।

§ 49 पाठों का क्रम तथा परिणाम

(i) पाठों का क्रम ऋतु तथा समय के अनुकूल होना चाहिए ।

(ii) सारा पद्य एक ही स्थान पर नहीं होना चाहिए । तीन-चार गद्यात्मक पाठों के अनन्तर एक कविता होनी चाहिए ।

(iii) विभिन्न प्रकार के पाठ किसी क्रम में होने चाहिए । इसके बदले की सभी कहानियां या सभी सम्वाद या सभी निबन्ध एक स्थान पर निरन्तर आ जाए, कहानी सम्वाद, कविता, निबन्ध, जीवनी आदि का एक वर्ग समाप्त करने के बाद. फिर कहांनी सम्वाद आदि आरम्भ करने चाहिए । पाठों के रूपों के अतिरिक्त विषय का क्रम रखना

1. देखिए 'Learning to read a foreign language' by Dr. Michael West और देखिए—'History and Principles of Vocabulary Control' by Dr. H. Bongers.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाहिए। ऐसा न हो कि प्रकृति सम्बन्धी सभी पाठ एक ही स्थान पर आ जाएं, अथवा सभी विदेशी वार्ताएं भी निरन्तर आ जाएं।

(iv) पाठ अधिक लम्बे नहीं होने चाहिए। यदि कहानी लम्बी भी हो, उस को तीन भागों में बांटना चाहिए। लम्बे पाठों के विभाजन से पाठों की रुचि बनी रहती है। साधारणतया लम्बे पाठों का परिहार करना चाहिए। छोटी कक्षाओं के लिए तीन-चार पृष्ठ से अधिक लम्बे पाठ नही रखने चाहिए। मिडिल कक्षाओं में आठ पृष्ठ से अधिक लम्बे पाठ अरुचिकर बन जाते हैं। उच्च कक्षाओं में भी किसी पाठ के अधिक से अधिक दस पृष्ठ हो सकते हैं। इसी प्रकार कविताएं भी छोटी ही होनी चाहिएं। कविताओं का भाव सारी पुस्तक के चौथाई से अधिक नहीं होना चाहिए।

§ 50 व्याख्या टिप्पणी तथा अभ्यास—

प्रायः देखा गया है कि पाठ्य-पुस्तक के सम्पादक इसी पर संतोष करते हैं कि बीस-पच्चीस लेखों का सकलन या संग्रह किया और उनको पुस्तक का रूप दे दिया, साथ ही आरम्भ में विषय सूची भी दे दी। सम्पादक का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है, प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यासात्मक प्रश्न तथा टिप्पणियां देना। इसके अन्तर्गत निम्न बातें आ जाती हैं।

(i) पुस्तक के आरम्भ में लेखक की ओर से भूमिका होनी चाहिए, जिसमें लेखक पुस्तक का उद्देश्य संकलित लेखों के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी, विषय का उप-स्थापन तथा आभार-प्रदर्शन आदि हो।

(ii) शिक्षकों के लिए निर्देश पुस्तक का आवश्यक अंग हैं। इस भाग में यह बताया जाए कि प्रत्येक पाठ को किस उद्देश्य से, किस विधि से और किन साधनों-उपकरणों की सहायता से पढ़ाना चाहिए।

(iii) किसी कवि या लेखक के मूल लेख के साथ उस कवि या लेखक का परिचय भी देना चाहिए। उसे लेख का भावाथ या सारांश भी बताना चाहिए। यदि उस कविता या लेख का कोई प्रसंग हो, तो वह भी देना चाहिए, नहीं तो बेचारा अध्यापक प्रसंग ढूंढने के संकट में पड़ जाता है। सम्भवतः अध्यापक ने जायसी का 'पद्मावत' नहीं पढ़ा है। वह 'राजा का योगी होना' शीर्षक कविता का प्रसंग नहीं बता सकता।

(iv) कठिन अपरिचित तथा गूढ़ शब्दों का अर्थ तथा उनकी व्याख्या भी देनी चाहिए। नए शब्दों को टेढ़े रूप (italics) में लिखना चाहिए। पाठ्य-पुस्तक के अन्त में एक छोटा शब्दकोष भी दिया जा सकता है।

(v) लेख में आए हुए अपरिचित नामों की व्याख्या भी देनी चाहिए। आप अध्यापक से यह आशा नहीं रख सकते कि वह संसार का इतिहास तथा भूगोल जानता हो। लेख के मध्य में कभी ऐसे पौराणिक प्रसंग आते हैं जो विद्यार्थियों को भी अविदित हैं और अध्यापक को भी। ऐसी दशा में सम्पादक को संक्षिप्त टिप्पणियां लिखने से दोनों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की सहायता करनी चाहिए। उदाहरण के लिए निम्न शब्द लीजिए। प्रथम बार प्रयुक्त होने पर जिनकी टिप्पणी की आवश्यकता है —

भागीरथ प्रयत्न, चुम्बकीय शक्ति, ताण्डव नृत्य, संसद के सदस्य, नादिरशाही, टेढ़ी खीर, ज्वालामुखी, अमृतमंथन प्रकाश-स्तम्भ (Light House), मुस्लिम लीग, रहीम, जौहर, सप्तर्षि आदि।

(vi) चित्र आदि का समावेश – बच्चे रंगीन चित्रों से आकर्षित हो जाते हैं। अक्षर ज्ञान के लिए हिन्दी की पुस्तक रंगीन चित्रों से भरी होनी चाहिए। दूसरी से लेकर पांचवीं तक पुस्तक में विभिन्न प्रकार के पाठ-सम्बन्धी रंगीन चित्र होने चाहिएं। मिडिल कक्षाओं में भी चित्र हों, परन्तु रंगीन चित्रों की आवश्यकता नहीं। हाई कक्षाओं में भी कवि और लेखकों के चित्र, विदेशी स्थानों के चित्र, प्राकृतिक चित्र, तालिकाएं, मानचित्र आदि का समावेश उपयोगी है। पाठ्य-पुस्तक में सुन्दर और उपयुक्त चित्रों का समावेश करने के लिए किसी अच्छे चित्रकार या पेंटर की सहायता लेनी चाहिए।

प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों का समावेश बहुत ही लाभप्रद है। चित्रों की सहायता से पाठ के समझने में भी सुगमता आ जाती है। प्रायः चित्र देखते ही सम्बन्धित कहानी याद आ जाती हैं। आकर्षण और बोध दोनों की दृष्टि से चित्र पुस्तक का महत्त्वपूर्ण अंग है।

(v) प्रत्येक पाठ के अन्त में व्याकरण शब्दावली तथा विषय सम्बन्धी प्रश्न होने चाहिएं। व्याकरण का प्रयोग, नए शब्दों का प्रयोग, विषय की पुनरावृत्ति, रचना आदि इन्हीं प्रश्नों द्वारा हो सकती है। प्रश्न नवीन प्रकार के होने चाहिएं जिनकी व्याख्या इस पुस्तक में 'मूल्यांकन' शीर्षक अध्याय में की जाएगी।

भाषा सम्बन्धी प्रश्नों के अतिरिक्त विचारात्मक प्रश्नों के समावेश से विद्यार्थियों की विचारशक्ति की वृद्धि हो सकती है। ये प्रश्न कक्षा में तथा घर पर किए जा सकते हैं और अध्यापक का कर्त्तव्य है कि इन प्रश्नों के उत्तरों की जांच करे।

§ 51. फार्मेट छपाई आदि —

इस सम्बन्ध में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :—

(i) कागज़ मोटा तथा सुन्दर होना चाहिए।

(ii) प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए कवर मजबूत तथा रंगीन होने चाहिए। जिल्द की रंगीनी से प्रौढ़ भी पस्तक की ओर आकर्षित हो जाते है। यदि हो सके तो जैकेट लगाया जाएं। बाहर का शीर्षक भी रंगीन और आकर्षक होना चाहिए।

(iii) पुस्तक का साईज साधारण साईज़ अर्थात् 6 इंच 4 इंच होना चाहिए। पहली श्रेणी के लिए साईज बड़ा हो क्योंकि उसमें अक्षर मोटे होने चाहिए।

(iv) अक्षरों का साइज़ विद्यार्थी की अवस्था के अनुकूल होना चाहिए, प्रथम श्रेणी के लिए साइज 60 प्वायंट होना चाहिए, दूसरी के लिए 36 से लेकर 24 प्वाइंट तक तीसरी और पांचवी के लिए 16 प्वाइंट, अन्य कक्षाओं में 12 प्वायंट।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) दो पंक्तियों के बीच में कम से कम चौथाई इंच का अन्तर होना चाहिए। पहली कक्षा के लिए दुगुना अन्तर (Double Space) होना चाहिए। यह अन्तर शब्दों और अक्षरों के आकार के अनुपात से बढ़ता या घटता जाएगा अर्थात जितना बड़ा अक्षर होगा उसी अनुपात से उस अक्षर में छपे हुए शब्दों तथा पंक्तियों के बीच का अन्तर भी चौड़ा होता जाएगा। पृष्ठ के चारों ओर हाशिया छोड़ना चाहिए।

§ 52 प्रकाशन तथा सम्पादन

(i) सम्पादक स्वयं अध्यापक हों, जो स्कूल में कक्षाओं को पढ़ाते हों, प्रोफैसर अथवा अन्य व्यक्ति नहीं, जिनको इन कक्षाओं के पढ़ाने का अनुभव प्राप्त नहीं। पाठ्य पुस्तक के लेखक में निम्न विशेष गुण होने चाहिए :—

हिन्दी भाषा और साहित्य का विस्तृत अध्ययन, भाषा-शिक्षण के नवीनतम अनुसंधान का ज्ञान, भाषा शिक्षण का अनुभव, विद्यार्थियों की मातृ-भाषा (यदि हिन्दी से भिन्न हो) और सामाजिक वातावरण का ज्ञान और साहित्यिक प्रवृत्ति।

(ii) प्रकाशन—सरकार द्वारा नियुक्त पाठ्य-पुस्तक समिति (Text Book Committee) द्वारा अथवा शिक्षा-संस्थाओं द्वारा होना चाहिए। पाठ्य-पुस्तक का चुनाव गुणों के आधार पर करना चाहिए, लेखक के नाम के आधार पर या रिश्वत के आधार पर नहीं। पाठ्य पुस्तकों के चुनाव में अध्यापकों का ही हाथ होना चाहिए। एक ज़िले में या यदि हो सके एक राज्य में एक ही पाठ्य-पुस्तक निर्धारित होनी चाहिए, जिससे एक स्कूल से दूसरे स्कूल में प्रवेश करने वाले बालकों को कठिनाई न हो। प्राय: सम्पादकों को इस बात की कठिनाई पेश आती है कि जिन पुस्तकों में से वे प्रकाशित सामग्री का संकलन करना चाहते हैं, उन पुस्तकों के प्रकाशक ऐसा करने की अनुमति नहीं देते। प्रकाशकों को इस बात में उदार-चित बनना चाहिए। यदि प्रकाशक पुस्तक लिखवाने के बाद ट्रेनिंग कालिज के अध्यापकों को दिखाएं और उनसे परामर्श ले लें; तो पुस्तक अधिक उपयोगी बन सकती है। इस दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा-अनुसंधान परिषद् (N.C.E.R.T.) की सेवाएं पाठ्य-पुस्तक के मूल्यांकन के लिए उपलब्ध हो सकती हैं।

(iii) किसी भी पाठ्य-पुस्तक की कुंजी नोट या गाइड छापने की किसी को आज्ञा नहीं देनी चाहिए। नोट आदि वर्जित होना चाहिएं।

(iv) पुस्तक का मूल्य कम होना चाहिए, जिससे विद्यार्थी को लाभ हो। पाठ्य-पुस्तक का सम्पादन देश-सेवा की दृष्टि से करना चाहिए, व्यापार की दृष्टि से नहीं। सम्पादक को दो रुपए प्रति पृष्ठ कमाई करने पर संतुष्ट रहना चाहिए। सरकारी शिक्षा विभाग को अहानि-अलाभ (no-loss no-gain) के आधार पर पुस्तक बेचनी चाहिए। कागज आदि के महंगा होने पर भी 150 पृष्ठ वाली पुस्तक पचास-साठ पैसे में बेची जा सकती है।

CC-0 Aganmigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 53 सहायक पुस्तकें (Supplementary Reader)

कक्षा में पढ़ाई जाने वाली पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त द्रुत पाठ के लिए सहायक पुस्तकों (Rapid Readers Supplementary Reades) की भी आवश्यकता है।

सहायक पुस्तक के विषय तथा भाषा शैली में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(i) कोई नया शब्द न आये, केवल उस श्रेणी में पढ़े हुए शब्दों का अभ्यास हो जाए।

(ii) भाषा-शैली पाठ्य-पुस्तक की शैली से सरल हो, कठिन नहीं।

(iii) इनके विषय निम्न प्रकार के हों—वर्ण, कहानी, नाटक, जीवन चरित्र।

(iv) पुस्तक के अन्त में अभ्यासात्मक प्रश्न होने चाहिएं।

शेष विवरण अध्याय 13 (द्रुत पाठ) में देखें।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. आजकल स्कूलों में किस प्रकार की पाठ्य-पुस्तकें प्रचलित हैं? उनका मूल्यांकन करते हुए, सुधार के सुझाव भी दीजिए।

2. यदि आपको सातवीं के लिए एक पाठ्य-पुस्तक का निर्माण करना है, आप उसके लिए किस प्रकार की सामग्री एकत्रित करेंगे? ऐसी पाठ्य-पुस्तक के लिए पाठो की प्रस्तावित सूची बनाइये।

3. हिन्दी साहित्य के लेखों और पुस्तककार के लेखों का क्या अनुपात होना चाहिए? हिन्दी नाटक, उपन्यासकार तथा कवियों की ऐसी रचनाओं के नाम बताओ जो स्कूलों में पढ़ाई जा सकें।

4. हिन्दी साहित्य पढ़ाना आप कब आरम्भ करेंगे। उसका आस्वादन कराने में आप कैसे सहायता देंगे?

5. एक सफल हिन्दी पाठ्य-पुस्तक में कौन-कौन से गुण होने चाहिएं?

6. प्राईमरी, मिडल तथा हाई कक्षाओं के लिए अलग-अलग तौर पर छात्रों की वाचन रुचियों की व्याख्या कीजिए।

7. हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों द्वारा छात्रों में किन नैतिक तथा चारित्रिक गुणों का विकास अभीष्ट है?

8. विभिन्न स्तर की पाठ्य-पुस्तकों में किस-किस प्रकार की भाषा-शैली का प्रयोग करना चाहिए?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहायक पुस्तकें

1. UNESCO	Teaching of Modern Languages Ch. VII.
2. Michael West	Teaching to read foreign language.
3. Dr. H. Bongers	History and Principles of Vocabulary Control.
4. Ministry of Education	Report of the Secondary Education Commission Ch. VI.
5. V. S. Mathur	Studies in the Teaching of English in India.
6. Henry D. Rinseand	A 'Basic' Vocabulary of Elementary School Children. (The Macmillon Company, New York)
7. Central Bureau of Text Book Research	Criteria and Score card for Evaluating Language Text Books.
8. N. C. E. R. T.	Preparation and Evaluate of Text books in Mother Tongue.

————

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10

हिन्दी शिक्षण और पुस्तकालय

§ 54. आवश्यकता और महत्ता

पुस्तकालय हिन्दी शिक्षण का एक प्रमुख साधन है। प्रत्येक विद्यालय में एक पुस्तकालय का होना आवश्यक है। यह अध्यापकों और छात्रों के लिए अनिवार्य है, विशेषकर आधुनिक नवीन शिक्षण प्रणाली में जब कि एक अकेली पाठ्य-पुस्तक पर अवलम्बित रहना एकांकी शिक्षण समझा जाता है।

(1) अध्यापकों के लिए—पुस्तकालय इसलिए आवश्यक है कि वे पढ़ाने के लिए पूरी तैयारी कर सकें और पाठ्य-पुस्तकें, प्रकरण की पुस्तकें और पाठ्य-पुस्तक सम्बन्धी अन्य पुस्तकें पढ़ें जिससे उनकी योग्यता में वृद्धि हो, ज्ञान में वृद्धि हो और नई शिक्षण-विधियां जान सकें। हिन्दी की नई शिक्षण विधियों को (जैसे डाल्टन विधि, मांटेसोरी विधि, स्वाध्याय विधि, प्रोजैक्ट विधि, समवाय विधि कार्य रूप में लाने के लिए तथा अन्य पाठान्तर क्रियाओं (जैसे बाल-सभा, नाटक, कवि सम्मेलन आदि) को सफलतापूर्वक निभाने के लिए पुस्तकालय अनिवार्य है।

(2) छात्रों के लिए—पुस्तकालय इसलिए आवश्यक है, कि ये पाठ्य-पुस्तक में पढ़े हुए पाठ से सम्बन्धित ज्ञान अन्य पुस्तकों से प्राप्त कर सकें, अपनी कुतूहल वृत्ति को सन्तुष्ट कर सकें और अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकें। इसके अतिरिक्त उनमें स्वाध्याय की आदत डालने के लिए विभिन्न विषयों को पढ़ाने में रुचि उत्पन्न करने के लिए और उनको बौद्धिक मनोरञ्जन प्रदान करने के लिए भी इसकी आवश्यकता है।

§ 55 पुस्तकालय की सामग्री—

विद्यालय के एक अच्छे पुस्तकालय में हिन्दी के विषयों में निम्न प्रकार की पाठन सामग्री होनी चाहिए।

(1) प्रकरण की पुस्तकें (reference books) जैसे शब्दकोष, मुहावरा कोष, लोकोक्ति कोष, ब्रजभाषा कोष, पर्यायवाची शब्दकोष, विश्वकोष (encyclopaedia), ज्ञान सागर एटलस आदि।

(2) स्कूल की विभिन्न कक्षाओं में निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) बाल-साहित्य, जिसमें बच्चों के लिए उपयुक्त बाल कविताएं, कहानियां, संवाद, बाल नाटक आदि हों।

(4) किशोर साहित्य, जो मिडल तथा हाई कक्षाओं के किशोरों के मानसिक स्तर के अनुकूल हो।

(5) हिन्दी साहित्य के अमूल्य ग्रंथ जैसे रामचरित-मानस, सूर-सागर, मीरा की पदावली, शिवराज भूषण, भारतेन्दू ग्रंथावली, गुप्त साहित्य, प्रसाद साहित्य, प्रेम-चन्द साहित्य, शरत् साहित्य, टैगोर साहित्य आदि (यह सूची केवल निर्देशात्मक है)।

(6) आलोचनात्मक पुस्तकें, जिससे अध्यापक हिन्दी साहित्य के विषय में रचनाओं की समीक्षा और कवियों के विचार और शैलियों का ज्ञान प्राप्त कर सके।

(7) हिन्दी शिक्षण विधि के सम्बन्ध में तथा बाल-मनोविज्ञान के विषय में शैक्षणिक साहित्य।

(8) समाचार पत्र तथा पत्रिकाएं।

(9) एल्बम तथा हस्तलिखित पुस्तकें।

(10) मान चित्र (Charts) तथा चित्र (Maps)।

(11) संग्रहालय (Museum) जिस में प्राचीन और नवीन चित्रों तथा वस्तुओं की प्रदर्शनी हो।

पुस्तकों का चुनाव—पुस्तक का चुनाव सावधानी के साथ करना चाहिए। पुस्तकालय को प्रत्येक प्रकार की पुस्तकों से भरने से कोई लाभ नहीं। प्रायः अध्यापक सावधानी से उन पुस्तकों का संग्रह नहीं करते, जो या तो अश्लील हैं अथवा विद्यार्थियों के लिए हानिकारक है। पुस्तकों के चुनाव में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(1) पुस्तकें छात्रों की मानसिक अवस्था के अनुकूल हों।

(2) पुस्तकें छात्रों के स्वभाव और प्रकृति के अनुकूल हों जिनके पढ़ने में छात्र असीम रुचि दर्शाएं।

(3) पुस्तकों की भाषा सरल होनी चाहिए, जिससे विद्यालयी कक्षा के छात्र उनको आसानी से पढ़ सकें।

(4) पुस्तकों की छपाई सुन्दर, जिल्द मजबूत और कागज़ मोटा होना चाहिए; नहीं तो भद्दी छपाई के कारण अरुचिकर हो जाती हैं और जिल्द के अभाव में जल्दी फट जाती हैं। पुस्तकों में रंगीन चित्र हों। प्रारम्भिक कक्षाओं से छात्र रंगीन पुस्तकों की ओर से सहज आकर्षित हो जाते हैं।

(5) पुस्तकें महंगी न हों। प्रमुख प्रकाशकों से पुस्तक सूचियां मंगवानी चाहिएं और उनमें दिए हुए बाल साहित्य और किशोर साहित्य में से पुस्तकों का चुनाव करना चाहिए यदि हो सके आर्डर के बदले, स्वयं प्रकाशक या पुस्तक विक्रेता के पास जाकर पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुस्तकालय की अवस्था—पुस्तकालय में पुस्तकों का संग्रह उतना आवश्यक नहीं जितना पुस्तकालय की अवस्था । इसके विषय में निम्न सुझाव दिए जाते हैं—

(1) पुस्तकालय के दो विभाग करने चाहिएं । एक विभाग होगा—स्कूल का केन्द्रीय पुस्तकालय जिसमें बाल साहित्य और किशोर साहित्य का कुछ भाग और शेष सारी पाठ्य सामग्री होगी । इसके अतिरिक्त होगा - कक्षा, पुस्तकालय, अर्थात् प्रत्येक कक्षा में पुस्तकों की कतिपय आलमारियां, जिनमें कक्षा के छात्रों में बांटने के लिए बाल साहित्य होगा ।

(2) पुस्तकों का संग्रह तीन प्रकार से करना चाहिए—प्रथम, अध्यापक द्वारा लिखी हुई हस्तलिखित पुस्तकों का संग्रह, द्वितीय, उपहार रूप में प्राप्त हुई पुस्तकों का और तृतीय, बाजार से खरीदी हुई पुस्तकें ।

(3) केन्द्रीय पुस्तकालय की देख-रेख किसी ऐसे अध्यापक के हाथ में होनी चाहिए, जिसे पुस्तकालय सम्भालने का अनुभव हो । कक्षा-पुस्तकालय की देख-रेख कक्षा अध्यापक करेगा।

(4) कक्षा-पुस्तकालय की पुस्तकों का लेन-देन एक योग्य विद्यार्थी को सौंपना चाहिए । प्रति-मास एक नया विद्यार्थी इस काम के लिए नियुक्त करना चाहिए । इससे विद्यार्थियों में इस काम के लिए होड़ शुरू होगी और वे पुस्तकों में अधिक रुचि दर्शाएंगे ।

(5) पुस्तकालयों के लिए एक बड़ा हवादार, प्रकाशवान् कमरा होना चाहिए, जो कुर्सी, मेज़ आदि से सुसज्जित हो । इसका एक भाग वाचनालय होना चाहिए ।

(6) पुस्तकालय के प्रयोग के लिए प्रति सप्ताह दो घण्टे समय-सारिणी निश्चित करनी चाहिएं ।

(7) कक्षा में पाठ्य-पुस्तक पढ़ाते समय नई-नई पुस्तकों का उल्लेख करना चाहिए, ताकि छात्र पुस्तकालय में से उन पुस्तकों को निकाल लें और घर पर पढ़ सकें । छात्रों को अच्छी-अच्छी पुस्तकों का निर्देश समय-समय पर मिलना चाहिए ।

(8) पुस्तकें लेने और लौटा देने के विशेष नियम होने चाहिएं । लेन-देन के लिए रजिस्टर होना चाहिए । अध्यापक कभी-कभी उस रजिस्टर से इस बात की जांच भी कर सकता है कि किस छात्र ने कौन-सी और कितनी पुस्तकें पढ़ी हैं । लेन-देन का समय और लेने के लिए पुस्तकों की संख्या निश्चित होनी चाहिए ।

(9) छात्रों को आदेश देना चाहिए कि वे पुस्तकें पढ़ने के बाद एक कापी या डायरी पर पुस्तक के सम्बन्ध में टिप्पणियां, कहानी का सार लिखें, नये शब्दों की सूची बनाएं, अच्छी-अच्छी उक्तियां नोट करें । अध्यापक उनकी रुचियों की जांच करे, और आवश्यक हिदायतें भी दे ।

(1) अध्यापक को चाहिए कि छात्रों को कोष और प्रकरण पुस्तकों का प्रयोग सिखलाए । प्राय: हाई कक्षा के छात्र भी शब्दकोष का प्रयोग करना नहीं जानते ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(11) पुस्तकालय छुट्टियों में खुला रहना चाहिए जिससे छात्र अवकाश के समय का सदुपयोग कर सकें।

(12) पुस्तकों के ठीक प्रयोग पर बल देना चाहिए। पुस्तकों पर स्याही, निशान रेखाएं आदि नहीं होनी चाहिए। पुस्तकों पर लिखने की बुरी आदत भी हटानी चाहिए।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. हिन्दी पुस्तकालय की क्या आवश्यकता है ? इसकी व्यवस्था आप कैसे करेंगे ? प्रारम्भिक तथा उच्च कक्षाओं के लिए प्रमुख हिन्दी पत्रिकाओं की सूची बनाइए। (§ 54, 55)

2. उच्च कक्षाओं के लिए उपयुक्त पुस्तकों और उनके लेखकों की एक सूची तैयार कीजिए। ऐसी कक्षाओं के लिए आप कौन सी पत्रिकाएं प्रस्तावित कर सकते हैं, और क्यों ?

3. प्रारम्भिक कक्षाओं के बाल-साहित्य की एक संक्षिप्त सूची बनाइए; और उस सूची में प्रत्येक पुस्तक की विषय सामग्री का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

4. यदि आपको स्कूल के पुस्तकालय का कार्यभारी (Incharge) बना दिया जाए तो आप पुस्तकालय को कैसे सुसज्जित करेंगे ?

5. हिन्दी की शिक्षा में पुस्तकालय का क्या महत्त्व है ? छात्रों को पुस्तकालय की ओर आकर्षित करने के लिए आप कौन से उपाय काम में लायेंगे ?

6. निम्न अवस्थाओं के बालकों के लिए उपलब्ध बाल-साहित्य के प्रत्येक पहलू की समीक्षा कीजिए। इसके सुझाव भी दीजिए।

(क) 3—5 वर्ष (ख) 5 - 8 वर्ष (ग) 8—11 वर्ष

सहायक पुस्तकें

1. Government of India Ministry of Education — Report of the Secondary Education Commission Ch. VII.
2. Ranganathan S. R. — School and College Libraries (Madras Library Association)
3. Ranganathan S. R. — Suggestion for the organisations of the Libraries in India.
4. Scott C. A. — School Libraries (Cambridge Universty Press)
5. Raghunath Safaya — School Organisation and Administration (Chapter school libraries)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

11

दृश्य-श्रव्य साधन
(AUDIO VISUAL AIDS)

§ 56 महत्ता और आवश्यकता—

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्य-पुस्तक पर बल देने के बदले अधिक साधनों को जुटाने पर बल दिया जाता है। भाषा शिक्षण में जहां पर पाठ्य-पुस्तक पुस्तकालय, बाल-सभा आदि का अवलम्बन करना आवश्यक है जहां कई दृश्य और श्रव्य साधनों का भी प्रयोग उपयोगी है। आजकल दृश्य श्रव्य साधनों की महत्ता सर्वमान्य है। सूक्ष्म विचारों को समझने के लिए आंखों और कानों का प्रयोग सफलता का सूचक है। वर्तमान युग में वैज्ञानिक आविष्कारों का अत्यधिक प्रयोग स्वाभाविक है। दृश्य-श्रव्य साधनों की महत्ता के सम्बन्ध में कई प्रयोग हो चुके हैं। प्रोफैसर जे० जे० वैबर ने सिद्ध किया है कि जो भी ज्ञान हम प्राप्त करते हैं, 'उसकी 40% सकल्पनाएं (concepts) हम चाक्षुष-अनुभव (visual experience) के आधार पर प्राप्त करते हैं, 25% श्रवण-अनुभव (auditary experience) पर और 17% स्पर्श-अनुभव पर।[1] प्रोफैसर पी० जे० रुलोने (P. J, Rulon) ने चल-चित्रों पर प्रयोग करके दर्शाया है कि दृश्य और श्रव्य चल-चित्र सामान्य से 38% अधिक स्मरण में सहायक है। इसी सम्बन्ध में प्रोफैसर चार्टर (W. W. Charter) का कहना है कि चलचित्रों द्वारा 6 सप्ताह तक भी 90% याद रहता है। हमारा अपना अनुभव भी यही है कि हम समझने और याद रखने में मूर्त्त अमूर्त्त की ओर जाते हैं। हमारे अनुभव शंकु का निचला भाग मूर्त्त या प्रयत्न अनुभव है।[2] अगले पृष्ठ पर एडगर डेल का बनाया हुआ अनुभव शंकु का चित्र दिया जाता है। संक्षेप में दृश्य साधन छात्र और अध्यापक दोनों के लिए लाभदायक है—

---

1. J. J. Weber : Comparative effectiveness of some visual aids ?

2. Edgar Dale—Cone of experience in his book Audio Visual Methods in Teaching.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

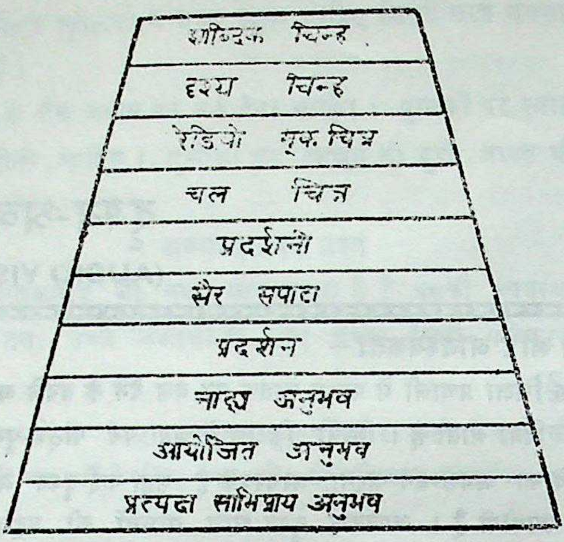

चित्र—4 अनुभव का शंकु (Cone of Experience)

(क) विद्यार्थी को उनसे निम्न लाभ हैं—

(i) शिक्षा की प्राप्ति के लिए मस्तिष्क काम करता है। परन्तु मस्तिष्क भी ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ही ज्ञात करता है। ज्ञानेन्द्रियां ज्ञान के लिए प्रवेश द्वार हैं। नेत्र और कान अधिक उपयोगी ज्ञानेन्द्रियां हैं, जिनके प्रयोग से शिक्षा कार्य अधिक सुलभ हो क्योंकि इनके द्वारा प्राप्त किया हुआ अनुभव प्रत्यक्ष होता है।

(ii) ये रुचि बढ़ाने में प्रभाव शाली साधन हैं।

(iii) ये सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को समझने में सहायक होते हैं। कठिन अमूर्त्त विचार चाक्षुष-अनुभूति-गम्य बनाए जा सकते हैं।

(ख) अध्यापकों के लिए—

(i) ये कठिन बातों को समझाने में अध्यापक के लिए सहायक हैं।

(ii) एक विधि असफल होने पर इनका प्रयोग किया जा सकता है।

(iii) अध्यापक इनकी सहायता से भाषा-पाठ अधिक रोचक बना सकता है। विद्यार्थियों को संलग्न रख सकता है और अपना पाठ सफल बना सकता है।

§ 57 प्रयोग में सावधानी—

दृश्य-श्रव्य साधनों के प्रयोगों में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(i) ये सभी साधन, साधन-मात्र हैं साध्य नहीं, सहायक मात्र हैं परन्तु पुस्तक का स्थान नहीं ले सकते। ये अध्यापक का स्थान नहीं ले सकते। साधन पाठ्य-प्रक्रिया के केवल पूरक हैं, विकल्प का स्थानापन्न (Substitute) नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) एक बार अधिक दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इनके प्रयोग में अधिक समय नहीं लगाना चाहिए और न ही इनका प्रयोग प्रत्येक पाठ के लिए सम्भव हो सकता है।

(iii) प्रत्येक साधन का महत्त्व समझना चाहिए और जिसका जहां पर उपयुक्त प्रयोग हो सके वहीं पर प्रयोग करना चाहिए अन्यत्र नहीं।

(iv) ये साधन छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल होने चाहिएं।

(v) साधनों के जुटाने और प्रयोग में मितव्ययता से काम लेना चाहिए।

(iv) साधनों के प्रयोग से पहले अध्यापक को पूरी तैयारी करके आना चाहिए। ऐसा न हो कि तैयारी के बिना इनका प्रयोग अपूर्ण या अरुचिकर रहे।

§ 58 वर्गीकरण

दृश्य-श्रव्य साधन अनेक प्रकार के हैं। सुविधा के लिए इनको चार भागों में बांटा जा सकता है—

(क) कक्षा उपकरण, अर्थात् जो प्रतिदिन कक्षा के भीतर काम में लाए जाते हैं जैसे श्यामपट, मानचित्र ओवरहैड प्रोजैक्टर, मॉडल कार्टून आदि।

(ख) दृश्य-उपकरण अर्थात जो नेत्रों से सम्बन्ध रखते हैं, जैसे प्रोजैक्टर, चित्र विस्तारक यन्त्र, मूक चित्र आदि।

(ग) श्रव्य उपकरण, अर्थात् जो कानों के सम्बन्ध रखते हैं, जैसे ग्रामोफोन, रेडियो, टैलीफोन, टेपरेकार्डर आदि।

(घ) दृश्य-श्रव्य उपकरण अर्थात जो नेत्र और कान दोनों से सम्बन्ध रखते हों, जैसे चलचित्र, टैलीविज़न, नाटक आदि।

§ 59. प्रयोग—

भाषा-शिक्षण में प्रत्येक का प्रयोग कैसे किया जाना चाहिए इस विषय में कुछ महत्त्वपूर्ण बातें संक्षिप्त रूप में नीचे बताई जाती हैं :—

(1) **श्यामपट**—श्यामपट सबसे प्राचीन और सबसे सुलभ साधन हैं। श्यामपट पर नक्शे, चित्र ग्राफ, सुलेख आदि सुगमता से दर्शाये जा सकते हैं। पद्यपाठ पढ़ाते समय कठिन शब्द और उनका अर्थ, साधारण प्रश्न और गृहकार्य श्यामपट पर लिखा जा सकता है। व्याकरण पाठ पढ़ाते समय उदाहरण, पारिभाषिक शब्द, परिभाषाएं और अभ्यासात्मक प्रश्न लिखे जा सकते हैं। रचना में रूपरेखा, नये प्रयुक्त होने वाले शब्द और सारांश भी इस पर लिखा जा सकता है। कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति तथा अक्षर-विन्यास विद्यार्थियों से लिखवाए जा सकते है। छोटी कक्षाओं के लिए सुलेख के नमूने इसी पर लिखे जाते हैं। व्याकरण तथा पाठ्य-पुस्तक के किसी विषय के सम्बन्ध में तालिकाएं दी जा सकती हैं। इसका प्रयोग अध्यापक और छात्र दोनों को करना चाहिए। श्यामपट साफ़, सुन्दर और इतना बड़ा होना चाहिए कि सारी कक्षा को दृश्यमान हो। अध्यापक को श्यामपट पर सुन्दर लिखने के लिए अभ्यास करना चाहिए। श्यामपट के लिए सफेद और रंगीन चाक तथा झाड़न की आवश्यकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. **सूचना पट** (Bulletin Bonrd) **तथा फलेनल ग्राम**—इस पर सूचनाएं फोटो, पुस्तकों के जैकेट समाचार, हस्तलिखित लेख, विज्ञापन, आदेश आदि चिपकाएं या लटकाए जा सकते हैं। जो चीजें छपी छपाई या लिखी लिखाई हों उनको श्यामपट पर दर्शाया नहीं जा सकता। ऐसी चीजों के लिए सूचना पट काम आता है। एक बड़ा सूचनापट, भित्ति-पत्रिका (Wall Magazine) के लिए भी काम आ सकता है।

3. **मानचित्र** (Maps)— गद्य पाठ पढ़ाते समय ऐतिहासिक, भौगोलिक और वैज्ञानिक प्रसंग के स्पष्टीकरण के लिए मानचित्रों का प्रयोग करना चाहिए।

4. **चित्र** (Chart) सूक्ष्म बातों तथा अदृश्य वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप में लाने के लिए तथा चाक्षुष अनुभूति प्रदान करने के लिए चित्र सर्व-मान्य साधन है। प्रारम्भिक कक्षाओं को वर्णमाला के चित्र, बारहखड़ी, सुलेख और चित्र रचना के चित्र बड़े उपयोगी हैं। पाठ्य-पुस्तक पढ़ाते समय पाठ सम्बन्धी चित्र, महापुरुषों के चित्र, प्राकृतिक दृश्य, हिन्दी साहित्यकारों के चित्र, हिन्दी साहित्य सम्बन्धी चित्र, पाठ के अर्थबोध में अधिक सहायक हैं। व्याकरण पाठ में चित्र अनिवार्य हैं। रचना में भी चित्र रचना का पाठ अधिक सफल बन जाता है। चित्र आकर्षक, रंगीन, स्पष्ट और रोचक होने चाहिए। विद्यार्थी कई चित्र और एलबम स्वयं बना सकते हैं।

5. **मॉडल** (Model)—मॉडल का भी वैसा ही प्रयोग होता है। जैसा चित्रों का यह अधिक आकर्षक और सजीव होता है क्योंकि इसका तीन आयाम (Dimensions) होते हैं। यह गत्ते, प्लाईवुड, मिट्टी या लकड़ी के हो सकते हैं मांटसोरी और किंडर-गार्टन की सामग्री (apparatus) मॉडल ही तो हैं। रचना कार्यों में माडलों से महान् सहायता ली जा सकती है, जैसे ताजमहल पर रचना लिखाने से पहले ताजमहल का मॉडल उपस्थित करना। डाक घर का माडल संवाद का विषय बन सकता है। रावणदाह का मॉडल दशहरा के सम्बन्ध में रचना-कार्य में सहायक है।

6. कार्टून भाषा की गूढ़ बातों को समझने में सहायक होते हैं। किसी हास्यप्रद घटना को कार्टून द्वारा चित्रित किया जा सकता है और हास्यप्रद या व्यंग्यात्मक रचना में कार्टून का प्रयोग किया जा सकता है। इसी प्रकार विज्ञापन और इश्तहार भी प्रयुक्त हो सकते हैं।

7. **चित्र दर्शक**—प्रोजैक्टर (Projector)—इसके प्रत्येक विषय को स्लाइड्स (Slides) के द्वारा सरलतापूर्वक समझाया जा सकता है। दिखाते समय थोड़ी सी व्याख्या आवश्यक है। चित्र रचना के लिए यह अत्यन्त उपयोगी है। किसी भी विषय के सम्बन्ध में चित्र दिखाए जा सकते हैं और तत्पश्चात मौखिक वर्णन हो सकता है। किसी भी दृश्य को दिखाने के बाद मौखिक रीति से उसका वर्णन करवाना चाहिए। वैसे तो साधारण प्रश्न पूछने चाहिए और तत्पश्चात् लिखवाना चाहिए। वैसे तो चल-चित्र का ऐसा ही उपयोग है परन्तु जहां बिजली नहीं, वहां पर प्रोजैक्टर से ही काम लिया जा सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रोजैक्टर का एक और प्रकार है ओवरहेड प्रोजैक्टर (overhead projector) शिक्षक अपने सम्मुख प्रोजैक्टर रखता है। प्रोजैक्टर के नीचे एक सेलोलाइड शीट होता है जिस पर शिक्षक लिखता है जो कुछ वह लिखता है वह प्रोजैक्टर द्वारा शिक्षक के सिर के पीछे ऊपर श्यामपट पर चल-चित्र की भान्ति प्रोजैक्ट या प्रक्षिप्त होता है। छात्र उसको देखता है। यह यन्त्र का यह उपयोग है कि शिक्षक को श्यामपट पर लिखने की आवश्यकता नहीं, और वह कक्षा के सम्मुख रखता है, छात्रों से बात-चीत करता है और लिखता जाता है।

(8) **चित्र विस्तारक यन्त्र** (Epidiascope) —प्रोजैक्टर से यह बात भिन्न है कि इसमें स्लाइड के बदले किसी भी पुस्तक या पृष्ठ या चित्र रजट-पट पर दर्शाया जा सकता है। इसके लिए बिजली की आवश्यकता होती है।

(9) **मूक चित्र** (Silent Pictures)—जिन चल-चित्रों में आवाज नहीं होती है, उनका प्रयोग प्राकृतिक दृश्यों, दूर-दूर के स्थानों और घटनाओं के प्रदर्शन के लिए किया जा सकता है, जिनमें ध्वनि आवश्यक नहीं। रचना कार्य में यह उपयोगी है।

(10) **ग्रामोफोन** (Gramophone) **और टेप रिकार्डर**—भाषा-शिक्षण में इनका प्रयोग निम्न बातों के लिए उपयोगी है—

(i) उच्चारण, बल, लय और स्वराघात सिखाने के लिए।

(ii) कविता पाठ कराने के लिए।

(iii) संवाद का अनुकरण कराने के लिए।

(iv) टेपरिकार्डर किये हुए भाषणों के अनुकरण से भाषण शैली सिखाने के लिये।

ग्रामोफोन के द्वारा महापुरुषों के भाषण (जैसे गांधी जी के भाषण) हिन्दी कवियों के गीत (जैसे मीरा के पद, सूर के भजन) और नाटकीय संवाद सुनाये जा सकते हैं। ग्रामोफोन द्वारा चुने गए गीत शीघ्र कण्ठस्थ हो सकते हैं। ग्रामोफोन में एक विशेषता यह है कि यह प्रारम्भिक कक्षा से लेकर उच्च कक्षा तक प्रयोग में लाया जा सकता है।

(11) **रेडियो तथा टैलीविजन**—रेडियो का आविष्कार साधारण शिक्षण के लिए विशेषकर भाषा-शिक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण है। यदि प्रत्येक स्कूल में रेडियो हो तो यह शिक्षा का सस्ता साधन है। रेडियो पर बोली गई भाषा टकसाली भाषा का प्रतिनिधित्व करती है। इसके द्वारा छात्र हिन्दी के सर्व-प्रसिद्ध वक्ताओं के साथ भाषण रूप में सम्पर्क प्राप्त कर सकते हैं। सार्वभौम और सार्वदेशिक होने के कारण समस्त देश के छात्र एक साथ और युगवत् लाभ प्राप्त कर सकते हैं। रेडियो प्रोग्राम में तमाशा, नाटक, भजन,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

गीत, संगीत, भाषण आदि अनेक आकर्षक ज्ञानवर्धक और मनोरंजक कार्यक्रम होता है। परन्तु विद्यार्थियों के लिए सब से उपयोगी कार्यक्रम है स्कूल ब्राडकास्ट या बच्चों का प्रोग्राम। आकाशवाणी दिल्ली, जालन्धर, लखनऊ, इलाहाबाद आदि से एक घण्टे का कार्यक्रम प्रसारित होता है। इसमें दो प्रकार की बातें होती हैं। प्रथम ऐसा कार्यक्रम जिसमें विद्यार्थी स्वयं भाग लेते हैं। जैसे वाद-विवाद, संवाद, बाल कवि-सम्मेलन, बाल नाटक, वाद-विवाद, कवि-सम्मेलन और भाषा-शिक्षण में लाभ और मनोरंजन एक साथ प्रदान करते हैं। जिन नगरों में टैलीविजन की सुविधाएं, वहां स्कूलों के लिए टैलीविजन कार्यक्रम का पूरा लाभ उठाया जा सकता है।

इन आधुनिक साधनों से पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिए निम्न संकेत अनुकरणीय हैं —

(i) समय सारिणी (Time Table) में स्कूल ब्राडकास्ट के लिए निश्चित समय अर्पण करना चाहिए।

(ii) रेडियो या टैलीविजन कार्यक्रम सुनने के लिए कक्षा को तैयार करना चाहिए। सुनने के बाद उनसे प्रश्न पूछने चाहिए और आवश्यकतानुसार कठिन स्थलों या नवीन बातों की पृथक् रूप में व्याख्या भी करनी चाहिए।

(iii) रेडियो सुनने के लिए रेडियो श्रवण में अभ्यास की आवश्यकता है। इसमें जल्दी सुनना और समझना पड़ता है। इसके लिए छात्रों को अभ्यस्त होना पड़ेगा और वह अभ्यास भी भाषा की शिक्षा में सम्मिलित है।

(iv) मौखिक और लिखित रचना कार्य में इसका पूरा लाभ उठाना चाहिए।

(12) **चल-चित्र** (Films, Talkies)—आजकल का युग सिनेमा का युग है। चल-चित्रों का जितना प्रयोग होता है, उतना किसी भी मनोरंजनात्मक विषय का नहीं होता। परन्तु खेद है कि गन्दे और दूषित चल-चित्रों के द्वारा बालकों में चरित्र-हीनता की वृद्धि हुई है। इससे बचने के लिए आजकल शिक्षा सम्बन्धी चल-चित्रों की मांग बढ़ रही है। शिक्षा सम्बन्धी चल चित्र 5 प्रकार के हो सकते हैं·

(i) कक्षा चल-चित्र (Class room Pictures)—विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं द्वारा निर्मित छोटे चित्रों का प्रयोग कक्षा में किया जा सकता है।

(ii) वास्तविक जीवन के चल-चित्र (Documentaries)—सूचना और मंत्रालय दिल्ली द्वारा निर्मित ऐसे चित्र शिक्षाप्रद हैं।

(iii) समाचार चल-चित्र (News reels)।

(iv) व्यंग्य चल-चित्र (Comics)।

(v) नाटक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षाप्रद चल-चित्रों का उपदेश जहां चरित्र-निर्माण, ज्ञान वृद्धि और भाव-परिष्कार के लिए होता है, वहां भाषा-शिक्षण में इनसे अनेक लाभ प्राप्त हो सकते हैं, जैसे—संभाषण सुनने और समझने में अभ्यास दृश्यों की सहायता से वर्णन, नाटकीय आलोचना का ज्ञान, शब्दावली की वृद्धि टकसाली भाषा का ज्ञान और शुद्ध उच्चारण का ज्ञान।

(13) टैलीविजन (Television)—इसमें श्रवण और नेत्रों दोनों का संयुक्त प्रयोग होता है। इसमें रेडियो के साथ एक रजतपट भी होता है। जिसमें सुनाने वाला भी सांगोपांग दृश्यमान होता हैं। विदेशों में सम्पूर्ण टैलीविज़न का प्रयोग होता है, परन्तु भारत में अभी इसके प्रसार व्यवस्था के लिए देर लगेगी। यद्यपि दिल्ली तथा कई नगरों में इसका प्रयोग आरम्भ किया गया है। इसका महत्त्व वैसे ही है जैसे रेडियो या सिनेमा का। घर का 'सिनेमा' जैसे होने के कारण इसका प्रयोग रेडियो से शताधिक होगा।

§ 60. भाषा के विभिन्न अंगों को पढ़ाने के लिए आवश्यक उपकरण—

1. मौखिक कार्य --बोल-चाल के लिए प्रत्यक्ष अनुभव अधिक आवश्यक है। जिस वस्तु, स्थान घटना का छात्र को प्रत्यक्ष अनुभव हो, उसके सम्बन्ध में वह स्वयं बोल सकता। यहां पर तत्सम्बन्धी चित्रों की आवश्यकता पड़ेगी। अत: चित्र रचना के लिए विभिन्न प्रकार के चित्र उपस्थित करने पड़ेंगे। नाटक में बोलचाल में सहायक है। रेडियो ब्रडकास्ट-सुनने के बाद छात्रों से वही दुहराया जा सकता है। टैलीफोन पर वार्तालाप करना भी एक नवीन अनुभव है।

2. उच्चारण—उच्चारण की अशुद्धियां समझने के लिए ध्वनि यन्त्रों का ज्ञान देना आवश्यक है। इसके लिए ध्वनियन्त्र का चार्ट, मॉडल, दर्पण आदि उपस्थित किए जा सकते हैं ग्रामोफोन और टेपरिकार्ड शुद्ध उच्चारण के अनुकरण के लिए साधन हैं। श्यामपट पर भी कठिन शब्दों का विश्लेषण समझाया जा सकता है और चिन्हों द्वारा स्वराघात भी समझाया जा सकता हैं।

3. लिपि—लिपि सिखाने के लिए प्रारम्भिक अवस्था में चित्र, जैकेट, रंगीन अक्षर, लकड़ी के बने अक्षर, फलैशकार्ड और अगली अवस्था में वर्णमाला के चार्ट टैलीग्राफी की पुस्तकें आदि सहायक है।

4. अक्षर विन्यास—श्यामपट पर कठिन शब्दों के अक्षर-विन्यास लिखे जा सकते हैं। बड़े-बड़े शब्दों का विश्लेषण कराया जा सकता है। अक्षर विन्यास के चित्र और चार्ट उपस्थित किए जा सकते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. वाचन—प्रारम्भिक अवस्था में चित्र, फलैश-कार्ड, मांटेसौरी उपकरण आदि वाचन में रुचि पैदा करने के लिए सहायक हैं। चौथी-पाँचवीं कक्षा में पाठ का सार श्यामपट पर लिखा जा सकता है। कठिन शब्दों के अर्थ भी श्यामपट पर समझाये जा सकते हैं। गूढ़ अर्थ को समझाने के लिए कार्टून उपस्थित किए जा सकते हैं।

6. व्याकरण—अमूर्त कठिन नियमों को समझाने के लिए चार्ट अत्यावश्यक है। नियमों की तालिकाएं श्यामपट पर बनाई जा सकती हैं।

7. रचना—रचना के लिए प्रत्येक प्रकार का उपकरण सहायक है। श्यामपट पर रूपरेखा या सार लिखा जा सकता है। चार्ट, मॉडल, चित्र रचना के लिए काम आते हैं। प्रोजैक्टर मूक-चित्र या ध्वनियुक्त चलचित्र किसी विषय सामग्री के स्पष्टीकरण के लिए उपयुक्त हैं। चल-चित्र देखने के बाद या रेडियो सुनने के बाद चर्चा हो सकती है, और चर्चा के बाद लिखाई।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. दृश्य-श्रव्य साधनों की क्या महत्ता है, भाषा शिक्षण में इनका प्रयोग कहाँ तक लाभकारी है ? (§ 56)

2. हिन्दी रचना के पाठ के लिए आप किन-किन दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग करेंगे और कैसे ? (§ 60)

3. हाई कक्षाओं को व्याकरण पढ़ाने के लिए आप जिन चित्रों से सहायता ले सकते हैं। उनकी सूची बनाइए ऐसे चित्रों का प्रयोग आप कैसे करेंगे ? (§ 60)

4. आजकल सिनेमा के युग में हिन्दी सीखने में सिनेमा का प्रयोग कैसे किया जा सकता है ? (§ 59)

5. उच्चारण की शिक्षा में कौन-कौन से दृश्य-श्रव्य उपकरण सहायक हो सकते हैं और कैसे ? (§ 60)

6. हिन्दी शिक्षण में दृश्य-श्रव्य साधनों की महत्ता पर विचार कीजिए। स्कूलों में हिन्दी की शिक्षा का स्तर ऊंचा करने के लिए आप कौन से दृश्य-श्रव्य साधन अपनाएंगे ? (§ 58, 59)

सहायक पुस्तकें

1. Kennth B. Hass and Harry Q. Parker — Preparation and use of Audio Visual Aids. Teaching of Modern Language Ch. VIII.
2. UNESCO — Teaching of Modern Language Ch. V.
3. I. A. A. M. — Audio Visual Methods in Teaching.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीसरा खण्ड

शिक्षण-विधि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. Edgar Dale — Audio Visual Aids to Instruction (Mc. Graw Hill)
5. Mckown & Roberts — Audio Visual Aids io Instruction (Mc. Graw Hill.)
6. Exton — Audio Visual Materials.
7. Wittch and Schuller — 20th Century Moden Language Teaching.
8. Maxim New Mark — Ch. VIII.

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12
बोल-चाल की शिक्षा

§ 61. दैनिक जीवन में बोल-चाल का महत्त्व—

समस्त जीवन व्यापार बोल चाल पर निर्भर है। घर पर और घर से बाहर, व्यापार में या व्यवसाय में बोल-चाल द्वारा ही कार्य होता है। गूंगे या बहरे व्यक्तियों का जीवन तो इसी एक त्रुटि के कारण असफल हो जाता है कि वे बोल-चाल में भाग नहीं ले सकते। जीवन के प्रत्येक व्यापार में बोलचाल सफलता की कुञ्जी है। बोल-चाल असंभव बात को सम्भव बनाने में सहायक है। शत्रु को मधुर वाणी से मित्र बनाना, वकीलों का प्रभावोत्पादक वाणी द्वारा घातकों को न्यायालय में बचाना, ससद के सदस्यों का जनता की मांग उपस्थित करना, मन्त्रियों को अपने पद की रक्षा करते हुए आलोचनाओं का उत्तर देना, नेताओं का जनता को अपना अनुयायी बनाना आदि सब बोलचाल पर निर्भर है। हिटलर, मुसोलिनी; लेनिन जैसे नेताओं के पास सफलता का सबसे महान् यन्त्र उनकी भाषण-कला थी। हमारे नेहरू जी भी इस कला में प्रवीण थे। वे देश-विदेश में अपने भाषणों द्वारा सब को अपनी ओर खींच लेते रहे। जनता को अपने साथ रखना यदि किसी और विधि से न हो सके; बोलचाल द्वारा हो सकता है। नेताओं की वात छोड़िये, साधारण व्यवसायी भी इसका पूरा लाभ उठाते हैं। नीलाम करने वाले; कमीशन एजेंट; रास्ते में दवाई बेचने वाले; बनावटी साधु, जादूगर, बनावटी ज्योतिषी और कितने ही दुकानदार अपना शब्द जाल बिछाकर आपको फंसा लेते हैं। तत्क्षण आपकी जेवें खाली हो जाती हैं, और घर पहुंच कर ही आप अपनी भूल समझ पाते हैं। अपनी मीठी वाणी, शिष्ट और वाक्चातुर्य से ऐसे व्यक्ति अपने व्यक्तियों को अपना मित्र बना सकते हैं।

सामाजिक संघर्ष के लिए वक्ता की अनुभूति के साथ श्रोता की अनुभूति का तादात्म्य स्थापित करने वाला वाणी का प्रसाद व्यक्ति का प्रतिफलन कराने वाली प्रभावोत्पादक भाषा, और मोहित करने वाले मीठे-मीठे शब्द आपका विशेष महत्त्व रखते हैं। इसी कारण प्रत्यंक व्यवसायी सरस्वती का आह्वान करता है। आजकल अन्धे भी बोलचाल द्वारा ही सारी विद्या प्राप्त कर सकते हैं और निष्कण्टक रूप से जीवन चला सकते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 62. भाषा की शिक्षा में बोलचाल का महत्त्व—

"भाषा शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त" के प्रकरण में बोलचाल के महत्त्व की व्याख्या हुई है। अतः इस विषय की आवृत्ति की कोई आवश्यकता नहीं। स्मरण रहे कि भाषा सीखने के उपक्रम में बोलचाल का स्थान प्रथम है। हमारा भारतीय प्राचीन सिद्धान्त भी यही है कि विद्या अधिकतम बोलचाल (श्रवण-भाषा) द्वारा ग्रहण की जा सकती है। प्राचीनकाल के अध्यापक और शिष्य का सम्बन्ध जोड़ने वाला और विद्या-विनिमय कराने वाला साधन प्रवचन (बोलचाल) ही माना था। उपनिषदों में लिखा है, "अध्यापक पूर्वरूपं, अन्तेवासी, उत्तर रूपं, विद्या सन्धिः, प्रवचन संधानं।" उस प्राचीन काल में जब मुद्रणालय नहीं थे, पुस्तकें सुलभ नहीं थीं, प्रवचन द्वारा ही हमारी विद्या पढ़ाई जाती थी। शिष्यों के कान शुद्ध हो जाते थे, मस्तिष्क में ज्ञान समा जाता था और मुख में सरस्वती निवास करती थी।

बोलचाल द्वारा भाषा का साक्षात् ज्ञान प्राप्त होता है और भाषा का यथार्थ रूप भी उपस्थित होता है। भाषा का यथार्थ रूप ध्वनियों में है लिपि में नहीं। सम्पर्क, अनुकरण सा अभ्यास द्वारा, बोलचाल में ही सम्भव है, भाषा कम से कम समय में सीखी जाती है। बोलचाल की शिक्षा में पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग गौण रहता है। पाठ्य पुस्तक पर अधिक अवलम्बन से ही शिक्षा में त्रुटियां रहती हैं।

63. बोलचाल की शिक्षा के उद्देश्य—

(i) बोलचाल की शिक्षा का सर्वप्रथम उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी सरल, स्पष्ट और शुद्ध शब्दों में अपने भावों और विचारों को अभिव्यक्त कर सकें। यह भविष्य जीवन के लिए परमावश्यक तैयारी है।

(ii) विद्यार्थी प्रश्नों का ठीक तथा शुद्ध तथा पूर्ण वाक्य में उतना ही उत्तर दे जितना आवश्यक और संगत हो।

(iii) विद्यार्थी अनुभव की हुई बातों तथा ग्रहण किए हुए विचारों को दूसरों के सामने प्रभावोत्पादक शैली में उपस्थित कर सके।

(iv) विद्यार्थी विचारों का तर्क पूर्ण प्रतिपादन कर सके, तथा समर्थन या विरोध करने के लिए उपयुक्त शब्दावली तथा प्रभावोत्पादक शैली का प्रयोग कर सके।

(v) विद्यार्थी प्रभावपूर्ण शैली में दूसरों के साथ वार्तालाप कर सके। जो व्यक्ति वार्तालाप नहीं कर सकते, वे सभा में, समाज में और मित्र-वर्ग में भी अयोग्य समझे जाते हैं। वार्तालाप में त्रुटियों के कारण व्यक्तियों पर ग्रामीणता, असभ्यता, अशिष्टता, जंगलीपन आदि दोषों का आरोपण हो जाता है।

(vi) बोलचाल की शिक्षा का एक उद्देश्य है, विद्यार्थियों में से सफल वक्ता (Orators) उत्पन्न करना। कक्षा में बार-बार प्रश्नोत्तर, सम्भाषण, वाद-विवाद, नाटकादि में भाग लेने से विद्यार्थी भाषापटु बन जाते हैं और भविष्य में वे ही सफल वक्ता सिद्ध होते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 64. बोलचाल के गुण—

बोलचाल में निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक है—

(1) **शुद्धता**—जिस भाषा का हम प्रयोग करें वह अर्थ, व्याकरण और उच्चारण की दृष्टि से शुद्ध होनी चाहिए। शुद्ध उच्चारण बोल-चाल द्वारा सिखाया जा सकता है। प्रारम्भिक कक्षाओं में यदि उस पर ध्यान न दिया जाये तो बाद में अशुद्ध उच्चारण की आदत भुलाना कठिन हो जाता है। बोल-चाल द्वारा कान शुद्ध उच्चारण सुनने में प्रशिक्षित हो जाते हैं। बोलचाल के लिए टकसाली भाषा (Standard Language) का अवलम्बन करना चाहिए। उसमें ग्रामीणता, अशिष्टता, श्रुतिकटुता आदि दोष नहीं होने चाहिएं और वह व्याकरण सम्बद्ध और बोधगम्य होनी चाहिए।

(2) **सशक्तता**—बोलने वाला जिन भावों और विचारों को प्रकट करना चाहे, उसकी भाषा उनको व्यक्त करने में समर्थ हो। आकांक्षा, योग्यता और सन्निधान जैसे गुणों के द्वारा भाषा अर्थ प्रकट करने में सफल होती है।

(3) **प्रभावोत्पादकता**—वक्ता अपनी भाषा से श्रोतागण पर प्रभाव डाल सके, और अपने लक्ष्य में सिद्धि प्राप्त करे। सफल नेताओं की भाषा का सबसे बड़ा गुण यही है। तुलसीदास जी पत्नी के 'अस्थि-चरम-मह-देह-मम...' प्रभावोत्पादक शब्द सुन कर ही भगवान् के भक्त बन गये।

(4) **मधुरता**—मधुरवाणी से मोती झड़ते हैं, फूल बरसते हैं और श्रोता का मन प्रसन्न हो जाता है। कभी कटु से कटु बात भी शब्दों में बुरी नहीं लगती। बिहारी का वह दोहा याद होगा:-

'नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इह कालि।
अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवालि ॥'

इस दोहे ने राजा के मन में क्रांति मचा दी, सत्यता और प्रियता जिस वाणी में हो, वह जादू का असर कर सकती है। बिगड़ता हुआ कार्य भी मधुर वचनों से बन जाता है। कभी हास्य की पुट आ जाए तो सोने पर सुहागा।

(5) **शिष्टता**—शिष्टता के बिना भाषा गंवारू भाषा या असभ्य भाषा कहलाई जाएगी। सामाजिक शिष्टता का ध्यान प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भाषा में रखना चाहिए। कर्कश सम्बोधनों का, अपशब्दों का अथवा गलियों का प्रयोग भाषा में नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करना लोकाचार और सभ्यता के विरुद्ध है।

(6) **व्यवहारिकता**—लोक व्यवहार में भाषा का जैसा स्वाभाविक प्रयोग होता है, वैसा ही प्रयोग करना चाहिए। मुहावरेदार, लोकोक्ति युक्त बोलचाल की भाषा जितनी प्रिय और स्वाभाविक लगती है, उतनी बनावटी, साहित्यिक तथा उच्च भाषा नहीं। साहित्यिक भाषा का प्रयोग साहित्य में करना चाहिए, बोलचाल में नहीं।

---

1. संस्कृत की एक सूक्ति है—सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यमप्रियं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(7) **अवसरानुकूलता**—भिन्न-भिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के हाव-भाव, स्वरों का उतार-चढ़ाव, क्रोध, प्रार्थना, स्नेह, घृणा, दैन्य आदि भाव प्रकट करने पड़ते हैं। भाषा में इन भावों का होना आवश्यक है। जिस अवसर पर जिस प्रकार के हाव-भाव आदि की आवश्यकता हो, वैसा ही प्रयोग करना चाहिए। शोक समाचार सुनने पर विलाप, कटु वचन सुनने पर क्रोध, सफलता का समाचार सुनने पर हर्ष आदि भाव अवसरानुकूल प्रकट होने चाहिएं। बोलते समय मुख पर भी भावों का उतार चढ़ाव तथा स्वर में भावानुकूल परिवर्तन आवश्यक है। कभी आंगिक और वाचिक अभिनय की आवश्यकता भी पड़ती है, तर्क उपस्थित करते समय ज़ोरदार वाणी का प्रयोग करना पड़ता है। वकीलों की भाषा ओजस्विनी होनी चाहिए।

(8) **गतिशीलता**—भाषा में गति तथा प्रवाह का होना आवश्यक है। वार्तालाप करते समय बार-बार रुकना, झिझकना, स्वर भंग होना, प्रवाह में विघ्न उत्पन्न करके श्रोता की रुचि, उत्सुकता तथा ध्यान को नष्ट कर देनी भी भाषा को दूषित कर देता है।

(9) **स्वराघात**—प्रत्येक वाक्य में जो मुख्य शब्द हो, या वाक्यांश हो, उस पर ज़ोर देना अथवा सारे भाषण में जो मुख्य बात हो, उस पर ज़ोर देना, वार्तालाप की लक्ष्य-सिद्धि के लिए परमावश्यक है। स्वाराघात के सम्बन्ध में उच्चारण के अध्याय में उदाहरण दिए गए हैं।

§ 65. बोलचाल के आधार (Rudiments Speech)

बोलचाल के निम्न आधार हैं। बोलचाल की शिक्षा में इन पर पूरा-पूरा ध्यान देने की आवश्यकता है—

(1) **भौतिक आधार** (Physical Aspect)

(2) **ध्वनि-प्रकाशन** (Voice-Production)

(3) **शब्द उच्चारण** (Enunciation)

(4) **शब्दावली** (Vocabulary)

इन सब का ब्योरा नीचे दिया जाता है—

(1) **भौतिक आधार**—पीछे कहा गया है कि भाषा के दो आधार हैं—भौतिक आधार और मानसिक आधार। भौतिक आधार में कान, ज़बान, आंख, हाथ, श्वास-प्रक्रिया, ध्वनियां आदि सम्मिलित हैं। बोलचाल के लिए तीन प्रकार के भौतिक आधार आवश्यक हैं—

(i) **श्वास-प्रक्रिया** (Breathing)

(ii) **आसन** (Posture)

(iii) **अभिनय** (Gesture)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) **श्वास प्रक्रिया** Breathing)—बोलचाल का प्रथम सोपान है। बोलने का सम्बन्ध हमारे शरीरांगों के साथ है। हमारे फेफड़ों से जो वायु निकलती है वही स्वरतंत्रियों से गुज़र कर ध्वनि पैदा करती है, और मुख के विभिन्न स्थानों के संयोग से विभिन्न रूप धारण करती है। 'उच्चारण' के प्रकरण में इसकी पूरी व्याख्या की गई है। यहां पर इतना कहना आवश्यक है कि बोलचाल ध्वनियां पर निर्भर है और ध्वनियां हमारी श्वास प्रक्रिया पर। शरीर की कमज़ोरी और फेफड़ों की कमज़ोरी का प्रभाव जहां पर हमारी श्वास प्रक्रिया पर पड़ता है, वहां पर बोलचाल में कमज़ोरी आ जाती है।

(ii) **आसन** (Posture)—बोलचाल और श्वास प्रक्रिया ठीक ढंग से उठने बैठने और खड़ा रहने पर भी निर्भर है। सिर झुका कर, गर्दन झुका कर या कमर झुका कर बोलना शक्तिहीन होता है।

(iii) **अभिनय** (Gesture)—बोलने का सम्बन्ध अंग—संचालन के साथ भी है। बोलते समय किंचित अभिनय की भी आवश्यकता पड़ती है। विभिन्न अवसरों पर बोलने के साथ-साथ सिर हिलाने, भुजा हिलाने, हाथ उठाने, भृकुटि तानने, मुंह फैलाने तथा मुस्कराने की आवश्यकता पड़ती है।

इस प्रकार श्वास प्रक्रिया (Breathing), आसन (Posture) और अभिनय (Gesture) बोलचाल के भौतिक आधार है।

2. **ध्वनि प्रकाशन** (Voice Production)—बोलते समय हमारे मुख्य अवयवों (मुख के अंगों) से ध्वनियां निकलती हैं। इसका स्पष्टीकरण 'उच्चारण' के प्रकरण में (अगले पाठ में) किया गया है। मुख के अवयवों से ध्वनियाँ कैसे निकलती हैं, यह 'ध्वनियन्त्र तथा उच्चारण स्थान' के चित्र द्वारा समझाया गया है। ध्वनियों के अतिरिक्त ध्वनि-प्रकाश में कई और बातें भी आ जाती हैं जिससे ध्वनियों को समझाने में सहायता मिलती है। ध्वनियों में से ऐसे निम्न गुणों की आवश्यकता होती है—

(i) सुविधा (Ease), (ii) सशक्तता (Power)

(iii) लचक (Flexibiliy), (iv) स्वर (Pitch)

(v) मधुरता (Pleasantness)

इन सभी गुणों का स्पष्टीकरण नीचे किया जाता है—

(i) जिह्वा की सुविधा (Facilities of tongue) एक ऐसा गुण है जो निरन्तर प्रशिक्षित (trained) हो जाते हैं। दैनिक व्यवहार में इस गुण की आवश्यकता है। नहीं तो यदि जबान रुक जाये, बोलने में झिझक पैदा हो जाए, ध्वनियां अस्पष्ट निकलें तो भी अभीष्ठ सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

(ii) इसी प्रकार सशक्त वार्णो का प्रयोग आजकल की आवश्यकता है। हमारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाणी में शक्ति होनी चाहिए जिससे हम दूसरों पर अपना प्रभाब डाल सकें। वाद-विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने से यह गुण विकसित हो जाता है।

(iii) रबड़ की लचक तो आप जानते ही हैं। परन्तु भाषा की लचक से क्या तात्पर्य है? बोलते समय कभी छोटे वाक्यों का कभी किसी ध्वनि को लम्बा करके उच्चारित करते हैं और किसी को छोटा करके। एक ही वाक्य में आवश्यक शब्द को लम्बा करके अधिक समय में बोलते हैं और अनावश्यक शब्द शीघ्र बोलते हैं। एक ही गति के साथ सभी शब्द नहीं बोले जाते। इससे भाव प्रकाशन में सहायता मिलती है। जिस ध्वनि को लम्बा किया जाता है वहां सुनने वाले के लिए विचारणीय होती है।

(iv) ध्वनियों को लम्बा या छोटा करने के अतिरिक्त स्वरों को ऊचा या नीचा भी करना पड़ता है। जैसे संगीत में स्वरों के ऊंच-नीच से विभिन्न प्रकार का संगीत निकलता है, इसी प्रकार साधारण बोलचाल में भी एक ही वाक्य में कई शब्द ऊंचे स्वर से बोलने और कई शब्द नीचे स्वर से बोलने के प्रभाव में अन्तर पैदा होता है।

(v) वाणी की मधुरता की व्याख्या की गई है।

(3.) **शब्दोच्चारण** (Enunciation)—

ध्वनियों के उतार-चढ़ाव के साथ शब्दों और अक्षरों के उतार-चढ़ाव पर भी ध्यान देने की आवश्यकता पड़ती है। इसमें निम्न बातें आ जाती हैं-

(i) **अक्षरावस्थान या अक्षर व्यक्ति** (Articulation)

(ii) **स्वराघात** (Intonation)

(iii) **बल** (Stress)

(iv) **शब्द वर्गीकरण** (Phrasing)

(v) **गति** (Speed)

(vi) **शुद्ध उच्चारण** (Pronunciation)

(i) अक्षरावस्थान या अक्षर व्यक्ति (Articulation) अथवा प्रत्येक अक्षर के ठीक उच्चारण स्थान के द्वारा प्रकाशन। छात्र कभी श और ष, ऋ और र, ड और ड़, न और ण जैसे वर्णों का भेद नहीं समझ पाते और अशुद्ध उच्चारण करते हैं। वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर का उच्चारण-स्थान समझना चाहिए, जिससे उच्चारण भ्रम दूर हो जाए।

(ii) इसी प्रकार स्वराघात (Intonation) समझने से ठीक स्वर या अक्षर पर बल दिया जाएगा जिससे अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है। 'उच्चारण' प्रकरण में स्वराघात के उदाहरण दिए गए हैं।

(iii) इसी प्रकार स्वर या वाक्य बोलने पर किन्हीं उचित शब्दों पर बल डाला जाता है। इन शब्दों को ज़ोर से पढ़ने को बल (Stress) कहते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) शब्द वर्गीकरण (Phrasing)

एक ही वाक्य में कई शब्दों का उच्चारण इकट्ठे किया जाता है। ऐसे कई शब्द समूह बन जाते हैं। एक समूह के शब्दों में परस्पर निकट सम्बन्ध होता है। बोलते समय एक शब्द समूह के बाद विराम (Pause) की आवश्यकता पड़ती है। इसका उदाहरण वाचन की शिक्षा प्रकरण में दिया गया है।

(v) बोलने की सामान्य गति (Speed) होती है। यदि उस समय सामान्य गति से अधिक शीघ्र बोलें तो वाणी असपष्ट हो जाती है। अधिक धीरे-धीरे बोलना भी दोष माना जाता है।

(vi) शुद्ध उच्चारण (Pronuciation) बोलचाल की आवश्यकता है। इसकी व्याख्या अगले अध्याय में की गई हैं।

(4) शब्दावली (Vocabulary)—

शब्दावली बोल-चाल की एक और आवश्यकता है—

शब्दावली के सम्बन्ध में दो बातों की परमावश्यकता है—

(i) शब्दावली का विस्तार (Range)

(ii) शब्दावली की अवसरानुकूलता (Appropriateness)

शब्दावली का प्रयोग विषय और सुनने वालों के अनुकूल होना चाहिए। कहानी की शब्दावली सरल होगी। परन्तु वाद-विवाद में जोरदार शब्दों की आवश्यकता पड़ती है। संभाषण में मीठे शब्दों का होना उपयुक्त है। भाषण-प्रतियोगिता में भाषण शक्ति के प्रकाशन के लिए श्रोता पर प्रभाव डालने के लिए उच्च शब्दावली की सुन्दर मुहावरों और लम्बे वाक्यों की आवश्यकता पड़ती है। वैज्ञानिक विषय में विज्ञान के पारिभाषिक शब्द आयेंगे।

(ii) अवसरानुकूलता जहां श्रोता पढ़े लिखे हों, वहां उच्च भाषण का प्रयोग हो सकता है। परन्तु ग्रामीण तथा अशिक्षित जनता के सामने सीधी-सादी, आडम्बरहीन और सरल भाषा का प्रयोग करना पड़ेगा, इसी प्रकार विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार की भाषा का प्रयोग करना पड़ता है। अवसरानुकूलता वाणी का एक आवश्यक गुण है जो पीछे वर्णित है।

आगे पृष्ठ पर दी गई तालिका द्वारा सभी आधार स्पष्ट हो जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालिका 4 : बोलचाल के आधार

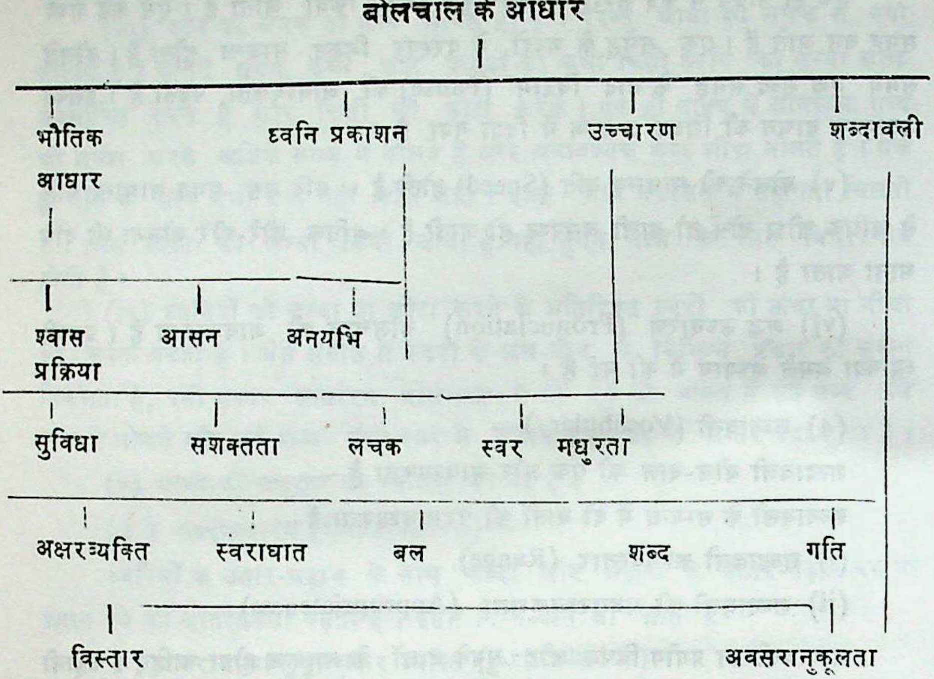

66. प्रारम्भिक अवस्था में बोलचाल के साधन

बोलचाल की शिक्षा प्रारम्भिक अवस्था में (अर्थात् प्राईमरी कक्षा में) भिन्न प्रकार से होगी और उत्तरावस्था में (अर्थात् मिडल तथा हाई कक्षाओं में) भिन्न प्रकार से। दोनों अवस्थाओं में बोलचाल की शिक्षण विधि आगे दी जाती है—

(i) सुनना और विचार करना।

(ii) बार-बार सुनने से ध्वनियों का रूप याद रखना।

(iii) अभ्यास द्वारा सुनी हुई ध्वनियों का शुद्ध रूप याद रखना।

मातृ-भाषा के सम्बन्ध में उपयुक्त तीनों कार्य घर पर ही सम्पादित होते हैं जिनकी मातृ-भाषा हिन्दी है, उनके लिए हिन्दी की ध्वनियां कक्षा में नई नहीं सीखनी है, अत: वे ध्वनियां सीखने के बदले वाचन तथा लिपि सीखनी आरम्भ कर देते हैं। परन्तु फिर भी ग्रामीणता आदि दोषों के अपहरण के लिए अध्यापक को चाहिए कि वह पढ़ना-लिखना सिखाने से पहले साधारण विषयों, निकटतम पदार्थों तथा कहानियों के वर्णन द्वारा विद्यार्थियों को शुद्ध उच्चारण, निर्वाध अभिव्यक्ति और प्रवाह युक्त वार्तालाप में अभ्यस्त कराए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिनकी मातृ-भाषा हिन्दी नहीं है, उनके सम्बन्ध में अध्यापक को इसी व्यवस्था में अधिक ध्यान देना चाहिए। अध्यापक मातृ-भाषा से उन्हें हिन्दी की ओर ले जा सकता है। उसका कार्यक्रम निम्न होगा :—

(i) निकट पदार्थों के सम्बन्ध में छोटे छोटे वाक्य बनवाना, उन वाक्यों को शुद्ध करना और प्रत्येक विद्यार्थी को ऐसे वाक्य बनवाने में सहायता तथा प्रोत्साहन देना।

(ii) सर्वनाम तथा क्रिया पदों का भिन्न-भिन्न रूपों में प्रयोग करवाना।

(iii) विशेषण, क्रियाविशेषण तथा अव्यय पदों का शुद्ध प्रयोग करवाना।

(iv) संज्ञाओं का लिंग-भेद समझना और उसी के अनुसार विशेषण तथा क्रिया पदों के निश्चित रूप में अभ्यास कराना। अहिन्दी भाषियों को हिन्दी में प्रयुक्त होने वाला जड़ पदार्थों का लिंग-भेद समझ नहीं आता है, दही खाई, खाना' पुस्तक पढ़ी, पुस्तक पढ़ा' आदि भ्रम अहिन्दी- भाषियों में साधारण है।

(v) इसी प्रकार वाचन के शुद्ध प्रयोग का अभ्यास भी आवश्यक है जहां पंजाबी में 'पीलियां साढ़ियां' 'चंगियां गल्लां कह कर 'पीली और चंगी' का बहुवचन बनाया जाता है, वहां हिन्दी में 'पीली साडियां' अच्छी बातें कहना ही शुद्ध है।

(vi) **गठन वाक्यों का प्रयोग** (Structure)

प्रत्येक भाषा का अपना-अपना स्वरूप होता है जिसमें विशेषकर तीन बातें आ जाती हैं जिनके कारण एक भाषा और दूसरी भाषा के स्वरूप में भेद आ जाता है। ये तीन बातें हैं —

(क) विभिक्तियों और प्रत्यक्षों का प्रयोग;

(ख) वाक्यों में शब्दों का क्रम।

(ग) अव्ययों का प्रयोग।

किसी भाषा की शब्दावली जानने पर भी उपरोक्त तीन बातों की जानकारी के बिना शुद्धवाक्य गठन नहीं हो सकता। अंग्रेजी का शब्दक्रम हिन्दी के शब्दक्रम (Word-order) से नहीं मिलता। 'वर्षा हो रही है' की अंग्रेजी ; It is raining है, rain is becoming' नहीं।

'तुम किस कक्षा में पढ़ते हो ? की अंग्रेजी है 'In which class do you read ? हिन्दी के शब्अक्रम के अनुसार 'You which class in read' अशुद्ध है। अंग्रेज़ी में जो विभिक्तियां प्रयुक्त होती हैं, वह हिन्दी में नहीं। अंग्रेज़ी के of का प्रयोग हिन्दी के 'का' से भिन्न हैं। यही हाल भारत की अन्य भाषाओं का है। तमिल भाषा में जिस प्रकार के वाक्य का गठन होता है, उस प्रकार का हिन्दी में नहीं होता। अहिन्दी भाषा के क्षेत्र में हिन्दीं को बोलचाल सिखाने के लिए प्रारम्भिक गठनों से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिखाने की आवश्यकता है। जिनका रूप अन्य भाषाओं से भिन्न है। अंग्रेजी में 500 प्रारम्भिक गठनों की सूची तैयार है, परन्तु हिन्दी में ऐसी कोई प्रमाणित सूची उपलब्ध नहीं। उदाहरण के लिए निम्न प्रारम्भिक गठनों की सूची उपस्थित की जाती है—

यह राम है, मैं राम हूं तुम राम हो, हम बच्चे हैं, वे बच्चे हैं।

मैं जाता हूं, तुम जाते हो, वह जाता हैं, हम जाते हैं, वह लड़की जाती है, वे जाते हैं।

मैं जाऊं, तुम जाओ, वह जाए। राम का लड़का, राम की लड़की, राम के लड़के राम की लड़कियां। अच्छा लड़का, अच्छी लड़की, अच्छे लड़के, अच्छी लड़कियां मेरा लिखा हुआ, तेरे आते ही, तुम्हें पढ़ना चाहिए, उसे खेलना चाहिए, उसकी प्रतीक्षा कर। पढ़ते-पढ़ते मुझे नींद आई, लिखते-लिखते हाथ थक गया। अब खेलने को मन नहीं चाहता है, आदि।

हिन्दी अध्यापक को चाहिए कि हिन्दी के प्रारम्भिक गठन वाक्यों का पूरा अभ्यास करावे, ताकि उसे गठन का पूरा ज्ञान हो, और वह अपनी मातृभाषा के अनुकरण से अशुद्ध हिन्दी न बोले।

अत: अध्यापक को वार्तालाप सिखाने के लिए निम्न साधनों को अपनाना चाहिए।

(1) **प्रश्नोत्तर तथा वाद-विवाद**
(2) **संभाषण**
(3) **सस्वर वाचन**
(4) **वाक्य रचना**
(5) **कहानी कहना**

(1) **प्रश्नोत्तर तथा वाद-विवाद** (Group Discussions)—पाठ से सम्बन्धित या पाठ से बाहर, कक्षा के भीतर या कक्षा से बाहर, खेल के मैदान में, कृषि के क्षेत्र में, अथवा शिल्प कार्य के समय, विद्यार्थी से तत्सम्बन्धी विषयों पर प्रश्न पूछने पर त्रुटियों को दूर करना चाहिए।

प्रश्नों के सम्बन्ध में तीन बातें ध्यान योग्य हैं :—

(i) प्रश्न छोटे सरल और स्पष्ट हों। प्रश्न का उत्तर 'हां' या 'न' में ही समाप्त नही होना चाहिए।

ii) प्रश्न को बार-बार दुहराना चाहिए।

(iv) प्रश्नों का एक व्यवस्थित क्रम होना चाहिए।

(v) प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने में धैर्य से काम लेना चाहिए। यदि एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बालक उत्तर न दे सके तो दूसरे को पूछना चाहिए। यदि कोई न बता सके तभी स्वयं बताना चाहिए। यदि कोई अशुद्ध उत्तर दे तो उसका संशोधन दूसरे विद्यार्थियों से कराना चाहिए।

(iv) कभी-कभी छात्रों को प्रश्न करने के लिए प्रेरित किया जाए।

(2) **सम्भाषण**—प्रश्नोत्तर के अतिरिक्त सरल विषयों पर सम्भाषण या वार्तालाप भी बोल-चाल में सहायक है। इसके सम्बन्ध में निम्न बातें विचारणीय हैं—

(i) सम्भाषण के विषय छात्रों के निकटतम वातावरण से सुनने चाहिएं बेसिक स्कूलों में बागवानी, कताई-बुनाई, स्वास्थ्य सफाई नियोजित सेवा और अन्य सामाजिक कार्यों के अवसर पर वार्तालाप किया जा सकता है। स्कूल से बाहर, घर, बाजार, मण्डी आदि स्थानों के सम्बन्ध में भी सम्भाषण हो सकता है। जैसे 8 वर्ष के बालक से पू.ा जाए 'जब तू घर से स्कूल आया तो तुम ने रास्ते में क्या कुछ देखा।' इसी प्रकार सैर-सपाटे, मेले-त्योहार, खेल, स्वांग, नाटक, सिनेमा, धार्मिक उत्सव, सामाजिक उत्सव, राष्ट्रीय उत्सव और प्रदर्शनियां (Exhipitions) सम्भाषण का बहाना बन सकती हैं। तात्पर्य यह जिन जिन विषयों में छात्रों की स्वाभाविक अभिरुचि है और व्यक्तिगत अनुभव (Personal experiene) है उन्हीं विषयों के सम्बन्ध में वार्तालाप करवाना चाहिए।

(ii) छात्रों को वार्तालाप करने की पूरी स्वतन्त्रता देनी चाहिए। उनके बोलने में स्वाभाविकता आनी चाहिए। आरम्भ में यदि वे टूटी-फूटी भाषा का प्रयोग करें तो उनकी त्रुटियों का सुधार करना चाहिए। परन्तु सुधार इस ढंग से करना चाहिए कि छात्र निरुत्साहित न हों। इसके निमित्त उनके सम्भाषण में बीच में रोकना चाहिए। यदि आवश्यक समझा जाए तो बोलने का आदर्श भी उपस्थित किया जाए। छोटे-छोटे वाक्यों को श्रृंखला या लड़ी में प्रस्तुत किया जाए।

(ii) सम्भाषण दो प्रकार का हो सकता है। प्रथम अध्यापक और छात्र के बीच में, दूसरे एक छात्र और दूसरे छात्र के बीच में।

(3) **सस्वर वाचन**—बच्चे जिस समय पाठ्य-पुस्तक में किसी पाठ का सस्वर वाचन करें उस समय भी उनके बोलचाल पर ध्यान देना चाहिए। सस्वर वाचन से उनकी विधिवत बोलने की आदतों का निर्माण हो जाता है।

(4) **वाक्य रचना** अध्यापकों को चाहिए कि वह बच्चों द्वारा पहले सरल वाक्यों की रचना कराए और तत्पश्चात् लम्बे-लम्बे वाक्यों की रचना कराएं। वाक्य रचना में वह भिन्न-भिन्न पदार्थों और व्यापारों को केन्द्र बना सकता है। साधारणतया ऐसा मौखिक कार्य दो प्रकार का होता हैं।

(क) पदार्थ-विषयक (Ostenctive) जिससे पदार्थों के विषय में वाक्यों की रचना की जा सकती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) व्यापार-विषयक (Based on actions) जिस में वाक्यों की रचना क्रियाओं के विषय में की जाती है। 'गाय दूध देती है,' इस वाक्य में प्रधान शब्द गाय और दूध जैसे पदार्थ हैं, जिनका प्रयोग यहां कराया जाता है। गाय रंभाती है, इस वाक्य में रंभाने की क्रिया प्रधान है जिसका प्रयोग सिखाना अपेक्षित है।

(5) कहानी कहना—वाक्य रचना के उपरान्त बच्चों को छोटी-छोटी कहानियां सुनाने का अभ्यास कराना चाहिए। बच्चों को कहानी प्यारी है। यह एक सर्वमान्य तथ्य है। कहानी सुनाने लगो, तो सभी बच्चे एकत्रित होकर बड़ी उत्सुकता और एकाग्रता के साथ कहानी सुनने बैठेंगे अत: अध्यापक को विद्यार्थियों से कहनियां कहलवानी चाहिए।

(i) कहानी बच्चों की आयु मानसिक स्तर और रुचि के अनुकूल हों। उनका विषय ऐसा होना चाहिए कि बालक आसानी से इसकी कल्पना कर सके। इसमें कल्पना का अच्छा पुट होना चाहिए। छोटे बच्चे पशु पक्षियों की कहानियां अधिक पसन्द करते हैं।

(ii) कहानी या तो अध्यापक स्वयं सुनाएं अथवा विद्यार्थी सुनाएं। यदि उनको न आती हो तो अध्यापक के सुनाने के बाद सुनाएं शिक्षक कहानी को अपूर्ण छोड़ दें और छात्रों से पूरी करवाएं। अथवा केवल रूपरेखा बताएं और उसका छात्रों से विस्तार करवाएं।

(ii) कहानी की भाषा सरल, रोचक, स्पष्ट और शुद्ध होनी चाहिए। कभी बीच में प्रश्न भी पूछने चाहिएं।

(iv) कहानी न बड़ी होनी चाहिए, न छोटी। कहानी सुनाते समय 20-25 मिनट से अधिक समय नहीं लगना चाहिए।

(v) कहानी सुनाने के बाद, बच्चों को ऐसी कहानियां सुनाने की आज्ञा देनी चाहिए, जो इसके अनुरूप हों। कभी चित्रों की भी सहायता ली जानी चाहिए।

कहानियों के अतिरिक्त ये साधारण वार्ताओं तथा पदार्थों का वर्णन भी कर सकते हैं। धीरे-धीरे वे शुद्ध स्पष्ट वाणी में अपने विचारों को व्यक्त करने में अभ्यस्त हो सकते हैं : बोलचाल के द्वारा ही वे रचना कार्य में भाग ले सकते हैं, पाठ्य-पुस्तक को समझ सकते हैं; शुद्ध उच्चारण सीख सकते हैं और भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

§ 97. उत्तरावस्था में बोलचाल के साधन

उत्तरावस्था में अध्यापक का यह लक्ष्य रहता है कि—

(i) विद्यार्थी बोलने में पूर्ण अभ्यस्त हो जाएं।

(ii) उनका उच्चारण शुद्ध हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) उनकी वाक्य रचना में अशुद्धियां न हों।

(iv) वे उचित हाव-भाव उतार-चढ़ाव के साथ अपने विचारों या भावों को प्रकट कर सकें।

(v) उनकी वाणी में वे सारे गुण आ जाएं, जो इस प्रकरण में पीछे कहे गए हैं।

साधन—इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए अध्यापक निम्न साधनों का प्रयोग कर सकता है। बोलचाल के साधन दो प्रकार के हो सकते हैं—

(क) पाठ्य-पुस्तक से सम्बन्धित और (ख) पाठ्य-पुस्तक से मुक्त।

(क) पाठ्य-पुस्तक से सम्बन्धित साधन—

(6) प्रश्नोत्तर तथा शब्द प्रयोग

अध्यापक कक्षा में कठिन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करवा सकता है, तथा पढ़ाए हुए पाठ के सम्बन्ध में बोध परीक्षा के प्रश्न पूछ सकता है। गद्य पाठ में अधिकतम मौखिक कार्य ही होना चाहिए। पद्य पाठ में पद्यांशों की व्याख्या विद्यार्थियों से कराई जा सकती है।

(7) अनुच्छेद सार (Paragraph Summaries)

पढ़ाए हुए पाठ के किसी गद्यांश अथवा सारे पाठ का सार पूछा जा सकता है 'कहानी का सार क्या है?' कहानी से कौन सी शिक्षा प्राप्त होती है?—ऐसे प्रश्न मौखिक कार्य में सहायता देते हैं।

(8) किसी वार्ता की पुनर्रचना (Reproduction)

किसी पढ़ी हुई कहानी या वार्ता की विद्यार्थियों द्वारा पुनर्रचना कराई जा सकती है। विद्यार्थी सारी वार्ता अपने शब्दों में यथार्थ रूप में सुना सकते हैं, अथवा प्रथम पुरुष में, वर्तमान काल आदि में भिन्न-भिन्न परिवर्तित रूप में भी सुना सकते हैं।

यथार्थ (Direct) और परिवर्तित (Modified) पुनर्रचना विद्यार्थियों की बोलचाल की प्रगति में परम सहायक है।

(9) रूप रेखा के अनुसार कथा वर्णन

अध्यापक पाठ्य-पुस्तक में दिए गए विवरणात्मक या वर्णनात्मक निबन्ध व वार्ता की रूप रेखा बता कर विद्यार्थियों से नई रचना करा सकते हैं।

(10) पुस्तकीय विषय के सम्बन्ध में आत्मानुभव—

विद्यार्थी पुस्तक में पढ़ी हुई वार्ता या कहानी से सम्बन्धित अपने निजी अनुभव या कहानियों को सुना सकते हैं।

(ख) पाठ्य-पुस्तक से मुक्त साधन—

(11) चित्र वर्णन—अर्थात् चित्र को देखकर तत्सम्बन्धी सभी बातों की अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाषा में वर्णन करना। मिडल कक्षाओं में चित्र वर्णन (Picture Composition) रचना का प्रधान अंग है।

(12) मौखिक वर्णन (Oral Description)

विद्यार्थी अपने अनुभवों, वार्ताओं अर्थात् पढ़ी हुई तथा सुनी कहानियों का मौखिक वर्णन कर सकते हैं।

(13) भाषण (Lecture)

भाषण या व्याख्यान एक कला है, जिसमें निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। इसका सूत्रपात मिडल कक्षाओं में ही हो सकता है। छात्रों को साप्ताहिक बैठक या बाल सभा में किसी उपयोगी और रोचक विषय पर भाषण देने का अवसर देना चाहिए। राजनीतिक और धार्मिक विषयों के बदले ऐसे विषय चुनने चाहिएं जिनका छात्रों के जीवन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है ताकि वे उस विषय पर स्वयं सोच सकें और अपना भाषण तैयार कर सकें। नहीं तो छात्र किसी से भाषण लिखवा लेते हैं और फिर उसे रटते हैं। भाषण के बाद अन्य छात्रों को वक्ता से प्रश्न पूछने की आज्ञा देनी चाहिए। उदाहरण के लिए कोई छात्र निरक्षरता (Illiteracy) पर भाषण दे और यह समझाने की कोशिश करे कि निरक्षर व्यक्ति को व्यावहारिक जीवन में कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भाषण तभी सम्भव होगा जब शुद्ध और ओजपूर्ण प्रभावोत्पादक भाषा का प्रयोग किया जाए, थोड़े समय में काफी विचार सामग्री प्रस्तुत की जाए, युक्तियां तर्कपूर्ण और विश्वसनीय हों, उच्चारण बोलने का ढंग और हाव-भाव उचित हो और किसी प्रकार का विषयांतर (diagression) न हो। सामान्य भाषण के साथ भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जा सकता है और उत्साह उत्पन्न के लिए विजेता को पारितोषिक दिया जा सकता है। छात्र जब भाषण तैयार करे तो अध्यापक उसे सहायता दे और पुस्तकालय में आवश्यक प्रसंगों का हवाला दे।

सभी विद्यार्थियों को किसी न किसी विषय पर भाषण देने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। प्रति मास एक निश्चित दिवस भाषणों के लिए रखना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी को भाषण देने के अवसर प्राप्त होने चाहिएं।

(14) संवाद (Dialogue)

भिन्न-भिन्न विषयों पर कक्षा के भीतर या बाहर संवाद करने की प्रथा बहुत पुरानी व लाभदायक है। दो विद्यार्थियों या विद्यार्थियों के दो दल किसी विषय के पक्ष और विपक्ष में, अथवा किसी व्यापार के सम्बन्ध में कथोपकथन कर सकते हैं।

(15) वाद-विवाद (Debates) भी इस प्रकार भाषण पटुता तथा मिलने की योग्यता में सहायक हैं। इसके अतिरिक्त वाद-विवाद में भाग लेने से छात्रों में व्युत्पन्न

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मति (Wit) और हास्य-व्यंग का विकास होता है। प्रति मास कक्षाओं के बीच या विद्यालयों के बीच वाद.बिवाद प्रतियोगिता (Declamation Contest) का आयोजन करना चाहिए।

वाद-विवाद के विषय में निम्न बातें स्मरणीय हैं :—

(i) वाद-विवाद करने से पहले उचित विषय का चुनाव करना चाहिए। विषय ऐसा हो जो छात्रों के लिए रोचक हो और जिसका उन्हें पूरा ज्ञान हो। विषय के दोनों पहलू (पक्ष और विपक्ष) जोरदार होने चाहिएं। कुछ विषय नीचे दिए जाते हैं :—

'इस के मत में स्कूलों में वर्दी (Uniform) आवश्यक हैं।' सैनिक शिक्षा स्कूलों में शिक्षा का एक आवश्यक अंग होना चाहिए।'

'ग्रामीण जीवन नागरिक जीवन की अपेक्षा सुन्दर है।'

'परीक्षा एक अभिशाप है।'

(ii) विषय के चुनाव के उपरान्त वाद-विवाद से दिनांक, समय, स्थान और विषय की घोषणा करनी चाहिए। बोलने वाले छात्रों के नाम प्राप्त करने चाहिएं।

(iii) वाद-विवाद के समय दो-तीन अध्यापकों को निर्णायक (Judges) नियुक्त करना चाहिए। पक्ष में बोलने के वाद विपक्ष में बोलने वाले की बारी आनी चाहिए। प्रत्येक वक्ता को 4-5 मिनट का समय देना चाहिए। वक्ताओं में प्रतियोगिता (Competiton) रखनी चाहिए। सर्वोच्च वक्ता को पुरस्कार देना चाहिए।

(iv) वक्ताओं को बोलने से पहले सहायता भी देनी चाहिए। ताकि वे पूरी तैयारी करके आएं।

(v) आरम्भ में विभिन्न कक्षाओं की परस्पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन करना चाहिए, बाद में कई स्कूलों के छात्रों की (अर्थात् अन्तर स्कूल वाद-विवाद प्रतियोगिता) होनी चाहिए।

(vi) वाद-विवाद में हास्य व्यंग्यात्मक उत्तर देने पर विशेष ध्यान देना चाहिए। क्रोध का परिहार करना चाहिए। दूसरों की कटु आलोचना ग्रहण करने के लिए हृदय को विशाल बनाना चाहिए। वाद-विवाद में बार-बार भाग लेने वालों में व्युत्पन्नमति या हाज़र जवाबी (Wit) का विकास होता है।

(vii) कभी-कभी बिना तैयारी के वाद-विवाद का अर्थात् आशु, वाद-विवाद (Exiempore Debate) का भी आयोजन करना चाहिए। छात्रों को बुलवा कर उसी समय विषय की घोषणा करनी चाहिए। आधे घण्टे का अवकाश तैयारी के लिए देना चाहिए और वाद-विवाद आरम्भ करवाना चाहिए।

(16) **चर्चा** (Panel Discussion)---उच्च कक्षाओं में सभी छात्रों को एक वृत्ताकार या अर्धवृत्ताकार पंक्ति में बिठा कर परस्पर चर्चा का आयोजन कराया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जा सकता है। एक छात्र एक विषय को लेकर अपने विचार प्रकट करता है, और दूसरे छात्र बारी-बारी से अपने विचार प्रस्तुत करते हैं। इसके आयोजन में निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए :—

(i) चर्चा का विषय रोचक होना चाहिए जैसे स्कूल के वातावरण को अधिक स्वच्छ बनाया जा सकता है ?

(ii) कक्षा का कोई सभापति नियुक्त करना चाहिए जिसकी देख-रेख में चर्चा हो। सभापति का यह कर्त्तव्य है कि वह देखे कि चर्चा विधिपूर्वक हो रही है। विषयान्तर (diagression) न हो जाए। मतभेद हो परन्तु उसमें परस्पर वैमयस्य न पैदा हो जाए। क्रोध न हो, झगड़ा न हो। प्रत्येक को बोलने का अवसर मिले। सभी बारी बारी बोलें। एक-दूसरे को न टोकें। सभी व्यक्ति या सभासद सभा-पति के आदेशों का पालन करें। अन्त में सभापति भी विचारों को एकत्रित करे और अपना निर्णायक मत प्रस्तुत करे।

(iii) आरम्भ में अध्यापक ही सभापति बने, परन्तु धीरे-धीरे जब तक छात्र उस में अभ्यस्त न हो जाएं, छात्रों को ही सभापति चुनने का अधिकार दिया जाए।

(17.) नाटक खेलना (Dramatisation)—नाटक विद्यालय का जीवित रूप है। उसके द्वारा छात्रों को अपनी कामनाएं और अपने विचार मनोरम ढंग से प्रकाशित करने का सर्वश्रेष्ठ अवसर मिलता है। नाटकीय दृश्य न केवल दर्शक छात्र के लिए लाभदायक हैं, अपितु नाटक में भाग लेने वाले पात्र के लिए भी। पात्र उच्चारण सीखता है, अभिनय सीखता है, बोलचाल में अभ्यास प्राप्त करता है और मनोरंजन प्राप्त करता है।

अत: प्रत्येक विद्यालय में वर्ष में कई बार नाटक खेले जाने चाहिएं। इसमें अध्यापक सहायता दे सकता है। अध्यापक का काम है सुन्दर, सरल और शिक्षाप्रद नाटक चुनना, छात्रों में से अच्छे पात्र चुनना, प्रत्येक छात्र को अपना-अपना भाषण या संवाद याद करने के लिए देना, मंच (Stage) के उपकरण (जैसे पर्दे, वेषभूषा) की व्याख्या करना, पात्रों से कई अभ्यास करवाना, उनकी जांच तथा संशोधन करना आदि।[1]

निम्न प्रकार के नाटक खेले जा सकते हैं :—

(i) सम्पूर्ण नाटक, जिसमें एक से अधिक अंक हो।

(ii) एकांकी नाटक; जिसमें एक अंक हो।

(iii) आत्म-भाषण, जिसमें केवल एक पात्र हो।

1. नाटक खेलने के विषय पर देखिए—'Ways to Drama, by Mrs. Swaminathan.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) मूक नाटक, जिसमें अभिनय की प्रधानता हो और वार्तालाप का भी अभाव हो।

(v) इसके अतिरिक्त पुतली नाटक (Puppet Play) छाया नाटक (Shadow Play) पैजंट (Pageant) और रेडियो नाटक भी खेले जा सकते हैं।

(18) सामूहिक कविता पाठ (Recition) – छोटे बच्चे कविता पाठ में अत्यन्त रस लेते हैं। उनके लिए गीत, खेल और मनोविनोद के साधन बनते हैं। वह इकट्ठे गाते हैं और गीत कण्ठस्थ कर लेते हैं। समस्त गीत को रटकर ताल और राग के साथ गाते हैं। ऐसे गीतों से कई लाभ हैं। छात्र मनोविनोद प्राप्त करते हैं। उनका उच्चारण शुद्ध हो जाता है। बोलने की झिझक दूर हो जाती है। संगीत और कविता के प्रति रुचि बढ़ती है। कविता पाठ के सम्बन्ध में निम्न बातें स्मरणीय हैं :—

(i) विभिन्न प्रकार की कविताओं का चुनाव करना चाहिए। जैसे झण्डे का गीत, देश भक्ति के गीत, राष्ट्र गीत, भक्ति के भजन, शिक्षाप्रद गीत, प्रकृति सम्बन्धी कविताएं आदि। कई गीतों में अभिनय की प्रधानता होती है। उनको अभिनय गीत (Action Song) कहते हैं। ऐसे गीतों को बच्चे अभिनय के साथ पढ़ सकते हैं। अभिनय सामूहिक भी हो सकता है और वैयक्तिक भी। नीचे एक अभिनय गीत उदाहरण के लिए दिया जाता है :

एक एक

एक-एक यदि पेड़ लगाओ तो तुम बाग बना दोगे।
एक-एक यदि पत्थर जोड़ो तो तुम महल बना दोगे।
एक-एक यदि पैसा जोड़ो तो बन जाओगे धनवान।
एक-एक यदि अक्षर जोड़ो तो बन जाओगे विद्वान।

इस गीत का अभिनय कराने के लिए एक छात्र एक पौधा हाथ में लेकर पेड़ लगाने का अभिनय करेगा और प्रथम पंक्ति गाएगा। इसके उपरान्त ईंट पत्थर जोड़ने के अभिनय के साथ दूसरी पंक्ति गाएगा। ऐसे वैयक्तिक गाने होंगे। सामूहिक गाने के लिए एक छात्र के उच्चारण के बाद सभी गाएंगे। अभियान गीतों में अभियान गीतों (Marching Songs) का अपना महत्व है। छात्र 'बढ़े चलो बहादुरो' गाकर वीर रस का प्रदर्शन करते हैं। कई अभिनय गीत छात्रों में लोकप्रिय हो चुके हैं जैसे :—

"आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है।
दूर हटो, दूर हटो ऐ दुनिया वालो, हिन्दुस्तान हमारा है।"
"चल-चल रे नौजवान,
रुकना तेरा काम नहीं चलना तेरी शान।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठकों को याद होगा कि पिछले कई वर्षों में 'जागृति' फिल्म के गीत जैसे 'साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल' और 'आओ बच्चो तुम्हें दिखाएं झांकी हिन्दोस्तान की' कितने लोकप्रिय हुए। तात्पर्य यह है कि छात्रों के सामने शिक्षाप्रद गीत रखने चाहिएं और उनका सामूहिक गान करवाना चाहिए। नहीं तो वे गन्दे फिल्मी गीतों को गुनगुनाते फिरेंगे। इसी प्रकार चीनी आक्रमण तथा पाकिस्तानी आक्रमण के संदर्भ में कई देशभक्ति तथा वीरता प्रधान गीतों का प्रचलन हुआ। उनका प्रयोग भी वांछनीय है।

फिल्मों में गाये गए कितने ही प्रार्थना-गीत लोकप्रिय हो गए हैं, जैसे, 'तू प्यार का सागर है, तेरी इक बून्द के प्यासे हम' 'ऐ मालिक तेरे बन्दे हम।' होली, दीवाली आदि उत्सवों के सम्बन्ध में भी कई गीत लोक-प्रिय हुए हैं।

(ii) गीत-गाते समय छात्र अधिक जोर से न पढ़ें, क्योंकि चिल्ला-चिल्ला कर पढ़ने से विचार-शक्ति मन्द हो जाती है, और आगे के लिए एकांत में मौन पाठ करना उनके लिए कठिन हो जाता है।

(ii) छात्र अधिक या अनावश्यक अंग संचालन न करें। अभिनय की अतिशयता से कविता पाठ उपहासप्रद बन जाता है।

(19) **बाल सभा**—बाल सभा में प्रत्येक प्रकार का कार्यक्रम हो सकता है, जैसे छात्र कहानी सुनाएंगे, चुटकले सुनाएंगे, कविता पाठ करेंगे, सम्भाषण करेंगे, गीत गाएंगे, छोटा सा स्वांग रचेंगे, नाटक के एक दृश्य का अभिनय करेंगे आदि। सप्ताह में एक दिन बाल सभा के लिए आवश्यक घण्टी नियुक्त करनी चाहिए। छोटी कक्षाओं में इसकी व्यवस्था के लिए अध्यापक द्वारा मार्गदर्शन की आवश्यकता है। परन्तु उच्च कक्षाओं में छात्र स्वयं व्यवस्था कर सकते हैं।

(20) **टलीफोन पर बात-चीत**—वर्तमान व्यावहारिक जीवन में टैलीफोन पर बातचीत करने की भी आवश्यकता है। प्रथम झिझक दूर होने पर दूर की ध्वनि सुनने में काम के प्रशिक्षित होने पर छात्र इसमें आनन्द प्राप्त करेंगे।

अगले पृष्ठ पर तालिका द्वारा मौखिक अभिव्यक्ति के सभी साधनों का एक विहंगम चित्र दिया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालिका 12 अभिव्यक्ति के साधन

मौखिक अभिव्यक्ति के साधन

प्रारम्भिक श्रेणियों में कक्षाएं

1 प्रश्नोत्तर
2 सम्भाषण
3 सस्वर वाचन
4 वाक्य रचना
5 कहानी कहना

मिडल तथा हाई कक्षाओं में

6 प्रश्नोत्तर तथा शब्द प्रयोग
7 अनुच्छेद सार
8 पुनर्रचना
9 वर्णन (पुस्तकीय पाठ का)
10 आत्मानुभव
11 चित्र वर्णन
12 मौखिक वर्णन
13 भाषण
14 संवाद
15 वाद-विवाद
16 चर्चा
17 नाटक खेलना
18 कविता पाठ
19 बाल सभा
20 टैलीफोन पर संभाषण

§ 68. बोलचाल की भौतिक त्रुटियाँ—

प्राय: कई छात्र बोलचाल और वाचन में यथोचित भाग नहीं ले सकते क्योंकि उनकी जिह्वा सुविधा के साथ काम नहीं करती। वे हड़बड़ाते हैं और इस त्रुटि के कारण वाचन में भी पीछे रह जाते हैं। विद्वानों ने हकलेपन के कारणों की खोज की है। उनका यह मत है कि हकलापन कोई शारीरिक या आंगिक त्रुटि नहीं। इसके केवल मनोवैज्ञानिक कारण होते हैं। जो बच्चा हकला कर बोलता है उसमें बोलने के सम्बन्ध में आत्मविश्वास नहीं होता। कहीं उसे बोलने के सम्बन्ध का अभ्यास नहीं होता क्योंकि माता-पिता बोलने को और प्रोत्साहित नहीं करते। भय के कारण भी दोष उत्पन्न होता है। अत: बच्चों को दण्ड नहीं देना चाहिए।

हकलापन दूर करने के लिए प्रथम उपाय यह है कि उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार करना चाहिए और उनको धीरे-धीरे ठीक बोलने की ओर प्रोत्साहित करना चाहिए। उनके मन से भाषा का भूत हटाना चाहिए। हकलेपन पर उपहास कभी भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं करना चाहिए। उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न करना चाहिए उनको कठिन ध्वनियों का बार-बार अभ्यास करने का आदेश देना चाहिए। छोटी अवस्था में यह दोष शीघ्र दूर हो सकता है। अध्याय 14 में वाचन के संदर्भ में इस विषय की व्याख्या की गई है।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. मिडल तथा हाई कक्षाओं के विद्यार्थियों की बोल-चाल की शिक्षा को सशक्त और सुदृढ़ बनाने के लिए आप कौन से उपाय काम में लायेंगे। वाद-विवाद को प्रोत्साहन देने से इस उद्देश्य की पूर्ति कहां तक हो सकती है। [§ 60, 67[

2. मौखिक कार्य के लिए उन सभी प्रकार के अभ्यासों का उल्लेख कीजिए जिनका प्रयोग आप स्कूल जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में करेंगे। [§6, 67]

3. बोलचाल से क्या तात्पर्य है? प्राईमरी कक्षाओं के लिए आप किसी प्रकार के मौखिक कार्य के विभिन्न अभ्यास सोदाहरण समझाएं। [§ 66]

4. बालक के व्यक्तित्व के विकास के लिए बोलचाल सर्वप्रथम साधन है। इस कथन की विवेचना कीजिए। [§61, 62, 63]

5. छात्रों के बोलचाल में किन गुणों का होना आवश्यक है? इन गुणों की उपलब्धि कैसे हो सकती है। [§ 64[

6. भाषा-शिक्षण में कहानियों का क्या स्थान है? विभिन्न कक्षाओं के लिए कहानियां चुनते समय आप किन बातों का ध्यान रखेंगे? कहानी सुनाने की रीति संक्षेप के साथ बताएं। [§ 64[

7. निम्न पर संक्षिप्त नोट लिखें—
संवाद, वाद-विवाद, कविता, पाठ, बाल-सभा, ध्वनि प्रकाशन, प्रश्नोत्तर।

8. बोलचाल के भौतिक और मानसिक आधार कौन-कौन से हैं? इनकी क्या महत्ता है? [§ 65]

9. हकलापन के क्या कारण हैं? स्कूलों में इस त्रुटि को दूर करने के लिए कौन से उपाय काम में लाए जा सकते हैं? [§ 68]

10. सामूहिक कविता पाठ सिखाने की क्या विधि है? हिन्दी के तीन तीन प्रार्थना गीत, भक्ति गीत, अभियान गीत, देश-भक्ति गीत, प्रस्तुत कीजिए और उनके कविता पाठ का ब्योरा दीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहायक पुस्तकें

1. Harold E. Palmar — Oral English
2. Gurry — Teaching of English as a Foreign Language
3. Clark A.M — Spoken English.
4. Ball, W.J. — Conversational English.
5. Michael West — On Learning to Speak a Foreign Language
6. M. M. Lewis — Language in school- Ch. II.
7. Lamborn — Expression in Speech and Writing.
8. Gilbert Highest — Art of Teaching पढ़ाने की कला (हिन्दी अनुवाद) (आत्मा राम एण्ड सन्ज दिल्ली)
9 UNESCO — Teaching of Modern Language Ch. Methodology of Speech and Language.
10. Gardiner — Theory of Speech and Language.
11. देवनाथ उपाध्याय — भाषण सम्भाषण (किताब महल इलाहाबाद)

————

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

13
उच्चारण की शिक्षा

§ 69. महत्त्व

उच्चारण की शिक्षा, बोल-चाल और वाचन की शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग है। पीछे शुद्ध बोलचाल और वाचन के अन्तर्गत शुद्ध उच्चारण का उल्लेख आ गया है। अध्यापक का कर्तव्य है कि वह उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दे, संस्कृत के कुछ उच्चारण पर वैदिक काल से ही विचार हुआ है। वेदांगों में से एक वेदांग 'शिक्षा' भी था जिसमें भाषा के शुद्ध उच्चारण की शिक्षा दी जाती थी। इस वेदांग में वर्णों का उच्चारण स्थान, आभ्यान्तर प्रयत्न, बाह्य प्रयत्न, पद-पाठ और पदच्छेद की व्याख्या की गई है। कालान्तर में पाणिनी ने भी अपनी 'पाणिनी शिक्षा' में इस विषय का विस्तार दिया है। इसी प्रकार याज्ञवल्क्य ने भी 'याज्ञवल्क्य शिक्षा' में इसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। न्याय-सूत्र में उच्चारण के द्वारा ही शब्द की सत्ता मानी गई है। उच्चारण की उत्पत्ति के बारे में कहा गया है—'जब बोलने वाले के मन में बोलने की इच्छा पैदा होती है, तो आत्मा से हृदयस्थ वायु को प्रेरणा मिलती है जिससे कण्ठ, तालु आदि स्थानों पर एक प्रकार का आघात होता है। (जैसे वीणातन्तुओं पर उंगली का आघात हो जैसे, विविध ध्वनियों की उत्पत्ति होती है।"[1] ऊपर की व्याख्या अत्यन्त वैज्ञानिक है और वर्तमान ध्वनि विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुकूल है।

इस व्याख्या के अनुसार उच्चारण के विभिन्न सोपान (Stages) हैं। उन सभी सोपानों का नीचे स्पष्टीकरण किया जाता है—

(1) उच्चारण से पहले बोलने वाले के मन में विचार होते हैं, जिन विचारों को व्यक्त करने के लिए निश्चित शब्द होते हैं। अर्थात् शब्द से पहले अर्थ आवश्यक है। वास्तव में शब्द और अर्थ एक ही चीज के दो पहलू हैं।[2]

---

1. किमिदमुच्चारणं नामेति ? विवक्षजनितेन प्रयत्नेन कोष्ठ्यस्य वायो: प्रेरितस्य कण्ठताल्वाद्यभिघात:, यथास्थानप्रतिघाताद्वर्णाभिव्यक्ति:"

—न्याय सूत्र वात्सायन भाष्य 2/2/18

'एकस्यैवात्मनो भेदो शब्दार्थौ पृथक् स्थितौ। —वाक्यपदीय 2/31

'वागर्थाविव संपृक्तौ' —रघुवंश 1/1

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(2) बोलने वाले के मन में विवक्षा, या बोलने की इच्छा पैदा होती है।

(3) बोलने के प्रयत्न हृदय स्थल में वायु में प्रकम्पन होता हैं। अर्थात् फेफड़े से निकलती हुई वायु गले में तरंगित होती है।

(4) बाहर निकलती हुई वायु जब तरंगित होती है तो उससे ध्वनि पैदा होती है।

(5) यह ध्वनि मुख के विभिन्न अवयवों के साथ टकराकर विभिन्न रूप धारण करती है, ये विभिन्न रूप ही उच्चारण की ध्वनियां हैं।

यदि ये ध्वनियां न हों तो शब्दों का कोई अस्तित्व ही न होगा और न भाषा होगी।[1] उच्चारण की शिक्षा निम्न कारणों से आवश्यक है—

(i) भाषा का अशुद्ध उच्चारण उस पर एक आघात है। अशुद्ध उच्चारण से ही भाषा बिगड़ती है और सुसंस्कृत रूप से विकृत रूप प्राप्त करती है।

(ii) भाषा का सम्पूर्ण ज्ञान तब तक नहीं हो सकता, जब तक उच्चारण का ज्ञान न हो। भाषा की ध्वनियों के ज्ञान के बिना न भाषा बोली जा सकती है और न ठीक रीति से समझी जा सकती है।

(iii) हिन्दी सीखने वाले बच्चे प्रायः अशुद्ध बोलते हैं और प्रारम्भ में न सुधारी हुई अशुद्धियां उनके मन पर जम जाती हैं, जो कि बाद में सुधारनी कठिन हो जाती हैं।

(iv) हिन्दी भाषा के क्षेत्र में हिन्दी खड़ी बोली सब की मातृभाषा नहीं है। अत: प्राय: बच्चे कक्षा में अपनी ग्रामीण बोली में ही बातचीत करते हैं। उनकी हिन्दी पर ग्रामीण बोली; या हिन्दी की किसी उपबोली (ब्रज, छत्तीसगढ़ी, बांगरु, अवधी, मालवी, बुंदेली आदि) का प्रभाव पड़ता है। इस दुष्प्रभाव को रोकने के लिए उच्चारण की विशेष शिक्षा की आवश्यकता है अध्यापक भी इस ग्रामीणता से नहीं बचता, वह भी 'तू पढ़ता क्यों नहीं है ? के बदले 'तू पढ़त काहे नाहि हअउ' कहता है। वह कभी घर के बदले घरू कहता है और 'आवे' जावे 'सिरी' आदि रूप में अशुद्ध उच्चारण करता है।

(v) जिन बच्चों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है, वे बोलते समय प्रान्तीय भाषा के दुष्प्रभाव का प्रदर्शन करते हैं। यहां पर उच्चारण का संशोधन करने की आवश्यकता अधिक है।

---

1 श्रोत्रग्रहणे हि अर्थे लोके शब्दा: प्रसिद्धः

शाबर भाष्य मीमांसा सूत्र 1, , 1.

मत्रहीन: स्वरतो वर्णतो वा, मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति, यथेन्द्रशत्रु: स्वरतोऽपराघात्॥

—पाणिनीय शिक्षा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 70. उच्चारण दोष के कारण—

उच्चारण दोष के निम्न कारण हैं—

(i) **वर्णों के शुद्ध उच्चारण का अज्ञान**—यद्यपि हिन्दी भाषा ऐसी है, जिसमें शब्दों का अक्षर-विन्यास वैसा ही है, जैसा उच्चारण, फिर भी कई वर्ण और शब्द, शुद्ध ध्वनि रूप के अज्ञान के कारण अशुद्ध उच्चरित हो जाते हैं। जैसे खींचना को 'खेंचना' प्रताप' को परताप 'प्रश्न' को 'प्रशन', 'वृक्ष' को वृछ कहना।

(ii) **अध्यापक की योग्यता**—यदि हिन्दी पढ़ाने वाला अध्यापक हिन्दी का अधूरा ज्ञान रखता हो, अथवा स्वयं अशुद्ध उच्चारण करता हो, तो बच्चों के सामने अध्यापक का अशुद्ध उच्चारण आदर्श बन जाता है और वे उसी का अनुकरण करने लगते हैं।

(iii) **अति शीघ्रता तथा असावधानी**—विद्यार्थी प्रायः शुद्ध उच्चारण की ओर से सावधान होकर, बोलते हुए अति शीघ्रता से काम लेते हैं।

(iv) **प्रयत्न लाघव** शब्दों और ध्वनियों को व्यक्त करने में यदि पूरे प्रयत्न से काम न लिया जाए और संक्षिप्त रूप से उच्चारित करने का प्रयास किया जाए अर्थात् बोलने में भी 'शार्टकट' (Short-Cut) विधि को अपनाया जाए, तो उच्चारण अशुद्ध हो जाता है। 'मुख्याध्यापक' को मुखध्यापक' 'मार डाला' को'मा डाला' 'परमेश्वर' को 'प्रमेश्वर', 'सुन्दर समाचार' को 'सुन्नर समाचार' कहना इसी कारण से है।

(v) **दोषपूर्ण आदत का अभ्यास**—किसी-किसी की अपनी वैयक्तिक आदत होती हैं, जिसके कारण वह अशुद्ध उच्चारण करता है। कोई नाक का अधिक प्रयोग करता है और 'नेहरू जी ने अपने भाषण में यह कहा' के बदले 'नेहरू जी ने अपने भाषण में यह कहां' कहता है। कोई रुक-रुक कर बोलता है, कोई हड़-बड़ाता है, कोई दो-दो तीन-तीन शब्दों के बाद 'अ' कहता है, कोई 'जरूर' के बदले जरुर कहता है, इत्यादि।

(vi) **प्रान्तीय या ग्रामीणता**—ग्रामीण तथा प्रान्तीय भाषाओं के प्रभाव के कारण उच्चारण की कितनी ही अशुद्धियाँ हो जाती हैं। पंजाब में 'क' 'ख' 'ग' के बदले 'का' 'खा' 'गा' तथा 'घ' के बदले 'द' बोलते हैं, महाप्राण घोष के बदले अल्पप्राण घोष बोलते हैं, हरियाणा में बांगरु बोली प्रभावश साधु को साद्धू मोटा को मोट्ठा गीला गील्ला, धातु को धातू, इनाम को एनाम, पेड़ को पेड, भेड़-बकरी को भेड-बकरी, देश को देस, शूर को सूर, मैंने को मन्ने बोलते हैं। कश्मीरी भाषा में महाप्राण नाद वर्ण नहीं, इसलिए वहां के हिन्दी पढ़ने वाले घोड़े को गोड़ा, भाई को बाई कहते हैं। बांगरु बोली के प्रभाववश छात्र ओह परी जागा (वहं पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाएगा के बदले), 'हाम मोटर में बैठागे, (हम मोटर में बैठेंगे के बदले) बोलते हैं। हिन्दी में ळ ध्वनि नहीं परन्तु गुजराती मराठी के है। अतः गुजराती मराठी छात्र बल को बल्ल, फल को फल्ल बोलते हैं। बंगाल में प्रत्येक स्वर को ओष्ठ्य बना कर 'क' 'ख' के बदले 'को' 'खो' 'जय हे' के बदले 'जयो हे' बोलते हैं। मराठी तालव्य 'च' 'छ' को वर्त्स्य 'च्' 'छ्' में बदलते हैं। पूर्व में 'य' के बदले 'ज' बोलते हैं जैसे 'जजमान' आदि। बच्चे क्या अध्यापक भी प्रांतीय ध्वनियों के दुष्प्रभाव में आ जाते हैं।

(vii) **अन्य भाषाओं का दुष्प्रभाव**—अंग्रेजी, उर्दू, फारसी तथा अन्य विदेशी भाषाओं का दुष्प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। उर्दू वाले 'खींचना' को 'खेंचना', 'अधूरा' को 'अधोरा', 'प्रताप' को 'परताप', 'श्री' को 'शिरी' या 'सिरी' कहते हैं। दीर्घ 'आ' का 'ऑ' ओष्ठ्य बनाना अंग्रेजी का प्रभाव है। उस सम्बन्ध में निम्न तथ्यों का विचार आवश्यक है।

1. अनेक भारतीय भाषाओं में महा प्राण ध्वनियां नहीं पाई जातीं। कश्मीर में सघोष महा प्राण नहीं। तमिल तथा मलयालम में श्वास और नाद में कोई भेद नहीं अतः 'अन्दर' और 'अन्तर' का भेद स्पष्ट नहीं कर पाते, और भाई और बाई में भेद नहीं कर सकते।

2 ड़, ढ़ ध्वनियां हिन्दी में मौलिक हैं। जो संस्कृत में तथा बहुत सी भाषाओं में नहीं।

3. ख़ ग़ ज़ फ़ उर्दू से आये हैं, और अन्य भाषाओं में नहीं।

4. स, श और ष का बंगला-भाषी अन्तर नहीं कर पाते।

5. र के बदले, असमिया भाषी ड़ बोलते हैं।

6. हिन्दी में ङ् और ञ शब्द के अन्त में नहीं होता, परन्तु तमिल में होता है।

7. तमिल में दो 'र' और दो 'ल' हैं।

(vii) **मनोवैज्ञानिक कारण**—शंका, भय, झिझक, हीनता ग्रन्थि (Inferiority Complex) आदि मनोवैज्ञानिक कारणों से भी छात्र बोलते समय थथलाता है या अशुद्ध उच्चारण करता है।

§ 71. उच्चारण दोष के प्रकार—

नीचे उच्चारण दोष के विभिन्न रूपों का वर्गीकरण किया जाता है :—

(i) **स्वर भक्ति**, जैसे राजेन्दर, सिरी, परताप, भगति आदि कहना।

(ii) **स्वर-लोप**, जैसे प्रमात्मा, छत्री, वातावर्ण, समाचार, कुटम्भ, आदि कहना।

(iii) **स्वरागम**, जैसे असनान, इस्कूल, इस्त्री कहना।

(iv) इ, उ, का क्रमशः ई, ऊ, के साथ भ्रम, जैसे—लिपि, कवी, हिन्दु, चाहिए, पतीत, इश्वर, परन्तु कहना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) चन्द्र-बिन्दु और अनुस्वार का भ्रम, जैसे—गंगा, स्वतन्त्रता, सांस, नदियां आदि कहना।

(vi) ऋ, र और अर् का जैसे, भ्रम—रिषि, मारग, प्रथक, आशरम कहना।

(vii) न और ण का भ्रम, जैसे—रनभूमि, गुन, प्रनाम, महाण, कहना।

(viii) क्ष और छ का, श और ष का, तथा व और ब का भ्रम, जैसे—प्रकाष, आदर्ष, निश्काम, रच्छा, लछमन, छेत्र, ब्योपार, बचन आदि कहना।

(ix) ड और ड़, तथा ढ और ढ़ का भ्रम, जैसे—गुड दौड, साड़ी, ढाई, पढ़ना, डालना आदि कहना।

(x) अल्प प्राण और महाप्राण का भ्रम, जैसे—बोजन, बुड्ढापा, छटा, दोभी, दोती, गूमना, शुध, बूगोल आदि कहना।

(xi) अनुनासिका, जैसे को सोचना को सोंचना, महाराज को महांराज, सच्चा को संच्चा कहना।

(xii) अशुद्ध स्वराघात, जैसे—'मैं अन्दर आ सकता हूं ?' इस वाक्य में अन्तिम दो शब्दों का स्वर उदात्त बनाने के प्रश्न और प्रार्थना का भाव निकलता है, परन्तु 'आ' पर बल डालने से आज्ञा और आग्रह का भाव निकलता है।

(xiii) शब्दांश-विपर्य्यय (Spoonerism) जैसे—'बाल की खाल उतारना', के बदले 'खाल की बाल उतारना' कहना। इसी प्रकार 'मोहनि मूरति, सांवरि सूरति' के बदले 'मोहनि सूरति, सांवरी मूरति' 'लंका का राजा रावण' के बदले 'रंका का राजा लावण' कहना भी अशुद्ध है। प्रसिद्ध है कि एक अर्द्ध-शिक्षित गृहिणी ने अपने पति को पत्र लिखा। 'मेरे प्राण प्यारे' और 'आपकी चरणदासी' के बदले उसने लिखा 'मेरे चरणदास' और 'आपके प्राणों की प्यासी'।

(xiv) अधिक या न्यून गति—अर्थात् किसी वाक्य या वाक्य खण्ड को अधिक जल्दी बोलना या बहुत धीरे-धीरे बोलना।

(xv) थथलाना या हड़बड़ाना—जैसे 'त त तुम्हारा नाम क क क क्या है ?' ऐसा कहना। इस प्रकार का दो कारणों से होता है—

(क) शारीरिक कारण, अथवा जिह्वा ठीक ढग से संचालन न कर सकना, जिह्वा के साथ सम्बन्धित स्नायुओं की दुर्बलता।

(ख) मनोवैज्ञानिक कारण, जैसे अध्यापक के दुर्व्यवहार से जनित भय औरसंकोच से जिह्वा का लड़खड़ाना, अथवा किसी मानसिक ग्रन्थि के कारण जिह्वा का रुकना।

इसके अतिरिक्त और भी कितने प्रकार के उच्चारण-दोष पाए जाते हैं, जिनका संकलन अध्यापक स्वयं कर सकता है। उपर्युक्त प्रकार केवल नमूने के तौर पर दिए गए हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

72. उच्चारण-दोष के सुधार के उपाय—

(i) नागरी ध्वनितत्त्व को समझना –

अध्यापक स्वयं नागरी ध्वनितत्त्व का पूरा ज्ञान प्राप्त करे और तत्पश्चात् बच्चों को मिडल तथा हाई कक्षाओं में नागरी वर्णमाला के स्वर तथा व्यंजन आदि की शिक्षा दे।

(ii) ध्वनि यन्त्रों का ज्ञान देना (Teaching Mechanism of Speech)—

अध्यापक बच्चों को सिखाएं कि बोली की ध्वनियां कैसे बनती हैं? ध्वनियां उच्चारण करने में जिह्वा तथा विभिन्न उच्चारण स्थानों का हाथ है, उच्चारण स्थान के गलत प्रयोगों से उच्चारण कैसे अशुद्ध हो जाता है, अल्पप्राण और महाप्राण ध्वनियों में क्या भेद है, स्वर और व्यंजनों में क्या भेद है, आभ्यान्तर और बाह्य प्रयत्नों में क्या भेद है?—आदि ध्वनिविचार (Phonetics) के इन सभी आवश्यक तथ्यों को वह उदाहरण देकर समझाये। इससे प्रत्येक विद्यार्थी समझ जाएगा कि हिन्दी के वर्ण कैसे बोले जाते हैं।

वह ध्वनियों को समझाने के लिए निम्न दृश्य-श्रव्य साधनों की सहायता ले सकता है—

(क) ध्वनि यन्त्रों का चित्र।

(ख) सिर और ग्रीवा का एक मॉडल, जिसके अंग विभिन्न हो सकते हों, ताकि प्रत्येक उच्चारण स्थान दिखाया जाए।

(ग) दर्पण, जिससे बालक स्वयं अपने मुख के भीतर के उच्चारण स्थान तथा उच्चारण करते हुए जिह्वा का संचालन देख सकें।

(घ) ग्रामोफोन तथा लिग्वाफोन (Gramophone and Linguaphone) जिसमें शुद्ध उच्चारित वाक्यों का रिकार्ड किया जा सकता है, बार-बार उसी को सुनाया जा सकता है। टेप रिकार्डर का भी प्रयोग हो सकता है।

इसके अतिरिक्त निम्न वैज्ञानिक यन्त्र भी बहुत उपयोगी हैं, परन्तु भारत जैसे निर्धन देश के स्कूलों में इनके सुलभ होने में संदेह है।

(ङ) कायमोग्राफ (Kymograph) जिसका प्रयोग घोष-अघोष, अल्पप्राण-महाप्राण, स्पर्श संघर्षी मात्रा आदि सिखाने में हो सकता है।

(च) एक्सरे (X-Ray) की सहायता, अस्पर्श व्यंजनों तथा स्वरों के उच्चारण में जीभ की दशा तथा उनके कार्य का पता चलाने के लिए ली जाती हैं।

(छ) कृत्रिम ताल (False Palate) जीभ के ऊपर तालु में बैठाया जाता है, और तालव्य ध्वनियों का उच्चारण स्थान स्पष्ट कराया जाता है।

(ज) लेरिंगोस्कोप (Laryngoscope) से स्वरतन्त्रियों का अध्ययन किया जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(झ) इस प्रकार कुछ नवीन यन्त्र हैं, जो विदेशों में प्रयुक्त किए जाते हैं। Breathing flask Stethograph, Pneumograph Endoscope Autophonoscope, ध्वनि अध्ययन में सहायक हैं। विद्यार्थी न सही, अध्यापक यन्त्रों की सहायता से ध्वनियों का पूरा ज्ञान प्राप्त कर सकता है और इस प्रकार विद्यार्थियों को पूरा मार्ग निर्देश कर सकता है। कम से कम ध्वनियों के चित्र तथा दर्पण का प्रयोग कर सकता है। ध्वनि यन्त्रों का चित्र आगे दिया जाता है।

(iii) हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण सिखाना—

अध्यापक ध्वनि तत्त्वों का ज्ञान कराने के पश्चात् हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण सिखाए। यह वर्गीकरण चार प्रकार से होता है :—

(क) बाह्य प्रयत्न के अनुसार सभी वर्ण श्वास और नाद में तथा अल्पप्राण और महाप्राण में बंट जाते हैं।

(ख) आभ्यन्तर प्रयत्न के अनुसार, संवृत, अर्ध-संवृति, अर्ध-विवृत तथा विवृत ध्वनियों का पृथक्करण हो जाता है।

(ग) उच्चारण की प्रकृति के अनुसार स्वर, ह्रस्व, दीर्घ आदि में, तथा अन्य वर्ण, स्पर्श, अन्तःस्थः लुण्ठित, उत्क्षिप्त, पार्श्विक और अनुनासिक में विभक्त हो जाते हैं।

(घ) उच्चारण-स्थान के अनुसार वर्ण कण्ठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य, दन्तोष्ठ्, वर्त्स्य बन जाते हैं।[1]

इसी वर्गीकरण का ज्ञान अध्यापक के लिए परमावश्यक है। विद्यार्थी कम से कम श्वास, नाद, अल्पप्राण महाप्राण तथा विभिन्न उच्चारण स्थानों का ज्ञान प्राप्त करें। प्राईमरी कक्षाओं में इस को समझाना कठिन है, परन्तु मिडल तथा हाई कक्षाओं में धीरे-धीरे इसका ज्ञान कराना चाहिए।

(iv) हिन्दी की विशेष ध्वनियों का, जिसमें विद्यार्थी गलती करते हैं, परस्पर भेद सिखाना। जैसे श और ष, न और ण, व और ब, ड और ड़, छ और क्ष आदि। उच्चारण शिक्षण में व्यतिरेकों की तुलना (contrast) बहुत ही लाभदायक है। रॉबर्ट लैडो तथा सी० सी० फाइज का कहना है कि भाषा के भीतर विभिन्न ध्वनियों का अन्तर सिखाने के लिए व्यतिरेक की तुलना आवश्यक है 'It is the prineiple of contrast which is important in teaching the distinction of sonnets within a Language. जैसे 'श' के उच्चारण में जिह्वा नाक तालव्य के समानान्तर (parallel) रहता है परन्तु 'ष' के उच्चारण में वर्त्संय प्रदेश की ओर ऊपर उठ जाती है और धीरे-धीरे इसका ज्ञान कराना चाहिए।

---

1. वायुर्नाभेरुत्थितः, मनसि विस्तीर्णः, कण्ठे विवर्तितः मूर्द्धानमाहत्य परावृत्तः वक्ते विचरन् विविधान् शब्दानभिव्यनक्ति।' मीमांसासूत्र, 1-3-25, शाबर-भाष्य।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिह्वाफलक के दोनों किनारे तालू के दोनों किनारों का स्पर्श करते हैं।

(v) **पुस्तक के शुद्ध पाठ पर जोर देना—**

अध्यापक को चाहिए कि प्रत्येक गद्य पाठ पढ़ाते समय प्रथम शुद्ध उच्चारण सिखाने के लिए आदर्श पाठ दे, तत्पश्चात विद्यार्थियों से पढ़वाए और उनकी उच्चारण की अशुद्धियों को विद्यार्थियों द्वारा या स्वयं दूर कराए।

(vi) **आवृत्ति और पुनरावृत्ति के नियमों का पालन (Drill Method)**

अध्यापक स्वयं शुद्ध उच्चारण करे और बालकों से बार-बार शुद्ध उच्चारण कराए। जिस अक्षर को बालक अशुद्ध बोलते हैं, केवल उसी की आवृत्ति नहीं वरन् सारे शब्द की आवृत्ति कराई जाए। इसमें भी श्रेष्ठ यह है कि इस शब्द का अलग उच्चारण करने के बदले सारे वाक्य की ड्रिल कराई जाए। पूरे शब्द की ओर अधिकतर पूरे वाक्य की आवृत्ति कराना मनोवैज्ञानिक प्रणाली है।

(vii) **कक्षा में संवाद, सम्भाषण तथा मौखिक कार्य को उत्साहित करना—**

अधिकतम मौखिक कार्य से विद्यार्थियों के उच्चारण को संशोधन का अधिकतम अवसर मिलता है।

अध्यापक प्रश्न करे, विद्यार्थी उत्तर दें और जहां विद्यार्थी अशुद्ध उच्चारण करे अध्यापक तुरन्त उसका संशोधन करे।

(viii) **विश्लेषण विधि का प्रयोग करना—**

बड़े-बड़े शब्दों का (विशेष कर संस्कृत के तत्सम् शब्दों) ध्वनियों का विश्लेषण करके, प्रत्येक खण्ड का स्पष्ट उच्चारण करके पूरे शब्द का अभ्यास कराया जाए जैसे—

प्रा+रम्+भिक=प्रारम्भिक

र+च+यि+ता=रचयिता

उ+दा+ह+र+ण=उदाहरण

चा+हि+ए=चाहिए

सम्+मि+लि+ति=सम्मिलित

(ix) **थथलाने के लिए निम्न उपाय काम में लाए जा सकते हैं :—**

(क) बच्चे के साथ सहानुभूति का व्यवहार करना, उसे अधिक बोलने के लिए और अपने विचार स्वच्छन्द रीति से प्रकट करने के लिए प्रेरित करना।

बच्चे की इस न्यूनता को दूर करने के लिए धैर्य बन्धवाना, उत्साह बढ़ाना और आत्म-विश्वास उत्पन्न कराना।

(ग) इस दोष के आधार पर छात्र का अनादर न करना, ऐसी परिस्थिति उत्पन्न न करना जिससे छात्र शेष विद्यार्थियों के सामने अपने आप को न्यून न समझे।

(घ) कठिन अक्षरों के बोलने का व्यायाम करवाना। कभी ऐसे अभ्यास के वाक्य देना जिनमें कठिन अक्षर का अनुप्रास-बाहुल्य है जैसे 'घटा घनघोर, अंबर में भर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
निज रोर', 'कालिन्दी कूल कदंब की डारन', 'बरस-बरस रसधार' 'झुणकत श्याम की पैंजनियां', 'दावा द्रुम दण्ड पर, चीता मृग झुण्ड पर, भूषण वितुण्ड पर जैसे मृग-राज है ।'

(ङ) जिस अक्षर को बोलने में कठिनाई हो, उसकी बारह खड़ी कहलाई जाए जैसे—

र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः
ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः
त्र त्रा त्रि त्री त्रु त्रू त्रे त्रै त्रो त्रौ त्रं त्रः

(x) **अनुकरण विधि का प्रयोग करना—**

अध्यापक कठिन शब्दों का उच्चारण करे और विद्यार्थी उसका अनुसरण करें। अनुकरण करते समय वे अध्यापक के मुखावयव, जीभ-संचालन और स्वरों के उतार-चढ़ाव पर पूरा ध्यान दें।

(xi) **शुद्ध उच्चारण की ओर सर्तकता या सावधानी उत्पन्न करना।** विद्यार्थी बोलते समय शुद्ध उच्चारण की ओर सतर्क रहें, दूसरे को यदि अशुद्ध उच्चारण करते सुनें तो झट उसे इस बात पर पकड़ें। बोलते समय उच्चारण के सम्बन्ध में ज्यों ही सन्देह पैदा हो जाए, त्यों ही अध्यापक से पूछ लें।

(xii) **वैयक्तिक व सामूहिक विधि को अपनाना—**

साधारणतया अध्यापक सभी विद्यार्थियों से शुद्ध उच्चारण की आवृति कराए, परन्तु कभी किसी एक विद्यार्थी की वैयक्तिक त्रुटि को दूर करने के लिए उसी पर वैयक्तिक ध्यान भी दे। अंग विकार के कारण किसी का उच्चारण अशुद्ध हो, कोई नाक से बोलता हो, कोई हड़बड़ाता हो, कोई 'अ' जोड़ता हो, तो इसी दशा में वैयक्तिक संशोधन की आवश्यकता है।

(xiii) **अनुतान (Inttonation) सिखाना**—प्रत्येक भाषा के स्वरों का अपनी अपनी पद्धति के अनुसार आरोह सम-अवरोह (उतार-चढ़ाव) होता है, जिससे अर्थ पर भी प्रभाव पड़ता है। एक बंगाली मित्र ने लेखक को कहा—"चाय पियेंगे। लेखक ने यह समझकर कि मित्र चाय पीना चाहते हैं, उनके लिए चाय का आर्डर देने लगा। परन्तु वास्तव में वह मित्र ही लेखक से पूछना चाहते थे कि 'क्या आप चाय पियेंगे ?' परन्तु उसने 'पियेंगे शब्द को चढ़ाव' के स्तर के बदले 'उतार' के स्तर में कहा। हिन्दी में एक ही वाक्यांश 'जी हां भिन्न उतार-चढ़ाव के साथ बोलने से निम्न अर्थ देता है :—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्र 5 अनुतान

वाक्यांश	चित्र	अर्थ
1. जी हां	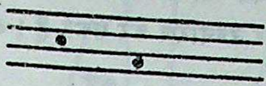	स्वीकार करना
2. जी ?		प्रश्न सूचक
3. जी हां		व्यंग्य या आश्चर्य
4. चा पियंगे		हम चाँ पियंगे।
5. चा पियंगे	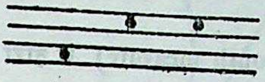	क्या आप चा पियंगे?

(xiv) स्वराघात (Accrnt) सिखाने के लिए किसी वाक्य के विभिन्न शब्दों पर बल देकर अर्थ भेद तथा भाव-भेद समझाना।

उदाहरणत:—एक व्यक्ति हलवाई से कहता है—
लस्सी का एक गिलास मुझे दें।

इस वाक्य में लस्सी, एक, गिलास तथा मुझे—इन चारों शब्दों पर ज़ोर देने से चार भिन्न-भिन्न अर्थ निकलते हैं।

(1) 'लस्सी' पर ज़ोर देने से अर्थ निकलता है
'मुझे चाय नहीं चाहिए, दूध चाहिए, वरन् लस्सी चाहिए, अत: लस्सी का गिलास दें।

(2) 'एक' पर ज़ोर देने से वाक्य का अर्थ निकलता है—
'मुझे केवल एक गिलास चाहिए, दो नहीं।'

(3) 'गिलास' पर बल देने से अर्थ निकला है—
'मुझे लस्सी का एक पूरा गिलास चाहिए, प्याला नहीं।

(4) 'मुझे, पर ज़ोर देने से अर्थ निकलता है—
'और किसी को लस्सी का गिलास देने के बदले मुझे दें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वराघात् का अभ्यास लम्बे गद्यांश पढ़ाते समय, विशेषकर संवाद या नाटक पढ़ाते समय कराया जा सकता है। नाटक में प्रत्येक पात्र भावानुकूल भाषा में बोलता है। विद्यार्थी नाटक खेलते समय या नाटकीय पात्रों का अनुकरण करते समय उनकी भाषा का भावयुक्त तथा सुस्वर उच्चारण कर सकते हैं। अध्यापक स्वरों के उतार चढ़ाव में सहायता दे सकता है।

(xv) भाषा प्रयोगशाला (Language laboratories)—वर्तमान वैज्ञानिक युग में कितने ही वैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग हो रहा है।

(i) एक्सरे (X-Ray) फोटोग्राफी द्वारा स्वरतंत्रियों का संचालन दिखाया जा सकता है।

(ii) कृत्रिम ताल (false plate) को लगाकर जिह्वा की टकराहट जाने का प्रयत्न हो सकता है।

(iii) माउथ मेजर (mouth measure) के द्वारा जीभ की ऊंचाई, निचाई आगे-पीछे होना मापा जा सकता है।

(iv) लैरिंगोस्कोप (lyringoscope) द्वारा स्वर यन्त्र देखा जाता है।

(v) टेप रिकार्ड द्वारा रिकार्ड की हुई कविता या व्याख्यान को दुबारा सुनाया जा सकता है जब तक कि उच्चारण शुद्ध हो।

(vi) लिंग्नाफोन (liugnaphone) में टैलीफोन की तरह कान में रिसीवर रखा जाता है और बार-बार टेप सुना जाता है।

(vii) स्पेक्टोग्राफ (Spectograph) एक यन्त्र है जो विद्युत उपकरण फिल्टर का उपयोग करता है। जिसमें आवृत्तियों (frequencies) के अंकित करने की क्षमता होती है। भाषण टेप किया जाता है, जब उस टेप को बराबर बजाते हैं तो फिल्टर के द्वारा ध्वनि रिले (relay) होती है।

ये सभी उपकरण भाषा-प्रयोगशाला में काम में लाये जाते हैं।

ध्वनि यन्त्र तथा उच्चारण स्थान का एक मानचित्र आगे दिया जाता है ध्वनियों के वर्गीकरण की तालिका भी विषय के स्पष्टीकरण में सहायक होगी।

प्रत्येक उच्चारण-स्थान की व्याख्या भाषा-विज्ञान की किसी पुस्तक में पढ़ें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

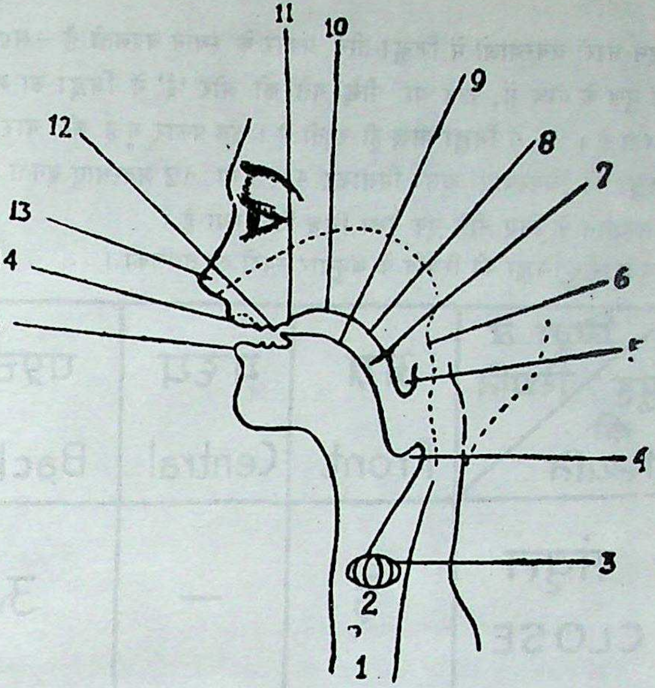

चित्र 6 ध्वनियन्त्र तथा उच्चारण स्थान

ध्वनियन्त्र तथा उच्चारण स्थान

(1) श्वास नलिका (Windpipe) (2) कंठिपिटक (Larynx)
(3) स्वरतन्त्री (Vocal Chords) (4) अभिकाकल (Epiglottis)
(5) काकल (कौआ) (Uvula) (6) नासिका विवर (Nasal Cavity)
(7) कण्ठ (Guttur) (8) कोमल तालू (Soft Palate)
(9) जीभ (Tongus) (10) मूर्धा (Hard Palate)
(11) वर्त्स (Teeth ridge alveola) (12) ऊपर के दांत (Upper teeth)
(13) नाक (Nose) (14) ऊपर के ओंठ (Upper lip)
(15) निचला ओठ (Lower lip)

उच्चारण में जिह्वा की स्थिति—ध्वनियों का भेद सिखाने के लिए जिह्वा की लगभग 12 स्थितियों की जानकारी लाभदायक है। उच्चारण करते समय मुख की 4 स्थितियां बनती हैं - संवृत (या बन्द), अधिसंवृत (आधी बन्द), अर्ध विवृत (आधी बन्द). अर्धविवृत (आधी खुली) और विवृत (खुली)। 'इ' ध्वनि संवृत है क्योंकि इसके उच्चारण में मुंह बन्द ही रहता है। 'ए' में किंचित खुला या आधा बन्द रहता है। 'ऐ' में आधा खुला और 'आ' में पूरा खुला।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन चारों अवस्थाओं में जिह्वा तीन प्रकार के स्थान बदलती है – अग्र या आगे, मध्य या मुख के बीच में, पश्च या पीछे गले की ओर 'ई' में जिह्वा का अगला भाग काम करता है। 'अ' में जिह्वा पीछे ही रहती है। इस प्रकार मुंह की चार अवस्थाएं और जिह्वा की अवस्थाएं कुल मिलाकर 4×3 या 12 अवस्थाएं बनती हैं। इसकी स्थिति समझाने के लिए नीचे एक रेखा चित्र दिया गया है।

मुंह और जिह्वा की स्थिति के अनुसार स्वरों की तालिका।

जिह्वा व स्थिति / मुंह की स्थिति	अग्र Front	मध्य Central	पश्च Back
संवृत CLOSE	ई	—	ऊ
अर्ध संवृत HALF CLOSE	ए, इ	—	ओ, उ
अर्ध विवृत HALF OPEN	ऐ	अ	औ अं
विवृत OPEN	—	आ	—

तालिका 15 : जिह्वा और मुंह की स्थिति के अनुसार स्वर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

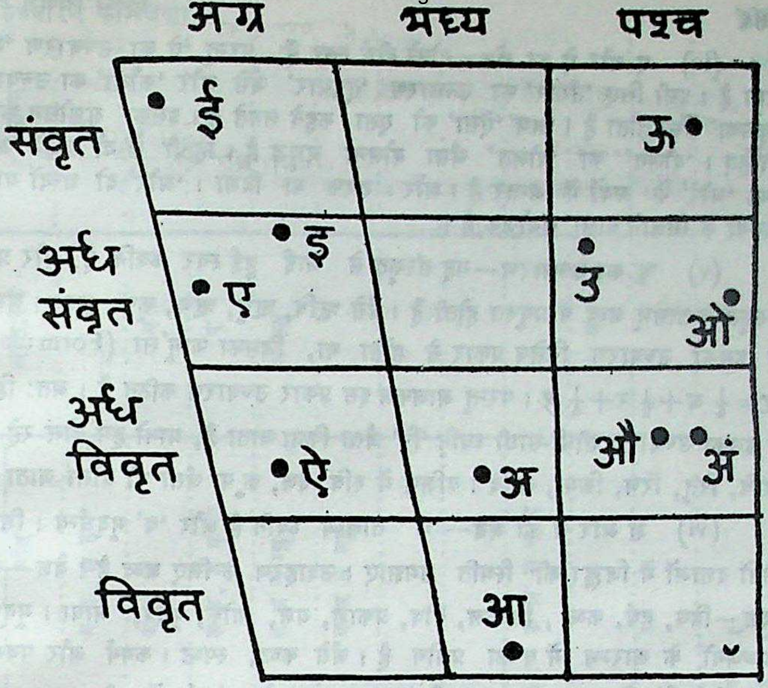

चित्र 7 जिह्वा और मुंह की स्थिति के अनुसार स्वरों का विभाजन

§ 72 A हिन्दी की विशेष ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण के सम्बन्ध में निर्देश

ह्रस्व 'अ' और दीर्घ 'आ'—दोनों का भेद समझाने के लिए शिक्षक निम्न प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करें और स्वयं उच्चारण करते हुए स्पष्ट कराएं कि ह्रस्व 'अ' अर्ध-विवृत या बन्द ध्वनि (half open sound) है क्योंकि इसमें मुंह कम खुला रहता है, परन्तु 'आ' विवृत या खुली ध्वनि (open sound) है, क्योंकि इसमें मुंह खुला रहता है। शिक्षक दोनों दशाओं में मुंह की दोनों आकृतियां बनाकर समझाएं। श्यामपट पर ऐसे उदाहरण लिखें और छात्रों से बुलवायें। जल-जाल, मर-मार, भरत-भारत, रम-राम, अचर-अचार, कमल-कमाल, आदि।

(ii) ह्रस्व 'इ' और दीर्घ 'ई'—दोनों ध्वनियों में वैसा अन्तर है जैसा 'अ' और 'आ' में। 'इ' बन्द स्वर है और छोटा है, परन्तु 'ई' बड़ा या दीर्घ तथा 'इ' से अधिक खुला। यहां भी अध्यापक उदाहरण प्रस्तुत करें जैसे मिट-मीट, दिन-दीन, मेरी जाति वह जाती है, विश्वास—ईश्वर, कवि कवी आदि।

(iii) ह्रस्व 'उ' और दीर्घ 'ऊ'—दोनों का भेद 'इ' और 'ई' में भेद की तरह समझाया जाए और उदाहरण प्रस्तुत किए जाएं जैसे—उपर—ऊपर, वस्तु—वस्तुएं, कुल—कूल, लुटना—लूटना आदि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) **ए और ऐ का भेद** दोनों दीर्घ स्वर हैं, परन्तु 'ऐ का उच्चारण 'अय' जैसा है। इसी लिए 'तैयार' का उच्चारण 'तइयार' जैसे और 'कौआ' का उच्चारण 'कउवा' जैसा होता है। छात्र 'ऐसा' को एसा कहने लगते हैं। इसका संशोधन करना चाहिए। 'दौलत' का 'दोलत' जैसा बोलना अशुद्ध है। हिन्दी के दो शब्दों 'ओर' तथा 'और' के अर्थों में अन्तर है। ओर = तरफ या दिशा। 'और' दो शब्दों या दो वाक्यों के मिलाने वाला संयोजक है।

(v) **ऋ का उच्चारण**—यह संस्कृत से आई हुई स्वर ध्वनि है, और प्राय: संस्कृत के तत्सम् शब्द में प्रयुक्त होती है। जैसे ऋषि, ऋतु, ऋण, कृपा, हृदय। संस्कृत में इसका उच्चारण विशेष प्रकार से होता था, जिसका फार्मूला (Formula) है ऋ = $\frac{1}{4}$ अ + $\frac{1}{2}$ र + $\frac{1}{4}$ अ। परन्तु आजकल इस प्रकार उच्चारण कठिन है। अत: हिन्दी में इसका उच्चारण सीधी-साधी ध्वनि 'रि' जैसा किया जाता है, मानो हम बोल रहे हैं। रिषि, रितु, रिण, क्रिया, आदि। दक्षिण में रुषि, रुण, क्रुपा जैसा भी बोला जाता है।

(vi) **श और ष का भेद**—'श' तालव्य ध्वनि है और 'ष' मूद्र्धन्य। शिक्षक दोनों दशाओं में जिह्वा की स्थिति समझाए। उदाहरण के लिए शब्द है : वेश—वेष, विश—विष, हर्ष, कष्ट, निष्फल, दोष, प्रकाश, यश, शोक, पुरुष, भाषा। मूद्र्धन्य व्यञ्जनों के आरम्भ में ष का प्रयोग है। जैसे कष्ट, स्पष्ट। कवर्ग और पवर्ग के साथ भी। जैसे निष्कपट, निष्फल, निष्प्राण। र के संसर्ग में भी ष का प्रयोग है। जैसे हर्ष, वर्ष। चवर्ग में, न, य, र, ल और व के साथ श का प्रयोग है। जैसे विश्वास, श्याम, यश, (विशेष) नहीं, पश्चात्, निश्छल।

(vii) **ड और ड़ का प्रयोग**—शिक्षक समझाए कि ड़ उत्क्षिप्त व्यंजन है। 'ड' में जिह्वा मूद्र्धा का स्पर्श करती है, परन्तु 'ड' में जिह्वा छूने के बिना ही वायु फैंकती है। 'ड़' ध्वनि 'र' के बहुत निकट है। अंग्रेजी लिपि में 'बड़ा' 'Bara' लिखा जाएगा 'Bada' नहीं। ऐसी ही 'चण्डीगढ़ में प्रथम 'ड' पूर्ण मूद्र्धन्य है, परन्तु 'ढ़' उत्क्षिप्त है। तभी रोमन लिपि में लिखते हैं—'Chandigarh' अन्य उदाहरण हैं—अण्डा, क्रीड़ा, दौड़, लड़ाई, गाड़ी, पड़ताल, खड़ी बोली, डालना, बस अड्डा।

(viii) **न और ण का भेद**—यह भी उच्चारण स्थान द्वारा समझाया जा सकता है। 'न' दन्त्य है परन्तु 'ण' मूद्र्धन्य। उदाहरण है—ऋण, शरण, कल्याण, शरण, पुण्य, भाषण, रणभूमि, परिणाम, मणि, घोषणा, प्रमाण, कारण, सर्वनाम, प्रार्थना, मुनि, अर्चना। प्राय: र और ष के संसर्ग में ण का ही प्रयोग होता है।

(ix) **चन्द्र बिन्दु की ध्वनि**—जिस शब्द में चन्द्र बिन्दु हो, उसमें चन्द्र बिन्दु के बाद की ध्वनि स्पष्टत: नाक से बोली जाती है! वसन्त। इसमें न की ध्वनि मुख और नाक दोनों से निकलती है। वसन्त में न् एक अनुनासिक ध्वनि है, जिसमें नाक का प्रयोग उतना नहीं। हँसना, भौंरा, कुआँ चन्द्रबिन्दु के उदाहरण है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ध्वनियों का वर्गीकरण

उच्चारण स्थान	स्वर	व्यंजन: श्वास	व्यंजन: नाद	अन्त:स्थ	ऊष्म
कण्ठ्य	अ आ अः	क क़ ख ख़	ग ग़, घ ङ		ह
तालव्य	इ ई	च छ	ज झ ञ	य	श
मूर्धन्य	ऋ	ट ठ	ड ड़, ढ ढ़ ण	र	ष
दन्त्य		त थ	द ध न न्ह	ल ल्ह	
ओष्ठ्य	उ ऊ	प फ	ब भ म म्ह		
कण्ठ-तालव्य	ए ऐ				
कण्ठोष्ठ्य	ओ औ				
अनुनासिक	अं		ङ ञ ण न म		
दन्तोष्ठ्य		फ़		व	
वर्त्स्य					स ज़

मोटे वर्ण महा प्राण हैं—वर्णों के प्रथम और तृतीय वर्ण अल्पप्राण हैं।
क़ ख़ ग़ फ़ ख़ फारसी में प्रयुक्त होते हैं और ड़ ढ़ उत्क्षिप्त ध्वनियां हैं।

तालिका 16 : ध्वनियों का वर्गीकरण

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीछे दी हुई तालिका में हिन्दी ध्वनियों के सम्बन्ध में निम्न स्पष्टीकरण आवश्यक है :—

(i) मोटे वर्ण जैसे ख, ख़, घ, छ, झ, ठ, ढ, ढ़, थ, ध, न्ह, ल्ह, फ फ़ भ, और म्ह महाप्राण हैं। शेष व्यंजन अल्प प्राण हैं।

(ii) च, छ, संघर्षी व्यंजन कहलाते हैं।

(iii) क़, ख़, ग़, और फ़ अरबी फारसी से आई हुई ध्वनियां हैं।

(iv) ल पार्श्विक वर्ण है क्योंकि यह जिह्वा के दोनों पार्श्वों (पहलुओं sides) से उच्चारित होता है।

(v) ड़ और ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

(vi) र लुण्ठित अन्तस्थ वर्ण कहलाता है।

(vii) ज़, ख़, ग़ और ह संघर्षी संघोष वर्ण हैं।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. भाषा का सम्पूर्ण ज्ञान तब तक नहीं हो सकता जब तक उच्चारण का ज्ञान न हो। उच्चारण के उत्तरोत्तर बढ़ते हुए महत्त्व पर अपने विचार प्रकट कीजिए। [§ 69]

2. अशुद्ध उच्चारण का अभाव अक्षर विन्यास और रचना पर क्या पड़ता है? अशुद्ध उच्चारण सुधारने के विविध उपाय बताइए। [§ 69, 72]

3. विद्यार्थी उच्चारण की अशुद्धियां क्यों दर्शाते हैं? अशुद्ध उच्चारण के बीस-पच्चीस उदाहरण उपस्थित कीजिए और उनको सुधारने के उपाय भी बताइए। [§ 70, 71]

4. निम्न दोषों को दूर करने के उपाय बताइए—

(i) परमात्मा को प्रमात्मा कहना।

(ii) राष्ट्रपति को राष्ट्रपती कहना।

(iii) थथलाना।

(iv) र के बदले ल कहना।

(v) लक्ष्मण के बदले लछमण कहना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहायक पुस्तकें

1. भोलानाथ तिवारी — भाषा विज्ञान
2. श्याम सुन्दर दास — ,,
3. मंगल देव शास्त्री — ,,
4. सीता राम चतुर्वेदी — भाषा शिक्षा
5. Henry Sweet — A Handbook of Phonetics.
6. Kenneth Pike — Phonetics.
7. Hulbert — Voice Training.
8. David Jones — An Outline of English Phonetics.
9. Jon Eisenon and Mardel Ogilvie. — Speech Correction in the School
10. R. M. S. Heffney — General Phonetics
11. Herely A. H. — Colloquial Hindustani

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

14
वाचन की शिक्षा

§ 73. वाचन क्या है ?

साधारणतया पुस्तक पढ़ने को वाचन कहते हैं। परन्तु इतना कहने से वाचन का तात्पर्य स्पष्ट नहीं होता। क्या वाचन लिपिबद्ध अक्षरों की मौखिक अभिव्यक्ति का दूसरा नाम है, अथवा लिपिबद्ध विचारों की मौखिक अभिव्यक्ति का ? वास्तव में लिपिबद्ध अक्षरों का तब तक कोई मूल्य नहीं, जब तक वे विचारों का प्रतिनिधित्व नहीं करते, ठीक उसी प्रकार जैसे ध्वनियों का कोई मूल्य नहीं, जब तक वे विचार संचार न करती हों, ध्वनियों और लिपिबद्ध अक्षर अर्थ के बिना व्यर्थ हैं। अर्थ रखते हुए भी जब तक वे हमारे सम्मुख अर्थ-प्रकाशन न कर सकें, तब तक वे व्यर्थ हैं। इसलिए विदेशी भाषा की ध्वनियां अथवा अक्षर अर्थ रखते हुए भी हमारी समझ मे नहीं आते। ऐसी ध्वनियों को सुनकर भी हम कह नहीं सकते कि हमने पुस्तक पढ़ी है, और ऐसे लिपिबद्ध अक्षरों को पढ़ कर भी हम नहीं कह सकते कि हमने पुस्तक पढ़ी है, जब तक हम उसका अर्थ न समझते हों। अत: वाचन में लिपि को पढ़ना उतना आवश्यक नहीं, जितना पढ़ कर उसे समझना और शब्दों का अर्थ ग्रहण करना। बोलने की प्रक्रिया में चार अवस्थाएं हैं—

(1) **विचार प्रकाशन**—किसी व्यक्ति के मन में विचार के प्रकाशन या अभिव्यक्ति की इच्छा आप उत्पन्न होती है। ये विचार उसके मस्तिष्क में हैं।

(2) **ध्वनियां**—विचार प्रकाशन के निमित्त वह विशेष ध्वनियों का आश्रय लेता है। ध्वनियां ही उसके विचारों की प्रतीक या प्रतिनिधि बनती हैं। इन ध्वनियों को वह अपने मुख में उच्चारित करता है।

(3) **श्रवण**—एक व्यक्ति ध्वनियों का उच्चारण करता है, और हम सुनते हैं।

(4) **अर्थ ग्रहण**—कानों से सुनने के उपरान्त हम मस्तिष्क में इन ध्वनियों का अर्थ ग्रहण करते हैं। पूर्व परिचय होने के कारण ध्वनियां हमारे लिए विशेष अर्थ रखती हैं। इसी प्रकार हमारे मन में वे ही विचार प्राप्त होते हैं, जो बोलने वाले के मन में थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाचन की प्रक्रिया की भी चार अवस्थाएं हैं, अन्तर केवल इतना है कि ध्वनियों को सुनने के बदले हम ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करने वाले लिपिबद्ध अक्षरों और शब्दों को पढ़ते हैं। कानों के बदले हम आंखों से काम लेते हैं। परन्तु ध्वनियों का लोप यहां भी नहीं होता। ध्वनियों का बोध होने पर ही लिपि का बोध हो सकता है। लिप्यक्षर पढ़ते समय प्रथम तत्सम्बन्धी ध्वनियों का भाव होता है; जिसको हम पहले सुन चुके हैं। ध्वनियों को सुनने और उसका अर्थ ग्रहण करने की स्मृति यहां अवश्य काम आती है। इस प्रकार पढ़ना सुनना अन्योन्याश्रित है। वाचन की प्रक्रिया को हम निम्न मानचित्र द्वारा समझा सकते हैं—

एक व्यक्ति — दूसरा व्यक्ति

विचार —शब्द — विचार

भाव प्रकाश —श्रवण-पाठन — अर्थ ग्रहण

ध्वनि-श्रवण

लिपि-पाठन

वाचन

मानचित्र 8 : वाचन-प्रक्रिया

इस मान चित्र से दो महत्त्वपूर्ण निर्णय प्राप्त होते हैं—

(1) लिपि पढ़ने से पहले तत्सम्बन्धी ध्वनियों को सुनना आवश्यक है। पढ़ते समय ध्वनियों की स्मृति आ जाती है और तब अर्थ ग्रहण हो जाता है। इस प्रकार सम्भाषण वाचन की पूर्वावस्था है। वाचन लिखने से पहले कार्य पर बल देना चाहिए, और वाचन सिखाते-सिखाते भी मौखिक कार्य अर्थात् ध्वनियों का उच्चारण करना, अनुकरण करना सिखाना चाहिए।

(2) वाचन की प्रक्रिया तब तक सम्पूर्ण नहीं, जब तक अर्थ ग्रहण न किया जाए। अर्थ समझने के बिना ही किसी शब्द को पढ़ना वाचन नहीं कहा जा सकता। किसी एक अक्षर को पढ़ना भी वाचन में सम्मिलित नहीं, क्योंकि अकेला अक्षर निरर्थक है।

वाचन की परिभाषा निम्न प्रकार हो सकती है—

पूर्ववत ध्वनियों के प्रतीक लिपिबद्ध शब्दों को पढ़ कर अर्थ ग्रहण करने की प्रक्रिया को वाचन कहते हैं। अर्थात् हम कई ध्वनियों को सुनते हैं। उन ध्वनियों से शब्द बनते हैं। शब्द लिखे भी जाते हैं। हम उन लिखे हुए शब्दों को पढ़ते हैं, और अर्थ समझते हैं। यही प्रक्रिया वाचन है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 74. वाचन का महत्त्व

(1) **साक्षरता का पर्याय**—वाचन साक्षरता का पर्याय है। कोई भी व्यक्ति तब तक साक्षर और शिक्षित नहीं कहा जा सकता जब तक वह पढ़-लिख न सके। लिखना भी तभी आएगा जब पहले पढ़ना आए। वर्तमान समाज में लिखने-पढ़ने के बिना घर में, बाज़ार में, कार्यालय में या किसी अन्य स्थान पर सामाजिक व्यवहार असम्भव है। अत: वाचन की सामाजिक उपयोगिता है।

(2) **शैक्षणिक उपयोगिता**—वाचन की सामाजिक उपयोगिता के अतिरिक्त शैक्षणिक उपयोगिता भी है। मानव मन में निहित चिरंतन जिज्ञासा को शांत करने के लिए, ज्ञान विज्ञान की पुस्तकों से मानसिक उत्सुकता मिटाने के लिए, संस्कृति के आधार पुस्तक भण्डार की अमूल्य निधि को आत्मसात करने के लिए और मस्तिष्क एवं व्यक्तित्व के विकास के लिए वाचन एक अनिवार्य क्रिया है।

(3) **मनोरंजन का साधन**—वाचन मनोरंजन का भी एक साधन है। अवकाश के समय, घर में, वाटिका में, रेलगाड़ी की यात्रा में, विश्राम के क्षणों में, उपन्यास, गल्प, कविता, नाटक, निबन्ध, जीवनी आदि के वाचन से मानसिक आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। आजकल के जटिल जीवन में भी दिन भर की थकान दूर करने के लिए पत्रिकाओं का सेवन किया जाता है। समाचार पत्र का वाचन तो प्रात:कालीन सर्वप्रथम क्रिया बनी है।

§ 75. वाचन की प्रक्रिया—

ऊपर (§ 73 में) वाचन की व्याख्या की गई है। स्कूलों में वाचन सिखाने के लिए अध्यापक को वाचन की प्रक्रिया या यांत्रिका (Mechanism) से परिचित होना आवश्यक है। शिक्षक को मालूम होना चाहिए कि वाचन में कौन-कौन से अंग काम आते हैं, ठीक वाचने के लिए कौन सी परिस्थितियां होनी चाहिएं. वाचन में कहां-कहां पर त्रुटियां आ जाती हैं, और उन त्रुटियों को कैसे दूर किया जा सकता है। इस प्रक्रिया का संक्षिप्त ब्यौरा नीचे दिया जाता है

वाचन की प्रक्रिया में मोटे रूप से दो बातें आ जाती हैं—

(क) **वाचन मुद्रा** और (ख) **वाचन शैली**।

(क) **वाचन मुद्रा** (Posture and Gesture) वाचन मुद्रा में पढ़ते-पढ़ते नेत्रादि अंगों का सचालन, उपयुक्त मुद्रा में बैठना या खड़े रहना, पुस्तक हाथ में निश्चित दूरी पर पकड़ना आदि सम्मिलित हैं।

वाचन मुद्रा के सम्बन्ध में आधुनिक वैज्ञानिक खोज से निम्न बातें प्राप्त हुई हैं—

(i) किसी पंक्ति को पढ़ते समय हमारी आंखें धीरे-धीरे एक अक्षर से दूसरे की ओर नहीं बढ़तीं, वरन् झटकों के साथ एक शब्द से दूसरे शब्द तक उछलती हुई आगे बढ़ती हैं। दृष्टि का केन्द्र प्रथम एक शब्द बन जाता है जिसको (दृष्टिकेन्द्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(Fixation Poitn) कहते हैं। इस शब्द के आगे पीछे, ऊपर नीचे एक निश्चित परिधि के भीतर हमें सब कुछ दिखाई देता है। फिर यह केन्द्र को दो-चार अक्षर छोड़ कर एक दूसरा शब्द बन जाता है। दो केन्द्रों के बीच एक दृष्टि विराम (Eye-span) होता है, जिस की लम्बाई एक व्यक्ति से दूसरे तक बदलती है।

(i) दृष्टि-विराम जितना लम्बा होगा, उतनी तेजी से पढ़ा जा सकता है। अच्छे पाठक एक पंक्ति को तीन-चार दृष्टि विरामों में ही समाप्त कर लेते हैं। वे दो-तीन शब्दों को एक साथ पहचानते हैं और आगे पढ़ते हैं। प्रत्येक अक्षर पर अपनी दृष्टि नहीं गाड़ते हैं।

(iii) इस सिद्धान्त से वाचन के ढंग का हमारा पुराना सिद्धान्त कि प्रत्येक अक्षर पर दृष्टि स्थिर करनी चाहिए (Focussing of eyes on every letter) निराकृत हो जाता है। प्रत्येक अक्षर पर दृष्टि-स्थिर करने की कोई आवश्यकता नहीं। विराम जितना लम्बा होगा उतना शीघ्र पढ़ा जाएगा। अतः बालकों द्वारा प्रत्येक अक्षर पर दृष्टि स्थिर करना अवैज्ञानिक है। वैज्ञानिक रीति यह है कि अक्षरों के समूह की पहचान कराई जाए, जिससे पढ़ाते समय बालक अक्षरों के समूह को देखते ही पहचान जाएंगे और पढ़ सकेंगे। अक्षर ज्ञान का आरम्भ भी शब्द से किया जाए, और बाद में शब्द से विश्लेषण विधि (Analysis) द्वारा अक्षरों का ज्ञान कराया जाए।

नीचे दिए हुए मानचित्र से स्पष्ट हो जाएगा कि प्रत्येक अक्षर पर बल देने तथा उस पर दृष्टि स्थिर करने से एक पंक्ति में कितने दृष्टिविराम बनते हैं, और शब्दों पर बल देने से कितने—

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
पे	ड़	प	र	ए	क	प	क्षी	बै	ठा
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
था	व	ह	खु	शी	में	गा	र	हा	था

प्रत्येक अक्षर पर बल देने से ऊपर की पंक्ति को पढ़ते समय नेत्र 19 दृष्टिविराम बनाते हैं। इसी पंक्ति को दूसरी विधि में पढ़ते समय पांच विरामों में समाप्त कर सकते हैं। जैसे—

1	2	3	4	5
पेड़ पर	एक पक्षी,	बैठा था	वह खुशी में	गा रहा था
1	2	3	4	5

मानचित्र 8 : दृष्टिविरामों की संख्या

कोई कुशल पाठक इसको चार ही विरामों में समाप्त कर सकता है जैसे ऊपर की पंक्ति में अधो-रेखाओं से स्पष्ट हो जाता है। अगले पृष्ठ पर दिए हुए चित्र से वह और स्पष्ट हो जाएगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

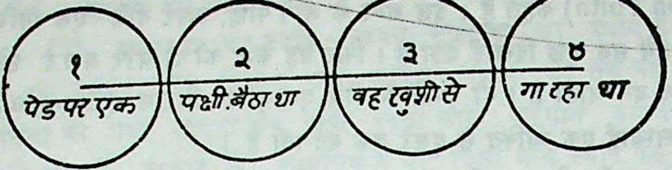

चित्र 10 : दृष्टिकेन्द्र और दृष्टिविराम

ऊपर के चित्र में 1, 2, 3 और दृष्टिकेन्द्र (Fixation Point) हैं । प्रत्येक के चारों ओर एक वृत्त (Circle) है । वृत्त की रेखा दृष्टि परिधि है जहाँ तक एक समय हमारी दृष्टि जाती है । वृत्त जितना बड़ा होगा उतना हम एक समय अधिक पढ़ सकेंगे । 1 से 2 तक का फासला दो केन्द्रों के बीच का दृष्टिविराम (Eye-span) है । स्पष्ट है कि वृत्त जितना बड़ा होगा, दृष्टि-विराम भी उसके व्यास के बराबर होगा । दृष्टिक्षेत्र बढ़ने पर दृष्टि-विराम बढ़ जाएगा और उसी के अनुपात में दृष्टि-विरामों की संख्या कम हो जाएगी और वाचन की गति बढ़ जाएगी ।

(i) नेत्रों की उचित मुद्रा यही है कि एक साथ अक्षर समूहों को देख कर पहचाना जाए, प्रत्येक अक्षर को पृथक-पृथक् नहीं । हम भी यदि किसी व्यक्ति को देखते हैं, तो उसके अंग-प्रत्यंग को अलग-अलग नहीं देखते । सामूहिक रूप से उसे देख पहचान लेते हैं । अतः अक्षर ज्ञान शब्दों से करना चाहिए, उस से नेत्रों को लम्बा दृष्टि-विराम रखने का अभ्यास पड़ जाता है और आगे पढ़ने की गति तीव्र हो जाती है । अतः पढ़ने की गति बढ़ाने के लिए नेत्रों की मुद्रा के सम्बन्ध में दो महत्त्वपूर्ण बातें हैं—

(क) दृष्टि-विराम को जितना हो सके लम्बा बनाना चाहिए ।

(ख) प्रत्येक झटके पर कम से कम समय लगाना चाहिए ।

नेत्रों की मुद्रा के अतिरिक्त मुख की उचित मुद्रा भी वाचन के लिए आवश्यक है । मुख की मुद्राओं का स्पष्टीकरण उच्चारण के प्रकरण में किया गया है । यहां पर इतना कहना पर्याप्त होगा कि ध्वनियों के शुद्ध अनुकरण के लिए जिह्वा और उसके प्रत्येक उच्चारण स्थान का शुद्ध प्रयोग करना चाहिए ।

(ख) **वाचन शैली** - इसके अन्तर्गत निम्न बातें आ जाती हैं—

(1) **शब्दोच्चारण** (Pronunciation)

(2) **अक्षर-ध्वनित** (Articulation) अथवा शुद्ध-स्पष्ट रूप से उच्चारण स्थानों तथा जिह्वा की सहायता में ध्वनियों को व्यक्त करना ।

(3) **बल** (Emphasis) तथा विराम (Pause) अथवा प्रत्येक शब्दों को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल तथा विराम के साथ पढ़ना ।

अध्यापक को चाहिए कि वह सस्वर वाचन में उचित शब्दों पर बल देना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिखाए। उच्चारण करते समय शब्द पर जोर डाले और यदि आवश्यक हो तो श्याम-पट पर निम्न रीति से उस शब्द या अक्षर पर रेखाएं खींचे—

मानव जीवन का फल | क्या है ? | चरित्र । जिस प्रकार | फल ही। /वृक्ष का परिचय दे सकता है/उसी प्रकार | चरित्र ही | /मानव का | प्रदर्शक होता है।

ऊपर के उदाहरणों में उदात्त चिन्ह वाले अक्षर या शब्दों पर बल डालना चाहिए। टेढ़ी रेखा का विराम का सूचक है।

(4) **सस्वरता** (Intonation) अर्थात् भावों के अनुसार ध्वनियों का उतार-चढ़ाव।

(5) लय तथा प्रवाह और गति।

(6) प्रभावोत्पादकता, जिससे श्रोता प्रभावित हो जाएं।

(7) कविता वाचन में शब्द की गति, यति, लय तथा भाव के अनुसार स्वर का आरोह-अवरोह।

§ 76. वाचन की अवस्थाएं—

वाचन की तीन अवस्थाएं हैं—

(क) **सस्वर वाचन** (Loud reading)

(ख) **मौन वाचन** (Silent reading)

(ग) **अध्ययन** (Study)

तीनों की व्याख्या नीचे की जाती है—

(1) **सस्वर वाचन**—यह वाचन की सर्वप्रथम अवस्था है जब शिष्य पुस्तक पढ़ता हुआ साथ-साथ बोलता भी है। वह लिपि शुद्ध अक्षरों को देखता है, पहचानता है, शब्दों को समझता है और साथ ही उच्चारण भी करता है। स्वर सहित होने के कारण इसको सस्वर वाचन कहते हैं।

(2) **मौन वाचन**—सस्वर वाचन में अभ्यास प्राप्त करने के उपरान्त मौन वाचन की बारी आ जाती है। माध्यमिक और उच्च कक्षाओं के मौन वाचन पर अधिक बल देना चाहिए, क्योंकि आगे जीवन में वाचन का सारा कार्य (पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि से ज्ञानोपार्जन के लिए) मौन रूप में ही करना पड़ता है। जिन को मौन वाचन का अभ्यास न हो, वे मुख से उच्चारण किए बिना अर्थ ग्रहण नहीं कर सकते। घर में, दफ्तर, अथवा पुस्तकालय में सस्वर वाचन करने से दूसरों के काम में बाधा पहुंचती है, अतः अधिकतम मौन-पाठ ही करना पड़ता है।

मौन वाचन के अन्तर्गत निम्न बातें आवश्यक हैं

(i) पुस्तक या पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने में मन लगाना तथा एकाग्रचित होकर पढ़ने का अभ्यास करना।

(ii) बिना उच्चारण किए अर्थ ग्रहण करने का अभ्यास करना।

(iii) पढ़ते-पढ़ते विचारण-शक्ति का प्रयोग करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) पढ़ने और समझने की गति में तीव्रता लाना और पाठ्‌य-विषय को विराम, गति, बल, तथा प्रवाह के साथ पढ़ना।

(v) मौन वाचन की गति सस्वर वाचन से दुगुनी होनी चाहिए। वैज्ञानिकों ने प्रयोग द्वारा मालूम किया है कि एक व्यक्ति निश्चित अवधि में मौन वाचन में सस्वर वाचन से दुगुने अक्षर पढ़ सकता है।[1] पहली और दूसरी श्रेणी में मौन वाचन और सस्वर वाचन की गति लगभग बराबर होती है, परन्तु तीसरी, चौथी आदि श्रेणियों में मौन वाचन की गति उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। जिस गति के साथ हमारे मुख के अवयवों का संचालन हो सके, उसी गति के साथ हम सस्वर वाचन कर सकते हैं। परन्तु मौन वाचन में हमारी सूक्ष्म बुद्धि जितनी तेज़ी के साथ अर्थ ग्रहण कर सकती है उतनी जल्दी हम मौन वाचन कर सकते हैं।

(3) अध्ययन—किसी विषय के गम्भीर पठन को अध्ययन कहते हैं। अध्ययन मौन पठन का उच्चतर है। वाचन और तत्पश्चात् मौन वाचन इसी के प्रारम्भिक सोपान हैं। अध्ययन ही ज्ञानोपार्जन का साधन है। अध्ययन करने वाले के लिए वाचन और मौन वाचन एक अभ्यास कला है, जिसमें उसने प्रवीणता प्राप्त कर रखी है। अधिक अभ्यास के कारण वह यान्त्रिक विधि से (Mechanically) पढ़ता' है और उसका ध्यान केवल अर्थ ग्रहण करने की ओर रहता है वाचन की यही पराकाष्ठा है, यही परम गति है अध्ययन में निम्न बातें आवश्यक हैं—

(i) यांत्रिक विधि से मौन वाचन करना।

(ii) दृष्टि विराम को अधिक लम्बा बना कर प्रवाह और गति के साथ पढ़ना।

(iii) पढ़ते-पढ़ते लिपिबद्ध विचारों को तुरन्त ग्रहण करना।

(iv) प्रधान विचारधारा का ज्ञान रख कर, विभिन्न भागों का संकलन करना, उन भावों अथवा विचारों का विश्लेषण तथा मीमांसा करते हुए निष्कर्ष पर पहुंचना। विश्लेशण, आलोचना और निष्कर्ष अध्ययन के सोपान हैं।

§ 77. वाचन शिक्षा के उद्‌देश्य

भाषा की शिक्षा के लिए वाचन की शिक्षा नितांत आवश्यक है। वाचन की शिक्षा से हम विद्यार्थियों को इस योग्य बनाते हैं कि वे—

(i) शब्दों का शुद्ध उच्चारण कर सकें, तथा स्तर, गति, लय और प्रवाह के साथ पढ़ सकें

(ii) पढ़ते-पढ़ते शीघ्रातिशीघ्र अर्थ ग्रहण कर सकें।

(iii) शीघ्र पढ़ने में अभ्यस्त हो जाएं।

(iv) पढ़ने में रुचि प्राप्त करते हुए उत्तरोतर ज्ञान प्राप्त कर सकें।

1. देखिए Gurry : Teaching of Reading and Writing (UNESCO Publication) Ch. III.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) ज्ञानोपार्जन के अतिरिक्त रोचक पुस्तकों द्वारा मनोरञ्जन प्राप्त कर सकें।

(vi) समाचार पत्र, पत्रिकाएं, पुस्तकालय आदि से पूरा-पूरा लाभ प्राप्त कर सकें।

(vii) पढ़ने में इतने अभ्यस्त हो जाएं कि ज्ञानोपार्जन के अतिरिक्त स्वयं रचनात्मक कार्य कर सकें। औरों के उपन्यास पढ़ने के बाद उसके मन में भी स्वयं उपन्यास लिखने की इच्छा जागृत हो सकती हैं।

§ 78. वाचन पर प्रभाव डालने वाले तत्त्व

नियमित रूप से वाचन की शिक्षा मिलने पर भी निम्न बातों का प्रभाव वाचन की योग्यता प्राप्त करने पर पड़ता है—

(1) **शारीरिक अवस्था**—वाचन से सम्बन्धित शरीर के किसी भी अवयव में कोई दोष होने के कारण वाचन में बाधा उपस्थित होती है, जैसे दुर्लभ दृष्टि, कम बीनाई, ऊंचा सुनना, जीभ का थथलाना, पढ़ते-पढ़ते थक जाना, स्नायुओं की दुर्बलता।

कभी-कभी छात्रों को शब्दों को पहचानने में कठिनाई रहती है। कभी वह कई अक्षर या शब्द छोड़ कर पढ़ता है जिसको शब्दांधता (Word blindness) कहते हैं, कभी वह रंग नहीं पहचान सकता जिसको वर्णांधता (Colour-blindness) कहते हैं।

(2) **मानसिक विकास**—बुद्धि उपलब्ध, मानसिक अवस्था और विचार शक्ति। (देखिये अध्याय 5)।

(3) **संवेग या मनोभाव**—क्रोध, निराशा, लज्जा अदि मनोभाव वाचन की गति पर प्रभाव डालता है।

(4) **वातावरण**—पढ़ने-लिखने के वातावरण से वाचन में सहायता मिलती है।

(5) **अनुभव**—जितना अधिक अनुभव हो, उतनी अधिक वाचन की योग्यता पैदा हो जाती है।

(6) **शब्दावली** मौखिक रूप में जितनी अधिक शब्दावली का प्रयोग होता हो, वाचन उतना ही सरल होगा।

§79. वाचन शिक्षण के साधन

(क) प्रारम्भिक अवस्था में जब अक्षर ज्ञान कराना हो तो वाचन शिक्षण के निम्न साधन हैं—

(i) गत्ते के कार्ड जो अक्षरों के रूप में बनाए गए हों।

(ii) चित्र।

(iii) अक्षरों के सचित्र सुन्दर चार्ट।

(iv) अक्षरों के सचित्र ताश।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) स्वरों की मात्रा वाले 12 छपे हुए या लिखे कार्ड ।

(vi) काठ के टुकड़े जोड़ कर अक्षर बना सकने वाले टुकड़ों का किंडर गार्डन बक्स ।

(vii) उभरे हुए अक्षरों का कार्ड ।

(viii) खेल का मॉडल, जिनके द्वारा अक्षरों के मिलाने से शब्द बनते हों ।

(ix) कृष्णपट तथा चाक ।

(क) द्वितीय अवस्था में जब पुस्तकें पढ़ना सिखाना हो—

(i) चार्ट ।

(ii) पाठ्य-पुस्तक ।

(ख) तृतीय अवस्था में जब अभ्यास द्वारा प्राप्त प्रवीणता प्राप्त करनी हो—

(i) पाठ्य-पुस्तक ।

(ii) वार्ता-पुस्तक (Conversational Reader) ।

(iii) नाटक ।

(iv) पत्र पत्रिकाएं ।

§ 80. वाचन सिखाने के क्रम —

यहाँ पर यह कहना आवश्यक होगा कि बालक किसी निश्चित क्रम से पढ़ना सीखता है । अध्यापक इस तथ्य पर ध्यान नहीं देते और अपनी इच्छानुसार पाठ्यक्रम निर्धारित कर देते हैं । वाचन शिक्षण की चार अवस्थाएं हैं—

(1) प्रथमावस्था तैयारी (Pre reading) जिसमें पुस्तक पढ़ना सिखाया नहीं जाता, वरन् विद्यार्थी को केवल पढ़ने के लिए तैयार किया जाता है । इस अवस्था में छात्र के मन में पढ़ने की उत्सुकता तथा प्रवृत्ति (Reading readneess) बढ़ जाती है और वह पढ़ने के लिए तैयार हो जाता है ।

(2) द्वितीय अवस्था, जिसमें अक्षर ज्ञान तथा शब्द बोध कराया जाता है ।

(3) तृतीय अवस्था, जिसमें स्वतन्त्र पढ़ने का अभ्यास कराया जाता है तथा सस्वर एवं मौन पाठ कराया जाता है ।

(4) चतुर्थ अवस्था, मनन और गहरा अध्ययन सिखाया जाता है । अध्यापक को प्रत्येक अवस्था में पृथक् विधि से शिक्षा देनी है । अतः वाचन शिक्षण विधि को चार अवस्थाओं में बांट कर पृथक्-पृथक् रूप में समझाया जाएगा ।

§ 81. प्रथम अवस्था (Pre-reading Period) तैयारी—

विद्यार्थियों को वाचन सीखने के लिए तैयार करने के लिए निम्न कदम उठाने चाहिएं ।

(क) **बोलना, सम्भाषण, मौखिक कार्य**—पहले कहा गया है कि अक्षर ज्ञान से पहले सम्भाषण द्वारा भाषा का प्रारम्भिक ज्ञान करना चाहिए । पढ़ने से पहले मौखिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कार्य की बारी आती है। जिन विद्यार्थियों की मातृ-भाषा हिन्दी है, उनके लिए यह काम अधिक सुगम है, क्योंकि वे घर से ही बोलना सीख कर आते हैं। जिनकी मातृ-भाषा हिन्दी नहीं है उनके लिए अध्यापक को प्रथम बोलचाल सिखाने का प्रयत्न करना चाहिए। अध्यापक निकटतम वस्तुओं को उठा कर या उसकी ओर संकेत करके प्रश्नों द्वारा विद्यार्थियों से उनका वर्णन करा सकता है। वह स्वयं बोले, विद्यार्थी उसका अनुकरण करें और बोलने में अभ्यास प्राप्त करें। उच्चारण शुद्ध करने का काम भी यहीं से आरम्भ होता है। विदेशों में इस अवस्था पर अधिक बल दिया जाता है। नर्सरी स्कूल, किंडर गार्डन स्कूल, मांटेसौरी स्कूल आदि में अक्षर ज्ञान की तैयारी कराई जाती है।

(ख) चित्र आदि का प्रयोग—इससे पहले विद्यार्थी छपी हुई किताबों को हाथ में ले, उनको चित्रों द्वारा छपी हुई पुस्तकों को पढ़ाने के लिए तैयार किया जा सकता है। बच्चे के सामने भिन्न-भिन्न प्रकार के चित्र रखने चाहिएं। इससे उसकी एकाग्रता बढ़ जाएगी। बेशक वह चित्र बनाने के लिए रंगीन पेन्सलों का, ब्रुश का, रंगीन चाक का, काली पैन्सिल का या सफ़ेद चाक का प्रयोग करें। उनसे एल्बम या स्क्रेप बुक बनवाए जाएं।

(ग) उत्सुकता, रुचि तथा एकाग्रता उत्पन्न करना—पढ़ना सिखाने से पूर्व यह आवश्यक है कि बच्चे के मन में पुस्तक के प्रति उत्सुकता और रुचि उत्पन्न की जाए। चित्रादि का प्रयोग भी प्रायः इसीलिए है। पहले ही दिन बच्चे के हाथ में पुस्तक रखना और अक्षर पढ़ाना मनोविज्ञान के सिद्धान्त के प्रतिकूल है।

§ 82 द्वितीय अवस्था : अक्षर ज्ञान—

तैयारी के पश्चात् इस अवस्था में अक्षर ज्ञान और शब्द बोध कराया जाता है, ध्वनि और लिपि का सम्बन्ध जोड़ा जाता है और इस प्रकार लिपि ज्ञान कराया जाता है। अक्षर बोध कराने के लिए विदेशों में सात-आठ विधियाँ प्रचलित हैं परन्तु नीचे उन विधियों की व्याख्या की जाएगी, जो हिन्दी में अपनाई जाती हैं।

अक्षर बोध कराने की विधियां

साधारण अक्षर-बोध कराने की दो विधियां हैं, जिसके अन्तर्गत और भी कई विधियां आ जाती हैं।

(क) संश्लेषणात्मक (Synthetic Method) जिसके अन्तर्गत निम्न विधियां आती हैं:—

1. अक्षर-बोध विधि अर्थात् वर्णन शिक्षण विधि (Alphabetic Method)।
2. ध्वनि साम्य विधि (Phonetic Method)।

(ख) विश्लेषणात्मक विधि (Analytical Method) जिसके अन्तर्गत निम्न विधियां आती हैं—

3. देखो और कहो विधि (Look and Say Method)।
4. वाक्य शिक्षण विधि (Sentence Method)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. कहानी विधि (Story Method)

6. कविता विधि (Poem Method)

इसके अतिरिक्त अनुकरण-विधि (Imitation Method, भाषा शिक्षण-यन्त्र विधि (Linguaphone Method), सामूहिक पाठन-विधि (Group Reading Method) आदि विदेशी भाषाओं के लिए प्रयुक्त होती है, परन्तु हिन्दी के लिए वे अनुपयुक्त या अतिव्ययसाध्य हैं।

1. **अक्षर बोध विधि**—संसार में वाचन सिखाने की सर्व प्राचीन विधि यही है। इस विधि की विशेषताएं निम्न हैं :—

(i) इस विधि से सर्वप्रथम अक्षर पढ़ाए जाते हैं। पहले स्वर, व्यंजन, फिर मात्राएं, फिर संयुक्त अक्षर और फिर सार्थक शब्द।

(ii) प्रत्येक अक्षर का अपनी ध्वनि के साथ सम्बन्ध जोड़ा जाता है तथा अनुकरण और आवृत्ति द्वारा याद कराया जाता है। अध्यापक पुस्तक पर से पढ़ाता है अथवा श्यामपट पर यह प्रत्येक अक्षर को लिख कर विद्यार्थियों से बुलवाता है।

(iii) अक्षरों के भिन्न-भिन्न प्रकार के योग समझाये जाते हैं, जिनमें कितने ही निरर्थक होते हैं बारहखड़ी भी इसी प्रकार सिखाई जाती है।

दोष—(i) इस विधि में सबसे बड़ा दोष यह है कि बच्चे के मन में किसी अक्षर को सीखने के लिए न उत्सुकता है और न रुचि। अक्षर निरर्थक हैं, वे केवल निरर्थक ध्वनियों के प्रतीक हैं उन अक्षरों का बच्चे के जीवन के साथ कोई सम्बन्ध नहीं।

(ii) यह विधि अवैज्ञानिक है। भाषा की इकाई, वाक्य तथा शब्द है, अक्षर या वर्ण नहीं। परन्तु इस विधि में हम भाषा की इकाई वर्ण बनाते हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बच्चा पहले समूह को पहचान सकता है और फिर उसके अंग प्रत्यंग को, पहले शब्द को पहचान सकता है और फिर विश्लेषण द्वारा वर्णों को।

गुण—(i) हम भले ही शब्दों का ज्ञान करायें, परन्तु एक न एक समय अक्षरों का ज्ञान कराना ही है। अक्षर ज्ञान से छुटकारा नहीं मिल सकता। अन्य विधियों से शब्दों का ज्ञान कराया जा सकता है, परन्तु आगे प्रत्येक अक्षर का ज्ञान-कराना आवश्यक है। अत: वह विधि पहले न सही तो पीछे अपनानी ही पड़ती है।

(ii) प्रश्न उत्पन्न होता है कि आरम्भ में बच्चा अक्षरों के साथ कोई रुचि नहीं रखता। उसके लिए यदि भिन्न-भिन्न प्रकार से अक्षर सीखने में रुचि पैदा की जाए तो इस विधि का दोष दूर हो सकता है। श्यामपट पर अक्षर लिखने के बदले वर्ण चित्र फ्लैश कार्ड (Flash card) अक्षर रूप में काटे हुए गत्ते के टुकड़े आदि प्रयुक्त किए जा सकते हैं, जिनसे रुचि पैदा की जाए। अक्षरों के भिन्न खेल खेलायें जा सकते हैं।

जो भी हो, यह विधि सर्वथा त्याज्य नहीं है।

2. **ध्वनि साम्य विधि** यह विधि अक्षर विधि की सहायक मात्र है, नवीन नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विशेषताएं—(i) इस विधि से एक साथ उच्चारित होने वाले शब्द एक साथ सिखाये जाते हैं—जैसे नर्म, गर्म, मर्म, भक्ति, शक्ति, मुक्ति आदि।

(ii) इस विधि में यह ध्यान रखा जाता है कि बालक शीघ्र ही शुद्ध लिखने-पढ़ने में सफल हो जाए।

(iii) हिन्दी वर्णमाला के अक्षरों का क्रम उच्चारण स्थान के अनुसार सज्जित है। यह विधि उनका पूरा-पूरा लाभ उठाती है। अंग्रेज़ी वर्णों का उच्चारण दोष दूर हो जाता है। अत: आरम्भ में ही bat, cat, rat, mat आदि सिखाए जाते हैं।

दोष—(i) इस विधि में प्रधान कठिनाई यह है कि बच्चों की व्यावहारिक शब्दावली में उतने शब्द पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलते जिनसे सभी ध्वनि योगों का अभ्यास हो जाए और परिणामत: ऐसे शब्द लेने पड़ते हैं जो व्यवहार में नहीं लाए जाते हैं और ऐसे शब्द गढ़ने पड़ते हैं जो व्यावहारिक नहीं होते, जैसे कष्ट, भ्रष्ट, नष्ट, अष्ट या आलू, चाकू, बाबू, कालू, बाजू आदि।

(ii) इस विधि से हिन्दी की प्रथम पुस्तक की सारी शब्दावली तथा सारे वाक्य बनावटी होते हैं और उनमें कोई एक अर्थ-सम्बन्ध नहीं होता। एक वाक्य दूसरे वाक्य से भिन्न होता है। किसी एक वाक्य में शब्दों का मेल होता है जो अर्थ तो प्रकट करता है, मगर सारा बनावटी और विचित्र जैसे, अब उठ। घर चल। जल भर। बस कर। हठ मत कर। अब झट आ। छत पर चढ़ और यह आम चख।

(iii) इस विधि में शब्दों, वाक्य खण्डों और वाक्यों के अर्थ पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता जितना उनकी ध्वनियों पर।[1]

गुण—(i) इस बात का एक सब से बड़ा गुण यह है कि ध्वनियों का खूब अभ्यास हो जाता है और उनका उच्चारण स्थिर हो जाता है। लिखने में भी सहायता मिलती है, क्योंकि अक्षर विन्यास का भी अभ्यास हो जाता है।

(ii) ये दोनों प्रकार की विधियां संश्लेषणात्मक कहलाई जाती हैं—क्योंकि इनमें इस अक्षर से आरम्भ करते हैं और अक्षरों के जोड़ या संश्लेषण से शब्द बनाते हैं। दोनों विधियां परस्पर सापेक्ष हैं। इन दोनों का सुन्दर परिष्कृत सामंजस्य ही आपेक्षित है।

इन दोनों विधियों को ध्वन्यात्मक विधि भी कहते हैं, क्योंकि इनमें अर्थ की अपेक्षा ध्वनि पर ही अधिक बल डाला जाता है। इन दोनों विधियों को अधिक रुचि-कर और लाभकारी बनाने के लिए, इनमें कई सुधार किए गए हैं। उनका विवरण

---

1. 'It interfere, with the idea af grasping words, phrases and sentences as meaningnful language units.

School Psychology and Teaching of Reading.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीचे दिया जाता है—

(1) प्रत्येक अक्षर को उपस्थित करने के लिए एक चित्र की सहायता ली जाती है, जिसके शब्द का पहला अक्षर वही हो-जैसे अ के लिए अनार का चित्र, क के लिए कबूतर का चित्र। परन्तु इसकी यह त्रुटि है कि बच्चे बाद में 'क' कहने के बदले 'कबूतर क' या 'क कबूतर' कहने लगते हैं। यह आदत वह भूलते नहीं।

(2) वर्णमाला के अक्षर का एक चित्र बनाया जाता है जो किसी वस्तु के चित्र से साम्य रखता हो जैसे न के लिए नलके का चित्र, ऐ के लिए ऐ बनाकर ऐनक का चित्र।

(3) पहले एक छोटा वर्ण समूह सिखाया जाता है। उनकी सहायता से अनेक शब्द और वाक्य बनवाए जाते हैं। फिर अन्य वर्ग समूह सिखाए जाते हैं। अन्त में सारी वर्णमाला उपस्थित की जाती है।

3. **'देखो और कहो' विधि**—इसे विश्लेषण विधि (Analytical Method) कहते हैं। क्योंकि इस विधि से प्रथम शब्द सिखाए जाते हैं, तत्पश्चात् विश्लेषण द्वारा अक्षर का निर्माण क्रम निम्न है—

(i) बच्चों को मोटे अक्षरों के शब्द-चित्र दिखाए जाते हैं। ये शब्द या तो श्यामपट पर लिखे जाते हैं, या कार्डों पर चित्रित होते हैं। बच्चे देखते हैं और कहते जाते हैं।

(ii) अध्यापक शब्द की ध्वनि बताता है और बार-बार बच्चों से बुलवाता है। बच्चे शब्द और शब्द की सम्पूर्ण ध्वनि का परस्पर सम्बन्ध जोड़ते हैं। कई बार देखने-सुनने से शब्द का चित्र मस्तिष्क पर अंकित हो जाता है। गहरे चित्रण के लिए अध्यापक उस वस्तु को भी उपस्थित करता है, जिसका नाम चित्र पर है। वस्तु न मिले तो किसी चार्ट पर ऊपर शब्द और नीचे वस्तु का चित्र दिखाता है। एन. सी. आर. टी. की प्रथक पुस्तक 'रानी मदन अमर' इसी शैली पर आधारित है।

(iii) शब्द में कोई अक्षर बदलने से नया शब्द बनाया जाता है। नए शब्द से तुलना पर विश्लेषण द्वारा बतलाए हुए अक्षरों का ज्ञान कराया जाता है। जैसे —कमल, कलम, कमर, कमला, माला, काला।

(iv) धीरे-धीरे अनेक वर्णों का ज्ञान हो जाता है।

गुण— इस विधि का सब से बड़ा गुण यह है कि अध्यापक मनोवैज्ञानिक विधि से प्रथम शब्द को लेता है, जिसको पढ़ने के लिए सामूहिक दृष्टि चाहिए, सूक्ष्म दृष्टि नहीं, जैसे कि अक्षर में आवश्यकता पड़ती है तथा जिसमें निकटतम वस्तुओं के साथ ध्वनि का सीधा सम्बन्ध होने के कारण बच्चे की रुचि और उत्सुकता भी रहती है। वाचन-मुद्रा विशेषकर दृष्टि प्रयोग की दृष्टि से यह विधि अत्यन्त लाभदायक है। पीछे इसकी व्याख्या हुई है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोष (i) इस विधि में महान् दोष यह है कि शब्द सिखाने के लिए केवल वस्तुओं के चित्र बनाए जा सकते हैं, क्रियार्थक तथा भावार्थक शब्दों के नहीं। ऐसे शब्द बच्चों की ज्ञान परिधि से बाहर रह जाते हैं, क्योंकि उनके चित्र नहीं बन सकते। चित्र बनाने पर भी समझाने में भ्रम पैदा हो सकता है। 'पढ़ना' शब्द के चित्र को देख कर क्या किताब भी कह सकता है। बालक का चित्र बनाया जा सकता है, परन्तु बालकपन का नहीं। इस प्रकार मूर्ख, विद्वान, बुद्धिमान, कंजूस जैसे भावार्थक शब्दों का चित्र नहीं हो सकता। उन वस्तुओं के चित्र भी उपस्थित नहीं किए जा सकते जो बालक की अनुभव परिधि से बाहर हों। जिसने बर्फ न देखी हो वह बर्फ का चित्र देख कर क्या समझेगा ?

(ii) दूसरा दोष यह है कि असंख्य शब्द सिखाने पर भी आखिर अक्षर सिखाने ही पड़ते हैं।

(iii) ऐसा बार-बार देखा गया है कि अध्यापक चित्र दिखाता है, उसका सम्बन्धी शब्द रटवाता है, परन्तु बच्चे भूल जाते हैं। रटवाने से शब्द याद नहीं रहता, अनेक भूलें हो जाती हैं। बच्चा स्वतन्त्र रूप मे पढ़ने में असमर्थ हो जाता है।[1]

(iv) हिन्दी पढ़ने के लिए इस विधि के स्वतन्त्र उपयोगों की कोई आवश्यकता नहीं। हिन्दी ध्वन्यात्मक भाषा है। इसकी वर्णमाला वैज्ञानिक है। ध्वनि और अक्षर सम्बद्ध हैं, जैसा अक्षर वैसा उच्चारण। अंग्रेजी में ऐसा नहीं। 'K' का उच्चारण 'क' न होकर 'के' (Kay) है, 'G' का उच्चारण 'ग' न होकर 'जी' है 'ch' का उच्चारण 'च' न होकर 'सी इच' है। इस कारण से अंग्रेज़ी में 'कमल' पढ़ने के लिए 'के ए एम ए एल' बुलवाना पड़ता है; परन्तु हिन्दी में क म ल'कमल'बुलवाना स्वाभाविक है। अंग्रेज़ी वर्णमाला के उपर्युक्त दोष के कारण ही 'देखो और कहो' विधि का आविष्कार हुआ। हिन्दी भाषा के लिए इस विधि को अपनाना अपनी वर्णमाला के वैज्ञानिक का तिरस्कार, उपेक्षा और हत्या करना है। इतना होने पर भी कई राज्य सरकारों ने इसी विधि से प्राइमर बनाने का आदेश दिया है। ऐसा क्यों ? अन्धानुकरण।

(4) **वाक्य शिक्षण विधि** यह विधि 'देखो और कहो' विधि का नवीन परिवर्धित संस्करण है। यहां शब्दों से आरम्भ करने के बदले वाक्यों से आरम्भ किया जाता है।

(i) इस विधि में वाक्य भाषा की इकाई के रूप में, किसी चार्ट के रूप में

1. No accuracy and independence in word recognition is obtained Times Edu. Supplement 7 th May, 1954.

2. English lacks letter sound Correspondence, and hence the necessity of Analytic Method—W. S. Gray, Teaching of Reading and writing (UNESCO.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वच्चे के सामने उपस्थित किया जाता है।

(ii) वच्चे बार-बार इन वाक्यों को पढ़ते हैं और अभ्यास द्वारा याद करते हैं।

(iii) पहले एक जैसे वाक्य उपस्थित करते हैं, जिसमें केवल एक शब्द भिन्न है। फिर विश्लेषण द्वारा उस शब्द की ओर बच्चे का ध्यान आकर्षित किया जाता है :

काका आम खाता है,
बावा आम खाता है,

'आम खाता है' दोनों वाक्यों में साधारण है, केवल 'काका' और 'बावा' पृथक् हैं।

(iv) बहुत से वाक्यों द्वारा भिन्न-भिन्न शब्द सिखाए जाते हैं। कोशिश यह की जाती है कि सभी विच्छिन्न होने के बदले कहानी बनाते हों।

(v) इसके पश्चात् वही विधि अपनाई जाती है, जो 'देखो और कहो विधि' में अपनाई जाती है।

दोष—इस विधि में यह दोष है कि इससे बच्चों का शब्द भण्डार सीमित रह जाता है, केवल वे ही शब्द सिखाए जाते हैं जो उस कहानी में स्वाभाविक रूप में आ सकते हों, और एक ही प्रकार के मिलते-जुलते शब्द लेने पड़ते हैं।

5. **कहानी विधि**—कहानी विधि, वाक्य विधि का परिवर्धित संस्करण है। इस में एक वाक्य के बदले अनेक वाक्य लिए जाते हैं जो एक कहानी के रूप में सम्बद्ध होते हैं। अध्यापक कहानी का वर्णन करता है, और प्रत्येक घटना के साथ एक वाक्य बोलता और दिखाता है। एक वाक्य एक घटना का प्रतीक होता है। इन वाक्यों की आवृत्ति की जाती है ताकि याद हो जाएं। वाक्यों की पहचान के बाद वाक्यों का विश्लेषण उसी प्रकार से किया जाता है, जैसे 'वाक्य विधि' में कहा गया है। इस विधि में वे सारे दोष हैं जो 'वाक्य विधि' और 'देखो और कहो विधि' में हैं।

6. **कविता विधि**—कविता विधि कहानी का परिवर्तित रूप है। इस में पद्यात्मक कहानी ली जाती है। पद्य गवाया भी जा सकता है, और समवेत गान में बच्चे अधिक रुचि दर्शाते हैं।

इन सभी विधियों का स्पष्टीकरण अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका के द्वारा हो सकता है।

इन विधियों की आलोचना

प्रारम्भिक-वाचन सिखाने की इन सभी विधियों में से कौन सी अपनाई जाए? हमें सभी से लाभ उठाना चाहिए। यदि हम किसी एक विधि का अनुकरण करें तो हमारी शिक्षा में अनेक त्रुटियां रहेंगी। कोई भी विधि सम्पूर्ण और त्रुटिहीन नहीं। अतः हमें सभी विधियों में से अपने-अपने गुण लेने चाहिएं और गुणों के समन्वय से इन विधियों का सुन्दर सामंजस्य उपस्थित करना चाहिए। कई शिक्षक केवल विश्लेषणात्मक विधि को ही अपनाते हैं। परन्तु इस में संश्लेषणात्मक विधि से अधिक दोष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। विश्लेषणात्मक विधि के सम्बन्ध में एक लेखक ने स्वयं प्रयोग किए हैं, और यह निर्णय प्राप्त किया है कि यह विधि असफलता की द्योतक है। आत्मानुभव के आधार पर लेखक चुनौती देता है कि कोई हिन्दी शिक्षक कहानी विधि से वर्णमाला का ज्ञान कराये। जब हम छात्रों के सामने एक सम्पूर्ण कहानी का चार्ट रखते हैं, और उन्हें कहते हैं कि पढ़ो और याद करो। एक कुत्ता है। यह कुत्ता लोभी है। इसके मुंह में रोटी है। यह पुल पर जा रहा है आदि।' बच्चे चार्ट को देखते जाएंगे और अध्यापक का अनुकरण करते जायेंगे। उनको हिन्दी वर्णमाला के एक भी अक्षर की पहचान नहीं। यह सारा चार्ट उनके लिए 'काला अक्षर भैंस बराबर' है। वे रटने के अलावा और क्या करेंगे? किसी भी पंक्ति को वे कैसे याद रख सकते हैं? हम वयस्क भी एक ऐसा ही प्रयोग कर सकते हैं। मानों हमें तामिल लिपि सीखनी है और हमारे सामने तामिल लिपि में लिखी हुई हिन्दी भाषा में एक कहानी का चार्ट है। कोई यह सभी पंक्तियां दुहराये, हम रटते जाएं, हमें शब्दों और अक्षरों को सीखने में बड़ी कठिनाई होगी। इससे यही आसान है कि तामिल लिपि का प्रत्येक अक्षर हमें समझाया जाये, और फिर उन अक्षरों का जोड़ सिखाया जाए। रूसी लिपि सिखाने का भी यही तरीका प्रचलित है। 'रूसी स्वयं शिक्षण' में संश्लेषणात्मक विधि अपनाई गई है, कहानी विधि नहीं।

याद रहे कि संश्लेषण विधि कला के प्रत्येक विषय में अपनाई जाती है। कोई भी संगीत शिक्षक पूरे राग से आरम्भ नहीं करता, पहले सरगम सिखाता है, और फिर स्वरों का संयोग और अन्ततोगत्वा पूरा राग। एक चित्रकार दूसरे को सिखाने के लिए आरम्भ में ही जटिल चित्र नहीं रखता। वह आरम्भ में अकेली रेखाओं और रंगों का प्रयोग सिखाता है। लिपि सिखाने के लिए भी यही स्पष्ट है कि एक-एक अक्षर सिखाया जाये, और अक्षरों के मेल से शब्द, शब्दों के मेल से वाक्य और वाक्य के मेल से कहानी। जब छात्र स्वयं कहानी न पढ़ सके तो उसके सामने लिपिबद्ध कहानी रखने से क्या लाभ? क्या वह एक पंक्ति को कभी पहचान सकता है जिसका एक अक्षर भी जो मालूम न हो? ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती। शिक्षक कहानी विधि से सिखाने लगेगा और एक मास तक एक कहानी के दस वाक्य दुहराता जाएगा। फिर भी बहुत थोड़े छात्र ही इन वाक्यों को (अक्षर ज्ञान के बिना) पहचानने में समर्थ होंगे। यदि वह पहचानेंगे भी, किसी चिन्ह की सहायता से रटा वाक्य सुनायेंगे (जैसे वाक्य के सामने घर का चित्र)। छात्रों के सामने यदि छोटे-छोटे चित्र रखे जायें, जो एक-एक शब्द का प्रतिनिधि हो, जैसे आम, आलू, अनार तो इन शब्दों को चित्रों की सहायता से याद कराया जा सकता है। एक वर्ग के चित्रों और शब्दों में निश्चित अक्षर, जिनका प्रयोग उस वर्ग के सभी अक्षरों में है; निकाले जा सकते हैं। इसमें कोई कठिनाई नहीं।

अतः स्पष्ट है कि हिन्दी सिखाने के लिए ध्वनिसाम्य विधि उपयुक्त,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आवश्यक और वैज्ञानिक है। इसकी केवल एक बड़ी त्रुटि को दूर कराना अपेक्षित है। बच्चे प्रारम्भ में ही निरर्थक वर्ण ीखने के लिए तैयार नहीं होते। अतः आरम्भ के पाठ सार्थक शब्दों और चित्रों के सम्बन्ध में होने चाहिएं। 'क– कबूतर' वाला पाठ इस आवश्यकता को पूरा नहीं करता। अतः ऐसे समूचे शब्द चुनने चाहिएं जो छोटे हों और चित्र द्वारा समझाए जा सकते हों। दैनिक क्रियाओं के साथ इस का सम्बन्ध हो तो अधिक अच्छा। शब्दों का विश्लेषण करवाना चाहिए। ऐसे दस-पन्द्रह शब्दों से कई आवश्यक वर्णों का ज्ञान हो जाएगा। इन वर्णों की सहायता से अनेक सार्थक शब्द और वाक्य बनाये जा सकते हैं। यहां तक का सारा काम विश्लेषणात्मक विधि के अनुसार है परन्तु इस से आगे जाने के लिए ध्वनिसाम्य विधि अपनानी चाहिए। अब तक कई आवश्यक वर्णों का ज्ञान हो चुका है। अब सारी वर्णमाला सिखाएं। इस प्रकार आरम्भ में थोड़ा-सा विश्लेषण और तत्पश्चात संश्लेषण की आवश्यकता है। इन दोनों के संयोग को संयुक्त विधि कह सकते हैं।

2. संयुक्त विधि (Eclectic Method)

(i) 'देखो और कहो' विधि से आरम्भ किया जाए, और इसके लिए फलैश कार्ड, चित्र, लकड़ी के बने हुए साईनबोर्ड आदि से काम लिया जाए। विश्लेषण द्वारा अक्षर सिखाए जाएं।

(ii) शब्दों के वर्णों को पृथक् किया जाए और इस प्रकार वर्णों की ओर ध्यान आकर्षित किया जाए। वर्णों को फिर मिला कर शब्द बनाए जाएं। आरम्भ में सारी वर्णमाला को सिखाने की आवश्यकता नहीं। पहले चुने हुए वर्ण तथा मात्राएं ली जाएं। उन वर्णों द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के शब्द बनवाए जाएं। इस प्रकार विश्लेषण से संश्लेषण की ओर जाना चाहिए।

(iii) अब ध्वनि साम्य-विधि का अनुसरण करना चाहिए। पहले सारी वर्णमाला सिखानी चाहिए। इसके लिए अक्षरों के समूह क्रम से उपस्थित करने चाहिएं। अक्षर समूहों से शब्द और वाक्य बनाने चाहिएं। प्रत्येक मात्रा के प्रयोग के लिए एक-एक पाठ पढ़ाना चाहिए। मात्राओं के जोड़ का ज्ञान शब्दों के द्वारा होगा।

(iv) फिर वर्णमाला के सभी अक्षर तथा मात्राएं यथाक्रम उपस्थित की जाएं। उनको पहचानने के लिये विभिन्न खेलों का आयोजन किया जाए।

(v) मात्राओं के प्रयोग के बाद आवश्यक संयुक्त अक्षर लेने चाहिएं। संयुक्त अक्षर से बने शब्द वाक्यों में प्रयुक्त होने चाहिएं। इस विधि से नये-नये वाक्य सिखाये जाएं और कोशिश की जाए कि वाक्य किसी कहानी का रूप धारण करें।

अक्षर ज्ञान कराने की सभी विधियों को अगले पृष्ठ पर तालिका 12 द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अक्षर-ज्ञान कराने की विधियां

- संश्लेषणात्मक (Synthetic) या ध्वनिप्रधान
  - अक्षर बोध विधि (Alphabetic Method)
  - साम्य विधि (Phonetic Method)
- विश्लेषणात्मक (Analytic) या अर्थ प्रधान
  - देखो और कहो या शब्द विधि (Look and Say or word Method)
  - वाक्य विधि (Sentence Method)
  - कहानी विधि (Story (Method)
  - कविता विधि (Lyrical Method)
- संयुक्त विधि (Analytico-Synthetic) or (Electic Method)

तालिका 17 अक्षर ज्ञान की विधियां

§ 83. तृतीय अवस्था स्वतन्त्र पढ़ने का अभ्यास करना

इस अवस्था में अध्यापक का उद्देश्य यह होता है कि बच्चा स्वतन्त्र रीति से पढ़ने लगे और पढ़ने में उसे रुचि पैदा हो, तथा अभ्यास हो जाए। दूसरी, तीसरी, चौथी और पांचवीं कक्षा में ही काम किया जाता है। इस अवस्था में स्वर पाठ और मौन पाठ, दोनों का अभ्यास कराया जाता है। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह बच्चों को इस योग्य बनाये कि वे उचित मुद्रा के साथ वाचन कर सकें।

(i) नेत्र संचालन उच्चारण स्थान का प्रयोग तथा बैठने या खड़े रहने की मुद्रा उचित हो। पुस्तक 130 दर्जे का कोण बनाती हुई नेत्रों से एक फुट की दूरी पर होनी चाहिए।

(ii) पढ़ने की गति मन्द न रखते हों।

(iii) प्रत्येक शब्द का उच्चारण स्पष्ट करते हों।

(iv) शब्द समूहों का उचित चुनाव करके उचित गति या ठहराव करके पढ़ते हों।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) न अधिक ऊंचे स्वर से और न अधिक मन्द स्वर से पढ़ते हों।

(vi) धारा प्रवाह के रूप में पढ़ सकते हों।

(vi) पढ़ते समय न बार-बार रुकते हों, न झिझकते हों, न थथलाते या हड़-बड़ाते हों।

स्वतन्त्र वाचन के अभ्यास का क्रम निम्न होता है—

(1) स्वछन्दता के साथ छोटे शब्दों का अर्थ-सहित वाचन जैसे सड़कों के नाम, भवनों के नाम (नगर पालिका भवन, संसद् भवन, अदालत, चिकित्सालय आदि), बसों या मोटरों के नाम, संस्थाओं के नाम इत्यादि।

(2) छोटे इश्तहार, विज्ञापन, निमन्त्रणपत्र, तार, घरेलू पत्र, व्यावहारिक पत्र, पढ़ना।

(3) पत्रिकाएं और समाचार पत्र पढ़ना।

(4) पढ़कर मनन और चिन्तन करना, समस्याओं पर विचार करना।

(5) कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास पढ़ने आनन्द प्राप्त करना।

(6) भाषा का तात्पर्य भली-भान्ति समझना और आकाँक्षा, योग्यता और सन्धि द्वारा शब्द और अर्थ का सम्बन्ध जानना। एक वाक्य के प्रत्येक शब्द का अलग-अलग अर्थ निकलता है। वाक्य पढ़ते हुए, वास्तविक अर्थ तभी समझ में आता है जब सारा वाक्य पढ़ा जाता है। तब तक आरम्भ में या मध्य में किंचित अर्थ ज्ञान हो जाता है।

(7) विचारों का संगठन करना।

(8) उपयुक्त गति के साथ पुस्तक का वाचन करना।

§ 84. चतुर्थ अवस्था निर्बाध अर्थ सहित वाचन

(Smooth Meaningful Reading)

इस अवस्था में विद्यार्थियों का सस्वर तथा मौन वाचन में ऐसा प्रशिक्षित किया जाता है कि वे निर्बाध रीति से, किसी कठिनाई या दोष के बिना पढ़ सकते हों और अर्थ ग्रहण कर सकते हों। यह अवस्था गम्भीर अध्ययन के लिए तैयारी है। अध्यापक निम्न दस बातों की ओर ध्यान देता है :

(i) पढ़ते समय बच्चों की मुद्राएं।

(ii) दृष्टि-विचार (eye span) बालक एक-एक अक्षर करके तो नहीं पढ़ता, अथवा एक-एक शब्द रुक कर तो नहीं पढ़ता।

(iii) उच्चारण।

(iv) शब्दों की पूरी पहचान सदश, अक्षरों वाले भिन्न शब्द को पढ़ने में भ्रम तो नहीं होता।

(v) वाक्य को वाक्य खण्डों में बांटते हुए पढ़ना तथा कोई पंक्ति बीच में न छोड़ना।

(vi) प्रवाह और गति के साथ वाक्य गद्यांश (Paragradh) पढ़ना।

(vii) पढ़ने के साथ ही अर्थ ग्रहण करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(viii) विराम (Punctuation) का ध्यान रखना।

(xi) मौन या सस्वर पाठ में मन की एकाग्रता।

(x) किसी शब्द में अपरिचित होने पर भी अनुमान द्वारा अर्थ निकालना और बाधा रहित आगे पढ़ना।

§ 85. वाचन में मन्दता (Backwardness)।

कक्षा में कई छात्र ऐसे होते हैं जो अन्य छात्रों की अपेक्षा लिखाई पढ़ाई में बहुत कमज़ोर होते हैं। उनको न पढ़ना आता है न लिखना। ऐसे छात्रों पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पड़ती है। अध्यापक को चाहिए कि वह उनकी विशेष कठिनाइयों का निदान करे और तत्पश्चात् कठिनाइयां दूर करने का उपाय करे। उनके तीन कर्त्तव्य हैं :—

(i) कठिनाइयों का निदान करना (Diagnosis)।

(ii) कठिनाइयों के कारण ढूंढना।

(iii) कठिनाइयां दूर करने के उपाय ढूंढना और तदनुसार विशेष सहायता प्रदान करना।

पिछड़े छात्रों की वाचन की निम्न प्रकार की त्रुटियां हैं :—

(1) वाचन की त्रुटियां—

(i) वाचन की अनुचित विधियां (Posture जैसे) पुस्तक अधिक निकट या अधिक दूर रखना, झुक कर पढ़ना आदि।

(ii) उचित गति के साथ न पढ़ सकना: वरन् प्रत्येक शब्द को अलग-अलग धीरे-धीरे पढ़ना, तथा एक शब्द पढ़ते समय एक-एक अक्षर को अलग-अलग पढ़ना।

(iii) ठीक दिखलाई न देना और अशुद्ध पढ़ना जैसे 'देखता' को 'देखना' पढ़ना 'संयम' को 'समय' 'पढ़ना', 'वाराणसी' को 'रावणसी' पढ़ना आदि।

(iv) दृष्टि विराम (Eye-span) का छोटा होना।

(v) उच्चारण की अशुद्धता और अक्षर ज्ञान की त्रुटियां।

(vi) भावों के अनुसार ध्वनियों का उतार-चढ़ाव न होना।

(vii) प्रवाह का न होना. और मन्द गति से पढ़ना।

(viii) शब्दों और वाक्यों का अर्थ न समझना।

(ix) मौन वाचन न कर सकना।

(2) वाचन या त्रुटियों के कारण—

(i) नेत्र दोष जैसे अल्प दृष्टि (Myopia) अर्थात् दूर की चीजें भली-भान्ति दिखाई न देना और निकट की भी ठीक न दिखाई देना (Hypermetroyia) तिरछी (Astigmatism) तथा अक्षरों को पूरी तरह न देखने की आदत।

(ii) श्रवण दोष अर्थात् अक्षरों ध्वनियों को ठीक ढंग से न सुन सकना, और ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण न जान सकना।

(iii) वाणी दोष (Speech Defect) अर्थात् जिह्वा तथा मुंह का ठीक ढंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

से संचालन न कर सकना, हड़बड़ाना, हकलाना रुक-रुक के पढ़ना आ आ करके पढ़ना ।

(iv) मानसिक कारण, जैसे बुद्धि का अल्प-विकास, पढ़ने में अरुचि एकाग्रता का अभाव आदि ।

(v) परिस्थिति-दोष, जैसे विद्यालय में कई मास के लिए अनुपस्थित होना या विद्यालय में ही बहुत समय तक वाचन का अभ्यास न करना, घर की बुरी परिस्थितियां, कक्षा में अनुत्तीर्ण होकर पढ़ने की ओर रुचि न रखना, एक पढ़ाई में पीछे रहना और फिर कक्षा के साथ न चल सकना, अध्यापक का ध्यान न देना आदि ।

(vi) संवेगात्मक दोष (Emotional Disorders) जैसे अध्यापक या माता-पिता का भय, अनुत्तीर्ण होने का भय, पढ़ते समय अशुद्धियों के कारण संकोच, हीनता ग्रन्थि (Inferiority complex), असफलता के कारण निराशा, पढ़ने की ओर मन न लगना, अधिक परावलम्बी होना, आलसी होना आदि ।

(2) मन्दता ठीक करने के उपाय

(i) प्रत्येक छात्र की वैयक्तिक कठिनाइयों पर वैयक्तिक ध्यान (Individual attention) देना यदि किसी छात्र की दृष्टि दुर्बल हो तो उसे ऐनक लगाने का आदेश देना, यदि कोई अनुपस्थित रहता हो उसे समय-निष्ट बनाने का आदेश देना आदि ।

(ii) अध्यापक का प्रत्येक मन्द छात्र के साथ प्रेम और सहानुभूति के साथ व्यवहार करना, उसकी कठिनाइयों पर उसे दण्ड न देना, वरन् कठिनाइयां दूर करने का उपाय करना, उसे प्रोत्साहन देना और शांत भाव के साथ उसका वाचन सुधारना, अशुद्धियां दूर करना ।

(iii) यदि किसी छात्र में कोई संवेगात्मक दोष हो तो उसको ठीक करना, जैसे उसके मन में किसी भी प्रकार का भय दूर करना, उसकी रुचि बढ़ाना, उसकोस्वावलम्बी बनाना, उसके मन में भावना पैदा करना ।

(iv) प्रत्येक छात्र की कठिनाई के अनुसार शिक्षण विधि अपनाना । जो छात्र जिस विधि से प्रगति कर सके, उसके लिए उसी विधि का अनुसरण करना जो छात्र वाचन के लिए स्तर पर हो, यहीं से उसको ऊपर ले जाना ।

(v) क्रमिक पाठ (Graded Lesson)

(क) पहले अक्षर ज्ञान करवाना, मात्राओं और संयुक्त अक्षरों का पूरा ज्ञान देना और अभ्यास करवाना ।

(ख) फ्लैश कार्ड के द्वारा शब्दों की सामूहिक पहचान करवाना ।

(ग) वाक्य पढ़ने का अभ्यास करवाना ।

(घ) एक कविता याद करवाना और फिर वही कविता पढ़ने के लिए उपस्थित करना, जिसके पढ़ने से छात्र को आत्मविश्वास हो जाएगा ।

(ङ) एक कहानी मौखिक रीति से सुनना और वही कहानी वाचन के लिए उपस्थित करना ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(च) शब्दों और वाक्यों को उलट-फेर के साथ उपस्थित करना और उनके शुद्ध वाचन का अभ्यास करवाना।

'रघुकुल रीति सदा चली आई,
प्राण जाएं पर वचन न जाई।'
'रावण कुल रीति सदा चलि आई,
वचन जाए पर प्राण न जाई।'
'जपो मन चरण कमल अविनाशी।
भजो मन कमल चरण अविनाशी।'

(छ) कठिन ध्वनियों का अभ्यास करवाना जैसे, 'अंबर में भर निज रोर', 'दावा द्रुमदण्ड पर, चीता मृगझुण्ड पर, भूषण वितुण्ड पर, शेर शिवराज है,' 'झुनकत श्याम की पैजनियां।

(ज) गीत गवाना, विशेष कर गीत जिनमें विविध ध्वनियां हों जैसे—
'जन गण मन अधिनायक' (राष्ट्रगीत)

(झ) अनुच्छेद पढ़ने का अभ्यास करवाना और तब तक बार-बार पढ़वाना जब तक उचित गति और प्रवाह न आ जाये।

(vi) छोटे-छोटे वाक्यों का प्रश्नों द्वारा अर्थ निकलवाना और तत्पश्चात् अनुच्छेदों के अर्थ बोध की परीक्षा करना।

(vii) हकलापन दूर करने के लिए 'बोल-चाल के अध्ययन' में सुझाव दिए गए हैं।

(viii) पढ़ते समय उंगलियां या पैंसिल शब्दों के नीचे चलाने से अशुद्धियां कम हो जाती हैं।

(ix) जो कुछ पढ़ाया जाए, वही लिखने का आदेश देना चाहिए। इससे पढ़े हुए अक्षर और वाक्य याद रहते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. अक्षर ज्ञान कराने के लिए कौन-कौन सी विधियां प्रचलित हैं? सभी विधियों की विवेचना कीजिए। हिन्दी सिखाने के लिए कौन सी विधि उपयोगी है और क्यों? [§ 81]

2. पहली श्रेणी को हिन्दी सिखाने के लिए शिक्षण-विधि की विस्तृत व्याख्या कीजिए। [§ 82]

3. स्वाध्याय की आदत डालने के लिए आप कौन से उपाय काम में लायेंगे? [§ 83]

4. वाचन की विभिन्न विधियों का मूल्यांकन कीजिए। [§ 84]

5. आप वाचन के लिए किस को प्रोत्साहन देंगे और क्यों?

6. कई बच्चे वाचन में पीछे रह जाते हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए आप कौन से उपाय काम में लायेंगे? [§ 85]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. वर्तमान हिन्दी प्राइमरों की समीक्षा कीजिए, उनके गुण-दोषों का विवरण देते हुए एक अच्छे हिन्दी प्राइमर की आवश्यकताओं की व्याख्या कीजिए। [§ 82]

8. सूक्ष्मपाठ और स्थूल पाठ (या अतिरिक्त पाठ) से क्या तात्पर्य है ? छात्रों में स्वाध्याय में रुचि पैदा करने लिए आप कौन से उपाय काम में लाएंगे ? [§ 83, 84]

9. पहली श्रेणी से पढ़ाने-लिखाने के लिए पहले तैयार करवाना चाहिए। तैयारी की इस अवस्था में कौन-कौन सी बातें आवश्यक हैं और उनके लिए अध्यापक को कौन-कौन से पग उठाने चाहिएं ?

10. वर्तमान काल में वाचन सिखाने की प्रक्रिया संतोष-जनक नहीं। अध्यापक उसके लिए कहां तक उत्तरदायी है ?

सहायक पुस्तकें

1. W. S. Grey — The Teaching of Reading and Writing (UNESLO Publication) ch. III, IV.
2. Michael West : — (Learning to Read a Foreign Language.
3. Bufwell Guy : — Funpamental Reading habits.
4. Gates A. I. — The Improvemental Reading.
5. Nackenzie, A. F. — Learning of Read.
6. Menzel, E. W. — (1) How to Study.
   " " — (The Teaching of Reading, (Oxford University Press.)
7. Fleming C. M. — (Research and the Basic Curriculum (University of London Press) Ch. II.
8. John Duncan : — (Backwardness in Reading, (George and Harap and Co)
9. Fred J. Schonell — Backness in the Basic Subjects (Oliver and Boyd.) Ch. VII to XI.
10. Margeret G. Mckim — Guiding Growth in Reading.
11. Jagger — The Sentence Method of Teaching
12. Broom and others — Effecting Reading Instructions in the Elementary School.
13 अब्दुल गफ्फार मुदहौली — पहली श्रेणी को हिन्दी पढ़ाने की जामिया विधि (जामिया मिलिया दिल्ली
14. योगेन्द्र नाथ शर्मा — भाषा कैसे पढ़ावें ?

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

15
देवनागरी लिपि

§ 86. लिपि का विकास

भाषा की भांति लिपि के विकास के सम्बन्ध में भी पुरानी धारणाएं निशकृत हो चुकी हैं। जैसे भाषा की उत्पत्ति दैवीय नहीं, वैसे लिपि की भी नहीं। लिपि का उद्भव भी मानव की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के फलस्वरूप हुआ।

(1) लिपि के उद्भव के कारण—लिपि का उद्भव तब हुआ जब प्राचीन मानव को स्मृति के सहायक के रूप में किसी प्रकार का चिन्ह बनाना पड़ा। स्मृति का चिन्ह आरम्भ में कोई वस्तु रही जैसे वर्ष-गांठ के समय एक रस्सी में नई गांठ लगाई जाती थी जिससे अवस्था के वर्ष गिने जा सकते थे। संख्याओं को गिनने के लिए रेखाएं खींची जाती थीं। अगूठी भी इसी प्रकार का चिन्ह है। दुष्यन्त द्वारा शकुन्तला को दी गई अंगूठी भी स्मृति चिन्ह ही थी, इस प्रकार स्मृति की पुष्टि के लिए किसी न किसी प्रकार का चित्र बनाना पड़ा।

(2) लिपि के विकास की अवस्थाएं—लिपि के विकास की चार अवस्थाएं हैं—(क) प्रतीक लिपि, (ख) चित्र-लिपि (Pictogram), (ग) भाव-लिपि (Ideogram) और (घ) ध्वनि-लिपि (Phonogram)। आरम्भ में ऐसे चिन्हों का आविष्कार किया गया जो किसी विचार के प्रतीक हों। रस्सी में गांठ लगाना, रंग का निशान लगाना, धागा बांधना, मूंगे मोती बांधना, लकड़ी के टुकड़ों पर निशान लगाना आदि प्रतीक लिपि के अन्तर्गत आते हैं। प्रतीकों के पश्चात् चित्रों का सूत्रपात हुआ।

मन्दिर, मस्जिद, पर्वत, भवन आदि पर आज भी प्रायः चित्र पाए जाते हैं जो विचारों के प्रतीक थे। पंचांग में दिए गए ग्रन्थों का चित्र आपने देखा होगा। मीन-मेख राशियों के और मंगल बुध आदि ग्रहों के चित्र लिपि में आ जाते हैं। चित्र लिपि से अगली अवस्था भाव लिपि है। इसमें एक भाव को सम्पूर्ण चित्र के बदले कुछ

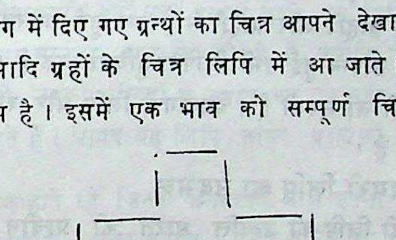

रेखाओं के द्वारा व्यक्त किया गया और ऐसे पर्वत का चित्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बना या मानव का चित्र बना। इस लिपि के अवशेष अब भी मिस्र और चीन में मिलते हैं। वर्तमान चीनी लिपि भी भाव लिपि का ही परिष्कृत रूप है। भाव लिपि का प्रयोग प्रागैतिहासिक काल में बहुत हुआ। परन्तु इसमें एक बड़ी कठिनाई यह रही कि चित्र केवल विचारों और वस्त्रों के ही बन सके, भावों और क्रियाओं के नहीं। अत: भाव-लिपि की इस कठिनाई को दूर करने के लिए ध्वनि-लिपि का आविष्कार हुआ जिसमें शब्दों की ध्वनियों के प्रतीक चित्र बनाए गए। भाषा की प्रधान ध्वनियों के लिए निश्चित चिन्ह बन गए। प्रारम्भ में किसी शब्द का प्रथम अक्षर का चिन्ह उस सम्पूर्ण शब्द का चित्र बना, जैसे भारत में वीणा का चित्र बनाया और वह व के लिए प्रयुक्त हुआ।

ब्राह्मी लिपि तथा ध्वनि लिपियां - संसार की सब से प्राचीन ध्वनि लिपि ब्राह्मी है जिसका विकास भारत में हुआ। ईसा पूर्व 1000 में यह लिपि समस्त उत्तरी भारत में प्रयुक्त होती रही। इसका प्रयोग वैदिक संस्कृत और संस्कृत के लिए होता रहा। यूनान में भी इसी समय के आसपास यूनानी लिपि का आरम्भ हुआ। ईसा पूर्व 400 में फारस में खरोष्ठी प्रचलित रही। यूनान लिपि से रोमन लिपि का विकास हुआ खरोष्ठी और आरमेनी से अरबी और वर्तमान फारसी लिपि का। भारत की समस्त लिपियों का जन्म ब्राह्मी से हुआ। अंग्रेज़ी के लिए रोमन लिपि का प्रयोग होता है। रूसी लिपि भी रोमन लिपि का ही परिवर्तित रूप है। इस प्रकार संसार की प्रधान लिपियां ध्वनि लिपियां हैं, जिनमें प्रत्येक प्रधान ध्वनि के लिए लिपि अक्षरों का प्रतीक के रूप में प्रयोग किया जाता है। केवल चीनी लिपि ही एक ऐसी प्रधान लिपि है जो इस वर्ग में नहीं आती। परन्तु ध्वनि लिपि में जो सुविधा है वह चीनी चित्र लिपि में नहीं। इसी कारण चीनी लिपि सींखना एक दुष्कर कार्य है। यहां प्रत्येक विचार के लिए एक जटिल चित्र है, जिसकी रचना लिखने और छापने के लिए एक टेढ़ी खीर है। चीनी मात्रा के विकास में लिपि एक प्रधान बाधा है। फारसी और अरबी भाषा की प्रचलित लिपि यद्यपि ध्वनि-लिपि है परन्तु इसके चिन्ह पृथक्-पृथक् न होते हुए एक-दूसरे के साथ गुम्फित होने के कारण मुद्रण में बाधा पेश करते हैं। अक्षरों की पृथक् सत्ता के कारण ब्राह्मी और ब्राह्मी से उत्पन्न हुई भारत की सभी लिपियां तथा ग्रीक और रोमन से उत्पन्न हुई सभी लिपियां सुविधाजनक हैं। दृष्टि से ये सभी लिपियां एक ही वर्ग में गिनी जा सकती है। देवनागरी लिपि और रोमन लिपि का जहां पर इस दृष्टि से समान स्तर है।

§ 87. देवनागरी लिपि का उद्भव

देवनागरी लिपि की उत्पत्ति भारत की प्राचीन लिपि ब्राह्मी से है। देवनागरी लिपि के अतिरिक्त मध्य तथा आधुनिक काल की भारत की सभी लिपियों का उद्गम भी इसी प्राचीन राष्ट्रीय लिपि से हुआ है।

ब्राह्मी लिपि के सम्बन्ध में ओझा जैसे विद्वानों का मत है कि लिपि भारतवर्ष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के आर्यों की खोज से उत्पन्न किया हुआ आविष्कार है ।[1] इस बात के उन्होंने बहुत से प्रमाण उपस्थित किए हैं कि वैदिक काल में भी लिखने का रिवाज था । पाणिनीय काल में लिखने की एक निश्चित शैली थी । 'लिपी' शब्द जो पाणिनी ने प्रयुक्त किया है इस बात का प्रमाण है । बुद्ध के समय में इस प्राचीन लिपि का रिवाज विस्तृत था । मौर्यवंश काल में अशोक के शिलालेख ब्राह्मी में पाए जाते हैं जिनका लिप्यान्तर (Decipher) भी हो चुका है । यूरोपीय विद्वान् फलीट (Fl.et) और बूलर (Buhler) ने उस दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है । अशोक के कतिपय शिलालेख खरोष्ठी में भी हैं, क्योंकि भारत की पश्चिमी सीमा के आस पास फारस से आई हुई खरोष्ठी लिपि का भी उन दिनों प्रयोग होता था । ब्राह्मी लिपि का प्रयोग अशोक काल के बाद भी होता रहा, परन्तु इसमें कुछ परिवर्तन हुआ । गुप्त काल में यह लिपि गुप्त लिपि कहलाई गई । बौद्धमत के प्रचार के साथ ब्राह्मी लिपि का प्रचार दक्षिण में भी हुआ । तीसरी शताब्दी ईस्वी तक दक्षिण में इसका एक परिवर्तित रूप बना । इसी दक्षिणी रूप से वर्तमान तामिल, तेलगू, मलयालम और कन्नड़ लिपियों को जन्म मिला । उत्तरी भारत में ब्राह्मी लिपि का व्यवहार प्रत्येक प्रदेश में समान रूप से होता रहा । इस उत्तरी रूप का नाम वर्णों की कुटिल आकृति के कारण 'कुटिल लिपि' पड़ा । इस कुटिल लिपि से शारदा और नागरी लिपि का उद्भव हुआ । नागरी लिपि का प्रयोग 10वीं शताब्दी से आरम्भ होता है । इसी नागरी लिपि का नाम 12वीं शताब्दी में देवनागरी पड़ा और साथ ही नागरी लिपि से प्राचीन बंगला, गुजराती, कैथी, महाजनी आदि लिपियां निकलीं । प्राचीन बंगला से ही वर्तमान बंगला, मैथिली, उड़िया, नेपाली और आसामी का उद्भव हुआ है । शारदा लिपि का प्रयोग काश्मीर और पंजाब में होता रहा । गुरु अंगद ने 537-42 ई० में इस शारदा लिपि में परिष्कार करके गुरमुखी लिपि को जन्म दिया जो आजकल भी पंजाबी भाषा के लिए प्रयुक्त होती है । देवनागरी लिपि आजकल मराठी, हिन्दी और सस्कृत के लिए प्रयुक्त होती है । थोड़े भेद से पंजाबी, बंगला, गुजराती आदि निकट क प्रदशों की भाषाओं के लिए भी प्रयुक्त होती है ।

देवनागरी लिपि का नाम 'देवनागरी' क्यों पड़ा इसका अभी तक निश्चित प्रमाण नहीं मिलता । कुछ विद्वान इसका सम्बन्ध नगर से जोड़ते हैं, क्योंकि यह नगरों में प्रयुक्त हुई होगी । श्याम शास्त्री उसको मन्दिरों में बनाए गए उपासना के चिन्हों से (जिनको 'देवनगर' कहते थे) जोड़ते हैं । शायद यह लिपि नागर ब्राह्मणों में प्रचलित होने के कारण नागरी कहलाई ।

ब्राह्मी लिपि में जो परिवर्तन होते रहे जिनके फलस्वरूप आज इतनी लिपियां बन गई हैं, उनके भी कई निश्चित कारण हैं । पहला कारण—सुन्दर बनाने का प्रयत्न ।

---

1. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा : भारतीय प्राचीन लिपिमाला अपनी पुस्तक की भूमिका में पृष्ठ 6 पर लिखते हैं – "मनुष्य की बुद्धि के सबसे बड़े महत्त्व के दो कार्य, भारतीय ब्राह्मी लिपि और वर्तमान शैली के अंकों की कल्पना है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिखने वाले इन अक्षरों को सुन्दर बनाते गए जिससे इनका रूप बदला गया। आरम्भ में ब्राह्मी अक्षरों के सिर की आड़ी लकीर नहीं थी। गुजराती में अब भी नहीं। परन्तु देवनागरी में या बंगला में यह बाद की परिवर्तन है। आरम्भ में कई अक्षरों की रेखाएं पृथक् थीं। कालांतर में कलम उठाए बिना लिखने की प्रवृत्ति के कारण रूप बदलते गए अतिशीघ्रता के कारण भी कई रूप बदलते गए।

ब्राह्मी लिपि का विकास देवनागरी लिपि का वर्तमान अवस्था तक कैसे हुआ, इस तथ्य का स्पष्टीकरण करने के लिए ब्राह्मी लिपि के कई चुने हुए अक्षरों के प्राचीन से लेकर वर्तमान काल तक बदलते रूप दिए जाते हैं।

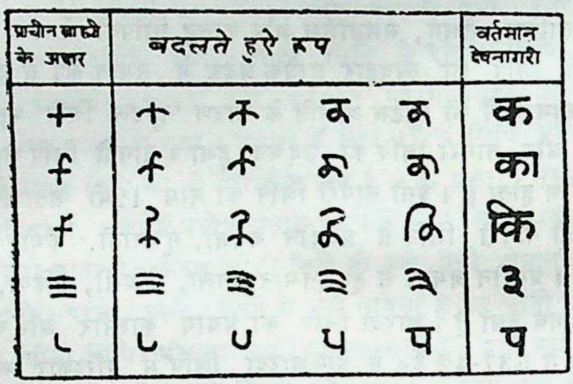

चित्र 11. ब्राह्मी लिपि का विकास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देवनागरी लिपि का उद्भव

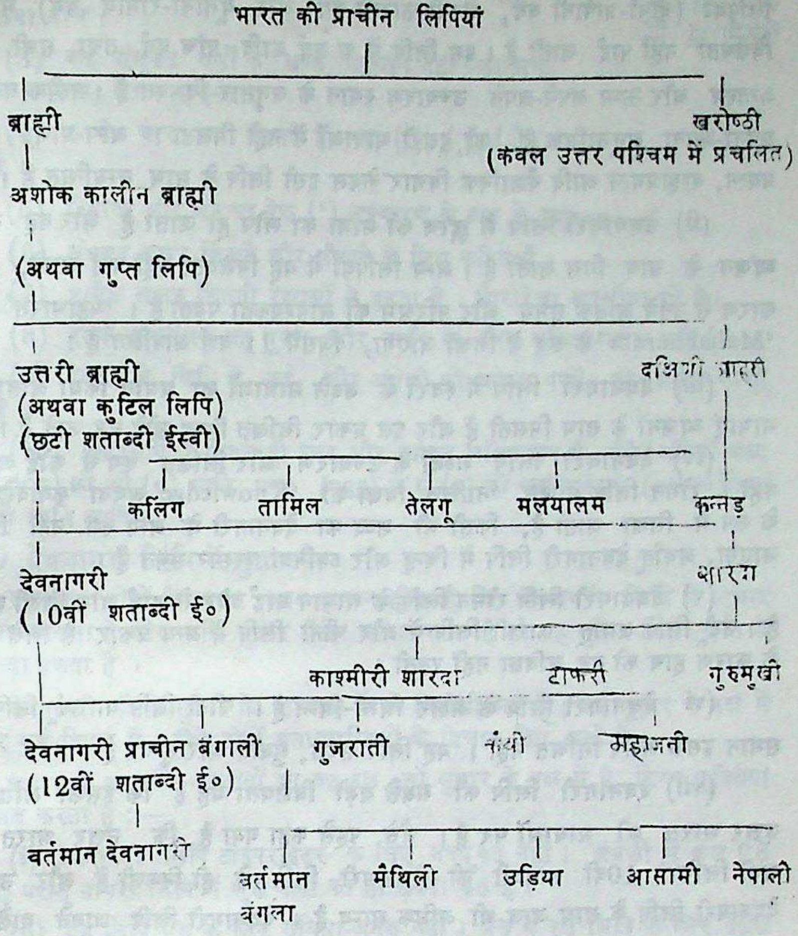

तालिका 18. देवनागरी का उद्भव

§ 88. देवनागरी लिपि की विशेषताएं –

ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न देवनागरी लिपि आज भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए प्रयुक्त होती है। इसी कारण यह राष्ट्र पद पर आरूढ़ हो चुकी है। जहां अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी भाषा का प्रयोग संविधान द्वारा स्वीकृत हो चुका है, वहां रोमन लिपि के स्थान पर हिन्दी भाषा के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग अंगीकृत हो चुका है। इस लिपि की अपनी भी कई विशेषताएं हैं। जिस कारण से संसार की प्रमुख लिपियों में इसको विशिष्ट स्थान प्राप्त है। वे विशेषताएं निम्न हैं :—

(i) **देवनागरी लिपि की प्रथम विशेषता है**—वर्णमाला का स्वर और व्यंजनों में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
विभाजन तथा इनका स्थान और प्रयत्न के अनुकूल क्रम विन्यास। संसार की अन्य लिपियों (चीनी-जापानी वर्ग, अरबी-फारसी वर्ग और यूनानी-रोमीय वर्ग) में यह विशेषता नहीं पाई जाती है। इस लिपि में क वर्ग आदि पांच वर्ग तथा सभी स्वर अन्तस्थ और ऊष्म अपने-अपने उच्चारण स्थान के अनुसार विभक्त हैं। प्रत्येक वर्ग का अपना-अपना अनुनासिक है, जो दूसरी भाषाओं में नहीं मिलता। अल्प-प्राण, अन्तः प्रयत्न, बाह्यप्रयत्न आदि वैज्ञानिक विचार केवल इसी लिपि के साथ सम्बन्धित हैं।

(ii) **देवनागरी लिपि में ह्रस्व की मात्रा का लोप हो जाता है** और वह मात्रा व्यंजन के साथ मिल जाती है। अन्य लिपियों में यह विशेषता नहीं पाई जाती, जिस कारण से उनमें अधिक समय और परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है। 'महाभारत' शब्द 'Mahabharata' के रूप में लिखा जाएगा, जिसमें 11 वर्ण आपेक्षित हैं।

(iii) **देवनागरी लिपि में स्वरों के बदले मात्राओं का प्रयोग किया जाता है।** मात्राएं व्यंजनों के साथ मिलती हैं और इस प्रकार लिखित चिन्ह छोटे बन जाते हैं।

(iv) **देवनागरी लिपि शब्दों के उच्चारण और लिखित रूप में कोई अन्तर नहीं।** रोमन लिपि में जैसे 'नालिज' विद्या को 'Knowledge' अथवा 'कनावलेडज' के रूप में लिखा जाता है, किसी भी शब्द का देवनागरी में अन्य रूप नहीं लिखा जाएगा, अर्थात् देवनागरी लिपि में चिन्ह और ध्वनियां परस्पर संगत हैं।

(v) **देवनागरी लिपि रोमन लिपि के सामान बाईं ओर से दाईं ओर लिखी जाती है।** उर्दू लिपि अर्थात् फारसी लिपि में और चीनी लिपि में अन्य प्रकार से लिखे जाने के कारण हाथ को यह सुविधा नहीं रहती।

(vi **देवनागरी लिपि के अक्षर भिन्न-भिन्न हैं।** चीनी लिपि या उर्दू लिपि के समान इसके अक्षर मिश्रित नहीं। यह लिपि सरल, सुबोध और सुन्दर है।

(vii) **देवनागरी लिपि की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसका अधिकार उत्तर भारत की भाषाओं पर है।** जैसे पहले कहा गया है कि उत्तर भारत की सभी लिपियां 10वीं शताब्दी की देवनागरी लिपि से ही निकली हैं और उनका देवनागरी लिपि के साथ आज भी अधिक साम्य है। देवनागरी लिपि जानने वाले को बंगाली, मराठी, गुजराती, गुरुमुखी आदि लिपियां सीखने में देर नहीं लगती। इन कारणों से यह लिपि भारतीय लिपियों में नहीं, संसार की सभी लिपियों में प्रमुख है। देवनागरी लिपि के ऐसे ही गुणों के कारण प्रसिद्ध आंगल- संस्कृति विद्वान् मनोनियर विलियम ने इस लिपि को "विश्व में सार्थक सुडौल तथा प्रमाण, सुन्दर और पूर्ण वर्णमाला" कहा था। उपरोक्त गुणों के अतिरिक्त इस लिपि में कई छोटे-छोटे दोष भी पाए जाते हैं :—

§ 89. देवनागरी लिपि के दोष—

(1) कई वर्गों के पढ़ने में भ्रम उत्पन्न हो सकता है। जैसे भ और म में, ध और घ में, ब और व में ज्ञ और ज्ञ में तथा र व और ख में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(2) मात्राएं कभी व्यंजनों से पहले आ जाती हैं और कभी बाद में तथा कभी ऊपर तथा नीचे।

(3) कई संयुक्त वर्णों के खण्ड पहचाने नहीं जा सकते, जैसे ज्ञ=ज्+ञ, क्ष=क+ष, क्त=क्+त।

(4) र के चार रूप मिलते हैं—र, (ॅ), (ृ), (्र) जैसे करम, कर्म, कृष्ण, क्रम में।

(5) ि मात्रा और संयुक्त रेफ (ॅ) उच्चारण के क्रम से नहीं लिखे जाते।

(6) संयुक्त अक्षर लिखने और सीखने के लिए कठिन हैं।

(7) प्रत्येक अक्षर कितनी रेखाओं से बनता है; शिरोरेखा अवांछित सी है।

(8) इसके अतिरिक्त यह मुद्रण और टाईप के लिए सुविधा-जनक नहीं है।

(9) देवनागरी लिपि में उर्दू और अंग्रेजी की अपेक्षा वर्णों की संख्या काफ़ी बड़ी है।

(10) इस लिपि में कितने ही स्वर और व्यंजन अविद्यमान हैं, जैसे अंग्रेजी शब्द डाग (dog) की ओ (o) ध्वनि, एग्ग (egg) में ए (e) की ध्वनि जेबरा (zebra) में ज़ (z) की ध्वनि आदि।

§ 90. देवनागरी लिपि में सुधार—

उपरोक्त दोषों के कारण प्रश्न उत्पन्न होता है कि देवनागरी लिपि में सुधार की आवश्यकता है और यदि सुधार की आवश्यकता है तो वह सुधार किस रीति से किया जा सकता है।

देवनागरी लिपि सुधार के सम्बन्ध में दो विरोधी मत हैं। कई सुधार के पक्ष में हैं और कई विपक्ष में। नीचे दोनों मतावलम्बियों के विचार दिए जाते हैं।

सुधार के पक्ष में—विद्वानों का वह दल जो सुधार के पक्ष में है निम्न युक्तियां उपस्थित करता है :—

(i) देवनागरी लिपि टाइपराईटर के लिए उपयुक्त नहीं। अंग्रेजी में कुल 26 वर्ण हैं, परन्तु नागरी लिपि में शुद्ध वर्णों की ही संख्या 45 है।

(ii) यह लिपि प्रैस के लिए सुविधा-जनक नहीं। प्रैस में इस लिपि के लिए 120 से लेकर 700 तक के वर्णों की आवश्यकता है।

(iii) यह लिपि एकमुद्र (Monotype) और पंक्तिमुद्र (Linotype) के लिए भी उपयुक्त नहीं।

(iv) इस लिपि के पढ़ने और सीखने में कहीं-कहीं भ्रम की सम्भावना है।

(v) यह शीघ्र नहीं लिखी जाती।

(vi) इसमें कई अन्य दोष हैं। वे दोष ऊपर दिए गए हैं।

सुधार के सुझाव—

इन दोषों को दूर करने के लिए विद्वानों ने अनेक सुझाव रखे हैं। भारतीय शिक्षा संघ ने वर्धा में केवल एक स्वर अ के रूप रखकर अन्य स्वरों के स्वतन्त्र रूपों को उड़ाने का आग्रह किया—जैसे अ, आ, अि, अी, अु, अू, अे, अै, ओ, औ, अं, अः। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा द्वारा प्रकाशित हिन्दी साहित्य में इसी परिष्कृत लिपि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का प्रयोग होता है। बम्बई, उत्तर प्रदेश और केन्द्र के शासकों की ओर से अनेक समितियां नियुक्त हुई। नवम्बर 1953 में उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्य मन्त्री पं० गोविन्द वल्लभ पन्त ने लखनऊ में अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया, जिसमें अनेक प्रान्तों के मुख्य-मन्त्रियों और विद्वानों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में लम्बे-चौड़े वाद-विवादों के बाद निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुए :—

(i) अ और अ तथा झ और झ में पूर्व रूप ही रखे गए।

(ii) ह्रस्व 'इ' की मात्रा बाईं ओर से हटा कर कुण्डी समेत दाईं ओर कर दी गई। कुण्डी से इसका भेद 'ा' की मात्रा के साथ साफ दिखाई देगा।

(iii) संयुक्त व्यंजनों के सम्बन्ध में पाई हीन वर्णों के नीचे हल् चिन्ह लगाने का निश्चय किया गया है। इससे व्यंजनों के संयुक्त रूप, मिश्रित रूप में रह कर अलग-अलग लिखे जाने के कारण प्रैस टाइप में सुविधा होगी।

(iv) ध और घ तथा भ और म का भ्रम दूर करने के लिए ध और भ के साथ भी कुण्डी लगाए जाने का निश्चय किया है।

(v) 1, 5, 8 और 9 इन अंकों का रूप निश्चित हुआ। इस प्रकार के परिवर्तनों से आशा की गई है कि नागरी लिपि टाइप और प्रैस के लिए पहले से अधिक उपयुक्त सरल और सुविधा-जनक होगी।

सुधार के पक्ष में—कई विद्वान् सुधार के पक्ष के विपक्ष में निम्न युक्तियां प्रस्तुत करते हैं।

(i) लिपि के सुधार से आज तक का सारा हिन्दी, संस्कृत, जैन और बौद्ध साहित्य, जो देवनागरी लिपि में लिखा गया है, आने वाली पीढ़ियों के लिए अपाठ्य बन जाएगा।

(ii) लिपि सुधार से वर्तमान टाइप राइटर और प्रैस बेकार हो जाएंगे, जिससे देश की बड़ी हानि होगी।

(iii) लिपि सुधार से ब्राह्मी लिपि से अवतरित देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएं नष्ट हो जाएंगी।

(iv) देवनागरी लिपि के सुधार करने पर भारत की सभी लिपियों के सुधार की आवश्यकता पड़ेगी, क्योंकि देवनागरी लिपि की विशेषताएं, जिनमें परिवर्तन किया जाएगा, उन लिपियों में भी विद्यमान हैं।

(v) देवनागरी लिपि विश्व के सभी देशों—जापान, रूस, इटली, फ्रांस, हालैंड इंग्लैंड आदि में प्रयुक्त होती है। विदेशों में इस लिपि का सुधार दुस्तर होगा।

(vi सुधार को बहुत से प्रस्तावों से लिपि के सीखने वालों का प्रयोग करने वालों को लाभ नहीं।

(vii) कई वर्णों में भ्रम पैदा होता है—बात भी भ्रम ही है। भ और म के पढ़ने में उतना भ्रम नहीं होता, जितना अंग्रेजी के u और v में, b और h में अथवा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(viii) इसके बदले में देवनागरी लिपि में सुधार किया जाए, इस लिपि के लिए उपयुक्त यन्त्रों का भी निर्माण आपेक्षित है। यदि चीनी जापानी लिपि के लिए 300 अक्षरों का टाइपराइटर बनाया गया है तो क्या भारत के लिए ऐसा टाइपराइटर नहीं बनाया जा सकता जिसके 100 अक्षर हों और जो आगे की ओर गति रखने के अतिरिक्त पीछे, ऊपर और नीचे की ओर भी गति रखता हो ? ऐसा असम्भव नहीं, केवल वैज्ञानिकों की इच्छा पर निर्भर है। हम कहा तक विदेशी लोगों पर अवलम्बित रहें और अपनी आकश्यकताओं पर विचार न करें। स्मरण रहे कि चीनी टाइपराइटर का मूल्य 800 रुपए है।

(ix) लिपि में अधिक सुधार करने से लिपि का नाश होगा और हमारे लिए और भी कठिनाइयां उत्पन्न होंगी।

§ 91. शिक्षा मन्त्रालय द्वारा स्वीकृत सुधार—

ऊपर दिए हुए आक्षेपों के अनुसार नागरी लिपि में महत्त्वपूर्ण और अधिक सुधार करने से भविष्य में कई कठिन समस्याएं उत्पन्न होंगी। इसलिए लिपि में छोटे-मोटे सुधार ही करने चाहिएं ताकि मुद्रण और टाइप में सुविधा हो। इस दिशा में शिक्षा मन्त्रालय ने हाल ही में महत्त्वपूर्ण कदम उठाया 8 और 9 अगस्त 1959 में भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने राज्य के शिक्षा मन्त्रियों का एक सम्मेलन बुलाया जिसमें देवनागरी लिपि में कतिपय संशोधन स्वीकृत हुए। सभी राज्य सरकारों में इस संशोधित लिपि का प्रारूप (Draft) चालू किया गया। देश में एकरूपता लाने के लिए सरकारी कार्यालयों में इसके प्रयोग की अपेक्षा है। इस लिपि में जो संशोधन किया गया है उसका सार नीचे दिया जाता है :—

(क) वर्णों के पुराने और नए रूप—

पुराने रूप	नए रूप
अ, आ, ऋ, ओ, औ, अं, अः, झ ण, श।	अ, आ, ऋ, ओ, औ, अं, अः, झ, ण, श
८, ९	7 9
घ्न, च्च, न्न, त्त, ल्ल, त्र, ञ्ज, ज्ज।	घ्न, च्च, न्न, त्त, ल्ल, त्र, ञ्ज, अर्थात् खड़ी पाई वाले व्यंजनों की पाई हटाना।
क्त, क्क, प्त	क्त, क्क, प्त
ङ्म, ट्ट, द्य, ह्न, ह्म।	ङ्‌म, ट्‌ट, द्‌य, ह्‌न, ह्‌म

तालिका 19 वर्णों के पुराने तथा नए रूप

(ख) ख, ध और भ के निम्न रूप रखे गए ताकि ख, घ और म के साथ संभ्रम न हो।

ख, ध, भ

(ग) संस्कृत में संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से भी लिखे जा सकेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(घ टाइपराइटर के कुंजीपटल में निम्न चिन्ह सम्मिलित होंगे :—

%, " ", ( ), +, ×, ÷, +, =, ‿,)

(ङ) संख्याएं रोमन शैली की तथा देवनागरी शैली की दोनों प्रयुक्त होंगी। हिन्दी तथा संस्कृत की पाठ्य-पुस्तकों में देवनागरी संख्याएं ही प्रयुक्त होंगी। सरकारी प्रकाशनों में अन्तर्राष्ट्रीय अंकों का ही प्रयोग रहेगा।

(च) दीर्घ ॠ का हिन्दी प्रचलन नहीं।

(छ) विराम-चिन्ह वही रहेंगे जो अंग्रेज़ी में, केवल पूर्ण-विराम '।' होगा। कोलन के लिए विसर्ग : ही प्रयुक्त होगा।

§ 92 देवनागरी लिपि का सामान्यीकरण—

देश की विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं के लिए विविध लिपियों का प्रयोग हो रहा है। इन भाषाओं का साहित्य केवल इन्हीं लिपियों में प्रकाशित होता है, जैसे गुजराती साहित्य गुजराती लिपि में, बंगला साहित्य बंगला लिपि में। क्या ऐसा साहित्य देवनागरी लिपि में लिखा जा सकता है। इसके लिए देवनागरी लिपि सम्पूर्ण नहीं क्योंकि इसमें प्रादेशिक भाषाओं की कतिपय विशेष ध्वनियों के लिपि-चिन्ह नहीं। इसलिए देवनागरी के प्रादेशिक भाषाओं के लिए वैकल्पिक सामान्य लिपि के रूप में प्रतिष्ठित करने से लिए, केन्द्रीय सरकार ने 1961 में कुछ अतिरिक्त प्रतीक प्रस्तुत किए हैं।[1] इन अतिरिक्त प्रतीकों का लिपि-चिन्हों की सहायता से सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं के साहित्य को देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया जा सकता।

(क)—स्तर

(i) दक्षिणी भारत की चार भाषाओं तथा काश्मीरी भाषा के ह्रस्व 'ए' और 'ओ' के लिए निम्न प्रतीक हैं :—

ऍ, ऑ (अक्षर-रूप)

ॆ ॊ (मात्रा-रूप)

उदाहरण : काश्मीरी का मॆ (मुझे) और 'कॊह' (पर्वत)।

(ii) काश्मीरी के विशिष्ट स्वर जैसे—

अ (मात्रा), आ (ा मात्रा)

उ (ु मात्रा). ऊ (ू मात्रा)।

देखिए : परिवर्धित देवनागरी—भारत सरकार, शिक्षा मन्त्रालय, केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय द्वारा प्रकाशित।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदाहरण :—

गर (घड़ी), आठ (आठ)

बु (मैं), तूर (सर्दी)

(iii) काश्मीरी शब्दों के अन्त में आने वाले अत्यल्प 'इ' और 'उ'

इ (ि), ध (‒)

0 0 0 0

उदाहरण : —

हलि (टेढ़े), हालु (टेढ़ा)

0 0

(ख)—व्यंजन

(i) काश्मीरी च वर्ग

च़, छ़, ज़, झ़

उदाहरण —

चोर, (चार), छ़ (छल)

ज़ार (जूआ) लझ़ाह (लज्जा)

(ii) उर्दू की निम्न ध्वनियाँ —

क़, ख़, ग़, ज़, झ़, फ़

जैसे -

मीरक़ासिम, अख़बार, बग़ावत, हज़ार, अफ़वा, अझ़दहा।

(iii) सिंधी के अन्त: स्फुट व्यंजन जैसे—

ग़, ज़, द़, ब़।

(iv) तामिल, मलायम, तेलगु और कन्नड़ के लिए अतिरिक्त ऱ

(v) मलयालम के लिए दुगुना ऱऱ

(vi) तामिल और मलयालय के लिए ऩ

(vii) ⊥ (तामिल के लिए)

(viii) ष् (मलयालम के लिए)

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. वर्तमान काल में देवनागरी में सुधार का एक आन्दोलन आरम्भ हुआ है, जिसके कारण अध्यापक बच्चों की लिखाई के दोष दूर करने के प्रति उदासीन हैं। क्या आप सुधार के पक्ष में हैं ? यदि नहीं, तो क्यों नहीं। [§ 90]

2. देवनागरी लिपि के क्रमिक विकास का इतिहास लिखिए। [§ 87]

3. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [§ 88]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. देवनागरी लिपि में किस प्रकार के सुधार की आवश्यकता है और क्यों ? सुधार के कतिपय सुझाव उपस्थित कीजिए । [§ 91]

5. देवनागरी लिपि को भारतीय भाषाओं के लिए वैकल्पिक लिपि बनाने के लिए सरकार ने कौन-से अतिरिक्त चिन्हों का समावेश किया है ? [§92]

सहायक पुस्तकें

1. गौरीशंकर हीरा चन्द ओझा — भारतीय प्राचीन लिपि माला
2. श्याम सुन्दर दास — भाषा-विज्ञान
3. बाबूराम सक्सेना — सामान्य भाषा विज्ञान
4. धीरेन्द्र वर्मा — हिन्दी भाषा का इतिहास
5. द्वारिका प्रसाद — हिन्दी भाषा का वैज्ञानिक इतिहास

[लिपि विषय के अध्ययन के लिए निम्न पुस्तकें पठनीय हैं]

6. Gelb I. C. — History of Writing. (Routledge Kegan Poul London 1952)
7. Edward clodd — Story of the Alphabet.
8. William A Mason — A History of the art of writing.
9. Issac Taylor — The Alphabet.
10. ,, ,, — The History of the art of writing.
11. William James Hoften — The Beginning of Writing.
12. भारत सरकार — राज भाषा आयोग का प्रतिवेदन (पृष्ठ 176 से 191 तक)
13. Frederick Bodmer — The Loom of Language Ch. II. The Story of Alphabet.
14. परिवर्धित देवनागरी — केन्द्रीय हिन्दी निर्देशालय

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16
लिपि की शिक्षा

भूमिका--

पहले कहा गया है विचार, ध्वनि तथा लिपि भाषा के आधार हैं। मानव के मन में विचार उत्पन्न होते हैं। उनकी अभिव्यक्ति वह ध्वनि रूप में बोलकर कर सकता है। इसके अतिरिक्त वह ध्वनियों के प्रतीक लिप्यक्षरों के रूप में भी अपने विचारों को व्यक्त करता है। ध्वनियों को शुद्ध रूप में बोलने के लिए उच्चारण की शिक्षा दी जाती है और आजकल लिपि भावाभिव्यक्ति का प्रधान साधन बन गई। राष्ट्र-भाषा हिन्दी की लिपि देवनागरी लिपि की शिक्षा परमावश्यक है। आजकल इस लिपि में परिवर्तन करने की एक विचार तरंग उत्पन्न हुई है. परन्तु वर्तमान अवस्था में इस लिपि में परिवर्तन करना हानिकारक है। पिछले पाठ में इस बात की व्याख्या हुई है। निष्कर्ष यह है कि देवनागरी लिपि का जो वर्तमान स्वरूप है उसी की यथा-तथ्य शिक्षा देनी चाहिए। शिक्षा मन्त्रालय द्वारा स्वीकृत सुधार के अतिरिक्त और सुधार करने की कोई आवश्यकता नहीं।

§ 93 लिपि की शिक्षा का महत्त्व --

1. लिपि विद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रधान साधन है. विशेषकर निम्न अवस्थाओं में : --

i) वाचन करते हुए, या पाठ्य-पुस्तक पढ़ते हुए नए शब्दों के अर्थ लिखने के लिए।

(ii) इतिहास आदि विषय पढ़ते हुए अध्यापक द्वारा वर्णित बातों को नोट करने के लिए।

(iii) पाठ-सम्बन्धी गृहकार्य और अभ्यास के लिए।

2 विद्यालय से बाहर भी व्यवहार के लिए लिपि आवश्यक है जैसे—

(i) मित्रों और सम्बन्धियों के साथ पत्र-व्यवहार करने के लिए।

(ii) निमन्त्रण पत्र, विज्ञापन, आवेदन पत्र, तार आदि भेजने के लिए।

(iii) अपनी वस्तुओं, चित्रों आदि के नाम लिखने के लिए।

(iv) घरेलू हिसाब लिखने के लिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. आत्माभिव्यक्ति के लिए भी लिपि की आवश्यकता पड़ती है जैसे—

(i) अपने विचार लिखने के लिए।

(ii) कहानी, निबन्ध आदि लिखने के लिए।

4. विभिन्न व्यवसायों के लिए भी लिपि आवश्यक है, जैसे क्लर्क, अध्यापक, सम्पादक, लेखक, संवाद-दाता इत्यादि।

§ 94. लिपि-शिक्षण की अवस्थाएं—

प्रायः अध्यापक प्रथम श्रेणी में प्रविष्ट विद्यार्थी को तख्ती पर अ आ इ ई लिखने के लिए आज्ञा देते हैं। वर्णमाला के प्रथम अक्षर से वे लिपि की शिक्षा का आरम्भ करते हैं, परन्तु बच्चे की उंगलियां तथा स्नायु लिखने में अभ्यस्त नहीं होते। उनके हाथ कांपने लगते हैं। उनके मस्तिष्क और स्नायुओं के बीच यथार्थ सहयोग की अपेक्षा रहती है। लिपि-शिक्षण की विभिन्न अवस्थाएं हैं। उन अवस्थाओं के अनुसार विद्यार्थी को इस योग्य बनाया जा सकता है कि वह सुन्दर, सुडौल और स्पष्ट लिपि में अपने विचारों को व्यक्त करे। इन अवस्थाओं के अनुसार लिखाने में अध्यापक को न तो अति शीघ्रता करनी चाहिए और न अति-विलम्ब। लिपि-शिक्षण की निम्न अवस्थाएं हैं :—

(क) प्रथम अवस्था लिखने की तैयारी।

(ख) द्वितीय अवस्था अक्षर रचना।

(ग) तृतीय अवस्था शब्द रचना तथा वाक्य रचना।

(घ) चतुर्थ अवस्था अभ्यास तथा आदर्श लिपि।

§ 95. (क) प्रथम अवस्था, लिखने की तैयारी—

इस अवस्था में बच्चों को लिखने के लिए केवल तैयार किया जाता है। यह लक्ष्य रहता है कि बच्चे की निम्न शक्तियों का विकास हो जाए :—

(i) बच्चे की निरीक्षण शक्ति बढ़ जाए, जिससे वह आगे प्रत्येक अक्षर की बनावट की ओर ध्यान दे सके।

(ii) बच्चे की लिखने की ओर रुचि बढ़ जाए।

(ii) उंगलियों में लिखने की दृढ़ता पैदा हो जाए, हाथ खुल जाएं और स्नायु अभ्यस्त हो जाएं।

(iv: मस्तिष्क और स्नायुओं के बीच यथार्थ सहयोग स्थापित हो जाए।

(v) कुछ देर काम करते-करते हाथ थक न जाएं, अतः उनमें काम करने का अभ्यास हो जाए। उनकी क्रियात्मक शक्ति (Motor Ability) बढ़ जाए।

साधन—(i) इस अवस्था में सर्वप्रथम शिक्षा का वातावरण उत्पन्न किया जाता है। बच्चे को सुन्दर वस्तुएं खेलने के लिए दी जाती हैं। लकड़ी के सुन्दर खिलौने, चित्रावली जैसी पुस्तकें, रंग-बिरंगे चार्ट, सुन्दर तस्वीरें या चित्र, किंडरगार्टन या मांटेसौरी प्रणाली की सामग्री आदि बच्चे को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। वह इन वस्तुओं के साथ खेलने देखने-भालने में रम जाता है। खेल खेल में ही उसकी निरीक्षण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शक्ति भी बढ़ जाती है और वस्तुओं को उठाने उल्टाने से उसकी स्नायु शक्ति भी बढ़ जाती है।

(ii) इसके उपरान्त ड्राइंग की बारी आ जाती है। बालक के हाथ पैंसिल और कैंची देनी चाहिए। कैंची से वह अपनी इच्छानुसार तस्वीरें काटता जाए, शक्लें बनाता जाए तो गत्ते के तिकोण, आयताकार का वृत्त बनाता जाए, अथवा 'धर्मयुग' आदि सचित्र पत्रिकाओं से चित्र या मोटे अक्षर काटता जाए।

पैंसिल से वह अपनी इच्छानुसार टेढ़ी-सीधी लकीरें खींचता जाए। रंगीन पैंसिल से वह पुराने समाचार पत्रों पर (जो व्यय-साध्य नहीं हैं), अपनी चित्रकारी आरम्भ करे। इससे उसकी सृजनात्मक प्रवृत्ति (Creative instinct) संतुष्ट होगी।

प्राय: तीन वर्ष के बच्चे चाक-पैंसिल हाथ में लेकर लिखना आरम्भ कर देते हैं। परन्तु उनके माता-पिता उनको इस बात पर पीटते हैं कि उन्होंने दीवार गन्दी की। इसका उपाय यह है कि उनको ऐसी सामग्री दी जाए, जिससे वे अपनी रचनात्मक मूलप्रवृत्ति को सन्तुष्ट कर सकें। लेखक के मित्र 4 वर्ष के बच्चे ने 'धर्मयुग' के मोटे-मोटे अक्षर काट कर वर्णमाला के सभी अक्षर सीख लिए थे। इसी अवस्था में बच्चे छोटे-छोटे एल्बम बना सकते हैं, सुन्दर चित्रों का संग्रह कर सकते हैं तथा सुन्दर मोटे अक्षरों का संग्रह कर सकते हैं।

उपर्युक्त सारा कार्य बच्चे की तीन वर्ष की अवस्था से आरम्भ कराया जा सकता है। इससे इन्द्रियों की बोध-शक्ति और शारीरिक अंगों के व्यापार का परस्पर सम्बन्ध जुड़ जाता है।

(iii) इसके उपरान्त चौकी या पटरी पर राख, मिट्टी रेत बिछा कर बराबर कर दिया जाता है। अध्यापक श्यामपट पर सरल अक्षर लिखता है अथवा मोटे अक्षरों के कार्ड सामने रखता है और विद्यार्थी अपनी उंगली से वैसे ही अक्षर बनाने का प्रयत्न करते हैं।

(iv) अध्यापक 'देखो और कहो विधि' से शब्द पढ़ना सिखाता है। उन्हीं शब्दों के चार्ट या कार्ड बच्चों के सामने रखता है और साथ ही मोटे बीज देता है? बीजों की पंक्तियां बना कर बच्चे शब्दों के से रूप बनाते हैं।

(v) एक अध्यापक ने 'बालोद्यान-मंजूषा' ऐसी बनाई है, जिसमें चौबीस लकड़ी के टुकड़े ऐसे रहते हैं, जिनसे बच्चे हिन्दी के अक्षर बना सकते हैं और पदार्थों की आकृति भी बना लेते हैं।

(vi) अब बच्चे कक्षा में पढ़ाए गए अक्षरों को अपनी उंगलियों से हवा में बना सकते हैं।

§ 96. (ख) द्वितीय अवस्था : अक्षर रचना—

ध्येय—इस अवस्था में अध्यापक का ध्येय यह रहता है कि बच्चे देवनागरी लिपि के सभी अक्षरों को हाथ से लिखना सीखें। इसके उपरान्त बच्चे अक्षरों को मिला कर शब्द लिख सकें और संयुक्त अक्षरों को भी लिख सकें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सामग्री या साधन—आजकल अक्षर रचना सिखाने के लिए कलम, स्याही और तख्ती का प्रयोग होता है। भारतवर्ष जैसे निर्धन देश में इतना ही सुलभ हो सकता है, परन्तु विदेशों में वर्ण रचना के कितने ही साधन प्रयोग में लाए जाते हैं। एक सम्पूर्ण शिक्षा-प्रणाली के लिए वे साधन अत्यन्त आवश्यक हैं। प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि हमारे निर्धन बच्चे, निर्धन विद्यालय और निर्धन अध्यापक इन साधनों को कहां से जुटाएं ? जुटाना कठिन है परन्तु फिर भी इन साधनों की एक सूची अध्यापक की जानकारी के लिए नीचे दी जाती है ताकि जो-जो वस्तुएं उसे सुलभ हो सकें उनका वह प्रयोग करे।

(i) ऐसा श्यामपट जो कक्षा की दीवारों के साथ-साथ डेढ़ से तीन फुट की ऊंचाई तक चारों ओर लगा रहे। सफेद और रंगीन चाक से बच्चे इस पर अपनी इच्छानुसार टेढ़ी सीधी लकीरें खींचते रहें।

(ii) रंगीन कागज और कैंची। बच्चे वर्णमाला के अक्षर कैंची से काटें।

(iii) गत्ता बच्चे वर्णमाला के अक्षरों के रूप में काटे हुए गत्ते के टुकड़ों के अनुसार आप भी अक्षर काटें।

(iv) कागज, कलर बक्स और ब्रुश (तूलिका) (Colour box and Brush) बच्चे तूलिका से वर्णों की रूप रचना कर सकते हैं :—

(v) कागज और रंगीन पैंसिल।

(vi) ग्राफपेपर, जिस पर रंगीन पैंसिल से बराबर अनुपात के अक्षर बनाए जा सकते हैं।

(vii) तीन लकीरों वाला कागज और रंगीन पैंसिल। अध्यापक अक्षरों का एक नमूना देता है और बच्चे उसका अनुकरण करते हैं।

(viii) छपे हुए अक्षरों वाली कापी। बच्चे उस रूपरेखा पर स्याही फेरते हैं।

(ix) भारत में सर्वप्राचीन, सर्वसुलभ और सर्वव्यापक सामग्री है नगरटकी या सरकण्डे की लेखनी, काली स्याही, तख्ती और चिकनी मिट्टी। अध्यापक लिपि सिखाने के लिए अधिकतर इसी सामग्री का सहारा ले सकता है। अतः आगे लिखना सिखाने की जो विधि बताई जाएगी, वह इसी सामग्री को आधार मान कर होगी।

विधि— तख्ती पर लिखने के लिए तीन विधियों को अपनाया जा सकता है :—

(i) **ऊपर कलम चलाने की विधि** (Over-writing Method)—अध्यापक तख्ती पर पैंसिल से अक्षर लिखता है और बच्चे उस लिखे हुए अक्षर पर कलम चलाते हैं और स्याही फेरते हैं। धीरे-धीरे वे इस अवस्था पर पहुंच जाते हैं कि अध्यापक ऊपर की पंक्ति में अक्षर लिखता है और बच्चे नीचे की पंक्तियों में उसकी नकल उतारते हैं।

(ii) **चित्र विधि**—वर्णमाला के कितने ही अक्षरों को सिखाने के लिए चित्रों की सहायता ली जा सकती है। कई अक्षर पदार्थों के चित्रों से मिलते-जुलते हैं। बच्चे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इससे पहले ड्राईंग के कार्य में रुचिपूर्ण भाग लेते हैं। ड्राईंग में उनको मेज़, कुर्सी आदि पदार्थों के चित्र सिखाए जाते हैं। वे उन चित्रों को हाथ से बनाते हैं। उन्हीं चित्रों की सहायता से वर्णमाला के अक्षर लिखवाए जाते हैं। म, त और न क्रमश: मेज, कुर्सी और नल के चित्र हैं। कागज़ पर या तख्ती पर ऐसे चित्र बनाने से खिलवाड़ में ही कई अक्षर सीखे जा सकते हैं। ऐसे चित्रों के कई प्राइमर छप चुके हैं। वर्णमाला के दस पन्द्रह अक्षर इस प्रणाली से अवश्य सिखाए जा सकते हैं और बाद में अन्य अक्षरों की अनुलिपि कराई जा सकती है।

(iii) संश्लेषण विधि (Synthetic Method) — इस विधि के अनुसार प्रारम्भ में सरल से सरल रेखाएं खींची जाती हैं और बाद में उन रेखाओं के संश्लेषण से देवनागरी के अक्षर बनाए जा सकते हैं। इस विधि का आधारभूत सिद्धान्त सूत्र है, 'सरल से जटिल की ओर' (From Simple to Complex)। प्रारम्भ में बच्चे खिंचाव के साथ नहीं लिख सकते। उनकी उंगलियों की हरकत निर्बाध (Free Motions) होनी चाहिएं।

अत: अ आ लिखने से पहले अध्यापक सीधी तथा तिरछी लकीरों और तत्पश्चात् गोलाकारा रेखाओं के नमूने (Patterns) उपस्थित करता है।[1] बच्चे सर्वप्रथम इन्हीं नमूनों की नकल करते हैं। इसके पश्चात् अध्यापक देवनागरी वर्णमाला की उन मात्राओं और व्यंजनों को लेता है, जो अन्य अक्षर की अपेक्षा सरल

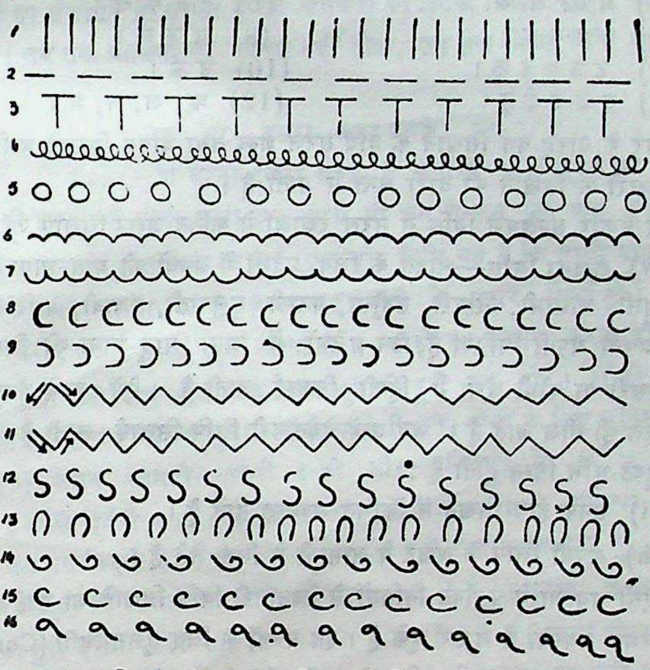

चित्र 12 : सरल रेखाओं के नमूने

(क) 1. सरल रेखाओं के नमूने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैं। सरलता की दृष्टि से वह वर्णमाला के अक्षरों को कई वर्गों में बांटता है। एक वर्ग को सिखाने के बाद दूसरे वर्ग को लेता है। गोलाकार अक्षरों की बारी सबसे पीछे आती है। एक वर्ग में मिलते-जुलते अक्षर रखे जाते हैं। उस वर्ग के अक्षरों से शब्द भी बनाए जाते हैं और कभी वाक्य भी। सरल रेखाओं के नमूने देने के बाद वर्णमाला के अक्षर वर्गों की सूची दी जाती है। सरल रेखाओं में अभ्यास होने के पश्चात् अक्षरों के लिखने में आसानी रहती है। हिन्दी वर्णमाला के सभी वर्ण इन्हीं सरल रेखाओं के योग से बनते हैं। किसी भी अक्षर को लीजिए, जैसे 'क' सिखाने से पहले चार प्रकार की रेखाओं के अभ्यास की आवश्यकता है—( ), जिनके समुचित प्रयोग से व, या क बनता है। इस प्रकार—( ), के योग से 'इ' बनता है। — ; Sc से ह बनता है। अक्षरों के वर्ग इस प्रकार दिए गए हैं कि एक वर्ग के अक्षर समान हैं। (जैसे-ग और म, ग से म बनाने में ग की दोनों लकीरों के बीच एक चौड़ी लकीर खींचती है) इस तरह धीरे-धीरे और वर्गों की कठिनाई उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

(ख) अक्षरों के वर्ग—

(1) प फ ष।	(2) ग म भ झ।
(3) त न ल।	(4) र ण स श ए ऐ।
(5) अ आ ओ औ अं अः	(6) व ब क ख।
(7) घ ध य थ।	(8) च ज ञ।
(9) ट ठ द ड छ।	(10) उ ऊ।
(11) ड ङ इ ई ह।	(12) ऋ, क्ष, त्र, ज्ञ।

ऊपर के बारह वर्ग सिखाने के बाद सरल शब्द तथा वाक्य सिखाने चाहिएं। संयुक्त अक्षरों के सिखाने की बारी अन्त में आती है।

इस प्रकार संश्लेषण विधि से सरल रेखाओं से कठिन अक्षर लिखाए जा सकते हैं।

(iv) तुलना विधि—भारत के जिन प्रदेशों में बच्चों की मातृ-भाषा हिन्दी नहीं वरन् बंगाली, आसामी, बिहारी, उड़ीसा, मराठी, गुजराती, पंजाबी, आदि अन्य भाषाएं जिनकी अपनी अपनी लिपियां हैं, उन प्रदेशों में प्रायः मातृ-भाषा की शिक्षा आरम्भ करके तीसरी या चौथी श्रेणी में हिन्दी सिखाई जाती है। ऐसे बच्चे मातृ-भाषा की लिपि पहले ही सीख जाते हैं। जब उन्हें देवनागरी लिपि सिखाई जाती है उस समय उनकी पृष्ठ-भूमि निम्न होती है :-

(i) उनके हाथ लिखने में किंचित् अभ्यस्त होते हैं।

(ii) अपनी लिपि के अक्षर वे आसानी से लिख लेते हैं।

ऐसी अवस्था में पूर्वोक्त विधियों से देवनागरी विधि सिखाने का कोई लाभ नहीं। वे प्रारम्भिक अवस्था से गुजर चुके हैं। इन बच्चों के लिए तुलनाविधि (Comparison Method) उपयुक्त है। तात्पर्य यह है कि देवनागरी लिपि के अक्षर बंगाली, गुजराती आदि लिपियों के अक्षरों से मिलते-जुलते हैं। (इन सब लिपियों की जन्मदात्री

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक प्राचीन ब्राह्मी लिपि है)। श्यामपट पर उनकी अपनी लिपि के प्रत्येक अक्षर के साथ सम्बन्धित देवनागरी के अक्षरों की सूची लिखी जा सकती है। बच्चे अपनी लिपि के अक्षरों से परिचित हैं। उन अक्षरों का सम्बन्ध तत्सम्बन्धी देवनागरी लिपि के अक्षरों से जोड़ते हैं। उनके साम्य और भेद दोनों को समझाने के बाद वे उस लिपि का अनुकरण करते हैं। देवनागरी लिपि सीखने के लिए अपनी लिपि के अक्षरों से सम्बन्धित अक्षरों का जानना, तुलना करके, साम्य और भेद पहचानना और अनुकरण करना पर्याप्त है।

§ 97. अक्षर रचना की सुन्दरता के साधन

(i) बैठने का ढंग।

(ii) लेखन सामग्री।

(iii) कलम पकड़ने का ढंग।

(iv) अक्षरों का लालित्य

(i) बैठने का ढंग—विदेशों में कुर्सी, मेज का प्रयोग है, परन्तु अभी हमें भूमि पर बैठकर लिखने पर ही संतोष करना चाहिए। अब तक की व्यवस्था यह रही है कि बच्चों को भूमि पर बिठाया जाता है। वे तख्ती को घुटने पर रखते हैं। इस व्यवस्था में थोड़ा सा संशोधन हो सकता है कि चौकियों का प्रबन्ध किया जाए। चौकी मेज का काम दे। जब तक चौकियों का प्रबन्ध नहीं होता, तब तक निम्न रीति का अनुकरण [illegible]

[illegible] टेक कर दूसरा खड़ा करके, उस [illegible] रखें। [illegible] अपना [illegible] यां घुटना टेकना अच्छा है क्योंकि बाए घुटने पर तख्ती रखने से रीढ़ की हड्डी भी सीधी रहती है। आंखें भी कम से कम एक फुट दूर रहती हैं। छाती झुका कर बैठना हानिकारक है। एक और विधि यह है कि तख्ती दाएं घुटने पर टिकी हो और उसका ऊपरी सिरा बाएं घुटने के सहारे टिका हो। परन्तु इस विधि से शरीर एक तरफ झुक जाता है। चौकी का प्रयोग करना हो तो तख्ती उस पर सीधी रखी जाए और वह एक फुट की दूरी पर हो। चौकी ढालुआ भी हो सकती है, समतल भी, ढालुआं चौकी पढ़ने लिखने दोनों के लिए सुविधाजनक है।

(ii) लेखन सामग्री—तख्ती हल्की और परिमाण में 9″ × 12″ होनी चाहिए। तख्ती खुर्दरी न हो। साधारण तख्तियों से रोगन वाली तख्तियां अच्छी हैं, क्योंकि उन पर मिट्टी से पोतने की आवश्यकता नहीं रहती और साथ ही काली स्याही के बदले मिट्टी की स्याही से भी लिखा जा सकता है। इस पुस्तक के लेखक ने काली रोगन की हुई तख्ती पर नरकट की लेखनी और मिट्टी से लिखना सीखा है। नरकट की लेखनी 1/5 इंच मोटी बनवानी चाहिए। इसकी जीभ 60° पर कटी होनी चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रुतलिपि का विषय—एक ऐसा गद्यांश जो समझने के लिए कठिन हो, अथवा जो बच्चे ने पहले ही पढ़ा हुआ हो। गद्यांश लम्बा न हो, दस पंक्तियों से कम ही हो।

श्रुतलिपि की विधि—

(i) अध्यापक एक अच्छे गद्यांश को चुने, जो न अधिक कठिन हो और न अधिक सरल। बच्चों की योग्यता के स्तर का हो।

(ii) अध्यापक बच्चों को अच्छी तरह से बिठाए। वह स्वयं कक्षा के सामने ठीक स्थान पर खड़ा रहे।

(iii) वह प्रत्येक विद्यार्थी की कापी, कलम दवात का निरीक्षण करे। श्रुतलिपि के लिए पृथक् कापी होनी चाहिए।

(iv) वह फिर प्रस्तुत गद्यांश धीरे-धीरे एक बार पढ़े। पढ़ते हुए वह यदि और विराम का ध्यान रखे। यदि कोई ऐसे शब्द हों, जो विद्यार्थी के लिए नए हों उनको श्यामपट पर भी लिखे।

(v) तत्पश्चात् उस गद्यांश को स्पष्ट बोल कर लिखाए। अध्यापक की आवाज़ पर्याप्त ऊंची हो। पढ़ने का ढंग ऐसा हो कि गद्यांश का सारा भाव समझ में आ जाए।

(vi) गद्यांश को लिखा चुकने पर, एक बार गद्यांश बोल कर दिया जाए कि छूट गए शब्द अथवा अशुद्ध लिखे गए शब्दों को ठीक कर सकें।

(vii) इसके उपरान्त संशोधन अथवा जांच होनी चाहिए। यदि बच्चों की संख्या थोड़ी हो तो प्रत्येक बच्चे को पास बुला कर उसकी लिखाई की जांच की जाए और उसकी अशुद्धियां उसके सामने शोधी जाएं। यदि संख्या बड़ी हो, तो अध्यापक संशोधन की निम्न विधियां अपना सकता है :—

(क) विद्यार्थियों को कहे कि वे पुस्तक के साथ तुलना करें और अशुद्धियों का संशोधन करें।

(ख) विद्यार्थियों को कहे कि वे अपनी कापियां एक दूसरे को दें, और एक-दूसरे की कापियों का संशोधन करें। अध्यापक स्वयं भी उनके काम की जांच करता रहे।

(ग) कापियां घर ले जाए और वहां उनका संशोधन करे। परन्तु यह विधि लाभदायक नहीं। ऊपर की दो विधियां आत्मपरीक्षा और परस्पर-परीक्षा में लाभदायक हैं।

(viii) बच्चों को उनकी अशुद्धियां दो-चार बार ठीक तरह से लिखने के लिए आदेश भी देना चाहिए।

§ 99. लिपि संशोधन

बच्चों की अनुलिपि, प्रतिलिपि तथा श्रुतलिपि को देखकर अध्यापक के सामने लिपि संशोधन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। संशोधन के बिना लिपि की शिक्षा अधूरी है। अध्यापक को चाहिए कि लिपि दोष के कारणों की जानकारी प्राप्त करे और उन को दूर करने के उपाय ढूढ ले। आगे लिपि के दो- कारण तथा दूर करने के उपाय बताए जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक प्राचीन ब्राह्मी लिपि है)। श्यामपट पर उनकी अपनी लिपि के प्रत्येक अक्षर के साथ सम्बन्धित देवनागरी के अक्षरों की सूची लिखी जा सकती है। बच्चे अपनी लिपि के अक्षरों से परिचित हैं। उन अक्षरों का सम्बन्ध तत्सम्बन्धी देवनागरी लिपि के अक्षरों से जोड़ते हैं। उनके साम्य और भेद दोनों को समझाने के बाद वे उस लिपि का अनुकरण करते हैं। देवनागरी लिपि सीखने के लिए अपनी लिपि के अक्षरों से सम्बन्धित अक्षरों का जानना, तुलना करके साम्य और भेद पहचानना और अनुकरण करना पर्याप्त है।

§ 97. अक्षर रचना की सुन्दरता के साधन

(i) **बैठने का ढंग।**

(ii) **लेखन सामग्री।**

(iii) **कलम पकड़ने का ढंग।**

(iv) **अक्षरों का लालित्य**

(i) **बैठने का ढंग**—विदेशों में कुर्सी, मेज का प्रयोग है, परन्तु अभी हमें भूमि पर बैठकर लिखने पर ही संतोष करना चाहिए। अब तक की व्यवस्था यह रही है कि बच्चों को भूमि पर बिठाया जाता है। वे तख्ती को घुटने पर रखते हैं। इस व्यवस्था में थोड़ा सा संशोधन हो सकता है कि चौकियों का प्रबन्ध किया जाए। चौकी मेज का काम दे। जब तक चौकियों का प्रबन्ध नहीं होता, तब तक निम्न रीति का अनुकरण क...

... टेक कर दूसरा खड़ा करके, उस ... रखें। ... ... यां घुटना टेकना अच्छा है क्योंकि ... घुटने पर तख्ती रखने से रीढ़ की हड्डी भी सीधी रहती है। आंखें भी कम से कम एक फुट दूर रहती हैं। छाती झुका कर बैठना हानिकारक है। एक और विधि यह है कि तख्ती दाएं घुटने पर टिकी हो और उसका ऊपरी सिरा बाएं घुटने के सहारे टिका हो। परन्तु इस विधि से शरीर एक तरफ झुक जाता है। चौकी का प्रयोग करना हो तो तख्ती उस पर सीधी रखी जाए और वह एक फुट की दूरी पर हो। चौकी ढालुआ भी हो सकती है, समतल भी, ढालुआं चौकी पढ़ने लिखने दोनों के लिए सुविधाजनक है।

(ii) **लेखन सामग्री**—तख्ती हल्की और परिमाण में $9'' \times 12''$ होनी चाहिए। तख्ती खुदरा न हो। साधारण तख्तियों से रोगन वाली तख्तियां अच्छी हैं, क्योंकि उन पर मिट्टी से पोतने की आवश्यकता नहीं रहती और साथ ही काली स्याही के बदले मिट्टी की स्याही से भी लिखा जा सकता है। इस पुस्तक के लेखक ने स्वयं रोगन की हुई तख्ती पर नरकट की लेखनी और मिट्टी से लिखना सीखा है। नरकट की लेखनी 1/5 इंच मोटी बनवानी चाहिए। इसकी जीभ 60° पर कटी होनी चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

श्रुतलिपि का विषय—एक ऐसा गद्यांश जो समझने के लिए कठिन हो, अथवा जो बच्चे ने पहले ही पढ़ा हुआ हो। गद्यांश लम्बा न हो, दस पंक्तियों से कम ही हो।

श्रुतलिपि की विधि—

(i) अध्यापक एक अच्छे गद्यांश को चुने, जो न अधिक कठिन हो और न अधिक सरल। बच्चों की योग्यता के स्तर का हो।

(ii) अध्यापक बच्चों को अच्छी तरह से बिठाए। वह स्वयं कक्षा के सामने ठीक स्थान पर खड़ा रहे।

(iii) वह प्रत्येक विद्यार्थी की कापी, कलम दवात का निरीक्षण करे। श्रुतलिपि के लिए पृथक् कापी होनी चाहिए।

(iv) वह फिर प्रस्तुत गद्यांश धीरे-धीरे एक बार पढ़े। पढ़ते हुए वह यदि और विराम का ध्यान रखे। यदि कोई ऐसे शब्द हों, जो विद्यार्थी के लिए नए हों उनको श्यामपट पर भी लिखे।

(v) तत्पश्चात् उस गद्यांश को स्पष्ट बोल कर लिखाए। अध्यापक की आवाज़ पर्याप्त ऊंची हो। पढ़ने का ढंग ऐसा हो कि गद्यांश का सारा भाव समझ में आ जाए।

(vi) गद्यांश को लिखा चुकने पर, एक बार गद्यांश बोल कर दिया जाए कि छूट गए शब्द अथवा अशुद्ध लिखे गए शब्दों को ठीक कर सकें।

(vii) इसके उपरान्त संशोधन अथवा जांच होनी चाहिए। यदि बच्चों की संख्या थोड़ी हो तो प्रत्येक बच्चे को पास बुला कर उसकी लिखाई की जांच की जाए और उसकी अशुद्धियां उसके सामने शोधी जाएं। यदि संख्या बड़ी हो, तो अध्यापक संशोधन की निम्न विधियां अपना सकता है :—

(क) विद्यार्थियों को कहे कि वे पुस्तक के साथ तुलना करें और अशुद्धियों का संशोधन करें।

(ख) विद्यार्थियों को कहे कि वे अपनी कापियां एक दूसरे को दें, और एक-दूसरे की कापियों का संशोधन करें। अध्यापक स्वयं भी उनके काम की जांच करता रहे।

(ग) कापियां घर ले जाए और वहां उनका संशोधन करे। परन्तु यह विधि लाभदायक नहीं। ऊपर की दो विधियां आत्मपरीक्षा और परस्पर-परीक्षा में लाभदायक हैं।

(viii) बच्चों को उनकी अशुद्धियां दो-चार बार ठीक तरह से लिखने के लिए आदेश भी देना चाहिए।

§ 99. लिपि संशोधन

बच्चों की अनुलिपि, प्रतिलिपि तथा श्रुतलिपि को देखकर अध्यापक के सामने लिपि संशोधन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। संशोधन के बिना लिपि की शिक्षा अधूरी है। अध्यापक को चाहिए कि लिपि दोष के कारणों की जानकारी प्राप्त करे और उन को दूर करने के उपाय ढूंढ ले। आगे लिपि के दोष, कारण तथा दूर करने के उपाय बताए जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) लिपि के दोषों के कारण तथा प्रकार—

(1) देवनागरी लिपि के अधूरे ज्ञान के कारण वर्णों और मात्राओं की अशुद्धियां जैसे—

(i) स्वरों पर ही मात्राओं का प्रयोग करना – अंक

ii) र और उ का अशुद्ध संयोग :— रु रू

(iii) रेफ की अशुद्धियां—निर्माण।

स्र्वगीय, विद्यार्थी स्वगीर्य

(iv) र का अशुद्ध संयोग :—ट्, न।

(v) क्, फ् और झ् का अशुद्ध संयोग।

(vi) द, ह, श, ट, ठ, ड, ढ और छ का अशुद्ध संयोग।

(vii) भ्रामक अक्षरों की अशुद्धियां।

भ और म, ध और घ, र व और ख

(viii) अनुनासिक, चन्द्रबिन्दु कौर अनुस्वार का अशुद्ध प्रयोग।

(2) असावधानी और शीघ्रता से अशुद्ध लिखना।

(3) घसीट लिखना।

(4) सुन्दरता और सुलेख की ओर कम ध्यान।

(ख) लिपि दोषों को दूर करने के उपाय—

(1) देवनागरी लिपि का पूरा ज्ञान देना। देवनागरी लिपि के सम्वन्ध में कई कठिनाइयां हैं, जिनके उदाहरण ऊपर दिये हैं। उन कठिनाइयों को दूर करना चाहिए। अधिक कठिनाइयां संयुक्त अक्षरों के सम्बन्ध में उत्पन्न होती हैं, उनकी व्याख्या श्यामपट पर करनी चाहिए।

(2) सावधानी से पाठ पढ़ना।

(3) लालित्य पर ज़ोर देना।

(4) घसीट के लिखने की आदत भूलना।

(5) बैठने तथा कलम पकड़ने का ढंग सिखाना।

(6) कापियों पर लाल स्याही से संशोधन करना और अशुद्धियों को समझाना

(7) लिपि के निम्न गुणों पर जोर देना चाहिए :—

(ग) लिपि के गुण

(i) जो लिखा जाए वह अच्छी प्रकार पढ़ा भी जाए, अर्थात् लिपि स्पष्ट हो।

(ii) लिपि सुन्दर, सुडौल तथा आकर्षक हो।

(iii) अक्षर सानुपात हों।

(iv) कागज के चारों ओर स्थान छूटा हो।

(v) शब्दों और पक्तियों के बीच उचित अन्तर हो।

(vii) लिखावट में गति और प्रवाह हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होते हैं। जब अक्षर लिखना आरम्भ करते हैं, तो किसी सिरे से आरम्भ करके किसी दिशा में कलम चलाते हैं। ई की ऊपर की रेफ की दो दिशाएं हैं—ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर। ज की भी दो दिशाएं हैं, बाईं से दाईं या दाईं से बाईं। ऐसी ही न की या च की। ऐसे ही भिन्न अक्षरों की विभिन्न दिशाएं नोट करें :—ई, क, च, ज, न, प, स। दिशा ऐसी अपनानी चाहिए कि लिखने में सुविधा हो।

(vii) अक्षरों का प्रत्येक अंग स्पष्ट लिखा जाना चाहिए। प्र को यदि प जैसा लिखें, तो अशुद्धि होगी।

(viii) समान आकार वाले अक्षरों को इस ढंग से लिखना चाहिए कि पढ़ने में गलती न हो। अतः निम्न अक्षरों को स्पष्ट रूप से लिखें—

भ और म, ध और घ, ख और र व, झ और फ, य और भ, य और थ।

(ix) अक्षरों की समानता छपे वर्णों से होनी चाहिए। लिखाई में छपे वर्णों से बहुत दूर नहीं जाना चाहिए।

(x) अक्षरों के बीच अन्तर बराबर-बराबर और ठीक होना चाहिए।

(xi) इसी प्रकार शब्दों के बीच का अन्तर बराबर हो।

(xii) ऐसे ही पंक्तियों के बीच का अन्तर पूरा बराबर होना चाहिए।

(xiii) दो अनुच्छेदों के बीच भी कुछ स्थान होना चाहिए।

(xiv) पंक्तियां सीधी हों, अर्थात् इनके सीधेपन (Alignment) पर ध्यान देना चाहिए। कई छात्र बाईं ओर से पंक्ति आरम्भ करते हुए, दाईं ओर बहुत नीचे चले जाते हैं।

(xv) लिखते समय अनुच्छेद का लिखित पंक्तियों के चारों ओर हाशिया (Margin) छोड़ना चाहिए।

(xvi) शब्द रचना या पंक्ति रचना में प्रवाह (flow) होना चाहिए इसके निमित्त यदि ऊपर की शिरो रेखा छोड़ी जाए तो कोई भी आपत्ति नहीं।

(xvii) लिखने की गति (Speed) उपयुक्त होनी चाहिए। प्रायः एक मिनट में 30 शब्द लिखे जा सकते हैं। यदि इससे कम शब्द लिखे जाएं तो लिखने का अभ्यास करवाना चाहिए और गति बढ़ानी चाहिए।

(xviii) अक्षरों का सुडौलपन, लालित्य और समान माप लिपि को सुन्दर और आकर्षक बनाता है।

(xix) देवनागरी मात्राओं और अक्षरों के रूपों का शुद्ध प्रयोग करना चाहिए। एक के बदले अेक लिखना अशुद्ध है। इसी प्रकार स्वर्गीय के बदले स्वगीर्य। अक्षरदण्ड का प्रयोग आवश्यक होना चाहिए।

(xx) प्रत्येक छात्र लिखने की अपनी स्वतन्त्र शैली का विकास करे। प्रारम्भिक अवस्था में केवल अभ्यास ही होगा, परन्तु माध्यमिक कक्षाओं में स्वतन्त्र लिपि शैली का विकास हो सकता हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) लिपि के दोषों के कारण तथा प्रकार—

(1) देवनागरी लिपि के अधूरे ज्ञान के कारण वर्णों और मात्राओं की अशुद्धियां जैसे—

(i) स्वरों पर ही मात्राओं का प्रयोग करना — अंक

(ii) र और उ का अशुद्ध संयोग :— रु रू

(iii) रेफ की अशुद्धियां—निर्माण।

स्वर्गीय, विद्यार्थी स्वगीर्य

(iv) र का अशुद्ध संयोग :—ट्र, न्र।

(v) क्, फ् और झ् का अशुद्ध संयोग।

(vi) द, ह, श, ट, ठ, ड, ढ और छ का अशुद्ध संयोग।

(vii) भ्रामक अक्षरों की अशुद्धियां।

भ और म, ध और घ, र व और ख

(viii) अनुनासिक, चन्द्रबिन्दु कौर अनुस्वार का अशुद्ध प्रयोग।

(2) असावधानी और शीघ्रता से अशुद्ध लिखना।

(3) घसीट लिखना।

(4) सुन्दरता और सुलेख की ओर कम ध्यान।

(ख) लिपि दोषों को दूर करने के उपाय—

(1) देवनागरी लिपि का पूरा ज्ञान देना। देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में कई कठिनाइयां हैं, जिनके उदाहरण ऊपर दिये हैं। उन कठिनाइयों को दूर करना चाहिए। अधिक कठिनाइयां संयुक्त अक्षरों के सम्बन्ध में उत्पन्न होती हैं, उनकी व्याख्या श्यामपट पर करनी चाहिए।

(2) सावधानी से पाठ पढ़ना।

(3) लालित्य पर ज़ोर देना।

(4) घसीट के लिखने की आदत भूलना।

(5) बैठने तथा कलम पकड़ने का ढंग सिखाना।

(6) कापियों पर लाल स्याही से संशोधन करना और अशुद्धियों को समझाना

(7) लिपि के निम्न गुणों पर जोर देना चाहिए :—

(ग) लिपि के गुण

(i) जो लिखा जाए वह अच्छी प्रकार पढ़ा भी जाए, अर्थात् लिपि स्पष्ट हो।

(ii) लिपि सुन्दर, सुडौल तथा आकर्षक हो।

(iii) अक्षर सानुपात हों।

(iv) कागज़ के चारों ओर स्थान छूटा हो।

(v) शब्दों और पंक्तियों के बीच उचित अन्तर हो।

(vii) लिखावट में गति और प्रवाह हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होते हैं। जब अक्षर लिखना आरम्भ करते हैं, तो किसी सिरे से आरम्भ करके किसी दिशा में कलम चलाते हैं। ई की ऊपर की रेफ की दो दिशाएं हैं—ऊपर से नीचे या नीचे से ऊपर। ज की भी दो दिशाएं हैं, बाईं से दाईं या दाईं से बाईं। ऐसी ही न की या च की। ऐसे ही भिन्न अक्षरों की विभिन्न दिशाएं नोट करें :—ई, क, च, ज, न, प, स। दिशा ऐसी अपनानी चाहिए कि लिखने में सुविधा हो।

(vii) अक्षरों का प्रत्येक अंग स्पष्ट लिखा जाना चाहिए। प्र को यदि प जैसा लिखें, तो अशुद्धि होगी।

(viii) समान आकार वाले अक्षरों को इस ढंग से लिखना चाहिए कि पढ़ने में गलती न हो। अतः निम्न अक्षरों को स्पष्ट रूप से लिखें—

भ और म, ध और घ, ख और र व, झ और फ, य और भ, य और थ।

(ix) अक्षरों की समानता छपे वर्णों से होनी चाहिए। लिखाई में छपे वर्णों से बहुत दूर नहीं जाना चाहिए।

(x) अक्षरों के बीच अन्तर बराबर-बराबर और ठीक होना चाहिए।

(xi) इसी प्रकार शब्दों के बीच का अन्तर बराबर हो।

(xii) ऐसे ही पंक्तियों के बीच का अन्तर पूरा बराबर होना चाहिए।

(xiii) दो अनुच्छेदों के बीच भी कुछ स्थान होना चाहिए।

(xiv) पंक्तियां सीधी हों, अर्थात् इनके सीधेपन (Alignment) पर ध्यान देना चाहिए। कई छात्र बाईं ओर से पंक्ति आरम्भ करते हुए, दाईं ओर बहुत नीचे चले जाते हैं।

(xv) लिखते समय अनुच्छेद का लिखित पंक्तियों के चारों ओर हाशिया (Margin) छोड़ना चाहिए।

(xvi) शब्द रचना या पंक्ति रचना में प्रवाह (flow) होना चाहिए इसके निमित्त यदि ऊपर की शिरो रेखा छोड़ी जाए तो कोई भी आपत्ति नहीं।

(xvii) लिखने की गति (Speed) उपयुक्त होनी चाहिए। प्रायः एक मिनट में 30 शब्द लिखे जा सकते हैं। यदि इससे कम शब्द लिखे जाएं तो लिखने का अभ्यास करवाना चाहिए और गति बढ़ानी चाहिए।

(xviii) अक्षरों का सुडौलपन, लालित्य और समान माप लिपि को सुन्दर और आकर्षक बनाता है।

(xix) देवनागरी मात्राओं और अक्षरों के रूपों का शुद्ध प्रयोग करना चाहिए। एक के बदले अेक लिखना अशुद्ध है। इसी प्रकार स्वर्गीय के बदले स्वगीर्य। अक्षरदण्ड का प्रयोग आवश्यक होना चाहिए।

(xx) प्रत्येक छात्र लिखने की अपनी स्वतन्त्र शैली का विकास करे। प्रारम्भिक अवस्था में केवल अभ्यास ही होगा, परन्तु माध्यमिक कक्षाओं में स्वतन्त्र लिपि शैली का विकास हो सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 104. लिपि शिक्षण की वर्तमान अवस्था—

प्राय: विद्यालयों में लिखाई पर जोर नहीं दिया जाता है, जिसके फलस्वरूप छात्रों की लिपि में मुख्य दोष पाए जाते हैं। लिपि सुन्दर और आकर्षक नहीं। बहुधा लिपि अस्पष्ट होती है। स्पष्ट लिपि की गति मन्द है। लिखाई में प्रवाह नहीं। असुन्दर और अस्पष्ट लिखाई के कारण भी कई छात्र परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं।

इस प्रकार की वर्तमान अवस्था के कई कारण हैं। (i) प्रथम, अध्यापकों का अज्ञान और आलस्य ठीक लिखाई में बाधक है। शिक्षक परिश्रम नहीं करना चाहते। (ii) दूसरी बात यह है कि अधिकतम विद्यालयों में लेखन सामग्री का अभाव है। कई स्कूलों में छात्रों के पास तख्ती भी नहीं होती। (iii) इसके अतिरिक्त छात्रों को उचित ढंग से बैठने, कलम पकड़ने और लिखने की मुद्रा के सम्बन्ध में कोई शिक्षा नहीं दी जाती। कई विद्यालयों में लिखने के लिए उचित वातावरण नहीं। न तो समय-सारिणी में लिखाई के लिए उचित समय निश्चित किया जाता है और न ही बैठने के लिए स्थान होता है। (V) शिक्षक लिपि सिखाने की उचित विधियों से अनभिज्ञ हैं।

वर्तमान अवस्था में सुधार लाने के लिए निम्न उपाय प्रयोग में लाने चाहिएं :—

(1) उचित लेखन सामग्री (जैसे चाक, रंग, रेत, कैंची, पैंसिल आदि) का पूरा प्रबन्ध होना चाहिए।

(2) प्रारम्भ में तख्ती और कलम का प्रयोग करवाना चाहिए ; प्राइमरी क्लासों में कलम और होल्डर का प्रयोग हो पैन का नहीं।

(3) लेखन और मुद्रा पर ध्यान देना चाहिए।

(4) विद्यालय में लिखने के लिए ठीक वातावरण उपस्थित करना चाहिए। लिखने के लिए उचित आसन हो। स्याही का तथा तख्ती धोने का प्रबन्ध हो। समय सारणी में न्यूनतम घण्टियों की व्यवस्था हो।

(5) शिक्षक उचित शिक्षण विधियों का प्रयोग करें जैसे संश्लेषण विधि, कलम चलाने की विधि, चित्र विधि और खेल-विधि।

(6) सुलेख की विधियों का प्रयोग करवाना चाहिए।

(7) लिपि का समय पर संशोधन होना चाहिए।

(8) सुलेख का अभ्यास पुस्तिकाओं के प्रयोग से करवाना चाहिए।

(9) कालांतर में या समय-समय पर सुलेख का मूल्यांकन करना चाहिए। सुलेख विकास माप (Hardworking scale) का प्रयोग करना चाहिए।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. पहली श्रेणी को लिखाई सिखाने के लिए आप किस विधि का अनुसरण करेंगे ?

2. लिपि की शिक्षा में श्रुतलिपि का महत्त्व है। श्रुतलिपि के एक पाठ का ब्यौरा दीजिए। (§ 98)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) उंगली के बहुवचन में अन्तिम ई स्थान पर इ होकर उंगलियां बनता है (उंगलीयां अशुद्ध)

(iii) चाकू के बहुवचन में अन्तिम अ के स्थान पर उ होकर चाकुओं बनता है (चाकूओं नहीं)।

(च) **बौद्धिक न्यूनता**—जिन छात्रों में बौद्धिक न्यूनता के कारण भाषा के अधिगम में कमी रहती है वे भाषा के प्रत्येक में और अक्षर विन्यास में भी कमज़ोर रहते हैं।

§ 106 अशुद्धियों के प्रकार—

नीचे अक्षर-विन्यास या वर्तनी की अशुद्धियों को विभिन्न वर्गों में बांटा गया है। प्रत्येक वर्ग में ऐसे साधारण शब्द दिए गए हैं, जो प्रायः अशुद्ध लिखे जाते हैं। शब्दों के शुद्ध और अशुद्ध दोनों रूप दिए गए हैं। शुद्ध रूप को बार-बार पढ़ना चाहिए, जिससे वह मस्तिष्क में अंकित हो जाएं। प्रत्येक वर्ग के और भी कितने ही शब्द अशुद्ध लिखे जाते हैं। उनकी सूची स्वयं बनानी चाहिए।

(1) मात्राओं की अशुद्धियां—

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
रुपये	रुपये	रूप	रूप
उंगली	अुंगली	एक	अेक

(2) रेफ की अशुद्धियां—

खर्चा	खंर्चा	निर्दोष	र्निदोष
स्वर्गीय	र्स्वगीय	निर्माण	र्निमाण
विद्यार्थी	विद्यर्थी	वार्षिक	र्वाषिक

(3) संयुक्त र

मित्र	मितर	मन्त्री	मन्तरी
प्रताप	परताप	प्रधान	परधान

(4) संयुक्त अक्षर

शक्ति	शकति	रक्षा	रख्या
शुद्ध	शुध	उद्योग	उदयोग
विद्या	विदया	विद्वान्	विदवान
आश्रय	आशरय	श्वास	शवास
तुम्हारा	तमहारा	ज्ञान	ग्यान
आज्ञाकारी	आग्याकारी		

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 104. लिपि शिक्षण की वर्तमान अवस्था—

प्राय: विद्यालयों में लिखाई पर जोर नहीं दिया जाता है, जिसके फलस्वरूप छात्रों की लिपि में मुख्य दोष पाए जाते हैं। लिपि सुन्दर और आकर्षक नहीं। बहुधा लिपि अस्पष्ट होती है। स्पष्ट लिपि की गति मन्द है। लिखाई में प्रवाह नहीं। असुन्दर और अस्पष्ट लिखाई के कारण भी कई छात्र परीक्षा में अनुत्तीर्ण हो जाते हैं।

इस प्रकार की वर्तमान अवस्था के कई कारण हैं। (i) प्रथम, अध्यापकों का अज्ञान और आलस्य ठीक लिखाई में बाधक है। शिक्षक परिश्रम नहीं करना चाहते। (ii) दूसरी बात यह है कि अधिकतम विद्यालयों में लेखन सामग्री का अभाव है। कई स्कूलों में छात्रों के पास तख्ती भी नहीं होती। (iii) इसके अतिरिक्त छात्रों को उचित ढंग से बैठने, कलम पकड़ने और लिखने की मुद्रा के सम्बन्ध में कोई शिक्षा नहीं दी जाती। कई विद्यालयों में लिखने के लिए उचित वातावरण नहीं। न तो समय-सारिणी में लिखाई के लिए उचित समय निश्चित किया जाता है और न ही बैठने के लिए स्थान होता है। (V) शिक्षक लिपि सिखाने की उचित विधियों से अनभिज्ञ हैं।

वर्तमान अवस्था में सुधार लाने के लिए निम्न उपाय प्रयोग में लाने चाहिएं :—

(1) उचित लेखन सामग्री (जैसे चाक, रंग, रेत, कैंची, पैन्सिल आदि) का पूरा प्रबन्ध होना चाहिए।

(2) प्रारम्भ में तख्ती और कलम का प्रयोग करवाना चाहिए ; प्राइमरी क्लासों में कलम और होल्डर का प्रयोग हो पैन का नहीं।

(3) लेखन और मुद्रा पर ध्यान देना चाहिए।

(4) विद्यालय में लिखने के लिए ठीक वातावरण उपस्थित करना चाहिए। लिखने के लिए उचित आसन हो। स्याही का तथा तख्ती धोने का प्रबन्ध हो। समय सारणी में न्यूनतम घण्टियों की व्यवस्था हो।

(5) शिक्षक उचित शिक्षण विधियों का प्रयोग करें जैसे संश्लेषण विधि, कलम चलाने की विधि, चित्र विधि और खेल-विधि।

(6) सुलेख की विधियों का प्रयोग करवाना चाहिए।

(7) लिपि का समय पर संशोधन होना चाहिए।

(8) सुलेख का अभ्यास पुस्तिकाओं के प्रयोग से करवाना चाहिए।

(9) कालांतर में या समय-समय पर सुलेख का मूल्यांकन करना चाहिए। सुलेख विकास माप (Hardworking scale) का प्रयोग करना चाहिए।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. पहली श्रेणी को लिखाई सिखाने के लिए आप किस विधि का अनुसरण करेंगे ?

2. लिपि की शिक्षा में श्रुतलिपि का महत्त्व है। श्रुतलिपि के एक पाठ का ब्यौरा दीजिए। (§ 98)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) उंगली के बहुवचन में अन्तिम ई स्थान पर इ होकर उंगलियां बनता है (उंगलीयां अशुद्ध)

(iii) चाकू के बहुवचन में अन्तिम अ के स्थान पर उ होकर चाकुओं बनता है (चाकूओं नहीं)।

(च) **बौद्धिक न्यूनता**—जिन छात्रों में बौद्धिक न्यूनता के कारण भाषा के अधिगम में कमी रहती है वे भाषा के प्रत्येक में और अक्षर विन्यास में भी कमज़ोर रहते हैं।

§ 106 अशुद्धियों के प्रकार—

नीचे अक्षर-विन्यास या वर्तनी की अशुद्धियों को विभिन्न वर्गों में बांटा गया है। प्रत्येक वर्ग में ऐसे साधारण शब्द दिए गए हैं, जो प्राय: अशुद्ध लिखे जाते हैं। शब्दों के शुद्ध और अशुद्ध दोनों रूप दिए गए हैं। शुद्ध रूप को बार-बार पढ़ना चाहिए, जिससे वह मस्तिष्क में अंकित हो जाएं। प्रत्येक वर्ग के और भी कितने ही शब्द अशुद्ध लिखे जाते हैं। उनकी सूची स्वयं बनानी चाहिए।

(1) मात्राओं की अशुद्धियां—

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
रुपये	रुपये	रूप	रूप
उंगली	अुंगली	एक	अेक

(2) रेफ की अशुद्धियां—

खर्चा	खंर्चा	निर्दोष	निदोष
स्वर्गीय	स्र्वगीय	निर्माण	निमाण
विद्यार्थी	विर्द्यार्थी	वार्षिक	वाषिक

(3) संयुक्त र

मित्र	मितर	मन्त्री	मन्तरी
प्रताप	परताप	प्रधान	परधान

(4) संयुक्त अक्षर

शक्ति	शकति	रक्षा	रख्या
शुद्ध	शुध	उद्योग	उदयोग
विद्या	विदया	विद्वान्	विदवान
आश्रय	आशरय	श्वास	शवास
तुम्हारा	तमहारा	ज्ञान	ग्यान
आज्ञाकारी	आग्याकारी		

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Vidhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(5) अनुनासिक और अनुस्वार –

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अंक, अङ्क	अन्क	जंगल, जङ्गल	जन्गल
पांच, पाञ्च	पान्च	झण्डा, झंडा	झन्डा
तुम्हारा	तुंहारा	कुंवारी	कुम्वारी
संसद्	संसद	अहिंसा	अहिन्सा

(6) इ और ई, उ और ऊ, ए और ऐ का भ्रम

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
चिकित्सा	चिकीत्सा	लिपि	लिपी
हिन्दी	हिन्दि	विद्यार्थी	विद्यार्थि
प्रकृति	प्रकृती	शान्ति	शान्ती
उन्नति	उन्नती	कवि	कवी
नदियां	नदीयां	परिचय	परीचय
बीमार	विमार	ईश्वर	इश्वर
स्वामी	स्वामि	तीर्थ	तिर्थ
दुःख	दूख	परीक्षा	परिक्षा
हेतु	हेतू	सुन्दर	सुन्द्र-संुदर
		किन्तु	किन्तू
मनुष्य	मनूष्य	मूल्य	मुल्य
मूर्ख	मूर्ख	आंसू	आंसु
अपर्व	अपुर्व	सन्दूक	सन्दुक
किए	किऐ	एक	ऐक
क्योंकि	क्योकि	दौलत	दोलत

(7) चन्द्रबिन्दु और अनुस्वर का भ्रम—

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अंधा	अँधा	संस्कृति	सँस्कृति
प्रांत	प्राँत	नदियां	नदियाँ
हँसी	हंसी	भौंरा	भौंरा

(8) ऋ, र औ अर का भ्रम—

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ऋषि	रिषि	कृत	क्रित
कृषक	क्रिषक	पृथक्	प्रथक
हृदय	हिरदय	दृश्य	द्रश्य
प्रकार	परकार	राष्ट्र	राष्टर
छात्र	छातर	श्रीमान्	सिरमान
पूर्ण	पूरण	स्वर्ग	स्वरग
अर्थात्	अरथात	दर्शन	दर्शण
नरक	नर्क	मर्यादा	मरियादा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 107. हिन्दी अक्षर विन्यास मानक पद्धति

विभिन्न राज्यों में हिन्दी के बढ़ते हुए प्रयोग के साथ-साथ हिन्दी अक्षर विन्यास में भी स्थानीय या प्रादेशिक अन्तर आना स्वाभाविक है। इसलिए अधिकाधिक एक-रूपता लाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। केन्द्रीय सरकार ने 1961 में एक मान पद्धति निर्धारित करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति स्थापित की, जिसकी सिफारिशें नीचे दी जाती हैं—

1. ने, को, आदि विभक्ति चिन्ह अलग लिखे जाएं जैसे 'राम ने', 'शाम को', 'बालक से'।

परन्तु सर्वनामों के साथ इकट्ठे हों जैसे 'उससे', 'मुझको', 'उसके लिए', 'उसमें से'।

यदि 'ही' या 'तक' बीच में आए तो पृथक् लिखा जाए, जैसे 'आप ही के लिए', 'मुझ तक को'।

2. 'सा', जैसा के पूर्व हाइफन हो जैसे 'तुम-सा'

3. गये, न थी, हुवा आदि के बदले गए, नई, हुआ लिखा जाए।

4. द्वन्द्व समास में हाइफन रखा जाए जैसे राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती संवाद। तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग वहीं पर किया जाए जहां भ्रम होने की सम्भावना हो जैसे, भू-तत्व।

5. पूर्वकालिक 'कर' प्रत्यय क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, जैसे, मिलाकर, खा-पीकर, रो-रोकर।

6. अंगभूत क्रियाएं पृथक-पृथक् लिखी जाएं; जैसे पढ़ा करता है, आ सकता है।

7. हल् का प्रयोग संस्कृत तत्सम शब्दों में किया जाए, परन्तु कई शब्दों में हलन्त चिह्न लुप्त हो चुका है जैसे 'महान्', विद्वान्'।

8. चन्द्रबिन्दु और अनुस्वार का प्रयोग विकल्प से किया जाए। छापे की सुविधा के लिए अनुस्वार भी ठीक है जैसे हंस, अंगना, परन्तु छोटे बच्चों को शुद्ध उच्चारण चन्द्रबिन्दु से ही लिखाया जा सकता है।

9. जहां पंचअक्षर के बाद उसी के वर्ग के पर शेष वर्णों में से कई वर्ण हों वहां अनुस्वर का ही प्रयोग किया जाए, जैसे अन्त, [illegible]य, गंगा, सम्पादक, सम्पति, साम्य, वाङ्मय।

10 अरबी फारसी ध्वनियों के [illegible] नुक्ते लगाए जाएं, जैसे, 'राज़', 'नाज़'। परन्तु कई ध्वनियों का हिन्दी रूपान्तर हो चुका है, जैसे 'जरूर'।

11. विसर्ग का प्रयोग संस्कृत तत्सम शब्दों के साथ किया जाए; जैसे 'दुःखानुभूति'। परन्तु तद्भव रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल सकता है; जैसे दुःख-सुख के साथी, अधःपतन, अंतःसाक्ष्य, पुनःपुनः।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(5) अनुनासिक और अनुस्वार –

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अंक, अङ्क	अन्क	जंगल, जङ्गल	जन्गल, जन्गल
पांच, पाञ्च	पान्च	झण्डा, झंडा	झन्डा
तुम्हारा	तुंहारा	कंवारी	कुम्वारी
संसद्	संसद	अहिंसा	अहिन्सा

(6) इ और ई, उ और ऊ, ए और ऐ का भ्रम

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
चिकित्सा	चिकीत्सा	लिपि	लिपी
हिन्दी	हिन्दि	विद्यार्थी	विद्यार्थि
प्रकृति	प्रकृती	शान्ति	शान्ती
उन्नति	उन्नती	कवि	कवी
नदियां	नदीयां	परिचय	परीचय
बीमार	बिमार	ईश्वर	इश्वर
स्वामी	स्वामि	तीर्थ	तिर्थ
दुःख	दूख	परीक्षा	परिक्षा
हेतु	हेतू	सुन्दर	सुन्द्र-सुंदर
		किन्तु	किन्तू
मनुष्य	मनूष्य	मूल्य	मुल्य
मूर्ख	मूर्ख	आंसू	आंसु
अपूर्व	अपूर्व	सन्दूक	सन्दुक
किए	किए	एक	ऐक
क्योंकि	क्यौंकि	दौलत	दोलत

(7) चन्द्रबिन्दु और अनुस्वार का भ्रम—

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
अंधा	अँधा	संस्कृति	सँस्कृति
प्रांत	प्राँत	नदियां	नदियाँ
हँसी	हंसी	भौंरा	भौँरा

(8) ऋ, र औ अर का भ्रम—

शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध
ऋषि	रिषि	कृत	क्रित
कृषक	क्रिषक	पृथक्	प्रथक
हृदय	हिरदय	दृश्य	द्रश्य
प्रकार	परकार	राष्ट्र	राष्टर
छात्र	छातर	श्रीमान्	सिरमान
पूर्ण	पूरण	स्वर्ग	स्वरग
अर्थात्	अरथात	दर्शन	दर्शण
नरक	नर्क	मर्यादा	मरियादा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 107. हिन्दी अक्षर विन्यास मानक पद्धति

विभिन्न राज्यों में हिन्दी के बढ़ते हुए प्रयोग के साथ-साथ हिन्दी अक्षर विन्यास में भी स्थानीय या प्रादेशिक अन्तर आना स्वाभाविक है। इसलिए अधिकाधिक एकरूपता लाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। केन्द्रीय सरकार ने 1961 में एक मान पद्धति निर्धारित करने के लिए एक विशेषज्ञ समिति स्थापित की, जिसकी सिफारिशें नीचे दी जाती हैं--

1. ने, को, आदि विभक्ति चिन्ह अलग लिखे जाएं जैसे 'राम ने', 'शाम को', 'बालक से'।

परन्तु सर्वनामों के साथ इकट्ठे हों जैसे 'उससे', 'मुझको', 'उसके लिए', 'उसमें से'।

यदि 'ही' या 'तक' बीच में आए तो पृथक् लिखा जाए, जैसे 'आप ही के लिए', 'मुझ तक को'।

2. 'सा', जैसा के पूर्व हाइफन हो जैसे 'तुम-सा'

3. गये, न थी, हुवा आदि के बदले गए, नई, हुआ लिखा जाए।

4. द्वन्द्व समास में हाइफन रखा जाए जैसे राम-लक्ष्मण, शिव-पार्वती संवाद। तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग वहीं पर किया जाए जहां भ्रम होने की सम्भावना हो जैसे, भू-तत्व।

5. पूर्वकालिक 'कर' प्रत्यय क्रिया से मिलाकर लिखा जाए, जैसे, मिलाकर, खा-पीकर, रो-रोकर।

6. अंगभूत क्रियाएं पृथक-पृथक् लिखी जाएं; जैसे पढ़ा करता है, आ सकता है।

7. हल् का प्रयोग संस्कृत तत्सम शब्दों में किया जाए, परन्तु कई शब्दों में हलन्त चिह्न लुप्त हो चुका है जैसे 'महान्', विद्वान्'।

8. चन्द्रबिन्दु और अनुस्वार का प्रयोग विकल्प से किया जाए। छापे की सुविधा के लिए अनुस्वार भी ठीक है जैसे हंस, अंगना, परन्तु छोटे बच्चों को शुद्ध उच्चारण चन्द्रबिन्दु से ही लिखाया जा सकता है।

9. जहां पंचअक्षर के बाद उसी के वर्ग के चार शेष वर्णों में से कई वर्ण हों वहां अनुस्वर का ही प्रयोग किया जाए; जैसे अन्त, [illegible]य, गंगा, सम्पादक, सम्मति, साम्य, वाङ्मय।

10 अरबी फारसी ध्वनियों के साथ नुक्ते लगाए जाएं, जैसे, 'राज़', 'नाज़'। परन्तु कई ध्वनियों का हिन्दी रूपान्तर हो चुका है, जैसे 'जरूर'।

11. विसर्ग का प्रयोग संस्कृत तत्सम शब्दों के साथ किया जाए, जैसे 'दु:खानुभूति'। परन्तु तद्भव रूप में विसर्ग के बिना भी काम चल सकता है; जैसे दु:ख-सुख के साथी, अध:पतन, अंत:साक्ष्य, पुन:पुन:।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12. अंग्रेजी शब्दों में ॉ की मात्रा लगा दी जाए 'डॉक्टर, 'ऑनरेरी।

§ 108. अक्षर विन्यास की अशुद्धियां दूर करने के उपाय—

1. **उच्चारण को शुद्ध करना**—अक्षर-विन्यास की अशुद्धियों का सबसे बड़ा कारण है, अशुद्ध उच्चारण। प्राय: विद्यार्थी शब्दों का शुद्ध उच्चारण नहीं जानते और जैसे उन शब्दों का अशुद्ध उच्चारण करते हैं, वैसे अशुद्ध लिखते भी हैं। अल्पप्राण और महाप्राण, ह्रस्व और दीर्घ, न और दीर्घ ण, श और ष, र और ऋ, ड और ड़ आदि वर्णों का भ्रम अशुद्ध अक्षरों के लिए भी उत्तरदायी है, अत: अध्यापक का प्रथम कर्त्तव्य है कि वह विद्यार्थियों की उच्चारण की अशुद्धियां दूर करने से कितने अक्षर विन्यास की अशुद्धियां दूर हो जाती है।

(2) **लिपि का पूरा ज्ञान देना** देवनागरी लिपि यद्यपि वैज्ञानिक है, फिर भी इसमें कई विचित्रताएं हैं जिनके कारण अक्षर-विन्यास में अशुद्धियां हो जाती हैं। 'ि' मात्रा का व्यंजन से पहले लिखा। '्' मात्रा 'र' के साथ जोड़ने पर 'रु' बन 'जाना' रेफ का व्यंजन के ऊपर लिखा जाना और कभी उससे बहुत दूर लिखा जाना। जैसे 'विद्यार्थी' शब्द में, व्यंजनों का 'र' के साथ संयुक्त होने पर भिन्न-भिन्न धारण करना, क, द, ह, श, और टवर्ग का भिन्न-भिन्न प्रकार से संयुक्त होना आदि कई कठिनाइयां हैं।

इन कठिनायों को दूर करने के लिए अध्यापक को देवानागरी लिपि की पूरी शिक्षा देनी चाहिए। सभी संयुक्त अक्षरों के रूप समान होने चाहिएं।

(2) **सावधानी से पढ़ने और लिखने पर बल देना**—शुद्ध अक्षर-विन्यास सीखने के लिए विद्यार्थियों को पुस्तक में छपे हुए प्रत्येक शब्द को ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए। उस शब्द के प्रत्येक अक्षर का निरीक्षण करना चाहिए और लिखते समय भी प्रत्येक अक्षर को ध्यानपूर्वक लिखना चाहिए। असावधानी से लिखने और पढ़ने से अशुद्धिया दूर अधिक हो जाती हैं। पैनी दृष्टि अथवा सावधानी, अक्षर-विन्यास की अशुद्धियां दूर करने के लिए प्रबल उपाय हैं।

(4) **विश्लेषण विधि का प्रयोग**—कठिन शब्दों की ध्वनियों का विश्लेषण करके प्रत्येक खण्ड को स्पष्ट रीति से लिखना चाहिए, जैसे—

हृदय = ह् + ऋ + द् + अ + य् + अ

चिकित्सा = च् + इ + क् + इ + त् + स् + आ

सम्मिलित = स् + अ + म् + म् + इ + ल् + इ + त् + अ

कभी प्रत्येक वर्ण को पृथक् लिखा जाए, जैसे—

क + व + यि + त्री = कवयित्री

वै + यक् + तिक् = वैयक्तिक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क+ठि+ना+इ+यों = कठिनाइयों

(5) **अनुलिपि और श्रुतलिपि का अभ्यास**—प्रारम्भिक कक्षाओं में अक्षर-विन्यास की अशुद्धियां दूर करने के लिए पहले अनुलिपि, तत्पश्चात् श्रुतलिपि बहुत सहायक है। मिडिल कक्षाओं में श्रुतलिपि का प्रयोग किया जा सकता है। यदि विद्यार्थी कठिन शब्दों को शुद्धरूप में लिख सकते हों तो श्रुत-लिपि और लिखे हुए अक्षरों के संशोधन से इस दिशा में प्रगति हो सकती है।

(6) **कोष का बहु प्रयोग**—विद्यार्थियों को कोष का प्रयोग सिखाना चाहिए। उन्हें कठिनाई आने पर या कठिन शब्द के उपस्थित होने पर कोष का प्रयोग करने के लिए आदेश देना चाहिए।

(7) **शब्द युग्मों का अर्थ-भेद बताना**—हिन्दी में कई ऐसे शब्द हैं जो उच्चारण में साम्य रखते हैं, परन्तु अर्थ और अक्षर-विन्यास की दृष्टि से अलग-अलग हैं, जैसे प्रणाम=प्रमाण, परिमाण—परिणाम, सुर—स्वर—सूर, अपमान-उपमान।

(8) **लिखाई का संशोधन** रचना का संशोधन करना अध्यापक का परम कर्त्तव्य है। सशोधन के बिना अक्षर-विन्यास तथा व्याकरण आदि की अशुद्धियों की आवृत्ति हो सकती है। अध्यापक को चाहिए कि वह साथ-साथ रचना कार्य का संशोधन करता रहे, और अक्षर-विन्यास की अशुद्धियों को उन्हें समझाए।

(9) **मूल्यांकन करना** कभी-कभी छात्रों को अक्षर-विन्यास के सम्बन्ध में जांच-पत्र देने चाहिएं जैसे—

प्रश्न 1. नीचे कई शब्द दिए गए हैं, उनका शुद्ध रूप कोष्ठक में लिखें :—

स्वंगय ( ), एतिहास ( )

मनुश्य ( ), आख ( )

प्रशग 2. नीचे एक-एक शब्द के तीन-तीन रूप दिए गए हैं। शुद्ध रूप कोष्ठक में लिखें—

(i) ब्राह्मण, ब्रम्हन, ब्राह्मन ( )

(ii) उत्तीर्ण, उतीरण, उत्तीरण ( )

(10) **अक्षर-विन्यास का अर्थ के साथ सम्बन्ध जोड़ना**—शब्दों का अक्षर याद करवाने से कोई लाभ नहीं, जब तक उन शब्दों का अर्थ स्पष्ट न हो। प्राय: शब्द समान अक्षर-विन्यास याद करवाया जा सकता है।

(11) अक्ष **विन्यास नोट बुक**—विद्यार्थी को एक अक्षर-विन्यास नोट बुक पास रखने पर जोर देना चाहिए, इस नोट बुक पर वे कठिन शब्द तथा उनके अर्थ लिखें। बार-बार उन शब्दों पर ध्यान देने से अक्षर-विन्यास का शुद्ध ज्ञान हो सकता है।

(12) **साधारण अशुद्धियों का वर्गीकरण**—अध्यापक कक्षा में विद्यार्थियों द्वारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रदर्शित सभी अशुद्धियों का संग्रह करके उनका वर्गीकरण कर सकता है। उच्चारण की अशुद्धियां कौन-सी हैं? लिपि की अशुद्धियां कौन सी हैं? महाप्राण की अशुद्धियां कौन-सी हैं? श—ष की अशुद्धियां कौन-सी हैं इत्यादि। वर्गीकरण के पश्चात् वह प्रत्येक वर्ग की सभी अशुद्धियों को श्यामपट पर एक साथ समझा सकता है। इससे विद्यार्थी उन वर्गों की सभी अशुद्धियों से बच सकते हैं।

(13) **अक्षरों के खेल**—अध्यापक 'खेल द्वारा शिक्षण' का सिद्धान्त अक्षर-विन्यास में भी लागू कर सकता है। वह शब्द-रचना (Word building अन्त्याक्षरी आदि खेलों द्वारा शुद्ध विद्यार्थी को अक्षर-विन्यास का ज्ञान करा सकता है।

(14) **प्रत्येक विद्यार्थी की कठिनाई पर वैयक्तिक ध्यान देना**— विद्यार्थियों की अक्षर-विन्यास की कठिनाइयां भिन्न-भिन्न प्रकार की होती हैं। इसलिए उन पर वैयक्तिक ध्यान देना चाहिए। सर्वसाधारण कठिनाइयों को समझाने के अतिरिक्त वैयक्तिक कठिनाइयों को भी समझाना चाहिए।

(15) **अक्षर-विन्यास के चित्रों का प्रयोग**—अक्षर-विन्यास के लिए दृश्य-श्रव्य साधनों का प्रयोग करना चाहिए। श्यामपट पर कठिन शब्दों का विश्लेषण करना चाहिये। ऐसे प्रयोगों के जिन में भ्रम होने की सम्भावना है, चित्र उपस्थित करने चाहिएं जैसे न और ण का प्रयोग, श और ष का प्रयोग। उदाहरण के लिए न और ण के प्रयोग का एक चित्र नीचे उपस्थित किया जाता है।

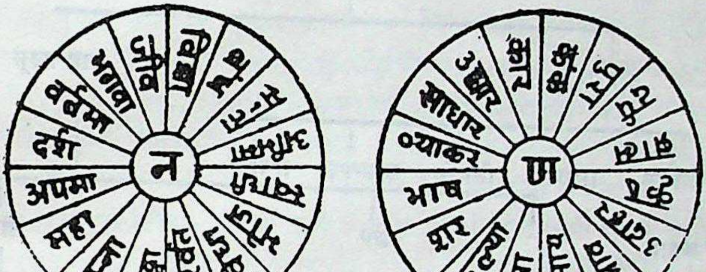

चित्र 13 अक्षर-विन्यास के चित्र

उपर्युक्त उपायों से अक्षर विन्यास की अशुद्धियां दूर की जा सकती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. हिन्दी के विद्यार्थी अक्षर-विन्यास की अशुद्धियां क्यों करते हैं ? इसके विभिन्न कारणों का निदान कीजिए, और साथ ही दूर करने के उपायों का वर्णन कीजिए । [§ 105, 160, 108]

2. प्राइमरी, मिडिल तया हाई कक्षाओं के विद्यार्थियों को 500 सर्वसामान्य अक्षर-विन्यास की अशुद्धियों का संकलन कीजिए । उनके संभाव्य कारणों की खोज कीजिए, और दूर करने के उपाय बताइए ।

सहायक पुस्तकें

1. रघुनाथ सफाया — हिन्दी अक्षर विन्यास (पंजाब किताब घर, जालन्धर)
2. रामस्वरूप कौशल — शुद्ध लिखाई (स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कम्पनी अम्बाला)
3. हिन्दी वर्त्तनी — Govt. Central Pedagogical Institute, Allahabad.
4. Schone' — Backwardness in Basic School Subjects Ch. Backwardness in Spelling.

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

18

गद्य पाठ की शिक्षा

§ 109. पाठ्य-पुस्तक में गद्य का स्थान--

भाषा शिक्षण के लिए दो प्रकार की पाठ्य-पुस्तकें आवश्यक हैं, एक सूक्ष्म पाठ का गम्भीर अध्ययन के लिए और दूसरी द्रुतपाठ या शीघ्र अध्ययन के लिए। सूक्ष्मपाठ (Intensive Reading) और द्रुतपाठ (Extensive Reading) दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

द्रुतपाठ के लिए जो सहायक पुस्तकें (Rapid Reading or Supplementary Readers) पढ़ाई जाती हैं उनका विवरण आगे द्रुतपाठ के प्रकरण में होगा, यहाँ हमारा सम्बन्ध सूक्ष्म पाठ की पाठ्य-पुस्तकों के साथ है। इन पाठ्य-पुस्तकों में भी तीन प्रकार के पाठ होते हैं गद्य, पद्य और नाटक। गद्य-भाग में कथा-कहानी, निबन्ध, जीवनी, यात्रा वर्णन, पत्र, आलोचना आदि, विभिन्न-विषय होते हैं, निम्न तालिका से यह स्पष्ट होगा।

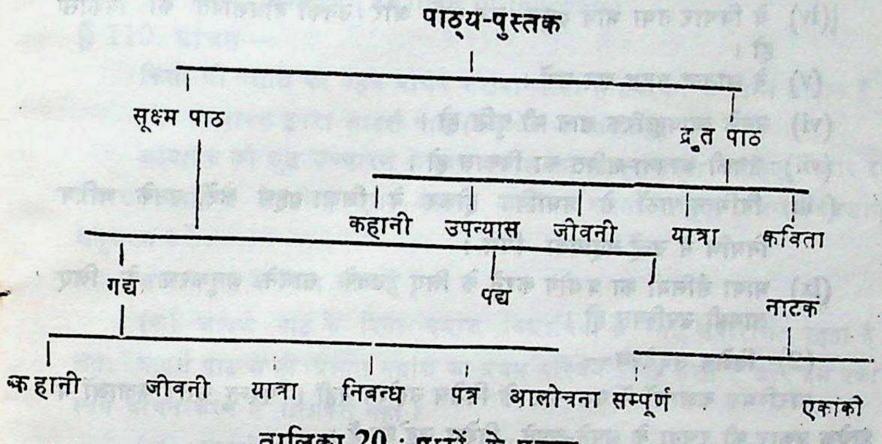

तालिका 20 : पाठों के प्रकार

प्रस्तुत प्रकरण में हम सूक्ष्म गद्य पाठ की शिक्षा पर विचार करेंगे।

गद्य की शिक्षा का उद्देश्य

गद्य की शिक्षा के दो प्रकार के उद्देश्य हैं—सामान्य और विशेष। सामान्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गद्य की प्रत्येक प्रकार की रचना, कहानी, निबन्ध आदि में सर्दसाधारण है । इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रकार की रचना में अपने-अपने विशेष उद्देश्य हैं । पहले सामान्य उद्देश्य लेते हैं । सामान्य उद्देश्य भी प्रथम कक्षाओं में, शेष कक्षाओं की अपेक्षा भिन्न हैं । दोनों अवस्थाओं में उद्देश्यों का उल्लेख पृथक् किया जाता है ।

(1) सामान्य उद्‌देश्य

(क) प्रारम्भिक दो कक्षाओं में निम्न उद्देश्य होते हैं—

(i) लिपि का ज्ञान उत्पन्न करना ।

(ii) आधार-भूत शब्दावली ज्ञान सम्पन्न करना ।

(iii) साधारण वाक्यों को समझाने की योग्यता पैदा करना ।

(iv) कहानी, छोटे लेख आदि का भाव तथा अर्थ भली-भांति समझाने की योग्यता उत्पन्न करना ।

(v) पढ़ने में आनन्द उत्पन्न करना ।

(vi) काल्पनिक कक्षाओं द्वारा कल्पना-शक्ति बढ़ाना ।

(ख) उत्तर कक्षाओं की गद्य की शिक्षा के निम्न उद्देश्य हैं—

(i) छात्रों की शब्द भण्डार तथा सूक्ति भण्डार में वृद्धि हो ।

(ii) छात्र मुहावरे तथा उनका प्रयोग जान लें ।

(iii) वे भिन्न-भिन्न शैलियों से परिचित हो जाएं ।

(iv) वे विचार तथा भाव ग्रहण कर सकें और उनकी बोधशक्ति का विकास हो ।

(v) वे आनन्द प्राप्त कर सकें ।

(vi) उनके व्यावहारिक ज्ञान की वृद्धि हो ।

(vii) उनकी कल्पना-शक्ति का विकास हो ।

(viii) विभिन्न पाठों से प्रभावित होकर वे शिक्षा ग्रहण करें, उनके चरित्र निर्माण में उन्हें सहायता मिले ।

(ix) भाषा शैलियों का प्रयोग करने के लिए उनके सामने अनुकरण के लिए सामग्री उपस्थित हो ।

(2) विशेष उद्‌देश्य—

प्रारम्भिक कक्षाओं में गद्य पाठ के विशेष उद्देश्य नहीं । परन्तु उत्तर कक्षाओं में प्रत्येक प्रकार की रचना के अपने-अपने विशेष उद्देश्य हैं ।

विषय	उद्‌देश्य
1. कहानी—	1. कहानी का ज्ञान होना ।
	2. वर्ण शैली से परिचित होना ।
	3. कल्पना शक्ति को जागृत करना ।
	4. नैतिक कहानियों द्वारा चरित्र-निर्माण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

2. जीवनी –
1. चरित्र निर्माण, जीवन के आदर्शों का ज्ञान
2. महापुरुषों की जीवनी का ज्ञान होना।

3. वर्णन तथा यात्रा –
1. प्रकृति प्रेम उत्पन्न करना।
2. वर्णन शैली का ज्ञान।
3. कल्पना शक्ति का विकास।

4. वैज्ञानिक
1. विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
2. ज्ञान वृद्धि।
3. उत्सुकता बढ़ाना।

5. सामाजिक लेख
1. समाज का ज्ञान देना।
2. अच्छा नागरिक बनाना।

6. विचारात्मक—आलोचनात्मक
1. बुद्धि का विकास।
2. आलोचनात्मक प्रवृत्ति।
3. विचारों को व्यक्त करने की शैली का ज्ञान।

गद्य शिक्षा के अंग –

गद्य की शिक्षा के तीन अंग—

1. वाचन (Reading)
2. व्याख्या (Explanation)
3. विचार विश्लेषण (Analysis of thoughts)

§ 110. वाचन—

किसी भी पद्यांश का पहले वाचन कराया जाता है। वाचन के निम्न सोपान हैं :—

i) अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ (Model Reading)

अध्यापक को शुद्ध उच्चारण के साथ गद्यांश का सस्वर करना चाहिए, और इस प्रकार विद्यार्थियों के लिए ऐसा आदर्श उपस्थित करना चाहिए, जिनका विद्यार्थी अनुकरण करें।

आदर्श पाठ के निम्न लाभ हैं :—

(क) आदर्श पाठ के बिना गद्यांश विद्यार्थियों के लिए अपरिचित रहता है। अतः आदर्श पाठ से ही प्रस्तुत गद्यांश का प्रथम परिचय प्राप्त करते हैं और इस प्रकार स्वयं वाचन करने से झिझकते नहीं।

(ख) आदर्श वाचन के उपरान्त विद्यार्थियों की उच्चारण आदि की अधिक अशुद्धियां करने की सम्भावना नहीं रहती।

(ग) विद्यार्थी आदर्श वाचन का ही अनुकरण करते हुए उच्चारण, स्वर, लय, गति यदि आदि सीख सकते हैं। जिस प्रवाह के साथ अध्यापक बोलता है, उसी उत्साह के साथ बोलने का प्रयास करेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदर्श पाठ देने से पहले अध्यापक को गद्यांश के वाचन की पूरी तैयारी करनी चाहिए, ताकि वह कोई गलती न करे।

(ii) **विद्यार्थियों द्वारा सस्वर पाठ**—आदर्श वाचन के उपरान्त अध्यापक को विद्यार्थियों से वाचन करवाना चाहिए। उसके लिए एक विद्यार्थी से ही वाचन करवाना काफी नहीं, चार-पांच विद्यार्थियों से एक-एक करके अर्थात् व्यक्तिगत रूप में (Individually) वाचन करवाना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी जहां-जहां अशुद्ध बोले, वहां अन्य विद्यार्थियों से अथवा स्वयं उसे ठीक करवाना चाहिए। अध्यापक का ध्यान छात्रों के उच्चारण, स्वर, बल, लय, गति प्रवाह आदि का रहना चाहिए। वाचन में उच्चारण आदि विवरण पीछे वाचन के प्रकरण में दिया गया है।

विद्यार्थियों का सस्वर पाठ दो प्रकार का हो सकता है—व्यक्तिगत और सामूहिक। पहली या दूसरी श्रेणियों के लिए विद्यार्थियों का सम्मिलित पाठ भी उच्चारण आदि को शुद्ध करने में सहायक रहता है। पद्य भाग में तो सामूहिक पाठ कविता से रसास्वादन के लिए भी होता है।

(iii) **विद्यार्थियों द्वारा मौन पाठ**—तीसरी से लेकर उच्च कक्षाओं तक मौन-पाठ की आवश्यकता इसलिए रहती है कि विद्यार्थी मन में पढ़ते हुए भी विचार ग्रहण कर सकें। परन्तु मौन पाठ कब कराया जाए, इस विषय पर भिन्न-भिन्न मत हैं। कई अध्यापक आदर्श पाठ से पहले मौन पाठ कराने के पक्ष में हैं। कई अध्यापक सस्वर पाठ के तुरन्त बाद मौन पाठ कराना चाहते हैं। दोनों में कुछ त्रुटियां रहती हैं।

आदर्श पाठ से पहले मौन पाठ कराने में यह त्रुटि रहती है कि गद्यांश पाठकों के लिए नया होता है, और वे नए पाठ का मौन वाचन करने के लिए तैयार नहीं होते।

सस्वर पाठ से पहले मौन पाठ कराने में यह त्रुटि रहती है कि पाठक कठिन शब्दों तथा गुम्फित वाक्यों के अर्थों से परिचत नहीं, अतः वे पढ़ते हुए भी विचार ग्रहण नहीं कर सकते। वाचन में केवल पढ़ना ही नहीं विचार ग्रहण करना भी सम्मिलित है। जब तक गद्यांश की व्यवस्था नहीं होती, तब तक मौन पाठ अधूरा रहेगा। वास्तव में व्याख्या के बाद ही मौन पाठ के लिए, उपयुक्त अवसर है। उस दशा में मौन पाठ के बाद बोध परीक्षा के प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं, जिससे अध्यापक इस बात की जांच कर सके कि पाठक कहां तक विचार ग्रहण कर सके हैं। जब तक व्याख्या नहीं होती, तब तक मौन पाठ और बोध परीक्षा व्यर्थ हैं। कठिन शब्दों तथा स्थलों की व्याख्या से पहले ही पाठकों से विचार ग्रहण करने की आशा रखना बड़ी भारी भूल है। लेखक ने कितने ही अध्यापकों को हिन्दी पढ़ाने की विधि की पुरानी पुस्तकों का अनुकरण करते हुए, व्याख्या से पहले मौन पाठ कराने तथा बोध परीक्षा लेने में असफल होते हुए देखा है। ये स्वयं भी इस बात को स्वीकार करते थे कि ऐसा क्रम अस्वाभाविक है, परन्तु वे मुद्रित अक्षरों को प्रमाण समझते हुए यथार्थवादी बनने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के बदले रूढ़िवादी बनते थे। अध्यापक को रूढ़ियों पर अलम्बन नहीं करना चाहिए, वरन् अपने अनुभव तथा प्रयोग का सहारा लेना चाहिए।

अध्यापक द्वारा आदर्श पाठ, ततपश्चात् विद्यार्थियों द्वारा सस्वर पाठ से वाचन क्रम समाप्त हो जाता है। वाचन के बाद व्याख्या की बारी आती है।

§ 111. व्याख्या—

वाचन के बाद, शब्दों, मुहावरों, वाक्य खण्डों, वाक्यों तथा कठिन स्थलों की व्याख्या की आवश्यकता रहती है, जिससे छात्र पाठ को भली-भांति समझ सकें और इससे पूरा-पूरा लाभ प्राप्त कर सकें। व्याख्या विभाग को हम तीन भागों में बांट सकते हैं—

(क) **शब्दों की व्याख्या।**

(ख) **मुहावरों, लोकोक्तियों और सूक्तियों की व्याख्या।**

(ग) **वाक्यों की व्याख्या।**

(क) **शब्दों की व्याख्या**—प्रत्येक नए पाठ में ऐसे शब्द आ जाते हैं जिनसे छात्र पूर्व-परिचित नहीं और जिनकी समझ नहीं रखते। ऐसे कठिन शब्द दो प्रकार के होते हैं— (i) उपयोगी (ii) तथा अनुपयोगी। उपयोगी शब्दावली (Working Vocabulary) में यह शब्द आते हैं, जिनका विद्यार्थी बोल-चाल में तथा अपनी रचनाओं में बार-बार प्रयोग करते हैं। क्योंकि ऐसे शब्द उनके प्रयोग क्षेत्र के भीतर आते हैं, अत: ऐसे शब्द को भी भली भांति समझाने, वाक्यों में प्रयुक्त करवाने और याद रखवाने की बड़ी आवश्यकता है। ऐसे शब्दों के लिए प्रत्येक छात्र के पास कापी (Note Book) होनी चाहिए, जिस पर वह प्रतिदिन पढ़े हुए कठिन शब्दों के अर्थ सहित दर्ज करे। यह काम तभी दूषित हो जाता है, जब छात्र इन शब्दों के अर्थों को रट्टा लगाते हैं। यह कापी रट्टा लगाने के लिए नहीं होनी चाहिए। वरन् कभी-कभी पुराने सीखे हुए शब्द को याद दिलाने के लिए और आवश्यकतानुसार रचना में प्रयोग करने के लिए होनी चाहिए।

अनुपयोगी शब्द वे हैं जो छात्रों की रचनाओं में काम नहीं आते, वरन् केवल वाचन के काम आते हैं। ऐसे शब्द या तो इतने उच्च स्तर के होते हैं, कि उच्च कक्षाओं में भी विद्यार्थी उनका शुद्ध प्रयोग न कर सकें, अथवा ऐसे संस्कृत तत्सम् शब्द विद्यमान होते हैं, जिनके बदले हमारे पास अधिक प्रयुक्त होने वाले तद्भव शब्द होते हैं। ऐसे शब्दों पर केवल इतना ध्यान दिया जाए कि विद्यार्थी अर्थ समझ लें और उसकी सहायता से गद्यांश का तात्पर्य जान लें। ऐसे शब्दों को वाचन शब्दावली (Reading Vocabulary) कहते हैं, क्योंकि यह केवल वाचन में काम आते हैं, रचना में नहीं। ऐसे शब्दों के प्रयोग की कोई आवश्यकता नहीं।

शब्दों के सामान्यत: तीन भेद हैं—तत्सम शब्द, तद्भव और रूढ़ि। हिन्दी के

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तत्सम शब्द संस्कृत भाषा से आये हुए ऐसे शब्द हैं जिनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। 'शब्द' 'व्याख्या', 'प्रयोग', भाषा, 'माता', 'पिता', 'अन्न', 'वस्त्र', 'भगवान्', 'धन', आदि तत्सम शब्द हैं। तद्भव शब्द तत्सम शब्दों के रूपान्तर हैं। सांप तद्भव है, और इस का मूल संस्कृत शब्द सर्प है। कृष्ण से कन्हैया, दश से दस, भ्रातृ से भाई, गृह से घर आदि इसके उदाहरण हैं। रूढ़ि शब्द किसी मूल भाषा से नहीं आये हैं परन्तु स्थानीय प्रयोग पर आधारित हैं।

डॉ० बाहरी ने हिन्दी शब्दों का एक और प्रकार का विभाजन किया है
(i) वैज्ञानिक, (ii) पारिभाषिक, (iii) साहित्यिक (iv) ग्रामीण।

एक और प्रकार का विभाजन है

(i) मौलिक या अयौगिक, जिनका विभाजन न किया जा सके, जैसे चार, कलम, हाथी।

(ii) यौगिक, जो मूल शब्द के साथ उपसर्ग तथा प्रत्ययों के जोड़ से बने हैं, जैसे सम्मिलित, प्रारम्भिक, सहायता, उपयोगी। शब्दों के प्रश्नों की तालिका नीचे दी जाती है :—

शब्दों का प्रकार

शब्द

(i) व्युत्पत्ति की दृष्टि से	तत्सम	तद्भव		रूढ़ि
(ii) व्याकरण की दृष्टि से	यौगिक			अयौगिक
(iii) उपयोग और प्रयोग की दृष्टि से	उपयोगी			अनुपयोगी
(iv) विषय की दृष्टि से	वैज्ञानिक	पारिभाषिक	साहित्यिक	ग्रामीण

तालिका 21 : शब्दों के प्रकार

सभी प्रकार के शब्दों को पढ़ाने के लिए निम्न विधियां अपनाई जा सकती हैं :—

(i) **उद्बोधन विधि (Eliciting Method)**—इस विधि से, अध्यापक कठिन शब्दों का अर्थ स्वयं न बताते हुए विद्यार्थियों से भिन्न-भिन्न साधनों से उद्बोधित (Elicit) करता है। विद्यार्थी प्रत्यक्ष, अनुमान या कल्पना से लाभ उठा कर शब्द का अर्थ समझाने की कोशिश करते हैं। ऐसा करने के लिए अध्यापक निम्न साधनों या उपायों में काम ले सकता है :—

(अ) वस्तुओं, स्थानों, क्रियाओं तथा सामान्य व्यापारी को समझाने के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दृश्य साधन (प्रत्यक्ष वस्तु चित्र, रेखाकृति अथवा मानचित्र) उपस्थित करना जैसे

पुस्तक का अर्थ समझाने के लिए पुस्तक उपस्थित करना (प्रत्यक्ष वस्तु)।

ऋषि का अर्थ समझाने के लिए किसी ऋषि का चित्र उपस्थित करना (चित्र)।

वर्ग का अर्थ समझाने के लिए वर्ग आकृति श्यामपट पर बनाना (रेखाचित्र)

संगम का अर्थ समझाने के लिए दो नदियों के मिलन का चित्र उपस्थित करना।

क्रोध का अर्थ समझाने के लिए क्रोध का अभिनय करना (अभिनय)।

भ्रू-भंग का अर्थ समझाने के लिए भौंहे तानना (अभिनय अथवा अंग संचालन)।

(आ) अमूर्त्त विचारों तथा व्यापारों को समझाने के लिए काल्पनिक, ऐतिहासिक तथा पौराणिक कहानियों अथवा घटनाओं द्वारा उदाहरण उपस्थित करना, जैसे—

सत्यवादी का अर्थ समझाने के लिए सत्यवादी हरिश्चन्द्र की कथा की ओर संकेत करना।

बलिदान का अर्थ समझाने के लिए किसी वीर पुरुष की कहानी सुनाना, जिसने बलिदान दिया हो।

क्रूर का अर्थ समझाने के लिए किसी क्रूर व्यक्ति के कार्यों की ओर संकेत का उदाहरण देना।

स्वार्थी का अर्थ समझाने के लिए किसी स्वार्थी बालक के स्वार्थपूर्ण कार्यों का उदाहरण देना।

दुर्घटना का अर्थ समझाने के लिए दुर्घटना का उदाहरण देना और अर्थ की ओर संकेत करना।

(इ) विशेषणों, मुहावरों और क्रियाओं को समझाने के लिए उन्हें स्वयं वाक्यों में प्रयोग करना और विद्यार्थियों से उनके अर्थ पूछना, जैसे—

'निस्तब्ध' का अर्थ समझाने के लिए निम्न वाक्य प्रस्तुत करना – 'अंधेरी रात है। हाथ को हाथ नहीं सूझता, सारा संसार चुप-चाप सोया पड़ा है। निशा रानी भी चुप-चाप सोई पड़ी है। ऐसी निस्तब्ध दिशा में मैं सहसा घर से निकल पड़ा।

'कलम तोड़ना' का अर्थ समझाने के लिए निम्न वाक्य प्रस्तुत करना—'रमेश ने एक सुन्दर कहानी लिखी है। वाह क्या कहना! उसने तो कलम तोड़ दी है।

'कान भरना' का अर्थ समझाने के लिए निम्न वाक्य प्रस्तुत करना 'कैकई ने रानी के विरुद्ध दशरथ के कान भरे।'

उद्बोधक विधि प्रत्येक स्थान पर सफल नहीं हो सकती। कई शब्द ऐसे होते हैं, जिनका अर्थ विद्यार्थियों से उद्बोधित नहीं किया जा सकता। जैसे निम्न शब्द—बर्बरता, सद्य:स्नात, किंकर्त्तव्य विमूढ़, संस्कृति, अध्याय, प्रशासन। ऐसे शब्दों का अर्थ समझाने के लिए अन्य विधियाँ अपनानी चाहिएं। प्राय: अध्यापक— ऐसे शब्द का अर्थ उद्बोधन करने में काफी परिश्रम करने के बाद भी असफल हो जाते हैं। स्मरण रहे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि उद्बोधन विधि प्रारम्भिक कक्षाओं में ही लाभदायक है । उच्च कक्षाओं में पर्याय, परिभाषा आदि बताने से शीघ्र काम चल जाता है और उद्बोधन विधि का द्राविड़ प्राणायाम करने की कोई आवश्यकता नहीं । अध्यापक स्वयं देख सकता है कि कौन शब्द का अर्थ चित्र, उदाहरण या वाक्य प्रयोग द्वारा उद्बोधित किया जा सकता है। कोशिश यही रहनी चाहिए कि अर्थ स्वयं बतलाने के बदले उद्बोधित किया जाए, क्योंकि उस दशा में उद्बोधिक किया हुआ अर्थ शीघ्र स्मरण हो जाता है ।

(ii) **प्रवचन विधि** (Telling Method)—यदि शब्द का अर्थ उद्बोधित न हो सके तो अध्यापक को चाहिए कि निम्न रीति में से किसी एक रीति से स्वयं अर्थ बताए :—

(अ) कठिन शब्द का **पर्यायवाची शब्द** (Synonym) अथवा कोष में दिया हुआ अर्थ उपस्थित करना, जैसे—

नियत	=भाग्य	दुन्दुभि	=नगाड़ा,
जिज्ञासा	=जानने की इच्छा,	कौतूहल	=आश्चर्य
काष्ट	=लकड़ी	स्पर्श	=छूना,
कुत्सा	=निन्दा ।		

(क) कठिन शब्दों की **परिभाषा** देना, जैसे

मरु-भूमि =वह भूमि-भाग जहां पानी न हो ।

पारस=एक पत्थर जिसके छूने से लोहा, पीतल आदि धातुएं सोने में बदल जाती हैं । यह केवल कल्पना की वस्तु है यथार्थ नहीं ।

(इ) **अर्थ का विस्तार देना, जैसे**—

कलिंग का विजयी वीर=वह वीर जिसने कलिंग देश को जीता था । अर्थात् अशोक ।

आन्दोलन=बार-बार झूलना, परन्तु यहां तात्पर्य है जनता का सरकार के सामने अपनी कोई मांग उपस्थित करना और इनके निमित्त सभाएं बुलाना, भाषण देना, प्रस्ताव पास करना; जलूस निकालना आदि ।

कोल्हू का बैल=वह बैल जो कोल्हू में काम करे, परन्तु जैसे कोल्हू का बैल दिन-रात काम करता है वैसे ही यह मुहावरा उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त किया जाता है, जो दिन-रात काम करे ।

(इ) मातृ-भूमि में (यदि शब्द हिन्दी से भिन्न हो), या (अन्य भाषा में जिसका छात्रों को ज्ञान हो) अनुवाद करना । जैसे—

चिकित्सालय=Hospital

परमाणु बम=Atom bomb

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) **स्पष्टीकरण विधि** (Elucidating Method) कभी शब्दों के अर्थ का निम्न विधियों से स्पष्टीकरण किया जा सकता है।

(अ) व्युत्पत्ति बताना, जैसे—

बुद्धिमान बुद्धि + मान = बुद्धि वाला

श्रमजीव = श्रम + जीव = श्रम (मेहनत के द्वारा जीने या गुजारा करने वाला (मजदूर)

शरणार्थी = शरण + अर्थी = शरण चाहने वाला।

अनहोनी = अन + होनी = जो न हो सके।

(आ) तुलना द्वारा कठिन शब्द का अन्य पर्याप्त या विपरीत शब्द के साथ समानता का भेद दिखाना, जैसे—

कायर = जो डरपोक हो, (वीर से तुलना कीजिए)।

दानी = जो दान देता हो, (कंजूस से तुलना कीजिए)।

वेदना = पीड़ा (संकट, शोक, विषाद, तथा दुःख से तुलना कीजिए)।

अस्त्र = यन्त्र द्वारा संचालित शस्त्र, (शस्त्र का प्रयोग हाथों द्वारा होता है)

अपयश = बदनामी, (कलंक, निन्दा तथा जन-अपवाद से तुलना कीजिए)।

विधि = रीति, भाग्य, ईश्वर (तीनों अर्थों को वाक्यों में प्रयुक्त कीजिए)।

अपेक्षा = इच्छा, (उपेक्षा से तुलना कीजिए)।

कृतघ्न = किए को न मानने वाले, (कृतज्ञ से तुलना कीजिए)।

अर्वाचीन = आजकल का (प्राचीन से तुलना कीजिए)।

अपवाद = निन्दा, नियम भंग होना, विवाद, (प्रतिवाद तथा अनुवाद से तुलना कीजिए)।

पदच्युत = अपने स्थान से गिरा हुआ, (राजच्युत, धर्मच्युत, धर्मभ्रष्ट आदि शब्दों से तुलना कीजिए)।

सुरलोक = स्वर्ग-भूमि, (इहलोक, परलोक, गोलोक, पितृलोक, शब्दों से तुलना कीजिए)।

पर्यायवाची शब्दों की अर्थ-ध्वनियां स्पष्ट करने के लिए रामचन्द्र वर्मा द्वारा लिखित पुस्तक 'शब्द साधना' में कतिपय उदाहरण नीचे दिये जाते हैं।

(1) कुशल—जो मानसिक, शारीरिक अथवा दोनों प्रकार की शक्तियों का पूरा उपयोग कर सके। वह व्यापार में कुशल हो।

दक्ष—जो शरीर, विशेषतः हाथ के काम में कुशल हो।

निष्णात—जो अपने कार्य के विषय का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त करके पंडित बने।

विशेषज्ञ—जो ज्ञान की किसी शाखा का सम्पूर्ण ज्ञान रखता हो।

(2) दया – किसी के कष्ट को कम करने की चेष्टा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कृपा—दूसरे की सहायता करना। यहां कष्ट की बात नहीं। मित्र पर कृपा करना।

सहानुभूति—दूसरे को उदास देखकर स्वयं उदास होना।

अनुग्रह—छोटे पर प्रसन्न होना।

क्षमा—अपराध, दोष आदि के प्रसंग में।

करुणा - किसी भी संकटमय अवस्था को देखकर दु:खी होना।

(·) दु:ख और इसके पर्यायवाची शब्दों को समझाने के लिए निम्न अनुच्छेद पढ़िए।

"यदि हमारे मित्र को उदर-शूल रोग हो, तो उसे पीड़ा होगी और उसके फलस्वरूप हमें दु:ख होगा, घर वालों को कष्ट होगा। यदि वह चिकित्सा करने के लिए कहीं दूर चला जाए, कहीं चोट लगने से पागल हो जाए, तो हमें **व्यथा** होगी। उसकी मृत्यु हो जाने पर हमें **शोक** होगा उसकी मृत्यु के बाद जब हमें उसकी याद आएगी तब **वेदना** होगी और उसके छोटे बच्चों को कष्ट और दुर्दशा में देखकर **संताप** होगा।"[1]

वास्तव में देखा जाए तो दो पर्यायवाची शब्दों का अर्थ समान नहीं होता। उन का अर्थ त्रेत्र (semantic range) एक दूसरे को स्पर्श करता है या आर्थिक रूप से ढक लेता है (covers), अथवा हर एक दूसरे में समा जाता है। इसका स्पष्टीकरण निम्न चित्र से किया जा सकता है। कृपा, दया करुणा और क्षमा को प्राप्त वृत्तों द्वारा चित्रित करें तो कृपा और दशा के वृत्त बहुत अंश तक दूसरे को ढक लेंगे। करुणा में दोनों समा जाएंगे। क्षमा का वृत्त करुणा के वृत्त को स्पर्श करेगा।

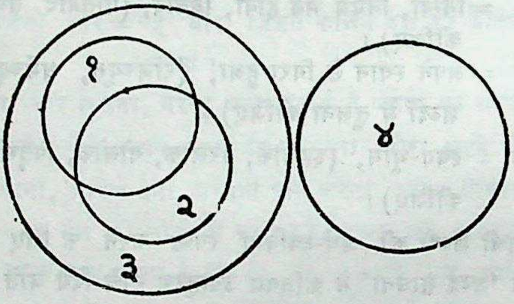

1. कृपा का वृत्त 2 - दया का वृत्त
3. करुणा का वृत्त 4 · क्षमा का वृत्त

चित्र 14. अर्थ क्षेत्र

(इ) इस वर्ग के भिन्न-भिन्न शब्दों को वाक्यों में प्रयुक्त करना और प्रत्येक वाक्य का अर्थ स्पष्ट करते हुए प्रस्तुत शब्द का अर्थ स्पष्ट करना, जैसे—

1. रामचन्द्र वर्मा—शब्द साधना पृष्ठ 139।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भार्या, दारा, गृहिणी, वधू, महिला, सहधर्मिणी का भिन्न-भिन्न वाक्यों में प्रयोग करना।

प्रेम, स्नेह, भक्ति तथा श्रद्धा भिन्न-भिन्न वाक्यों में प्रयोग करना और अर्थ का स्पष्टीकरण करना।

(इ) भिन्नार्थक शब्दों के विभिन्न अर्थों को प्रसंग द्वारा या वाक्य प्रयोग द्वारा समझाना।

उदाहरण :—

1. शाखा :—पेड़ की शाखा, नदी की शाखा, रेल की शाखा, कम्पनी की शाखा।

2. अंधा :—अंधा भिखारी, अंधी गली, अंधी सरकार, अंधा कुआं।

3 तार : – लोहे का तार, रेशम का तार, चाशनी की तार, डाकघर का तार।

4. लगना का भिन्न-भिन्न प्रयोग जैसे आग लगना, भूख लगना, डर लगना, मेला लगना, देर लगना, काम में लगना, मुझे लगना है।

5. अक्षर के अनेक अर्थ भिन्न-भिन्न वाक्यों द्वारा समझाना।

6. साधु शब्द के अनेक वाच्चार्थ, लाक्षणिक अर्थ व्यंग्यार्थ भिन्न-भिन्न वाक्यों द्वारा समझाना।

(ई) ऐतिहासिक, भौगोलिक, वैज्ञानिक तथा साहित्यिक नामों और शब्दों की क्रमशः ऐतिहासिक, भौगोलिक, वैज्ञानिक तथा साहित्यक व्याख्या द्वारा **स्पष्टीकरण**, जैसे --

कपिल वस्तु = शाक्यों की राजधानी, (गौतम बुद्ध का जन्म यहीं हुआ था)

एस्कीमो = उत्तरीध्रुव सागर के पास बर्फीले भू-भाग में निवास करने वाली एक जाति।

भागीरथ = सूर्यवंश में दलीप राजा का पुत्र, एक राजा, जिसने गंगा को पृथ्वी पर उतारा है।

ऊपर के शब्दों को तत्सम्बन्धी प्रसंगों द्वारा विस्तार से समझाना चाहिए।

स्पष्टीकरण की उपरोक्त विधियों में से व्युत्पत्ति बनाना सबसे महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि अधिकतम कठिन शब्द ऐसे होते हैं जिनके अर्थों का स्पष्टीकरण व्युत्पत्ति द्वारा हो सकता है। अतः व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में विशेष ध्यान देने योग्य बातें नीचे दी जाती हैं :—

कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति – हिन्दी में शब्दों का निर्माण तीन प्रकार से किया जाता है।

(1) उपसर्ग के संयोग से, (2) प्रत्ययों के संयोग से तथा, (3) सीधे समास की रीति से।

(1) **उपसर्ग से बने शब्द**—उपसर्ग तीन प्रकार के हैं (क) संस्कृत उपसर्ग :—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे प्रति, अनु, अप, आ, अव, उप, नि, निर्, परा, परि, प्रति, सम, सु आदि ।

(ख) हिन्दी उपसर्ग जैसे अ, अन, कु, दु, बिन, भर आदि ।

(ग) उर्दू उपसर्ग – जैसे, गैर, बद, बे, हम, हर आदि ।

इन उपसर्गों का अर्थ समझाना चाहिए और इनके योग से धातु या संज्ञा के अर्थ में जो परिवर्तन हो जाता है, उसका स्पष्टीकरण करना चाहिए ।

(2) **प्रत्ययों से बने शब्द**—शब्दों के अन्त में आने वाले प्रत्यय भी दो प्रकार के हैं, कृत और तद्धित । अ, अन्, आ, ति, दा, अंक, ता, इ, न, आदि संस्कृत के कृत प्रत्यय हैं ।

अ, आ, आव, ई, औनी, न, नी, रा, वट, हट, इया, आनी, आलू, इया, इदल हार, सार, बन आदि हिन्दी कृत प्रत्यय हैं । इसी प्रकार ता, आदन, आ, त्व, इक, मत, वत, विन, भय, ल, इल, यह संस्कृत तद्धित प्रत्यय हैं । आई, पा, पन, नी, का टा, इय, औती आदि, हिन्दी तद्धित के प्रत्यय हैं ।

(3) **सन्धि तथा समास द्वारा निर्मित शब्द** - जैसे रत्नाकर, पीताम्बर, महोत्सव, पदच्युत, घुड़दौड़, जन्मांतर, कर-कमल, पंसेरी, दत्तचित आदि ।

शब्द रचना को समझाने के उपरान्त कठिन शब्द के उपसर्ग, प्रत्यय धातु आदि पृथक् करने चाहिएं और संधिच्छेद या विग्रह द्वारा संयुक्त शब्दों का विश्लेषण करना चाहिए । इससे शब्द रचना भी समझ में आती है और अर्थ का स्पष्टीकरण भी होता है ।

शब्दों की व्याख्या के लिए सर्व-प्रथम उद्बोधन विधि का अवलम्बन करना चाहिए; विशेषकर छोटी कक्षाओं में । इसके उपरान्त प्रवचन विधि और यदि प्रवचन विधि से अर्थ स्पष्ट न हो तो स्पष्टीकरण की उपरोक्त विधियां अपनानी चाहिएं । प्रत्येक कठिन शब्द के बारे में अध्यापक को निश्चित होना चाहिए कि अर्थ बोध कराने के लिए कौन-सी विधि अपनाई जाए । शब्द का अर्थ समझाने के बाद उसे आवश्यकता अनुसार तथा अभ्यासार्थ वाक्यों में प्रयोग करवाना चाहिए । बहुधा दसवीं कक्षा के विद्यार्थी भी शब्दकोष का प्रयोग सिखाने के बाद विद्यार्थियों को कठिन शब्दों का अर्थ शब्दकोष में देखने की ओर प्रोत्साहित करना चाहिए । कभी उनको आदेश देना चाहिए कि कल पढ़ाए जाने वाले अनुच्छेद के कठिन शब्द कोष में देख कर आएं । शब्दों की व्याख्या विधियां आगे तालिका 22 द्वारा स्पष्ट की जाती हैं ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

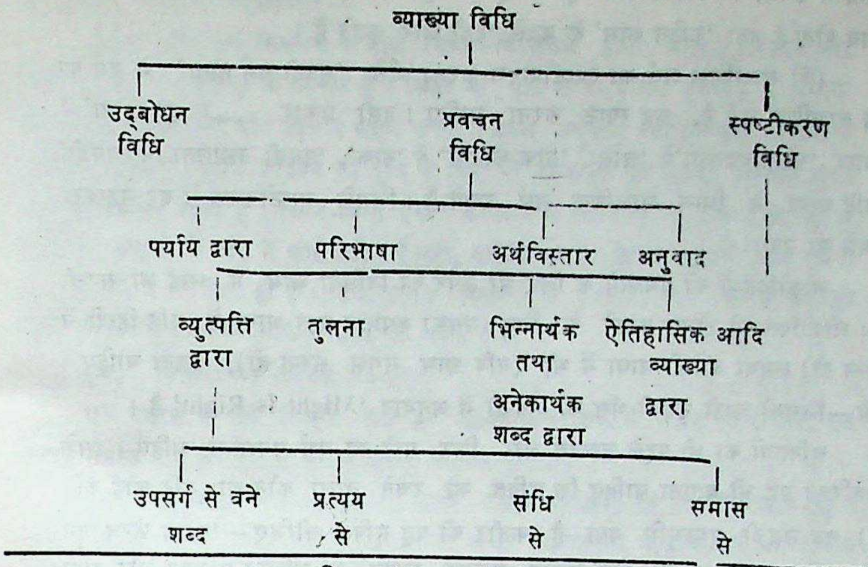

तालिका 22. शब्दों की व्याख्या

(ख) **मुहावरों आदि की व्याख्या**—शब्दों की व्याख्या के बाद मुहावरों रूढ़-योक्तियों, लोकोक्तियों तथा सूक्तियों की व्याख्या की बारी आती है। इनकी व्याख्या के लिए निम्न विधियां अपनाई जा सकती हैं

(i) **वाक्य प्रयोग विधि**—किसी भी मुहावरे का अर्थ समझाने की सरल विधि है, उसे वाक्यों में प्रयोग करना, जैसे—

आटे दाल का भाव मालूम करना—नौकरी छूटते ही रमेश को आटे दाल का भाव मालूम हो गया (अर्थात् कठिनाई अनुभव हुई)।

बीड़ा उठाना—वह समाज सुधारक बन गया है, अब उसने सारी दुनिया को सुधारने का बीड़ा उठाया है।

(ii) **आधारभूत कथा से स्पष्टीकरण करना**—किसी मुहावरे का सम्बन्ध किसी प्रासंगिक घटना के साथ होता है। उसी के आधार पर वह बना भी होता है। उस प्रसंग को समझने से मुहावरे का आशय समझ में आता है, जैसे—

'घर का भेदी लंका ढाए' में विभीषण और रावण के परस्पर वैषम्य की वार्ता समझाने से अर्थ स्पष्ट हो जाता है।

'टेढ़ी खीर' को समझाने के लिए उस अन्धे की कहानी बतानी चाहिए जिससे पूछा गया—'खीर खाओगे ?' और उसने उत्तर दिया 'खीर कैसी होती है ?' उत्तर में (सफेद) बताने पर उसने फिर पूछा—'सफेद क्या होता है ?' उत्तर मिला, 'जैसे बगुले का रंग' बगुला कैसा होता है ?' 'उसकी चोंच टेढ़ी होती है जैसे यह उंगली।'

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अन्धे ने उंगली को टटोला और कहा—यह तो टेढ़ी खीर है। अन्धे को समझाना कठिन काम होता है अत: 'कठिन काम' के बदले 'टेढ़ी खीर' कहते हैं।

(ii) **लाक्षणिक अर्थ का स्पष्टीकरण करना** 'जैसे 'मुट्ठी गर्म होना' में गर्म का जो लाक्षणिक अर्थ है, वह स्पष्ट करना चाहिए। इसी प्रकार '...ा दूर होना' में 'कांटा' 'चोला बदलना' में 'चोला' 'नाक काटना' में 'नाक', 'पगड़ी उछालना' में 'पगड़ी' आदि वाच्य से भिन्न लाक्षणिक अर्थ रखते हैं। जिसके स्पष्टीकरण से वह मुहावरा समझ आ सकता है।

लोकोक्तियों को समझाने के लिए भी ऊपर की विधियां काम में लाई जा सकती हैं। लोकोक्ति को रोचक बनाने के लिए उसका रूपांतर मातृ-भाषा में (यदि हिन्दी से भिन्न हो) अथवा अंग्रेजी भाषा में भी (यदि छात्र समझ सकते हों), करना चाहिए। जैसे—जिसकी लाठी उसकी भैंस का अंग्रेज़ी में अनुवाद 'Might is Right' है।

सूक्तियों का भ[ी] पहले शब्दार्थ और फिर सारे का अर्थ समझाना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह भी बताना चाहिए कि सूक्ति का रचने वाला कौन था (यदि कोई कवि हो), तब उसकी पृष्ठभूमि क्या है कबीर की यह सूक्ति लीजिए—'माला फेरत जुग गया, फिरा न मन का फेर' इसका शब्दार्थ कबीर का संक्षिप्त परिचय और ढोंगी साधुओं पर कबीर का कटाक्ष समझाना चाहिए।

(ग) **वाक्यों की व्याख्या**—वाक्यों की व्याख्या में निम्न बातें सम्मिलित हैं :—

(i) मिश्रित तथा संयुक्त वाक्यों का विश्लेषण करके, प्रत्येक वाक्य खण्ड का अर्थ समझना और तत्पश्चात् समस्त वाक्य का सम्पूर्ण अर्थ समझना। इसके लिए वाक्यविच्छेद की विधि अत्यन्त लाभदायक है। लम्बे-लम्बे वाक्यों से कभी अन्वय ढूंढने की आवश्यकता पड़ती है। उद्देश्य और विधेय कभी अपने क्रम में नहीं होते हैं।

(ii) वाक्यों में आए हुए ऐतिहासिक, पौराणिक और राजनीतिक प्रसंगों की व्याख्या करना।

(iii) अलंकारों का समझना।

(iv) कवि समय या साहित्यिक रूढ़ियों की व्याख्या करना, जैसे—

मयूर केवल वर्षा ऋतु में [न]ृत्य करता है और तब श्याम मेघों को देख कर अति हर्षित हो जाता है। हंस दूध और जल को पृथक कर सकता है। चन्द्रमा के मुख पर जो काला धब्बा है, वह उसके सौंदर्य पर कलंक है। चकोर चांद को देखकर हर्षित हो जाता है।

(v) वाक्-सौंदर्य तथा भिन्न-भिन्न शैलियों को समझना। कोई मुहावरे प्रधान शैली है, कोई विचार प्रधान-शैली है, कोई समस्त और जटिल शैली है, कोई आवेगात्मक शैली [है,] कोई वर्णनात्मक शैली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 112. विचार विश्लेषण—

वाचन और अर्थ निरूपण के बाद विचार-विश्लेषण होना चाहिए। वाचन और व्याख्या विचार ग्रहण ही के सोपान हैं। किसी भी पाठ के दो प्रधान उद्देश्य हैं। भाषा के ज्ञान में वृद्धि होना और विचार ग्रहण करना। प्रथम उद्देश्य वाचन और व्याख्या से पूर्ण हो जाता है। दूसरे उद्देश्य की पूर्ति के लिए भी अध्यापक को उतना परिश्रम करने की आवश्यकता रहती है। भिन्न-भिन्न प्रकार के पाठों में भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार होते हैं। कहानी के पाठ में कोई कठिनाई नहीं, क्योंकि इसमें केवल कहानी याद रखनी है। जीवनी में भी ऐसा ही है। विचारात्मक निबन्धों के विचारों का संकलन करने के लिए भिन्न-भिन्न उपाय काम में लाए जा सकते हैं।

(अ) विचारों का क्रमबद्ध संकलन—

एक गद्यांश में जो विचार आते हों उनका अपने क्रम से संग्रह करना और इस प्रकार समस्त पाठ के विचारों की शृङ्खला निर्मित करना।

(आ) दृष्टान्त तथा उदाहरण द्वारा जटिल विचारों का स्पष्टीकरण करना। इसके निमित्त भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रसंगों तथा तत्सम्बन्धी वार्ताओं का भी उल्लेख किया जा सकता है।

(इ) लेख में आए हुए विचारों का छात्रों के आत्मानुभव से सम्बन्ध जोड़ना। नए विचारों का पूर्वविचारों तथा निजी अनुभवों के साथ सम्बन्ध जोड़ना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

(ई) लेखक के विचारों के साथ-साथ अपने विचारों का तादात्म्य सम्बन्ध जोड़ना। छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे लेखक के विचारों को भली-भांति समझ सकें और विचारों के साथ तादात्म्य विचार सम्बन्ध स्थापित कर सकें। जहां मत-भेद हो वहां वे अपने तथा लेखक के विचारों की परस्पर तुलना करें।

(उ) लेखक का संक्षिप्त परिचय देना। ऐसा करने में लेखक के विचारों की पृष्ठ-भूमि ज्ञात हो जाती है, इस प्रकार उनके विचारों को समझने में सहायता मिलती है।

(ऊ) विचार विश्लेषण का अन्तिम सोपन है बोध परीक्षा। अध्यापक लेख सम्बन्धी प्रश्न पूछ कर इस बात की जांच कर सकता है कि छात्रों ने कितना कुछ समझ लिया है।

(ऋ) बोध परीक्षा के बाद आवृत्ति और गृहकार्य के सोपान होंगे।

(vi) निम्न पर्यायवाची शब्दों के अर्थ का स्पष्टीकरण करते हुए, उन का परस्पर अन्तर समझाएं :—

(1) उपयोग, प्रयोग, सेवन,

(2) बुद्धिमान, विद्वान, चतुर पण्डित, ज्ञानी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(3) अनुमान, आभास, कल्पना, निश्चय
(4) संदेह, भ्रम, अज्ञान, अनिश्चय
(5) उपयुक्त, उपयोगी, उचित, योग्य
(6) सम्मान, आदर, श्रद्धा

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. गद्य की शिक्षा के कौन-कौन से अंग हैं ? एक गद्य अनुच्छेद लेकर उसके पढ़ाने की विधि समझाइए। [§ 110, 111, 112]

2. गद्य पाठ में आए हुए कठिन शब्दों की व्याख्या किस प्रकार करनी चाहिए। दस कठिन शब्दों को लेकर व्याख्या की विधियां समझाइए। [§ 111]

3. शब्दावली से क्या तात्पर्य है ? भाषा सीखने में उसका क्या योग है ? विद्यार्थियों की शब्दावली की वृद्धि आप कैसे करेंगे ? उन अभ्यासों के नमूने दीजिए जो इस कार्य के लिए काम में लाए जा सकते हैं। [§ 111]

4. भाषा का प्रत्येक शब्द अपना तथा बोलने का इतिहास बतलाता है। शब्दों का इतिहास तथा व्युत्पत्ति बताने से भाषा की क्षिक्षा में कैसे रुचि उत्पन्न की जा सकती है ? उदाहरण सहित समझाइए। [§ 111]

5. निम्न उक्तियों में से ठीक उक्तियों के आगे श और अशुद्ध के आगे अ लिखें :— [§ 111]

(i) व्याख्या से पहले मौन पाठ करना चाहिए। ( )
(ii) प्रत्येक कठिन शब्द का वाक्य प्रयोग करना चाहिए। ( )
(iii) आदर्श पाठ के बाद व्याख्या करनी चाहिए। ( )
(iv) शब्दावली की व्याख्या कार्य परीक्षा के बाद करनी चाहिए। ( )
(v) पर्यायवाची शब्दों का बिल्कुल समान अर्थ होता है। ( )
(vi) मुहावरों का लाक्षणिक अर्थ स्पष्ट करना चाहिए। ( )
(vii) मुहावरों और लोकोक्तियों में कोई अन्तर नहीं। ( )

सहायक पुस्तकें

1. Nemmark: Maxim — 20th Century Modern Language Teaching
2. Gray. Willam — (i) On their own in Reading
(ii) Development of Meaning
(iii) Vocabularies in Reading
3. Michael West — Language in Education
4. Heraick and Jacobs — Languges Art
6. V. S. Mathur — Studies in the Teaching of English in India

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

6. Margaret G. Mckim — Guiding Growth in Reading
7. E. W. Menzel — The Teaching of Reading
8. E. W. Dolch — Teaching of Primary Reading
9. A. I. Gates. — The Improvement of Reading
10. राम चन्द्र शर्मा — शब्द साधना (साहित्य रत्नमाला कार्यालय, बनारस)
11. भोलानाथ तिवारी — मुहावरा कोष
12. ,, — शब्दों का जीवन
13. ,, — हिन्दी साहित्य की अन्तर्कथाएं
14. ,, — बृहत पर्यायवाची कोष

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

19

कविता का स्वरूप

§ 113. कविता क्या है ?

कविता पढ़ाने से पहले 'कविता क्या है, पर विचार होना चाहिए। गद्य और पद्य में पर्याप्त भेद है और इसी भेद के कारण पद्य की शिक्षा गद्य शिक्षा से भिन्न है। हां तो, पद्य या कविता गद्य से किस प्रकार भिन्न है ? पद्य की ठीक-ठीक परिभाषा देना कठिन समस्या ही नहीं, असम्भव भी है, क्योंकि सौन्दर्य की तरह पद्य एक ऐसी वस्तु है जिसका केवल आस्वादन किया जा सकता है। इसी कारण बड़े-बड़े कवि तथा आलोचक कविता की परिभाषा देते हुए हार गए हैं। उदाहरण के लिए पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों की निम्न परिभाषाएं :—

(i) **पाश्चात्य दृष्टिकोण**

(1) कविता छन्दोमय रचना (Material Composition) है।

— — जानसन

(2) कविता 'संगीतमय विचार' (Musical thought) है।

— —कार्लाइल

(3) कविता 'कल्पना की अभिव्यक्ति' (Expression of imagination) है।

— — शैले

(4) 'कविता शान्ति के समय स्मरण की हुई उत्कृष्ट भावनाओं का सहजोद्रेक' है।

- —वर्ड्सवर्थ

(5) 'कविता उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम क्रम विधान है, ।

— — कोलरिज

(6) 'कविता मूल में जीवन की आलोचना है' (Poetry is at bottom criticism of life) ।

— — आर्नोल्ड

(7) ''कविता कल्पना और मनोवेगों द्वारा जीवन की व्याख्या है''

— — हडसन

(ii) **भारतीय दृष्टिकोण—**

(1) 'ऐसे शब्द और अर्थ को कविता कहते हैं जिसमें दोष न हों, गुण हों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंधकार हों और कभी अलंकार न हो'[1]

(2) रसात्मक वाक्य को कविता कहते हैं'[2] ——मम्मट

(3) 'रमणीय अर्थ के प्रतिपादन करने वाले शब्द को काव्य कहते हैं'[3] —— - जगन्नाथ

(4) हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती है उसे कविता कहते हैं'। —— --रामचन्द्र शुक्ल

(5) 'जल कर चीख उठा वह कवि था'। ——पंत

(6) 'कलात्मक रीति से सजी हुई भाषा जिसमें भावों का व्यंजन होता है'। —श्याम सुन्दर दास

उपरोक्त परिभाषाओं से ज्ञात होता है कि कोई भी परिभाषा सम्पूर्ण नहीं हो सकती। परिभाषा देने के बदले कविता के निम्न सामान्य लक्षण बताए जा सकते हैं :--

(1) कविता जीवन की आलोचना है। जीवन से सुन्दर चित्रण में ही कविता का आकर्षण हो।

(2) कविता में विचारों की अपेक्षा भावों की प्रधानता रहती है।

(3) कविता कल्पना प्रसूता है। कवि एक प्रकार का स्वप्नद्रष्टा होता है और कल्पना उसकी कविता का साधारण गुण है।

(4) कविता, भाव तथा कल्पना का छन्दोबद्ध वर्णन है। बाणभट्ट की कादम्बरी भावमय तथा कल्पनामय होने पर भी छन्दोबद्ध न होने के कारण गद्य है, पद्य नहीं। कवि की भाषा संगीतमय होती है।

(5) काव्य के पाठ से आनन्द की अनुभूति होती है। रसवादियों के अनुसार रस या आलौकिक आनन्द ही काव्य की आत्मा है।

(6) कविता के प्रधानतया चार महत्त्व हैं, कल्पना तत्त्व, बुद्धि तत्त्व, भाव तत्त्व तथा शैली तत्त्व और शैली तत्त्व के अन्तर्गत भाषा-सौन्दर्य, अलंकार, शब्द शक्तियां, गुण रीति छन्द संगीत सम्मिलित हैं।

§ 114 कविता का प्रयोजन—

ऊपर का विवेचन कविता के प्रयोजन का दिग्दर्शन कराता है, प्रश्न यह है कि कविता किस लिए लिखी या पढ़ी जाती है। कविता के मर्म को पहचानने तथा कविता के प्रयोजन को समझे बिना कोई अध्यापक कविता शिक्षण में सफल नहीं हो सकता। अगले पृष्ठ पर कवि के दृष्टिकोण से तथा पाठक के दृष्टिकोण से कविता का प्रयोजन समझाया जाता है :—

---

1. ''तद्दोषौ शब्दार्थो सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि'' —काव्य प्रकाश
2. ''वाक्यं रसात्मक काव्यम्'' —साहित्य दर्पण
3. ''रमणीयार्थः प्रतिपादकः काव्यम्'' —रसगंगाधर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता के दृष्टिकोण से

(i) कविता का प्रधान प्रयोजन है रसोत्पत्ति। कवि भावमय जगत में लीन होकर एक अलौकिक आनन्द का अनुभव करते हुए कविता का सृजन करता है।

(ii) कविता कवि के मन में सृजन की अदम्य आवश्यकता की पूर्ति करती है। कवि के भाव हृदय स्रोत से निर्झर गति के साथ प्रभावित होते हैं।

(iii) कविता कभी स्वांत: सुखाय तथा मनोविनोद के लिए भी रची जाती है।

(iv) कविता कभी अर्थ प्राप्ति तथा लोक-सेवा से प्रेरित होकर काव्य रचना करता। आचार्य मम्मट के अनुसार—

'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्य: परिनिवृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ॥

(ख) पाठक के दृष्टिकोण से—

(i) कविता का प्रधान प्रयोजन है लोकोत्तर आनन्द की प्राप्ति। पाठक व्यावहारिक जगत् से ऊपर उठकर, थोड़ी देर कोलाहल की अग्नि से छुटकारा पाकर, काव्य-कला की विश्राममयी गोद में बैठकर रसमग्न हो जाता है। इस रसमग्नता की स्थिति में उसकी अहंभावना का लोप हो जाता है, उसकी क्षुद्र-प्रवृत्तियां दबी रहती हैं और उसका हृदय एक आलौकिक आनन्द से भर जाता है, जो आनन्द ब्रह्मानन्द सहोदर कहलाता है। इसी अवस्था में उसकी आत्मा का स्वप्रकाश झलकने लगता है। उसकी सात्विक भावनाओं की पराकष्ठा भी यही है। 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का अवलोकन भी कविता के ही भावमय जगत् में होता है। अह्लादक कविता क्षुद्र से क्षुद्र और कठोर से कठोर हृदय को द्रवीभूत करके अध्यात्म के शिखर पर ले जाती है।

(ii) कविता जीवन के सौन्दर्य और मधुमय पक्ष का अनुभव कराती है। पाठक अपने भावों को मूर्तिमान देखकर अपनी आत्मा के दर्शन करता है।

(iii) कविता मधुरतम शब्दों में उपदेश देती है। यह उपदेश रमणी के समान मधुर परन्तु प्रभावोत्पादक होते हैं। क्रूर से क्रूर व्यक्ति भी कविता की दो पंक्तियों के सामने हार जाते हैं। हृदय का विस्तार, सात्मिक भावनाओं का प्रबोधन, वासनाओं का संस्कार, चरित्र का निर्माण, 'वसुधैव कुटुम्वकम्' की भावना का प्रसार तथा विश्व-प्रेम का विस्तार कविता द्वारा हों सकता है। कविता का यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयोजन है। विशेषकर आधुनिक जगत् में जब क्षुद्रता, साम्प्रदायिकता, स्वार्थ, हिंसा, ईर्ष्या, क्रोध आदि पैशाची और दानवी वृत्तियां प्रबल हो चुकी हैं। शुद्ध भावनाओं को उच्च स्तर पर ले जाने के लिए तथा राष्ट्रीयता (National Integration) के लिए कविता साधन है। एक विचारक का कहना है कि कविता का आरम्भ है आनन्द और अन्त है बुद्धिमता।[1]

---

1. Poetry begins with delight and ends with wisdom
—Bright. Teaching English as a second language.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कविता के उपरोक्त प्रयोजन की जानकारी अध्यापक के लिए अनिवार्य है, क्योंकि प्रयोजन की जानकारी में ही वह कविता शिक्षण के उद्देश्य निर्धारित कर सकता है। कविता के शिक्षण का उद्देश्य कविता का सरलार्थ (Paraphrase) समझाना नहीं। प्राय: अध्यापक कविता का सरलार्थ समझाने में ही अपनी इतिकर्त्तव्यता समझते हैं। सरलार्थ साधन है, और साध्य है कुछ और। गद्य की शिक्षा के उद्देश्य और पद्य की शिक्षा के उद्देश्य परस्पर भिन्न हैं। पद्य की शिक्षा में भाषा ज्ञान केवल साधन है अत: इसमें शब्दार्थ, व्याकरण आदि पर उतना ही बल देना पड़ता है जितना कविता के अन्य उद्देश्य की पूर्ति के लिए पर्याप्त हो।

कविता के प्रयोजन समझने के बाद कविता की शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करना कठिन नहीं। नीचे कविता की शिक्षा के सामान्य और विशेष उद्देश्य बताए जाते हैं।

§ 115. कविता की शिक्षा के उद्देश्य—

(क) सामान्य उद्देश्य—

(1) छात्रों को स्वर-प्रवाह तथा भावों के अनुसार कविता-पाठ करने के योग्य बनाना।

(2) काव्य सौन्दर्य से प्रभावित करके छात्रों को कविता के प्रति आकर्षित करना। कविता में छात्रों की रुचि बढ़ाना।

(3) छात्रों में कवि की अनुभूतियों तथा कल्पनाओं को समझने तथा ग्रहण करने की शक्ति उत्पन्न करना। उनकी ग्राहण शक्ति का पोषण करना।

(4) छात्रों की रागात्मक प्रवृत्तियों का संशोधन करना, उनकी सात्विक भावनाओं का उद्बोधन करना, उनके उदात्त भावों का संवर्धन करना तथा उनके दूषित मनोभावों का परिष्कार करना।

(5) छात्रों की सौन्दर्यानुभूति की वृद्धि करना, उनके हृदय सौन्दर्य के प्रति प्रेम उत्पन्न करना।

(6) छात्रों की कल्पना शक्ति की वृद्धि करना।

(7) छात्रों के चरित्र पर कल्पना तथा आदर्श का प्रभाव डालना और इस प्रकार उनके चरित्र-निर्माण में सहायता देना।

(8) छात्रों को भिन्न-भिन्न काव्यशैलियों से परिचित करना।

(9) छात्रों को काव्य सौन्दर्य परखने के योग्य बनाना।

(10) छात्रों को काव्यानन्द का रसास्वादन करने के योग्य बनाना।

(ख) विशेष उद्देश्य—

(1) छात्रों को किसी कवि के विशेष भाव, विचार या शैली के चमत्कार का आनन्द प्राप्त कराना।

(2) कवि के किसी सन्देश को छात्रों तक पहुंचाना। (प्रसिद्ध अंग्रेजी आलोचक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रिचर्ड्स कवि के सन्देश (Message) पर बल डालता है। कवि का काम है सन्देश देना और अध्यापक का काम है सन्देश-वाहक बनना।

(3) किसी कविता में जीवन की जिस प्रकार आलोचना की गई हो, उसको स्पष्ट करना। (प्रसिद्ध अंग्रेज़ी आलोचक मेथ्यू आर्नोल्ड के अनुसार कविता जीवन की आलोचना है। अध्यापक जीवन की आलोचना को समझने में सहायता देता है)।

(4) कविता विशेष में वर्णित नीति, उपदेश, धार्मिक विचार, प्रकृति सौंदर्य आदि को समझाने में सहायता देना। कबीर, रहीम, बिहारी, वृन्द तथा वियोगी हरि के नीतिपूरक दोहे नीति समझने के लिए पढ़ाए जाएंगे। पंत का प्रकृति वर्णन प्रकृति सौन्दर्य का उपयोग करने के लिए पढ़ाया जाएगा।

(5) कविता की किसी विशेष शैली से परिचित कराना, जैसे गीतिकाव्य की शैली, वर्णनात्मक शैली आदि।

§ 116. कविताओं के प्रकार

छोटी कक्षाओं से लेकर उच्च कक्षाओं तक कविताओं का स्तर समान नहीं हो सकता। कविताए छात्रों की मानसिक अवस्था, अभिरुचि, प्रवृत्ति तथा भाषा-ज्ञान के अनुसार होनी चाहिएं। अत: विद्यालय शिक्षण के विचार से कविताएं तीन प्रकार की हो सकती हैं, जो छात्रों की तीन अवस्थाओं के अनुसार हों :

(1) प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए बाल गीत।

(2) माध्यमिक कक्षाओं के लिए वर्णनात्मक गीत।

(3) उच्च कक्षाओं के लिए साहित्यिक कविताएं।

(1) **बालगीत**—ऐसे गीतों की निम्न विशेषताएं होनी चाहिएं —

(i) ये कविताएं न होकर तुक बन्दियां हों।

(ii) ये अत्यन्त सरल हों और इनके वाक्यांश अत्यन्त छोटे हों।

(iii) इनके विषय बाल-जीवन सम्बन्धी घटनाए, वस्तुएं, मनोरंजक कहानियां, प्रार्थना, महापुरुषों की प्रशंसा, पशु-पक्षी आदि हों।

(iv) इनमें वर्णित बातें बालकों की अनुभव-परिधि से बाहर न हों।

(v) ये संगीतात्मक तथा अभिनयात्मक हों।

(vi) इनकी कड़ियां छोटी हों।

(vii) ये गीत 2। पंक्तियों से अधिक लम्बे न हों और कण्ठस्थ करने के योग्य हों।

(2) **माध्यमिक कक्षाओं के लिए वर्णनात्मक गीत**—ऐसे गीतों की निम्न विशेषताएं अपेक्षित हैं :

(i) इनकी भाषा बाल गीतों की अपेक्षा अधिक अपरिचित शब्दों तथा कुछ कल्पनापूर्ण और गम्भीर भावों से युक्त होनी चाहिए।

(ii) ये साहित्यिक कविताएं न हों, वरन् केवल पद्यमय रचनाएं हों।

(iii) इनके बिषय वीर, करुण, दया आदि भावों से सम्बन्धित कथाएं हों। कई कविताएं प्रकृति सम्बन्धी, कई देश-भक्ति सम्बन्धी और कई भक्ति सम्बन्धी हों।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इनमें भक्ति काल के कवियों की सरलतम कविताएं समाविष्ट की जा सकती हैं।

(3) **उच्च कक्षाओं के लिए कविताएं—**

(i) इनकी भाषा शैली उच्च हो।

(ii) इनके विषय गम्भीर हों। ये शुद्ध साहित्यिक कविताएं हों।

(iii) उच्च कक्षाओं में आधुनिक काल की खड़ी बोली कविताओं के अतिरिक्त भक्तिकाल तथा रीतिकाल की ब्रज तथा अवधी की कविताएं भी होनी चाहिएं जिससे विद्यार्थियों को हिन्दी कविता की विभिन्न धाराओं का भी ज्ञान हो।

(iv) कविताएं लम्बी न हों। लम्बी कविताओं के बदले छोटी-छोटी विविध विषयक कविताएं और विविध लेखकों की कविताएं पढ़ानी चाहिएं।

(v) कविताओं का भाग गद्यभाग का चौथाई हो। इसके अधिक रखने से अध्यापक पाठ्यक्रम को जल्दी-जल्दी समाप्त करने की धुन में रहता है और वह उसे सूक्ष्म रीति से नहीं पढ़ा सकता।

(vi) हिन्दी के प्रसिद्ध कविताओं के अतिरिक्त भारत की अन्य प्रादेशिक भाषाओं के प्रमुख कवियों की कविताओं का हिन्दी पद्यानुवाद भी जोड़ना चाहिए, ताकि भारतीय साहित्य की भी कुछ जानकारी हो जाए।

(vii) भारतीय कवियों के अतिरिक्त संसार के कई प्रमुख कवियों की कविताओं का हिन्दी पद्यानुवाद भी दिया जाना चाहिए इससे छात्र के साहित्यिक दृष्टिकोण में विस्तार होगा। हां ऐसी कविताओं की संख्या थोड़ी हो। स्मरण रहे अमेरिका में हाई स्कूलों की अंग्रेज़ी की पाठ्य-पुस्तकों में टैगोर, उमर खय्याम, गेटे, दांते आदि की कविताएं सम्मिलित हैं।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. कविता क्या है ? विभिन्न अवस्थाओं के छात्रों को किस प्रकार की कविताएं पढ़ाएंगे और उनके रसास्वादन में किस प्रकार सहायता देंगे ? [§ 113, 116]

2. विद्यालयों में हिन्दी कविता पढ़ाने के विभिन्न उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए। गद्य पाठ और कविता पाठ में क्या अन्तर है ?

3. कविता के स्वरूप के सम्बन्ध में भारतीय और पाश्चात्य दृष्टिकोण में अन्तर स्पष्ट कीजिए तथा पाठक के दृष्टिकोण से कविता का क्या प्रयोजन है ? [§ 113].

सहायक पुस्तकें

1. Hudson : Introduction to the study of Literature.

2. गुलाब राय : (i) सिद्धान्त और अध्ययन
(ii) काव्य के रूप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. श्यामसुन्दर दास :	साहित्यालोचन
4. रामचन्द्र शुक्ल :	चिन्तामणि (भाग 1, 2)
5. राम दहिन मिश्र :	काव्य दर्पण
6. सूर्य कान्त :	साहित्य मीमांसा
7 रघुनाथ सफाया :	1. कविता क्या है ? (सरस्वती संवाद, जनवरी 1956 विशेषांक में प्रकाशित) 2. भाषा और साहित्य का विवेचन, अध्याय 3.
8. शिवनारायण श्रीवास्तव :	कविता की शिक्षा
9. रमणीकांत शूर तथा ब्रज भूषण शर्मा :	हिन्दी कविता पाठन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

20
कविता की शिक्षा के अंग

कविता पाठ के तीन प्रधान उपकरण हैं--

वाचन, व्याख्या और भाव-विश्लेषण।

§ 117. वाचन—

कविता शिक्षा का प्रथम सोपान है कविता का वाचन। गद्य की शिक्षा में भी वाचन का स्थान प्रथम है। परन्तु गद्य की शिक्षा में वाचन का स्थान प्रथम होने के अतिरिक्त सब से महत्त्वपूर्ण है। गद्य की सफलता अधिकतर सुवाचन पर निर्भर है। पद्य पाठ में वाचन की विशेष महत्ता निम्न प्रकार से है :—

वाचन की महत्ता

(i) पद्य और गद्य में प्रधान अन्तर यह है कि **पद्य भावमय है और गद्य विचारमय।** इसका तात्पर्य यह नहीं कि पद्य सर्वथा विचारशून्य है और गद्य भाव-शून्य। वास्तव में दोनों में विचार और भाव पृथक् नहीं किए जा सकते। परन्तु पद्य में गद्य की अपेक्षा भावों की ही प्रधानता है। भावमयी भाषा के रसास्वादन के लिए ऐसे वाचन की आवश्यकता है जो भावानुकूल हो। यदि वाचन भावानुकूल हो, तो उसके द्वारा ही कविता का बहुत कुछ आशय समझ में आ जाता है अतः सुवाचन कविता समझने के लिए भी अत्यन्त आवश्यक है।

(iii) पद्य और गद्य में एक और अन्तर यह है कि **पद्य छन्दोबद्ध भाषा है और गद्य में छन्द विधान नहीं है।** छन्दोबद्ध भाषा का वाचन साधारण वाचन से भिन्न होना चाहिए। अतः पद्य के वाचन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

(iii) मूर्तिमान कविता का आनन्द श्रवण द्वारा हो सकता है अतः सरल कण्ठ से कविता पढ़ने की आवश्यकता है। यद्यपि आजकल मुद्रण यन्त्र के प्रताप से कविता सुनने का अभ्यास छूट गया है। और कविता केवल पढ़ी ही जाती है परन्तु वास्तव में कविता श्रवण की वस्तु है, पठन नहीं। कविता का संगीत सुनने से सम्बन्ध रहता है, पढ़ने से नहीं। पढ़ते हुए भी आनन्द प्राप्त करने के लिए गुनगुनाना पड़ता है।

(iv) **वाचन द्वारा छात्रों को कविता की वास्तविक अनुभूति होती है।** कविता गाने का सुस्वर पढ़ने से ही उनके हृदय में आनन्द की हिलोरें उठती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाचन का ढंग—उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए अध्यापक को कविता वाचन के लिए पूरी तैयारी करनी चाहिए। कक्षा में पढ़ाते समय उसे सर्व-प्रथम अपना आदर्श पाठ देना चाहिए तत्पश्चात् विद्यार्थियों से सुस्वर पाठ करवाना चाहिए।

(i) **अध्यापक का आदर्श पाठ।**

आदर्श पाठ आदर्श ही होना चाहिए। ऐसा आदर्श कि कविता का मर्म श्रवण द्वारा ही गतार्थ हो जाए।

आदर्श पाठ देते समय अध्यापक को अत्यन्त सुन्दरता के साथ पढ़ाना चाहिए। उसकी वाचन-विधि आकर्षक और प्रभावोत्पादक होनी चाहिए, जिससे पाठकों की आंखें आनन्द से चमक उठें। संक्षेप में अध्यापक को कवि का प्रतिनिधित्व करना है। कवि की समस्त भाव-व्यंजन अध्यापक द्वारा विद्यार्थियों के सामने प्रकट होनी चाहिए। आदर्श पाठ देते समय अध्यापक को निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :—

(क) कविता का पाठ **भावानुकूल** होना चाहिए। यदि कविता वीररस की हो, तो अध्यापक ऐसी ओजपूर्ण विधि से वाचन करे कि छात्रों का हृदय उत्साह से भर जाए, उनकी भुजाएं फड़कने लगें, उनकी नसों में रक्त का संचार तीव्र हो जाए। यदि कविता करुण रस की हो, तो उनका हृदय द्रवीभूत हो जाए और नेत्रों में आंसू उमड़ आएं। इसी प्रकार जिस भाव की प्रधानता हो, उसी के अनुकूल अनुभवों का प्रदर्शन होना चाहिए।

(ख) भावों को व्यक्त करने के लिए **भावानुकूल अंगसंचालन** करना चाहिए। इस प्रकार पढ़ाने में कभी किंचित अभिनय की आवश्यकता रहती है। परन्तु अभिनय स्वाभाविक होना चाहिए, ऐसा बनावटी नहीं कि अध्यापक छात्रों के उपहास का पात्र बन जाएं। अधिक अंगसचालन, कृत्रिम अभिनय और ऊंची आवाज़ से छात्रों का ध्यान वास्तविक कविता से हटकर अध्यापक की ओर रहता है जिसके फलस्वरूप कविता का आनन्द नष्ट हो जाता है।

(ग) अध्यापक को **छन्द, लय, मात्रा, ताल, सार आदि** पर भी पूरा ध्यान देना चाहिए। कविता के शब्द-सौंदर्य को स्पष्ट करना उसी का काम है। अध्यापक ही कविता का संगीत उत्पन्न कर सकता है। इस विषय में एक शंका उत्पन्न हो सकती है। क्या अध्यापक को गा कर पढ़ाना चाहिए? बहुत से शिक्षा-विचारक गा कर पढ़ाने के विरुद्ध है। उनके विचार में गाने से छात्रों का ध्यान राग और संगीत की ओर रहता है, कविता की भाषा तथा भावों की ओर नहीं। कविता का आनन्द वे संगीत से प्राप्त करते हैं, कविता के भावों से नहीं। इस विचार में कुछ सत्य है। लेखक का व्यक्तिगत अनुभव यह है कि माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में राग की कोई आवश्यकता नहीं, परन्तु छोटी कक्षाओं में राग कविता सहायक है। छोटी कक्षाओं में गा कर पढ़ाने से बच्चे अधिक आनन्द प्राप्त करते हैं। उनकी कविताएं भी गीत होते हैं, जो राग के साथ गाए जाते हैं। बच्चों में संगीत के प्रति मोह है अतः उनको संगीत से वंचित क्यों किया जाए, कविता द्वारा प्रेम का पोषण क्यों न किया जाए?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) **विद्यार्थियों द्वारा सस्वर पाठ—**

अध्यापक के आदर्श पाठ के बाद छात्र सस्वर पाठ करें। सस्वर पाठ पर ही कविता का सौंदर्य अवलम्बित रहता है। सस्वर पाठ तब सफल होगा जब विद्यार्थियों के हृदय में आनन्द की लहरें तरंगित हो जाएंगी। वाचन से ही विद्यार्थी रसमग्न हो जाए। अध्यापक के आदर्श पाठ के उपरान्त छात्रों का वाचन दो प्रकार का होगा—व्यक्तिगत और समवेत।

(क) **व्यक्तिगत वाचन**—एक-एक विद्यार्थी उठे और अध्यापक का अनुकरण करता हुआ सस्वर वाचन करे। जहां वह अशुद्ध बोले, किसी वर्ण का उच्चारण अस्पष्ट करे, यदि, बल विराम आदि के अनुसार बोलने में भूल करे वहां शेष विद्यार्थी उसकी आलोचना करें, दोष निकालें और स्वयं उसे पढ़ कर सुनाएं। ऐसा करने में अध्यापक उनकी सहायता करे। यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या प्रत्येक विद्यार्थी सारी कविता का वाचन करें, या किसी एक खण्ड का। यदि कविता छोटी हो, तो समस्त कविता का वाचन हो सकता है, परन्तु यदि लम्बी हो तो एक छात्र द्वारा वाचन में ही सारा समय बीत जाएगा। ऐसी दशा में कविता को विभिन्न खण्डों में बांट कर कई छात्रों से वाचन करवाया जा सकता है।

(ख) **सामूहिक पाठ**—व्यक्तिगत वाचन के अतिरिक्त सारी कक्षा सम्मिलित रूप में एक वाचन कर सकती है। इससे यह लाभ है कि सारी कक्षा में एक साथ संगीत ध्वनि उत्पन्न होती है जिनसे बच्चे बहुत आनन्द प्राप्त करते हैं। यह काम छोटी कक्षाओं में श्रेयस्कर है। माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में नहीं। प्रारम्भिक कक्षाओं में गीतमाधुर्य का प्रभाव उत्पन्न करने की आवश्यकता है, परन्तु उत्तर कक्षाओं में नहीं। उत्तर कक्षाओं में कविता का आनन्द विषयगत भावों और काव्य सौष्ठव द्वारा प्राप्त होता है। अस्तु, समवेत गान के लिए और भी अवसर प्राप्त हो सकते हैं।

§ 118. शब्दार्थ की व्याख्या

गद्य पाठ के लिए शब्दार्थ व्याख्या की भिन्न-भिन्न विधियों, जैसे उद्बोधन विधि, प्रवचन विधि तथा स्पष्टीकरण विधि का उल्लेखन हुआ है। गद्य पाठ में ये सभी विधियां उसी रूप में अपेक्षित नहीं हैं। गद्य पाठ का उद्देशीय शब्द भण्डार की वृद्धि भी है, परन्तु पद्यपाठ का उद्देश्य ऐसा नहीं। पद्य का मुख्य उद्देश्य रसानन्द की अनुभूति है और शब्दों का अर्थ विवेचन इस अनुभूति में बाधक है। इसी लिए पद्यपाठ का एक सिद्धान्त यह भी माना गया कि इस में कठिन और अपरिचित शब्द आने ही नहीं चाहिएं और यदि आयें भी तो बहुत कम। यदि अध्यापक शब्दों के जाल में फंस जाएगा, भाव प्रकाशन में भंग होगा, तो कविता का आनन्द जाता रहेगा। अत: शब्दार्थ तथा व्याख्या करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :—

(i) कविता में सभी शब्द प्रथम परिचित होने चाहिए।

(ii) यदि कोई कठिन शब्द हो भी, उसका अर्थ प्रवचन विधि द्वारा बताना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) वाक्य प्रयोग और व्याकरण के पचड़े में नहीं पड़ना चाहिए ।

(iv) जहां आवश्यकता हो शब्द के अर्थ का स्पष्टीकरण मात्र करना चाहिए ।

(v) अवधि और ब्रज भाषा के शब्दों के खड़ी बोली के रूप लगाने चाहिएं, जैसे—मांझ=में, ते=से, मोंहि=मुझ को इत्यादि ।

(vi) अधिक शब्दों का हिन्दी पर्यायवाची शब्द बताने तक ही सन्तोष करना चाहिए । कविता में अनेक शब्द ऐसे प्रयुक्त होते हैं, जिनका साधारण बोल-चाल में या गद्य में कोई प्रयोग नहीं । ऐसे शब्दों का सरल हिन्दी में रूपांतर करना पर्याप्त है । प्राय: ऐसे शब्द तद्भव रूप होते हैं, जिनके लिए आज तत्सम् रूप प्रयुक्त होते हैं, जैसे जोगी (योगी), कान्हा कृष्ण), पाहन (पाषाण,पत्थर), सांच (सत्य), जुग(युग), सुधर (सुन्दर), तजके (त्याग कर), छोड़ कर इत्यादि ।

(vii ब्रज और अवधि की कविताओं को पढ़ते हुए विद्यार्थियों को कारक चिन्ह जैसे तें, सें, तों, रा, मांझ तथा क्रियाओं के रूप (आनों, आवन, आवो, आवत, आयो इत्यादि) समझने से कठिनाई पेश आती है । अन्य शब्दों के समझने पर भी वे समस्त वाक्य का तात्पर्य नहीं समझ सकते । इसके लिए अध्यापक पहले ही ब्रज और अवधि के कारक तथा क्रियाओं के रूप समझाए । एक बार समझाने पर कविता पाठ सुगम हो जाएगा ।

(viii) कुछ प्रतीकात्मक शब्द, लाक्षणिक शब्द अथवा आलंकारिक शब्द व्याख्या के बिना नहीं समझाए जा सकते । ऐसे शब्दों की विशद् व्याख्या करनी चाहिए। "झीनी झीनी बीनी चदरिया" कबीर की इस पंक्ति में चदरिया से क्या तात्पर्य है: झीनी से क्या मतलब है, यह सब कुछ अच्छी प्रकार समझने की आवश्यकता है । माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में अलंकारों को समझाने, लाक्षणिक अर्थ स्पष्ट करने तथा ध्वनि-चित्र संगीत और छन्द के सौंदर्य का आनन्द प्राप्त कराने की आवश्यकता है । प्रमुख छन्दों का नाम तथा लक्षण समझाने चाहिएं ।

(ix प्रसंग में आई हुई धार्मिक तथा पौराणिक वार्ताओं का सक्षिप्त वर्णन भी करना चाहिए । कवि समय काव्य-रूढ़ि आदि की यथासमय और यथास्थान जानकारी करा देनी चाहिए ।

प्रवचन विधि और स्पष्टीकरण विधि के सम्बन्ध में शेष सभी बातें अध्यापक के लिए उपयोगी हैं, जिनका उल्लेख गद्य पाठ के प्रकरण में हुआ ।

§ 119. भाव विश्लेषण तथा समीक्षा—

कविता पाठ की प्रक्रिया का यह अन्तिम भाग अथवा चरमसीमा है । कविता का यही उद्देश्य वहीं पर सफल हो जाता है । यह वह अवस्था है जब पाठक काव्य के मर्म स्थल पर पहुंच कर, सौंदर्य के तत्त्वों की खोज करके, भवसागर में डूबता हुआ. आलौकिक आनन्द को अनुभव करता है । यहां पर अध्यापक निम्न पांच प्रकार के सौंदर्य की अनुभूति कराए :—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) **ध्वनि सौंदर्य** प्रत्येक कविता अपनी ध्वनि या नाद के कारण मोहित करती है . वर्णों का लालित्य, अन्त्यानुप्रास, आंतरित लय, वर्णावृत्ति, यमक, गुरु, लघु गण छन्द आदि कविता को गद्य की अपेक्षा मधुर आकर्षक बनाते हैं। कविता पाठ करते समय ही. कविता की ध्वनि के द्वारा आनन्द आता है, इसीलिए एक अंग्रेज आलोचक का कहना, "मेरे लिए यह कविता दो बार पढ़िए । पहली बार ध्वनि के लिए और दूसरी बार अर्थ के लिए।"[1]

(2) **विचार सौंदर्य** कवि के मन में कौन-कौन से सुन्दर विचार उत्पन्न हुए हैं, उसकी वैयक्तिक अनुभूति किस प्रकार की है, उसके विचार पाठक को कैसे प्रभावित करते हैं। प्रत्येक कवि कविता द्वारा अपना सन्देश पाठक के सम्मुख रखता है। इस सन्देश को समझाने के लिए अध्यापक है।

(3) **कल्पना सौंदर्य**—कवि कल्पना का पुजारी होता है। कल्पना के द्वारा वह असम्भव को सम्भव, भूत को वर्तमान, अमूर्त को मूर्त और कुरूप को सुन्दर बनाने में सफल हो जाता है। प्रकृति वर्णन में और हर प्रकार भावव्यंजनों में चाक्षुष-चित्रों, शब्द-चित्रों, गन्ध-चित्रों, स्पर्श-चित्रों, और क्रिया-चित्रों का निर्माण करता है और इस प्रकार प्रजापति बन कर एक नए काव्य जगत की सृष्टि करता है। अध्यापक उपर्युक्त चित्रों की व्याख्या करे ताकि पाठक तत्काल कवि-रचित कल्पना सागर में डूब कर अपनी सुध-बुध भूल जाएं।

(4) **शैली सौंदर्य**—शब्द शक्ति, माधुर्य, ओज तथा प्रसाद गुण अलंकार और छन्द शैली सौंदर्य के आधार हैं। प्रारम्भिक कक्षाओं से कविता में गीत तत्त्व की अनुभूति कराना पर्याप्त है। उच्च कक्षाओं में उपर्युक्त सभी बातों पर ध्यान देना चाहिए; गुण और छन्द का कविता के भावों के साथ सीधा सम्बन्ध होता है। अलंकारों से काव्य सौंदर्य की पुष्टि होती है। अध्यापक इन बातों के समझाने में तथा उनका अनुभव कराने में सहायक हो जाएं कि अलंकारों से कैसे चमत्कार उत्पन्न किए हैं, छन्दों से कैसे नई प्रभावोत्पादकता उत्पन्न हुई है, माधुर्य गुण या ओज गुण से कैसे माधुर्य भाव या स्फूर्ति उत्पन्न हुई है. आदि।

(5) **भाव सौंदर्य**—प्रत्येक कविता में एक प्रधान-भाव की अभिव्यंजना होती है। विभाव, अनुभाव तथा संचारीभाव से पुष्ट होकर वह मुख्य भाव की अवस्था में परिणत होता है। पाठक के मन में कविता पढ़ते समय वही भाव जागृत होना चाहिए और धीरे - धीरे भावाभिभूत होकर, भावमग्न होकर अपनी सुध-बुध खो [illegible] उसे आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए। आनन्द की इसी अनुभूति में अध्यापक सहायक बनता है। कविता का पाठ करते हुए तथा कवि के भावों की व्याख्या करते हुए, वह स्वयं भी काव्यानन्द प्राप्त करता है और पाठकों के हृदय में भावनाओं को जागृत करके [illegible] भी आनन्द प्राप्त करता है इसमें उसकी सफलता है, यहीं पर उसकी प्रवीणता [illegible]

1. "Read me these versses once again first for the sound and second for the sence."

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

..ती है, यहीं पर उसकी अध्यापनकला की कुशलता प्रमाणित हो जाती है। प्राय: ... जाता है कि अध्यापक कविता का शब्दार्थ करने तथा अन्वय समझाने अथवा सरल भाषा में अनुवाद करने (Paraphrasing and Translation) में ही अपनी इति-कर्त्तव्यता समझते हैं। ऐसा करते हुए वे कविता का गला घोंट कर उसकी हत्या करते हैं। कविता पढ़ाने का उद्देश्य शब्दार्थ समझना कदापि नहीं। शब्दार्थ केवल भाव सौंदर्य ग्रहण करने का साधन है न कि साध्य। अध्यापक पाठकों के विचारों को इकट्ठा करके, उनके भावों को जागृत करके उनके अपूर्ण रसास्वाद को पूर्ण करे और उनको काव्य के मर्मस्थल ग्रहण करवाए।

सम्पूर्ण भाव-ग्रहण के लिए अध्यापक व्याख्या के उपरान्त एक-दो बार स्वयं अथवा विद्यार्थियों द्वारा कविता-वाचन की आवृत्ति करवाए। कविता के साधारण परिचय प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी भावानुकूल वाचन करने में समर्थ होंगे। दूसरी तीसरी बार कविता पढ़ते हुए कविता के भाव स्पष्ट हो जाएंगे और कविता के सौंदर्य की पूर्ण अणुभूति हो सकेगी। छोटे-छोटे प्रश्नों द्वारा इस बात को परख सकता है कि विद्यार्थी कहां तक कविता सौंदर्य का मूल्यांकन कर सकते हैं। उनको यह भी अवसर दिया जाए कि वे पूरे पद अथवा पंक्तियों की व्याख्या स्वयं करें।

कक्षा में कविता पाठ के उपरान्त कविता के सुन्दरतम स्थलों को अथवा सम्पूर्ण कविता को कण्ठस्थ करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। कविता को कण्ठस्थ करने का यह लाभ है कि विद्यार्थी कविता का आनन्द अनेक बार, पुस्तक की अनुपस्थिति में केवल स्मरण करने में ही प्राप्त कर सकते हैं। बार-बार पढ़ने से रसानुभूति की प्रक्रिया चलती रहती है।

कक्षा में कविता पाठ के उपरान्त कवि के सम्बन्ध में कुछ परिचय देना अप्रासांगिक नहीं। वास्तव में कवि-परिचय का उपयुक्त समय यही है। कविता के आरम्भ में ही कवि परिचय इसलिए निष्फल है क्योंकि उस समय पाठक कवि के भाव और विचारों से परिचित नहीं, जोकि उनका वास्तविक परिचय होता है। कवि के भाव-विचार जान कर उसकी भिन्न-भिन्न शैलियों का मूल्यांकन करके कवि का परिचय दिया जा सकता है। उस परिचय में कवि की जीवनी उतनी आवश्यक नहीं, जितनी कि उसकी रचनाएं, उसके विचार, उसकी शैली, उसका काव्य कौशल, उसकी हिन्दी साहित्य को देन तथा साहित्य में उसका स्थान।

संक्षेप से सौंदर्यानुभूति और काव्यसमीक्षा के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए :—

(क) कविता वाचन। यह उचित आरोह-अवरोह, लय, यति, विराम, स्वराघात और गति, शैली के साथ किया जा सकता है। छात्र यदि कविता गा सकें और भी अच्छा है।

(ख) भाव-स्पष्टीकरण और व्याख्या।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ग) सराहना (Appreciation) इस में ध्वनि, विचार, कल्पना, भावशैली के सौंदर्य पक्ष को लिया जाएगा। शैली सौंदर्य में छन्द, शब्द चयन, उक्ति वैचित्र्य, पद-योजना, अलंकार, गुण, रस आदि की ओर संकेत किया जाएगा। लाक्षणिक और प्रतीकात्मक प्रयोगों की विशेषता बताई जाएगी।

इस प्रकार कविता पाठ सम्पूर्ण तथा सफल हो सकता है।

काव्य सौंदर्य के विभिन्न अंगों को तालिका 23 द्वारा नीचे स्पष्ट किया जाता है :—

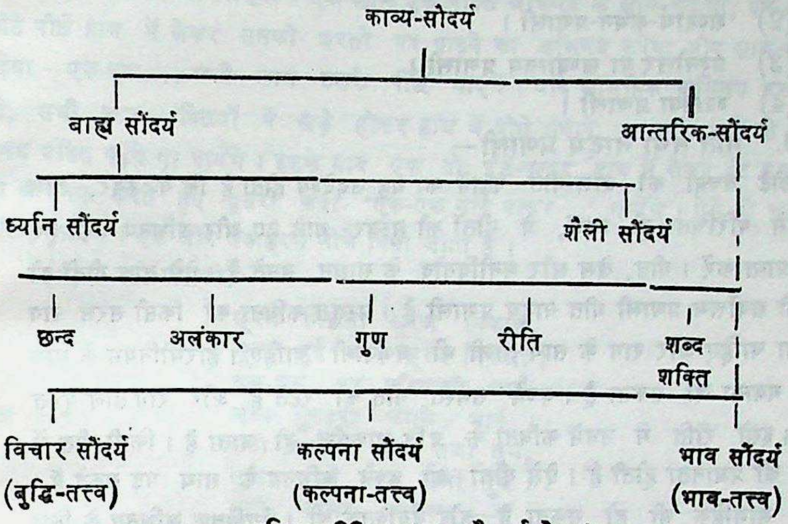

तालिका 23. काव्य सौन्दर्य के अंग

— — — —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

21
कविता शिक्षण प्रणालियां

कविता शिक्षण की निम्न प्रणालियां हैं—

(1) गीत तथा नाट्य प्रणाली।

(2) शब्दार्थ-कथन-प्रणाली।

(3) प्रश्नोत्तर या खण्डान्वय प्रणाली।

(4) व्याख्या प्रणाली।

§ 120. गीत तथा नाट्य प्रणाली—

छोटे बच्चों को बाल-गीत पढ़ाने का यह उद्देश्य होता है कि वे स्वर, ताल संगीत से परिचित हो जाएं, वे गीतों को सुस्वर गाते हुए और अभिनय करते हुए आनन्द प्राप्त करें। गीत, खेल और मनोविनोद के साधन बनते हैं। ऐसे बाल गीतों को पढ़ाने की सर्वोत्तम प्रणाली गीत नाट्य प्रणाली है। प्रस्तुत कविता को किसी सरल राग में गवाना चाहिए और राग के साथ ताली भी बजवानी चाहिए। हारमोनियम के साथ भी गीत गवाया जा सकता है। बच्चे समस्त गीत को रटते हैं और राग ताल युक्त गाते हैं। इसी रीति में उनमें कविता के प्रति आकर्षण हो जाता है। किसी गीत में अभिनय की प्रधानता होती है। ऐसे गीतों को बच्चे अभिनय के साथ पढ़ सकते हैं। अभिनय सामूहिक भी हो सकता है और वैयक्तिक भी। वैयक्तिक अभिनय के लिए कविता की भिन्न-भिन्न पंक्तियों को बच्चों में बांटा जाता है। एक बालक एक पंक्ति को अभिनय के साथ पढ़ता है और उसके उपरांत दूसरा बालक उसे उपयुक्त अभिनय के साथ बोलता है।

यह प्रणाली छोटी कक्षाओं के लिए नितांत उपयोगी है। कविता की रुचि पैदा करने का यही प्रथम साधन है। बच्चे कविता कण्ठस्थ भी कर लेते हैं। उचित अंग संचालन द्वारा भावानुकूल वाचन विधि भी जान लेते हैं और सारा पाठ खेल-खेल में ही पढ़ लेते हैं।

इस प्रणाली में पढ़ाते हुए निम्न बातों में सतर्क रहना चाहिए :—

(i) बच्चे अधिक ज़ोर-ज़ोर से न पढ़ें। क्योंकि चिल्ला-चिल्ला कर पढ़ने से विचार शक्ति मन्द पड़ जाती है और आगे के लिए एकान्त में मौन पाठ करना उनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लिए कठिन हो जाता है।

(i) बच्चे अधिक तथा आवश्यक अंग संचालन न करें। अभिनय की आवश्यकता से कविता पाठ उपहास बन जाता है।

नीचे दो बाल गीत उदाहरण के रूप में उपस्थित किए जाते हैं।

उदाहरण—(1) एक-एक [पृष्ठ 144 अध्याय 12]

यह कविता अभिनय के साथ गवाई जाएगी। अभिनय सामूहिक भी हो सकता है और वैयक्तिक भी। वैयक्तिक अभिनय के लिए एक गीत की अलग कड़ियां या पंक्तियां छात्रों में बांटी जाएंगी। एक छात्र एक पंक्ति अभिनय के साथ पढ़ेगा, एक, दो छोटे पौधे हाथ में लेकर उनको धरती पर गाड़ने का अभिनय करेगा और साथ-साथ पढ़ेगा —एक-एक..., सभी छात्र उसके पीछे गाएंगे। यदि सामूहिक अभिनय कराना हो, सभी छात्र पंक्तियों में खड़े होकर हाथ में पौधे लगाने का अभिनय करते हुए प्रथम पंक्ति पढ़ेंगे या गायेंगे। इसके बाद एक दो ईंटें-पत्थर हाथ में लेकर ईंट लगाने का अभिनय करते हुए दूसरी कड़ी 'एक-एक यदि पत्थर ..' गायेंगे। ऐसे ही चारों कड़ियां गायेंगे। एक और उदाहरण नीचे दिया जाता है।

(2) उठो बालको —

सूरज निकला सूरज निकला,
सुबह हुई और सूरज निकला।
थल-थल पर हरियाली छाई,
ओस सुनहरी चमके भाई।
उठो बालको नींद तजो तुम,
सुन्दर कपड़े पहन सजो तुम।
मुर्गा बोला कुक्कड़ू—कूं,
उठा कबूतर घुटरूं घूं।

इस बाल गीत में भी आठ पंक्तियां हैं। प्रथम पंक्ति गाते समय छात्र एक ... उठाएगा और पूर्व दिशा की ओर हाथ बढ़ाकर इशारा करेगा। तीसरी पंक्ति 'थल-थल'.. पढ़ते हुए दोनों हाथों से लहलहाती हुई घास का अभिनय करेगा। पांचवीं पंक्ति पढ़ते हुए आंख मलने का अभिनय करेगा। छठी पंक्ति पढ़ते हुए कपड़े पहनने का अभिनय करेगा, सातवीं और आठवीं पंक्ति में कुक्कड़ू कूं, घुटरूं घूं जोर से पढ़ेगा मानो कि मुर्गा और कबूतर की आवाज सुना रहा है।

§ 121. शब्दार्थ कथन प्रणाली—

इस प्रणाली में अध्यापक एक छात्र से पद्य पढ़वाता है और स्वयं उसका अर्थ ... देता है, या कभी-कभी छात्रों से ही अर्थ कहलवा लेता है। कविता में शब्दार्थ ... सरल भाषा में अनुवाद ही पर्याप्त समझा जाता है। अध्यापक का उद्देश्य ... रहता है कि विद्यार्थी गद्य पाठ के समान पद्य का अर्थ समझ सकें। अधिकतर स्कूलों में यही प्रणाली सर्वाधिक प्रचलित है। यह प्रणाली सर्वथा दोषपूर्ण है। ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
तो निश्चय ही कविता की हत्या की जाती है और काव्य देवता का अपमान हो जाता है। विद्यार्थी काव्य का रसास्वाद नहीं कर पाते। वे कविता और गद्य में कोई अन्तर नहीं देख पाते हैं, कविता पाठ का सारा उद्देश्य निष्फल हो जाता है। परन्तु इस प्रणाली का अवलम्बन क्यों करते आए हैं? इसके निम्न प्रधान कारण हैं :–

(i) अध्यापक स्वयं कविता के मर्म को पहचान नहीं पाते। अध्यापक स्वयं सहृदय नहीं, काव्य सौन्दर्य के पराखी नहीं और काव्य प्रेमी भी नहीं, वे कविता क्या खाक पढ़ा सकते हैं। अध्यापक को पहले काव्य मर्मज्ञ होना चाहिए। यदि कविता पढ़ाते समय यह भावाभिभूत हो जाए तो अवश्य ही वह छात्रों को काव्य सौन्दर्य की अनुभूति करा सकेगा। एक भाव शून्य अध्यापक मीरा की दो पंक्तियां 'कागा सब तन खाइयो, चुन-चुन खाइयो मास, नैनां दो मत खाइयो, पिया मिलन की आस'. निम्न प्रकार से पढ़ाता रहा।

'काका' अर्थात् कौआ, 'सब तन खाओ, सारा शरीर खाओ अर्थात् हे कौए, मेरा सारा शरीर खाओ, 'पर' परन्तु 'नैना दो मत खाइयो' मेरी दो आंखें मत खाना, क्यों कि 'पिया मिलन की आस' अर्थात् मुझे प्रियतम से मिलने की आशा है। इस प्रकार कविता का शब्दार्थ समझाता हुआ आगे बढ़ता गया। बन-बन डोलने वाली दर्द दीवानी मीरा की विरहपूर्ण कविता की हत्या! भक्ति-सागर के रत्न पहचान नहीं पाया। ऐसे अध्यापकों के हाथ कविता पाठ का भार सौंपना निश्चित ही अपराध है अक्षम्य अपराध। अत: अध्यापक जब तक प्रशिक्षित और सहृदय न हो, कविता न पढ़ाए।

(ii) शब्दार्थ कथन-प्रणाली के प्रचलित होने का एक और कारण है– विद्यार्थी के कोर्स में अनुपयुक्त कविताओं का संकलन। प्राय: पाठ्य-पुस्तकों में सुन्दर कविताओं को छोड़कर ऐसी कवितायें रखी जाती हैं जो विद्यार्थियों की मानसिक अवस्था के अनुकूल नहीं होतीं. या तो अरुचिकर, गूढ़ और कठिन होती हैं। अध्यापक बेचारा ऐसी बे-मेल और शुष्क कविताओं में रस निकालने के निष्फल प्रयास करने के बदले शब्दार्थ कथन के ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लेता है। इनका निदान यही है कि सम्पादक यथा संकलनकर्त्ता छात्रों की योग्यता, अवस्था, तथा रुचि का ध्यान रख कर कविताओं का संग्रह करे।

(iii) सर्वाधिक प्रचलित शब्दार्थ-कथन प्रणाली तब तक उन्मूलन नहीं हो सकती, जब तक पाठ्य-पुस्तकों में कविताओं की भरमार रहेगी। बीस-पच्चीस कविताओं के बदले एक पूरा पद्य, जिसमें पचास से अधिक संख्या में कविताए होती हैं, एक साल पढ़ाने के लिए नियत किया जाता है। अध्यापक इस संग्रह को निर्दिष्ट समय में समाप्त करने की धुन में रहता है। काव्य सौष्ठव और काव्य सौन्दर्य के लिए उसे समय कहां? गुण और परिणाम में से हम एक को अपना सकते हैं, दोनों नहीं। अत: पन्द्रह बीस कविताओ के-संग्रह को ही सूक्ष्म रीति से पढ़ाया जा सकता है।

कविताओं का संग्रह विराट होने पर भी अध्यापक को शब्दार्थ-कथन प्रणाली का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अवलम्बन नहीं करना चाहिए, जितनी भी कविताएं वह निर्दिष्ट समय में सूक्ष्म रीति से पढ़ा सके, उतनी ही उसे पढ़ानी चाहिएं। नहीं तो परिणाम की आड़ में गुण का बलिदान हो जाता है और सारा काम निरर्थक हो जाता है।

§ 122. प्रश्नोत्तर या खण्डान्वय प्रणाली

इस प्रणाली में अध्यापक विद्यार्थियों से उपयुक्त प्रश्न करता है, इस प्रकार कविता का विश्लेषण करता है और फिर खण्ड को जोड़कर सारा पद्य समझाता है। यह प्रणाली वास्तव में पद्य पढ़ाने की प्रणाली है जैसे गद्य में गद्यांश को खण्ड-खण्ड करके प्रत्येक विचार के सम्बन्ध में प्रश्न किया जाता है और फिर उसको अगले विचार से जोड दिया है, वैसे ही पद्य में भी हर एक भाव या विचार विद्यार्थियों से ही उद्‌बोधित कराया जाता है और जहां कोई बात उन्हें समझ में न आए, वह उन्हें समझाई जाती है। सारा पाठ प्रश्नोत्तर की लड़ी बन जाता है।

वास्तव में यह प्रणाली गद्य के लिए उपयुक्त है, पद्य के लिए नहीं। परन्तु जिस कविता में काव्यात्मक कम हो, जैसे ऐतिहासिक तथा वर्णनात्मक लम्बी-चौड़ी कविता या महाकाव्य का एक खण्ड, जिसकी भाषा सरल और प्रवाहपूर्ण हो और जिसकी शैली अलंकारपूर्ण और गूढ़ होने के बदले विशुद्ध वर्णनात्मक हो, उसको पढ़ाने के लिए इसका प्रयोग किया जा सकता है। अध्यापक भावपूर्ण शैली में पढ़ाता जाए और बीच-बीच में विद्यार्थियों से प्रश्न पूछता जाए और आगे बढ़ता जाए। प्रश्नों द्वारा ही आवश्यक स्थलों की व्याख्या हो जाएगी। लम्बे-चौड़े पद्यबद्ध वर्णं के लिए यही प्रणाली शीघ्र फलदायक है।

§ 123. व्याख्या प्रणाली—

कविता पढ़ाने की यही सर्वोत्तम प्रणाली है। प्रारम्भिक कक्षाओं को छोड़कर माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं में इसी प्रणाली का अवलम्बन करना चाहिए। कविता पाठ के उपकरण वाले प्रकरण में कविता पाठ की जो विधि बताई गई है, वह यही है अर्थात् वाचन के बाद विस्तृत व्याख्या और भाव विश्लेषण, जिससे पाठकों को कविता के प्रत्येक भाव की, विषय की और काव्य सुन्दरता के प्रत्येक अंग की पहचान होने के बाद रसानुभूति हो। व्याख्या प्रणाली के भाव स्पष्टता और सौंदर्यानुभूति पर बल दिया जाता है। अध्यापक स्वयं अर्थ कथन करता है और अर्थ कथन के साथ-साथ कविता के आंतरिक भाव शैलीगत विशेषताएं, कवि के विचार कल्पनाएं और अनुभूतियां समझाई जाती हैं। आवश्यकतानुसार, प्रासंगिक वार्ताओं, ऐतिहासिक और भौगोलिक प्रसंगों तथा पौराणिक घटनाओं का भी वर्णन किया जाता है। अलंकारों और काव्य हन्यों की व्याख्या की जाती है।

व्याख्या प्रणाली का सफल प्रयोग करने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(i) व्याख्या करते समय आवश्यक बात नहीं करनी चाहिए।

(ii) व्याख्या विद्यार्थी की मानसिक अवस्था तथा कक्षा स्तर के अनुकूल हो...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चाहिए। माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए किसी कविता विशेष की व्याख्या उतनी विस्तृत नहीं हो सकती जितनी कि उच्च कक्षाओं के लिए।

(iii) ऐसा न हो कि विद्यार्थी बिल्कुल चुप-चाप और निष्क्रिय बैठे रहें। बीच-बीच में उनसे प्रश्न करने चाहिएं। प्रश्न उनके सौन्दर्यबोध में सहायक सिद्ध होंगे। सौन्दर्य-बोध की परीक्षा भी प्रश्नों द्वारा ही हो सकती है। यह ठीक है कि इस प्रणाली से अध्यापक ही अधिक काम करता है, परन्तु विद्यार्थी भी मूक श्रोता न बनें, वरन् अपना पूरा सहयोग दें।

उदाहरणार्थ, निम्न पंक्तियों की व्याख्या देखिए—

जल में शतदल तुल्य सदसते,
तप घर रहते, हम न तरसते,
देखो, दो दो मेघ बरसते,
मैं प्यासी की प्यासी,
आओ हे बनवासी।

आदर्श वाचन और विद्यार्थियों द्वारा वैयक्तिक वाचन के उपरान्त अध्यापक आवश्यक प्रसंग बतलाएगा। सिद्धार्थ के चले जाने के बाद उसकी पत्नी यशोधरा किस प्रकार विलाप करती है। सिद्धार्थ तथा यशोधरा के सम्बन्ध में यह प्रश्न पूछेगा। आवश्यक प्रसंग के बाद वह कठिन शब्दों के अर्थ भी बतलाए, जैसे शतदल - कमल जिसके सौ पत्ते हों. तरसते = शोभा पाते, मेघ बादल।

यशोधरा कहती है हे प्रियतम् ! यदि तुम घर छोड़ कर संन्यास धारण न करते तब गृहस्थाश्रम में ममता रहित रह कर ऐसी शोभा पाते, जैसे कमल जल के बीच में रह कर शोभायमान प्रतीत होता है, अर्थात् कमल पानी के बीच में रह कर भी निर्लिप्त रहता है। पानी में कभी कमल फूल देखा है ? क्या पानी की कोई छींट उसे भिगो सकती है ? नहीं। यदि उस पर पानी डाला जाए तो वह लुढ़क कर नीचे आ जाता।

यशोधरा कहती है कि उसी तरह तुम्हारे घर रहने से भी दो बातें होती हैं — एक यह कि तुम तपस्या में लगे रहते और दूसरी बात यह कि हम भी तुम्हारे दर्शनों के लिए अधिक न तड़पते। इस प्रकार एक पंथ दो काज सिद्ध होते। आज तुम्हारे अभाव में मेरी दोनों आंखें मेघों की भांति वर्षा कर रही हैं। किन्तु मैं प्यासी की प्यासी ही हूं, अर्थात् रोकर भी तुम्हारा दर्शन नहीं कर सकती। मेघों के बरसने पर भी प्यासा रहना कितना विचित्र है। परन्तु मेघों के बरसने से यहां तात्पर्य है। आंखों से जल बरसना अथवा रोना। प्यासा रहने का क्या तात्पर्य है ? दर्शन प्राप्त न करना।

उच्च कक्षाओं को यहां विशेषोक्ति अलंकार भी समझाया जा सकता है। कारण के होते हुए भी अर्थात् मेघों के बरसने पर भी, कार्य नहीं होता, अर्थात् प्यास नहीं बुझती।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यहां पर यशोधरा इस बात को प्रकट करती है कि घर में निर्लिप्त रूप से रहकर प्राणी परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। इसके साथ ही गृह-जन भी नहीं तड़पते। गृहस्थाश्रम ही संन्यास से श्रेष्ठ है। संन्यास इसलिए अच्छा नहीं है, क्योंकि उसमें घर का त्याग करना पड़ता है। प्राणी दोनों आंखों से नीर बहाता है और फिर भी प्रिय के दर्शन नहीं होते। वह पुकार उठती है—हे वन में रहने वाले प्रियतम ! अब लौट आओ।

अध्यापक द्वारा व्याख्या के उपरान्त इस गद्य का एक दो बार फिर सस्वर वाचन करना होगा। पाठक अपने आप को यशोधरा में प्रक्षेप (Projects) करेंगे और उन विरह भावों का आस्वादन करेंगे, जो यशोधरा के मन में उत्पन्न थे। अध्यापक इस कार्य में उनका सहायक होगा :—

व्याख्या प्रणाली के तीन उपभेद—

(क) व्यास प्रणाली।
(ख) तुलना प्रणाली।
(ग) समीक्षा प्रणाली।

(क) व्यास प्रणाली —

इस प्रणाली का नामकरण कथावाचक व्यासों को ध्यान में रख कर किया गया है। व्यास लोग अपनी कथा को रोचक बनाने के लिए भाषा, भाव, काव्य की विशेषताएं, शैली आदि की विस्तृत व्या ा करते हैं। वे एक-एक पद को लेकर उनके विभिन्न अर्थ संग आि ाते ैं। एक-एक भाव के साथ अनेक उदाहरण देते हैं। यदि अध्यापक भी इसी प्रकार ए क पद की बाल की खाल उतारते हुए पद्य की विस्तृत व्याख्या करे तो कविता पाठ ा उद्देश्य सफल हो जाता है। परन्तु इसमें अधिक समय अपेक्षित है। प्राय: शिक्षक के पास इतना समय नहीं होता है। व्यास प्रणाली व्याख्या की पराकाष्ठा है, यहां व्याख्या करने में कोई कसर शेष नहीं, बी० ए० एम० ए० कक्षाओं के लिए उपयोगी है, परन्तु हाई स्कूल की कक्षाओं के लिए नहीं।

(ख) तुलनात्मक प्रणाली—

इस प्रणाली में अध्यापक एक ही पद की तुलना विभिन्न भाषाओं के अथवा एक ही भाषा के विभिन्न कवियों के विभिन्न पदों के साथ करता है जहां भावसाम्य हो, जैसे तुलसी की यह पंक्ति :—

> ढोल, गंवार, शूद्र पशु नारी।
> यह सब ताड़न के अधिकारी ॥

पढ़ाते समय अध्यापक भिन्न-भिन्न कवियों के इसी विषय पर अर्थात् नारी के सम्बन्ध से विविध विचारों को उपस्थित करेगा और इस प्रकार एक ही विषय पर विभिन्न काव्य पदों की तुलना कराएगा जैसे—

(i) गुप्त जी के विचार नारी की अवस्था के बारे में :

> अबला जीवन हाय, तेरी यही कहानी,
> आंचल में है दूध और आंखों में पानी ॥

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) कवि प्रसाद के शब्दों में :—

नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो !

× × × ×

तुम भूल गए इस जीवन—में क्या सत्ता है इस नारी की ।

(iii) कवि निराला नारी की करुण दशा का सजग चित्र खींचता है —

वह इष्ट देव के मन्दिर की पूजा सी,
वह दीप शिखा सी शांत भाव में लीन ।

(iv) पंत पुकार उठता है—

मुक्त करो नारी को मानव
चिर बन्दिनी नारी को,
युग-युग की निर्मम कारा से,
जननी सखी प्यारी को ।

(v) मनुस्मृति में नारी की महत्ता स्थापित हुई -

'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता'
जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं ।

(vi) परन्तु सन्त कवियों ने नारी को प्रभु मिलन में बाधा ही समझा है—

'नारी की झाई परत अधा होतु भुजंग ।
कबीरा तिनकी कौन गति, जो नित नारी के संग'

(vii) संस्कृत के 'भास' कवि ने नारी की दुर्बलता का उल्लेखन किया है—

'स्त्री स्वभावस्तु कातरः' अर्थात् स्त्री स्वभाव से कायर है ।

(vii) अंग्रेजी कवि शैक्सपीयर (Shakespeare) ने भी ऐसा ही व्यक्त किया है—'Frailty the name is woman'.

यदि अध्यापक कुशल हो, तो वह व्याख्या प्रणाली में कवि के विचारों को अन्य कवियों के विचारों के साथ तुलना करते हुए पर्याप्त मनोरंजन उत्पन्न कर सकता हैं । परन्तु यह प्रणाली स्वतन्त्र प्रणाली न होकर व्याख्या प्रणाली की सहायक ही है, और इसका प्रयोग उच्च कक्षाओं के लिए ही लाभदायक है । माध्यमिक कक्षाओं में भी इसका सीमित प्रयोग किया जा सकता है ।

(ग) समीक्षा प्रणाली—

इस प्रणाली में प्रत्येक कविता को आलोचना के सिद्धान्तों की कसौटी पर परखा जाता है । अध्यापक कविता के गुण-दोषों की विवेचना करने में, छन्द अलंकारों, शब्द-शक्तियों, बुद्धि तत्त्व, कल्पना तत्त्व, आदि कविता के उपकरणों की जांच तथा मूल्यांकन करने में पाठक का सहायक बनता है । वास्तव में आलोचना महाविद्यालय के स्तर की वस्तु है । स्कूलों के विद्यार्थी समीक्षा के सिद्धान्तों से परिचित नहीं होते । अतः समीक्षा प्रणाली इन श्रेणियों में लाभदायक नहीं ।

उपर्युक्त सभी प्रणालियों का विवेचन हो चुका है । अध्यापक को चाहिए कि विद्या-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थियों की मानसिक अवस्था और कविता के विषय के अनुकूल उपयोगी प्रणाली का अवलम्बन करे। प्रत्येक प्रणाली का अपना-अपना विशेष स्थान है, जैसे प्रारम्भिक कक्षाओं में तीन नाट्य प्रणाली, पद्यात्मक वर्णन, खण्डात्मक प्रणाली, भाव-प्रधान कविताओं में व्याख्या प्रणाली, कभी-कभी तुलनात्मक जांच पैदा करने के लिए तुलनात्मक प्रणाली और महाविद्यालय की कक्षाओं के लिए व्यास प्रणाली और समीक्षा प्रणाली।

सारांश में यह है कि इन सभी प्रणालियों में वही प्रणाली उत्तम है जिसके द्वारा कविता पाठ के उद्देश्य की पूर्ति हो। कविता शिक्षण की सभी प्रणालियों को नीचे तालिका 24 द्वारा स्पष्ट किया जाता है।[1]

कविता-शिक्षण प्रणालियां

गति प्रणाली | नाट्य प्रणाली | शब्दार्थ कथन प्रणाली | खण्डान्वय या प्रश्नोत्तर प्रणाली | व्याख्या प्रणाली

व्यास प्रणाली | तुलनात्मक प्रणाली | समीक्षा प्रणाली

तालिका 24. कविता-शिक्षण प्रणालिया

§ 124. कविता पाठ में ध्यान देने योग्य बातें—

(i) कविता पाठ आरम्भ करते हुए लम्बी-चौड़ी भूमिका नहीं बांधनी चाहिए। आवश्यक प्रसंग बतला कर वाचन आरम्भ करना चाहिए।

(ii) अध्यापक का 'वाचन' आदर्श होना चाहिए जिसके द्वारा पढ़ने सुनने मात्र से ही कविता का भाव स्पष्ट हो जाएगा।

iii) कवि का स्थान कविता के पश्चात् आता है।

(iv) शब्दार्थ और व्याकरण पर बल नहीं देना चाहिए। कविता पाठ का उद्देश्य भाषा सिखाना नहीं, उसके शब्दों का वाक्य प्रयोग और व्याकरण की दृष्टि से विश्लेषण दोनों वर्जित हैं।

(v) कविता बार-बार पढ़नी चाहिए। गद्य को दो बार पढ़ना काफी है, परन्तु पद्य को बार-बार पढ़ने से उसका सम्पूर्ण सौंदर्य स्पष्ट हो जाता है।

(vi) यह आवश्यक नहीं कि सारी कविता एक ही घण्टी में समाप्त हो जाए। कविता का जितना अंश सूक्ष्म रीति से पढ़ाया जा सके, उतना ही पढ़ाना चाहिए; शेष

1. कविता शिक्षण के सम्बन्ध में विस्तार से पढ़िए भूषम् शर्मा लिखित पुस्तक 'कविता की शिक्षा'।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगले दिन के लिए छोड़ देना चाहिए ।

(vii) कविता की भाव व्यंजना पर अधिक बल देना चाहिए ।

(viii) कविता का सस्वर पाठ अपेक्षित है, इससे संगीतात्मकता स्पष्ट हो जाती है और अधिक आनन्द भी प्राप्त होता है । हां, माध्यमिक और उच्च कक्षाओं में राग-युक्त गाना निरर्थक है । सस्वर पाठ ही काफी है ।

(ix) कविता समझाने में व्यग्रता से काम नहीं लेना चाहिए । यदि विद्यार्थियों को एक बार समझ में न आए तो दूसरी बार समझाने का या अगले दिन समझाने का प्रयास करना चाहिए ।

(x) कविता पाठ करने के लिए काव्यमय तथा काव्यानुकूल वातावरण उत्पन्न करना चाहिए । जब कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या अधिक हो, या शोर मच रहा हो, या विद्यार्थियों के पास पुस्तकें न हों, ऋतु प्रतिकूल हो, दिन की अन्तिम घण्टी हो, विद्यार्थी थके हुए हों अथवा अध्यापक का सहानुभूति-पूर्ण व्यवहार न हो, तब कविता नहीं पढ़ाई जा सकती ।

(xi) कविता कण्ठस्थ करने में प्रोत्साहन देना चाहिए ।

(xii) श्यामपट का प्रयोग केवल आश्यकतानुसार करना चाहिए ।

(xiii) प्रश्नों की संख्या अधिक नहीं होनी चाहिए ।

(xiv) कविता-पाठ को बनावटी नहीं बनाना चाहिए । कई प्रशिक्षण-महाविद्यालयों में छात्र-शिक्षकों को कहा जाता है कि कविता पढ़ाने से पहले समभावी कविता से आरम्भ करनी चाहिए। छात्र-शिक्षण का अधिकतम समय प्रस्तुत कविता के साथ समान भाव वाली कविता ढूंढने में लग जाता है । ढूंढकर भी जब उस कविता का वाचन करता है और उसके अनन्तर प्रस्तुत कविता पढ़ाने लगता है तो छात्रों में भी दुविधा उत्पन्न होती है । ऐसी समभावी कविता से आरम्भ करने का कोई लाभ नहीं । छात्र-शिक्षक स्वयं कहते हैं कि इसका लाभ नहीं, परन्तु किसी अज्ञानी ने कहीं पर रुढ़ि आरम्भ की, और रुढ़ि चल पड़ी । समभावी कविता पढ़ाने का स्थान मूल कविता पढ़ाने के उपरान्त तुलना के लिए हो सकता है । ऊपर तुलनात्मक प्रणाली की व्याख्या के साथ इस बात को स्पष्ट किया गया है । स्मरण रहे कि पाठ्य पुस्तक की प्रत्येक कविता की समभावी कविता हिन्दी साहित्य में से ढूंढना कठिन है । ऐसा निरर्थक [illegible] करने की कोई [illegible]श्यकता नहीं । कवि की अपनी कविता ही इतनी सुन्दर है उससे दूसरी कविता के शीशे में देखने की आवश्यकता ही नहीं ।

§ 125. कविता में अभिरुचि बढ़ाने के साधन—

कविता मनोरंजन और मनोभावों का परिष्कार एक साथ करती है । काव्य में रुचि रखने वाले, काव्य सेवन द्वारा अपनी रुचियों का परिष्कार और चरित्र का सुधार करते है । अतः कविता के प्रति आजीवन प्रेम बना रहना चाहिए । इस प्रेम को स्थायी रखने के लिए विद्यालय में ऐसा वातावरण उपस्थित करना चाहिए, जिसमें काव्य सम्बन्धी भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यकलाप होते रहते हों और विद्यार्थियों को कविता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का निरन्तर अभ्यास होता रहे। जिससे वे आगे चल कर भी या तो स्वयं कवि बनें, अथवा काव्य प्रेमी बनें। ऐसा करने के लिए निम्न साधन अपनाए जा सकते हैं—

(i) **कविता लिखने का अभ्यास**—प्रारम्भ में तुक-बन्दी करने और बाद में किसी वर्ण्य विषय पर कविता लिखने में छात्रों को प्रोत्साहन देना चाहिए। भले ही उनकी कविताएं हमारी दृष्टि में उपहासप्रद हों, परन्तु उनकी कविताओं का संशोधन करने से, उनको कक्षा में कविता सुना देने से, तुक-बन्दी के गुर सिखाने और आदर्श कविताओं का अनुकरण करवाने से उनकी कवि प्रतिभा जागृत की जा सकती है। तीसरी श्रेणी को यदि पुस्तक पर कविता लिखने को कहा जाए, तो नीचे जैसी पंक्तियों पर सन्तोष करना चाहिए।

यह मेरी पुस्तक है जिसको पढ़ कर मैं सुख पाता।
नित्य सुबह उठ कर मैं इसका पाठ सदा दुहराता॥

ऐसी ही पंक्तियां लिखने वाले, ऐसी ही तुकबन्दी करने वाले कौन जाने कल राज कवि बन जाएं। पंक्तियों का अन्त्यानुप्रास 'आता' निराला जी की 'वह आया, दो टूक कलेजे के करता, पछताता, पथ पर आता' वाली कविता के अन्त्यानुप्रास से कुछ कम है क्या?

(ii) **कविता का कंठस्थ करना**—बचपन की कण्ठस्थ की हुई सुन्दर कविताएं आजीवन काम आती हैं। अशिक्षित गंवार भी कबीर, तुलसी के दोहे कण्ठस्थ करके, समय-समय पर उन्हें सुनाकर सब को अनुरंजित करते हैं। नीति के दोहे कहीं भी काम आ सकते हैं। प्रसिद्ध कवियों की प्रसिद्ध कविताएं एक प्रिय व्यापार (hobby) हैं। मन पर अंकित कविताएं आजीवन आनन्द वृद्धि का साधन होती हैं। अतः छात्रों को अपनी रुचिकर कविताएं कण्ठस्थ करने में प्रोत्साहित करना चाहिए।

(iii) **अन्त्याक्षरी**—कण्ठस्थ की हुई कविताओं का अन्त्याक्षरी के खेल द्वारा सुन्दर प्रयोग किया जा सकता है। इस खेल में कक्षा को दो वर्गों में बांटा जाता है। एक वर्ग का छात्र एक पद सुनाता है। दूसरे वर्ग के किसी छात्र को ऐसा पद सुनाना होता है, जिसका प्रथम अक्षर पहले पद का अन्तिम अक्षर हो। यदि किसी अक्षर पर वर्ग का कोई छात्र कविता नहीं कह पाता, तो समूह की हार समझी जाती है। इस खेल में मनोरंजन भी होता है और कविताओं को याद रखने का व्यायाम भी होता हैं। वर्ष 1973 में रामचरित मानस की 440वीं जयन्ती मनाई गई। उच्च कक्षाओं में मानस के ही छन्दों पर आधारित अन्त्याक्षरी आयोजित की जा सकती है।[1]

(iv) **सुभाषित प्रतियोगिता**—इसमें छात्र दूसरों के सुन्दर पद सुनाते हैं। जितने भी विद्यार्थी भाग लेते हैं, उनको दूसरों की सुन्दर पद-कविताएं याद होनी चाहिएं ताकि प्रतियोगिता के समय उन्हें सरस कण्ठ से सुनाकर साधुवाद प्राप्त

1. निर्देश के लिए देखिए: केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा प्रकाशित हिन्दी-शिक्षण-पत्र, जनवरी 1973 अंक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर सके ।

(v) **समस्यापूर्ति**—इसका प्रयोग मध्यकालीन राजा-महाराजाओं के दरबार में होता था। राजा एक पंक्ति उपस्थित करता और कवि उसके अनुकूल एक पूरी कविता रचते थे। महाविद्यालयों में कभी-कभी ऐसी प्रतियोगिताएं रखी जाती हैं परन्तु इसका युग अब बीतता सा जा रहा है।

(vi) **कवि सम्मेलन**— नगर के या आस-पास के प्रसिद्ध कवियों को निमन्त्रित करके कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा सकता है। इसका यह फल होता है कि कवियों को भी आत्म-प्रदर्शन का अवसर मिल जाता है और छात्रों को कवियों का परिचय प्राप्त होता है, तथा कवि के मुख से साक्षात-कविता सुनकर उन्हें अधिक आनन्द मिलता है। वर्ष में एक-दो बार कवि सम्मेलन का आयोजन अवश्य करना चाहिए। केवल यह ध्यान में रखना चाहिए कि जिन कवियों को बुलाया जाए वे अनाड़ी कवि न हों, और सम्भेलन में वे केवल गाय हाक जाएं। सम्मेलन का स्तर ऊंचा होना चाहिए।

(viii) **कवि दरबार**—किसी विशेष युग के जीवित या दिवंगत कवियों का नाट्य-विधि से सम्मेलन रचा जा सकता है अर्थात् छात्र ही उन कवियों का अभिनय करके उनकी जैसी वेश-भूषा पहन के, उनकी कविताएं रंगमंच पर सुना सकते हैं। अभिनय करने से, कवियों की रचनाओं को कण्ठस्थ करने से, कवि दरबार के आयोजन से छात्रों को बड़ा लाभ मिलता है।

(viii) **कवि जयन्ती** कवियों की जन्मतिथियों पर भी जयन्तियाँ मनाई जानी चाहिएं और उन अवसरों पर उनकी कविताओं का पाठ करना चाहिए।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. कविता पढ़ाने में कौन से सिद्धान्तों का पालन करना अपेक्षित है ? उसके पूर्ण आस्वादन में आप कहाँ तक सहायता दे सकते हैं ? किसी हिन्दी कविताओं के उदाहरण देकर समझाएं। [§ 114, 115, 124]

2 बाल गीत से क्या तात्पर्य है। एक बाल-गीत लिखते हुए उसका स्थान हिन्दी-शिक्षण में निर्धारित कीजिए। [§ 116, 124]

3. कविता का आस्वादन कराने के लिए तथा रोचक बनाने के लिए आप कौन-कौन से उपायों को काम में लाएंगे ? [§ 125]

4. कविता पढ़ाने की कौन-कौन सी विधियां प्रचलित हैं ? उनमें से आप कौन-सी विधि अपनाएंगे और क्यों ? [§ 120, § 125]

5. कविता पढ़ाने की व्याख्या प्रणाली से क्या तात्पर्य है ? आठवीं कक्षा को सूरदास का एक पद "मैया मोरी मैं ना माखन खायो" पढ़ाने के लिए व्याख्या प्रणाली का विवरण दीजिए।

6. कविता के शिक्षा के कौन-कौन से अंग हैं ? सस्वर वाचन और भाव-विश्लेषण करने में आप किस प्रकार सहायता देंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

7. कविता की समीक्षा (Critical appreciation) से क्या तात्पर्य है? उच्च कक्षाओं में समीक्षा सिखाने की विधि समझाइए। [§ 123]

8. नीचे दी हुई उक्तियों में से सत्य और असत्य उक्तियों को अलग-अलग कीजिए :—

(i) कविता पढ़ाने से पहले कवि का पूरा परिचय देना चाहिए।

(ii) कविता पढ़ाने में मौन पाठ की कोई आवश्यकता नहीं।

(iii) कविता में आए हुए कठिन शब्दों की व्युत्पत्ति तथा तत्सम्बन्धी व्याकरण समझना चाहिए।

(iv) कविता पढ़ाते हुए अधिक से अधिक प्रश्नोत्तर की आवश्यकता है।

(v) प्रत्येक कविता कंठस्थ करवानी चाहिए।

9. गद्य और पद्य का परस्पर अन्तर स्पष्ट कीजिए। हिन्दी पद्य की शिक्षा में आप कौन-सी विधि अपनाएंगे। कविता पढ़ाने से पहले आप किन-किन बातों को ध्यान में रखेंगे? [§ 117, 119, 124]

सहायक पुस्तकें

8.	Haddow A :	On the Teaching of Poetry
2.	Joggar J. H.	Poetry in School.
3.	Tomkinson	The Problem of Sanskrit-Teaching
4.	Hupriker G.	Teaching of Appreciation Ch. X. XVII
5.	Guarey	Teaching of Poetry.
1.	सीतारामचतुर्वेदी :	भाषा की शिक्षा
2.	रमणीकांत शूर एवं बृज-भूषण शर्मा :	कविता की शिक्षा
3.	शिव नाराणण श्रीवास्तव :	कविता की शिक्षा
4.	केन्द्रीय विद्यालय-संगठन	हिन्दी शिक्षण पत्र, जनवरी 1973

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

22

नाटक की शिक्षा

§ 126. नाटक किसे कहते हैं ?

काव्य के दो भेद हैं—श्रव्य (गद्य और पद्य) तथा (दृश्य नाटक)। नाटक को शास्त्रीय परिभाषा में रूपक कहते हैं। नटों पर वास्तविक व्यक्तियों का आरोप करने से रूपक बनता है—'तद्रुपरीपात्तु रूपकम्'। आरोप करने के लिए अभिनय तथा अनुकरण की आवश्यकता पड़ती है। अत: नाटक में भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का अनुकरण किया जाता है—'अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्'। वह अनुकरण आँगिक (शरीर का) वाचिक (वाणी का), आहार्य ('वेश-भूषा') और सात्विक (भावनाओं का), चार प्रकार का होता है। नाटक के लिए कथावस्तु (Plot), पात्र (Characters), उनका चरित्र-चित्रण (Characterisation), अभिनय (Acting) और उद्देश्य (Aim) आवश्यक हैं। उपन्यास (Novel) में भी कथा-वस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण आवश्यक हैं, परन्त इसका रंगशाला में अभिनय नहीं होता। नाटक की रचना रंगमंच पर अभिनय के लिए होती है। नाटक साक्षात् दृश्य होने के कारण अधिक मनोरंजन प्रदान करता है। नाटक के मूल में मानव की अनुकरण नामक मानसिक प्रवृत्ति काम करती है। आत्म-दर्शन की इच्छा से अनुकरण, अनुकरण से अभिनय और अभिनय से नाटक की उत्पत्ति होती है। आनुषंगिक रूप में नाटक, चित्रकला, संगीतकला, नृत्यकला, काव्यकला, स्थापत्य आदि अनेक कलाओं और शास्त्रों का प्रयोग होता है।

§ 127. नाटक के उद्देश्य—

नाटक के उद्देश्य निम्न हैं :—

(i) मानव-मन में मूल-भूत आत्मप्रदर्शन की इच्छा की तृप्ति करना।

(ii) अनुकरण की प्रवृत्ति के लिए उदात्त निकासमार्ग (Sublimated Channel) तथा अवसर उपस्थित करना।

(iii) मनोरंजन प्रदान करना, मनोभावों को तरंगित करना।

(iv) मनोभावों का परिष्कार करना।

(v) हितकर उपदेश देना।

(vi) जीवन का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करना, मानव-चरित्र का अध्ययन करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाटक शिक्षण के उद्देश्य —

विद्यालय में नाटक पढ़ाने तथा उसका अभिनय कराने के उद्देश्य नाटक के उपर्युक्त उद्देश्यों के ही अनुरूप है —

(i) विद्यार्थियों के मन में दबी हुई प्रभुत्वकामना (Self assertion) तथा आत्म-प्रदर्शन की इच्छा के लिए अभिव्यक्ति तथा तृप्ति के अवसर प्रदान करना।

(ii) अनुकरण की मूल-प्रवृति का उदात्तीकरण करके उसकी अभिव्यंजना के लिए सुअवसर स्थापित करना।

(iii) विद्यार्थियों को मनोरंजन प्रदान करना।

(iv) विद्यार्थियों के मनोभावों का परिष्कार करना।

(v) नाटक में ध्वनित हितकर उपदेशों से विद्यार्थियों को शुद्ध आचरण सिखाना तथा उनके चरित्र में सुधार करना।

(vi) उन्हें जीवन की विभिन्न परिस्थितियों तथा लौकिक आचार-व्यवहार से परिचित कराना।

(vii) रंगमंच पर अभिनय द्वारा भाषा का शुद्ध उच्चारण, प्रभावोत्पादक, भावानुकूल और अवसरानुकूल कथोपकथन, बोल-चाल और भाषा-प्रयोग सिखाना।

(viii) अभिनय सिखाना तथा सहायक रूप में संगीत, नृत्य, चित्रकला और रंगमचीय कला का अभ्यास कराना।

(ix) विभिन्न पात्रों के वार्तालाप को याद कराने से छात्रों में सुन्दर और प्रभावोत्पादक भाषा के नमूने अंकित करना और उससे अभिव्यक्ति की योग्यता बढ़ाना।

§ 128 नाटक-शिक्षण प्रणाली—

नाटक-शिक्षण की निम्न प्रणालियां हैं—

1. व्याख्या की प्रणाली।
2. आदर्श नाट्य पाठ प्रणाली।
3. अभिनय-प्रणाली, जिसके दो प्रकार हैं :—

(क) रंगमंच-अभिनय-प्रणाली। (ख) कक्षा-अभिनय-प्रणाली।

4. संयुक्त प्रणाली जिसमें उपर्युक्त तीनों प्रणालियों का उपयुक्त सामंजस्य होता है।

प्रत्येक का विवरण नीचे दिया जाता है :—

1. **व्याख्या की प्रणाली**—इस प्रणाली में अध्यापक सारा नाटक स्वयं पढ़ाता है और नाटक के लेखक, कथावस्तु, विभिन्न पात्रों के चरित्र-चित्रण, कथोपकथन की विशेषताओं, शैली की विशेषताओं और नाटकीय उद्देश्य की सफलता पर स्वयं ही प्रकाश डालता है, नाटक के सभी तत्त्वों, कठिन स्थलों, नाटककार के विचारों और भावों की पूरी व्याख्या करता है और अन्त में विद्यार्थियों को नाटक की समीक्षा करने में सहायता भी देता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह प्रणाली महाविद्यालय की कक्षाओं के लिए उपयोगी है। माध्यमिक कक्षाओं और हाई स्कूल की कक्षाओं के विद्यार्थी नाटकीय आलोचना के सिद्धान्तों से परिचित नहीं। अतः उन्हें इस प्रणाली से कोई लाभ नहीं हो सकता।

2. **आदर्श नाटक पाठ प्रणाली**—इस प्रणाली में अध्यापक स्वयं अभिनेता बनता है और नाटक सभी चरित्रों का वास्तविक अभिनय करता है। वह कक्षा के सामने सारा नाटक इस ढंग से पढ़ता है कि पात्रों के भाव, चरित्र और कार्य सुनने मात्र से ही स्पष्ट हो जाते हैं। जहां आवश्यकता पड़े वहां वह कठिन शब्दों का अर्थ बताता है और भावों का स्पष्टीकरण भी करता है। विद्यार्थी निष्क्रिय श्रोता तथा द्रष्टा बन कर सारे नाटक का रसास्वादन करते हैं।

इस प्रणाली में यह दोष है कि सारा काम अध्यापक ही करता है और विद्यार्थी मूक श्रोता बन जाते हैं। नाटक की शिक्षा का उद्देश्य इस प्रकार सफल नहीं हो पाता।

3. **अभिनय प्रणाली**—इस प्रणाली में नाटक के अभिनय पर बल डाला जाता है। अभिनय रंगमंच पर भी हो सकता है और कक्षा में भी।

(क) **रंगमंच अभिनय प्रणाली** — विद्यार्थी नाटक के अभिनय में स्वयं भाग लेते हैं और रंगमंच पर विधिपूर्वक उसे खेलते हैं।

(ख) **कक्षा अभिनय प्रणाली** क्योंकि रंगमंच पर खेलने के लिए अधिक तैयारी करनी पड़ती है और अधिक द्रव्य उस पर व्यय होता है, जो एक छोटे निर्धन विद्यालय के लिए सम्भव नहीं, इसलिए सम्पूर्ण नाटक कक्षा में भी अभिनय कराया जा सकता है। कक्षा के विभिन्न छात्रों को नाटक के विभिन्न पात्रों के कार्य बांट दिए जाते हैं और वे अपने-अपने संवाद को नाटकीय परिस्थितियों की भूमिका में भाव-पूर्वक पढ़ते हैं तथा तदनुकूल वाचिक अभिनय करते हैं।

इस विधि से जनाभाव की बाधा दूर हो जाती है और प्रत्यक्ष अभिनय भी सम्पादित होता है। प्रणाली में केवल एक दोष है कि सम्भवतः विद्यार्थी नाटक की विभिन्न परिस्थितियों से परिचित न हों, कथावस्तु भली प्रकार न समझें, कथोपकथन की बारीकियों से परिचित न हों, और सम्पूर्ण नाटक की सामाजिक या ऐतिहासिक भूमिका भी न जान पाएं। इन बातों के ज्ञान के लिए उन्हें व्याख्या की आवश्यकता है, नहीं तो विद्यार्थी केवल वाचन कर सकेंगे, अभिनय नहीं।

5. **संयुक्त प्रणाली**—उपर्युक्त सभी प्रणालियों में गुण भी हैं और दोष भी। एक प्रणाली दूसरी प्रणाली की पूरक बन कर उसके दोषों का निदान कर सकती है। अतः उपर्युक्त प्रणाली का निम्न प्रकार का संयुक्त रूप उपयोगी हो सकता है :—

सर्वप्रथम आदर्श नाटक-प्रणाली का प्रयोग किया जाए, अर्थात् अध्यापक स्वयं ... वाचन करे और बीच में आवश्यकता अनुसार ...

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाए, कठिन शब्दों का अर्थ उद्‌बोधन विधि से अथवा प्रवचन विधि से समझाए और कहानी सम्बन्धी, चरित्र सम्बन्धी विशेष प्रश्नोत्तर विधि से स्पष्ट करे अर्थात् वह पद्य-पाठ प्रणाली में इतना संशोधन करे कि वाचन अभिनययुक्त हो। अभिनय केवल वाचिक हो आंगिक आदि नहीं।

इसके पश्चात् कक्षाअभिनय प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। अध्यापक सारा नाटक समझाने और पढ़ाने के बाद नाटकीय पात्रों का कार्य विद्यार्थियों में बांटे और कक्षा में अभिनय करवाए, इससे अभिनय भी सम्पूर्ण तथा शुद्ध होगा और नाटक का उद्‌देश्य भी सरल होगा।

यदि विद्यालय धन की व्यवस्था कर सके तो वर्ष में दो-तीन बार अच्छे से नाटक रंगमंच पर भी खेले जाएं और अन्त में कभी-कभी व्याख्या प्रणाली का उच्च कक्षाओं में प्रयोग किया जा सकता है। स्वयं नाटक खेलने के उपरान्त विद्यार्थी नाटकीय समीक्षा के सम्बन्ध में साधारण तथा प्रारम्भिक बातें भली प्रकार समझ सकते हैं। व्याख्या प्रणाली दूषित नहीं, केवल इसका सदुपयोग होना चाहिए। कथावस्तु, चरित्र-चित्रण कौर कथोपकथन की आवश्यकताएं अवश्य ही उच्च कक्षाओं में समझाई जा सकती हैं, परन्तु समझाने से पहले नाटक खेला जाना चाहिए।

नाटक शिक्षा के सम्बन्ध में अन्य बातें—

(i) नाटक आरम्भ करने से पहले नाटककार का तथा आवश्यकतानुसार ऐतिहासिक या सामाजिक पृष्ठ-भूमि का संक्षिप्त परिचय देना चाहिए।

(ii) नाटक पढ़ाने से पहले नाटकीय कथा या विषय कभी नहीं बताना चाहिए। पहले ही कहानी बता देने से नाटक को पढ़ाने की या घटनाओं को जानने की सारी उत्सुकता नष्ट हो जाती है।

iii) नाटकों में आए हुए गीतों को पढ़ाने के लिए पद्य-शिक्षा विधि का सहारा लेना चाहिए। इसी प्रकार गद्य के कठिन स्थलों को पूर्वोक्त गद्य शिक्षण-विधि से पढ़ाना चाहिए।

(iv) सम्पूर्ण नाटक एक ही बार या एक ही दिन में समाप्त करने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए। एक बार केवल एक अंक पढ़ाना चाहिए अथवा उतना पढ़ाना चाहिए जितना एक घण्टे में विधिपूर्वक पढ़ाया जा सकता है।

(v) एकांकी नाटक को एक ही दिन में समाप्त किया जा सकता है, परन्तु यदि उसके बहुत से दृश्य हों तो एक दृश्य को एक घण्टे में पढ़ाना चाहिए। यदि दृश्य भी बड़ा हो तो उसमें से पूरा संवाद लेकर पढ़ाना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. पाठ्य-पुस्तक में नाटक का क्या स्थान है ? नाटक पढ़ाने के विभिन्न उद्देश्य तथा विषयों का विवरण दीजिए । [§ 127]

2. भाषा की शिक्षा में अभिनय का क्या स्थान है ? हिन्दी से उदाहरण देकर समझाइए ।

3. उच्च कक्षाओं के लिए हिन्दी नाटककारों द्वारा लिखे हुए ऐसे एकांकी नाटकों की सूची बनाइए जो विद्यालय में खेले जा सकें ।

4. कहानी पढ़ाने की विधि में और नाटक पढ़ाने की विधि में क्या अन्तर है ? उच्च कक्षाओं को कथावस्तु, चरित्र-चित्रण और कथोपकथन की विशेषताएं किस प्रकार सिखाई जा सकती हैं ।

सहायक पुस्तकें

1. Tidy man and Butter field	Teaching the Language Arts Ch. 9.
2. Vivan Di Sola Pinto	The teaching of English in Schools. Ch. II. 'Drama in the School.'
3. गुलाब राय	काव्य के रूप (नाटक प्रकरण)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

23

सहायक पुस्तकें तथा द्रुत पाठ
(SUPPLEMENTARY READERS AND RAPID READING)

§ 129. सहायक पुस्तकों का स्थान --

भाषा शिक्षण के लिए दो प्रकार की पाठ्य-पुस्तकें होनी चाहिएं। एक सूक्ष्म अध्ययन (Intensive Study) के लिए और दूसरी स्कूल अध्ययन या अतिरिक्त पाठन (Extensive Study) के लिए। सूक्ष्म-अध्ययन के लिए ऐसी पाठ्य-पुस्तकें नियत की जाती हैं, जिनका प्रत्येक शब्द, प्रत्येक वाक्य, प्रत्येक पाठ का गम्भीर अध्ययन करना होता है। नए शब्दों के अर्थ और वाक्य प्रयोग पर पूरा ध्यान दिया जाता है। उन पर व्याकरण और रचना के प्रश्न भी पूछे जाते हैं। ऐसी पुस्तक, शब्दावली, मुहावरे, नए भाव विचार, उच्चारण, व्याकरण, रचना आदि के अध्ययन का केन्द्र (Center of Study) बन जाती है, परन्तु ऐसी पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त सहायक पुस्तकों की भी आवश्यकता पड़ती है जो सरल और सुबोधगम्य हों, जिनमें नई कठिन शब्दावली न हो और जिनके पढ़ने से वाचन में अभ्यास हो जाए। ऐसी पुस्तकें शीघ्र पढ़ी जा सकती हैं और धीरे-धीरे पढ़ी जाने वाली पाठ्य-पुस्तक की सहायक बन जाती हैं। इस प्रकार स्थूल-अध्ययन और द्रुत पाठ (Rapid Reading) के लिए सहायक पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है।

§ 130. द्रुत पाठ का महत्त्व तथा उद्देश्य—

(क) भाषा विषयक—

(i) **सीखी हुई शब्दावली का अभ्यास करना**—पाठ्य-पुस्तक में सीखी हुई शब्दावली के अभ्यास के लिए द्रुतपाठ में अवसर मिल जाता है। पाठ्य-पुस्तक में तीन प्रकार के शब्द होते हैं, प्रथम सक्रिय शब्दावली (Working Vocabulary) जिसके बार-बार प्रयोग करने की आवश्यकता पड़ती है, दूसरी परिचय शब्दावली (Recognition Vocabulary) जिसका प्रयोग नहीं किया जाता, वरन् पाठ बोध के लिए अर्थ याद रखा जाता है और तीसरे अपरिचित शब्द। सहायक पुस्तक में परिचित शब्दावली का इतना अभ्यास हो जाता है कि यह भी सक्रिय शब्दावली की परिधि में आ जाती है और सक्रिय शब्दावली के प्रयोग का ज्ञान हो जाता है। अपरिचित शब्दों का अर्थ प्रसंग की सहायता से समझा जा सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) **भाषा समझने की शक्ति में वृद्धि**—सहायक पुस्तकों के पढ़ने से भाषा समझने की क्षमता बढ़ जाती है।

(iii) **पढ़ने में तीव्रता**—शीघ्र पढ़ते हुए तुरन्त समझने की क्षमता पैदा करने के लिए भी सहायक पुस्तकें ही उपयोगी हैं। इनमें बोध-पूर्वक शीघ्र पढ़ने का अभ्यास बढ़ जाता है।

(iv) मौन-पाठ में अभ्यास भी सहायक पुस्तक द्वारा हो जाता है।

(ख) साहित्यिक—

(i) साहित्यिक रसास्वादन पाठ्य-पुस्तक के द्वारा उतना सम्भव नहीं जितना सहायक पुस्तक द्वारा। क्योंकि पाठ्य-पुस्तक में छोटे-छोटे लेख ही होते हैं और सामग्री भी अधिक नहीं होती।

(ii) साहित्य में रुचि उत्पन्न करने के लिए, साहित्य प्रेमी बनने के लिए और स्वतन्त्र रूप में साहित्य के अध्ययन करने में अभ्यास पैदा करने के लिए भी सहायक पुस्तकों की आवश्यकता है।

(iii) भावी जीवन में विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता रहती है। इस दृष्टि से भी स्वाध्याय में आदत डालने के लिए सहायक पुस्तकों का प्रयोग होना चाहिए।

(ग) बौद्धिक—

(i) सहायक पुस्तकों के अध्ययन से साधारण ज्ञान में वृद्धि हो जाती है, देश-विदेश की वार्ताओं की जानकारी हो जाती है।

(ii) महापुरुषों, बुद्धिमानों, वैज्ञानिकों और आविष्कारकों के अमूल्य विचार का ज्ञान हो जाता है।

(घ) विनोदात्मक—

सहायक पुस्तकें सरल तथा रोचक होने के कारण अपने विनोदात्मक विषयों द्वारा विपुल मनोरंजन प्रदान करती हैं।

§ 131. सहायक पुस्तकों के आवश्यक गुण—

(क) शब्दावली—सहायक पुस्तकों की शब्दावली अत्यन्त सरल होनी चाहिए। उनमें ऐसे शब्द होने चाहिएं, जिनमें विद्यार्थियों ने पहले ही पाठ्य-पुस्तक में ज्ञान प्राप्त किया हुआ हो। प्रथम तो अपरिचित शब्द होने ही नहीं चाहिएं, यदि हों भी तो वे प्रसंग की सहायता से ही पढ़ते-पढ़ते समझ में आ जाने चाहिएं। तात्पर्य यह है कि शब्दावली छात्रों की परिचय सीमा के भीतर होनी चाहिए।

(ख) भाषा—सहायक पुस्तकों की भाषा का स्तर ऐसा होना चाहिए कि विद्यार्थी सुगमता से अर्थ ग्रहण कर सकें। पाठ्य-पुस्तक की भाषा का जटिलता से विमुक्त होकर इनकी भाषा धारा प्रवाहिक, व्यावहारिक, मुहावरेदार और बोधगम्य होनी चाहिए।

(ग) विषय—सहायक पुस्तकों के विषय रोचक और विद्यार्थियों की अवस्था के अनुकूल होने चाहिएं। बहुधा बड़ी पुस्तकों के लघु संस्करण निकाले जाते हैं। ऐसे सभी संस्करण बालोपयोगी नहीं होते। बालोपयोगी लघु संस्करण में निम्न विशेषताएं होनी चाहिएं—लघु संस्करण में मूल कथा का कोई महत्त्वपूर्ण अंश छूटने न पाए,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे रामायण के लघु संस्करण में यदि सीता और अनसूया का संवाद न आए तो कोई आपत्ति नहीं, परन्तु सीता स्वयंवर अवश्य आना चाहिए। लघु संस्करण में घटनाओं का क्रम टूटने न पाए। पौराणिक अन्तर्कथाओं का बाहुल्य नहीं होना चाहिए। विषय रोचक ढंग से उपस्थित किया जाए। उपन्यास का लघु संस्करण एक छोटा उपन्यास दिखाई दे। उसमें कृत्रिमता नहीं दिखाई देनी चाहिए। उसमें उसी प्रकार का कौतूहल रखना चाहिए जैसे बड़े उपन्यास के पाठ में।

§ 132. सहायक पुस्तकों के विषय

सहायक पुस्तकों के विषय निम्न प्रकार के होने चाहिएं—

(i) कहानियां— पंचतन्त्र की कहानियां (छोटी कक्षाओं के लिए), पौराणिक कहानियां, रामायण-महाभारत की कहानियां, देश-भक्ति की कहानियां, साहित्यिक कहानियां, जैसे प्रेमचन्द्र की कहानियां, उच्च कक्षाओं के लिए ऐतिहासिक कहानियां आदि।

(ii) जीवनियां जैसे देश-विदेश के बालकों की जीवनियां, ऐतिहासिक व्यक्तियों की जीवनियां, सन्तों, आविष्कारों, वैज्ञानिकों, नेताओं आदि की जीवनियां, आत्मकथाएं आदि।

(ii) वर्णन जैसे यात्रा वर्णन, प्राकृतिक वर्णन, नगरों का वर्णन, विदेशी स्थानों का वर्णन, घटनाओं का वर्णन आदि।

(iv) नाटक—पौराणिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, एकांकी आदि।

(v पद्य - सरल गीत, कविताएं या पद्यात्मक वर्णन।

उपलब्धि—

(i) विद्यार्थियों की अवस्था तथा रुचि के अनुकूल जो पुस्तकें बाजार में मिल सकें वे खरीदी जा सकती हैं।

(i) परन्तु सहायक पुस्तकों के लेखन, संकलन तथा सम्पादन का भार अध्यापकों को अपने ऊपर लेना चाहिए। अध्यापक हिन्दी साहित्य तथा अन्य भाषाओं के साहित्य में से बालोपयोगी विषयों पर लेखों, कहानियों, नाटकों आदि का अनुवाद संकलन, संग्रह तथा सम्पादन कर सकते हैं। लम्बे उपन्यासों या नाटकों के उपयोगी लघु संस्करण निकाले जा सकते हैं। यदि अध्यापक प्रकाशन की अवस्था न कर सकें, वे कक्षा में पाण्डुलिपि का भी प्रयोग कर सकते हैं।

§ 133 द्रुत-पाठ की शिक्षण

द्रुतपाठ गद्य पाठ से निम्न बातों में भिन्न है—

(i) द्रुतपाठ का अध्ययन स्थूल है, सूक्ष्म नहीं।

(ii) द्रुतपाठ का उद्देश्य नई शब्दावली सीखना नहीं, वरन् पहले सीखी हुई शब्दावली का ही उपयोग करना होता है।

(ii) द्रुतपाठ में सस्वर पाठ की आवश्यकता नहीं, उच्चारण पर भी ध्यान नहीं दिया जाता और केवल अर्थबोध (Comprehension) पर ध्यान दिया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) द्रुतपाठ में व्याकरण, रचना आदि पर भी कोई ध्यान नहीं दिया जाता।
(v) द्रुतपाठ में वाचन पर अधिक बल दिया जाता है।

द्रुतपाठ और गद्य का परस्पर अन्तर समझाने के बाद द्रुतपाठ की शिक्षण प्रक्रिया नीचे दी जाती है :—

(1) प्रत्येक विद्यार्थी के पास द्रुतपाठ की पुस्तक हो। अध्यापक पठनीय विषय के सम्बन्ध में थोड़ी-सी जानकारी कराए। विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए तथा रुचि उत्पन्न करने के लिए वह छोटी सी प्रस्तावना उपस्थित करे, जिससे वह विषय की पृष्ठ-भूमि बताए। आवश्यकतानुसार ऐतिहासिक भौगोलिक, राजनीतिक, सामाजिक अथवा पौराणिक पृष्ठ भूमिबताने से पाठनीय विषय के समझने में सुविधा होगी। स्मरण रहे कि कहानी या वर्णन के रूप में पुस्तक में जो कुछ आगे पढ़ा हो, वह कभी नहीं बताना चाहिए, क्योंकि बता देने से सम्पूर्ण उत्सुकता नष्ट हो जाएगी।

(2) पृष्ठ-भूमि बताने के बाद, अध्यापक पाठ का वाचन कराए। वाचन कराने की निम्न विधियां हैं :

i) अध्यापक स्वयं सस्वर वाचन करे और विद्यार्थी सुनें। यह विधि लाभदायक नहीं, क्योंकि विद्यार्थियों का ध्यान इस प्रचार में केन्द्रित नहीं रहता, परन्तु यदि विद्यार्थियों के पास पुस्तकें न हों, तो ऐसी विधि अपनाई जा सकती है और बीच-बीच में अवधान की जांच करने के लिए प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं।

(ii) विद्यार्थी पाठ का सस्वर वाचन करें। चार-पांच विद्यार्थी बारी-बारी दो-दो तीन-तीन गद्यांश पढ़ते जाएं और शेष विद्यार्थी सुनते जाएं। बाद में अध्यापक बोध परीक्षा के प्रश्न पूछे। यह विधि माध्यमिक कक्षाओं के लिए अपनाई जा सकती है, उच्च कक्षाओं के लिए नहीं।

(iii) सबसे उपयोगी विधि यह है कि विद्यार्थियों को मौनपाठ करने के लिए आदेश दिया जाए। जितने पृष्ठ पढ़ने हों, उतना निर्धारित करके अध्यापक उनको पढ़ने का आदेश देकर यह देखे कि विद्यार्थी अवधान पूर्वक पढ़ते हैं कि नहीं। फुसफुसाहट आदि को भी रोकना चाहिए। किसी का ध्यान इधर-उधर न रहे। वाचन की गति का भी ध्यान रखना चाहिए। कोशिश यह करनी चाहिए कि छात्र शीघ्रातिशीघ्र सारा निर्धारित पाठ-बोधपूर्वक समाप्त करें, क्योंकि यह द्रुत पाठ है, सूक्ष्य अध्ययन का पाठ नहीं। प्रवाहपूर्ण अर्थ सहित वाचन ही इसका लक्ष्य है।

पाठ इतना लम्बा होना चाहिए कि एक दिन में अर्थात् वह एक बैठक में समाप्त हो सके। बड़ी पुस्तक में से एक पूरा अध्याय, या एक पूरी कहानी, पूरा एकांकी अथवा नाटक का एक पूरा अंक समाप्त करना चाहिए। इस प्रकार के लिए पाठ की पूरी एक स्वतन्त्र इकाई चुननी चाहिए, नहीं तो खण्ड-खण्ड के भिन्न-भिन्न अव रों पर पढ़ाने से उत्सुकता और रोचकता जाती रहती है और द्रुतपाठ प्रवाह का आनन्द नहीं आता।

(3) वाचन के बाद अर्थ-बोध तथा विषय-बोध जांचने के लिए उपयुक्त प्रश्न पूछने चाहिएं। कहानी हो तो सारी कहानी विद्यार्थियों को सुनानी चाहिए। नाटक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो तो उसकी कहानी के अतिरिक्त नाटकीय पात्रों का चरित्र-चित्रण भी पूछा जा सकता है।

§ 134. द्रुतपाठ की जांच—

द्रुत पाठ की जांच निम्न रीतियों से हो सकती है —

(i) अध्यापक पाठ सम्बन्धी प्रश्न श्यामपट पर वाचन से पहले ही लिख रखें। विद्यार्थी इससे सतर्क रहेंगे कि इन प्रश्नों का उत्तर वाचन के उपरान्त देना है।

(ii) अध्यापक वाचन के बाद प्रश्न पूछे। छात्र अपनी पुस्तकें बन्द करके प्रश्नों का उत्तर दें।

(iii) विद्यार्थी स्वय एक-दूसरे से प्रश्न पूछें। अध्यापक उन प्रश्नों के उत्तरों का आवश्यकतानुसार संशोधन कराए।

(iv) अध्यापक पाठ के सम्बन्ध में रूपरेखा श्यामपाट पर लिखे। छात्र उस रूपरेखा की सहायता से सारी वार्ता सुनाएं।

(v) सारे पाठ का सार या संक्षेप पूछा जाए।

(vi) सत्यासत्य. रिक्त स्थानों की पूर्ति, बहु-विकल्प आदि नवीन वस्तुगत प्रश्न पूछे जाएं।

पाठ में यदि गद्यांश कठिन हों, तो अध्यापक को उसकी व्याख्या करने में, या कठिन स्थलों का सरल अर्थ बताने में संकोच नहीं करना चाहिए। इसके अतिरिक्त घर पर स्वाध्याय करने के लिए भी सहायक पुस्तकें देनी चाहिएं। घर पर पढ़ने के बाद उनकी जांच होनी चाहिए।

आशा की जाती है कि इस विधि से पढ़ने से विद्यार्थियों में विषय के प्रति पर्याप्त उत्सुकता तथा रुचि पैदा होगी। इस रुचि को स्थायी रखने के लिए इस विषय से सम्बन्धित अन्य पुस्तकों का (जो पुस्तकालय में उपलब्ध हो सकती हों) नाम भी बता देना चाहिए, ताकि अवकाश के दिनों में विद्यार्थी घर पर भी रुचिपूर्वक उनके स्वाध्याय करने की ओर प्रेरित हो जाएं।

§135 स्वाध्याय की आदत डालने के उपाय—

इतना सर्वविदित है कि बच्चे अपना ध्यान परीक्षाओं पर केन्द्रित करते हैं। उत्तीर्ण होने के निमित्त निर्धारित पाठ्य-पुस्तकें रटते हैं। पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य साहित्य पढ़ने के लिए न उनके पास समय है और न रुचि। इससे उनका सामान्य ज्ञान भी न्यून रहता है और स्वाध्याय की आदत का विकास नहीं हो पाता। छात्रों के संकुचित ज्ञान की परिधि को बढ़ाने के लिए, स्वाध्याय की आदत दृढ़ करने के लिए निम्न प्रयास आवश्यक हैं।

(1) **स्वाध्याय के लिए समय निर्धारित करना**—दैनिक समय-सारिणी में अतिरिक्त पाठ द्रुतपाठ या स्वाध्याय के लिए कोई घण्टी अवश्य निश्चित करनी चाहिए ताकि छात्र पुस्तकालय में जाकर पत्र-पत्रिकाएं, बाल साहित्य आदि पढ़ें। ... समय सारिणी में जब भी अकस्मात् कोई ... घण्टी मिले (जैसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई अध्यापक छुट्टी पर है, वर्षा के कारण अवकाश की घण्टी में बाहर नहीं जा सकते) उस समय छात्रों को पुस्तकालय में जाने का आदेश देना चाहिए।

(2) **स्थान-निर्धारित करना**—प्रत्येक स्कूल में एक सुसज्जित पुस्तकालय और वाचनालय होना चाहिए। पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएं, चित्र आदि सभी उपकरण अपने स्थान पर होने चाहिएं। भिन्न-भिन्न विषय की पुस्तकें भिन्न-भिन्न अलमारियों में होनी चाहिएं जिनके शीर्षक ऐसे रखने चाहिएं कि छात्र शीर्षक पढ़ कर अनायास ही उसकी ओर आकर्षित हो जाएं 'जग की सैर करें', 'महापुरुषों का जीवनपथ' 'हमारे पूर्वज कैसे रहें', 'आओ यात्रा करें' 'साहित्य वाटिका में', 'बच्चों की फुलवाड़ी', 'कविता-कानन', 'काव्य मन्दाकिनी'; 'लतिका', 'पर्दा उठाओ-पर्दा गिराओ', 'परमार्थ के पथ पर', आदि। 'भूगोल', 'इतिहास' आदि शीर्षकों में कोई आकर्षण नहीं। वाचनालय में भी पढ़ने के लिए ठीक स्थान होना चाहिए। यदि हो सके पुस्तकालय में अलग-अलग कोने में स्वाध्याय कक्ष हों जहां पर छात्र बैठकर पुस्तकें पढ़ें।

(3) **पाठ्य-सामग्री उपलब्ध करना** पुस्तकालय में छात्रों की मानसिक अवस्था के अनुकूल पर्याप्त पुस्तकें होनी चाहिएं। इसके निमित्त केन्द्रीय पुस्तकालय के अतिरिक्त कक्षा-पुस्तकालय की भी व्याख्या करनी चाहिए, ग्रामीण प्रदेशों में चालू पुस्तकालय (Circulating library) का भी प्रबन्ध हो सकता है। पुस्तकों के अतिरिक्त कक्षा पत्रिका (Class magazine), भित्ति पत्रिका (Wall magazine), समाचार पत्र, पत्रिकाएं भी उपलब्ध करनी चाहिएं। प्रायः मुख्याध्यापक पुस्तकों की अनुपलब्धि के कई कारण बताते हैं। एक मुख्य कारण है उन का अभाव। इसका उपाय कठिन नहीं। बालकों से एक-एक छोटी पुस्तक मांगी जाए तो 1000 छात्रों से 1000 पुस्तकें आ सकती हैं। अध्यापक अभिभावकों से भी पुस्तक-रूप में दान मांग सकते हैं। अच्छे साहित्य-प्रेमी अध्यापक स्वय छोटी-छोटी पुस्तकें लिख सकते हैं और हस्तलिपियां ही पुस्तकालय में रख सकते हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालयों में बाल-साहित्य होता है। उसका प्रयोग करने के लिए छात्रों को इन पुस्तकालयों का सदस्य बनने की प्रेरणा देनी चाहिए।

(4) **स्वाध्याय के लिए प्रेरणा और निर्देश देना**—इससे पहले कि अध्यापक छात्रों को स्वाध्याय की ओर प्रेरित करे, उसे स्वयं स्वाध्याय प्रेमी बनना चाहिए। उसे पत्र-पत्रिकाएं, सामान्य ज्ञान की पुस्तकें तथा साहित्यिक रचनाएं पढ़ने की असीम रुचि हो। इसके बाद ही वह छात्रों में रुचि पैदा कर सकता है। अध्यापक प्रायः उनके सामने नई पुस्तकों, पत्रिकाओं में आए हुए रोचक लेखों का हवाला दे। पाठ्य-पुस्तक पढ़ाते समय भी वह नए प्रसंगों की ओर संकेत कर सकता है जो नई किताबों से मिल सकते हों। वह स्कूल पत्रिका या अन्य पत्रिका के लिए लेख लिखाए और लिखवाने से पहले आवश्यक पाठ्य-सामग्री की ओर संकेत करे। वह उनको अधिन्यास (Assignment) भी दे, और फिर जांच-पड़ताल भी करे।

वह उनको किसी विषय पर (जैसे गुरु की जीवनी पर) योजना (Project) पूरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant.

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने का आदेश भी दे सकता है। अच्छी एवं नवीन पुस्तकों का परिचय भी देना चाहिए, और उनका सार भी लिखवाना चाहिए। छात्रों को आदेश देना चाहिए कि वे तीन प्रकार की डायरी रखें। प्रथम डायरी या दैनिकी में वे पुस्तकों का नाम, लेखकों का नाम आदि लिखें। दूसरी में कठिन शब्द उनके अर्थ, उनका प्रयोग आदि, और तीसरी में आवश्यक स्थल, सुन्दर उक्तियाँ, सुन्दर विचार और समस्त पुस्तक का सार। अच्छी पुस्तकों का परिचय देने के लिए पुस्तकों के जैकट का विज्ञापन भी कराया जा सकता है। रेडियो प्रोग्राम में कभी-कभी अच्छी पुस्तकों की समीक्षा रखी जाती है।

बच्चे पुस्तकें पढ़ भी लें, इसकी जाँच विभिन्न प्रकार से हो सकती है।

बच्चों को बारी-बारी कक्षा-पुस्तकालय का कार्यभारी (incharge) बनाया जाए। उनको बाल-सभा में अच्छी पुस्तकों की समीक्षा सुनाने के लिए कहा जाए। यदि छात्रों को वाचन की कोई कठिनाई है तो वैयक्तिक ध्यान देकर उसको दूर करना चाहिए। छात्रों में पुस्तकों के प्रति प्रेम पैदा करना चाहिए। इसके निमित्त उनमें पुस्तकों का संग्रह करने की आदत डालनी चाहिए। वे घर पर भी एक छोटा पुस्तकालय बना सकते हैं। किसी भी पुस्तक पर वे खेल खिलौनों को छोड़ कर भेंट रूप में पुस्तकें ही ग्रहण करें। पारितोषिक वितरण के अवसर पर भी पुस्तकें ही उपहार में देनी चाहिएं। इसमें बच्चों की संग्रह-वृत्ति संतुष्ट हो जाती है और पढ़ने की ओर प्रेरणा भी मिलती है।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. द्रुतपाठ की क्या आवश्यकता है? हाई कक्षाओं के लिए द्रुतपाठ की कौन सी पुस्तकें आप प्रस्तावित करेंगे? [§129, 130]

2. सहायक पुस्तकों में क्या-क्या गुण होने चाहिएं? एक सफल द्रुतपाठ की शिक्षण विधि का विवरण दीजिए। [§131]

3. छात्रों में स्वाध्याय की आदत डालने के लिए आप कौन-कौन से उपाय ध्यान में लाएंगे। [§135]

4. अतिरिक्त पाठन (Extensive study) के लिए आप कौन सी शिक्षण विधि अपनाएंगे। [§133]

5. माध्यमिक कक्षाओं के लिए सहायक पुस्तकों की एक सूची बनाइए।

सहायक पुस्तकें

1. Maxim New mark : 20th century Modern Language Teaching.
2. Michael West : Learning to Read a Foreign Language.
3. Balwant Singh Anand : Aims and Methods of Teaching of English in India.
4. Thompson and Wyat : Teaching of English in India.

शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार : नव साक्षरों के लिए हिन्दी पुस्तकें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

24
व्याकरण का स्वरूप

§ 146. ऐतिहासिक दृष्टिकोण

व्याकरण भाषा का सहचर है और व्याकरण की शिक्षा भाषा की शिक्षा का आवश्यक अंग है। जब से साहित्य का सृजन आरम्भ हुआ, व्याकरण का भी निर्माण हुआ। भारत में, पश्चिम में प्राचीन काल से आज तक व्याकरण का अध्ययन होता रहता है।

(i) **भारत में व्याकरण शास्त्र का विकास**—भारत में वैदिक काल से ही व्याकरण का अध्ययन आरम्भ हुआ था। निघण्टु और निरुक्त, पदपाठ, स्वराघात, छन्द आदि का विचार वेदमन्त्र के शुद्ध उच्चारण तथा अर्थ के लिये आवश्यक बन गया था। धीरे-धीरे जनभाषा वैदिक भाषा से दूर हटती गई, और परिणाम यह हुआ कि वैदिक भाषा से लोग अपरिचित होने लगे। ऐसी परिस्थिति में वेदमन्त्रों के शुद्ध उच्चारण के लिए तथा वेदों के विश्लेषण के लिए प्रतिशाख्य रखे गए। जिनमें संस्कृत ध्वनियों का वर्गीकरण किया गया, पदों के नाम, आख्यान, उपसर्ग और निपात नाम के चार भाग किए गए इसी प्रकार निरुक्त और निघण्टु भी क्रमशः प्रारम्भिक व्याकरण तथा कोष के रूप में रचे गए। निरुक्त रचयिता—यास्क के बाद आपिशलि, काशकृत्स्न, इन्द्र ऋषि आदि व्याकरणाचार्यों ने भाषा का विश्लेषण किया। इसके उपरान्त विश्वविख्यात ग्रंथ अष्टाध्यायी के लेखक पाणिनि ने 1000 ई. पूर्व संस्कृत भाषा का चार हज़ार सूत्रों में विस्तृत तथा परिपूर्ण व्याकरण रचा। इसके अनन्तर अष्टाध्यायी की आलोचना. टीका-टिप्पणी, व्याख्या अथवा भाष्य के रूप में सैंकड़ों पुस्तकें लिखी गईं। वररुचि कात्यायन का वार्तिक, पातंजली का महाभाष्य कय्यट का महाभाष्य प्रदीप, तथा भट्टोजी दीक्षित की सिद्धान्तकौमुदी संस्कृत साहित्य के सर्वप्रसिद्ध व्याकरण ग्रंथ हैं। पाणिनीयशाखा के अतिरिक्त चांद्र शाखा, हेमचन्द्र शाखा, कातन्त्र शाखा, आदि कितनी ही शाखाएं निकलीं। इस प्रकार पाली भाषा के कात्यायन आदि कितने ही आचार्यों ने व्याकरण ग्रंथों की रचना की। 12 वीं शताब्दी में हेमचन्द्र ने प्राकृतिक व्याकरण शब्दानुशासन की रचना की। आधुनिक काल में भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संस्कृत तथा आधुनिक भारतीय भाषाओं के अनेक व्याकरण ग्रंथ रचे गए। हिन्दी में उदयनारायण तिवारी, बाबूराम, कामताप्रसाद गुरु, हरदेवबाहरी, रामचन्द्र वर्मा आदि विद्वानों ने व्याकरण ग्रन्थों की रचना की।

संस्कृत भाषा का यह सौभाग्य है कि उसका वैज्ञानिक विश्लेषण करने के लिए पाणिनि जैसे महान् मनीषी, महान् वैयाकरण का अवतार हुआ। संस्कृत वैयाकरणों के उल्लेख के लिए निम्न श्लोक प्रसिद्ध है—

वाक्यकारं वररुचिं, भाष्यकारं पतञ्जलिम्।
पाणिनिं सूत्रकारं च प्रणतोस्मि मुनित्रयम्।

इस प्रकार भारतवर्ष में व्याकरण के अध्ययन और अध्यापन की एक अविछिन्न परम्परा सी रही है। पाणिनी की अष्टाध्यायी ने संस्कृत को नियमबद्ध बना कर अविचल बना दिया। आधुनिक काल के भाषा-वैज्ञानिकों ने पश्चिम तथा पूर्व की सभी भाषाओं के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए भारतीय ग्रन्थों से बड़ी सहायता ली। व्याकरण के अध्ययन की इस परम्परा को जारी रखने के लिए, अध्यापक व्याकरण का विशेष ध्यान रखते हैं।

(i) **पश्चिम में व्याकरण शास्त्र**—यूनानी सभ्यता में व्याकरण की शिक्षा ज्ञान का महत्त्वपूर्ण अंग था। यूरोपीय इतिहास में पुनरुत्थान काल (Renaissance period) में व्याकरण शिक्षा का भी पुनरुत्थान हुआ। लेटिन का व्याकरण प्रत्येक विद्यालय में पढ़ाया जाने लगा। इंगलैंड में विक्टोरिया काल में व्याकरण की शिक्षा पर अत्यन्त बल दिया जाता था। यह परम्परा 19 वीं शताब्दी तक चली। उसी के प्रभाववश अंग्रेजी शासन काल में अंग्रेजी स्कूलों में अथवा सरकारी स्कूलों में अंग्रेजी व्याकरण और तत्पश्चात् सभी भाषाओं के व्याकरण की शिक्षा पर अधिक बल डाला गया। अंग्रेजी व्याकरण के नियम रटे जाते थे।

पश्चिम का यह अनुकरण 20वीं शताब्दी में भारतवासियों ने भी अपनाया। अपनी परम्परा के अनुसार भी व्याकरण शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग था, अतः व्याकरण का आवश्यक ज्ञान स्कूलों में दिया जाने लगा।

§ 137. व्याकरण की आवश्यकता

उपर्युक्त पृष्ठ-भूमि इस बात की व्याख्या करती है कि स्कूलों में व्याकरण की शिक्षा पर इतना बल क्यों दिया जाता है। इसका कारण है, पूर्वी और पश्चिमी परम्परा, परन्तु प्रश्न उत्पन्न होता है कि व्याकरण-शिक्षा की कितनी आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में तीन मत या सिद्धान्त हैं:—

(1) व्याकरणातिरेक का सिद्धान्त।
(2) अव्याकृति सिद्धान्त।
(3) सहयोग सिद्धान्त।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) व्याकरणातिरेक के सिद्धान्त के अवलम्बी व्याकरण की शिक्षा को अत्यन्त आवश्यक मानते हुए निम्न तर्क उपस्थित करते हैं—

(i) व्याकरण द्वारा मानसिक अनुशासन (Mental discipline) स्थिर किया जा सकता है।

(ii) प्रशिक्षण (Training) का स्थानांतरण (Transfer) एक विषय से दूसरे विषय में हो सकता है। व्याकरण द्वारा तर्क-वितर्क, शुद्धता, पूर्णता आदि मानसिक वृत्तियों और आदतों की शिक्षा मिलती है, जिसका प्रयोग जीवन के अन्य व्यापारों में किया जा सकता है।

(iii) बिना व्याकरण पढ़ाए भाषा की शिक्षा ही न देनी चाहिए।

इस मत की आलोचना—'प्रशिक्षण का स्थानांतरण का सिद्धान्त' आजकल के मनोवैज्ञानिकों के अनुसार निर्मूल है। व्याकरण जैसे शुष्क विषय के द्वारा तर्क-वितर्क आदि गुण क्यों सिखाए जाएं। किसी रोचक विषय द्वारा क्यों नहीं ? यह ठीक है कि रबड़ चबाने से जबड़ों में दृढ़ता आ सकती है, परन्तु रबड़ के बदले रबड़ी क्यों न चबाई जाए ? यदि इस सिद्धान्त में कुछ सत्य भी हो, तो व्याकरण ही क्यों पढ़ाया जाता है ? दर्शन तथा गणित द्वारा भी उपर्युक्त आदतों का निर्माण हो सकता है। किसी विद्वान् ने सच कहा है कि यदि रोम वाले व्याकरण में लगे रहते तो वे जगत-विजेता कैसे बनते हैं ?

(2) अव्याकृति सिद्धान्त के अवलम्बी—व्याकरण की शिक्षा को अनावश्यक मामते हुए तर्क उपस्थित करते हैं :—

(i) व्याकरण का जन्म हिन्दी के लिए हुआ। व्याकरण भाषा का सहचर है : जो अभ्यास और व्यवहार द्वारा भाषा सीखता है, उसके लिए व्याकरण की शिक्षा की आवश्यकता नहीं। प्रायः ऐसे लेखकों का अनुसरण करते हुए व्याकरण के सिद्धान्त बनाते।

(ii) व्याकरण का उद्देश्य भाषा का शुद्ध प्रयोग सिखाना यदि अभ्यास द्वारा ऐसा प्राप्त किया जाता है तो व्याकरण जैसी शुष्क विद्या का अध्ययन करके समय का नाश क्यों किया जाए ?

3. सहयोग सिद्धान्त के अवलम्बी—व्याकरण की शिक्षा पर अत्यधिक बल न डालते हुए, भाषा की शिक्षा के साथ रचना आदि के सहयोग में, (सिद्धान्तों के रूप में नहीं) व्याकरण के ज्ञान की आवश्यकता मानते हैं। वास्तव में यही मत सर्वमान्य है। व्याकरण पर अधिक बल डालना अर्थात् व्याकरण के लिए, करना, कला के लिए जैसे पढ़ाना, जितना विपथगामी विचार है उतना ही यह विचार भी कि व्याकरण के पढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं। दोनों अतिवादों को छोड़ कर मध्यमार्ग का अवलंबन करते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हुए व्याकरण की शिक्षा उचित विधि से और निश्चित उद्देश्य को लेकर देनी चाहिए। इस बात की पुष्टि तथा स्पष्टीकरण निम्न तीन विचारों से हो सकता है :—

(i) व्याकरण की परिभाषा, लक्षण तथा स्वरूप,

(ii) व्याकरण की न्यूनताएं,

(iii) भाषा शिक्षण में व्याकरण का वास्तविक स्थान।

§ 138. व्याकरण की परिभाषा –

व्याकरण शब्द वि+आ+कृ धातु+ल्युट् प्रत्यक्ष के योग से बना है, जिसका अर्थ 'व्याक्रियन्ते (व्युत्पाद्यन्ते) शब्दा येन' अर्थात् जिसके द्वारा अर्थस्वरूप शब्दों की सिद्धि होती है। व्याकरण शब्दों के प्रयोग का अनुशासक है, तभी इसे शब्दानुशासन भी कहते हैं। इस शास्त्र में वे साधारण सिद्धान्त होते हैं जिन पर भाषा आधारित है। भाषा में उपस्थित प्रवृत्तियों का एकत्रीकरण होता है।

इससे यह स्पष्ट है कि व्याकरण लक्षण शास्त्र नहीं, लक्ष्य शास्त्र है, इसका अध्ययन केवल भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए किया जाता है, अन्य किसी कारण से नहीं, परन्तु व्याकरण के ज्ञान से भाषा का समस्त ज्ञान प्राप्त हो—ऐसा भी नहीं है। व्याकरण की कितनी ही न्यूनताएं हैं, जिसके कारण यह भाषा के सम्पूर्ण ज्ञान के लिए अपर्याप्त है।

§ 139. व्याकरण की न्यूनताएं—

(i) व्याकरण के ज्ञान से शब्दों का शुद्ध प्रयोग जाना जाता है, परन्तु शब्दावली की वृद्धि नहीं होती। शब्दावली भाषण और लेखन से बढ़ती है। व्याकरण द्वारा पूर्व परिचित शब्दों का ही प्रयोग जाना जाता है, नए शब्दों का नहीं।

(ii) व्याकरण के नियमों का ज्ञान करना इतना आवश्यक नहीं, जितना उन नियमों का अभ्यास और प्रयोग द्वारा परिपालन। व्याकरण के नियम जानने वाले भी अभ्यास की कमी के कारण भाषा को अशुद्ध बोलते और लिखते हैं।

(iii) अभिव्यक्ति की शक्ति पर व्याकरण का कोई प्रभाव नहीं। व्याकरण में न विचार श्रृंखलाएं और न भाषा प्रवाह।

(iv) सफल लेखक बनना व्याकरण ज्ञान पर अनिवार्य रूप से अवलम्बित नहीं।

प्राय: महान् लेखक और कवि व्याकरण पढ़े बिना महान् बने हैं।

(v) जहां बोलने, सुनने, पढ़ने और लिखने का अभ्यास हो जाए वहां भाषा स्वयं ही शुद्ध हो जाती है।

व्याकरण की परिभाषा तथा इनकी न्यूनताओं के विवेचन से भाषा शिक्षण में व्याकरण की शिक्षा का स्थान स्पष्ट हो जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 140. भाषा शिक्षण में व्याकरण का स्थान

(i) व्याकरण भाषा का सहचर है। व्याकरण का ज्ञान भाषा के शुद्ध प्रयोग के लिए है। विद्यार्थी प्राय: उच्चारण, अक्षर-विन्यास, लिपि, शब्द रचना, अर्थ तथा वाक्य-विन्यास की अशुद्धियां करते हैं। इन अशुद्धियों को बौद्धिक रूप से समझाने के लिए व्याकरण का ज्ञान करवाया जाता है और साथ ही इन अशुद्धियों को प्रयोग द्वारा दूर भी कराया जाता है।

(ii) प्रत्येक भाषा का अपना ध्वनि विचार (Phonology), शब्द विचार (Morphology) अर्थ विचार (Semantics) और वाक्य विचार (Syntax) होता है। इन सभी का विश्लेषण करने पर कई विशिष्ट सिद्धान्त प्राप्त होते हैं। भाषा के पूर्ण ज्ञान के लिए इनका जानना, विशेषकर, अध्यापक के लिए आवश्यक है। एक ऐसे सिद्धान्त को यदि एक बार समझाया जाए तथा अभ्यास कराया जाए तो समय की बचत होती है।

उदाहरण—पंजाबी विद्यार्थी अपनी मातृ-भाषा में पीलियां साड़ियां, चंगीयां गल्लां आदि कहते हुए स्त्रीवाचक विशेष्यों के विशेषणों को भी स्त्रीवाचक बनाते हैं और इसके प्रभाववश हिन्दी में भी 'पीलियां साड़ियां, कालियां बिल्लियां' आदि कहने लगते हैं, जो हिन्दी में अशुद्ध है। एक बार इस नियम के समझाने में ऐसी अशुद्धियां दूर हो सकती हैं।

(iii) मातृ-भाषा को छोड़ कर अन्य भाषाओं को सीखने के लिए व्याकरण परम सहायक है। तुलनात्मक विधि से मातृ-भाषा के शब्दों, कारणों, क्रियापदों आदि के प्रयोग के साथ, हिन्दी के शब्दों, कारकों, क्रियापदों आदि का ज्ञान कराया जा सकता है। ध्वनि, शब्द और वाक्य-विन्यास में, मातृ-भाषा और अन्य भाषा में अन्तर हो वहां व्याकरण के नियमों द्वारा शुद्ध ज्ञान कराया जा सकता है। ऊपर का उदाहरण यहां भी उल्लेखनीय है।

(iv) भाषा की अशुद्धियां व्याकरण द्वारा ही सीखी जा सकती हैं, अन्यथा नहीं। विद्यार्थी भाषा के शुद्ध रूप के सम्बन्ध में तब तक निश्चित और विश्वस्त नहीं हो सकता जब तक उसे व्याकरण का ज्ञान न हो। व्याकरण ज्ञान के बिना भाषा के प्रयोग में उच्छृंखलता, निरंकुशता और अव्यवस्था आ जाती है।

(v) व्याकरण अध्यापक के लिए अत्यन्त आवश्यक है। व्याकरण के सिद्धान्तों के अनुसार वह अपना पाठ तैयार करता है और उसमें वह छात्रों को अभ्यास करवाता है। अन्य भाषा सीखने के लिए तो यह विधि अत्यन्त आवश्यक है।

(vi) व्याकरण की शिक्षा तभी दूषित है जब व्याकरण को व्याकरण के लिए पढ़ाया जाए। व्याकरण भाषा ज्ञान का साधन है, न कि साध्य। व्याकरण के उन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जटिल नियमों की पढ़ाई व्यर्थ है, जिनका प्रयोग नहीं होता। व्याकरण की पुरानी शिक्षा में यही दोष है। आजकल व्याकरण की पढ़ाई भाषा के लिए है, मानसिक अनुशासन (mental discipline) के लिए नहीं। अत: सैद्धान्तिक व्याकरण या औपचारिक व्याकरण (theoretical grammar) के बदले प्रयोगात्मक व्याकरण या व्यावहारिक व्याकरण अथवा अनौपचारिक व्याकरण (applied grammar) पढ़ाना चाहिए। जस्परसन का कथन है कि व्याकरण तब तक पढ़ाना नहीं चाहिए, जब तक भाषा का ज्ञान न हो।[1]

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. भाषा की शिक्षा में व्याकरण की क्या आवश्यकता है? व्याकरण की शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए। क्या प्रचलित शिक्षा-प्रणाली में इन उद्देश्यों की पूर्ति होती है, यदि नहीं, तो अपने सुझाव प्रस्तावित कीजिए? [§ 137, 140]

2. व्याकरण की परिभाषा दीजिए। आजकल जो व्याकरण पढ़ाया जाता है उसकी क्या न्यूनताएं हैं? [§138, 139]

3. निम्न कथनों की युक्तियुक्त विवेचना कीजिए :—

(i) व्याकरण स्वयं साध्य नहीं, वरन् किसी साध्य के लिए साधन है।

(ii) बालक के मन पर व्याकरण का दबाव डालना पाप है।

(iii) व्याकरण, व्याकरण के लिए पढ़ाया जाना चाहिए।

---

1. Nobody should study the Grammar until he knows the Language. — Auto Jesperson.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

25

व्याकरण की शिक्षण प्रणालियां

व्याकरण पढ़ाने की विभिन्न प्रणालियां प्रचलित हैं। प्रधान रूप से व्याकरण पढ़ाने की तीन प्रणालियां हैं :

(1) अन्याकृति या भाषा संसर्ग प्रणाली ।

(2) व्याकरण प्रणाली ।

(3) सिद्धान्त प्रणाली ।

सिद्धान्त प्रणाली के भी दो रूप हैं :--

(क) पाठ्य-पुस्तक प्रणाली ।

(ख) सूत्र प्रणाली ।

व्याख्या प्रणाली की भी दो शाखाएं हैं :—

(क) प्रयोग प्रणाली अथवा विश्लेषण प्रणाली ।

(ख) सहयोग प्रणाली अथवा प्रासंगिक प्रणाली ।

ये विभिन्न प्रणालियां निम्न तालिका से स्पष्ट हो जाती हैं :—

व्याकरण शिक्षण प्रणालियां

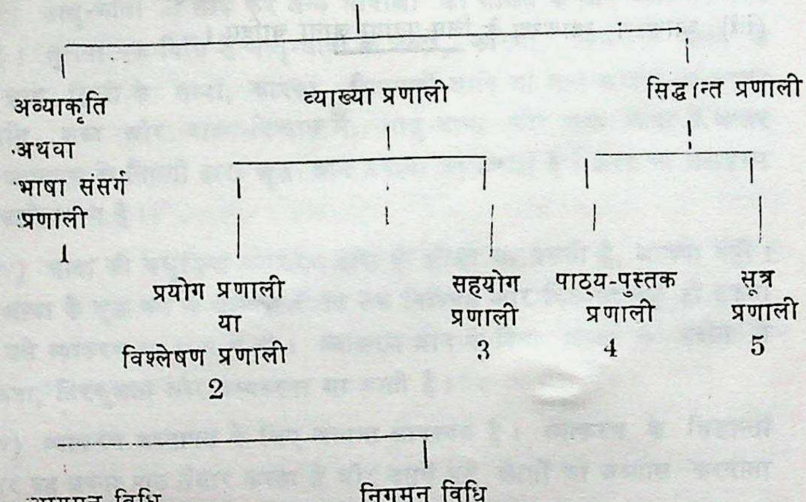

तालिका 25 व्याकरण शिक्षण प्रणालियां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नीचे प्रत्येक प्रणाली की व्याख्या दी जाती है :—

§ 141 अव्याकृति अथवा भाषा संसर्ग प्रणाली—

(क) **विशेषताएं**—इस प्रणाली के अनुसार सिद्धान्त तथा नियम पृथक् रूप से सिखाने के बिना ही रचना तथा अभ्यास द्वारा व्याकरण का ज्ञान कराया जाता है। व्याकरण का उद्देश्य है शुद्ध भाषा का प्रयोग सिखाना। यदि इस उद्देश्य की पूर्ति नियम सिखाने के बिना ही भाषा का प्रयोग और निरन्तर अभ्यास द्वारा हो जाए, तो व्याकरण पढ़ाने की क्या आवश्यकता है ? हम घर पर मातृ-भाषा किस प्रकार सीखते हैं ? इसी प्रकार कक्षा में भी सवाद, प्रश्नोत्तर, पाठ्य-पुस्तक तथा रचना द्वारा भाषा का शुद्ध प्रयोग सीखा जा सकता है। अपठित प्रौढ़ भी शुद्ध भाषा बोलते देखे जाते हैं। संक्षेप में इस प्रणाली का सार है, व्याकरण के बिना ही भाषा का शुद्ध प्रयोग सिखाना और इस प्रकार व्याकरण शिक्षण के उद्देश्य की पूर्ति करना।

(ख) **दोष**—इस प्रणाली में निम्न दोष हैं :

(i) व्याकरण में सहस्रों नियम केवल भाषा-संसर्ग द्वारा नहीं सीखे जा सकते। यदि सीखे भी जाएं, तो समय अधिक व्यय होगा।

(ii) किसी भाषा को पूर्ण रूप से सीखने के लिए व्यवस्थित रूप से व्याकरण के सीखने की आवश्यकता पड़ती है। ऊपर 'भाषा शिक्षण में व्याकरण का स्थान' इस प्रकरण में यह बात स्पष्ट हो गई है।

(iii) अध्यापक व्याकरण सिखाए बिना विद्यार्थियों को शुद्ध भाषा के सम्बन्ध में निश्चित नहीं हो सकता।

(ग) **गुण तथा प्रयोग**—अव्याकृति प्रणाली सर्वथा दोष-युक्त नहीं है। वास्तव में यह विशेष अवस्था में प्रयोज्य है। प्राइमरी कक्षाओं में व्याकरण पढ़ाने की यही प्रणाली लाभदायक है। चौथी तक की श्रेणी के बच्चों की मानसिक व्याकरण के सिद्धान्त, परिभाषा नियम आदि समझने के योग्य नहीं। इस अवस्था में रचना तथा अभ्यास द्वारा भाषा का शुद्ध प्रयोग कराया जा सकता है। अध्यापक केवल यह देखे कि बच्चे जो कुछ बोलें, या लिखें वह ठीक हो। वह बच्चों को ऐसी पुस्तकें, जिन्हें वे समझ सकें और उसका अनुकरण कर सकेंगे। यदि मौखिक रचना पर्याप्त मात्रा में हो जाए, तो बच्चे बिना रोक टोक के शुद्ध बोलते जाएंगे।

§ 142. प्रयोग प्रणाली या विश्लेषण प्रणाली

(क) **लक्षण**—इस प्रणाली के अनुसार व्याकरण के किसी नियम को समझाने के लिए विद्यार्थियों के सामने अनेक उदाहरण रखे जाते हैं और विद्यार्थियों से ही प्रश्नोत्तर तर्क-वितर्क तथा कार्य गुण विवेचना द्वारा सिद्धान्त स्थिर कराए जाते हैं तत्पश्चात् उस सिद्धान्त का प्रयोग करवाया जाता है।

उदाहरण द्वन्द्व समास सिखाने के लिए पहले माता-पिता, सुख-दुख. राजा-रानी, दिन-रात, पशु-पक्षी आदि उदाहरण उपस्थित किए जाते हैं, तत्पश्चात् इन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सभी शब्दों की साधारण विशेषता पर बल डाल कर द्वन्द्व समास का ज्ञान कराया जा सकता है ।

उदाहरण 2. विशेषणों के भेद सिखाने के लिए चार वर्गों के निम्न उदाहरण उपस्थित कराए जा सकते हैं :—

(क) काला, पीला, लम्बा, पतला, अच्छा, नया, गीला, बंगाली, चीनी ।

(ख) थोड़ा, बहुत, सारा, कुछ ।

(ग) दस, पन्द्रह, पहला, चारों, आधा ।

(घ) कैसा, कितना जैसा, जितना ।

इसके पश्चात् इन चारों वर्गों के सम्बन्ध में क्रमश: गुण, परिणाम, संख्या तथा निर्देश का बोध कराया जा सकता है और अन्त में विशेषणों के चारों भेद गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, तथा निर्देशवाचक गतार्थ कराए जा सकते हैं । विशेषणों के भेद समझाने के बाद नए उदाहरण दिए जा सकते हैं । 'मोटा' किस प्रकार का विशेषण है ?—ऐसे प्रश्नों द्वारा बोध परीक्षा ली जा सकती है । इस प्रकार उदाहरणों से नियम की ओर, और नियम से फिर उदाहरण की ओर जाने को अर्थात् आगमन विधि (Inducitive method) और निगमन विधि (Deductive method) के संयोग को प्रयोग प्रणाली कहते हैं, क्योंकि इस विधि में शब्दों अथवा वाक्यों का विश्लेषण कराया जाता है और विश्लेषण के द्वारा ही नियम निकलवाए जाते हैं, इस लिए इस विधि को विश्लेषण विधि (Analytical method) भी कहते हैं । संक्षेप में प्रयोग प्रणाली के निम्न साधन हैं :—

(क) आगमन विधि ।
1. उदाहरणों को प्रस्तुत करना ।
2 उदाहरणों की मीमांसा ।
3. नियम बनाना ।

(ख) निगमन विधि ।
4. नियमों की पड़ताल ।
5. नियमों का प्रयोग ।

(ख) गुण — व्याकरण सिखाने के लिए यह विधि सबसे उत्तम है । पांचवीं श्रेणी से जब व्याकरण की शिक्षा आरम्भ कराई जाए, तो व्याकरण के नियम तथा परिभाषाओं को रटन्त प्रणाली से याद कराने के बदले रोचक और मनोवैज्ञानिक ढंग से सिखाने के लिए इस प्रणाली का अनुकरण करना चाहिए । इस प्रणाली में व्याकरण की किसी पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता नहीं, और न ही परिभाषाओं और नियमों के रटने की । यह प्रणाली 'साधारण से विशेष' 'मूर्त्त से अमूर्त्त' 'उदाहरण' से 'नियम' 'ज्ञात' से 'अज्ञात', आदि सिद्धान्त-सूत्रों के बिल्कुल अनुसार है । इस विधि का प्रयोग मिडिल की कक्षाओं में विशेष रूप से करना चाहिए ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 143. सहयोग प्रणाली—

(क) **लक्षण**—इस प्रणाली के अनुसार व्याकरण के नियमों या सिद्धान्तों का ज्ञान किसी व्याकरण पुस्तक द्वारा या पृथक् रूप में नहीं वरन् मौखिक कार्य में पाठ्य-पुस्तक पढ़ते समय अथवा रचना कार्य में प्रासांगिक रीति से (Incidentially) कराया जाता है। अध्यापक व्याकरण के नियम को पाठ्य-पुस्तक से अथवा रचना से समवेत (Correlate) करते हैं। संक्षेप में प्रणाली के अनुसार व्याकरण मौखिक कार्य, वाचन और रचना के सहयोग से सिखाया जाता है।

उदाहरण—संज्ञा सिखाने के लिए तुरन्त पढ़े हुए गद्यांश से वस्तुओं, पुरुषों और स्थानों के नाम चुनवाए जाते हैं। इन्हीं नाम-शब्दों से संज्ञा का बोध भी कराया जा सकता है।

गुण या प्रयोग वास्तव में यह विधि प्रयोग विधि से भिन्न नहीं। दोनों विधियों से उदाहरण से नियम की ओर जाना होता है तथा प्रासांगिक रीति से व्याकरण के शुष्क नियमों का ज्ञान कराया जाता है। अध्यापक को दोनों प्रणालियों से काम लेना चाहिए। सहयोग प्रणाली प्रयोग प्रणाली की परक (Complementary) है, परिशिष्ट (Supplementary) नहीं।

अध्यापक को चाहिए कि बोध के लिए प्रयोग-विधि का अनुसरण करे और तत्पश्चात् सहयोग विधि से उसका अभ्यास कराए, जिससे नियम का पूरा तथा गहरा ज्ञान छात्रों को हो जाए। कुशल अध्यापक व्याकरण की घण्टी में प्रयोग प्रणाली से काम लेता है और पाठ्य-पुस्तक अथवा रचना की घण्टी में सहयोग प्रणाली से। संक्षेप में प्रयोग विधि द्वारा सैद्धान्तिक ज्ञान (Theoretical knowledge) और सहयोग विधि द्वारा अभ्यास (Application) हो जाता है। जहां सैद्धान्तिक व्याकरण के लिए प्रयोग प्रणाली श्रेयस्कर है, वहां प्रयोगातमक व्याकरण (Applied grammar) के लिए सहयोगी प्रणाली उपयोगी है।

प्रयोग तथा सहयोग दोनों प्रणालियां व्याख्या प्रणाली के अन्तर्गत आ जाती हैं। क्योंकि दोनों में सिद्धान्त रटने के बदले व्याख्या द्वारा सिद्धान्त समझने पर बल दिया जाता है। इस ढंग से दी हुई शिक्षा स्वोपार्जित हो जाती है। व्याकरण की शुष्कता और नीरसता को दूर करने का यही उपाय है।

§ 144 पाठ्य-पुस्तक प्रणाली

लक्षण—यह प्रणाली सर्वसाधारण है। प्रत्येक विद्यालय में किसी भी भाषा के व्याकरण का ज्ञान व्याकरण की एक पाठ्य-पुस्तक द्वारा दिया जाता है। व्याकरण की पाठ्य-पुस्तक में परिभाषाएं, नियम तथा सिद्धान्त दिए होते हैं। अध्यापक इन्हीं नियमों को रटाता है।

प्रथम परिभाषा दी जाती है जैसे 'विशेषण उस शब्द को कहते हैं जो संज्ञा की विशेषता दिखाए।' तत्पश्चात् यह भाषा रटाई जाती है और तब उसके उदाहरण दिए जाते हैं। अंग्रेज़ी व्याकरण पढ़ने की भी चिरकाल से यही प्रणाली रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोष इस प्रणाली द्वारा सिखाए गए नियम कष्टसाध्य ही नहीं, व्यर्थ भी हैं। बार-बार नियम रटने से विद्यार्थियों के मन पर व्यर्थ बोझ पड़ता है। व्याकरण विषय नीरस और अरोचक बनता है। नियम कण्ठस्थ होने पर भी प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है। अवश्य ही यह प्रणाली मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षा-विज्ञान के प्रतिकूल हैं।

प्रयोग—पाठ्य-पुस्तक प्रणाली का प्रयोग स्वतन्त्र रूप में व्यर्थ है, परन्तु यह विधि उच्च कक्षाओं में संशोधन के साथ लाभदायक हो सकती है। उच्च कक्षाओं में व्याकरण के इतने नियम सिखाने पड़ते हैं कि एक पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता पड़ती है। इस पाठ्य-पुस्तक में सभी नियम हों और उदाहरण, तत्पश्चात् कुछ अभ्यासार्थ प्रश्न हों। इस प्रणाली में यह संशोधन कराया जा सकता है कि पाठ्य-पुस्तक में दिए हुए नियम व्याख्या प्रणाली द्वारा सिखाए जाएं और पाठ्य-पुस्तक द्वारा उनका पुनरध्ययन (Revision) कराया जाए। उच्च कक्षाओं में पाठ्य-पुस्तक की निम्न आवश्यकताएं हैं—

(i) पाठ्य-पुस्तक में सभी कठिन नियम संकलित होंगे।
(ii) पाठ्य-पुस्तक द्वारा पुनरध्ययन कराया जा सकता है।
(iii) पाठ्य-पुस्तक में अभ्यास होंगे, जो गृहकार्य के लिए दिए जा सकते हैं।
(iv) पाठ्य-पुस्तक में सभी नियम व्यवस्थित रूप में दिए होते हैं।

§ 145 सूत्र-प्रणाली—

लक्षण—यह प्रणाली पाठ्य-पुस्तक प्रणाली का रूपांतर है। इस प्रणाली के अनुसार व्याकरण के नियम सूत्रों के रूप में रटा दिये जाते हैं। फिर उनके उदाहरण देकर उनकी उपयोगिता बता दी जाती है। संस्कृत व्याकरण पढ़ाने के लिए प्राचीन काल से अब तक यही प्रणाली प्रयुक्त होती है। व्याकरण के आचार्य व्याकरणों के नियमों को संक्षिप्त शब्दों में व्यक्त करते हैं। ऐसे कतिपय अक्षरों से ही एक सूत्र बनता है। न्यूनतम अक्षरों में भी यदि कोई अक्षर कम लिया जा सके तो व्याकरणाचार्य के लिए यह असीम हर्ष की बात है। पाणिनी की अष्टाध्यायी सूत्रों में है। आजकल की सर्वप्रसिद्ध 'सिद्धान्त-कौमुदी' भी सूत्र रूप में पढ़ाई जाती है। संस्कृत की सूत्र प्रणाली का अनुकरण करते हुए कितने ही हिन्दी विद्वानों ने भी हिन्दी व्याकरण की रचना सूत्र रूप में की है, जैसे 'संज्ञा तीन प्रकार की जाति, व्यक्ति अरु भाव' ऐसे सूत्रों को विद्यार्थी रटने भी लगे हैं।

पाठ्य-पुस्तक प्रणाली और सूत्र-प्रणाली में सादृश्य है, क्योंकि दोनों सिद्धान्त से आरम्भ होती हैं और नियम से उदाहरण की ओर जाती हैं। सूत्र प्रणाली पाठ्य-पुस्तक प्रणाली से इतनी ही भिन्न है कि जहां पाठ्य-पुस्तक प्रणाली में लम्बे-चौड़े नियम याद कराये जाते हैं, वहां सूत्र प्रणाली से संक्षिप्त सूत्र याद कराए जाते हैं।

दोष - सूत्र-प्रणाली सर्वथा दोष युक्त है। नीरस और शुष्क होने के अतिरिक्त यह बच्चों के नाम पर अनावश्यक दबाव डालती है। इसमें बिना समझे रटना पड़ता है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो अवैज्ञानिक है। उदाहरणों के अज्ञान में यह सब निरर्थक हो जाते हैं, क्योंकि प्रयोग और अभ्यास के अभाव में व्याकरण सीखना असम्भव है। संस्कृत शिक्षा में भी इस प्रणाली का अब परिहार हो रहा है।

§ 146. व्याकरण की शिक्षा प्रणालियों का क्रम—

उपयुक्त प्रणालियों में से सूत्र-प्रणाली को छोड़कर शेष सभी प्रणालियां प्रयुज्य हैं। प्रारम्भ में अव्याकृति प्रणाली द्वारा तथा मिडिल कक्षाओं में व्याख्या प्रणाली अर्थात् विश्लेषण प्रणाली और सहयोग प्रणाली द्वारा शिक्षा देनी चाहिए। सूत्रों की कोई आवश्यकता नहीं। उच्च कक्षाओं में व्याख्या और सिद्धान्त प्रणाली दोनों के सुयोग की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ समीक्षा के भेद पढ़ाने के लिए निम्न सोपान आपेक्षित हैं :-

(i) सर्वप्रथम प्रत्येक भेद के उदाहरण समुपस्थित किए जाएं।

(ii) एक वर्ग के उदाहरणों के साधारण लक्षण ज्ञात कराए जाएं।

(iii) साधारण लक्षणों से सिद्धान्त स्थिर कराया जाए और प्रत्येक भेद में स्पष्ट प्रयोग प्रणाली काम आएगी।

(iv) अन्य उदाहरण उपस्थित करके बोध परीक्षा ली जाए। यहां तक तो प्रयोग प्रणाली काम आएगी।

(v) व्याकरण की पाठ्य-पुस्तक में से अभ्यास से प्रश्न पूछे जाएं, तथा इस प्रकरण का पुनरध्ययन करने का आदेश किया जाए। यहां सिद्धान्त प्रणाली या पाठ्य-पुस्तक प्रणाली की आवश्यकता है।

(vi) सीखे हुए ज्ञान के प्रयोग तथा अभ्यास के लिए गद्य पाठ पढ़े जाएं समस्त शब्दों का विग्रह कराया जाए तथा समासों के नाम पूछे जाएं। यहां पाठ्य-पुस्तक और व्याकरण का परस्पर सहयोग होगा।

§ 147. व्याकरण पढ़ाने के सम्बन्ध में अन्य ज्ञातव्य बातें—

व्याकरण की विभिन्न प्रणालियों का प्रयोग करते हुए इन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

(i) व्याकरण पढ़ाने की प्रणाली बालकों की अवस्था के अनुकूल होनी चाहिए। इसके लिए ऊपर दिए हुए क्रम का अनुसरण करना चाहिए।

(ii) व्याकरण पढ़ाने में रटंत प्रणाली का सर्वथा परिहार करना चाहिए। परिभाषाएं नियम अथवा सिद्धान्त रटने के बदले समझाने चाहिएं और प्रयोग तथा अभ्यास द्वारा स्थिर कराने चाहिए।

(iii) व्याकरण उतना ही पढ़ाना चाहिए, जितना बालकों के लिए बोझ न हो और और जितना ये एक बैठक में सीख सकें और शीघ्र व्यवहार में प्रयोग करते चल सकें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) हिन्दी की सर्वसाधारण भूलों की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए। सभी भूलों या अशुद्धियों का एक ही साथ सुधार नहीं करना चाहिए। सम्भव है कि बालक एक ही वाक्य में अक्षरों की चार अशुद्धियां, शब्द क्रम की दो अशुद्धियां, क्रियापदों की दो अशुद्धियां, कारक चिन्ह की एक अशुद्धि तथा विराम चिन्ह की एक अशुद्धि दर्शाता है। सभी अशुद्धियों के बदले दो-तीन अशुद्धियां ही ठीक करने के उपरान्त, आगे अन्य वाक्यों में अन्य अशुद्धियाँ ठीक करनी चाहिएं। छोटी कक्षाओं में अधिक संशोधन बोझ बन जाता है।

(v) व्याकरण की शिक्षा तभी दी जा सकती है जब बालक भाषा को बोलने, लिखने, पढ़ने और समझने के योग्य हो जाए। तीसरी श्रेणी में ही संज्ञा विशेषण आदि सिखाने के लिए अधिक महत्त्वकांक्षी बनना विद्यार्थियों को हानि पहुंचाता है।

(vi) अध्यापक को हिन्दी व्याकरण का पूरा ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और बालकों को पाठ्य-पुस्तकों से या अन्य विधि से व्याकरण के किसी एक सिद्धान्त के लिए अनेक उदाहरण संकलित करने चाहिएं।

(vii) व्याकरण के शुष्क सिद्धान्तों को रोचक बनाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए। इसके निमित्त सभी दृश्य और श्रव्य साधनों का समुचित प्रयोग करना चाहिए। प्रारम्भिक कक्षाओं में कहानी द्वारा भी रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

उदाहरण—छठी कक्षा को लिंग-भेद समझने के लिए ऐसी कहानी चार्ट द्वारा उपस्थित कीजिए, जिसमें लिंग की अशुद्धियां हों। लिंग की अशुद्धियों की ओर संकेत करके अशुद्धियों के कारण पूछे जा सकते हैं, 'कुत्ता रोटी खाती थी', 'मैंने पुस्तक पढ़ा', 'बालक रोटी खाती थी' आदि वाक्यों में कौन-सी अशुद्धियां हैं? क्रिया और कर्त्ता का सम्बन्ध समझाते हुए दोनों के लिंग का निर्णय कराया जा सकता है।

अन्त में यह कहना आवश्यक है कि व्याकरण की शिक्षा व्याकरण के लिए नहीं, (वरन् उसके उद्देश्य की पूर्ति के लिए देनी चाहिए। अत: अध्यापक का ध्यान विद्यार्थियों की शुद्ध भाषा पर रहना चाहिए। अध्यापक को चाहिए कि विद्यार्थियों की सभी अशुद्धियों का वर्गीकरण करे, जैसे लिंग की अशुद्धियां, वचन की अशुद्धियां, विशेषण की अशुद्धियाँ, सर्वनाम की अशुद्धियां, क्रियापद की अशुद्धियां, आदि) उसे छात्रों की प्रत्येक वर्ग की अशुद्धियों को समझाना चाहिये। ऐसी अशुद्धियों का संशोधन व्याकरण शिक्षा का परम उद्देश्य है। अक्षरों की अशुद्धियां अन्य स्थान पर आ जाएंगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. प्राइमरी या जूनियर बेसिक कक्षाओं में व्याकरण की शिक्षा किस प्रकार दी जानी चाहिए ? [§ 146]

2. व्याकरण को प्रासंगिक रीति से पढ़ाने से क्या तात्पर्य है ? उस विधि का प्रयोग कब और कैसे किया जा सकता है ? [§ 141]

3. हिन्दी व्याकरण की व्यवस्थित शिक्षा आगमन—निगमन विधि का स्थान निर्धारित कीजिए। उत्तर की पुष्टि में उदाहरण दीजिए ? [§ 142]

4. सहयोग प्रणाली और प्रयोग प्रणाली की परस्पर तुलना कीजिए ? दोनों में कौन सी विधि उपादेय है ? यदि दोनों उपादेय हों तो उनका प्रयोग किन-किन अवस्थाओं में होना चाहिए ? [§ 142, 143]

5. हिन्दी व्याकरण को गद्य के साथ कैसे समवेत करेंगे ? [§ 143]

6. हिन्दी की कारक विभिक्तियों का ज्ञान आप कैसे देंगे ? कारक विभक्तियां समझाने के लिए पाठ संकेत लिखें। [§ 142]

7. प्रारम्भिक, मिडिल तथा हाई कक्षाओं के लिए व्याकरण की कौन-कौन सी प्रणाली उपयुक्त है ? सोदाहरण समझाइए। [§ 146]

8. भाषा शिक्षण में विशेषकर हिन्दी की शिक्षा में व्याकरण का स्थान निर्धारित कीजिए। व्याकरण पढ़ाने की कौन-कौन सी विधियां प्रचलित हैं ? उनमें आप किस विधि के पक्ष में हैं और क्यों ? [§ 140, 141—145, 146]

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

26
प्रयोगात्मक व्याकरण

§ 148. प्रयोगात्मक व्याकरण क्या है ?

पीछे कहा गया है कि प्रयोगात्मक व्याकरण या व्यावहारिक व्याकरण (Appli d grammar) का उद्देश्य है लेखक को शुद्ध लिखने, बोलने के लिए निर्देश देना। व्याकरण के पारिभाषिक शब्द और नियम उसी साध्य के साधन हैं। कारक विभक्तियां सिखाने का उद्देश्य यह नहीं कि छात्र कर्त्ता, कर्म, सम्प्रदान आदि को रट लें, यह भी नहीं कि छात्र गाय शब्द के आठों विभक्तियों में रूप रट लें। विभक्तियों का शुद्ध प्रयोग सिखाने के लिए ही इन पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। छात्र बहुधा विभक्ति की अशुद्धियां करते हैं, ऐसी अशुद्धियां कैसे दूर कराई जाएं ? अशुद्धि समझाने से अध्यापक का सम्पूर्ण प्रयत्न इसी ओर रहना चाहिए कि कारकों के नाम बताने के बाद कारक विभक्ति का शुद्ध प्रयोग समझाया जाए, और साधारण भूलों का परिहार कराया जाए। छात्र विभक्तियों के अशुद्ध प्रयोग के अतिरिक्त अनेक प्रकार की अशुद्धियां करते हैं जैसे—विशेषण और प्रत्ययों की अशुद्धियां, सन्धि समास की अशुद्धियां, वचन की अशुद्धियां, लिंग की अशुद्धियां. सर्वनाम का अशुद्ध प्रयोग, मुहावरों का अशुद्ध प्रयोग, विदेशी भाषाओं के प्रभाव के कारण अशुद्ध प्रयोग आदि। ऐसी अशुद्धियों के नमूने नीचे दिए जाते हैं :—

§ 149. अशुद्धियों के प्रकार—

(1) विशेषण और प्रत्ययों की अशुद्धियां –

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
सौंदर्यता	सौंदर्य	क्रोधित	क्रुद्ध
आधीन	अधीन	अचंभित	अचंभा
दुरावस्था	दुरवस्था	उद्देशित	उद्दिष्ट
कट्टरता	कट्टरपन	गौरवता	गौरव
महानता	महत्ता	ऐक्यता	एकता
साफल्यता	सफलता	निर्गुणी	निर्गुण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
निर्दोषी	निर्दोष	निलोभी	निर्लोभ
पूज्यनीय	पूज्य	वन्द्यनीय	वन्दनीय वन्द्य
सजातीय	जातीय	नीतिमान	नीतिवान

(2) सन्धि की शुद्धियां—

देविन्द्र	देवेन्द्र	परमीश्वर	परमेश्वर
रविन्द्र	रवीन्द्र	महुत्सव	महोत्सव
मतेक्य	मतैक्य	अनिधिक	अत्यधिक
सत्जन	सज्जन	जगदीष	जगदीश
जगतनाथ	जगन्नाथ	विवाह-विछेद	विवाह विच्छेद
निश्कपट	निष्कपट	निश्काम	निष्काम

(3) वचन की अशुद्धियां—

संख्याअं	संख्याएं	आवश्यकतायें	आवश्यकताएं
संख्यावों	संख्याओं	आवश्यकतावों	आवश्यताओं
रोटियें	रोटियां	र्सदिय	सर्दियां
दयालू	दयालुओं	साधुवों	साधुओं
वस्तूयें	वस्तुएं	हिंदूओं	हिन्दुओं

(4) लिंग की अशुद्धियां—

नाक बहता है	नाक बहती है	खाल उतारा	खाल उतारी
अच्छी पीतल	अच्छा पीतल	अच्छा चांदी	अच्छी चान्दी
मीठा मक्की	मीठी मक्की	मैला मूंग	मैली मूंग
शराब पिया	शराब पी	घी खरीदी	घी खरीदा
ठण्डा वायु	ठण्डी वायु	पिसे हुए मिर्च	पिसी हुई मिर्च
नमक गिरी	नमक गिरा	दही जमी	दही जमा
लात मारा	लात मारी	ऊंचा छत	ऊंची छत
बड़ा तराजू	बड़ी तराजू	छोटी चाकू	छोटा चाकू
लंबा सांस	लम्बी सांस	आपका पहिचान	आपकी पहचान
मेरा आय	मेरी आय	मेरी वेतन	मेरा वेतन
भीख मांगा	भीख मांगी	अच्छा देख-रेख	अच्छी देख-रेख
पुस्तक पढ़ा	पुस्तक पढ़ी	विजय पाया	विजय पाई
मृत्यु हुआ	मृत्यु हुई	बड़ी चित्र	बड़ा चित्र
छोटी बिन्दु	छोटा बिन्दु	मेरा आतमा	मेरी आतमा
दीवार गिरा	दीवार गिरी	हमारा सरकार	हमारी सरकार
संतोष का सांस लिया	संतोष की साँस ली		

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
बारिश हुआ	बारिश हुई	ऊंचा दुकान	ऊंची दुकान
फीकी पकवान	फीका पकवान	तलास किया	तलाश की
आप का इज्जत	आपका की इज्ज़त	दुनिया बदला	दुनिया बदली
होश न रहा	होश न रही	अच्छे तरह	अच्छी तरह
मोटा अक्ल	मोटी अक्ल	सीधी हिसाब	सीधा हिसाब
कुरती धुलती है	कुरता धुलता है	कमीज़ धुलता है	कमीज़ धुलती है
रामायण का टीका	रामायण की टीका	माथे की टीका	माथे का टीका
मेरा देह	मेरी देह	पूरा संधि	पूरी सन्धि
[तुम्हारी नाक	[तुम्हारा नाक	तुम्हारी झूठ	तुम्हारा झूठ
में दम]	में दम]	मौसम आयी	मौसम आया
विद्वान स्त्री	विदुषी स्त्री	लम्बी बैंच	लम्बा बैंच
बस चला	बस चली	लालच बढ़ती है	लालच बढ़ता है
बड़ा बोतल	बड़ी बोतल	अपील भेजा	अपील भेजी
अदालत बैठा	अदालत बैठी	आपको तार आई	आपको तार आया

(5) विभक्ति की अशुद्धियां—

अशुद्ध	शुद्ध
माता ने हंसा	माता हंसी।
मैं पूछा।	मैंने पूछा।
वह हंसा और कहा।	वह हंसा और उसने कहा।
मैं अध्यापक के पास गया और प्रश्न पूछा	मैं अध्यापक के पास गया और मैंने प्रश्न पूछा
उस युवती ने खिल खिलाया।	वह युवती खिलखिलाई।
वह मेरे पास आई मेरा हाथ पकड़ा।	वह मेरे पास आई और उसने मेरा हाथ पकड़ा।
पस्तक को खरीदने के लिए पैसे नहीं।	पुस्तक खरीदने के लिए पैसे नहीं।
हमको बहुत सी बातों को सीखना है।	हमको बहुत सी बातें सीखनी हैं।
आप अवश्य सुने होंगे।	आपने अवश्य सुना होगा।
वे हमसे पूछे थे।	उन्होंने हम से पूछा था।
किराएदार को मकान छोड़ने को कहा गया।	किराएदार से मकान छोड़ने के लिए कहा गया।
लक्ष्मण सीता जी छोड़ने गए थे।	लक्ष्मण सीता जी को छोड़ने गए थे।
यह दो हज़ार रुपयों का नोट है।	यह दो हज़ार रुपए का नोट है।
दो मुहों वाला बच्चा पैदा हुआ।	दो मुंह वाला बच्चा हुआ।
लड़का बुलाओ।	लड़के को बुलाओ।
भाई ने बहिन बुलाया।	भाई ने बहिन को बुलाया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशुद्ध	शुद्ध
वह निर्धनता पाप समझता है।	वह निर्धनता को पाप समझता है।
मैं दस तारीख आया।	मैं दस तारीख को आया।
पक्षियों ने हंस राजा चुना	पक्षियों ने हंस को राजा चुना।
मैंने लड़के को पूछा।	मैंने लड़के से पूछा।
मैं रेल में सफर नहीं करता।	मैं रेल से सफर नहीं करता।
वह सब से छोटा है।	वह सबसे छोटा है।
मैंने यह कपड़ा पांच रुपए का लिया है।	मैंने यह कपड़ा पांच रुपए में लिया।
गाड़ी दस बज कर पन्द्रह मिनट को आती है।	गाड़ी दस बजकर पन्द्रह मिनट पर आती है।
इस कार्य को करते हमें बहुत दिन हुए।	इस कार्य को करते हुए हमें बहुत दिन हुए।
आप दोपहर किसी समय आएं।	आप दोपहर को किसी समय आएं।
हमको पढ़ना चाहिए।	हमें पढ़ना चाहिए।
उनके पास पत्र लिखा गया।	उन्हें पत्र लिखा गया।
लड़के ने पत्थर को फैंका।	लड़के ने पत्थर फैंका।
मैं पुस्तक पढ़ने को बैठा।	मैं पुस्तक पढ़ने बैठा।
किसान कितने कष्टों को सहते हैं।	किसान कितने कष्ट सहते हैं।
अपने देश को मत छोड़ो।	अपना देश मत छोड़ो।
सद् विचारों को ग्रहण करो।	सद् विचार ग्रहण करो।
छापेखाने का ईजाद चीन में हुई।	छापेखाने की इजाद चीन में हुई।
शीशा की खिड़की टूट गई।	शीशे की खिड़की टूट गई।
इस कारण से हम दुखी हैं।	इस कारण हम दु:खी हैं।
नौकर के हाथ से दवाई भेज दो।	नौकर के हाथ दवाई भेज दो।
मुझे आप को कुछ कहना है।	मुझे आप से कुछ कहना है।
मेज पर फाईल इधर ले आओ।	मेज़ पर की फाइल इधर ले आना।
पुस्तक के दूसरे पृष्ठ पर गलत सवाल है।	पुस्तक के दूसरे पृष्ठ में गलत सवाल है।
मुझे व्यापार से ही लाभ है।	मुझे व्यापार में ही लाभ है।
यह मकान देखने पर ही ठीक है पर रहने योग्य नहीं।	यह मकान देखने में तो ठीक है पर रहने योग्य नहीं।
कुछ समझ नहीं आता।	कुछ समझ में नहीं आता।
नेहरू जी का वेतन मेरे लिए थोड़ा है।	नेहरू जी तक का वेतन मेरे लिए थोड़ा है।
इन दो में से कलम उठा लो।	इनमें से दो कलमें उठा लो।
मैं व्यापार से धन कमाता हूं।	मैं व्यापार में धन कमाता हूं।
नौकर के हाथ में कुछ नहीं आया।	नौकर के हाथ कुछ नहीं आया।
मैंने अपना नाम पर अंगूठी बनवाई।	मैंने अपने नाम की अंगूठी बनवाई।
मैंने अपना नाम मकान खरीदा।	मैंने अपने नाम पर मकान खरीदा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशुद्ध	शुद्ध
नौकर ने आपके नाम की मिठाई ली ।	नौकर ने आपके नाम से मिठाई ली ।
लाल किला में स्वतन्त्रता का दिवस मनाया गया ।	लाल किले में स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया ।
इसे कहने की आवश्यकता नहीं ।	यह कहने की आवश्यकता नहीं ।
वे समुद्र सैर करने गए ।	वे समुद्र की सैर करने गए ।
उस आदमी, जो आपके पास आएगा, को मेरी पुस्तक दें ।	उस आदमी को जो आप के पास आएगा, मेरी पुस्तक दें ।

शब्दों का अशुद्ध प्रयोग

(क) सर्वनाम

अशुद्ध	शुद्ध
उसने प्रार्थना की कि परमात्मा उसे सहायता दे ।	उसने प्रार्थना की कि परमात्मा मुझे सहायता दे ।
आपने कहा कि आप बेकार हैं ।	आपने कहा कि मैं बेकार हूं ।
आपने कहा कि अध्यापक उसे बहुत पीटता है और उसे स्कूल छोड़ने का विचार किया ।	लड़के ने कहा कि अध्यापक मुझे बहुत पीटता है और मेरा स्कूल छोड़ने का विचार है ।
वकील ने कहा कि अपराधी को दण्ड देने से पहले उसके एक प्रश्न का उत्तर दें ।	वकील ने कहा कि अपराधी को दण्ड देने से पहले मेरे प्रश्न का उत्तर दें ।
आजकल दिल्ली में एक ऐसी प्रदर्शनी है, जिसे सबको देखना चाहिए ।	आजकल दिल्ली में एक ऐसी लगी प्रदर्शनी है जो सब को देखनी चाहिए ।
बिमार की हालत ऐसी खराब है कि उसे कहा नहीं जाता !	बीमार की हालत ऐसी खराब है कि वह कही नहीं जा सकती ।
तुम सदृश्य सत्यवादी कोई नहीं ।	तुम्हारे सदृश्य सत्यवादी कोई नहीं ।
दूसरे के पास बेच दिया ।	दूसरे के हाथ बेच दिया ।
यह हमें समझ में नहीं आता ।	यह हमारी समझ में नहीं आता ।
मैंने स्कूल में छुट्टी देखी. इसलिए हम घर लौट जाए ।	मैंने स्कूल में छुट्टी देखी, इसलिए मैं घर लौट आया ।
कुछ पुस्तकें परीक्षा में काम आने के अतिरिक्त वे साधारण ज्ञान के लिए भी आवश्यक है ।	कुछ पुस्तकें परीक्षा में काम आने के अतिरिक्त साधारण ज्ञान के लिए भी आवश्यक हैं ।
आप क्या दोगें ?	आप क्या देंगे ?
आप जो कुछ बताओ सो करूं ।	आप जो कुछ बताएं वह करूं ।
नेहरू जी और उसका व्यक्तित्व ।	नेहरू जी और उनका व्यक्तित्व ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशुद्ध	शुद्ध
सोचते-सोचते मुझे ध्यान में आया ।	सोचते-सोचते मेरे ध्यान में आया ।
मुझे मेरी किताब वापिस कर दो ।	मुझे अपनी किताब वापिस कर दो ।
उसका क्रोधी देखकर मैंने गोबिन्द से पूछा ।	गोबिन्द को क्रोधी देखकर मैंने उसे पूछा ।
कृषि और कृषि में सुधार ।	कृषि और उसमें सुधार ।

(ख) विशेषण

अशुद्ध	शुद्ध
रोगी की अवस्था गम्भीर है ।	रोगी की अवस्था विकट है ।
यह विषय गहरा है ।	यह विषय गम्भीर है ।
यह चित्र बड़ा अच्छा है ।	यह चित्र बहुत अच्छा है ।
वे बड़े अच्छे आदमी हैं ।	वे बहुत अच्छे आदमी हैं ।
छः घण्टे में काम पर बैठा रहा, मैंने बड़ा काम किया ।	छः घण्टे मैं काम पर बैठा रहा, मैंने बहुत काम किया ।
उसकी मृत्यु से मुझे भारी दुःख हुआ ।	उसकी मृत्यु से मुझे बहुत दुःख हुआ ।
मुझे भारी प्यास लगी है ।	मुझे बहुत प्यास लगी है ।
गर्मी के पीछे वर्षा हुई ।	गर्मी के बाद वर्षा आती है ।
वह डाक्टर निर्लोभी और ऊंचे कोटि का है ।	वह निर्लोभ तथा उच्चकोटि का डाक्टर है ।
निर्दोषी स्त्रियां घर से बाहर निकली जाती हैं ।	निर्दोष स्त्रियां घर से बाहर निकाली जाती हैं ।
उसका चरित्र सबसे अधिक निकृष्ट है ।	उनका चरित्र निकृष्ट है ।
खेती सबसे उत्तम व्यवसाय है ।	खेती उत्तम व्यवसाय है ।
मेरा इसमें एक मत है ।	मेरी सहमति है ।

(ग क्रिया

अशुद्ध	शुद्ध
पांच बज गया ।	पांच बज गए ।
यह सड़क ताजमहल तक ले जाती है ।	यह सड़क ताजमहल तक जाती है ।
दवाई लेकर बीमार मर गया ।	दवाई पी कर बीमार मर गया ।
दस घण्टे चलकर उसकी थकावट बढ़ गई ।	दस घण्टे चलने से उसकी थकावट बढ़ गई ।
दस की गाड़ी से रह गया, जब मैं पहुंचा गाड़ी छूट गई ।	दस की गाड़ी से रह गया, जब मैं पहुंचा गाड़ी छूट चुकी थी ।
जब तुम बड़े होगे तो मेरी सेवा करोगे ।	जब तुम बड़े हो जाओगे तो मेरी सेवा करोगे ।
इस लाठी से तुम्हारा सिर तोड़ूंगा ।	इस लाठी से तुम्हारा सिर फोड़ दूंगा ।
आजादी लड़कर मिलेगी ।	आजादी लड़ने से मिलेगी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशुद्ध	शुद्ध
मैंने वह स्थान देखा जहां महात्मा गांधी मरे हुए थे ।	मैंने वह स्थान देखा, जहां गांधी जी मारे गए थे ।
वे पुराने दिन लौट आएं, जब भारतवर्ष में सब लोग सम्पन्न हों ।	वे पुराने दिन लौट आएं, जब भारतवर्ष में सब सम्पन्न थे ।
सरकार का कर्त्तव्य है कि वह भूख और रोग दूर करे ।	सरकार का कर्त्तव्य है कि अन्न की कमी और रोग दूर करे ।
उनके साथ उचित न्याय किया गया ।	उनके साथ न्याय किया गया ।
हम सरकार द्वारा सहायता के भागी हैं ।	हम सरकार द्वारा सहायता के अधिकारी हैं ।
अपराधी दण्ड का अधिकारी है ।	अपराधी दण्ड का भागी है ।
अगली पीढ़ियों पर विश्वास नहीं किया जा सकता ।	पिछली पीड़ियों पर विश्वास नहीं किया जा सकता है । अथवा आने वाली पीढ़ियों पर विश्वास नहीं किया जा सकता । (दोनों वाक्यों का अर्थ भिन्न है) ।

(घ) शब्द-क्रम

अशुद्ध	शुद्ध
प्रसाद जी के पिता पुराने तम्बाकू के व्यापारी थे ।	प्रसाद जी के पिता तम्बाकू के पुराने व्यापारी थे ।
हाकी के खिलाड़ी एकादश वहां बैठे थे ।	ग्यारह हाकी खिलाड़ी वहां बैठे थे ।
कुम्भ के मेले में यात्रियों की असंख्य जानें गईं ।	कुम्भ के मेले में असंख्य यात्रियों की जानें गईं ।
मक्खियां मधु कोष से निकलती हैं ।	मक्खियां कोष से मधु निकालती हैं ।
आपका पत्र मय लेख के प्राप्त हुआ ।	आपका पत्र लेख सहित प्राप्त हुआ ।
प्राचीन भारतवर्ष का इतिहास ।	भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास ।
आज की युद्ध की खबरें ।	युद्ध की आज की खबरें ।
मैं पिता के समान उनको पूजता हूं ।	मैं उनको पिता के समान पूजता हूं ।
इस दवाई से मच्छर नाश हो जाते हैं ।	इस दवाई से मच्छर नष्ट हो जाते हैं ।
मैंने अपनी पुस्तक गुरु जी को समर्पण कर दी ।	मैंने अपनी पुस्तक गुरु जी को समर्पित की ।
उसका असफल होना निश्चित है ।	उनका असफल होना निश्चित है ।
इस झील की सुन्दर शोभा का क्या कहना ।	इस झील की शोभा का क्या कहना ।

(ङ) क्रिया विशेषण

अशुद्ध	शुद्ध
मैं दौड़ता दौड़ता थक गया ।	मैं दौड़ते दौड़ते थक गया ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशुद्ध	शुद्ध
मैं तो कब से यहां बैठा हूं ।	मैं तो कब का यहां बैठा हूं ।
गाड़ी मत चली गई ।	गाड़ी चली तो नहीं गई ।

(7) प्रांतीय और अंग्रेजी प्रभाव के कारण अशुद्धियां

(i) अंग्रेजी का प्रभाव

अब मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप सभापतित्व पद को स्वीकार करें ।	अब मैं आप से निवेदन करता हूं कि आप... .....।
प्रजा सरकार से अन्न के लिए मांग करती है । (making demand)	प्रजा सरकार से अन्न मांग रही है ।
प्रजा का भी धैर्य के साथ काम करना चाहिए ।	प्रजा को भी धैर्य से काम करना चाहिए ।
न केवल यही, प्रजा को इस काम में भाग लेना चाहिए ।	यही नहीं, प्रजा को........।
अन्न की समस्या शीघ्र ही हल हो जाएगी, ऐसी हमें आशा है ।	हमें आशा है कि अन्न की समस्या शीघ्र ही हल हो जाएगी ।
हमें सन्देह है कि सरकार अन्न की कमी दूर कर सकेगी ।	हमें सन्देह है कि सरकार अन्न की कमी दूर कर सकेगी या नहीं ।
नेहरू जी ने भाषण में कहा कि वे काश्मीर की समस्या को अपने घर की समस्या समझते हैं ।	नेहरू जी ने अपने भाषण में कहा कि मैं काश्मीर की समस्या को अपने घर की समस्या समझता हूं ।
दो एक सज्जनों द्वारा यह कहा गया ।	दो एक सज्जनों ने यह कहा ।

(ii) उर्दू का प्रभाव

अशुद्ध	शुद्ध
बिना आपकी सहायता के मैं सफल नहीं हो सकता ।	आपकी सहायता के बिना मैं सफल नहीं हो सकता ।
भगवान् की विचित्र माया है कि कहीं धूप है और कहीं छाया ।	भगवान् की विचित्र माया है—कहीं धूप और कहीं छाया ।
इसके बदले कि आप नौकरी करें, आप व्यापार करें ।	नौकरी करने के बदले आप व्यापार शुरू कर दें ।
अब मैंने वहां जाना है ।	अब मुझे वहां जाना है ।
आपका स्वास्थ्य भगवान् से ठीक चाहता हूं ।	आपके स्वास्थ्य के लिए भगवान् से प्रार्थना करता हूं ।
पूर्व इसके आप पैसे जेब से निकालें आप चीज़ को अच्छी से तरह से देख लें ।	जेब से पैसे निकालने से पहले आप चीज़ को अच्छी तरह से देख लें ।
अच्छा हो कि आप सो जाएं ।	आप सो जाएं तो अच्छा है ।
आपका पत्र मय लेख के मिल गया ।	आपका लेख सहित पत्र मिल गया ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) मराठी का प्रभाव

अशुद्ध	शुद्ध
उनके विरुद्ध मुकद्मा चलाया गया ।	उन पर मुकद्दमा चलाया गया ।
कम वेतन को लेकर बंगाल में अध्यापकों ने हड़ताल किया ।	कम वेतन के कारण बंगाल के अध्यापकों ने हड़ताल की ।
मैंने दिल्ली में एक मकान किराए पर बांध लिया ।	मैंने दिल्ली में एक मकान किराए पर लिया ।

(iv) कश्मीरी का प्रभाव

अशुद्ध	शुद्ध
तुझे फिक्र नहीं करनी चाहिए ।	तुझे फिक्र नहीं करना चाहिए ।
यदि सस्ता दोगे तो सारा खरीद लेंगे ।	यदि सुविधा दोगे तो सारा खरीद लेंगे।
दूध से मलाई उठती है ।	दूध से मलाई बनती है ।
पेड़ पर जानवर बैठे हैं ।	पेड़ पर पक्षी बैठे हैं ।
तुम्हारी तार आई जिसमें सूचना थी कि श्रीनगर में काफी बर्फ गिरा है ।	तुम्हारा तार आया जिसमें सूचना थी कि श्रीनगर में काफी बर्फ गिरी है ।
शाम हुआ और आकाश पर चन्दा निकली ।	शाम हुई और आकाश पर चन्दा निकला ।
यह नाक की जगह है ।	यह नाजुक रिश्ता है ।

(v) पंजाबी का प्रभाव

अशुद्ध	शुद्ध
मैंने दो नीलियां साड़ियां खरीदीं ।	मैंने दो नीली साड़ियां खरीदीं ।
वह अपने पिण्ड चला गया ।	वह अपने गांव चला गया ।
चंगा जी, मैं चलता हूं ।	अच्छा जी, मैं चलता हूं ।
वह छेती जा रिहा है ।	वह जल्दी जा रहा है ।
उसदी कुड़माई हो चुकी है ।	उसकी सगाई हो चुकी है ।
सुनाओ, मेरे मितरा ।	सुनाओ, मेरे मित्र ।
दस वजने में पंज मिनट हैं ।	दस वजने में पांच मिनट हैं ।
ताश के बवंजा पत्ते होते हैं ।	ताश के बावन पत्ते होते हैं ।
तेरे नाल हाकी खेलांगा ।	तेरे साथ हाकी खेलूंगा ।

(8) अक्षर विन्यास की अशुद्धिया

ऐसी अशुद्धियों के नमूने पीछे दिए गए हैं ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(9) लिपि की अशुद्धियां

पीछे 'लिपि दोष के कारण और प्रकार' के कारण में उसका विवरण आया है ।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(10) विराम चिन्हों की अशुद्धियां

(11) मुहावरों की अशुद्धियां

अशुद्ध	शुद्ध
ईद का चांद निकला ।	ईद का चांद होना ।
किताबों का कीड़ा ।	किताबी कीड़ा ।
तुम्हारी खबर लाऊंगा ।	तुम्हारी खबर लूंगा ।
सागर में गागर भरना ।	गागर में सागर भरना ।
उसका सिर शर्म से उड़ गया ।	उसका सिर शर्म से झुक गया ।
यह तो उल्टी खीर है ।	यह तो टेढ़ी खीर है ।
प्राण पखेरू उड़ा दिये ।	उसको मारा और उसके प्राण पखेरू उड़ गए ।
उसने नौ दो ग्यारह करके पैसे कमाए ।	चोर मालिक को देखकर नौ दो ग्यारह हो गया ।
तू किस खेत की गाजर है ।	तू किस खेत की मूली है ?
यह बात सुनकर वह मुंह फैलाने लगा ।	यह बात सुनकर वह मुंह बनाने लगा ।
बच्चे की आंख लग गई ।	बच्चे को नजर लग गई ।
तुम इस विषय पर सो जाओ ।	तुम इस विषय पर चुप रहो । (Sleep over)
क्रोधी बनकर दांत दिखाने लगा ।	कायर बनकर दांत निखाने लगा । (Show teeth)

§ 150. प्रयोगात्मक व्याकरण के अंग—

अध्यापक को प्रयोगात्मक व्याकरण (Applied Grammar) के निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए ।

(1) **ध्वनि विचार** (Phonetics)

(i) उच्चारण (Pronunciation) (ii) सुस्वरता (Intonation) (iii) स्वराघात (Accent) ।

(2) **शब्द विचार**—

(i) लिपि । (ii) अक्षर । (iii) वचन । iv) लिंग । (v) कारक । (vi) विशेषणों की रचना तथा अवस्थाएं । (vii) सर्वनामों का प्रयोग । (viii) क्रिया विशेषणों का प्रयोग । (ix) उपसर्गों का प्रयोग । (x) प्रत्ययों का प्रयोग (xi) क्रिया के काल, वाच्य, लिंग, वचन, पुरुष ।

(xii) सन्धि । (xiii) समास । (xiv) पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग । (xv) एकार्थक प्रतीत होने वाले शब्दों का प्रयोग ।

जैसे 'अस्त्र' शस्त्र'

(xvi) अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग (जैसे 'कर') (xvii) समुच्चारित शब्दों का प्रयोग (जैसे कृशांग कृशांग्ध) ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) वाक्य विचार—
(i) अन्वय, अधिकार और क्रम। (ii) विराम चिन्ह। (iii) मुहावरों का शुद्ध प्रयोग। (iv) लोकोक्तियों का प्रयोग। (v) सरल, संयुक्त और मिश्रित वाक्यों की रचना। (vi) अलंकारों का प्रयोग। (vii) वाक्यक्रम तथा गद्यांश रचना।

§ 151. प्रयोगात्मक व्याकरण की शिक्षण विधि—

प्रयोगात्मक व्याकरण की शिक्षण विधि सहयोग प्रणाली है। अनुभाग 143 में सहयोग प्रणाली की व्याख्या की गई है। पाठ्य-पुस्तक पढ़ते समय या रचना सिखाते समय जब भी कोई विशेष प्रयोग की बात आ जाए, गद्य और रचना के साथ उसका समवाय करना चाहिए। ध्वनि विचार में उच्चारण प्रमुख है। उच्चारण की अशुद्धियां मौखिक रचना या बोलचाल के समय तथा गद्य का सस्वर वाचन करने के अवसर पर ठीक कराई जा सकती हैं। अक्षर विन्यास और लिपि की त्रुटियां श्रुतलेख और रचना के अवसर पर दूर की जा सकती हैं। शब्द विचार में वचन, लिंग, कारक, सर्वनाम, विशेषण, काल उपसर्ग और प्रत्ययों का प्रयोग सम्मिलित हैं। इस प्रकार की अशुद्धियां प्राय: मौखिक कार्य के अवसर पर दूर करनी चाहिएं और अनुकरण तथा अभ्यास द्वारा ठीक प्रयोग हृदयंगम करना चाहिए। लिखित रचना का संशोधन करते समय भी अशुद्धियां निकालनी चाहिएं और वैयक्तिक अथवा सामूहिक विधि से इन का स्पष्टीकरण करना चाहिए। नई शब्दावली, मुहावरों और लोकोक्तियों का शुद्ध प्रयोग सूक्ष्म पाठ (Intensive study) के अवसर पर सिखाना चाहिए। कभी-कभी अधिन्यास (Assignment) के रूप में शब्द रचना (Word building) और वाक्य प्रयोग के अभ्यास भी देने चाहिए। प्राय: उच्च कक्षाओं के छात्र भी वाक्य संगठन की त्रुटियां दर्शाते हैं। वे सरल वाक्यों को जोड़कर गुम्फित वाक्य नहीं बना सकते। अथवा वाक्यों का शब्द क्रम तथा वाक्य खण्डों का परस्पर सम्बन्ध ठीक तरह से नहीं जानते। इसके निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता है। छात्रों को अपठित गद्य (Unseen Prose) के अनुच्छेदों का सार लिखने का आदेश देना चाहिए। यदि वे अपने वाक्यों की लेखक के वाक्यों के साथ तुलना करें, उनको अपनी भूलों का पता लग जाएगा। अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद करना भी इसके लिए सहायक है।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. हिन्दी भाषा की शिक्षा में व्याकरण का स्थान निर्धारित कीजिए। सैद्धान्तिक (Theoretical) और प्रयोगात्मक व्याकरण के परस्पर संघर्ष में किसकी जीत अवश्यम्भावी है, और क्यों? [§ 147, 148]

2. प्रयोगात्मक या व्यावहारिक (Applied) व्याकरण किसे कहते हैं? व्यावहारिक व्याकरण के विभिन्न अंगों की व्याख्या कीजिए, जिसकी शिक्षा दी जानी चाहिए? [§ 148, 149]

3. विद्यार्थी अपनी रचनाओं में प्राय: व्याख्या की अशुद्धियाँ दर्शाते हैं। इन अशुद्धियों को दूर करने के लिए कौन से उपाय काम में लाए जा सकते हैं। [§ 151]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. व्याकरण की शिक्षा में पाठ्य-पुस्तक, मौखिक कार्य या बोलचाल तथा रचना का क्या हाथ है ? इनसे अधिकतम सहायता कैसे प्राप्त की जा सकती है ?

5. आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों की सामान्य अशुद्धियों का संग्रह कीजिए और उन अशुद्धियों का वर्गीकरण करके, संशोधन की विधियां बताइए ?

9. व्याकरण शिक्षण की आगमन-निगमन प्रणाली किसे कहते हैं। एक उदाहरण देकर इस प्रणाली की व्याख्या कीजिए।

7. अनौपचारिक व्याकरण या व्यावहारिक व्याकरण सिखाने के लिए किस प्रकार की शिक्षण विधि अपनाएंगे ?

सहायक पुस्तकें

1. I. A. A. S — The Teaching of Modern Languages.
2. Ryburn. W. M. — The Teaching of Mother Tongue.
3. Ballard. — Teaching of Mother Tongue.
4. Tidyman and Butter-field. — Teaching the Language Arts. Ch. 15.
5. Balwant Singh Anand. — Aims and Methods of Teaching English in India.
6. Belevelkar. — Systems of Sanskrit Grammar.
7. UNESCO. — Teaching of Modern Languages.
8. Gurry. — Teaching of English as a Foreign Language.
9. कमला प्रसाद गुरु : — हिन्दी व्याकरण
10. रामचन्द्र शुक्ल : — अच्छी हिन्दी।
11. रघुनाथ सफाया : — हिन्दी व्याकरण (पंजाब किताब घर जालन्धर)।

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

27

रचना का स्वरूप तथा उसके प्रकार

§ 152. रचना क्या है ?

परिभाषा—"रचना", अंग्रेज़ी शब्द 'Composition' का पर्याय है। भाषा के क्षेत्र में इन शब्दों का अर्थ है—शब्दों का वाक्यों में गठन तथा उनके द्वारा विचारों का स्पष्टीकरण। विचारों का क्रमबद्ध करना, उनको शब्दों द्वारा व्यक्त करना, संवारना तथा सजाना ही रचना है। साधारण शब्दों द्वारा भाव-प्रकाशन 'रचना' कहलाता है।

रचना दो प्रकार की होती है—मौखिक तथा लिखित। बोलचाल में रचना का मौखिक रूप आता है। रचना का यह सर्वप्रथम तथा महत्त्वपूर्ण रूप है। भाव प्रकाशन सर्वप्रथम बोल-चाल द्वारा ही होता है, लिपिबद्ध अक्षरों द्वारा बाद में होता है। मानव सभ्यता के आरम्भ में भाव प्रकाशन के लिए बोल-चाल का प्रयोग होता रहा है, लिपि का आविष्कार बाद में हुआ। अतः मौखिक रचना लिखित रचना का आधार है। मौखिक रचना या बोल-चाल के सम्बन्ध में पहले कहा जा चुका है।

प्रस्तुत प्रकरण में लिखित रचना की ही व्याख्या होगी।

§ 153. लिखित रचना के उद्देश्य—

बोल-चाल, वचन तथा लिपि के उपरान्त लिखित रचना की बारी आती है। लिखित रचना सिखाने के बाद विचारों को लिपिबद्ध करने की शिक्षा दी जानी चाहिए। आरम्भ में लिखित रचना में अनेक दोष पाए जाएंगे परन्तु परन्तु धीरे-धीरे अभ्यास तथा संशोधन द्वारा लिखित रचना में अभीष्ट योग्यता उत्पन्न कराई जा सकती है। लिखित रचना में योग्यता प्राप्त कराने के निम्न उद्देश्य हैं :—

(i) ऐसी लिपिबद्ध भाषा में भावप्रकाशन जो शुद्ध, शुद्ध, व्याकरण-सम्मत, तथा प्रभावोत्पादक हो।

(ii) रचना की विभिन्न-शैलियों से परिचित होकर स्वतन्त्र शैली के सृजन की क्षमता प्राप्त करना।

(iii) व्यावहारिक जीवन में लेखनी द्वारा कार्य सिद्धि प्राप्त करना।

(iv) अपने अनुभवी लिपिबद्ध करते हुए सत्साहित्य की सृष्टि करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

इसके अतिरिक्त लिखित रचना के अन्य उद्देश्य भी हैं, जिनकी व्याख्या मौखिक रचना के प्रसंग में हुई है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 154. लिखित रचना के विशेष गण—

लिखित रचना, भाषा की शिक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। मौखिक रचना की अपेक्षा इसके कई ऐसे गुण हैं, जिनके कारण इस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

(i) लिखित बात का उत्तरदायित्व मौखिक बात की अपेक्षा अधिक है।

लिखित बात हमेशा के लिए प्रमाण बन जाती है अत: लेखनी सोच-समझ कर उठानी पड़ती है, ऐसा न हो कि लिखे हुए शब्दों से भिन्न तात्पर्य निकलें। सरकारी पत्र-व्यवहार में, पुस्तक रचना में, आदेश देने में, तार भेजने में अथवा सूचना भेजने में यदि साधारण-सी भूल हो जाए तो बाद में पछताना पड़ता है, न्यायालय में भी लिखित बात प्रमाण है, मौखिक बात नहीं। इसी कारण से लिखित रचना के लिए स्पष्ट, संक्षिप्त, यथार्थ शुद्ध तथा नपे-तुले (precise) शब्दों का प्रयोग वांछित है।

(ii) लिखित रचना के द्वारा ही विभिन्न शैलियों का निर्माण हो सकता है। प्रत्येक प्रकार की रचना के लिए पृथक् शैली बनती है। कहानी, संवाद, जीवनी आत्म-कथा, निबन्ध, एकांकी, उपन्यास, नाटक पत्र आदि भिन्न-भिन्न प्रकार की रचनाएं भिन्न-भिन्न शैलियों में लिखी जाती हैं। एक ही प्रकार की रचना भी (जैसे कहानी) भिन्न-भिन्न शैलियों में लिखी जाती है। प्रत्येक लेखक नई शैली पढ़ता है। विद्यार्थी भी अपनी स्वतन्त्र शैली का निर्माण कर सकता है। जहां विद्यार्थी अपनी पूर्ण अभि-व्यक्ति करता है, वहां अपनी शैली का निर्माण भी करता है। इस प्रकार शैलियों की विविधता और निम्न-रूपता रचना के अभ्यास पर निर्भर है। मौखिक रचना में यह विविधता नहीं आ सकती।

(iii) लिखित रचना में अभ्यास प्राप्त करते हुए ही विचारों को क्रमबद्ध करने में सहायता मिलती है। भाषा या बोल-चाल में विचारों को उस क्रम-बद्ध तर्कपूर्ण (Logical), सुव्यवस्थित (Systematic) और नपे तुले रूप में प्रकट नहीं करते, परन्तु लिखित भाषा में हम न तो अनावश्यक प्रसंगों को ला सकते हैं। न अनावश्यक विस्तार ही दे सकते हैं और न अव्यवस्थित ढंग को ही अपना सकते हैं। लिखित भाषा में हमें सतर्क रहना पड़ता है। आवृत्ति या पुनरावृत्ति करना, प्रसंग से बाहर जाना, शब्दों का अशुद्ध प्रयोग करना, दुर्बल वाक्य बनाना आदि दोष लिखित भाषा में ही परिहार्य हैं।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मौखिक रचना के उपरान्त लिखित रचना के लिए विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पड़ती है।

§ 155. लिखित रचना के साधन—

भाषा, विचार आदि मौखिक रचना के साधन लिखित रचना में भी अपेक्षित हैं। इसके अतिरिक्त निम्न साधनों की भी आवश्यकता पड़ती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) **निरीक्षण**—लेखक में निरीक्षण शक्ति जितनी प्रबल होगी उसकी रचना उतनी ही विस्तृत, सर्वांगीण, प्रभावोत्पादक और पुष्ट होगी, निरीक्षण शक्ति रचना के लिए सामग्री जुटाती है। बच्चों में जब तक निरीक्षण शक्ति न बढ़ाई जाए तब तक वे निकटवर्ती वस्तुओं का. यात्रा का तथा अपने अनुभवों का विस्तृत वर्णन नहीं कर सकते। बाज़ार पर प्रस्ताव लिखने से पहले उन्हें बाज़ार की सभी वस्तुओं, दुकानों तथा आने-जाने वालों को भली-भांति देखना पड़ेगा।

(ii) **कल्पना**—शेक्सपियर ने कहा कि पागल, प्रेमी और प्रबन्धकार (अथवा व्यापक अर्थ में कवि) तीनों कल्पन के पुजारी हैं। (The lunatic, lover and the poet are of imagination, all compact)। कवि या लेखक, या प्रबन्धकार अर्थात् रचना वाले कल्पना के द्वारा ही विचारों की नवीन सृष्टि करने में सफल हो जाते हैं। असत्य को सत्य में, अमूर्त को मूर्त में, अतीत को वर्तमान में और अदृश्य को दृश्य में परिवर्तित करने में कल्पना का ही हाथ होता है। कवि का कल्पना जगत अत्यन्त विस्तृत होता है जिसके द्वारा वह नवीन काव्य की रचना करता है। परन्तु एक साधारण लेखक की लेखनी भी कल्पना के प्रयोग से ही चमक उठती है। एक साधारण विद्यार्थी भी अपनी शक्ति के प्रयोग से साधारण से साधारण कहानी को शुष्क से शुष्क वार्ता को तथा लघु से लघु विचार को अत्यन्त रोचक और विनोदपूर्ण बना सकता है। विद्यार्थी की कल्पना शक्ति को बढ़ाने के लिए उसे पूर्वपरिचित कथाओं या वार्ताओं में अभीष्ट परिवर्तन करने का आदेश देना चाहिए। इस प्रकार वह पुरानी रचना बना सकता है।

(iii) **साहित्य**—शिक्षण के लिए साहित्य के अध्ययन पर भी बल देना चाहिए। औरों की शैलियों का अनुकरण करने के लिए, उनकी रचनाओं को पढ़ कर रचना का आदर्श जानने के लिए, रचना के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए, रचना की सामग्री जुटाने के लिए, तथा लेखन-प्रवृत्ति जागृत करने के लिए साहित्य का अध्ययन अपेक्षित है। साहित्य का स्तर विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल होना चाहिए। पत्र-पत्रिकाएं, बाल साहित्य, साधारण ज्ञान की पुस्तकें, छोटी कथा कहानियां तथा बालोपयुक्त रचनाएं प्रत्येक स्कूल में होनी चाहिएं, जिनका उपयोग बच्चे सुविधा-पूर्वक कर सकें।

§ 156. सुन्दर रचना के गुण—

रचना करने के लिए विद्यार्थियों के सामने एक आदर्श होना चाहिए : उसकी रचना में कौन से गुण होने चाहिएं, जिनके अस्तित्व से उसकी योग्यता की परख हो सकती है, अथवा रचना सिखाते समय अध्यापक रचना के गुणों की ओर ध्यान देगा? मौखिक रचना के लगभग सभी गुण लिखित रचना में होने चाहिएं। परन्तु निम्न गुणों की ओर विशेष ध्यान अपेक्षित है :

(i) रचना में भाव और अर्थ के अनुसार शब्दों का प्रयोग होना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) सरल और सुबोध शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। आडम्बर और कठिन मुहावरेदार होना चाहिए।

(iii) भाषा सुव्यवस्थित, क्रमबद्ध, परिष्कृत, शुद्ध, व्याकरण-सम्मत तथा शब्दों का परिहार करना चाहिए।

(iv) रचना संक्षिप्त और संगत (Brief and to the Point) होनी चाहिए। अतिविस्तार और अनावश्यक प्रसंग रचना को बिगाड़ते हैं।

(v) रचना में स्पष्टता, प्रभावोत्पादक तथा विषयानुकूलता होनी चाहिए।

(vi) समस्त रचना में भाव की एकता होनी चाहिए।

(vii) रचना अनुच्छेद आदि में विभक्त होनी चाहिए।

(viii) उच्च कक्षाओं की रचनाओं की विषयानुकूल निर्दिष्ट शैलियां भी होनी चाहिएं।

§ 157. उच्च कक्षाओं की रचना की विभिन्न शैलियां—

(i) **सरल भाषा शैली**—इस शैली में कठिन शब्दों का प्रयोग न करके सरल शब्दों का प्रयोग किया जाता है। छोटे-छोटे शब्दों से छोटे-छोटे वाक्यों का निर्माण किया जाता है। अलंकार तथा पाण्डित्याप्रदर्शन बिल्कुल नहीं होता।

(ii) **अलंकार प्रधान शैली**—इसमें शब्दालंकारों तथा अर्थालंकारों का बहु-प्रयोग किया जाता है।

(iii) **गुम्फित भाषा शैली**—इसमें लम्बे-लम्बे और उलझे हुए वाक्यों का प्रयोग होता है।

(iv) **मुहावरेदार शैली**।

(v) **विनोदात्मक शैली** इसमें हास्य की प्रधानता होती है।

(vi) **व्यंग्यात्मक शैली**—इसमें व्यंग्य द्वारा किसी वस्तु की खिल्ली उड़ाई जाती है।

(vii) **भाव प्रधान शैली**—इसमें भाषा गौण होती है और विचारों का बाहुल्य होता है।

(viii) **विचार प्रधान शैली** इसका लक्ष्य होता है—पाठक की भावनाओं को तरंगित करना।

(ix) **तर्क-प्रधान तथा आलोचनात्मक शैली**—तर्क-वितर्क द्वारा किसी विषय का गुण-दोष विवेचन होता है।

ऊपर शैली का साधारण विवेचन किया गया है। यदि अध्यापक इस विवेचना पर ध्यान देगा, वह किसी भी रचना को पढ़ने पर यह निश्चय कर सकता है कि अमुक रचना किस शैली के अन्तर्गत रखी जा सकती है।

§ 158. रचना शिक्षण की प्रक्रिया—

रचना सिखाने के पांच सोपान हैं:—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) **रचना के विषय का चुनाव**—यह आवश्यक नहीं कि रचना के विषय का चुनाव शिक्षक ही करे। छात्र स्वयं भी अपने दैनिक कार्यक्रम और अनुभव के क्षेत्र में ऐसे विषय छाँट सकते हैं। ऐसे विषयों को व्यक्त करने में वे स्वयं रुचि लेंगे। जहां छात्र को विषय न सूझे, वहां शिक्षक विषय प्रस्तुत कर सकता है।

(2) **विचारों का संकलन**—विषय की मौखिक चर्चा के साथ ही विचारों का संकलन हो सकता है।

(3) **विचारों की व्याख्या**--विभिन्न प्रकार के विचारों को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित करना चाहिए। हो सके तो श्यामपट पर छात्रों की सहायता से रूप-रेखा खींचनी चाहिए। इसके लिए चित्रों की भी सहायता ली जा सकती है।

(4) **लिखना**—अथवा रूप-रेखा को विस्तार देना और लिपिबद्ध करना।

(5) **संशोधन**—छात्रों के लिखने के बाद तुरन्त ही लिखाई का संशोधन होना चाहिए। अशुद्धियां निकाल कर और समझा कर पुनः लिखने का आदेश देना चाहिए।

§ 159. रचना के विषय—

साधारणतया 'रचना' शब्द को निबन्ध का पर्याय समझा जाता है। परन्तु 'रचना' शब्द व्यापक अर्थ में प्रस्तुत होता है। निबन्ध रचना के शताधिक प्रकारों में से एक प्रकार है। विद्यार्थियों की योग्यता तथा मानसिक अवस्था के अनुसार रचना के स्तर और विषय विभिन्न हैं। रचना की शिक्षा के लिए आरम्भ में वाक्य रचना से आरम्भ किया जाता है। धीरे-धीरे अभ्यास और प्रयोग द्वारा विविध विषयक लम्बी रचनाओं में सहायता दी जा सकती है। रचना के विषयों का भी एक विषय क्रम होना चाहिए। जो निम्न सिद्धान्त पर अवलम्बित हो :

(i) प्रारम्भ में रचना के विषय ऐसे होने चाहिएं. जिनका छात्रों को अनुभव हो। जिन वस्तुओं या स्थानों को वे देख चुके हों, तथा जिन कामों को वे कर चुके हों, उनके सम्बन्ध में वे रचना कर सकते हैं।

(ii) धीरे-धीरे छात्रों को अपनी कल्पना-शक्ति तथा विचार-शक्ति के प्रयोग में सहायता देनी चाहिए।

(iii) अन्त में उनके विषयों की विविधता का विस्तार करना चाहिए तथा कठिन विषय को उनके सम्मुख समुपस्थित करना चाहिए।

यह स्पष्ट है कि प्रारम्भिक कक्षाओं में (अर्थात् प्राइमरी तथा जूनियर बेसिक कक्षाओं में) रचना के विषय सरल होने चाहिएं, और उच्च श्रेणियों में (मिडल, हाई तथा हायर सैकण्डरी कक्षाओं में) रचना के विषय अपेक्षाकृत कठिन होने चाहिएं।

नीचे प्रारम्भिक और उच्च कक्षाओं के विषय पृथक स्थानों में दिए जाते हैं :—

§ 160. (क) प्रारम्भिक कक्षाओं में रचना के विषय—

(i) सरल वाक्य बनाना।
(ii) साधारण प्रश्नों का उत्तर लिखना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) वार्तालाप द्वारा विभिन्न परिचित वस्तुओं, पशुओं, पक्षियों, आदि के सम्बन्ध में वाक्य रचना करना, तत्पश्चात् वाक्यों को लिखना।

(iv) श्यामपट पर लिखे हुए अपूर्ण वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करना।

(v) पुस्तक में पढ़ी हुई कहानी को अपने शब्दों में लिखना।

(vi) घरेलू मुहावरों का प्रयोग करना।

(vii) निकटवर्ती वस्तुओं अथवा स्थानों जैसे पाठशाला, गांव, नगर, पशु-पक्षी खेल-कूद आदि का सरल वर्णन करना।

(viii) चित्र वर्णन।

(ix) अनुभव के आधार पर वर्णन करना, जैसे—यात्रा वर्णन, दृश्य वर्णन, आदि।

(x) दिन-चर्या (डायरी) या रोजनामचा लिखना।

(xi) औद्योगिक कार्य का विवरण या रिपोर्ट लिखना, जैसे—'आज हमने खेती में क्या काम किया', 'सूत कैसे काता', 'कपड़े को कैसे रंगें' आदि।

(xii) काल्पनिक वर्णन, जैसे—'यदि मैं घोड़ा होता', 'यदि मैं राजा होता' आदि।

(xiii) अपने सम्बन्धियों को साधारण पत्र लिखने।

(xiv) इतिहास, भूगोल सम्बन्धी साधारण बातें लिखना।

(xv) बालपयोगी पत्रिका पढ़ कर किसी कहानी या लेख का सारांश लिखना।

(xiv) पाठ्य-पुस्तक के लेखों के सम्बन्ध में प्रश्नों का उत्तर देना।

(xvii) पाठ्य-पुस्तक में आए हुए कठिन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना।

§ 161. (क) माध्यमिक कक्षाओं तथा उच्च कक्षाओं में रचना के विषय

(2) **पाठ्य-पुस्तक पर आधारित अभ्यास—**

(i) शब्द-प्रयोग, मुहावरों का प्रयोग।

(ii) वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति।

(iii) प्रश्नोत्तर।

(iv) वर्णन की आवृत्ति।

(v) कथा वर्णन।

(vi) परिवर्तित कथा वर्णन, जैसे (उत्तम पुरुष में वर्तमान काल

(vii) पाठ के आधार पर आत्मानुभाव।

2. **पाठ-पुस्तक से मुक्त रचना—**

(viii) इर्द-गिर्द के वातावरण का वर्णन।

(ix) चित्र-वर्णन।

(x) चुटकले।

(xi) कथा-वर्णन, घटना-वर्णन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(xii) साधारण प्रक्रियाओं का वर्णन, जैसे—पगड़ी बांधना, जूते की मुरम्मत करना, कुएं से जल खींचना, कलम बनाना, खाना पकाना, खेती सींचना, सूत कातना, घर की सफाई करना आदि।

(xiii) दैनिक आवश्यकताओं के लिए रचना, जैसे—तार, अभिनन्दन पत्र, प्रार्थना पत्र, सूचना, आदर्श आदि।

(xiv) व्यावहारिक तथा सरकारी पत्र।

(xv) किसी साधारण विषय पर भाषण लिखना।

(xvi) सवाद लिखना।

(xvii) किसी कविता में पद्यांशों की व्याख्या करना। तुकबन्दी तथा कविता लिखना।

(xviii) अंग्रेज़ी या अन्य भाषा से (जिसका छात्र को ज्ञान हो) हिन्दी में अनुवाद करना।

(xix) पढ़े हुए लेख का संक्षेप करना (Summarisation) अथवा सार।

(xx) सरल एकांकी नाटक लिखना।

(xxi) विवरणात्मक (Narrative) जैसे—(क) रेलवे दुर्घटना, किसी महापुरुष की जीवनी, मंसूरी की सैर आदि।

(ख) वर्णनात्मक (Descriptive) जैसे—रेलवे स्टेशन का दृश्य, कुरुक्षेत्र का मेला, जन्माष्टमी, दीवाली आदि।

(ग) विचारात्मक (Reflective) जैसे ग्राम्य जीवन, चलचित्र के गुण-दोष, बेकारी आदि।

(xxiii) विद्यालयी पत्रिका (School Magazine) के लिए सृजनात्मक (Creative) रचना, जो लेख, कहानी, आत्मानुभव, चुटकले, संवाद आदि के रूप में हो।

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

28

रचना शिक्षण प्रणालियाँ

§ 163. विभिन्न प्रणालियां

रचना शिक्षण की विभिन्न प्रणालियां हैं जिनका विवरण नीचे दिया जाता है, अध्यापक को केवल एक प्रणाली का अनुसरण नहीं करना चाहिए, वरन् जो प्रणाली जिस अवस्था में अधिक काम आए, तथा जो प्रणाली छात्रों की मानसिक अवस्था और योग्यता के अनुकूल हो उसे उसी का ही प्रयोग करना चाहिए। प्रारम्भिक कक्षाओं में प्रश्नोत्तर द्वारा सरल वाक्यों की रचना करनी चाहिए। तत्पश्चात् बुद्धि तथा कल्पना का प्रयोग करना चाहिए। धीरे-धीरे लिखने की शैली, अनुच्छेदों की रचना तथा निबन्ध रचना पर ध्यान देना चाहिए। निम्न प्रणालियों में से प्रथम सात प्रणालियां (आदर्श प्रणाली) तथा (मैत्रणा प्रणाली) उच्च कक्षाओं में ही प्रयुक्त हो सकती हैं।

(1) **प्रश्नोत्तर प्रणाली**—अध्यापक प्रश्न करता है और विद्यार्थी उत्तर देते हैं। अध्यापक उन वाक्यों का विद्यार्थियों द्वारा या स्वयं संशोधन करता है। प्रश्नोत्तर विधि से छात्रों की अभिव्यंजना शक्ति बढ़ती है, कल्पना शक्ति जागृत होती है और वाक्यों की रचना शुद्ध हो जाती है। आरम्भ में अध्यापक के प्रश्न पास-पड़ोस के दृश्यों, पाठशाला की वस्तुओं, जीव-जन्तुओं, मित्रों के गुणों तथा साधारण-कोटि की कहानियां तक ही सीमित रहेंगे। धीरे-धीरे प्रश्नों की सीमा विस्तृत हो जाएगी।

(2) **चित्र वर्णन प्रणाली** (Picture Composition)—अध्यापक छात्रों के सामने एक चित्र उपस्थित करता है और चित्र के सम्बन्ध में प्रश्न करता है। चित्र किसी कहानी को प्रकट कर सकता है, अथवा किसी दृश्य का द्योतक हो सकता है। चित्र में एक-एक अंग के सम्बन्ध में प्रश्न करते-करते अध्यापक उन्हीं से सारे चित्र का वर्णन करवाता है। वर्णन के पश्चात् सब छात्र स्वयं लिखते हैं। चित्र से अधिक रोचक दृश्य सामग्री है, जिसके द्वारा कल्पना को उत्तेजित किया जा सकता है और सारी वार्ता उद्बोधित की जा सकती है।

(3) **उद्बोधित प्रणाली** (Eliciting Method)—बच्चों की कल्पना शक्ति को जागृत करने के लिए तथा उनसे प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निकलवाने के लिए इस प्रणाली का अनुसरण किया जाता है । दृश्य-वर्णन में, आत्म-कथा में या जीवनी में इनका प्रयोग किया जा सकता है ।

(4) **प्रवचन प्रणाली** (Telling Method)—अध्यापक रचना के विषय का मौखिक वर्णन करता है और विद्यार्थियों से उसी की पुनर्रचना करवाता है, किसी महापुरुष की जीवनी, किसी मेले या त्यौहार का वर्णन, कोई कहानी तथा किसी दृश्य का वर्णन विद्यार्थियों को बताया जा सकता है और तत्पश्चात् उनसे लिखवाया भी जा सकता है ।

(5 **रूप रेखा प्रणाली** (Outline Method)—अध्यापक किसी कहानी, जीवन चरित्र, वर्णनात्मक या विवरणात्मक लेख की रूप-रेखा श्यामपट पर लिखता है और उसके सहारे विद्यार्थियों से पूरा लेख लिखवाता है ।

(6) **वाद-विवाद प्रणाली तथा तर्क विधि** अध्यापक किसी विवादास्पद विषय, (जैसे चलचित्र के गुण-दोष, ग्राम्य-जीवन तथा नागरिक-जीवन, सह-शिक्षा, युद्ध और शान्ति), के सम्बन्ध में पक्ष और विपक्ष लेकर वाद-विवाद आरम्भ करता है, वाद-विवाद के अनन्तर छात्र वही लिखते हैं । तर्कपूर्ण तथा विवादयुक्त विषयों में इस विधि का प्रयोग होता है ।

(7) **समवाय प्रणाली** (Correlarion Method) - अध्यापक व्याकरण, शब्द रचना इतिहास, भूगोल आदि विषयों के साथ रचना सम्बन्ध जोड़ता है। पाठ पढ़ाते समय, व्याकरण सिखाते समय तथा द्रुतपाठ के समय इस प्रकार की रचना लिखाई जा सकती । इस विधि का विवरण आगे दिया जाएगा ।

[देखिये समवाय प्रणाली]

(8) **आदर्श प्रणाली** (Model Method)—अध्यापक रचना का एक आदर्श रूप छात्रों को सुनाता है और तत्पश्चात् उनको लिखने का आदेश देता है, क्योंकि इस में अनुकरण तथा अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है ।

(9) **मन्त्रणा प्रणाली** (Guidance Method)—अध्यापक प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध में पुस्तकों की पूरी सूची बना देता है । विद्यार्थी उनके अनुसार अपना काम करते हैं । यह प्रणाली डाल्टन प्लेन के साथ सम्बन्धित है ।

§ 163. A. निबन्ध लिखने की प्रक्रिया

निबन्ध-रचना के कई प्रकार हैं । उच्च कक्षाओं में किसी वर्णनात्मक, कथात्मक या विचारात्मक विषयों पर निबन्ध लिखवाए जा सकते हैं । प्रारम्भ में ऐसे विषयों पर निबन्ध लिखवाने चाहिएं जिनसे छात्र का निकटतम सम्बन्ध हो और जिनका उसे पूर्ण ज्ञान हो । निबन्ध लिखने से पूर्व लेखक को विषय का विश्लेषण करना चाहिए और उसके अंग-प्रत्यंगों का पूरा विचार करना चाहिए । पुस्तकें, देश देशान्तरों का भ्रमण, सामाजिक व्यवहार. निरीक्षण, कल्पना और अनुभव निबन्ध के लिए सामग्री प्रस्तुत करते हैं । निबन्ध के तीन प्रमुख अंग हैं—

1. प्रस्तावना या भूमिका 2. प्रसार या विवेचन 3. उपसंहार या परिणाम ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1 **प्रस्तावना** प्रस्तावना में लेखक ऐसी भूमिका प्रस्तुत करता है कि पाठक को विषय का परिचय प्राप्त हो जाता है और वह उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। प्रस्तावना संक्षिप्त और संगत होनी चाहिए।

2. **प्रसार**—यह निबन्ध का मूल भाग है। इसमें प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध में सभी आवश्यक बातों का रुचिपूर्ण शैली में विवरण होता है। इसमें प्रधान विचारों का स्पष्टीकरण होता है। निबन्ध के इस भाग के लिखने में निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :—

(i) लिखने से पहले लेख की रूप-रेखा निश्चित करनी चाहिए और उसी को विस्तार देना चाहिए।

(ii) सभी विचार क्रम से आने चाहिएं। एक प्रधान विचार को पृथक् अनुच्छेद में लिखना चाहिए।

(iii) विचारों का तांता टूटने न पाए। असंगत बातों का परिहार करना चाहिए।

(iv) विचारों को सिद्ध करने के लिए प्राचीन लेखकों के उदाहरण देने चाहिएं। विद्वानों की उक्तियों से अपने विचारों का समर्थन करना चाहिए।

(v) यदि प्रबन्ध किसी वैज्ञानिक, ऐतिहासिक अथवा भौगोलिक विषय पर हो तो उसमें आकारों, तिथियों और नियमों आदि का सूक्ष्म तथा अनावश्यक बातों का उल्लेख नहीं करना चाहिए।

3. **उपसंहार** यह निबन्ध का अन्तिम भाग है। निबन्ध को अकस्मात समाप्त करने की अपेक्षा एक अनुच्छेद और लिखना, उसमें समस्त निबन्ध का परिणाम या सार हो। ऐसा न हो कि निबन्ध को पढ़ने के बाद भी जिज्ञासा बनी रहे। यह भाग निबन्ध की पराकाष्ठा है अथवा यह निबन्ध का निचोड़ है। उपसंहार में उपदेश या सीख देना निबन्ध की आत्मा के प्रतिकूल है। उपदेश धार्मिक लेखों में हो सकते हैं, साधारण निबन्धों में नहीं। यदि किसी कथा से उपदेश मिलता भी हो, उस उपदेश का केवल निर्देश करना चाहिए। उपसंहार स्वाभाविक, संक्षिप्त और संगत होना चाहिए।

§164. रचना की शिक्षा में ध्यान देने योग्य बातें –

(1) **रचना लिखने वाला अध्यापक स्वयं लेखक होना चाहिए**—जब तक उसमें लिखने की प्रवृत्ति नहीं, सिखाने का अभ्यास नहीं और रचना की विभिन्न शैलियों या विषयों का ज्ञान नहीं, वह इस कार्य में सफल नहीं हो सकता। चाहे उसने हिन्दी की असंख्य पुस्तकें पढ़ी हों, साहित्य का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त हो, परन्तु जब तक स्वयं लेखक नहीं बनता, वह छात्रों को भी लेखक नहीं बना सकता। लिखने में सतत् अभ्यास की आवश्यकता है, ज्ञान की नहीं।

(2) **रचना सिखाने में भी साधारण से असाधारण तथा सरल से जटिल की ओर जाना चाहिए**—पहले सरल वाक्य फिर मिश्रित वाक्य, फिर अनुच्छेद और फिर लम्बे लेख लिखवाने चाहिएं। विषयों का क्रम भी कठिनाई के अनुसार होना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाहिए। अध्यापक प्राय: तीसरी श्रेणी के विद्यार्थियों को 'हमारी पाठशाला', 'गाय', 'हमारा गांव' आदि विषयों पर प्रस्ताव लिखने का आदेश देते हैं। परिणामत: बच्चे प्रस्ताव की पुस्तकों से नकल उतारते हैं या दूसरे से इस विषय पर दस-बारह वाक्य पूछते हैं। स्वयं वे इस विषय पर कुछ नहीं लिख सकते। इस बोल-चाल के द्वारा, निकटवर्ती वस्तुओं के वर्णन द्वारा रचना में उत्तरोत्तर प्रगति हो सकती है।

(3) **रचना का स्तर सीखी हुई भाषा के अनुकूल होना चाहिए**—प्रस्तुत रचना में उतने ही शब्दों तथा मुहावरों का प्रयोग होना चाहिए, जो वे पहले ही सीख चुके हों। एक-आध नए शब्द तथा मुहावरों को पहले श्यामपट पर लिखना तथा समझना चाहिए, यदि रचना लिखने में उसकी आवश्यकता पड़ती हो।

(4) **अध्यापक का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है छात्रों में रचना के प्रति रुचि उत्पन्न करना** – आजकल कोई छात्र लिखने में रुचि नहीं रखता, इसका कारण है दोष-पूर्ण शिक्षण विधि। यदि अध्यापक ठीक ढंग से पढ़ाए, छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल विषयों को छांटे, बोल-चाल द्वारा उस विषय की रचना का पूर्ण अभ्यास कराए और रचना में रुचि उत्पन्न करे, तो छात्रों की यह झिझक दूर हो सकती है।

(5) **छात्रों का स्वाध्याय बढ़ाना चाहिए**—आजकल रचना का स्तर गिरा हुआ है। उसका यह कारण है कि छात्र विषयों के सम्बन्ध में स्वाध्याय नहीं करते। बालपयोगी साहित्य के अभाव के कारण छात्रों के पास लिखने की सामग्री नहीं। वे या तो गाय, बैल आदि पशुओं पर, या दीवाली आदि मेले त्यौहारों पर, या गांधी, नेहरू आदि इने-गिने प्रसिद्ध महापुरुषों पर निबन्ध लिखते हैं। वे इस सीमा से बाहर नहीं जा सकते, क्योंकि पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त उन्होंने कुछ भी नहीं पढ़ा है। रचना के विषयों का विस्तार तभी हो सकता है, जब छात्रों का अध्ययन भी विस्तृत हो अथवा उनको विस्तृत बालोपयोगी साहित्य पढ़ने को दिया जाए, जहां वह रचना की सामग्री जुटा सकें।

इसके निमित्त प्रत्येक विद्यालय में दैनिक पत्र-पत्रिकाएं, (जैसे बाल-सखा, बाल-भारती, चन्दा-मामा, हमारा बालक शिशु, चुन्नू-मुन्नू, कहानी, खिलौने, सरिता, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान आदि कहानियों की पुस्तकें, लेखमालाएं, देश-विदेश की वार्ताएं, इतिहास-भूगोल सम्बन्धी सरल पुस्तकें, महापुरुषों की जीवनियां, एकांकी, नाटक, लघु उपन्यासों के लघु संस्करण, छोटे-छोटे निबन्ध, बाल कविता की पुस्तकें आदि साहित्य का भण्डार होना चाहिए।

(6) **अध्यापक को उद्बोधन विधि द्वारा (By Eliciting) छात्रों की कल्पना शक्ति जागृत करनी चाहिए**—छात्र अपनी कल्पना का जितना प्रयोग कर सकें उनकी रचनाएं उतनी ही सुन्दर होंगी। कल्पना-शक्ति को बढ़ाने के निमित्त निम्न प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं :—

(i) यदि तुम पक्षी होते तो क्या करते।

(ii) यदि तुम शिक्षा-मन्त्री बन जाओगे, तो ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) यदि तुम्हें कारावास मिले तो जेल में अपना समय कैसे बिताओगे ?

(iv) यदि सुभाषचन्द्र बोस भारत लौट आएं, तो वे भारत में किस प्रकार का परिवर्तन देख सकेंगे और जनता में कैसे प्रभाव उत्पन्न होंगे ?

(v) यदि तुलसीदास जी मरे न हों वरन् हिमालय की किसी गुफा में तपस्या करते रहे हों और आज उनकी समाधि टूट जाए तो वे आधुनिक भारत में कौन-सी नई बातें देख पाएंगे ?

(vi) यदि तुम्हें एक खज़ाना मिल जाए, उसको कैसे व्यय करोगे ?

(vii) एक ऐसे दृश्य का वर्णन करो, जिसके पूर्व में चन्द्रोदय हो रहा हो और पश्चिम में सूर्यास्त।

(viii) नदी तट के सायंकालीन दृश्य का वर्णन करो।

(ix) चांदनी रात में तुमने ताजमहल देखा। सम्पूर्ण दृश्य का वर्णन करो ?

(x) यदि वायुयान द्वारा चन्द्रमा अथवा मंगल ग्रह तक यात्रा करोगे, मन में कौन से भाव उत्पन्न होंगे।

(xi) मानो तुम बंगला देश के निवासी हो। पाकिस्तानी सेना के अत्याचार का आंखों-देखा हाल लिखो।

§ 165. लेख का संशोधन—

रचना के कार्यक्रम का अन्तिम तथा महत्वपूर्ण भाग है—लेख का संशोधन। छात्र रचनाएं लिखते जाएं, परन्तु जब तक अध्यापक उनका संशोधन नहीं करता, तब तक रचना-कार्य में प्रगति नहीं हो सकती। संशोधन से ही विद्यार्थी अपनी भूलें, अशुद्धियां, त्रुटियां और दोष जान सकते हैं और आगे को अपने लेख का परिष्कार कर सकते हैं। अध्यापक को चाहिए कि रचना लिखाने के बाद छात्रों की कापियों का संशोधन करे तथा उनकी भाषा-सम्बन्धी, शैली सम्बन्धी या विषय सम्बन्धी त्रुटियां उन्हें समझाएं, परन्तु अध्यापक प्रायः संशोधन कार्य से घबराते हैं। उनको अध्ययन कार्य में से सबसे कठिन, शुष्क और अरोचक काम संशोधन ही दिखाई देता है। संशोधन कार्य कठिन है परन्तु उतना कठिन नहीं, जितना अध्यापक को प्रतीत होता है। वास्तव में अध्यापक स्वयं ही इस कार्य को जटिल बना देता है। संशोधन का काम निम्न कारणों से जटिल बन गया है :—

(i) **मौखिक रचना का अभाव**—अध्यापक रचना लिखने से पहले मौखिक रचना की ओर ध्यान नहीं देते, जिसके फलस्वरूप छात्रों के वाक्य अपूर्ण होते हैं। विचार क्रमबद्ध नहीं होते और उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग भी नहीं होता और सारी रचना भद्दी और दोष-पूर्ण दिखाई देती है। रचना लिखने से पहले मौखिक रचना द्वारा ऐसे दोष दूर हो जाएंगे और लिखित रचना अधिक परिष्कृत होगी।

(ii) **व्याकरण का अज्ञान** छात्रों को व्याकरण का पूरा ज्ञान नहीं होता और वे अशुद्ध भाषा लिखते हैं। जिसके फलस्वरूप अध्यापक को व्याकरण की सभी अशुद्धियां ठीक करनी पड़ती हैं। रचना सिखाने से पहले छात्रों को उनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्तर के व्याकरण का ज्ञान देना चाहिए। व्याकरण का अज्ञान सारी रचना को दूषित बना देता है और बेचारा अध्यापक प्रत्येक वाक्य में व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियां ठीक करने में लगा रहता है।

(iii) **सामूहिक संशोधन का अभाव**—अध्यापक कापियां घर ले जाता है और प्रत्येक कापी लाल स्याही से भर देता है और दूसरे दिन कापियां वापिस करता है। प्रत्येक छात्र केवल अपनी कापी को देखता है और अपनी गल्तियां मालूम करता है जो अशुद्धियां वह आज करता है, वही अशुद्धि दूसरी बार कोई और करता है और अध्यापक उस अशुद्धि को ठीक करता है। इस प्रकार एक-एक अशुद्धि को अध्यापक बार-बार ठीक करता है।

ऐसी अवस्था में अध्यापक के लिए संशोधन का काम जटिल हो जाता है। अशुद्धियों की संख्या अधिक हो जाती है। इस जटिलता को दूर करने के लिए तथा संशोधन कार्य को सरल बनाने के लिए कई उपाय नीचे बताए जाते हैं—

§ 166. संशोधन कार्य को सरल बनाने के उपाय

(i) अशुद्धियां दो प्रकार की होती हैं। कई अशुद्धियां प्रमोद, लापरवाही तथा शीघ्रता के कारण हो जाती हैं। इन अशुद्धियों को कम करने के लिए छात्रों को लिखते समय सावधान बनाना चाहिए।

(ii) शेष अशुद्धियां अज्ञान के कारण होती हैं। केवल ऐसी अशुद्धियों को संशोधन की आवश्यकता होती है।

(iii) छात्रों की रचना लिखने के तुरन्त बाद ही उनकी कापियों का संशोधन करना चाहिए। आज लिखी हुई रचना में जो अशुद्धियां निकाली जाएं, वह स्मृति में स्थायी रहती हैं। यदि ऐसी अशुद्धियां काफी देर बाद निकाली जाएं, तो बात पुरानी हो जाती है और वे याद नहीं रहतीं।

(iv) रचना लिखाने से पहले मौखिक रचना आरम्भ करनी चाहिए और उसके बीच बहुत सी अशुद्धियां, जो बोलने में प्रकट हों, दूर की जानी चाहिएं।

(v) प्रयोगात्मक व्याकरण पर पूरा ध्यान देना चाहिए, ताकि व्याकरण की अशुद्धियों का सारा भार रचना पर न पड़े।

(vi) संशोधन का सारा भार अध्यापक अपने ही ऊपर न ले। संशोधन तीन तरीकों से हो सकता है। प्रथम छात्र अपनी रचना को लिख कर स्वयं अशुद्धियां निकालने की कोशिश करें। द्वितीय—छात्र स्वयं एक दूसरे की रचनाओं को पढ़ कर उनकी अशुद्धियां ठीक करें। तृतीय—अध्यापक स्वयं अशुद्धियां ठीक करे।

§ 167. रचना की सामान्य त्रुटियां—

सामान्यतः छात्रों की लिखाई में निम्न त्रुटियां पाई जाती हैं—

(i) लिपि की अशुद्धियां और सुलेख की न्यूनता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

( ) अक्षर-विन्यास की अशुद्धियां ।

(3) शब्दावली और मुहावरों का अशुद्ध प्रयोग ।

(4) व्याकरण की अशुद्धियां ।

(5) रचना का अनुच्छेदों में विभक्त होना ।

(6) विचारों का क्रमबद्ध न होना ।

(7) विचारों और भावों की अस्पष्ट अभिव्यक्ति ।

(8) विचार-सामग्री की न्यूनता ।

रचना की सामान्य त्रुटियों के निम्न कारण हैं—

(1) शिक्षक गृह-कार्य बहुत थोड़ा देता हो और छात्रों को लिखने में अभ्यास करने के अवसर पर्याप्त रूप में न दे ।

(2) छात्रों में स्वाध्याय की आदत न हो ।

(3) शिक्षक लिखाई का संशोधन नियमित रूप से न करे ।

(4) लिखने में सावधानी ।

§ 168. संशोधन की विधि—

(i) साधारणतया अध्यापक को चाहिए कि रचनाओं का संशोधन उनकी उपस्थिति में करे और उनको मौखिक रीति से समझाए । परन्तु अध्यापक के पास शायद ही इतना समय हो कि वह ऐसा न कर सके । अत: वह कापियों को घर ले जाकर वहां इसका संशोधन कर सकता है ।

(ii) अशुद्धियों का संशोधन सहानुभूति-पूर्ण ढंग से छात्रों के हित के लिए करना चाहिए, दोष-दर्शन की दृष्टि से नहीं ।

(iii) सभी अशुद्धियों का संशोधन आवश्यक नहीं । किन्हीं अशुद्धियों को आगे के लिए छोड़ा जा सकता है । संभव है कि ऐसी अशुद्धियां ऊंचे स्तर की हों, जो ऊंची कक्षाओं में ठीक की जा सकती हैं ।

(iv) संशोधन कार्य को सरल बनाने के लिए विशेष चिन्हों का प्रयोग करना चाहिए । कतिपय चिन्ह नीचे दिए जाते हैं । अध्यापक अपनी इच्छानुसार नए चिन्ह अपना सकता है : -

अ = अक्षर-विन्यास की अशुद्धि	+ = सन्धि द्वारा जोड़ दें
लि = लिपि की अशुद्धि	△ = कोई शब्द छूटा है
स = संधि: की अशुद्धि	:: = शब्दों को पृथक् करें
क = कारक की अशुद्धि	
× = अनावश्यक शब्द	ʎ = बीच में यह शब्द जोड़ दें
⌒ = शब्दों को मिला लें	\ = नया अनुच्छेद आरम्भ करें
→← = शब्दों का क्रम बदल ले	? अस्पष्ट है, अध्यापक से पूछें

चित्र 15. संशोधन चिन्ह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) इन चिन्हों के अतिरिक्त विराम चिन्ह स्वयं लगाने चाहिएं ।

(vi सर्वसाधारण अशुद्धियों की एक सूची तैयार करनी चाहिए और कक्षा में सभी छात्रों को अशुद्धियां समझानी चाहिएं ।

(vii) संशोधन के बाद यह भी देखना चाहिए कि छात्र एक बार समझी हुई अशुद्धियों को दूसरी बार तो नहीं करते ।

(ix) रचना के अभ्यास के लिए अभ्यास पुस्तिकाएं वर्क-बुक्स (Work books) का प्रयोग करना चाहिए । उन पर लिखने से छात्र सावधानी से काम करेंगे । ऐसे बुक वर्क छपे हुए हैं जो तीसरी श्रेणी से लेकर आठवीं तक लागू किए जा सकते हैं, जैसे :—

(1) बाल हिन्दी रचना भाग, 1 (दूसरी के लिए) से लेकर भाग 5 तक ।

प्रकाशक : पंजाब किताब घर, जालन्धर ।

(2) बाल हिन्दी लेखन, पहली पुस्तक (पहली के लिए) से लेकर पांचवीं पुस्तक तक प्रकाशक : नीरज बाल प्रकाशन, जालन्धर ।

§ 169. लिखाई की मन्दता

लिखाई की मन्दता में तीन बातें आ जाती हैं—

(1) **सुलेख की मन्दता** (Backwardness in Handwriting) ।

(2) **अक्षर-विन्यास की मन्दता ।**

(3) **रचना की मन्दता ।**

(1) **सुलेख की मन्दता**—प्राय: कई विद्यार्थियों की लिखाई में अनेक दोष होते हैं । दोषों के कारण तथा 'लिपि प्रकार की शिक्षा' प्रकरण में बताए गए हैं । ऐसे छात्रों को कभी देवनागरी लिपि का अधूरा ज्ञान होता है, अथवा वे असावधानी या शीघ्रता से लिखते हैं अथवा घसीट लिखते हैं । इन दोषों को दूर करने के लिए उपाय भी बताए गए हैं । इन उपायों को काम में लाने पर यदि कई विद्यार्थी प्रगति न करें तो निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :—

(i) ऐसे छात्रों की हाथ की चेष्टा शक्ति (Motor power) कम होगी । इसके बढ़ाने के लिए धीरे-धीरे अभ्यास की आवश्यकता है ।

(ii) कोई छात्र दाएं हाथ के बदले बाएं से सुन्दर लिख सकता है । उसको बाएं हाथ से लिखने की अनुमति देनी चाहिए ।

(iii) प्रत्येक छात्र के सुलेख पर वैयक्तिक ध्यान देना चाहिए । प्रत्येक की अपनी-अपनी कठिनाइयां होती हैं । कोई स्पष्ट नहीं लिखता । कोई अक्षरों का सानुपात बना कर नहीं लिखता । कोई शब्दों के बीच उचित अन्तर नहीं रखता, कोई ठीक स्याही का प्रयोग नहीं करता, आदि इनके वैयक्तिक दोष दूर करने चाहिएं ।

(iv) सुलेख की प्रगति के लिए अनुलिपि, प्रतिलिपि और श्रुतलिपि का अभ्यास करना चाहिए ।

(2) **अक्षर-विन्यास की मन्दता** – अक्षर और विन्यास के दोषों के प्रकार, कारण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और उपाय पीछे बताए गए हैं। प्रत्येक छात्र की वैयक्तिक त्रुटियों का निदान करके उनका उपाय करना चाहिए। ऐसे छात्रों को बाल-साहित्य पढ़ने और उसमें शब्दों के अक्षरों का निरीक्षण करने का आदेश देना चाहिए। सावधानी और एकाग्रता से लिखने पर बल देना चाहिए। कठिन शब्दों के अक्षरों का विश्लेषण सिखाना चाहिए। उनको अक्षर-विन्यास की एक नोट-बुक रखने का आदेश देना चाहिए जिसमें वे नए शब्द लिखते जाएं।

हिन्दी अक्षर-विन्यास में जो छात्र दुर्बल होते हैं वे प्राय: उच्चारण में भी दुर्बल होते हैं। अत: सर्व-प्रथम उनका उच्चारण ठीक करना चाहिए।

(3) **रचना की मन्दता—**

रचना की मन्दता के निम्न कारण हैं :—

(i) मौखिक अभिव्यक्ति (Oral Expression) का अभाव।
(ii) शब्दावली की न्यूनता।
(iii) निरीक्षण शक्ति की न्यूयता।
(iv) वाचन की न्यूनता।
(v) साधारण बुद्धि की मन्दता और कल्पना का अभाव।
(vi) लेखन शैली का अज्ञान।
(vii) लिखने का न्यून अभ्यास।

रचना की मन्दता दूर करने के लिए प्रत्येक छात्र पर वैयक्तिक ध्यान देना चाहिए और अपने-अपने दोष का उपाय दूर करना चाहिए। छात्रों को पढ़ने के लिए पर्याप्त सामग्री देनी चाहिए जिससे उनकी शब्दावली बढ़ जाए, भाषा-प्रयोग सीख जाएं और वर्णन शैली का ज्ञान हो जाए। आरम्भ में उनको सरल क्रियाओं या कहानियों का वर्णन करने का आदेश देना चाहिए। धीरे-धीरे कठिन विषय उपस्थित करने चाहिएं। मन्द छात्रों की कापियों का संशोधन अधिक ध्यान के साथ करना चाहिए। उनकी सामान्य त्रुटियां सामने समझानी चाहिएं। सबसे बड़ी बात यह है कि उनकी रचना के प्रति रुचि उत्पन्न करनी चाहिए। छोटी-छोटी रचनाओं पर पारितोषिक देने चाहिएं। धीरे-धीरे उनमें आत्म-विश्वास उत्पन्न हो जाएगा।

§170. शब्दावली, व्याकरण, रचना आदि के अभ्यासों के नमूने

(क) (जूनियर बेसिक या प्राइमरी कक्षाओं के लिए)

(1) पहला अक्षर बदल कर नए शब्द बनाओ—

(i) चाक—[डाल, बाल, माल, दाल— — –]
(ii) हाट— — — — — — — — —
(iii) सकता — — — — — — — —

अन्तिम शब्द बदल कर नए शब्द बनाओ।

(i) जाल — —[जान, जांच, जाड़— — — — — —]
(ii) [illegible] — — — — —]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(3) नीचे जिस शब्द के अक्षर ठीक हैं, उसे अलग लिखो—

(i) पुरब, पुरश, पुरुष, परुष (पुरुष)

(ii) खेंचना, खींचना, खैंचना, खिंचना । ( )

(iii) पहुंचा, पहूंचा, पहोंचा, पोंहचा ( )

(4) नीचे लिखे शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द लिखें—

(i) पवन——(वायु, हवा, अनिल, समीर)

(ii) सिन्धु——( )

(iii) पीड़ा——( )

(5) नीचे लिखे शब्दों के आगे उल्ट शब्द लिखें—

(i) पुण्य (पाप), (ii) आदर ( ), (iii) सुख ( )

(6) सोने के भूषण बनाने वाले को 'सुनार' कहते हैं, इसी प्रकार नीचे लिखे के आगे लिखें—

(i) लोहा ( ), (ii) मिट्टी के बर्तन ( )

(7) नीचे पशु-पक्षियों की आवाज़ के आगे पशु या पक्षी का नाम लिखो—

(i) (शेर) दहाड़ता है ( ), (ii) ( ) रंभाती है,

(iii) ( ) टर्राता है, (iv) ( ) भिन भिनाती है,

(v) ( ) हिनहिनाता है, (vi) ( ) रेंगता है ।

(8) नीचे लिखे शब्दों का अर्थ लिखकर उन्हें वाक्यों में प्रयुक्त करो—

(i) सम्मान । आदर । बड़ों का सदा सम्मान करना चाहिए ।

(ii) उन्नति ।......। ....

(iii) निपुण ।..... ।....................................

(9) नीचे कविताओं की पंक्तियों को सीधे वाक्यों में बदलो—

(i) गांव में रहती थी एक बुढ़िया,
भारी था उसका परिवार ।

[बुढ़िया गांव में रहती थी, उसका परिवार भारी था ।]

(ii) सीता सी साध्वी जहां हुई थी नारी ।
वह भारत भूमि क्या यही हमारी प्यारी ।
[ ]

(10) शुद्ध करके लिखो—

(i) ठण्डा वायु बहने लगा (ठण्डी वायु बहने लगी)

(ii) सब्जी में नमक डाली है [ ]

(iii वे हम से पूछे थे [ ]

(iv) आप क्या दोगे ? [ ]

(v) मैं दौड़ता-दौड़ता थक गया [

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(11) नीचे लिखे वाक्यों में दिए हुए शब्दों की सहायता से खाली स्थान भरो—

(i) शेर को भी मार डालता है।

(ii) पृथ्वी ······ के चारों ओर घूमती है।

(iii) राम ने · ···· को तीर मारा।

(iv) रात को ······ चमकता है।

शब्द—चन्द्रमा, मनुष्य, हाथी, हिरण, सूर्य, तारे, सांप।

(12) अधूरे वाक्यों को पूरा करो—

(i) हमे बड़ों का ·· ·········

(ii) प्रतिदिन सवेरे उठकर ·· ·········

(iii) बादलों को देख कर · ······

(iv) गर्मियों में दिन रातें ·······

(v) जिसकी लाठी · ····· ········ ··

(13) खाली स्थान भरो—

किसी गांव······ · एक धोबी ····था।······पास ··· गधा था। पर वह ·· लाद कर धोने ·· जाया करता। रात ·· ·····के घर ···· चोर ·····आया। धोबी के कुत्ते ने को देखा, परन्तु वह चुपके से ·· ।

(14) नीचे लिखे वाक्यों में शब्दों का क्रम ठीक करो -

(i) सूर्य और वायु में हो गया झगड़ा एक बार।

(ii) गीदड़ होता है चालाक बहुत।

(iii) इस चित्र में क्या देखते हो तुम ?

(15) नीचे प्रत्येक बात के सम्बन्ध में छः-छः शब्द लिखो—

(i) खाने की छः वस्तुओं के नाम।

(ii) छः पक्षियों के नाम।

(iii) छः पशुओं के नाम।

(iv) छः रंगों के नाम।

(v) छः ऋतुओं के नाम।

(vi) समय सम्बन्धी छः शब्द।

(16) नीचे लिखे पूरे वाक्य के बदले एक शब्द लिखो -

(i) वह स्थान जहां पुस्तकें छापी जाती है।

(ii) वह स्थान जहां चारों ओर से रास्ते मिलते हैं।

(iii) वह समय जब सूर्य उदय होता है।

(17) नीचे दिए शब्दों के कई अर्थ हैं। सभी अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो -

(i हरा : (क) एक प्रकार का रंग। तोते का रंग हरा है।
(ख) जीतना । राजा ने शत्रु को हराया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) : कल [ ]

(iii) : जग : [ ]

(18) नीचे दिये शब्दों के अक्षरों से नए शब्द बनाओ—

(i) इलाहाबाद : [बाल, बाद, लाद, हाल, दाल, हिला, दिखा]

(ii) ताजमहल : [ ]

(iii) दालभात : [ ]

(19) नीचे दिये शब्दों में से बेमेल शब्द निकाल लो—

(i) पुस्तक, अक्षर, जूती, कागज़, स्याही, कलम, दवात।
[जूती बेमेल शब्द है]

(ii) प्रातः, सूर्य, उजाला, साल, ठण्डी, हवा, अन्धेरा।

(iii) कपास, अटेरन, करघा, फनकी, रूई, पत्ते, जुलाहा, धागा।

(20) नीचे लिखी पहेलियों के उत्तर लिखो—

(i) एक जानवर ऐसा जिसकी दुम पर पैसा।

(ii) उसकी कमाई मकान या विवाह ने खाई।

(iii) हाथ नहीं है, पांव नहीं है, नहीं रूप नहीं रेखा,
पेड़ गिरावे, धूल उड़ाए, किसी ने नहीं देखा।

[संकेत—वायु, लकड़हारा, मोर, बनिया, मुर्गा, भिखारी, वर्षा]

(21) चित्रों को देख कर इन प्रश्नों के उत्तर दो।

(क) 1. इस चित्र में तुम क्या देखते हो?
2. कुत्ता कहां पर खड़ा है?
3. कुत्ते के मुंह में क्या है?
4. कुत्ते ने पानी में क्या देखा?
5. कुत्ते ने किसकी परछाईं देखी?
6. परछाईं देखकर कुत्ते ने क्या सोचा?
7. फिर उसने क्या किया?
8. उससे क्या हानि हुई?

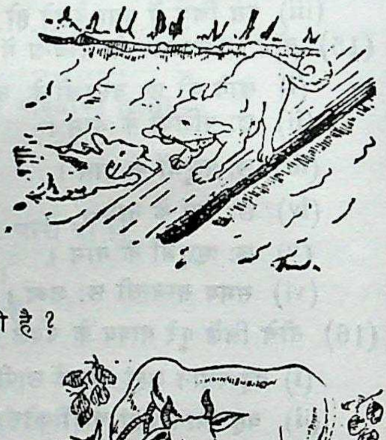

9. इस कहानी से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है?

(ख) 1. इस चित्र में तुम क्या देखते हो?
2. ग्वाला क्या करता है?
3. उसके पास और कौन है?
4. गाय कैसा पशु है?
5. गाय के अंग बताओ।
6. गाय का दूध किस काम आता है?
7. गाय से क्या लाभ हैं?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(22) नीचे दिये हुए चित्रों की सहायता से कहानी बनाओ—

एक में रहती थी

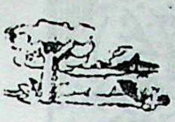

उसने एक दोस्ती बनाई। दोनों आराम से रहने लगे।

एक दिन एक आया। उसने ....

की में पकड़ लिया।

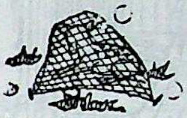

—ने अपने दांतों से

और इस प्रकार

(23) दूसरे पृष्ठ पर दिये चित्रों की सहायता से कुत्ते की कहानी लिखो —

रूप रेखा—कपास का पौदा, पौदे से फूल, डोडी का पक जाना, डोडी से रूई, कपास बेलना, बिनौले निकालना, रूई धुनना, पूनियां, चर्खे पर कातना, ताना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh, Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

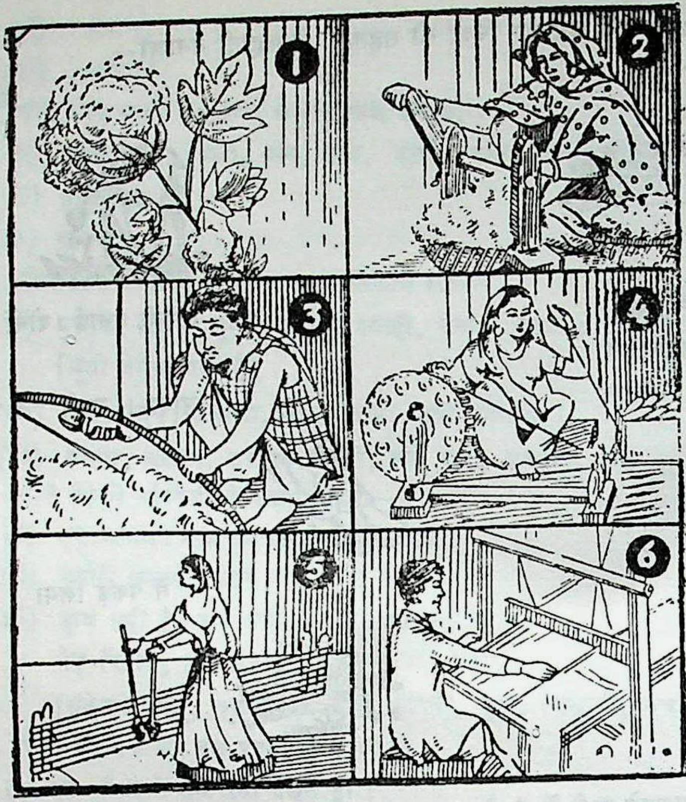

तानना, कपड़ा बुनना, दर्जी का कपड़ा सीना और कुर्ता बनाना ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्र की यात्रा

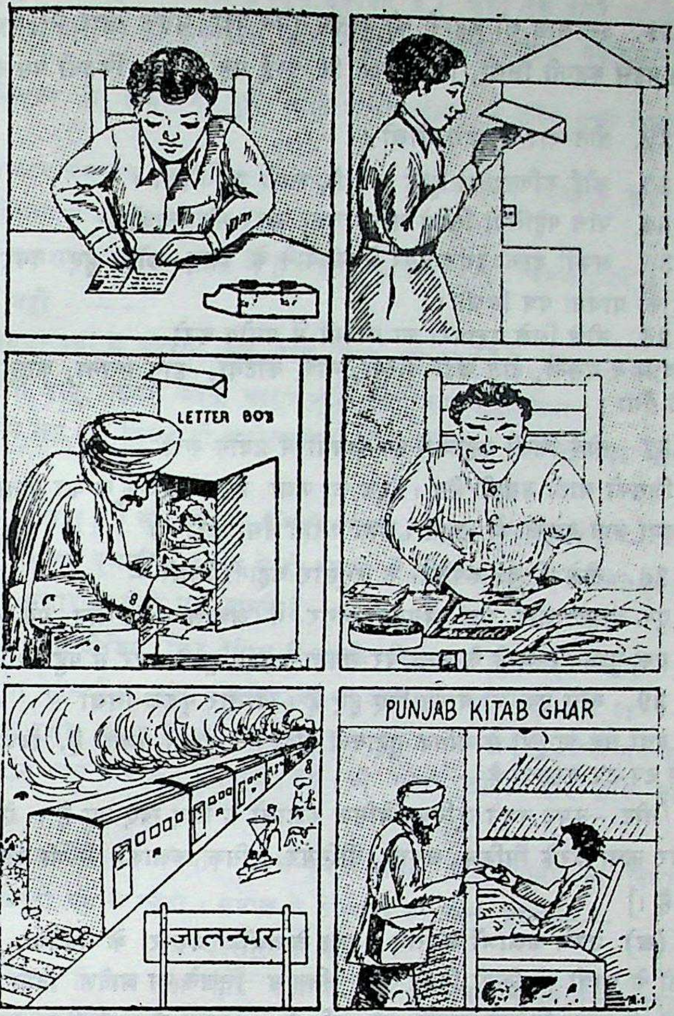

24. ऊपर दिये हुए चित्रों की सहायता से पत्र की यात्रा का वर्णन करो।
25. सवेरे से लेकर शाम तक जो कुछ तुमने आज किया उसका वर्णन करो।
26. लोमड़ी और सारस की कहानी लिखो।
27. परीक्षा में पास होने पर अपने पिताजी को एक पत्र लिखो।
28. फीस माफी के लिए मुख्य अध्यापक को पत्र लिखो।
29. डाकखाने से मनी-आर्डर फार्म ले आओ। मान लो कि तुम्हें अपने भाई को सौ रुपए भेजने हैं। उसके लिए फार्म भरो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

30. तुमने एक व्यक्ति से 200 रुपए उधार मांगे। रसीद लिख दो।

31. इस मास जो कहानी की पुस्तक तुमने पढ़ी उसके बारे में अपने विचार लिखो। पहले कहानी लिखो, फिर लिखो कि तुम्हें यह पुस्तक कितनी पसन्द आई और क्यों?

32. तीन-चार चुटकले लिखो।

33. कोई कविता जो तुम्हें याद है, कापी पर लिखो।

34. पांच पहेलियां लिखो और उनका उत्तर भी बताओ।

35. अपनी डाक दूसरे नगर में मंगवाने के लिए छोड़े हुए नगर के पोस्ट मास्टर को प्रार्थना पत्र लिखो।

36. नीचे लिखे मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो—

दाल न गलना, दांत खट्टे करना, नाक काटना, हाथ मलना, कोल्हू का बैल, जैसे को तैसा।

37 नीचे लिखी कहावतों का वाक्यों में प्रयोग करो –

जिसकी लाठी उसकी भैंस। दूध का जला छाछ फूंक-फूंक कर पीता है। अन्धा क्या जाने बसन्त की बहार। जैसा करोगे वैसा भरोगे।

38. नीचे दी हुई रूपरेखा के अनुसार कहानी लिखो—

एक अन्धा और एक लंगड़ा—नगर में अकाल—सब भाग गये—दोनों मरने लगे—एक सुझाव—अन्धे के कन्धे पर लंगड़ा चढ़ा दूसरे नगर में पहुंचे।

39. नीचे एक दो वाक्य दिए हुए हैं। विस्तार पूर्वक लिखो—

वर्षा सब ऋतुओं से अधिक सुहावनी होती है। बादल गर्जते हैं, बिजली कड़कती है, मेंह टप-टप बरसता है –

[नोट –ऊपर नमूने जूनियर बेसिक कक्षाओं के लिए दिए गए हैं। ऐसे अभ्यासों का स्तर ऊचा करके मिडिल अथवा सीनियर बेसिक कक्षाओं में भी प्रस्तुत किए जा सकते हैं।]

(ख) उच्च कक्षाओं के लिए रचना के नवीन प्रकार के विषय—प्राय: उच्च कक्षाओं के छात्रों को किसी विषय पर निबन्ध लिखने का आदेश दिया जाता है। निबन्धों की परिपाटि अब पुरानी हो गई है। निबन्ध के बदले दिए गए विचारों का विस्तार पूछा जा सकता है। नीचे 15 विषय दिये जाते हैं, जिनको पढ़ कर छात्रों के मन में एक नई विचारधारा पैदा होगी। जिसके अनुसार वे लेख लिख सकते हैं।

1. जन्म-भूमि से तभी प्यार हो सकता है जब जन्म-भूमि भी हमारा जीवन सुखी बनाए ——

2. कहानी बहुत पुरानी है, परन्तु अब भी ताजा याद है। मेरे ही जीवन की एक मार्मिक घटना है———

3. आप को मेरी दाड़ी कितनी भी पसंद हो, उस पर आप अपना हाथ न फेरिए। टैगोर की दाढ़ी के साथ तुलना न कीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. भूखे भजन न होत गोपाला।

5. महीने की पहली तारीख सचमुच मुसीबत है। अभी तक वेतन घर ले आए नहीं कि इधर श्रीमती जी की फरमाइशें आरम्भ होती हैं और उधर दुकानदारों की उगराही।

6. विश्राम के क्षणों में मुझे अपने भावी जीवन के अनेक सपने देखने को मिलते हैं।

7. मास्टर प्रेमनाथ मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। यदि उनके व्यवहार से मैं तंग न आता तो सैक्शन न बदवा लेतला— —

8. मैं इस समय परीक्षा भवन में हूं। इसके वातावरण का चित्रण करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं - — —

9 3000 वर्षों के उपरांत श्री राम चन्द्र जी स्वर्ग से उतर कर अपनी अयोध्या नगरी में आए, लेकिन अपनी भारत भूमि को विलक्षण ही पाया।

10. मैंने अब तक कितने ही व्यक्तियों को धोखा दिया। प्रत्येक घटना अनोखी है— —

11 मैं भगवान् हूं। सारा संसार मैंने ही बनाया, सारी सृष्टि मेरी है— —

12. मैं पैसे का पुजारी हूं। पैसे से ही संसार में जीना सम्भव है। पैसा हो जेब में, फिर देखिए, संसार के सभी मज़े सामने हैं— —

13. मुझे वोट दीजिए, फिर देखिए मैं आपके लिए क्या कुछ नहीं करूंगा। मज़दूरों को दुगुना वेतन दिला दूंगा। महिलाओं की आज़ादी के लिए लड़ूंगा— — —

14. याद रखो, संसार में कोई वस्तु सारवान नहीं। भगवान् के सिवा सब कुछ तुच्छ है केवल राम-नाम सत्य है। इस झूठे जग की माया छोड़ो और हरि नाम जपो— —

15. अब देश में क्रांति मचेगी, उथल-पुथल होगी, पूंजीपतियों का विनाश होगा, धन और धरती वंट के रहेगी। समाज के ठेकेदारों का पतन होगा— —

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. आरम्भिक, मिडिल तथा हाई कक्षाओं के लिए रचना के विभिन्न प्रकारों तथा विषयों का उल्लेख कीजिए? [§ 159, 160, 161]

2. प्रारम्भिक कक्षाओं को हिन्दी रचना सिखाने के लिए आप कौन सी विधियां अपनाएंगे? मौखिक कार्य को लिखित रचना के साथ आप कैसे समवेत करेंगे? [§ 164]

3 बोलचाल और लिखित रचना में परस्पर क्या सम्वन्ध है? हिन्दी रचना को रुचिकर उपयोगी बनाने के लिए आप कौन-से उपाय काम में लाएंगे? [§164]

4. रचना का संशोधन आप कैसे करेंगे? नवम् कक्षा को रचना के निम्न पाठ पढ़ाने के लिए पाठ संकेत बनाएं—महात्मा गांधी, काश्मीर, सिनेमा। [§ 168]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

5. रचना सिखाने की विभिन्न प्रणालियों की व्याख्या कीजिए । उनमें से कौन सी प्रणाली किस अवस्था के लिए उपयोगी है । [§ 162]

6. हिन्दी अध्यापक के नाते आप छात्रों में कल्पना और रचनात्मक शक्ति के विकास के लिए कौन से उपाय काम में लाएंगे । सोदाहरण समझाएं । [§ 170]

7. उन अभ्यासों के कतिपय नमूने दीजिए जिनके द्वारा आप विभिन्न कक्षाओं में रचना का अभ्यास कराएंगे ।

8. लिखाई और रचना की मन्दता के क्या कारण हैं ? मन्दता को दूर करने के लिए आप कौन से उपाय काम में लाएंगे ? [§ 161]

सहायक पुस्तकें

1. Gurrey — The Teaching of Written English (Longman Green and Co.)
2. Lamborn — 1. Teaching of English as Foreign Language.
   2. Expression in Speech and Writing
3. Tideman — Teaching the Language Arts.
4. UNESCO — Teaching of Modern Languages.
5. Lewis. M. M. — Language in School, Ch 3 'The everyday use of the written word.'
6. लक्ष्मी के ओड़ — भाषा शिक्षण की विधियां
7. यज्ञदत्त शर्मा — प्रबन्ध सागर (आतमा राम एण्ड सन्ज दिल्ली)
8. ,, — आदर्श पत्र लेखन (आत्मा राम एण्ड सन्ज़ दिल्ली)
9. प्रबन्ध पराग — जियालाल हण्डू

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

29

मातृ-भाषा का हिन्दी शिक्षण में स्थान

(जहां हिन्दी मातृ भाषा नहीं)

§ 17 . मातृ-भाषा की आवश्यकता –

(क) **दो अतिरेक मत**—मातृ-भाषा के प्रयोग के सम्बन्ध में दो अतिरेक मत हैं।

(1) **पहला मत** मातृ-भाषा का हिन्दी शिक्षण में कोई स्थान नहीं। हिन्दी निर्बाध विधि (Direct Method) से पढ़ाई जाए। इसके निम्न कारण हैं—

(i) विद्यार्थी हिन्दी में ही सोचें, हिन्दी में ही बोलें, हिन्दी में अपने विचारों की अभिव्यक्त करें. और तत्क्षण हिन्दी के वातावरण में घूमें, तभी वे हिन्दी का ज्ञान शीघ्र प्राप्त कर सकते हैं। इससे उनके उच्चारण की, बोलने की और समझने की आदतें निर्मित हो जाएंगी।

(ii) मातृ-भाषा को हिन्दी शिक्षण में समाविष्ट करने से दोनों भाषाओं के सम्बन्ध में बोलने, लिखने-पढ़ने आदि की विभिन्न आदतों का भद्दा सम्मिश्रण होता है। दोनों भाषाओं की शिक्षा पृथक् होनी चाहिए । हिन्दी की घंटी में मातृ-भाषा का नाम भी नहीं लेना चाहिए।

(iii) दूसरी भाषा का मातृ-भाषा में अनुवाद करने से समस्त सौंदर्य नष्ट हो जाता है। इसलिए अनुवाद करने की परम्परा भूल है। स्टीवनसन के शब्दों में 'अनुवाद' कसीदाकारी की उल्टी तरफ है।[1]

(2) **दूसरा मत** हिन्दी की समस्त शिक्षा मातृ-भाषा द्वारा दी जानी चाहिए।

(i) एक भाषा से जो पहले सीखी हुई हो दूसरी भाषा सीखनी सुविधा-जनक होती है। तुलना की विधि से दूसरी भाषा की विशेषताएं शीघ्र गतार्थ हो जाती हैं। लिप्यक्षरों की तुलना, शब्दों की तुलना, वाक्य रचना की तुलना, उच्चारण की तुलना आदि पूर्व ज्ञान और अपरज्ञान का सम्बन्ध जोड़ने में सहायक है।

(ii) नई भाषा अनुवाद विधि से सिखाई जानी चाहिए। नए शब्दों का मातृ-भाषा में अनुवाद गद्य तथा पद्य का अनुवाद भाषा सीखने का सरल-तम माध्यम है।

---

1. A translation is the wrong side of a piece of tapestry—R. L. Stevenson.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) निर्णयात्मक मत—

(i) प्रारम्भिक कक्षाओं में हिन्दी सिखाने के लिए मातृ-भाषा अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है। तुलना विधि का पूरा लाभ उठाना चाहिए।

(ii) अनुवाद विधि भी सहायक है, परन्तु कई स्थानों पर अध्यापक अनुवाद पर अधिक बल देता है। प्रत्येक शब्द का अनुवाद, प्रत्येक वाक्य का अनुवाद, प्रत्येक कविता का अनुवाद आवश्यक है।

अनुवाद का प्रयोग विवेक के साथ करना चाहिए।

(iii) निर्बाध विधि भी सहायक है, परन्तु मातृ-भाषा को हिन्दी के पाठ में निषिद्ध ठहराना निरर्थक है। अध्यापक विद्यार्थियों में हिन्दी में सोचने की आदत डाले, परन्तु जहां आवश्यकता पड़े वहां समझाने के लिए मातृ-भाषा का भी प्रयोग कराए।

(iv) मातृ-भाषा का प्रयोग हिन्दी के प्रत्येक अंग की शिक्षा में आवश्यक है। मातृ-भाषा केवल साधन है। जैसे अन्य साधनों को अपनाया जाता है वहां मातृ-भाषा को भी साधन के रूप में अपनाने में कोई आपत्ति नहीं है।

§ 172. हिन्दी की शिक्षा से मातृ-भाषा का भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रयोग

1 **बोल-चाल में मातृ-भाषा का योग** - हिन्दी में बोलने से पहले मातृ-भाषा में शुद्ध और स्पष्ट रीति से अपने विचारों को व्यक्त करने की आदत और योग्यता बढ़ानी चाहिए।

(i) हिन्दी सीखने से पहले छात्र अपनी मातृ-भाषा में बोलना सीख जाता है। जब तक वह तीन बातों को सीख पाता है जो बाल-चाल में आवश्यक है—(क) विचारों का संकलन (ख) विचारों की उचित व्यवस्था, जिसे व्यक्त करते समय दूसरों को भली प्रकार समझाया जा सके। (ग) स्पष्ट और शुद्ध रीति से व्यक्त करना। नौ या दस वर्ष की अवस्था में जब छात्र हिन्दी बोलना सीखता है. तो उसकी बोल-चाल की प्रारम्भिक आदतें बन गई हैं। उसे केवल नई भाषा के अनुसार बोल-चाल की आदतों का प्रयोग करना है।

(ii) जिस छात्र में इन आदतों की कमी हो, और जो अपनी मातृ-भाषा में अन्य छात्रों के स्तर पर नहीं बोल सकता, वह हिन्दी बोल-चाल में भी पीछे रहेगा। ऐसी अवस्था में हिन्दी के अध्यापक को छात्र की मातृ-भाषा का सहारा लेना पड़ेगा। या तो वह मातृ-भाषा के अध्यापक द्वारा छात्र की उस कमी को पूरा करवाएगा, नहीं तो स्वयं उसे मातृ-भाषा में बोलने और तत्पश्चात् हिन्दी में बोलने के लिए प्रोत्साहन देगा।

(iii) प्रारम्भ में जब छात्र हिन्दी में बोलने का प्रयास करे, तो वह पहले अपने विचारों को मातृ-भाषा में सोचे और फिर उसी का अनुवाद हिन्दी में करे। धीरे-धीरे मातृ-भाषा को छोड़ कर हिन्दी में निर्बाध रूप में बोल सकेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) मौखिक रचना के लिए जो भी विषय दिए जाएं, उनका अभ्यास पहले मातृ-भाषा में हो जाना चाहिए। छात्र उस विषय पर पहले मातृ-भाषा में बोलें और फिर हिन्दी में। मातृ-भाषा में उस विषय का अभ्यास अगले काम के लिए प्रवेश द्वार का काम करेगा।

(2) उच्चारण में मातृ-भाषा का प्रयोग

(i) मातृ-भाषा भारतीय परिवार की भाषा हो या द्राविड़ परिवार की भाषा हो, उसके उच्चारण में हिन्दी के उच्चारण में अवश्य ही कुछ समता है और कुछ विषमता है। जहां पर समता है तुलना विधि से हिन्दी के उच्चारण की शिक्षा सुगम बन जाती है। विषमता के स्थल पर भी मातृ-भाषा और हिन्दी के उच्चारण में परस्पर भेद समझाने की आवश्यकता है। मातृ-भाषा से भिन्न अन्य भाषा की प्रत्येक ध्वनि का शुद्ध उच्चारण कोई सरल कार्य नही है। इसके लिए अनुकरण, बोध और निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता रहती है। अक्षर-व्यक्ति (Articulation) और स्वराघात की विशेषताएं भी तुलना विधि से सीखी जा सकती हैं।

i). उच्चारण की शिक्षा में अध्यापक को हिन्दी ध्वनियों और हिन्दी उच्चारण के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक समझाना पड़ेगा। छोटी कक्षाओं को समझाने के लिए मातृ-भाषा के माध्यम द्वारा उच्चारण की उलझनें समझाई जा सकती हैं।

(ii) शुद्ध हिन्दी के उच्चारण के लिए मातृ-भाषा की कई ध्वनियों का उच्चारण तत्क्षण भूलना पड़ता है। मातृ-भाषा की ध्वनियों के प्रभाव के कारण हिन्दी के उच्चारण में दोष आ जाते हैं।

(3) वाचन की शिक्षा में मातृ-भाषा का योग—

(i) हिन्दी वाचन सिखाने से पहले छात्र की वाचन मुद्रा (Posture) तथा वाचन शैली का पूरा अभ्यास मातृ-भाषा पाठ्य-पुस्तक पढ़ने से हो जाता है। वाचन मुद्रा के अन्तर्गत दृष्टि विराम (Eye-span) का विस्तार, नेत्रों की उचित मुद्रा, मुख की उचित मुद्रा तथा जिह्वा की उचित मुद्रा सम्मिलित हैं। वाचन शैली में शब्द उच्चारण अक्षर व्यक्ति, दल (Emphasis), विराम (Pause), सस्वरता (Intonation), प्रवाह गति प्रभावोत्पादकता आदि सम्मिलित हैं। निश्चय ही ये सभी बातें मातृ-भाषा के पाठ में सीखी जाती हैं। नौ दस वर्ष की अवस्था में जब छात्र हिन्दी पढ़ने लगता है, वह भाषा के वाचन में अभ्यास है। यह अभ्यास हिन्दी वाचन में सहायक है।

(ii) मातृ-भाषा के वाचन के द्वारा पढ़ते-पढ़ते विचार ग्रहण करने की शक्ति तथा एकाग्रता (Concentration) बढ़ जाती है। जो हिन्दी वाचन में काम आती है।

(iii) मातृ-भाषा के मौन पाठ में अभ्यास आवश्यक है। इससे मन में पढ़ने की आदत पड़ जाती है और हिन्दी के मौन पाठ में सहायता मिलती है।

(iv) हिन्दी वाचन में नए तथा कठिन शब्दों को समझने के लिए बहुधा मातृ-भाषा का सहारा लेना पड़ता है। प्रत्येक कठिन शब्द का पर्यायवाची नहीं दिया जा सकता। कितने ही हिन्दी शब्दों का मातृ-भाषा में अर्थ बताने से काम चल जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(v) कठिन स्थलों की व्याख्या करने के लिए भी बहुधा मातृ-भाषा का प्रयोग करना पड़ता है।

(4) लिपि की शिक्षा में मातृ-भाषा का स्थान—

(i) हिन्दी सिखाने से पहले मातृ-भाषा में लिपि की शिक्षा देने से छात्रों के हाथ लिखने में अभ्यस्त हो जाते हैं और उन्हें मातृ-भाषा के सभी लिप्यक्षरों का ज्ञान हो जाता है। हाथों और उंगलियों का लिखने में अभ्यस्त होना हिन्दी लिपि सीखने के लिए प्रथम सोपान है।

(ii) मातृ-भाषा के लिप्यक्षरों से तुलना विधि द्वारा हिन्दी के लिप्यक्षर सिखाए जा सकते हैं।

(5) हिन्दी रचना की शिक्षा में मातृ-भाषा का स्थान—

(i) किसी भी विषय पर रचना लिखने से पहले विचारों का संकलन और क्रम-बद्ध विश्लेषण मातृ-भाषा में सम्पन्न हो सकता है और तत्पश्चात् उन्हीं विचारों को हिन्दी में व्यक्त किया जा सकता है।

(ii) छात्र जिस विषय पर हिन्दी रचना लिखेगा, उसी विषय पर पहले मातृ-भाषा में रचना होनी चाहिए। यदि मातृ-भाषा में उस विषय पर रचना लिखी जाए तो समझना चाहिए हिन्दी रचना के लिए आधा काम समाप्त हो गया।

(iii) रचना लिखने की विधि, और विषय के सम्बन्ध में जटिल बात मातृ-भाषा में सिखाई जा सकती हैं।

(6) हिन्दी व्याकरण के शिक्षण में मातृ-भाषा का स्थान—

(i) भारतीय भाषाओं की प्रकृति में बहुत कुछ साम्य है अतः मातृ-भाषा के व्याकरण का ज्ञान हिन्दी व्याकरण सीखने में सहायक है।

(ii) मातृ-भाषा व्याकरण के पारिभाषिक शब्दों को सिखाने के बाद हिन्दी व्याकरण के तत्सम्बन्धी पारिभाषिक शब्द सिखाना अत्यन्त सरल कार्य बन जाता है। एक बार दोनों भाषाओं में उन शब्दों की सूची बताना पर्याप्त है। साधारणतया ऐसी शब्दावली एक ही है, भिन्न नहीं, क्योंकि हिन्दी व्याकरण के ऐसे शब्द संस्कृत से ही लिए गए हैं, और उत्तरी भारत की भाषाओं के व्याकरण के पारिभाषिक शब्द भी अधिकतः [illegible] से लिए गए हैं। परन्तु जहां शब्द भिन्न हैं, वहां हिन्दी रूपान्तर करना [illegible]

(iii) [illegible] [illegible]ाकरण की जटिलताओं को मातृ-भाषा में सिखाने में कोई आपत्ति नहीं। इससे कार्य सुगम हो जाता है।

(iv) मातृ-भाषा के शब्दों की बनावट, वाक्यों की बनावट, शब्द क्रम आदि हिन्दी की भी इन बातों के समझने में काम आती है। दोनों भाषाओं में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के सम्बन्ध में विशेषताएं हैं, उनको एक साथ समझाने और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परस्पर भेद बनाने में सुविधा आ जाती ।

(7) अनुवाद की शिक्षा में मातृ-भाषा का योग—

(i) हिन्दी के कठिन शब्दों, कठिन स्थलों का मातृ-भाषा में अनुवाद करना चाहिए । उससे दोनों भाषाओं के शब्दों तथा वाक्यों की बनावट, शब्दों तथा वाक्यों का प्रयोग आदि समझ में आता है ।

(ii) हिन्दी का मातृ-भाषा में अनुवाद करने से छात्र को हिन्दी भाषा का पूरा ध्यान देना पड़ेगा और अध्यापक भी इस बात की जांच कर सकता है कि छात्र कहां तक समझ सका है ।

(iii) मातृ-भाषा से हिन्दी अनुवाद करना बहुत ही आवश्यक है । इससे जहां दोनों भाषाओं के मुहावरों तथा वाक्य रचना की विचित्रताओं का ज्ञान हो जाता है, वहां शुद्ध तथा मुहावरेदार हिन्दी लिखने में तथा अपने विचारों को स्पष्ट रूप से हिन्दी मे प्रकट करने का अभ्यास हो जाता है । अनुवाद रचना का एक विशेष अंग है ।

(8) द्रुत पाठ में मातृ-भाषा का प्रयोग—

(i) यदि छात्र को मातृ-भाषा की सहायक पुस्तकों (Supplementary readers) के द्रुत पाठ (Rapid reading) में अभ्यास हो जाए, तो आगे चल कर हिन्दी में सहायक पुस्तकों के द्रुतपाठ में उन्हें आसानी होगी । भाषा-शिक्षा एक कला है । एक भाषा में जो प्रवीण बन जाता है, उसे पढ़ने तथा अध्ययन करने का कौशल प्राप्त होता है जिसकी सहायता से वह दूसरी भाषा का अध्ययन भी सुगमता से कर सकता है । जिन छात्रों में मात-भाषा की पुस्तकों को पढ़ने की आदत नहीं, वे हिन्दी में भी पीछे रहेंगे ।

सारांश यह है कि हिन्दी बोल-चाल, वाचन, लिपि, रचना, व्याकरण, द्रुत-पाठ आदि में मातृ-भाषा एक सहायक साधन है ।

अभ्यासात्मक प्रश्न

(1) अनुवाद किसे कहते हैं ? मातृ-भाषा से हिन्दी में और हिन्दी से मातृ-भाषा में अनुवाद सिखाने की विधि बताइए । ऐसे अनुवाद का हिन्दी में क्या स्थान है ? [§ 172]

(2) जहां हिन्दी मातृ-भाषा नहीं वहां हिन्दी सिखाने के लिए मातृ-भाषा का प्रयोग करना चाहिए या नहीं ? यदि करना चाहिए तो किस प्रकार ? उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए ? [§ 171]

(3) हिन्दी शिक्षण में मातृ-भाषा व्यक्तिक्रम (Interference) पैदा कर सकती है या सहायता प्रदान कर सकती है ? पक्ष और विपक्ष की युक्तियां देकर निर्णयात्मक मत प्रस्तुत कीजिए ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहायक पुस्तकें

1. Gurry, P. — Teaching of English as a Foreign Language, ch. 24.
2. Anne Cochran — Modern Methods of Teaching English as a Foreign Language. (Educational Services, Washington.)
3. Maxim New marks — 20th, Century Modern Langnage teaching.
4. Balwant Singh Anand : — Aims and Methods of Teaching English in India.
5. Thimann I. C. — Teaching Languages. (George G. Harrap and Co. Ltd. London.)

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

30

नवीन शिक्षण-पद्धतियां और भाषा-शिक्षण

§ 173. भूमिका—

बीसवीं शताब्दी शिक्षा में क्रांति का युग है। शिक्षा सम्बन्धी पुरानी धारणाओं का आमूल परिवर्तन हो रहा है। वैज्ञानिक, प्रयोगात्मक और मनोवैज्ञानिक खोजों के अनुसार पाठ्य-क्रम शिक्षण-विधियों और स्कूल-प्रबन्ध में भारी उथल-पुथल हुई है। शिक्षा के नवीन प्रयोग हो चुके हैं जिनके आधार पर विशेष पद्धतियों जैसे मौंटेसोरी-पद्धति, बालोद्यान-पद्धति, प्रोजैक्ट पद्धति, डाल्टन-पद्धति, बेसिक पद्धति, आदि का सूत्रपात हुआ है। इन पद्धतियों में परस्पर पर्याप्त अन्तर है, परन्तु कई शैक्षणिक सिद्धान्त इन सब में समान हैं जिनके आधार पर उनको नवीन 'शिक्षण-पद्धतियां' कहा जाता है। ये सिद्धान्त यद्यपि सर्वाङ्गीण शिक्षा से सम्बन्ध रखते हैं, भाषा शिक्षा पर भी उनका प्रत्येक प्रभाव है। नीचे इन नवीन सिद्धान्तों का उल्लेख किया जाता है। उसके उपरान्त उपरयुक्त नवीन शिक्षण-पद्धतियों की संक्षिप्त रेखा दी जाती है। भाषा-शिक्षण में उन पद्धतियों से क्या सहायता ली जा सकता है, इसी तथ्य पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। ये सभी पद्धतियां अपने आप पूर्ण नहीं, अतः इनमें से किसी एक के ही आधार पर भाषा की शिक्षा नहीं दी जा सकती है, परन्तु प्रत्येक विशेष-पद्धति में कुछ विशेष गुण हैं, जो विद्यार्थी जीवन की विशेष अवस्था में अत्यन्त लाभकारी हैं, मौंटे-सोरी पद्धति 3 वर्ष से 6 वर्ष तक के बच्चों के लिए उपयुक्त है। बालोद्यान पद्धति भी 5 वर्ष से 10 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा में सहायक है। डाल्टन और प्रोजैक्ट पद्धति माध्यमिक (मिडिल तथा हाई) कक्षाओं के लिए उपयुक्त है। अतः इन अवस्थाओं में हम इन पद्धतियों से शैक्षणिक सिद्धान्त लेकर भाषा की शिक्षा में अपना सकते हैं। इन पद्धतियों में जो बातें हमारे वातावरण, हमारी परिस्थितियों और हमारी आवश्यकताओं के साथ मेल नहीं खातीं उनका हम अवश्य त्याग कर सकते हैं। संक्षेप में हमारी नीति यह होनी चाहिए कि प्रत्येक नवीन 'उपयोगी' सिद्धान्त या प्रयोग को अपनाएं, प्रत्येक नवीन पद्धति से मधुसंचय कर लें, और रूढ़िवादी न बनें। किसी एक पद्धति का अंधानुकरण करना हानिकारिक है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

§ 174. शिक्षा में नवीन सिद्धान्त—

(1) **नवीन शिक्षा बाल केन्द्रित** (Paedo-centred) है। प्रत्येक बालक की आवश्यकताओं, रुचियों, योग्यताओं और मानसिक अवस्था का अध्ययन करना चाहिए। अत: भाषा की शिक्षा में विद्यार्थियों की वैयक्तिक भिन्नता पर ध्यान देना चाहिए।

(2) नवीन शिक्षा में क्रियाशील (Activity) पर ज़ोर दिया जाता है। क्रिया द्वारा सीखना एक आवश्यक मनोवैज्ञानिक सत्य है। अत: भाषा-शिक्षण में पुस्तकें रटाने के बदले बालसभा, वाद-विवाद, प्रतियोगिताएं, आदि क्रियात्मक साधनों का अवलम्बन करना चाहिए।

(3) नवीन शिक्षा का वास्तविक जीवन के साथ सम्बन्ध जोड़ा जाता है। अत: भाषा शिक्षा में उन सभी कार्यों का बहिष्कार होना चाहिए, जिनका वास्तविक जीवन में कोई महत्त्व नहीं। वास्तविकता के सिद्धान्त के अनुसार ही भाषा शिक्षण के उद्देश्य निश्चित होने चाहिएं। अत: सैद्धान्तिक व्याकरण, पुरानी परिपाटी के निबन्ध अनुपयोगी विषयों से सम्बन्धित गद्यपाठ आदि कुछ महत्त्व नहीं रखते। इसके बदले वास्तविक घटनाओं और क्रियाओं के सम्बन्ध में मौखिक कार्य, उद्योग कार्य, उद्योग कार्य का वर्णन, वास्तविक-आवश्यकता के लिए पत्र-व्यवहार, प्रयोगात्मक व्याकरण, भाषा का व्यावहारिक ज्ञान आदि का ही अब महत्त्व है।

(4) नवीन शिक्षा में सामाजिक कार्यों पर बल दिया है। शिक्षा का अर्थ है जीवन के सामाजिक कार्यों में भाग। विद्यालय एक लघु और सरल समाज है। छात्र, इसी लघु समाज में काम करते-करते वृहद् समाज के जीवन में भाग लेने के योग्य बन जाते हैं। अत: विभिन्न सामाजिक कार्यों और पाठांतर क्रियाओं में भाग लेना अनिवार्य होना चाहिए। इन्हीं क्रियाओं द्वारा छात्र इतिहास, गणित, भाषा आदि सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। कवि-सम्मेलन, बाल-सभा, उत्सव मनान आदि ऐसे सामाजिक कार्य हैं, जिनके द्वारा बोल-चाल में अभ्यास हो सकता है; भाषण पटुता आ सकती है, शब्दावली की वृद्धि हो सकती है, कविता में रुचि पैदा हो सकती है, शुद्ध लिखने पढ़ने की आदत बन सकती है और भाषा के व्यावहारिक प्रयोग में प्रवीणता आ सकती है।

(5) पाठ्यक्रम की उपादेयता और स्वाभाविकता, नवीन शिक्षा का एक और सिद्धान्त है। पाठ्यक्रम में समाज के स्वरूप का प्रतिबिम्ब होना चाहिए। समाज के सभी कार्य-कलापों का पाठ्यक्रम में प्रतिनिधित्व होना चाहिए, इसलिए बनावटी, पुस्तकीय (Bookish) अव्यवहार और अप्रयोगात्मक सामग्री की कोई उपादेयता नहीं। भाषा शिक्षण का नवीन पाठ्यक्रम उसी सिद्धान्त के अनुसार होगा।

(6) नवीन शिक्षा का प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक आधार पर आश्रित है। नवीन मनोवैज्ञानिक खोजों के अनुसार, बालक की बुद्धि, मानसिक विकास, अभिरुचि, अवधान (Attention), परम्परा और परिस्थिति, मनोभाव, अणुकरण, खेल, सकल्प, आदत, स्मृति, कल्पना, तर्क आदि के सम्बन्ध में जिन तथ्यों में आविर्भाव हुआ है, उनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुसार शिक्षा दी जानी चाहिए। भाषा की शिक्षा में भी बालकों की मानसिक अवस्था का ध्यान रखना चाहिए, रुचि बढ़ाने के विविध साधन अपनाने चाहिएं। उच्चारण का और वाचन में अनुकरण का प्रयोग करना चाहिए, कविता और रचना में कल्पना शक्ति को जागृत करना चाहिए, शुद्ध बोलने और लिखने की आदतों का निर्माण करना चाहिए आदि।

§ 175. मौंटेसोरी पद्धति (Montessori Method)—

इस पद्धति का आविष्कार इटली निवासी श्रीमती मेरिया मौंटेसोरी ने किया है। यह पद्धति पूर्व प्रारम्भिक (Pre-primary) कक्षा के छात्रों, अर्थात् तीन वर्ष से छः वर्ष तक के छात्रों के लिए उपयुक्त है।

इस पद्धति की निम्न विशेषताएं हैं :—

(1) इस पद्धति में शिक्षा का उद्देश्य यह है कि बालक के विशेष व्यक्तित्व का विकास हो। इस बात के लिए उसके सम्मुख एक स्वतन्त्र वातावरण रखा जाए, जिसमें वह खेल द्वारा स्वयं शिक्षा प्राप्त करे। आरम्भ में उनकी ज्ञानेन्द्रियों का तथा स्नायु-शक्ति का पूर्ण विकास होना चाहिए।

(2) उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए सारे स्कूल प्रबन्ध बिल्कुल नए ढंग से होने चाहिएं। स्कूल का वातावरण घर का वातावरण होना चाहिए, जिसको बच्चों का घर (Children House) कहा जाए। यह मेज़, कुर्सी, चित्र आदि से खूब सजा हुआ होना चाहिए।

(3) ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा के लिए शिक्षोपकरण (Didactic apparatus) होता है जिसमें विभिन्न आकारों के ठोस वस्तुओं के अनेक सैट सम्मिलित हैं। उन वस्तुओं के रूप-रंग, ध्वनि, स्पर्श, समता, विषमता, नाप, तोल आदि का ज्ञान हो जाता है।

भाषा शिक्षा की प्रक्रिया—

मौंटेसोरी पद्धति में भाषा शिक्षण की प्रक्रिया निम्न है :—

(i) सर्वप्रथम कर्णेन्द्रियों का अभ्यास कराया जाता है जिससे स्वरों की पूरी पहचान हो।

(ii) शब्दों का ज्ञान करने में वस्तुओं की सहायता दी जाती है जैसे पहले वस्तु का नाम लेना, फिर वस्तु का अथवा उसके चित्र को देखकर पहचानना और फिर तत्सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर देना।

(iii) लिखना सिखाने से पहले लकड़ी के टुकड़ों के गिर्द कागज पर रंगीन पैंसिल से रेखाएं खिचवाई जाती हैं जिससे उंगलियों का अभ्यास हो और अन्त में अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाने का अभ्यास कराया जाता है।

(iv) वाचन की शिक्षा, लिखने की शिक्षा पूरी होने के बाद दी जाती है। वाक्य से आरम्भ के अक्षर ज्ञान कराया जाता है।

मौंटेसोरी पद्धति की उपादेयता— वास्तव में मौंटेसोरी पद्धति उस अवस्था के लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उवयुक्त है जब विद्यार्थी को भाषा शिक्षण के लिए तैयार किया जाता है। ज्ञानेन्द्रियों पर ध्यान देना, तीन से छः वर्ष की अवस्था के लिए आवश्यक है। यदि ज्ञानेन्द्रियां पूरी विकसित न हों तो उच्चारण, वाचन और लेखन में दोष आ जाते हैं। मौंटेसोरी के लिखने में हाथ की हरकतों और अवधान की ओर ध्यान दिया है, जो महत्त्वपूर्ण है। लिखने के बाद पढ़ना लिखना मौंटेसोरी पद्धति की एक त्रुटिपूर्ण प्रक्रिया है। फिर भी वाचन से लिए फलेश कार्ड और भौतिक कार्य का अनुसरण करना ग्राह्य है। यह प्रणाली निश्चय है व्ययसाध्य है, परतु इसके विशेष तत्त्वों सिद्धान्तों को हम भली-भांति ग्रहण कर सकते हैं। मौंटेसोरी यन्त्रों के अनुरूप सस्ते लड़की के यन्त्र बनाए जा सकते हैं।

§ 176. बालोद्यान पद्धति (Kindergarton Method)

इस पद्धति के आविष्कारक प्रसिद्ध जर्मन शिक्षा शास्त्री फ्रोबेल थे। इस पद्धति की निम्न विशेषताएं हैं :—

(1) फ़्रोबेल के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है, बालक की आत्माभिव्यक्ति का विकास करना। स्कूल इस के लिए अच्छा वातावरण उपस्थित करता है अथवा स्कूल उसको खेल-कूद और विकास के लिए उद्यान है। शिक्षक इस उद्यान का माली है। उपयुक्त सिंचाई मिट्टी और देख भाल से शिशु रूपी पौधा विकसित होता है। बालक को अपनी शक्तियों के अनुसार विकास का अवसर मिलना चाहिए। इसीलिए स्कूल बालकों (Kinder) का उद्यान (garton) है।

(2) बालकों को स्वतन्त्र वातावरण प्रदान करना चाहिए और उसमें समस्त शिक्षा खेल द्वारा दी जानी चाहिए। खेल में सामूहिक भावना के द्वारा सामाजिक चेतना पैदा होती है।

(3) उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए फ्रोबेल ने विभिन्न आकार की 20 वस्तुएं बनाई, जिसको वह उपहार (Gifts) कहते थे। ये सभी उपहार लम्ब गोल और घन के रूपान्तर हैं। बच्चे इन्हीं से खेलते हैं। इनसे उसकी कर्मेन्द्रियां पुष्ट होती हैं, साथ ही संगीत का कार्यक्रम भी चलता है। उपहारों के अतिक्ति कागज़, कैंची, मिट्टी, लकड़ी आदि साधन काम में लाए जाते हैं।

भाषा शिक्षण—

(i) अक्षर ज्ञान के लिए एक कविता कण्ठस्थ कराई जाती है जिसकी प्रत्येक पंक्ति का आरम्भ वर्णमाला के अक्षर से होता है, छड़ियों और डोरे की सहायता से अक्षरों का आकार याद होता है।

(ii) वाचन के लिए चित्र आरम्भ किया जाता है। चित्र के सम्बन्ध में कहानी सुनाई जाती है। कहानी में आए हुए नए शब्द सिखाए जाते हैं। अध्यापक के आदर्श पाठ के बाद छात्रों का पाठ होता है।

(iii) लिखने के लिए पहले छोटी लकड़ियों के सहारे सरल रेखाओं और फंदों (loops) का अभ्यास कराया जाता है। फिर कलम घुमाने का अभ्यास कराया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(vi) बालोद्यान पद्धति में कहानियों को विशेष महत्त्व दिया जाता है। ऐतिहासिक, काल्पनिक, प्रकृति सम्बन्धी और शिशु जीवन सम्बन्धी अनेक प्रकार की कहानियां सुनाई जाती हैं।

(v) प्रार्थना के गीत, उपहारों के गीत, संगीत के अतिरिक्त तुकांत पद्य में लिखी हुई कहानियां पढ़ी जाती हैं। समवेत गान (Chorus song) गान से आनन्द प्राप्ति और सस्वर वाचन का अभ्यास हो जाता है। अभिनय (Artion songs) से अभिनय सीखा जाता है। प्रयाण गीतों (Marching songs) से वीरता का संचार होता है।

बालोद्यान पद्धति की उपादेयता – बालोद्यान पद्धति की उपर्युक्त सभी क्रियाएं भाषा शिक्षण में सहायक हैं। प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए 'खेल द्वारा शिक्षा' सर्वमान्य सिद्धान्त है। फ्रोबेल के उपहारों पर विशेष बल न दे कर इस पद्धति की विशेषताएं ग्राह्य हैं। कहानियां और समवेत गान मनोरंजनात्मक ही नहीं शिक्षा प्रद भी हैं। अक्षर ज्ञान और लिखना सिखाने की विधि उपयोगी है। उपहारों का आडम्बर हम बेशक त्याग सकते हैं।

§ 177. डाल्टन पद्धति (Dalton Method)

इस पद्धति का आविष्कार अमेरिका के डाल्टन नगर की शिक्षिका कुमारी हेलेन पार्खर्स्ट ने किया है। इस पद्धति की निम्न विशेषताएं हैं :

(1) सामूहिक शिक्षा के बदले वैयक्तिक शिक्षा दी जाती है। इसलिए साधारण कक्षा के बदले एक प्रयोगशाला होती है जिस में छात्र वैयक्तिक कार्य करते हैं, और शिक्षक वैयक्तिक कार्य करते हैं, तथा शिक्षक वैयक्तिक ध्यान देकर प्रत्येक छात्र को मंत्रणा देता है।

(2) इस विधि में समय सारिणी (Time-table) का बन्धन नहीं होता, घण्टियां नहीं बजतीं, और स्वतन्त्रता के साथ अपना निर्दिष्ट कार्य (Assignment) समाप्त करते हैं। ठेकेदारों की तरह छात्र निर्दिष्ट कार्य को निश्चित अवधि के भीतर समाप्त करने का ठेका लेते हैं, और अध्यापक के निर्देश के अनुसार स्वाध्याय करते हैं।

(3) अध्यापक छात्र की व्यक्तिगत विभिन्नता का ध्यान रखता है। प्रत्येक छात्र को अपनी योग्यता और गति के साथ प्रगति करने में सहायता देता है। उसको एक अधिन्यास या निर्दिष्ट कार्य देता है, ठेके के पत्र पर हस्ताक्षर करवाता है। उस कार्य के सम्बन्ध में प्रयोगशाला में रखी हुई सहायक सामग्री (पुस्तक, कोष, पुस्तक पत्रिका चित्र, मानचित्र आदि) का हवाला देता है, और अन्त में उनके काम की जांच करता है। मौखिक पाठ और सामूहिक कार्य के लिए वह सम्मेलन (Conference) बुलाता है। वह प्रत्येक छात्र की उपलब्धि (Achievement) के सम्बन्ध में ग्राफों के प्रयोग द्वारा रेकार्ड (Record) रखता है।

(4) प्रत्येक विषय के लिए अलग-अलग प्रयोगशाला और अध्यापक होते हैं। ये अध्यापक प्रत्येक मास के निर्दिष्ट पाठ या अधिन्यास तैयार करने से पहले एक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बैठक में परस्पर मंत्रणा करते हैं, पाठों की योजनाएं तथा इकाइयां बना लेते हैं, और विभिन्न विषयों के पाठों में समन्वय (Co-ordination) रखते हैं ।

भाषा शिक्षण

(i) अध्यापक एक मास के लिए कार्य निश्चित करता है। उनको सप्ताहों में बांटता है। एक सप्ताह के काम का ठेका छात्र को देता है। उसे एक अधिन्यास देता है जिसमें निम्न बातों का उल्लेख होता है :

(1) पाठ का शीर्षक, उदाहरण: महात्मा बुद्ध, श्रेणी आठवीं ।

(2) समस्या (Phoblem) जैसे महात्मा बुद्ध की जीवनी पढ़ना और तत्पश्चात् अपने शब्दों में लिखना ।

(3) लिखित कार्य, बुद्ध की जीवनी पर एक प्रस्ताव लिखना।

(4) याद करने का काम। अमुक पुस्तक में से बुद्ध की जीवनी का अध्ययन करना, मुख्य घटनाओं की एक रूप-रेखा या ढांचा तैयार करना, कठिन शब्दों का अर्थ कोष में देखना और याद रखना, बुद्ध के सम्बन्ध में अमुक पुस्तक में दी गई कविता कण्ठस्थ करना आदि ।

(5) मौखिक कार्य, अमुक तिथि को अध्यापक के साथ मौखिक बातचीत, प्रश्नों का तैयार करना और उनका हल बताना ।

(6) सहायक पुस्तकें, अमुक सहायक पुस्तकों और पत्रिकाओं में बुद्ध का वृत्तांत दिया हुआ है। अमुक चित्र-बुद्ध के सम्बन्ध में है। चित्रमय भारत का अमुक पृष्ठ देखना जहां बुद्ध के जीवन सम्बन्धी चित्र दिए गए हैं। बुद्ध जयन्ती पर अमुक लेख पढ़ना। बुद्ध के सम्बन्ध में नेहरू जी का भाषण अमुक पत्रिका में पढ़ना, "भारतवर्ष" संक्षिप्त इतिहास में पृष्ठ 50 - 60 पढ़ना। निम्न शब्दों का तात्पर्य समझना अहिंसा, अष्ट-मार्ग, त्रिपाठक, भिक्षु, संघ विहार, स्तूप, हीनयान, महायान, निर्माण ।

(7) **प्रगति**—लेखा अर्थात् प्रत्येक छात्र अपने किए हुए काम का ग्राफ तैयार करता है, जिससे वह अध्यापक को दिखाता रहता है यदि वह ऐसा काम करता है जो दो विषयों के साथ सम्बन्ध रखता है तो उसे दूसरे विभाग में छूट मिलती है। भाषा में महात्मा बुद्ध तैयार करने से इतिहास में इसी विषय को पुनः पढ़ने से छूट मिलेगी।

(8) भाषा शिक्षण में कोई एक पाठ्य-पुस्तक नियत नहीं होती। प्रत्येक कमरे अर्थात् प्रयोगशाला में अच्छी से अच्छी पुस्तकें पर्याप्त संख्या में होती हैं। अब छात्र स्वतन्त्रता के साथ उनका स्वाध्याय करते हैं और शिक्षक से सहायता लेते हैं। गृह कार्य बिल्कुल नहीं दिया जाता ।

डाल्टन पद्धति की उपादेयता—डाल्टन पद्धति अपने आप परिपूर्ण नहीं। वैयक्तिक काम तो काफी होता है. परन्तु सामूहिक काम न्यूनतम। मौखिक कार्य के लिए कोई अवसर नहीं। दस ग्यारह वर्ष से कम अवस्था के छात्र, जिन्हें स्वतन्त्र रूप में पढ़ने का अभ्यास नहीं होता, इस पद्धति से लाभ नहीं उठा सकते। जहां मौंटेसोरी और बालोद्यान पद्धति छोटे अथवा प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए उपयोगी है, वहां डाल्टन पद्धति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिडिल तथा हाई कक्षाओं के लिए सीमित रूप में उपयोगी है, डाल्टन पद्धति वर्तमान शिक्षण की पद्धति की सहायक बन सकती है। अध्यापक इस पद्धति के निम्न गुण अपना सकते हैं :—

(i) व्याकरण और रचना कार्य के लिए अधिन्यास (Assignment) देना, उनके सम्बन्ध में आवश्यक सहायक सामग्री का संकेत देना।

(ii) प्रत्येक छात्र की रचना-कार्य पर वैयक्तिक ध्यान देना, उसकी त्रुटियों और अशुद्धियों का संशोधन करना।

(iii) भाषा-शिक्षण के कमरे की प्रत्येक प्रकार की सहायता सामग्री को सजाना जिससे वह प्रयोग-शाला ही बन जाए। बाल साहित्य पर्याप्त होना चाहिए।

vi) पाठ्य-पुस्तक पर ध्यान केन्द्रित न किया जाए। छात्रों को अधिक से अधिक सहायक पुस्तकें Supplementary readers) देनी चाहिए। उनमें स्वाध्याय की आदत डालनी चाहिए। उन्हें स्वतन्त्र रूप में पढ़ने और काम करने का अभ्यास हो जाना चाहिए। कोष और प्रकरण की पुस्तकों का प्रयोग लिखना चाहिए। पत्र-पत्रिकाओं को रुचि के साथ पढ़ने और उनके लिए अपने लेख भेजने की ओर प्रोत्साहित करना चाहिए।

(v) प्रत्येक छात्र का हिन्दी की उपलब्धि का विकास लेखा तैयार करना चाहिए।

(vi) सप्ताह की समय-सारिणी में कुछ घंटे वैयक्तिक कार्य के लिए नियत करने चाहिएं। छात्र उन में शिक्षक द्वारा नियत कार्य करेंगे, स्वाध्याय करेंगे, रचना-कार्य करेंगे और अन्त में अपना काम शिक्षक को दिखाएगे।

§ 178 प्रोजेक्ट पद्धति (Project Method)—

इस पद्धति के मूल आविष्कारक अमेरिका के प्रसिद्ध दार्शनिक तथा शिक्षा शास्त्री जान डिवी हैं। इसको वर्तमान रूप देने वाले कोलम्बिया विश्वविद्यालय के अध्यापक किलपैट्रिक। इस पद्धति की निम्न योग्यताएं हैं :—

1) इस पद्धति का दार्शनिक आधार डिवी का प्रयोजनवाद (Pragmatism) है। जिसके अनुसार उपयोगी शिक्षा ही उपादेय है। डिवी के अनुसार शिक्षा एक सामाजिक क्रिया है। सामाजिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा दी जानी चाहिए। अतः स्कूल को भी लघु समाज बनाना चाहिए, जिसका वातावरण बाहरी समाज जैसा जटिल न हो, वरन् नियोजन, सरल और सतुलित हो। इसी सरल समाज में छात्र काम करेगा। यह वातावरण उस निर्देशन, नियन्त्रण और पथप्रदर्शन करेगा। शिक्षक इस वातावरण का प्रबन्ध करेगा और शिक्षा-नाटक का सूत्रधार बन कर एक रंग-मंच की रचना करेगा, जिस में छात्र खेल-खेल में ही परोक्ष रूप में (Incidentally) सांस्कृतिक, समाज और व्यावसायिक ज्ञान प्राप्त करेंगे।

(2) यह पद्धति मनोविज्ञान के निम्न सिद्धान्तों पर आधारित है— काम द्वारा सीखना', 'वैयक्तिक अनुभव द्वारा सीखना', रुचि के अनुसार सीखना, 'खेल और कार्य का संयोग', 'बुद्धि और हाथ का संयोग', 'जिज्ञासा द्वारा सीखना'।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) प्रोजैक्ट पद्धति[1] समस्या-मूल पद्धति है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में समस्याएं उत्पन्न होती हैं जिनके समाधान के लिए छात्र तत्पर रहते हैं। छात्र समस्या का हल ढूंढने के लिए पूछ-ताछ करते हैं, समस्या की समीक्षा करते हैं। वे समाधान की प्रक्रिया में ही शिक्षा प्राप्त करते हैं। सभी विषय इसी समस्या या योजना के अन्तर्गत आ जाते हैं। नीचे एक उदाहरण दिया जाता है।

(i) **समस्या**—अनाथाश्रम के बालकों को कुछ पार्सल भेजते हैं।

(ii) **कार्य**—उद्योग के घण्टे में पार्सल को कागज में लपेटना, भाषा के घण्टे में पते लिखना, गणित के घण्टे में वज़न करना, टिकट का खर्च मालूम करना, भूगोल के घण्टे में अनाथालय के नगर का परिचय प्राप्त करना आदि।

भाषा शिक्षण – प्रत्येक समस्या के सामाधान में जहां गणित, विज्ञान, उद्योग आदि विभिन्न विषयों का योग आवश्यक है वहां भाषा की शिक्षा भी इसी समाधान के हेतु प्रासंगिक रूप में प्राप्त होती है। समस्यओं के निम्न उदाहरण उपस्थित किए जाते हैं :—

उदाहरण (1) **समस्या**—सहकारी बैंक (Co operative Bank) की स्थापना।

भाषा की शिक्षा छात्रों को सहकारी बैंक खोजने के लिए पत्र-व्यवहार की आवश्यकता पड़ेगी। भाषा का अध्यापक छात्रों को शुद्ध, सरल और व्यावहारिक भाषा में पत्र व्यवहार करना सिखाएगा। इसके अतिरिक्त छात्र 'सहकारिता', सहकारी-बैंक और 'समाजवाद' पर निबन्ध लिखेंगे। वे इन्हीं निबन्धों के द्वारा भाषा का सही प्रयोग सीखेंगे। सहकारी बैंक के विषय में एक वाद-विवाद भी होगा।

उदाहरण (2) **समस्या** – वार्षिक पारितोषिक-वितरण उत्सव मनाना।

भाषा की शिक्षण का कार्य—(i) नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए निमन्त्रण पत्र लिखना।

(ii) स्कूल का वार्षिक प्रगति का विवरण लिखना, जो इस अवसर पर पढ़ा जाएगा।

(iii) उत्सव के लिए दो विनोदात्मक कार्य जैसे एकांकी नाटक, कविता-पाठ तैयार करना।

(iv) उत्सव की समाप्ति पर संक्षिप्त विवरण लिखना और प्रैस को भेजना।

उदाहरण (3)—**स्कूल में** 'अन्नपूर्ण' अथवा 'जलपानगृह' चलाना।

समस्या भाषा का कार्य—(i) पाक-विद्या पर पुस्तकें पढ़ना, (ii) खाद्य वस्तुओं की सूचियां, बनाना, (iii) सामग्री एकत्रित करने के लिए पत्र व्यवहार करना आदि।

---

1. 'प्रोजैक्टर एक समस्या मूलक कार्य है जो अपनी स्वाभाविक परिस्थितियों में पूर्णता को प्राप्त होता है'—स्टीवनसन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदाहरण (4) समस्या– शिमला की यात्रा।

भाषा की शिक्षा का कार्य—(i) शिमला के सम्बन्ध में साहित्य पढ़ना, जिससे यात्रा की तैयारी में सुविधा हो। (ii) शिमला में देखे गए पेड़, पक्षी पशु और प्राकृतिक पदार्थों के नामों की जानकारी करना। (iii) रेलवे और मोटरों के अधिकारियों के साथ पत्र-व्यवहार करना और अपनी सीटें बुक कराना। (iv) यात्रा के उपरान्त एक निबन्ध लिखना जिसमें यात्रा का पूर्ण विवरण हो।

अन्य उदाहरण - श्रमदान कार्य, दुकान चलाना, स्कूल के सभी छात्रों के लिए साबुन बनाना, नाटक खेलना, डाक वितरण।

प्रोजैक्ट पद्धति की उपादेयता भाषा के सभी अंग प्रोजैक्ट द्वारा सिखाए नहीं जा सकते। प्रोजैक्ट का प्रयोग विशेष अवसरों पर किया जा सकता है चूंकि यह समस्या मूलक है और इसका काम वास्तविक परिस्थितियों में पूरा किया जाता है, अतः यह अत्यन्त रोचक और सफल है। इसलिए डाल्टन पद्धति के समान इस पद्धति का प्रयोग भी सहायक के रूप में करना चाहिए। पूरक के रूप में नहीं। स्कूल के वार्षिक काम में अनेक प्रोजैक्ट आरम्भ करने चाहिएं। बहुत-सा रचना का काम इन प्रोजैक्टों के कार्य सम्पन्न में प्रासांगिक रूप में समाप्त होगा। प्रोजैक्ट के द्वारा ही समस्त भाषा-शिक्षा सम्पन्न हो सके, ऐसा प्रयत्न नहीं करना चाहिए। परन्तु जितना भी रचना कार्य पत्र व्यवहार, मौखिक कार्य और शब्दावली की वृद्धि प्रोजैक्ट द्वारा हो सके, उतना लाभदायक है। निश्चय ही प्रोजैक्ट द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान छात्र के मन में स्थायी है।

§ 179 खेल पद्धति (Play-Way Method)

खेल या प्ले वे का सर्वप्रथम प्रयोग काल्डवेलकुक ने अंग्रेज़ी पढ़ाने की विधि में किया था परन्तु खेल का सिद्धान्त मनोविज्ञान सिद्ध है। इसका प्रयोग फ्रोबेल, मौंटेसोरी, हेलन पार्खस्ट, डिवी आदि शिक्षा शास्त्रियों ने किया। आधुनिक सभी शिक्षा-प्रणालियों में खेल अनिवार्य रूप से स्थान पाता है। खेल और काम में विशेष अन्तर है। काम में वह आनन्द रुचि और उत्साह नहीं होता जो खेल में होता है। इसलिए भाषा-शिक्षण में विभिन्न खेलों का समावेश करना चाहिए। खेल के मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक महत्त्व की पुनरावृत्ति यहां अपेक्षित नहीं। भाषा-शिक्षण में जिन खेलों को अपनाया जा सकता है उनकी संक्षिप्त सूची नीचे दी जाती है :—

(क) मौंटेसोरी, फ्रोबेल और डाल्टन पद्धतियों में समाविष्ट सभी खेल।

(ख) पाठान्तर क्रियाएं—बालचर संस्था (Scouting, भाग लेना, नाटक खेलना प्रतियोगिताओं में भाग लेना, कृत्रिम संसद (Mock Parliament) कृत्रिम अभियोग और कृत्रिम भेंट (Mock Interview) जैसे कार्य रचना।

(ग) साहित्यिक क्रियाएं—जैसे स्कूल पत्रिका निकालना, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण, कवि सम्मेलन आदि।

(घ) कक्षा के भीतर खेल जैसे,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(i) अक्षर ज्ञान के लिए फ्लैश कार्ड का प्रयोग।

(ii) अक्षरों के शुद्ध वाचन के लिए अंगूठी का खेल (Ring game)

(iii) अक्षर रचना (Word building) के खेल जैसे कि शब्द के अन्तिम अक्षर से दूसरा शब्द बताना जो अक्षर में होता हो अक्षरों को जोड़ते रहना ताकि शब्द समाप्त हो जाए, अव्यवस्थित अक्षरों (Jumbled letters) से सार्थक शब्द बनाना।

(iv) किसी अनुच्छेद में संज्ञाओं और सर्वनामों के वचन और लिंग बदलना, क्रियाओं के काल बदलना या विपरीतार्थक शब्द प्रयुक्त करना।

(v) रिक्त स्थानों की पूर्ति करना।

(vi) उपयुक्त शब्दों का युगली करण (Matching)

(vii) निरर्थक शब्दों का परिहार।

(viii) कक्षा को दो भागों में बांटना और उनमें किसी भी काम में प्रतियोगिता (Competition) पैदा करना। कक्षा का जो भाग जीते वह ताली बजाएगा।

(ix) चित्रों का स्पष्टीकरण करना।

खेलों की संख्या अनन्त है। अध्यापक स्वयं नई-नई खेलें उपस्थित कर सकता है। व्याकरण जैसा शुष्क विषय खेलों द्वारा सरल और रोचक बनाया जा सकता है।

समवाय पद्धति (Correlation Method)—इसका विवरण अगले अध्याय में दिया जाएगा।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. भाषा-शिक्षा के लिए मौंटिसोरी और फ्रोबेल की पद्धतियों का कैसे प्रयोग किया जा सकता है? [§ 175, 176]

2. अधिन्यास (assignment) से क्या लाभ हैं। इसकी सहायता से स्कूल की ऊंची कक्षाओं में भाषा कैसे पढ़ाई जाए। इसके सफलतापूर्वक काम करने के लिए आप क्या संकेत देंगे? [§ 177]

3. भारत के स्कूलों में डाल्टन प्रणाली किस रूप में अपनाई जा सकता है? हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य की शिक्षा में इसका क्या प्रयोग हो सकता है? [§ 177]

4. प्रोजेक्ट पद्धति की क्या विशेषताएं हैं? आठवीं कक्षा के लिए तीन चार प्रोजक्टों का विवरण दीजिए, जो भाषा तथा अन्य विषय पढ़ने में सहायक हों। भाषा के सम्बन्ध में इनके द्वारा कौन सी बातें सीखी जा सकती हैं?

5. व्याकरण सिखाने में ऐसी खेलों का उल्लेख कीजिए जिनसे यह विशेष रोचक और सरल बन जाए। [§ 179]

6. अक्षर-ज्ञान, अक्षर-विन्यास और रचना कार्य के लिए विभिन्न खेलों का उल्लेख कीजिए? [§ 179]

7. शिक्षा में क्रीड़ा विधि से क्या तात्पर्य है। हिन्दी की शिक्षा में इस विधि को कैसे अपनाएंगे? किसी एक कक्षा के लिए उदाहरण दीजिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहायक पुस्तकें

1.	Maria Montessori	The Montessori Method
2.	Helen Parkhurst	Education of Dalton Plan
3.	Stevenson	The Project Method
4.	W. H. Kilpatrick	Foundations of Method)
5.	John Dewey	Ideals, Aims and Method in Education.
6.	T. Raymont	Modern Education, its Aims in Methods.
7.	Jiwanaykam	Principles of Education (Hindi and English Edition)
8.	W. M. Ryburn	Play Way Suggestion.
9.	H. Cald well	Play-Way
10.	N. L. Bossing	Progressing Methods of Teaching of Secondary School.
11.	Yoaham and Simpson	Modern Methods and Techniques of Teaching.
12.	आत्मानन्द मिश्र	शिक्षण कला (द्वितीय भाग)
13.	रामखेलावन चौधरी	शिक्षण विधि की रूपरेखा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

31
समवाय प्रणाली

§ 180. समवाय की परिभाषा—

पिछले अध्याय में पश्चिमी देशों में किए गए कई प्रयोगों का वर्णन हुआ। उन प्रयोगों और नवीन पद्धतियों से हम बहुत कुछ अपना सकते हैं जो भाषा शिक्षण में उपयोगी हों। भारत में भी बुनियादी तालीम या बेसिक शिक्षा के नाम से एक नया शैक्षणिक प्रयोग हुआ। बेसिक पद्धति के आविष्कारक महात्मा गांधी हैं। देश की आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक अवस्था को दृष्टि में रख कर उन्होंने एक ऐसी पद्धति का निर्माण किया जो शिक्षण शास्त्र (Pedalogy) दृष्टि से और देश की वर्तमान आवश्यकताओं की दृष्टि से उपयुक्त है। इस पद्धति का आधार भारतीय दर्शन है। इसका शैक्षणिक प्रक्रिया में मनोविज्ञान के सभी सिद्धान्तों और नवीन शिक्षण विधियों के गुणों का समावेश है। यहां पर बुनियादी शिक्षण पद्धति के आधारभूत नियमों, सिद्धान्तों और गुणों के वर्णन के लिए गुंजाइश नहीं, परन्तु प्रणाली, जो उस पद्धति की विशेषता है, भाषा शिक्षण के लिए एक नई प्रणाली होने के कारण विस्तृत वर्णन व्याख्या की अपेक्षा रखती है।

बुनियादी शिक्षण पद्धति में कार्य और ज्ञान का अटूट सम्बन्ध माना गया है। अतः सारा ज्ञान किसी क्रिया के द्वारा दिया जाता है। ज्ञान प्रदान करने की इस विधि को समवाय (Correlation) कहते हैं, ज्ञान प्रदान करने के लिए जिन क्रियाओं को साधन के रूप में लिया जाता है, उनका सम्बन्ध तीन चीज़ों के साथ है—(1) उद्योग (Craft) (2) भौतिक वातावरण (Physical environment) और (3) सामाजिक वातावरण (Social environment) ये तीनों समवाय के केन्द्र हैं। सभी पाठ्य विषय किसी न किसी केन्द्र के समवेत (Correlated) किए जाते हैं।

समवाय प्रणाली में ज्ञान और क्रम के विभिन्न सम्बन्ध पर ज़ोर दिया जाता है। ज्ञान और कर्म को पृथक् नहीं किया जा सकता, जैसे कपड़े और धागे को, या पात्र और मिट्टी को (जिससे वह निर्मित हो) [1]। ज्ञान और कर्म परस्पर अन्योन्याश्रित हैं।

1. न्याय शास्त्र में इस प्रकार के सम्बन्ध को समवाय कहते हैं। यह तन्तुपट न्याय और मृत्तिका-घट न्याय कर्म और ज्ञान के सम्बन्ध में भी लागू हो सकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कर्म द्वारा ज्ञान (Learning by doing) की प्रक्रिया में कर्म और ज्ञान के विभिन्न सम्बन्ध का नाम समवाय है।

§ 181. समवाय के उदाहरण—

समवाय प्रणाली के स्पष्टीकरण के नीचे तीन उदाहरण दिए जाते हैं—

उदाहरण (1) समवाय का केन्द्र मूल उद्योग (कृषि)। क्रिया की इकाई—आलू बोना, कक्षा 4।

उद्देश्य—आलू बोना सिखाना तथा तत्सम्बन्धी विभिन्न विषयों का ज्ञान देना।

उद्योग कार्य—खेत में मेड़ें बनवाना, आलुओं को मेड़ों पर लगवाना, पानी देने वाली नालियां बनाना और साथ ही प्रत्येक मेड़ पर लगाने वाले आलुओं की संख्या निकालना, बोए जाने वाले बीज़ों का वजन और मूल्य निकालना।

समवाय विषय—

हिन्दी (मातृ-भाषा) सम्भाषण (खेती के सम्बन्ध में) पाठ्य-पुस्तक में आलू की खेती के सम्बन्ध में एक गद्य-पाठ पढ़ना, सम्बन्धित नवीन शब्दावली का ज्ञान, रचना कार्य (आलू बोने की प्रक्रिया का अपने शब्दों में वर्णन लिखना, किसी बीज के व्यापारी को आलुओं के बीज मंगवाने के लिए पत्र लिखवाना)।

गणित – खेत का क्षेत्रफल निकालना।

भूगोल पहाड़ी आलू, मैदानी और उनकी किस्में जानना। हमारे राज्य में कहां-कहां बोए जाते हैं और क्यों ?

विज्ञान—खराब अच्छे बीज की 'पहचान', बीज बोने का समय और ऋतु, बीज सुरक्षित रखने की विधि, आलुओं में पोषक पदार्थ।

उदाहरण (2) समवाय के केन्द्र—भौतिक वातावरण।

क्रिया की इकाई—नदी की सैर।

कक्षा 3

उद्देश्य—नदी की सैर कराते हुए, प्रकृति का निरीक्षण करना, तत्सम्बन्धी ज्ञान प्रदान करना।

प्रकृति निरीक्षण—सभी छात्रों का नदी-तट पर जाना, नदी के पास जाने वाले पशु-पक्षी, पेड़-पौधे और नदी के निर्मल-जल का निरीक्षण करना।

हिन्दी (मातृ-भाषा)- वातावरण स्थित वस्तुओं के नाम बताना और इस प्रकार शब्दावली की वृद्धि कराना, नदी के आस-पास जो कुछ देखा उसके सम्बन्ध में वार्तालाप, 'सरिता' शीर्षक कविता का पाठ, 'नदी की सैर' के सम्बन्ध में दस वाक्य

---

1. समवाय के बदले आजकल कितने ही शब्द प्रयुक्त होते हैं, जैसे—समन्वय सानुबन्ध, संयोग, अन्तर्योग, सहसम्बन्ध, परन्तु इन सबके भिन्न-भिन्न अर्थ हैं। इन शब्दों का प्रयोग इसी अध्याय में समवाय (Correlation) से भिन्न अर्थों में किया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी कापी पर लिखना।

भूगोल नदी, स्रोत, तालाब, झील और समुद्र के परस्पर अन्तर की व्याख्या।

विज्ञान नदी के आस-पास पेड़-पौधों, जानवरों, जलचरों आदि का ज्ञान करवाना।

गणित नदी की गति कितने मील प्रति घण्टा है, इसके सम्बन्ध में फुट, गज, मील, मिनट, घण्टे के प्रश्न करवाना।

उदाहरण (3) समवाय का केन्द्र—सामाजिक वातावरण।

समवाय की इकाई—समाचार-पत्र वाचन।

कक्षा 6.

उद्देश्य—बालकों को समाचार-पत्र पढ़ने का अभ्यास कराना और वर्तमान दैनिक घटनाओं को समझने की ओर प्रेरित करना।

क्रिया—कक्षा में समाचार-पत्र लाया जाना। किसी प्रमुख विद्यार्थी द्वारा समाचार-पत्र की मोटी खबरों का पढ़ना। समाचार है—केरल राज्य की साम्यवादी मन्त्रिमण्डल की पदच्युति और राष्ट्रपति का शासन स्थापित होना, काश्मीर के सीमा स्थित कुछ इलाके में चीन की सेनाएं।

समाचारों के सम्बन्ध में प्रश्न किए जाएंगे और दोनों घटनाओं में विभिन्न पहलूओं की समीक्षा होगी।

भाषा—समाचारों के सम्बन्ध में प्रश्न-उत्तर, भारत में साम्यवाद पर वाद-विवाद, काश्मीर समस्या पर वाद-विवाद, समाचारों में आए हुए नए शब्दों की व्याख्या, कई विद्यार्थियों का समाचार-पत्र का वाचन करना, समाचारों को संक्षेप में लिखना।

इतिहास—चीन और भारत के पस्पर राजनैतिक और सांस्कृति सम्बन्ध की चर्चा करना।

नागरिक शास्त्र—भारत में राजनैतिक दलों (कांग्रेस, कम्युनिस्ट पार्टी, प्रजा सोशलिस्ट पाटी, भारतीय जनता पार्टी आदि) की समीक्षा।

भूगोल भारत के मान-चित्र में केरल राज्य की स्थिति, उसकी जनसंख्या, उपज, उद्योग, व्यापार, जलवायु, वर्षा आदि का ज्ञान करना, काश्मीर की भौगोलिक महत्ता।

§ 182. समवाय शैक्षणिक प्रक्रिया की पराकाष्ठा है—

समवाय प्रणाली परम्परागत प्रणाली से नितान्त भिन्न है। विभिन्न विषयों के शिक्षण में, विशेषकर भाषा-शिक्षण में इस प्रणाली को क्यों अपनाया जाए और पुरानी प्रणाली का त्याग किए जाएं—यह विषय गम्भीर और विचारणीय है। स्थानाभाव के कारण यहां पर इस प्रणाली के क्रमिक विकास का केवल सक्षिप्त विवरण दिया जाता है।

(1) हर्बार्ट का संप्रत्यक्ष (Appreception of Thought) का सिद्धान्त—हर्बार्ट ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, कि जब तक नए पाठ को पूर्व ज्ञान के साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

न जोड़ा जाए, तब तक नया पाठ पूर्ण-रूप से हृदयंगम नहीं हो सकता, अतः विचारों की श्रृंखलाएं दृढ़ बनाने के लिए पाठ्य विषय को पूर्व-ज्ञान के साथ जोड़ना चाहिए। सर्वनामों के भेद पढ़ाने से पूर्व पहले सीखे हुए 'सर्वनाम पाठ' के सम्बन्ध में प्रश्न कराने चाहिएं।

(2) **हर्बार्ट का सहसम्बन्ध** (Correlation) **का सिद्धान्त**—पाठ्यक्रम में ज्ञान के असंख्य विषय हैं। सभी पृथक् और स्वतन्त्र हैं। एक विषय का अध्यापक केवल अपना विषय पढ़ाता है और दूसरे विषय की ओर ध्यान नहीं देता और न ही उसके साथ कोई सम्बन्ध जोड़ता है। इस प्रकार सभी विषयों का पृथक्करण (Compartmentalisation) हो चुका है, यद्यपि ज्ञान समग्र है। एक ही विषय के विभिन्न अंगों को भी अलग-अलग पढ़ाया जाता है। मातृ-भाषा का इतिहास के साथ कोई सम्बन्ध नहीं और मातृ-भाषा में भी व्याकरण का गद्य या रचना से कोई सम्बन्ध नहीं। इस दोष के निराकरण के लिए हर्बार्ट ने दो प्रकार का सहसम्बन्ध दर्शाया—

(क) एक विषय का अन्य विषयों के साथ जैसे हिन्दी का भूगोल के साथ, भूगोल का विज्ञान के साथ, इतिहास का भूगोल के साथ। समय सारिणी में पाठ्यक्रम के विभिन्न विषय-भाषा, गणित, इतिहास इत्यादि बाएं से दाहिने एक खाने के बाद दूसरे खाने में आते हैं। अतः पाठ्य-क्रम के विभिन्न विषयों के सह-सम्बन्ध को क्षैतिज सहसम्बन्ध (Horizontal Correlation) कह सकते हैं। यह सिद्धान्त अक्षुण्ण है। पीछे कहा गया है कि प्रत्येक विषय के अध्यापक को विद्यार्थियों की भाषा की ओर ध्यान देना चाहिए और साथ ही भाषा के अध्यापक को पाठ के भीतर आए हुए इतिहास, भूगोल आदि विषयों से सम्बन्धित प्रकरणों की व्याख्या करनी चाहिए।

(ख) एक ही विषय के विभिन्न अंगों का सहसम्बन्ध या **लम्बीय सहसम्बन्ध** (Vertical correlation) जैसे भाषा-शिक्षण में व्याकरण के साथ सम्बन्ध जोड़ना। भाषा-शिक्षण में इसका हर समय प्रयोग करना पड़ता है।

इस प्रकार सहसम्बन्ध, वर्तमान समवाय से भिन्न है, क्योंकि इसमें विषयों का कर्म के साथ नहीं, वरन् विषयों का परस्पर सम्बन्ध है। अतः इसको सहसम्बन्ध ही कहा जा सकता है समवाय नहीं।

भारत में इस प्रकार का सहसम्बन्ध प्राचीन काल से प्रयुक्त होता आ रहा है। विष्णु शर्मा ने पशु पक्षियों की कहानियों द्वारा राजपुत्रों को राजनीति की शिक्षा दी। भास्कराचार्य ने गणित के प्रश्नों को साहित्यिक कथाओं के साथ जोड़ा। किसी रूखे विषय को रोचक बनाने के लिए इस प्रकार का सहसम्बन्ध अत्यन्त उपयोगी है। इसी लिए व्याकरण की सहयोग प्रणाली में यही सहसम्बन्ध काम आता है।

(4) **हर्बार्ट के विषय जिल्लर का केन्द्रीकरण** (Concentration) **का सिद्धान्त**—विषयों का परस्पर सहसम्बन्ध में कुछ शिथिलता भी है। क्या उन सभी विषयों को एक सूत्र में बांधा जा सकता है। क्या किसी एक ही विषय को नहीं चुना जा सकता, जिसका अध्यापन अनेक घण्टों तक चलता रहे और जिसके द्वारा अन्य विषय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रम जोड़े जाएं ? सह सम्बन्ध का व्यवस्थित (Systamatic) बनाने के लिए जिल्लर ने एक ही विषय को केन्द्र में रखकर अन्य विषयों को पढ़ाने की चेष्टा की। यदि इतिहास को केन्द्र बनाया जाए, तो भाषा, भूगोल, सामाजिक शास्त्र, विज्ञान, गणित, चित्रकला आदि विषय उसी के द्वारा पढ़ाए जा सकते हैं। उसके लाभ ? अनेक विषयों का बोझ कम हो जाएगा। सभी विषयों का सम्बन्ध होगा। ज्ञान छोटे-छोटे विषयों में वंट नहीं जाएगा। पाठ रोचक होगा। निश्चय ही केन्द्रीकरण का सिद्धान्त सहसम्बन्ध की पारकाष्ठा है। परन्तु किस विषय को केन्द्र बनाया जाए ? उस पर विद्वानों ने विभिन्न मत प्रकट किए। जिल्लर ने इतिहास को केन्द्र बनाया। पार्कर ने विज्ञान को केन्द्र बनाया। डी गर्मो ने अर्थशास्त्र को केन्द्र बनाया।

(4) **फ्रोबेल की जीवन केन्द्रित (Life-centered) शिक्षा**—अब तक केन्द्रीयकरण के लिए जितने भी विषय चुने गए, वे सब ज्ञान के विषय थे, जो बालक के जीवन से बाहर थे। फ्रोबेल ने पहली बार शिक्षा केन्द्र के धुरे को पाठ्य-विषयों से हट कर बालक की ओर लगाया। शिक्षा जीवन केन्द्रित (Life-centered होनी चाहिए। किसका जीवन ? शिशु जीवन। उस जीवन में खेल का महत्त्व प्राप्त है, अत: फ्रोबेल के अनुसार सभी विषयों का केन्द्र बालक का खेल होना चाहिए। बालक खेल-खेल में ही भाषा सीखें। छोटी अवस्था के बालकों के लिए यह उपयुक्त है, परन्तु किशोरों के लिए खेल अपर्याप्त साधन है।

(5) **डिवी का सामंजस्यीकरण (Integration) का सिद्धान्त**—अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री जान डिवी ने फ्रोबेल के केन्द्रीकरण के सिद्धान्त में दो सुधार किए।

(क) एक सुधार यह था कि शिक्षा का केन्द्र बालक का सामाजिक जीवन बनाया जाए। स्कूल में ऐसी सामाजिक क्रियाएं आरम्भ की जाएं जो शिक्षाप्रद हों।

(ख) दूसरा सुधार यह था कि सामाजिक क्रियाओं को केन्द्र बना कर जितने भी विषय पढ़ाए जाएं, उनका पृथक् अस्तित्व न रहे, वरन् एक दूसरे में विलीन हों। अब तक के केन्द्रीकरण में विषयों का संयोजन (Coordination) ही होता था, (विलयन) (Fusion) नहीं। पाठ्यक्रम के एकीकरण (Unificiaton) के लिए सभी विषय एक दूसरे में विलीन हों।

सामूहिक जीवन की प्रक्रिया के विषयों का पृथक्करण नहीं, इसलिए ज्ञानोपार्जन भी जीवन क्रिया के समानान्तर हो। शिक्षण प्रक्रिया की इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए डिवी ने समस्यामूलक क्रियाओं को प्रश्रय दिया। ऐसी क्रियाओं में भाग लेने से सभी विषय आकस्मिक रूप में सीखे जा सकते हैं। ये सभी विषय अब पृथक् नहीं हैं। इनका सामंजस्यीकरण हो गया है। सामंजस्यीकरण, केन्द्रीकरण का परिष्कृत रूप है, क्योंकि इसके विभिन्न विषयों का केन्द्र के साथ ही सम्बन्ध नहीं, वरन् परस्पर सम्बन्ध भी है, इस प्रकार ज्ञान चक्र परिपूर्ण हो जाता है, जिसका केन्द्र बाल-क्रिया है और विभिन्न और अलग-अलग विषय हैं। एक ओर भाषा है, जिसका सम्बन्ध एक तरफ क्रिया के साथ है और दूसरी तरफ अन्य विषयों के साथ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डिवी की प्रोजैक्ट पद्धति में पाठ्य-विषयों का एकीकरण हुआ । पाठ्यक्रम ज्ञानात्मक होने के बदले क्रियात्मक (Activity Curriculum) या अनुभवात्मक (Experience Curriculum) बन गया ।

(६) गांधी जी का समवाय का सिद्धान्त :—गांधी जी ने अपने निजी अनुभव के आधार पर समस्त ज्ञान को बालक की क्रिया पर केन्द्रित करने का सिद्धान्त समुपस्थित किया । यहां पर विद्वानों को भ्रम हुआ कि गांधी जी ने डिवी से विचार चुराया है, क्योंकि डिवी के विचार और गांधी जी के विचार में साम्य था, परन्तु डिवी ने जहां पर समाप्त किया, वहां से गांधी ने आरम्भ। किया डिवी प्रोजैक्ट पद्धति में अनेक दोष हैं । स्कूल में सामाजिक क्रियाएं आरम्भ हों, परन्तु सामाजिक जीवन व्यक्ति के समग्र जीवन का एक अगमात्र है । डिवी के स्कूल में समस्यामूलक क्रियाएं होनी चाहिएं, परन्तु ऐसी क्रियाओं की संख्या कितनी अधिक हो सकती है ! ज्ञान का केन्द्र बनाने के लिए फ्रोबेल की क्रीड़ाएं भी अपूर्ण हैं, अपर्याप्त हैं और डिवी की सामाजिक क्रियाएं भी बुनियादी शिक्षा में ज्ञान का केन्द्र कर्म बना, अपने समग्र रूप में आंशिक रूप में नहीं । कर्म के तीन क्षेत्र नियत हुए उद्योग, भौतिक वातावरण और सामाजिक वातावरण । बालक के सभी काम उन तीन क्षेत्रों में बंट जाते हैं । औद्योगिक क्रियाओं में या सामाजिक क्रियाओं में खेल अन्तर्गत है । कर्म का क्षेप व्यापक बनाने से सभी त्रुटियां दूर हो गईं । कर्म बीच में और ज्ञान के सभी विषय इसके इर्द-गिर्द अपनी सीमाओं को भिन्न-भिन्न किए हैं । बुनियादी शिक्षा में कर्म और ज्ञान का अटूट सम्बन्ध है, अत: उसका सामंजस्यीकरण ही नहीं, उसका भी परिष्कृत रूप समवाय है । अत: समवाय शैक्षणिक प्रक्रिया है ।

§ 183. समवाय का व्यापक रूप

व्यापक रूप में समवाय सिद्धान्त में वे सभी मुख्य बातें आ जाती हैं, जो हर्बार्ट आदि शिक्षा शास्त्रियों ने प्रतिपादित की हैं जैसे :—

(1) संप्रत्यक्ष (Appreception of Thought) और
(2) क्षैतिज और लम्बीय सहसम्बन्ध (Horizontal and vertical correlation)
(3) केन्द्रीयकरण (Concentration)
(4) सामंजस्यीकरण (Integration)
5) उद्योग, भौतिक वातावरण और सामाजिक वातावरण के साथ समवाय ।

184. भाषा शिक्षण में समवाय का रूप

भाषा-शिक्षण में उपर्युक्त सभी सिद्धान्त पालनीय हैं । प्रत्येक पाठ पढ़ाते समय हमें नए विचारों को पूर्वज्ञान के साथ सम्बन्ध जोड़ना चाहिए । (लम्बीय सह सम्बन्ध साथ ही विभिन्न विषयों की शिक्षा से जोड़ना चाहिए (क्षैतिज सह-सम्बन्ध) । केन्द्री का सिद्धान्त दो प्रकार से लागू हो सकता है । प्रथम, उद्योग या वातावरण को बनाकर, गद्य, पद्य, व्याकरण रचना आदि पढ़ाना । द्वितीय, भाषा के किसी अंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गद्य को केन्द्र बना कर, उच्चारण, अक्षर विन्यास, शब्दावली, व्याकरण, सम्भाषण और रचना की शिक्षा देना । सामंजस्यीकरण समवाय में निहित हैं । मुख्य रूप से तीन बातें स्मरणीय हैं :—

(1) भाषा के विभिन्न अंगों में परस्पर सम्बन्ध और विशेषकर गद्य पाठ के साथ शेष अंगों का सम्बन्ध ।

(2) भाषा का अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध ।

(3) भाषा का उद्योग, भौतिक वातावरण या सामाजिक वातावरण के साथ समवाय । यहां कहने की आवश्यकता नहीं कि इस पुस्तक में भाषा शिक्षण के लिए जितनी भी क्रियाओं का उल्लेख पीछे हुआ, जैसे मैगज़ीन निकालना, डायरी लिखना, पत्र व्यवहार करना, बाल सभा बुलाना, कवि सम्मेलन रचना, यात्रा करना, समवेत गान करना । इत्यादि वे सभी समवाय के केन्द्र बनते हैं । इसके अतिरिक्त स्कूल जीवन में और असंख्य क्रियाएं हैं, जो भाषा शिक्षण के लिए नैसर्गिक अवसर प्रदान करती हैं, परम्परागत स्कूल (Traditional School) में उद्योग की शिक्षा नहीं दी जाती है, परन्तु उनमें भी उद्योग की अनुपस्थिति में सामाजिक या भौतिक वातावरण से भाषा का समवाय किया जा सकता है । बेसिक स्कूलों में सभी क्रियाए इस काम में जुटाई जा सकती हैं, परन्तु खेद है कि इस प्रणाली का भारत के सभी बेसिक स्कूलों में विधिवत् प्रयोग नहीं होता । वास्तव में इस प्रणाली के सफल प्रयोग के लिए कई आवश्यकताएं हैं, उनकी प्राप्ति उन स्कूलों में नहीं । वे आवश्यकताएं निम्न हैं—

§ 185 समवाय की आवश्यकताएं—

(2) **परिष्कृत पाठ्यक्रम**—पाठ्यक्रम में बहुत-सी बातें आवश्यक हैं जिनका हमारे जीवन के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, तो समवाय कैसे हो सके ? बताइए सैद्धान्तिक व्याकरण के जो नियम रटाए जाते हैं, उनका प्रयोग भावी जीवन में कहां होता है ? इसलिए यदि उसका समवाय न हो सके तो कोई अचम्भा नहीं । अत: पाठ्य क्रम के रेचन (Purging) होना चाहिए । इसके अतिरिक्त सभी पाठांतर क्रियाएं इसमें समाविष्ट होनी चाहिएं ।

(2) **समय सारिणी का न्यून बन्धन**—समय सारिणी के बन्धन में फंस कर बेचारा अध्यापक स्वतन्त्रता के साथ क्रियाओं के सम्बन्ध पाठ्य विषयों के साथ नहीं जोड़ सकता । अभी वार्तालाप आरम्भ ही नहीं हुआ कि घण्टी बज गई और दूसरा विषय आरम्भ हुआ, जिससे शिक्षा की समस्त स्वाभाविकता नष्ट हुई ।

(३) **विषय अध्यापक के बदले कक्षा अध्यापक** (Class-teacher) जिस अध्यापक के संरक्षण में छात्र कोई कार्य कर रहे हों, वही अध्यापक उस कार्य का अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध जोड़ सकता है, अन्यथा शिक्षा की एकरूपता कैसे आ सकती है । प्रत्येक अध्यापक अपनी घण्टी में अपना-अपना राग अलापता रहेगा । पहली पांच कक्षाओं के लिए एक-एक अध्यापक के अधीन एक-एक कक्षा होनी चाहिए । वह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्यापक वर्ष के समस्त कार्य की योजना बनाएगा, वार्षिक, त्रैमासिक मासिक, साप्ताहिक और दैनिक । योजना का इकाई में न केवल उद्योग या सामाजिक कार्य होगा वरन् उसके साथ सम्बन्धित सभी विषयों के पाठ । पांचवीं कक्षा से ऊपर छठी सातवीं और आठवीं में, एक कक्षा अधिक से अधिक तीन अध्यापकों के संरक्षण से काम करे, तो अध्यापक एक समन्वित योजना का पालन करें ।

(4) **उपसरण** (Equipment) समवाय प्रणाली क्रियाओं पर अवलंबित है, कक्षा में रटाने पर नहीं । उन क्रियाओं के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरण चाहिए । उद्योग-सामग्री के अतिरिक्त भाषा-शिक्षण में जिन उपकरणों की आवश्यकता है, उनका उल्लेख इस पुस्तक के द्वितीय खण्ड में हो चुका है । एक पाठ्य-पुस्तक के बदले एक पुस्तकालय चाहिए । बिहार के बेसिक स्कूलों में हिन्दी शिक्षण के लिए एक पाठ्य-पुस्तक के बदले अनेक छोटी-छोटी पुस्तकें काम में लाई जाती हैं । भाषा-शिक्षण का पाठ्य पुस्तक शिक्षण के साथ समीकरण (Identify) करना, नवीन शैक्षणिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल है ।

(5) **प्रशिक्षित अध्यापक**—अध्यापक समवाय प्रणाली में प्रशिक्षित होने चाहिए । उन्हें उसका पूरा ज्ञान होना चाहिए । इस प्रणाली के अनुसार वार्षिक कार्य की योजना बनाना, पाठ्यक्रम के विभिन्न पाठों को पढ़ाने के लिए उपयुक्त अवसर निकालना और क्रियात्मक रूप में इस प्रणाली का प्रयोग करना एक टेढ़ी खीर है । परिणाम यह निकलता है कि "धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का ।" अध्यापक समवाय प्रणाली का पूरा ज्ञान नहीं रखता ; जब वह पढ़ाने लगता है, तो आधा तीतर आधा बटेर बन कर, पढ़ाने में असफल हो जाता है । कहीं वह बनावटी समवाय के खेल दिखाता है । जैसे 'यह क्या है' 'यह सूत है ।' इसका रंग कैसा है ?' 'इसका रंग सफेद है ।' सफेद व्याकरण में क्या है ? 'सफेद' 'विशेषण है' इसलिए आज हम 'विशेषणों के पद पढ़ेंगे ।'

(6) **परीक्षा या जांच**—समवाय प्रणाली के लिए वार्षिक परीक्षा द्वारा जांच अनुपयुक्त है । इस बात की जांच होनी चाहिए दैनिक अर्थात् प्रतिदिन के कार्य में क्या भाग लिया और क्रमानुसार कितनी प्रगति का लेखा क्रमिक होना चाहिए । इसकी व्याख्या परीक्षा शीर्षक अध्याय में होगी ।

§ 186 समवाय के अवसर

समवाय प्रणाली के अनुसार किसी भी विषय के शिक्षण के लिए वर्ष भर की योजना बनाई जाती है । वर्ष में जितनी भी क्रियाएं होनी चाहिए, उनकी सूची बनाई जाती है । उसके उपरान्त वर्ष के कार्य को मासिक और फिर साप्ताहिक कार्यक्रम में बांटा जाता है । एक सप्ताह के लिए जितनी भी क्रियाएं हों उनको समवाय की इकाइयां (Units) कहते हैं । प्रत्येक इकाई के साथ अन्य विषयों का समवाय किया जाता है और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहले से ही निश्चित किया जाता है कि अमुक इकाई के द्वारा भाषा का, इतिहास का, भूगोल का, गणित का, दैनिक विज्ञान का अथवा अन्य विषय का कौन-सा पाठ पढ़ाया जाए। जो पाठ पढ़ाया जाए उसका सम्बन्ध इकाई के साथ स्वाभाविक होना चाहिए। इकाइयों का चुनाव स्कूल के वातावरण और विद्यार्थियों के मानसिक स्तर और रुचि के अनुसार किया जाना चाहिए। इस विधि से पाठ्यक्रम के विषयांगों (Topics) का तार्किक-क्रम नहीं रहता परन्तु मनोवैज्ञानिक क्रम तो रहता है-जो छात्रों के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। भले ही इतिहास की घटनाएं ऐतिहासिक काल क्रम से न पढ़ाई जाएं। उपयुक्त अवसर पर यदि ऐतिहासिक घटना का प्रसंग छेड़ा जाए, तो उसमें कोई दोष नहीं, प्रत्युत अवसरानुकूल पाठ रोचक और ग्राह्य बन जाता है। विद्यालय में छात्र का प्रत्येक कर्म ऐसे अवसर प्रदान करता है जिनसे भाषा सीखने में लाभ उठाया जा सकता है नीचे उन सभी क्रियाओं की सूची दी जाती है जो भाषा में विभिन्न अंगों की शिक्षा में सहायक हो सकती हैं। एक ही क्रिया विभिन्न स्तरों के छात्रों के लिए विभिन्न स्तरों की हो सकती है। आठ वर्ष के छात्रों का प्रकृति-निरीक्षण बारह वर्ष के छात्रों के प्रकृति-निरीक्षण से स्तर में भिन्न होगा।

क्रियाएं और अवसर तथा उनका समवाय

क्रिया —	समवाय विषय
क) औद्योगिक क्रिया— (1) कताई, बुनाई रंगाई, सिलाई, कढ़ाई। (2) कृषि, भूमि का चुनाव, भूमि का नाप, खुदाई, चमन बनाना, मेंड, बनाना, नालियां बनाना, बीज बोना, गोडी करना, खाद डालना, सिंचाई, कीड़े निकालना, सब्जी उगाना, पेड़ लगाना, फसल काटना, फसल साफ करना। (3) लकड़ी का काम। (4) गत्ते का काम। (5) तामीर का काम। जैसे ईंट बनाना, दीवार बनाना, पाखाना बनाना, झोंपड़ी बनाना।	(1) **बोलचाल**—औद्योगिक क्रिया के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर द्वारा सारा वृत्तान्त सुनवाना या वर्णन कराना। आज हमने खाद डाली। खाद कहाँ से लाए? खाद से क्या लाभ है? खाद कैसे बनती है? इस प्रकार मौखिक कार्य म बोल-चाल का अभ्यास हो सकता है। (2) **शब्दावली**—औद्योगिक कार्य के सम्बन्ध में नई शब्दावली का ज्ञान कराना। मौखिक कार्य में नई शब्दावली का प्रयोग। (3) **वाचन**—प्रारम्भिक कक्षा में उद्योग सम्बन्धी छोटे शब्दों (जैसे सूत, बीज, फूल, खेत, आटा, धागा आदि) को श्यामपट पर लिखना, विश्लेषण द्वारा अक्षर-ज्ञान कराना। अन्य कक्षाओं में औद्योगिक कार्य सम्बन्धी-पाठ पाठ्य-पुस्तक में से या सहायक पुस्तक में से पढ़ाना। औद्योगिक कार्य करते हुए गीत तत्सम्बन्धी कविता का सामूहिक वाचन। (4) **रचना**—प्रारम्भिक कक्षा में औद्योगिक कार्य सम्बन्धी शब्द लिखना। मौखिक रचना के उपरान्त वर्णन या वृत्तांत लिखना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) भौतिक वातावरण सम्बन्धी कार्य— (1) सफाई पर स्कूल ग्राम नगर की। (2) प्रकृति निरीक्षण पशु. पक्षी, नदी, पर्वत, वन, फसल. आकाश, रात के तारे, सूर्योदय, सूर्यास्त। (3) प्रकृति घटनाएं वर्षा, बादल, गर्मी, बर्फ आंधी, बाढ़ ऋतुए, ज्वार, ग्रहण, भूचाल (4) महत्त्वपूर्ण स्थानों की सैर। (i) ऐतिहासिक स्थान (ii) भौगोलिक स्थान (iii) प्राकृतिक दृश्य	(1) **बोलचाल**—प्रत्येक कार्य, घटना, स्थान आदि के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर द्वारा मौखिक सम्भाषण। सम्भाषण द्वारा बोलचाल में अभ्यास। प्रकृति-निरीक्षण के बाद सारा वृत्तान्त अपने शब्दों में सुनाना, शुद्ध बोल-चाल पर जोर देना। (2) **शब्दावली**—प्रकृति और भौतिक वातावरण के सम्बन्ध में नए शब्दों का ज्ञान कराना और उनका प्रयोग। (3) **वाचन**—भौतिक वातावरण सम्बन्धी गद्य पाठ या कविता-पाठ पढ़ाना। पाठ पाठ्य-पुस्तक में से लिया जाए, या किसी सहायक पुस्तक में से लिया जाए। (4) **रचना**—मौखिक कार्य के उपरान्त सारा वृत्तान्त लिखवाना। रचना का संशोधन। शब्द बोलने और पढ़ने से व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान हो सकता है। वैज्ञानिकों की जीवनियां पढ़ाई जा सकती हैं।

(ग) सामाजिक वातावरण सम्बन्धी कार्य— 1. अतिथि सत्कार, सह-भोज, भोजन परोसना। (1) मेले पर जाना (3) तीर्थ यात्रा (4) प्रथम चिकित्सा (5) त्यौहार और उत्सव मनाया जैसे दीपावली, क्रिसमस. होली, बसंत, ईद, राम नवमी, रक्षा-बन्धन, जन्माष्टमी, 15 अगस्त, 26 जनवरी आदि। (6) जन्म दिन और	(1) **बोलचाल** प्रत्येक कार्य के सम्बन्ध में सम्भाषण करना चाहिए। मेले पर जाने के बाद मेले का वर्णन। (2) **शब्दावली**-तत्सम्बन्धी नई शब्दावली का ज्ञान कराना। (3) **वाचन**—सामाजिक वातावरण सम्बन्धी गद्य-पाठ या कविता पढ़ाना। महापुरुषों की जीवनियां। (4) **रचना**—त्यौहार मनाने के बाद त्यौहार का वर्णन। जयन्ती मनाते समय भाषण देना और बाद में लेख लिखना। स्कूल सभा का विवरण लिखना। कवि सम्मेलन के लिए कविताएं लिखना। प्रतियोगिताओं के लिए भाषण तैयार करना। दैनिक कार्य की डायरी लिखना। सामाजिक कार्य के सम्बन्ध में आवश्यकतानुसार पत्र-व्यवहार करना। मेले पर अतिथियों को निमन्त्रित करने के लिए निमन्त्रण-पत्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जयन्ती मनाना जैसे—तुलसी जयन्ती, गांधी, कबीर, सूर जयन्ती, नानक, प्रेमचन्द्र आदि की जयन्तियां। (7) सूर्योदय सभा (8) स्कूल सभा (9) वाल-चर सभा (10) नाटक खेलना (11) स्कूल पत्रिका निकालना। (12) कवि-सम्मेलन (13) वार्षिक क्रीड़ाएं (14) प्रतियोगिता या दुकान खोलना। (15) सहकारी बैंक (16) समाचार-पत्र पढ़ना।	लिखना। समाचार-पत्र पढ़ कर मोटी-मोटी खबरें लिखना। वार्षिक उत्सव के दिन स्कूल का वार्षिक विवरण (Annual Report) लिखना स्कूल पत्रिका के लिए लेख लिखना। स्कूल सभा की बैठकों की कार्यवाही लिखना। होली आदि त्यौहारों के मनाने के बाद इन्हीं विषयों पर निबन्ध लिखवाए जा सकते हैं।
(घ) अन्य क्रियाएं— (1) बच्चों का घर बनाना। (2) मुर्गी पालना (3) नकली बाजार बनाना। (4) डाकघर खोलना (5) दुकानदारी (6) छोटी पुस्तिका लिखना आदि।	अन्य क्रियाओं के सम्बन्ध में भी बोल-चाल और रचना कार्य कराया जा सकता है।

§ 187. समवाय के केन्द्र—

संक्षेप में भाषा शिक्षण में समवाय के निम्न केन्द्र हो सकते हैं :—

(1) औद्योगिक कार्य, कताई-बुनाई, कृषि, लकड़ी का काम, रसोई का काम सिलाई, रंगाई, धुलाई आदि।

(2) भौतिक वातावरण

(3) सामाजिक वातावरण

(4) अन्य क्रियाएं।

(5) गद्य- पाठ जिसको केन्द्र मान कर, उच्चारण, वाचन, शब्दावली, साहित्य परिचय, व्याकरण, मौखिक तथा लिखित रचना की शिक्षा दी जा सकती है।

समवाय मुक्त पाठ— भाषा शिक्षण में निम्न पाठ समवाय के बिना पढ़ाने में कोई

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आपत्ति नहीं—

(1) प्रयोग प्रणाली द्वारा व्याकरण् (मिडिल कक्षाओं में)।

(2) साहित्यिक रचनाओं की व्याख्या और समीक्षा।

(3) गद्य-पाठ के आधार पर रचना।

(4) ऐसे विषयों पर रचना, जिनका बालक के वातावरण के साथ सम्बन्ध नहीं।

(5) अनुवाद (यदि हिन्दी मातृ भाषा में न हो) और सार लिखना।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. समवाय प्रणाली से क्या तात्पर्य है? भाषा शिक्षण में इसकी क्या आवश्यकता है? [§ 180, 184]

2 भाषा शिक्षण में समवाय प्रणाली का किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए? [§ 183, 184, 187]

3. समवाय पाठ के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कीजिए। भाषा-शिक्षण में समवाय के कौन-कौन से केन्द्र अपनाए जा सकते हैं? [§ 186]

4. तीसरी कक्षा के लिए साल भर की क्रियाओं की योजना बनाइए। उस योजना के अनुसार उन सभी अवसरों की सूची दीजिए, जिन अवसरों पर आप भाषा के विभिन्न अंगों (बोल-चाल, शब्दावली, वाचन, लिपि, रचना की शिक्षा देंगे।) [§ 186]

सहायक पुस्तकें

1. Ministry of Education Govt. of India — Hand book for Teachers of Basic Schools..
2. ,, — Report of the Assessment Committee of Basic Education.
3. ,, — Syllabus for Basic School.
4. ,, — Concept of Basic Education.
5. V. S. Mathur — Future in Basic Education.
6. T. S. Avineshalinghan — Understanding Basic Education.
7. Dwarka Singh — Correlation in Basic Education.
8. Solenki — Techinge of Correlation

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

9. द्वारिका सिंह — समवाय (मगध राजधानी प्रकाशन, पटना)—।

10. मिलाप चन्द दुबे — समवायी शिक्षण—।

11. द्वारिका सिंह — बुनियादी शिक्षा में विभिन्न विषयों की शिक्षा विधि।

12, आत्मानन्द मिश्र — शिक्षण कला—।

13. रामकृष्ण पराशर — समग्र नई शिक्षा (पत्रिका) - 1

14. शिक्षा (पत्रिका) लखनऊ — बुनियादी शिक्षा अंक जुलाई 1959—1

15. बुनियादी तालीम (पत्रिका), नई दिल्ली।

16. रघुनाथ सफाया — 'Possbilities of Correlation' Published in 'Educational Review' Oct. 1960.

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

32
परीक्षा तथा मूल्यांकन

§ 188. सामान्य परीक्षाएं गुण दोष—

दूसरे अध्याय में भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों की व्याख्या के प्रकरण में शिक्षा के तिकोण की तीन भुजाओं की ओर संकेत किया गया है।

(1) उद्देश्य, (2) शिक्षानुभव और (3) जांच। निम्न तालिका से यह स्पष्ट है :—

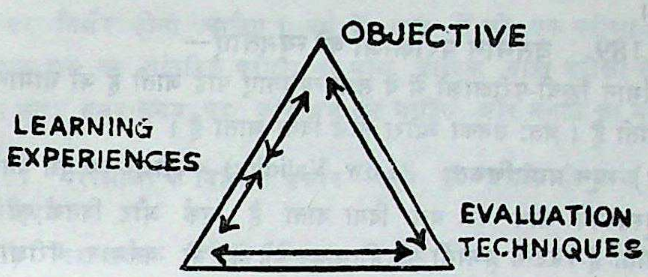

छात्रों ने हिन्दी भाषा सीखने में कितनी प्रगति की है, इस बात की जांच समय-समय पर अवश्य होनी चाहिए। परन्तु जिस विधि से इसकी जांच होनी चाहिए उसका सम्बन्ध समस्त परीक्षा-प्रणाली से है, केवल भाषा परीक्षा से ही नहीं। भाषा-परीक्षा में सुधार करने के लिए समस्त परीक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। सामान्य परीक्षाओं के जिन आवश्यक तत्त्वों का प्रभाव भाषा-शिक्षा पर पड़ना है, उनका ब्योरा नीचे दिया जाता है। सामान्य परीक्षाओं के गुण और दोष दोनों हैं। त्रुटिपूर्ण होने पर भी परीक्षाएं आवश्यक हैं।

परीक्षाओं का सम्पादन कार्य (Functions) —

(1) पाठन-प्रयोग के लिए परीक्षाएं आवश्यक हैं क्योंकि अध्यापक इसके द्वारा छात्रों को पढ़ने-लिखने की ओर प्रेरित कर सकता है और समय-समय पर अधिन्यास (Assignments) दे सकता है।

(2) **निदानात्मक प्रयोग** (Diagnostic use) के लिए भी यह आवश्यक है, क्योंकि छात्र की किसी विषय में कठिनाई या कमज़ोरी का पता लगता है और योग्यता का माप लिया जा सकता है।

(3) **भविष्य सूचक प्रयोग** (Predictive use) के लिए भी परिक्षाएं अपेक्षित हैं, क्योंकि इनके द्वारा छात्रों की विभिन्न योग्यताओं और रुचियों की खोज की जा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकती है। माध्यमिक कक्षाओं के प्रवेश के लिए तथा शैक्षणिक और व्यावसायिक निर्देश (Educational and Vocational Guidance) के लिए सहायता मिलती है।

(4) **प्रशासन सम्बन्धी प्रयोग निम्न हैं**—कक्षाओं का वर्गीकरण, विभिन्न शिक्षण विधियों का मूल्यांकन, विकास लेखा (Cumulative Records) का तैयार करना, आदि के लिए परीक्षाएं अनिवार्य हैं। परीक्षाओं के द्वारा छात्र की प्रगति की सूचना अध्यापक, माता-पिता, शिक्षा संचालक और प्रशासक को मिल सकती है।

(5) परीक्षाओं के कुछ प्रासंगिक गुण भी हैं। छात्रों को विचार की व्यवस्था में सहायता मिलती है। उनके अध्यवसाय की वृद्धि हो जाती है और धैर्य का विकास हो जाता है। अध्यापक को भी अपनी शिक्षण-विधियों की त्रुटियों का ज्ञान हो जाता है।

§ 189. वर्तमान परीक्षाओं की न्यूनताएं—

वर्तमान हिन्दी-परीक्षाओं में वे सभी न्यूनताएं पाई जाती हैं जो सामान्य परीक्षाओं में पाई जाती हैं। अत: उनका ब्योरा नीचे दिया जाता है।

(1) **न्यून प्रामाणिकता** (Low Validity)—परीक्षा-पत्र ऐसे बनाए जाते हैं, जिनमें पुस्तकीय ज्ञान पर बल दिया जाता है। तर्क और वितर्क का कम अभ्यास कराया जाता है। रटन्त प्रणाली को प्रोत्साहन देने में भी वर्तमान परीक्षाएं ही उत्तर-दायी हैं। छात्र सम्भावित प्रश्न, अनुमानित प्रश्न और कुंजियों तथा गाईड पर ही निर्भर रहते हैं।

(2) **न्यून विश्वसनीयता** (Low Reliability)—प्रश्न पत्र अवैज्ञानिक रीति से बनाए जाते हैं, जिससे उनमें संयोग (Chance) की अत्यधिक सम्भावना रहती है। प्रश्नों की भाषा भी ऐसे ही होती है कि उत्तर में भी संयोग की सम्भावना रहती है।

(3) **पाठ्यक्रम पर दुष्प्रभाव**—आजकल पाठ्यक्रम के विषयों का चुनाव परीक्षा की दृष्टि से ही किया जाता है। जिन बातों की लिखित परीक्षा नहीं हो सकती, उनका पाठ्यक्रम में स्थान नहीं। भाषा शिक्षण बोल-चाल में सब से आवश्यक है। पाठ्यक्रम में इसका अभाव परीक्षाओं के कारण ही है।

(4) **शिक्षण विधि पर दुष्प्रभाव**—वर्तमान रटन्त प्रणाली भी परीक्षाओं की देन है। साधारण ज्ञान पर न्यूनतम बल दिया जाता है। चुने हुए प्रश्नों को याद कराया जाता है।

(5) **छात्र पर दुष्प्रभाव**—छात्र पर हमेशा भय का भूत सवार होता है। उसकी मानसिक अशान्ति, अन्त:द्वन्द्व, निरन्तर चिन्ता, असफलता के कारण निराशा, मानसिक ग्रन्थियों, आलस्य, और अकर्मण्यता, तात्कालीन परीक्षाओं का परिणाम है। सफलता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा उसे अनैतिक साधनों का उपयोग करने की ओर उत्तेजित करती है। एक ओर महत्त्वाकांक्षा और दूसरी ओर अपनी दुर्बलता चरित्रहीनता में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदल जाती है। अनुशासन बिगड़ जाता है।

(6) **अध्यापक पर दुष्प्रभाव**—शिक्षक की प्रवृत्ति केवल परीक्षा में सम्भावित प्रश्नों को सिखाने की ओर रहती है। परीक्षा के दबाव में उनकी स्वछन्दता का नाश हो जाता है।

§ 190. परीक्षाओं में वांछित सुधार –

सामान्य परीक्षाओं में एवं हिन्दी परीक्षाओं में निम्न प्रकार के सुधार की आवश्यकता है।

(1) **परीक्षाओं के दो रूप**—छात्रों की प्रगति का मूल्यांकन दो प्रकार से होना चाहिए। आन्तरिक और बाह्य (Internal and External Assessment)। अध्यापक प्रति सप्ताह या प्रति मास जांच करता जाए और उत्तीर्ण होना साल भर के काम पर निर्भर होना चाहिए। वर्ष के अन्त में भी एक परीक्षा हो। अध्यापक द्वारा साल भर का आंतरिक परीक्षा का मूल्य वार्षिक बाह्य परीक्षा से अधिक होना चाहिए। अत: समय-समय पर जांच पत्र देने चाहिएं और प्रगति का मूल्यांकन करना चाहिए।

(2) **परीक्षाओं के विभिन्न प्रकार**—छात्र की प्रगति की जांच चार प्रकार से होनी चाहिए।

(i) निबन्धात्मक परीक्षा (Essay Type Test) के द्वारा विचार विश्लेषण, विचार संग्रह, विचार व्यवस्था, भावप्रकाशन, ज्ञान प्रयोग और लेखन शैली की जांच करनी चाहिए।

(ii) वस्तुगत परीक्षा (Objective Test) के द्वारा स्मृति, अर्जित ज्ञान, बोध (Comprehension), और विचार संग्रह की जांच करनी चाहिए।[1]

(iii) मौखिक परीक्षा (Oral Test) मौखिक अभिव्यक्ति, उच्चारण, वाचन योग्यता और बोल-चाल की जांच के लिए अनिवार्य है।

(iv) गृह कार्य (Home Test) तथा विद्यालय में किए गए दैनिक कार्य की जांच से प्रतिदिन प्रगति ज्ञान होता है।

उपर्युक्त मूल्य परीक्षाओं के अतिरिक्त कुछ प्रासंगिक तथा सहायक परीक्षाएं जैसे बुद्धि परीक्षा (Intelligence Test), अभिरुचि परीक्षा (Aptitude Test), निदानात्मक परीक्षा (Diagnostic Test), और प्रामाणिक उपलब्धि परीक्षा (Standardised Achievement Test), प्रश्नावली (Questionnaire), गुणमापक (Rating scale) भी प्रगति जांच में सहायक है।

3. निबन्धात्मक परीक्षाओं में सुधार—

(क) रचना सम्बन्धी सुधार—

निबन्धात्मक परीक्षा बनाते समय रटी हुई बातों के बदले ज्ञान के प्रयोग

---

1. वस्तुगत परीक्षा का एक नमूना परिशिष्ट (ii) में दिया गया है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर बल देना चाहिए । प्रश्नों की भाषा स्पष्ट, सरल और बोधगम्य होनी चाहिए । भाषा के परीक्षा-पत्र में वैकल्पिक प्रश्नों की कोई आवश्यकता नहीं । प्रत्येक प्रश्न के अंक निश्चित करने चाहिएं और प्रश्न के प्रत्येक भाग के अंक भी निर्धारित करने चाहिएं ।

(ख) अंक निर्धारण सम्बन्धी सुधार—

अंक निर्धारण करने से पहले प्रश्न-पत्र के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर निश्चित करना चाहिए । उत्तर संचिकाओं को उत्तम, मध्यम और अधम— इन तीन भागों में बांटना चाहिए । एक उत्तर-संचिका को देख कर दूसरी लेने के बदले एक प्रश्न को लेना चाहिए और सभी उत्तर संचिकाओं के उसी प्रश्न का अंक निर्धारण (Scoring) करना चाहिए । उसके बाद प्रश्न लेना चाहिए । अंक जोड़ते समय पीछे से अंक वापस भी गिनने चाहिएं ताकि जोड़ की गलती न रहे । जब उत्तर संचिका अधिक हो, तो मुख्य परीक्षक द्वारा स्तर का प्रमाणीकरण होना चाहिए । सब से उत्तम विधि यह है कि चार-पांच अध्यापक एक साथ बैठें, एक अध्यापक उत्तर संचिकाओं के एक प्रश्न (जैसे प्रस्ताव) की जांच करे, दूसरा प्रश्न (कविता का अर्थ) की जाँच करे, तीसरा तीसरे प्रश्न (जैसे व्याकरण) की जांच करे, इत्यादि ।

(4) वस्तुगत परीक्षा (Objective Test) गद्य पाठ, व्याकरण शब्दावली, अक्षर विन्यास और बोध (Comprehension) के लिए वस्तुगत प्रश्न-पत्र बनाने चाहिएं । वस्तुगत प्रश्नपत्र में प्रत्याह्वान (Recall), आदि भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रश्न होने चाहिएं जिनके नमूने आगे दिए जाते हैं ।

§ 191. हिन्दी परीक्षा की व्यवस्था—

उपर्युक्त निर्देश सामान्य परीक्षाओं के सम्बन्ध में हैं, जिनका सम्बन्ध किसी एक विषय जैसे हिन्दी के साथ है । हिन्दी भाषा की उपलब्धि की परीक्षा की भी अपनी समस्याएं हैं । हिन्दी एक भाषा है, जो ज्ञान का विषय होने की अपेक्षा कौशल (Skill) का विषय है । इसके कौशल के अंगों की जांच वांछित है, उनका वर्णन नीचे किया जाता है ।

भाषा के विविध अंगों की परीक्षा—

(1) निष्क्रिय कौशल की परीक्षा (Test of Passive Skill)—समझना और पढ़ना निष्क्रिय कौशल है । उनके अन्तर्गत कई बातें आती हैं जिनकी जांच के लिए विविध प्रकार के प्रश्न पूछने चाहिएं । ऐसे प्रश्न या तो मौखिक रीति से पूछे जा सकते हैं, अथवा वस्तु प्रश्न पत्र द्वारा । उनका स्पष्टीकरण अगले पृष्ठ पर दी गई तालिका से हो सकता है—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निष्क्रिय कौशल के अंग	प्रश्नों के प्रकार	परीक्षा के प्रकार
(i) भाषण संभाषण समझना	अध्यापक जो कुछ बोले उसके सम्बन्ध में प्रश्न करे	मौखिक परीक्षा ।
(ii) निष्क्रिय शब्दावली (Passive Vocabulary) का ज्ञान	नए शब्दों का अर्थ पूछना और वाक्यों में प्रयोग करवाना,	मौखिक परीक्षा ।
	अथवा	,,
	वस्तुगत प्रश्न-पत्र मे शब्द और अर्थ का युगलीकरण प्रश्न	,,
(iii) वाचन-योग्यता, शुद्धता (Accuracy) और गति (Speed)	एक अनुच्छेद पढ़ने के लिए देना, अशुद्धियां गिनना, अवधि नोट करना और वाचन योग्यता की जांच करना	मौखिक परीक्षा ।
(iv) अर्थ-विधि (Comprehension)	पढ़े हुए अनुच्छेद के सम्बन्ध में मौखिक या वस्तुगत विधि से प्रश्न पूछना, शुद्ध उत्तर की जांच करवाना ।	मौखिक तथा वस्तुगत परीक्षा ।

(2) **सक्रिय कौशल** (Active Skill) **की परीक्षा**—बोलना और लिखना सक्रिय कौशल हैं। इसके अन्तर्गत आगे लिखी बातें आ जाती हैं जिसके लिए मौखिक तथा निबन्धात्मक परीक्षा की आवश्यकता है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सक्रिय कौशल के अंग	प्रश्नों के प्रकार	परीक्षा के प्रश्न
(i) उच्चारण	प्रश्नों के उत्तर में, या पाठ्य-पुस्तक के वाचन में शुद्ध उच्चारण की जांच करना।	मौखिक परीक्षा
(ii) सक्रिय शब्दावली का ज्ञान	शब्दों का अर्थ पूछना और वाक्य प्रयोग करवाना, विपरीत बोधक पर्यायवाची आदि सम्बन्ध पूछना, रिक्त स्थानों की पूर्ति करवाना।	मौखिक परीक्षा तथा वस्तुगत परीक्षा
(iii) भाषण-योग्यता, (शुद्धता, प्रवाह और गति के साथ)	मौखिक वर्णन करवाना वाद-विवाद, संभाषण और नाटक खेलने में भाषण योग्यता की जांच करना।	मौखिक परीक्षा
(vi सुलेख (Hand-Writi ng)	छोटी कक्षाओं में अनु लिपी और प्रतिलिपि करवाना श्रुति-लेख लिखवाना।	मौखिक परीक्षा
	उत्तर कक्षाओं में सुलेख की सुन्दरता, अक्षर-रूप-गति, सफाई और पठनीयता (Legibility) की जांच करना।	निबन्धात्मक परीक्षा
(v) रचना	प्रश्नों का-उत्तर पूछना, पाठ्य-पुस्तक में पढ़े हुए पाठ के सम्बन्ध में सामान्य प्रश्न पूछना, कविता की व्याख्या करवाना, प्रस्ताव पत्र, आदि विविध रचनाएं लिखवाना।	निबन्धात्मक परीक्षा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) ज्ञान की परीक्षा—भाषा के सम्बन्ध में कई बातें समझनी और याद रखनी पड़ती हैं, जिनका कौशल की अपेक्षा ज्ञान से सम्बन्ध है। शब्दावली और व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। इन दो विषयों में भी परीक्षा ली जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त पाठ्य-पुस्तक के द्वारा जितना भी विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है, यद्यपि यह शिक्षा में गौण है, उसकी परीक्षा होनी चाहिए। पाठ्य-पुस्तक की पाठ्य-सामग्री (Subject matter) की परीक्षा से ज्ञान होता है कि छात्र भाषा के माध्यम से कितना समझ चुका है और उसे कथा कहानी वर्णन, जीवनी, नाटक और कविता पढ़ने में कितनी रुचि और क्षमता प्राप्त हुई है।

ज्ञान परीक्षा के अंग	प्रश्नों के प्रकार	परीक्षा के प्रकार
(i) व्याकरण	व्याकरण के पारिभाषिक शब्दावली के अक्षर उदाहरण पूछना लक्षण विन्यास की जांच के प्रश्न पूछना, प्रयोगात्मक व्याकरण के प्रश्न पूछना।	वस्तुगत परीक्षा
(ii) शब्दावली	शब्दों, मुहावरों और लोकोक्तियों का अर्थ पूछना भाषा में प्रयुक्त होने वाले भौगोलिक, ऐतिहासिक और पौराणिक अन्तर कक्षाओं के ज्ञान की जांच करना।	वस्तुगत परीक्षा
(iii) पाठ्य पुस्तक की पाठ्य-सामग्री।	पाठ्य-पुस्तक के विभिन्न पाठों के सम्बन्ध में कहानी, वर्णन, जीवनी, आदि पूछना, कवि या लेखक का परिचय पूछना, किसी कहानी या लेख से जो शिक्षा मिलती है वह पूछना।	वस्तुगत (छोटे उत्तर के लिए) तथा निबन्धात्मक (लम्बे उत्तर के लिए) परीक्षाएं हैं।

(4) सौन्दर्य बोध की परीक्षा—ज्ञान की परीक्षा के अतिरिक्त इस बात की भी जांच होनी चाहिए कि छात्र कविता के मर्म कहां तक पहचान सकते हैं, काव्य सौन्दर्य से रसास्वादन कहां तक प्राप्त कर सकते हैं और कविता में कितनी रुचि रखते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सौंदर्य बोध की परीक्षा के अंग	प्रश्नों के प्रकार	परीक्षा के प्रकार
(i) कविता-पाठ (Recitation)	उचित स्वर, लय और उच्चारण के साथ कविता का वाचन करना।	मौखिक
(ii) अर्थबोध	कविता का सरलार्थ करना, व्याख्या करना, आलोचना (Capital Appreciation)	निबन्धात्मक
(iii) शैली पक्ष	छन्द, अलंकार, ध्वनि और शैली की विशेषता पर प्रश्न।	वस्तुगत तथा निबन्धात्मक

§ 192. परीक्षा के विविध प्रकारों का भाषा में प्रयोग—

ऊपर कहा गया है कि भाषा की जांच करने के लिए चार साधन हैं :—
(1) मौखिक परीक्षा, (2) निबन्धात्मक परीक्षा, (3) वस्तुगत परीक्षा और (4) दैनिक कार्य। ऊपर की तालिकाओं में चारों का प्रयोग दर्शाया गया है। नीचे उनका और स्पष्टीकरण किया जाता है।

(1) **मौखिक परीक्षा** - प्रारम्भिक कक्षाओं में जांच का सबसे उत्तम साधन मौखिक परीक्षा उच्चारण, वाचन, शब्दावली, भाषण-योग्यता और साधारण बोलचाल के लिए मौखिक परीक्षा अपेक्षित है, परन्तु खेद है इसका प्रयोग दिन-प्रति-दिन घट रहा है। अध्यापक तीसरी श्रेणी के छात्रों को लिखित पत्र भी देने से नहीं चूकते, क्योंकि इससे उनके श्रम की बचत हो जाती है।

(2) **निबन्धात्मक परीक्षा**—माध्यमिक तथा उच्च कक्षाओं के लिए इसका प्रयोग उचित है। रचना के विभिन्न प्रकारों के लिए निबन्धात्मक प्रश्न-पत्र चाहिएं। पाठ्य-पुस्तक में पढ़े हुए पाठ के सम्बन्ध में कहानी, वर्णन आदि पूछा जाता है। कविता की व्याख्या के प्रश्न भी निबन्धात्मक होंगे।

(3) **वस्तुगत परीक्षा (Objective Test)**—इनका प्रयोग शब्दार्थ, अर्थबोध, व्याकरण, अक्षर-विन्यास और पाठ्य-पुस्तक की पाठ्य-सामग्री की जांच के लिए आवश्यक है। यह एक नई प्रकार की परीक्षा है, जिसका अधिकाधिक प्रयोग हो रहा है। इसकी बहुत सी विशेषताएं हैं। प्रश्नों का उत्तर एकमात्र संक्षिप्त होता है, जिसके परिणाम में अविश्वसनीयता, वैयक्तिकता (Subjectivity) नहीं रहती है। उत्तर देने में न्यूनतम समय लगता है। थोड़े समय में अधिक से अधिक छोटे-छोटे प्रश्न पूछे जा सकते हैं। पाठ्यक्रम के सभी अंशों की जांच में सहायता मिलती है। इस परीक्षा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में प्रश्न विविध प्रकार के होते हैं, जिनकी उदाहरण समेत व्याख्या नीचे की जाती है--

(i) प्रत्यह्वान जांच (Recall Test) जिसके द्वारा याद किए हुए तथ्यों का स्मरण कराया जाता है।

उदाहरण—

(1) निम्न शब्दों के अर्थ कोष्ठकों में लिखिए।

वज्रपात ( ), कौतूहल ( )
विधाता ( ), कुत्सा ( )

(2) निम्न शब्द संज्ञाएं हैं या विश्लेषण या सर्वनाम या अव्यय कोष्ठकों में लिखें :—

सुन्दरता ( ), दूर ( )
सभी ( ), अधिक ( )

(3) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

दो वर्गों के जोड़ को कहते हैं—

—— के वचन पुरुष, कारक, काल आदि नहीं होते।

(ii) सत्यासत्य आदि जांच (True-false Test) जिसमें प्रत्येक प्रश्न के दो उत्तर दिए जाते हैं और उन दो में एक ही सही होता है। छात्र से पूछा जाता है कि वह केवल 'सत्य' पर निशान लगाए या 'असत्य' पर, अथवा 'हां' पर या 'नहीं' पर।

उदाहरण—

(1) कृतघ्न उसे कहते हैं जो किए को न मानने वाला है— हां/नहीं।

(2) सर्वनाम उसे कहते हैं जो विशेषण के बदले प्रयुक्त हो। सत्य/असत्य।

(iii) बहुविकल्प जांच (Multiple Choice Test), इसमें तीन या अधिक उत्तर दिए रहते हैं, जिसमें एक सही होता है।

उदाहरण—

प्रत्येक प्रश्न के बाद बहुत से उत्तर दिए जाते हैं, सही उत्तर में निशान लगाइए—

भारत के सर्वोच्च पदाधिकारी को क्या कहते हैं ?

(1) राज्यपाल, (2) प्रधानमन्त्री,
(3) राष्ट्रपति, (4) उप-राष्ट्रपति,

(iii) निम्न शब्दों में से कौन सा रूप शुद्ध है।

ब्राह्मण, ब्राह्मन, ब्राह्मण

(iv) युगलीकरण जांच (Matching Test) - दो शब्दों या वस्तुओं का साहचर्य सम्बन्ध बताने के लिए, उनको दो स्तम्भों (Columns) में रखा जाता है। एक स्तम्भ में रखे हुए शब्दों को दूसरे स्तम्भ के शब्दों में जोड़ना होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदाहरण—

(1) बाईं ओर लिखे हुए शब्द व्याकरण में क्या हैं ? उत्तर दाहिनी ओर दिया हुआ है। सही उत्तर का अक्षर कोष्ठक में भरें ?

(क) महात्मा गाँधी	जातिवाचक संज्ञा	( )
(ख) मुख्याध्यापक	व्यक्तिवाचक संज्ञा	( )
(ग) धैर्य	जातिवाचक संज्ञा	( )
(घ) बुद्धिमान	जातिवाचक संज्ञा	( )
(ङ) धीरे-धीरे	विशेषण	( )
(च) आप	क्रिया विशेषण	( )
(छ) दस्तकारी	भाववाचक संज्ञा	( )

(v) **व्यवस्थीकरण जांच** (Rearrangement Test) – इसमें कई बातें या शब्द अव्यवस्थित रूप में दी जाती हैं। उनका सही क्रम बताना होता है।

उदाहरण—

(1) निम्न शब्दों को ऐसे क्रम में लिखें कि पूरा अर्थ निकले—
माया है सकता भगवान् की जान कौन को।

(vi) **मिश्रित सम्बन्ध** (Mixed Relation)—

उदाहरण—

प्रत्येक पंक्ति से वह शब्द काट दीजिए जो उस समूह का नहीं है—

(क) कलम, किताब, स्याही, माता, स्कूल।

(ख) द्वन्द, द्विगु, कर्मवाच्य, तत्पुरुष, बहुव्रीहि।

(ग) धैर्य, पराक्रम, वीरता, पूजा, देश-भक्ति।

(घ) अनजाने, अनन्त, अनाज, अनादि, अनशन।

(4) दैनिक कार्य—इसमें निम्न कार्य सम्मिलित हैं—

(क) अनुलिपि और प्रतिलिपि।

(ख) श्रुत लेख।

(ग) नए शब्दों का लिखना।

(घ) पाठ पढ़ाने के उपरान्त पाठ-सम्बन्धी सामान्य प्रश्नों का उत्तर लिखना।

(ङ) व्याकरण का काम।

(च) रचना कार्य इनकी जांच समय-समय पर होनी चाहिए और सारे वर्ष की प्रगति का अभिलेखा बनाना चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

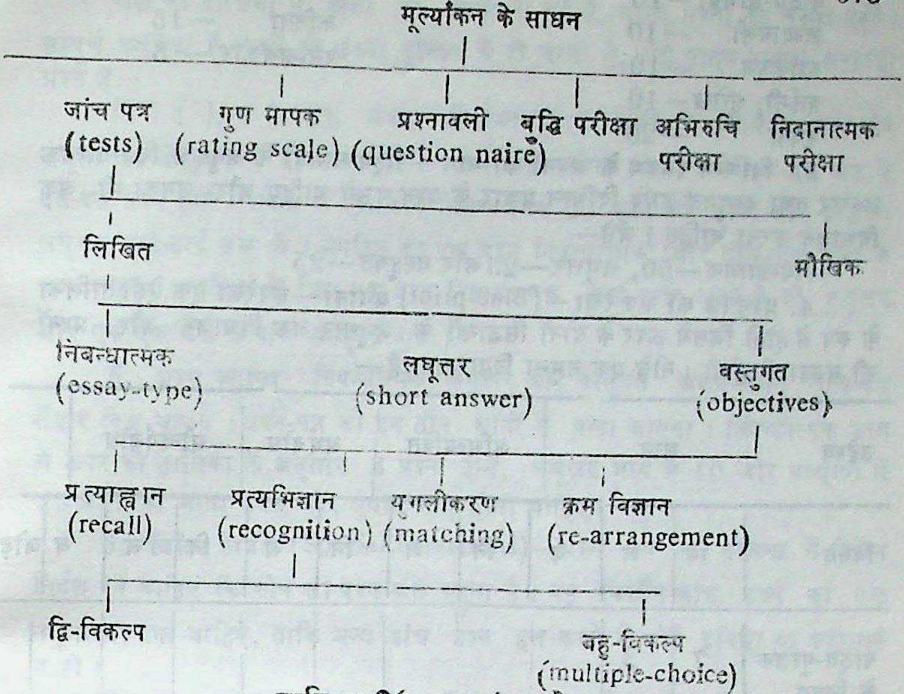

तालिका 26—मूल्यांकन के साधन

§ 193. प्रश्नपत्र रचना के सिद्धान्त तथा सोपान—

किसी भी विषय का प्रश्नपत्र बनाने के लिए निम्न सोपान आवश्यक हैं—

1. उद्देश्यों का ज्ञान (Coverage of Objectives)—जिन-जिन उद्देश्यों को लेकर विषय पढ़ाया गया है, उन सभी उद्देश्यों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे चाहिए। कोई उद्देश्य अछूता न रहे। उद्देश्यों के तारतम्य के अनुसार ही अंकों का विभाजन होना चाहिए। जैसे भाषा के एक प्रश्नपत्र में निम्न उद्देश्य सम्मिलित होने चाहिए—अर्थबोध (Comprehension), अभिव्यक्ति (Expression), सौन्दर्य बोध (Appreciation) और ज्ञान। ज्ञान के अन्तर्गत व्याकरण, शब्दावली और पाठ्य-क्रम की पाठ्य-सामग्री आनी चाहिए। 100 अंकों का विभाजन उदाहरण के रूप में नीचे दिया जाता है—

ज्ञान	अर्थबोधन	अभिव्यक्ति	सौन्दर्यबोध
30	20	30	20

तालिका 27—उद्देश्यानुसार अंक-विभाजन

2. विषय वस्तु का व्याप्ति (Coverage of Subject matter)—प्रश्नपत्र के प्रश्नों का प्रबन्ध पढ़ाए गए समस्त विभाग वस्तु के साथ होना चाहिए जैसे—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठ्य-सामग्री — 10
शब्दावली — 10
व्याकरण — 10
वर्तनी, सुलेख — 10
रचना — 20
अपठित गद्य 20
कविता — 15
रस-अलंकार — 5

3. **विभिन्न स्वरूप के प्रश्नों का मान**—पाठ्य-सामग्री के अनुकूल निबन्धात्मक लघूत्तर तथा वस्तुगत आदि विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछने चाहिएं और उनका भी अंक विभाजन करना चाहिए। जैसे—

निबन्धात्मक—50, लघूत्तर—25 और वस्तुगत—25

4. **प्रश्नपत्र की रूप रेखा—(Blue-print) बनाना**—रूपरेखा एक ऐसी तालिका के रूप में होगी जिसमें ऊपर के दोनों सिद्धान्तों के अनुसार अंक विभाजन और प्रश्नों की संख्या दी होगी। नीचे एक नमूना दिया जाता है—

उद्देश्य	ज्ञान			अभिव्यक्ति		अर्थबोध		सौन्दर्यबोध			
विषय	नि	ल	व	नि	ल	नि	ल	नि	ल	व	जोड़
पाठ्य-पुस्तक के विषय	7	3									
शब्दावली			10								10
व्याकरण			10								10
अपठित						8	12				20
वर्तनी सुलेख रचना				25	5						30
कविता								10	5	5	20
जोड़	30			30		20		20			100

नि = निबन्धात्मक; ल = लघूत्तर, व = वस्तुगत।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तालिका 28. प्रश्नपत्र की रूप रेखा

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीछे की तालिका में अंकों की संख्या दी गई है, परन्तु प्रश्नों की संख्या नहीं। सम्पूर्ण रूपरेखा में प्रश्नों की संख्या कोष्ठक में दी जाती है, जैसे पाठ्य-पुस्तक सम्बन्धी प्रश्न हैं –

नि 7 ( ), ल 3 (2), अर्थात् निबन्धात्मक 7 अंकों का एक प्रश्न होगा और लघूतर डेढ़-डेढ़ अंक के दो प्रश्न होंगे। शब्दावली और व्याकरण में एक-एक अंक के दस-दस प्रश्न होंगे। रचना में एक प्रश्न निबन्धात्मक 25 अंकों का होगा और दो प्रश्न लघूत्तर ढाई-ढाई अंक के। अपठित का एक प्रश्न निबन्धात्मक, और तीन-तीन अंकों के चार लघूतर। कविता के लिए एक प्रश्न निबन्धात्मक, ढाई-ढाई अंकों के दो लघूत्तर और एक-एक अंक के पांच वस्तुगत।

5. **प्रश्न बनाना** निबन्धात्मक, लघूत्तर और वस्तुगत अलग-अलग जांच-पत्र तैयार किए जाएंगे। प्रश्न-पत्र को इन तीन भागों में बांटा जाएगा। निबन्धात्मक भाग में ऊपर की तालिका के अनुसार 4 प्रश्न होंगे, लघूत्तर भाग में 10 और वस्तुगत में 25 प्रश्नों की भाषा सरल और सुबोध गम्य होनी चाहिए।

6. **विशेष निर्देश** (Special Directions)—प्रश्न पत्र के सम्बन्ध में विशेष निर्देश देने चाहिएं कि कौन सा प्रश्न कैसे करना है। वह विकल्प जांच प्रश्न का एक नमूना भी देना चाहिए, ताकि अन्य जांच प्रश्न हल करने में कोई दुविधा या कठिनाई न हो।

7. **अंक योजना** (Marking Scheme) प्रत्येक प्रश्न के अंक निश्चित होने चाहिएं। निबन्धात्मक प्रश्नों के अंकों का पुन: विभाजन करना चाहिए जो परीक्षक के लिए सहायक हो। जैसे प्रस्ताव के कुल 15 अंक हैं 5 अंक विषय-सामग्री के, 5 अंक अभिव्यक्ति के और 5 अंक भाषा शैली के। ऐसा अंक विभाजन प्रश्न-पत्र पर नहीं लिखा जाएगा। यह केवल परीक्षक की जानकारी के लिए है।

8. **उत्तर तालिका** (Key) प्रश्न-पत्र बनाने वाले को जांचने वाले की सहायता के लिए उत्तर-तालिका बनानी चाहिए, जिसमें प्रत्येक लघूत्तर तथा वस्तुगत प्रश्न का उत्तर निश्चित किया गया हो और निबन्धात्मक प्रश्न सम्बन्धी प्रमुख विचार बिन्दु (Points)।

9. **प्रश्न-पत्र विश्लेषण** (Analysis)—प्रश्न-पत्र बनाने वाला अपने निर्देश के लिए प्रश्न-पत्र का विश्लेषण कर सकता है, जिस में प्रत्येक प्रश्न के सम्बन्ध में वह लिख सकता है कि यह कि। पाठ्य विषय से सम्बन्धित है, कि उद्देश्य से सम्बन्ध है और इसका प्रश्न का रूप क्या है। समूचे विश्लेषण के बाद उसे ज्ञात हो सकता है कि कौन-सा विषय रह गया है और किस उद्देश्य पर कम बल दिया गया है तथा किस रूप का अधिक परिणाम है (निबन्धात्मक का या लघूत्तर का या वस्तुगत का)।

इकाई प्रश्न-पत्र (Unit Test)—जिस प्रकार एक स्तर में पढ़ाए हुए भाग का एक प्रश्न-पत्र बनाया जाता है, उसी प्रकार पाठ्यक्रम की एक ही इकाई (Unit)

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

का भी प्रश्न-पत्र बनाया जा सकता है। इकाई चाहे एक ही कविता हो, पाठ्य-पुस्तक का एक अध्याय हो, व्याकरण का एक भाग हो या एक ही रचना पाठ हो। इसके लिए भी ऊपर दिए हुए सभी सोपान अपेक्षित हैं।[1]

सहायक पुस्तकें

1. Bloom, B. S. — Evaluation in Secondary Schools (AICSE, New Delhi, 1958.)
2. Green and Others. — 1. Measurement and Evaluation in the Elementary School. 2. Measurement and Evaluation in the Secondary School.
3. Udel C. W. — 1. Traditional Exam. and new type tests. 2. Educational Measurement.
4. Ross and Staneley. — Measurement in Today.
5. Thorn Like and Hagera. — Measurement and Evaluation.
6. Safaya. R. N. — 1. Scoool Administration and Organisation (Ch. on Evaluation.) 2. स्कूल तथा प्रशासन संगठन।
7. Punjab State Evalua. tion Unit. — 1. Report of Wokshop on Evaluation, Nov. 69. 2. Unit Tests in Hindi.

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. वर्तमान शिक्षा प्रणाली का मातृ-भाषा उपलब्धि (Achievement) की जांच पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

2. मातृ-भाषा की वर्तमान परीक्षा प्रणाली की आलोचना कीजिए और सुधार के सुझाव भी दीजिए।

3. भाषा के विविध अंगों की जांच किस प्रकार होनी चाहिए ? क्या निबन्धात्मक प्रश्न-पत्र सभी अंगों की जांच के लिए पर्याप्त हैं।

---

1. विशेष अभ्यास के लिए देखिए—

Unit Test in Hindi : Punjab Education Development State Evaluation Unit Chandigarh, July. 1970.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. वस्तुगत प्रश्नपत्र किसे कहते हैं ? इसका भाषा परीक्षण में कहां-कहां प्रयोग होना चाहिए । आठवीं कक्षा के लिए एक वस्तुगत प्रश्न तैयार कीजिए ।

5. प्रारम्भिक कक्षाओं में परीक्षा अधिकतर मौखिक होनी चाहिए या लिखित ? मौखिक परीक्षा भाषा के किन-किन अंगों के लिए अनिवार्य है ?

6. भाषा शिक्षण में प्रतिदिन के काम की जांच की क्या महत्ता है ? दैनिक कार्य में कौन-कौन सी बातें आ जाती हैं । सम्पूर्ण वर्ष के लिए इसकी एक योजना तैयार कीजिए ।

7. 'बालों की शिक्षा के बाद उनका परीक्षण अनिवार्य है' इसके अनुसार क्या वर्तमान परीक्षण प्रणाली दोषयुक्त है ? आलोलना कीजिए ।

8. भाषा शिक्षण में मूल्यांकन के कौन-कौन से साधन हैं ? वस्तुगत प्रश्नपत्र का इनमें क्या स्थान है ?

9. प्रश्नपत्र रचना के कौन से सिद्धान्त तथा सोपान हैं । आठवीं कक्षा के लिए हिन्दी विषय के लिए प्रश्नपत्र की रूप रेखा (Blue-print) तैयार कीजिए ।

10. भाषा की शिक्षा में मौखिक परीक्षा का क्या स्थान है ? किन-किन उद्देश्यों के सम्बन्ध में मौखिक परीक्षा की आवश्यकता है ?

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

33

इतर भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की समस्याएं

§ 194. समस्याएं—

देश के कई भागों में हिन्दी मातृ-भाषा नहीं वरन् इतर भाषा है । राष्ट्र भाषा होने के कारण इसकी शिक्षा प्रत्येक अहिन्दी भाषी प्रान्तों में अनिवार्य हो रही है । हिन्दी भाषी प्रान्तों में हिन्दी शिक्षण की समस्या इतनी जटिल नहीं जितनी अहिन्दी भाषी प्रान्तों में है । अहिन्दी भाषी प्रान्तों में हिन्दी शिक्षण की अनेक समस्याएं हैं ।

नीचे उन सभी समस्याओं पर क्रम से विचार करने का प्रयत्न किया जाता है और समाधान के सुझाव भी प्रस्तुत किए जाते हैं :

(1) **पहली समस्या यह है कि अहिन्दी प्रान्तों में कौन सी हिन्दी का प्रयोग हो** स्मरण रहे कि राष्ट्र भाषा हिन्दी प्रादेशिक भाषा हिन्दी से अधिक व्यापक होगी । राष्ट्र-भाषा हिन्दी में हिन्दी क्षेत्र से बाहर की शब्दावली और अभिव्यक्ति-विविधता का समावेश होगा । प्रादेशिक भाषा हिन्दी अपने क्षेत्र में सीमित है । प्रादेशिक हिन्दी की संकीर्णता राष्ट्र भाषा हिन्दी की मानकता (Standardisation) का माप दण्ड नहीं । इसका तात्पर्य यह नहीं कि पंजाब की हिन्दी उत्तर-प्रदेश की हिन्दी से भिन्न होगी कदापि नहीं। परन्तु पंजाब की हिन्दी पंजाबी बहुत कुछ लेगी शब्दावली के रूप में, मुहावरों के रूप में, वाक्य-विन्यास और विचारों के रूप में यह आदान-प्रदान हिन्दी की प्रत्येक भाषा के साथ होता रहेगा और उस पर प्रतिबन्ध नहीं लगाना चाहिए क्योंकि इस आदान-प्रदान में हिन्दी भाषा समृद्ध होगी । अत: पंजाबी हिन्दी में यदि पंजाबी भाषा की पुट होगी तो उत्तर-प्रदेश वाले न चिल्लाएं । भाषा विज्ञान के विद्यार्थियों को भली-भांति विदित है कि संस्कृत भाषा ने अन्य भाषाओं से कितना कुछ प्राप्त किया ? कौन अनुमान लगा सकता है कि द्राविड़ भाषाओं से निम्न शब्द आदि प्राप्त किए :—

(क) सामान्य शब्द, जैसे पिक (कोयल) नेम (आधा) पाप (Sin), माला ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) कई छन्द जैसे प्रगाथा छन्द ।

(ग) कई नाम, जैसे कण्व, नारद, मेधातिथि, गोकर्ण ।

इसी प्रकार फारसी भाषा से दीनार, निष्क, दिपि वा लिपि, जैसे अनेक शब्द लिए गए । यूनानी भाषा से भी ज्यामित्र, होरा यवनिका, लेय (सिंह) आदि कितने ही शब्द संस्कृत में प्रयुक्त होते रहे । यह सब इस बात का प्रमाण है कि देव वाणी संस्कृत दूसरी भाषाओं से लेने के लिए अपने द्वार खुला रखती रही । हिन्दी का अन्य भाषाओं के साथ आदान-प्रदान अत्यधिक आवश्यक है । अब भी हिन्दी को प्रान्तीय भाषाओं से बहुत पारिभाषिक शब्द, मुहावरे, काव्यशैलियां लेनी होंगी । अन्य भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले कई पारिभाषिक शब्द, हिन्दी के पर्यायों से अच्छे लगते हैं, जैसे ग्रन्थमाला (पुस्तकालय के बदले), अनेक वचन (बहुवचन के बदले), बोलपट (बोलते सिनेमा के बदले), श्यामपट (कृष्णफलक के बदले , मण्डल (वृत्त Region के बदले), दिन-दर्शिका (दिन-दर्शिनी Calendar के बदले), प्रशाला (माध्यमिक विद्यालय के बदले) आदि । कितने ही प्रयोग जो प्रान्तीय भाषाओं के शुद्ध हैं, हिन्दी में भी शुद्ध समझे जाएंगे । हिन्दी वालों को उसमें संकीर्णता नहीं करनी चाहिए । हिन्दी अब उनकी ही नहीं, जो उसका प्रयोग मातृ-भाषा के रूप में करते हैं, उनकी भी है, जिनकी मातृ-भाषा अन्य भाषा है । निष्कर्ष यह है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी का रूप मातृ-भाषा हिन्दी से व्यापक होगा और इसमें अन्य भाषाओं के प्रयोग भी सम्मिलित होंगे ।

(2) **दूसरी समस्या यह है कि विद्यालयों में हिन्दी शिक्षा कम से कम या किस कक्षा से आरम्भ की जाए**—इस भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षा कहीं पांचवीं से दी जा रही है और कहीं आठवीं कक्षा से । बम्बई में पांचवीं कक्षा से हिन्दी अनिवार्य है । बंगाल और आसाम में भी हिन्दी की शिक्षा पांचवीं कक्षा से आरम्भ की जाती है, परन्तु अनिवार्य विषय के रूप में नहीं, वरन् ऐच्छिक विषय के रूप में । मद्रास, आन्ध्र और काश्मीर में हिन्दी छठी कक्षा से ऐच्छिक विषय के रूप मे शुरू की जाती है । केरल में आठवीं से हिन्दी अनिवार्य है । मैसूर में नौवीं से हिन्दी ऐच्छिक विषय के रूप में पढ़ाई जाती है । विश्व-विद्यालयों में हिन्दी सब जगह ऐच्छिक विषय है, लेकिन स्तर एक समान नहीं । उपर्युक्त स्थिति सन्तोषजनक नहीं । हिन्दी का प्रचार अभीष्ट हो तो हिन्दी की शिक्षा प्रत्येक अहिन्दी भाषी राज्य में तीसरी कक्षा से आरम्भ की जानी चाहिए । रूसी में रूसी भाषा इतर भाषा के रूप में तीसरी कक्षा से आरम्भ की जाती है । यूरोपीय राज्य में भी इतर भाषा की शिक्षा (चाहे वह अंग्रेजी हो या जर्मनी या फ्रांसीसी हो या स्पेन) तीसरी या चौथी कक्षा से दीं जाती है । सभी भाषा वैज्ञानिक तथा शिक्षा-शास्त्री इस बात से सहमत हैं कि इतर-भाषा या इतर-भाषाओं की शिक्षा छोटी से छोटी अवस्था में दी जानी चाहिए । कैनेडा के नाड़ी-विशेषज्ञ विलडरपेन पोल्ड ने आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित अपने भाषण में अनेक प्रयोगों, युक्तियों और अनुभवों द्वारा यह प्रमाणित किया कि दस वर्ष की अवस्था से पहले अनेक भाषाएं सीखने में जो नैसर्गिक सुविधा रहती है, वह बाद में नहीं रहती । तात्पर्य यह है कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देश का प्रत्येक बालक दस वर्ष की अवस्था से पहले हिन्दी जल्दी सीख सकता है। अतः प्रत्येक विद्यालय में तीसरी कक्षा से या उससे पहले हिन्दी की शिक्षा का आयोजन करना पड़ेगा। तभी हिन्दी का स्तर ऊंचा रहेगा। हिन्दी प्रान्तों और अहिन्दी प्रान्तों में न्यून अन्तर पड़ेगा। अन्य प्रत्येक राज्य के शिक्षा-संचालन को शिक्षा-क्रम में हिन्दी को उचित स्थान देना चाहिए।

(3) **हिन्दी शिक्षण की तीसरी समस्या है, प्रत्येक राज्य के लिए आधारभूत शब्दावली का निर्माण**—पश्चिमी देशों में आधारभूत शब्दावली का काम पिछली शताब्दी में आरम्भ हुआ था। हमारा हिन्दी के लिए यह कार्य किसी संस्थान द्वारा नहीं हो सका। हाल ही में केन्द्रीय सरकार ने 20 0 शब्दों की तथा उससे भी संक्षिप्त 500 शब्दों की शब्दावलियां प्रकाशित की हैं। इन शब्दावलियों के आधार पर प्रत्येक राज्य में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार अपनी-अपनी शब्दावलियां निर्मित होनी चाहिएं। इनमें स्थानीय शब्दों का समावेश होगा, तथा उन शब्दों को प्रथम स्थान दिया जाएगा, जिनका प्रयोग उस प्रदेश में अधिक है। केन्द्रीय सरकार की ओर से ऐसी शब्दावलियों का भी निर्माण हो रहा है जो हिन्दी तथा किसी एक भारतीय भाषा में सर्वमान्य हों, जैसे तामिल-हिन्दी शब्दावली और काश्मीर हिन्दी शब्दावली आदि। ऐसी शब्दावली भी प्रत्येक राज्य की आधारभूत शब्दावली बनाने में सहायक होंगी। हिन्दी के प्राईमर और रीडर ठीक ढंग से बन सकेंगे। प्रथम 200 शब्दों के बाद दो-दो हजार शब्दों की अलग-अलग शब्दावलियां भी बननी चाहिएं। बच्चों के लिए अलग और युवकों के लिए अलग। आजकल जो पाठ्य-पुस्तकें प्रचलित हैं, उनमें आधारभूत शब्दावली का कोई ख्याल नहीं रखा गया है और अनावश्यक कठिन, अप्रयुक्त और गूढ़ शब्दों का प्रयोग किया गया है। बच्चों के लिए जो बाल साहित्य भी बनाया गया है, उसमें भी दूषित शब्दावली का प्रयोग है जिससे भाषा दुरूह और बनावटी बन जाती है। बाल साहित्य के लेखकों ने अपनी विद्वता कठिन शब्दावली द्वारा दर्शाई और संस्कृत का मोह भी नहीं छोड़ा है। हिन्दी का अध्ययन करने वाले बालकों या प्रौढ़ों के लिए यदि कोई भाषा सहायक हो सकती है तो वह है प्रेमचन्द की सरल और व्यावहारिक भाषा शैली। ऐसे साहित्य की रचना के लिए हमें तद्भव से तत्सम की ओर जाना चाहिए और घरेलू मुहावरों तथा व्यावहारिक भाषा का प्रयोग करना चाहिए।

(4) **हिन्दी शिक्षण की चौथी समस्या है उपयुक्त पाठ्य पुस्तक की रचना**—इन में आजकल प्रत्येक राज्य में हिन्दी के प्राईमरी रीडर प्रचलित हैं। पाठ्य-पुस्तकों की रचना वैज्ञानिक ढंग से नहीं हुई। इसमें निम्न प्रकार के दोष पाए जाते हैं :

(क) पाठ्य-पुस्तक विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुकूल नहीं है। इनमें वर्णित अरोचक विषयों का वर्णन है। पद्य भाग में विविधता नहीं है। प्रारम्भ में ही साहित्यिक लेखों और कविताओं का समावेश है, जिससे अध्ययन में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। विषय की दृष्टि से और भी कई दोष पाए जाते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) भाषा शैली की दृष्टि से बहुत सी पाठ्य-पुस्तकों में क्रमिक शब्दावली का प्रयोग नहीं तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग है, व्यावहारिक शैली के बदले आलंकारिक शैली से आरम्भ किया गया है, और आधारभुत शब्दावली का प्रयोग नहीं किया गया है।

(ग सम्पादक की दृष्टि से भी अनेक दोष पाए जाते हैं। पाठों का क्रम तथा परिणाम उपयुक्त नहीं। पुस्तकों के अन्त में बहुत थोड़े अभ्यास दिए गए हैं। कठिन पारिभाषिक और प्रासंगिक शब्दों की व्याख्या का कोई प्रयत्न नहीं किया गया है। कई पुस्तकों में चित्र भद्दे और अनाकर्षक हैं, कहीं-कहीं टाईप भी भद्दा है, छपाई भी त्रुटि पूर्ण और कागज भी अनाकर्षक।

जहां तक प्रवेशिकाओं का सम्बन्ध है, कई राज्य-सरकरों ने अंग्रेजी के अन्धानुकरण के कारण देवनागरी लिपि के लिए उपयुक्त ध्वनि साम्य विधि (Phonetic Method) का तिरस्कार करके 'देखो और कहो' विधि तथा वाक्य विधि (Sentence Method) के अनुसार प्राईमर बना कर निर्धारित किए हैं। अनुमान और प्रयोगों द्वारा प्रमाणित हो चुका है कि देवनागरी जैसी ध्वन्यात्मक और वैज्ञानिक लिपि की शिक्षा के लिए विश्लेषणात्मक विधियां, उल्टियां कृत्रिम और अर्थ-हीन हैं। तात्पर्य यह है कि हिन्दी की शिक्षा के लिए ध्वनिसाम्य विधि का ही प्रयोग प्रारम्भ में श्रेयस्कर है। इसी में संशोधन तथा किंचित् परिवर्तन करना चाहिए, जिससे यह अधिक आकर्षक और रोचक बने। प्रत्येक राज्य में हिन्दी पाठ्य पुस्तक की समीक्षा तथा निर्धारण के लिए "राजकीय पाठ्य-पुस्तक समिति" की नियुक्ति होनी चाहिए जिसके सदस्य अनुभवी अध्यापक और प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अध्यापक हों। इसके अतिरिक्त प्रत्येक राज्य में एक पाठ्य-पुस्तक अनुसन्धान ब्यूरो (Text Book Research Bureau) की स्थापना होनी चाहिए। मई 1962 में केन्द्रीय सरकार की ओर से शैक्षणिक साहित्य समिति की स्थापना हुई। इसके अन्तर्गत हिन्दी शैक्षणिक साहित्य की रचना के लिए एक समिति बनी जिसने जुलाई से अपना कार्य आरम्भ किया है।

(5) **देवनागरी लिपि सिखाने की समस्या**—उत्तरी भारत की लिपियां, जैसे गुरुमुखी, बंगाली, आसामी, गुजराती और मराठी हिन्दी से बहुत मिलती हैं। गुरुमुखी शारदा से निकली है और शेष लिपियां प्राचीन देवनागरी से दसवीं शताब्दी की प्राचीन देवनागरी लिपि और शारदा दोनों गुप्तकालीन कुटिललिपि से निकली हैं। इसी कारण इन सभी लिपियों में अनेक अक्षर एक समान हैं। अत: जिनकी मातृ भाषा बंगला, पंजाबी, गुजराती या मराठी है, उनके लिए देवनागरी लिपि सिखाने के लिए तुलना विधि अपेक्षित है। गुजराती और देवनागरी लिपि में मूलत: कोई अन्तर नहीं। परन्तु दक्षिण भारत की तामिल, तेलगू, मलयालम और कन्नड़ लिपियों की देवनागरी के साथ कोई समता नहीं, यद्यपि सभी लिपियां ब्राह्मी से ही निकली हैं। अत: दक्षिण में देवनागरी लिपि सिखाने की एक मूल-भूत समस्या है। द्राविड़ लिपियों के कितने ही वर्ण हिन्दी मे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं और हिन्दी के कितने ही वर्ण द्राविड़ लिपियों में नहीं। जैसे तामिल में न महाप्राण अक्षर है न नाद। इधर तामिल के कितने ही रूप हैं जो हिन्दी में नहीं हैं। इस विषय में प्रत्येक द्राविड़ राज्य में द्राविड़ भाषा से देवनागरी सिखाने के सम्बन्ध में गवेषणा होनी चाहिए।

इधर वर्धा तथा उत्तर-प्रदेश वालों ने देवनागरी लिपि में सुधार करना आरम्भ किया है और दोनों की परिवर्तित लिपियां प्रचलित हो रही हैं। देवनागरी लिपि में जो भी सुधार करना हो, वह देशव्यापी होना चाहिए नहीं तो अहिन्दी प्रान्तों में भ्रम पैदा होगा कि कौन-सी लिपि का प्रयोग किया जाए। अपनी-अपनी डफली बजाने से काम नहीं चलेगा। केन्द्रीय सरकार ने इस विषय में विचार-विमर्श करके देवनागरी लिपि में कुछ सुधार स्वीकृत किए हैं। इस संशोधित लिपि का सारे देश में प्रसार चाहिए। यद्यपि संशोधित लिपि का प्रमाणीकरण भी हो जाए एक और भी समस्या उपस्थित है। हिन्दी वालों की भाषा घसीट लिपि में लिखे जाने के कारण पढ़ी नहीं जाती। हिन्दी प्रान्तों में हिन्दी की घसीट लिपि का रिवाज और प्रचलन रहे या न रहे, परन्तु अहिन्दी प्रान्तों को घसीट लिपि हिन्दी प्रचार में बाधक है।

(6) **अहिन्दी प्रान्तों में उच्चारण की समस्या**—उच्चारण का अर्थ के साथ सम्बन्ध है। अशुद्ध उच्चारण अर्थबोध में कठिनाई उपस्थित करता है। थोड़े से उच्चारण-भेद के साथ अर्थ बदल जाता है। जैसे गुण—गुन, पाणी—पानी आदि। भाषा का वर्तमान उच्चारण ही ग्राह्य है, नहीं तो उच्चारण में स्वतन्त्रता बरतने से भाषा में विगाड़ पैदा हो जाएगा। हिन्दी क्षेत्र में हिन्दी का उच्चारण नैसर्गिक है। परन्तु अहिन्दी क्षेत्र में ध्वनि विषमता पाई जाती है। दक्षिण में हिन्दी का शुद्ध उच्चारण नहीं हो पाता। अन्य प्रान्तों में भी प्रान्तीय प्रभाव है। हिन्दी क्षेत्र में बोलियों का प्रभाव दृश्यमात्र है। उच्चारण की समस्या को सुलझाने के लिए इनका निदान आवश्यक है।

(क) **अशुद्ध उच्चारण के कारण और प्रकार**—साधारणतया ध्वनियों के शुद्ध उच्चारण का अज्ञान बोलने की दोष-पूर्ण आदत अशुद्ध उच्चारण के लिए उत्तरदायी है। जहां अध्यापकों का उच्चारण दोषपूर्ण होता है, शिष्य भी उन्हीं का अनुकरण करते हैं। अशुद्ध उच्चारण का विशेष कारण है प्रान्तीय उच्चारण का प्रभाव। उर्दू के प्रभाववश महाप्राणदायक, संयुक्त व्यंजन और ष का प्रयोग बहुत कम है। इसलिए विशेष, दोसत, प्रपात, उच्चारित होते हैं। दक्षिण में 'चलता फिरता (Chal..ta' Firata) उच्चारित होता है। मराठी प्रदेश में पहल में 'प' ध्वनि संवृत्त पश्च 'प' में बदल कर पेहले-पेहले उच्चारित होता है। बंगाल में स्वरों को औष्ठ्यम बनाया जाता है। ध्वनि उच्चारण के कारण से अर्थ-भेद की कठिनाई पेश नहीं आती है, जितनी स्वराघात के कारण। हिन्दी का उच्चारण स्वराघात है, अक्षरव्यक्ति, बल विराम; सस्वरता, लय तथा प्रवाह की अशुद्धियां अर्थबोध में कठिनाई उपस्थित करती हैं। इस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषय के सम्बन्ध में कोई शोध कार्य नहीं हुआ न कोई निर्देश सामग्री ही उपलब्ध है, हिन्दी उच्चारण के सम्बन्ध में जो कुछ श्याम सुन्दर दास ने लिखा उसके अतिरिक्त और कोई सामग्री नहीं।

(ख) समस्या का समाधान अत्यन्त कठिन है—अध्यापकों से निवेदन किया जा सकता है कि वे उच्चारण को शुद्ध करने का प्रयत्न करें। कक्षा में संवाद और भाषण पर बल दिया जाए. वैयक्तिक और सामूहिक विधि से शिष्यों के उच्चारण की अशुद्धियां ठीक करें, और शुद्ध उच्चारण का निरन्तर अभ्यास करवाते रहें, परन्तु इतना पर्याप्त नहीं। सबसे बड़ी आवश्यकता है हिन्दी उच्चारण के सम्बन्ध में भाषा वैज्ञानिक अनुसन्धान की जो अहिन्दी क्षेत्र से अध्यापकों के लिए पथ-प्रदर्शन करे। अहिन्दी भाषी प्रान्तों में हिंदी उच्चारण सिखाने के लिए परिचर्चा (Seminar) तथा प्रशिक्षण शिविर चलाए जाएं. इन अध्यापकों को भाषा विज्ञान के प्रारम्भिक सिद्धान्तों और हिन्दी ध्वनि तत्त्वों का शुद्ध ज्ञान दिया जाए। लिग्वाफोन का प्रयोग पश्चिम में सामान्य है। विद्यालयों में उच्चारण सिखाने का यह उत्तम साधन है। अच्छे-अच्छे हिन्दी गीतों, भजनों, भाषाओं और संवाद के रिकार्ड शिष्यों के कान प्रशिक्षित कर सकते हैं। आकाशवाणी का बालोपयोगी कार्यक्रम भी इसमें सहायक है।

(7) व्याकरण की समस्या—हिन्दी का अपना ध्वनि विचार (Phononogy), शब्द विचार (Morphology) और वाक्य विचार (Syntax) है, जिस कारण से प्रान्तीय भाषाओं के साथ विषमता होने की अवस्था में हिन्दी बोलते या लिखते समय व्याकरण अथवा हिन्दी के विभिन्न प्रयोग हिन्दी वालों के लिए सरलता है परन्तु अहिन्दी भाषियों के लिए एक टेढ़ी खीर है।

(क) ध्वनि विचार—ध्वनि विचार का उल्लेख ऊपर उच्चारण के सम्बन्ध में हो चुका है। अनुकरण और अभ्यास द्वारा हिंदी की उन ध्वनियों की शिक्षा दी जानी चाहिए, जो प्रान्तीय भाषाओं में नहीं।

(ख) शब्द विचार - हिन्दी में केवल दो लिंग हैं, पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। जीवधारियों के सम्बन्ध में लिंग निर्णय सरल है, परन्तु निर्जीव पदार्थों, व्यक्तिवाचक, द्रव्यवाचक और भाववाचक संज्ञाओं का लिंग निर्णय कठिन है। यहां पर अहिन्दी क्षेत्र में संभ्रम पैदा होता है। इसके सम्बन्ध में निश्चित नियम नहीं। यदि नियम है तो उनके अपवाद अधिक हैं। यह समस्या इस कारण से और जटिल बन गई है कि हिन्दी संज्ञाओं के लिंग का प्रभाव विशेषण, सर्वनाम संख्यावाचक तथा क्रिया पर भी होता है। अत: यदि कोई बंगाली कहे. ''मेरा किताब फट गया'' तो अचम्भा नहीं। इसी प्रकार हिन्दी कारकों का प्रयोग जटिलतम है। उदाहरण के लिए 'ने' और 'को' का प्रयोग संभ्रमात्मक है। द्राविड़ भाषाओं में न लिंग की ऐसी कठिनाइयां है और न कारकों की। बंगाल में भी अंग्रेज़ी और संस्कृत की तरह क्रियाप्रद स्वतन्त्र है. संज्ञा लिंग से प्रभावित नहीं। काश्मीरी और पंजाबी में हिन्दी जैसा लिंग भेद है। परन्तु बहुत से शब्दों का हिन्दी में जो लिंग है वह इन भाषाओं में नहीं। मराठी में तीन लिंग हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'आंख' और 'देह', हिन्दी में स्त्रीलिंग हैं, परन्तु मराठी में नपुंसकलिंग 'बर्फ पड़े' ,काम केले' नपुंसकलिंग हैं। इस प्रकार अहिन्दी भाषी प्रान्तों में लिंग भेद तथा कारक प्रयोग की बड़ी जटिल समस्याएं हैं। विशेषणों, क्रिया विशेषणों और सर्वनामों के प्रयोग में अशुद्धियां हो जाती हैं।

पंजाबी में स्त्रीवाचक विशेषणों के विशेषणों का लिंग परिवर्तन करके 'पीलियां साड़ियां', 'चंगिया गल्लां' कहा जाता है और उसी के प्रभाववश हिन्दी में 'पीलियां साड़ियां और 'अच्छीयां बातें' जैसा अशुद्ध प्रयोग देखा जाता है। क्रियाओं के जितने रूप हिन्दी में पाए जाते हैं उतने और भाषाओं में नहीं। इसी प्रकार उपसर्गों, प्रयत्नों और अन्य शब्दों के प्रयोग में भी अशुद्धियां पाई जाती हैं।

काश्मीरी भाषा में सबसे अधिक विलक्षणताएं हैं। अर्थ की दृष्टि से संस्कृत क्रियाओं के परस्मैपदी और आतमनेपदी रूपों में कोई अन्तर नहीं। परन्तु आरम्भ में अन्तर रहा होगा जो काश्मीरी में सुरक्षित हैं। 'मैंने किया', 'मैंने उसके लिए किया' और मैंने तुम्हारे लिए किया' का काश्मीरी में क्रमश: तीन अलग-अलग संश्लिष्ट पद हैं कोर, कोरूमस् और कोरूमय्। हिन्दी में ऐसा सश्लेषण नहीं है। काश्मीरी में कर्त्ता, क्रिया और कर्म का वाक्य में क्रम अंग्रेजी के समान है। 'I read the book' का काश्मीरी में क्रम होगा 'मैंने पढ़ी किताब', परन्तु हिन्दी में है 'मैंने किताब पढ़ी'। काश्मीरी में कितनी ही क्रिया शब्दों और अव्ययों का मुहावरा प्रयोग हिन्दी में अलग है, जिसके कारण काश्मीरी छात्र हिन्दी वाक्यों का काश्मीरी के मुहावरे के समान ही रूपान्तर करता है जैसे :

हिन्दी	काश्मीरी (जो अशुद्ध है)
1. दरवाज़ा बन्द करो।	दरवाज़ा दे दो।
2. दूध में चीनी डालो।	दूध में चीनी फैंको।
3. वह मेरा भाई लगता है।	वह मेरा भाई पहुंचता है।
4. कपड़े उतारो।	कपड़े निकालो।
5. पिता जी तो नहीं आये, बाहर देखना।	पिता जी तो मत आये, बाहर देखना।
6. ये मिर्च तीखे हैं।	ये मिर्च कड़ुवे हैं।
7. पर्वतों पर बर्फ पड़ी है।	पर्वतों पर वर्फ पड़ा है।
8. दीवार गिर पड़ी।	दीवार गिर पड़ा।

(ग) **वाक्य विचार**—हिन्दी का शब्द क्रम अपने आप विलक्षण है। प्रान्तीय भाषाओं के शब्दक्रम तथा वाक्य विन्यास के साथ कुछ विषमता भी पाई जाती है। दैनिक व्यवहार में आने वाले मुहावरों के प्रयोग में भी अशुद्धियां हो जाती हैं जैसे—'टेढ़ी खीर' के बदले 'उल्टी खीर' कहना। हिन्दी में मिश्रित वाक्यों की रचना और भी जटिल हो जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हिन्दी में हम कहते हैं 'मुझे, जाना चाहिए', 'तुमको आना चाहिए', परन्तु मलयालम में 'मुझे' 'कर्म कारक' की 'मैं' 'कर्त्ताकारक' बन जाता है—मैं जाना चाहिए, तुम आना चाहिए। हिन्दी में हम कहते हैं 'मेरे बोलने के बाद'' परन्तु मलयालम में 'मैं बोलने के बाद' मलयालम छात्र प्रायः पहले अपनी मातृभाषा मलयालम की वाक्य रचनाओं में सोचेंगे, और फिर मन-ही-मन हिन्दी वाक्य रचनाओं का रूपान्तर करेंगे।

इस प्रकार हिन्दी व्याकरण की ऐसी जटिलता अहिन्दी प्रान्तों के लिए पहेलियां बन गई हैं और इसका समाधान अब तक नहीं हो सका। स्कूलों में जिसे हिन्दी व्याकरण की शिक्षा दी जाती है वह सैद्धान्तिक व्याकरण है व्यावहारिक नहीं। संज्ञा, सर्वनाम आदि के भेद-उपभेद गुरु और परिभाषाएं हिन्दी के व्यावहारिक व्याकरण के सम्बन्ध में कोई निर्देशक सामग्री नहीं। 'कामता प्रसाद गुरु' का व्याकरण इस मांग की पूर्ति नहीं करता। कौशलवर्ग का हिन्दी व्याकरण अध्यापकों को कुछ सहायता प्रदान करता है, किन्तु वह अंग्रेज़ी में है। आवश्यकता ऐसे व्याकरणों की है, जो पंजाबी, बंगाली, मराठी आदि भाषाओं के माध्यम द्वारा इन भाषाओं को आधार मान कर तुलनात्मक विधि द्वारा बनाए जाएं। ऐसे तुलनात्मक व्याकरण अध्यापक और शिष्यों के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। इसकी रचना के लिए प्रत्येक राज्य में अनुसन्धान की आवश्यकता है। इन व्याकरणों में निरन्तर अभ्यास और बोलचाल द्वारा भाषा प्रयोग की शिक्षा पर बल दिया जाना चाहिए। हिन्दी-व्याकरण के प्रत्येक अंग के सिद्धान्तों की व्याख्या वैज्ञानिक विधि अर्थात् आगमन-निगमन से होनी चाहिए। हिन्दी पढ़ाते-पढ़ाते हिन्दी व्याकरण की जटिलताएं समझनी चाहिएं और मातृभाषा के साथ तुलना करनी चाहिए। मुहावरों का बोलचाल, सम्भाषण, संवाद, वाद-विवाद द्वारा करनी चाहिए। हिन्दी को वह आदर्श रूप जो अहिन्दी भाषीय प्रान्तों के लिए अनुकरणीय है, प्रेमचन्द की कहानियों और उपन्यासों का रूप है। इस प्रकार का साहित्य प्रचुर मात्रा में हिन्दी के विद्यार्थियों को मिलना चाहिए। स्मरण रहे कि हिन्दी व्याकरण को बदलने का विचार-व्यर्थ और अर्थ-हीन है।

(8) **कतिपय सुझाव** अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में इतर-भाषा के रूप में हिन्दी की शिक्षा एक विचारणीय समस्या है, जिसके समाधान हेतु प्रत्येक प्रान्तीय सरकार हिन्दी प्रचार संस्थाओं और केन्द्रीय सरकार को जुट जाना चाहिए। प्रत्येक प्रान्त में हिन्दी-विभाग के अधीन, आधारभूत शब्दावली की रचना, हिन्दी शिक्षण विस्तार के लिए प्रशिक्षण विद्यालयों की स्थापना, भाषणों, गीतों और संवादों के टेपरिकार्डो की व्यवस्था, रेडियो पर विशेष हिन्दी कार्यक्रम, प्रान्तीय साहित्य का हिन्दी में अनुवाद-कार्य, दो भाषाओं वाली पत्रिका प्रकाशन, अध्यापकों के लिए निर्देश सामग्री और बालकों के लिए स्वाध्याय सामग्री का प्रकाशन और कर्मचारियों के लिए शिक्षण का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। हिन्दी प्रचार संस्थाएं अनुसन्धान कार्य, प्रकाशन कार्य हिन्दी विद्यालयों के संचालन आदि में संलग्न हो जाएं तो हिन्दी प्रचार सुचारु

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढंग से सम्भव है ।[1] सायंकालीन कक्षाओं (Evening Classes) और पत्राचार शिक्षा (Correspondence Courses) द्वारा हिन्दी सिखाई जा सकती है ।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी शिक्षण के कौन से उद्देश्य होने चाहिएं ? हिन्दी क्षेत्र में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्यों से तुलना कीजिए ।

2. अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी की शिक्षा किस कक्षा से आरम्भ होनी चाहिए और उच्च कक्षाओं में इसका स्तर क्या होना चाहिए ?

3. हिन्दी भाषी क्षेत्रों में अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में पाठ्य-क्रम और पाठ्य-पुस्तकों में किस प्रकार का अन्तर होना चाहिए ।

4. अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी उच्चारण सिखाने की क्या कारण हैं, और अशुद्ध उच्चारण के क्या कारण हैं, और शुद्ध उच्चारण के क्या समस्याएं हैं, और शुद्ध उच्चारण सिखाने के लिए कौन से उपाय काम में लाये जा सकते हैं ?

5. अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में कहां-कहां पर देवनागरी से लिपि मिलती-जुलती है और कहां-कहां पर नितान्त भिन्न-भिन्न दोनों प्रकार के प्रदेशों में देवनागरी लिपि सिखाने का कौन-सा विधान अपनाएंगे ?

6. अहिन्दी प्रान्तों में हिन्दी सीखने की सबसे बड़ी समस्या है हिन्दी का व्याकरण सीखना । हिन्दी व्याकरण की कौन-सी कठिनाइयां सामने आती हैं और उनका क्या समाधान हो सकता है ?

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

1. 'शिक्षा' लखनऊ के सौजन्य से । 'शिक्षा' के जुलाई 1962 के अंक में प्रकाशित ।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

34

हिन्दी-शिक्षण में प्रयोग तथा शोध

(EXPERIMENTATION AND RESEARCH IN TEACHING OF HINDI)

§ 195 शोध कार्य की आवश्यकता –

(i) ज्ञान-विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति से निमित्त खोज और अनुसन्धान की आवश्यकता है। अनुसन्धान जिज्ञासा का फल है। जिज्ञासावृत्ति ही मानव सभ्यता और संस्कृति की उत्तरोत्तर उन्नति के लिए उत्तरदायी है। जिस जाति में जिज्ञासा-वृत्ति प्रबल हो उठी, उस जाति ने दर्शन और ज्ञान के क्षेत्र में खोज और आविष्कार करके अपने आप को गौरव के पद पर प्रतिष्ठित किया। प्राचीन भारत की सांस्कृतिक महत्ता का प्रथम कारण था हमारे पूर्वजों, ऋषियों, मुनियों, विचारकों, दार्शनिकों, कवियों, ज्योतिषियों, धर्मसंस्थापकों, समाजसुधारकों, नेताओं तथा विद्वानों के मस्तिष्क में नवीन बातों की खोज के प्रति संलग्नता। कहीं दर्शन के क्षेत्र में ब्रह्मजिज्ञासा उत्पन्न हुई तो कपिल, पतंजलि, गौतम, कणाद, वाद्रायण, जैमिनी, शंकराचार्य, रामानुज, कुमारिल भट्ट जैसे दार्शनिक उत्पन्न हुए। इसी प्रकार चरक जैसे आयुर्वेदाचार्य, आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, वराहमिहिर और भास्कराचार्य जैसे ज्योतिषी तथा गणितज्ञ, पाणिनी और अमरसिंह जैसे भाषा वैज्ञानिक और चाणक्य और राजनीतिज्ञ की सफलता भी जिज्ञासा वृत्ति प्रखर बुद्धि और सतत परिश्रम के कारण हुई। आधुनिक युग में पश्चिम की वैज्ञानिक क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रकृति का मूल स्रोत भी यही जिज्ञासा है।

यह जिज्ञासा-वृत्ति हमारे पूर्वजों में थी, परन्तु खेद है कि आजकल हम भारत-वासियों में उसका अभाव है। जब तक हमारी शिक्षित जनता इस दिशा में कार्य नहीं करेगी हमारी राष्ट्र की प्रगति रुकी रहेगी। भारतीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, इतिहास और प्राचीन संस्कृति में, शास्त्र में, आयुर्वेद में, धर्म-समाज विज्ञान में, शिल्प में, टैक्न लोजी (यन्त्र-कला), भौतिक विज्ञान में तथा राजनीति में शोध कार्य की आवश्यकता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपरोक्त सभी विषयों के अतिरिक्त जिस विषय में शोध कार्य की अधिकतम और शीघ्रतम आवश्यकता है वह है शिक्षा। भारतीय समाज, संस्कृति आर्थिक मांगों तथा अन्य परिस्थितियों के अनुसार शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक तीनों प्रकार की सम्पूर्ण शिक्षा की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उचित व्यवस्था करना हमारी सर्वप्रथम मांग है। इसके अभाव में भावी भारत सुदृढ़, सम्पन्न, सशक्त और प्रगतिशील नहीं हो सकता है। उचित शिक्षा ही भारतीय प्रगति की आधारशिला है। उसी के द्वारा शेष सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है।

शिक्षा की इस महत्ता को पहचानते हुए पिछले 36 वर्षों से जब से भारत स्वतन्त्र हुआ, केन्द्रीय सरकार ने शिक्षा में सुधार करने का उत्तरदायित्व अपने हाथ में लिया और विश्वविद्यालयी आयोग, तत्पश्चात् माध्यमिक शिक्षा आयोग की नियुक्ति करके, उनसे विश्वविद्यालयी शिक्षा तथा माध्यमिक शिक्षा की प्रगति एवं सुधार के निमित्त सुझाव प्राप्त करके: केन्द्रीय परामर्शदातृ समिति और विभिन्न राज्य सरकारों के सम्मुख उनको उपस्थित करके और स्वयं भी सुझावों को कार्यान्वित करने के निमित्त केन्द्रीय वित्त से प्रथम पंचवर्षीय योजना, द्वितीय पंचवर्षीय योजना और तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत आर्थिक सहायता देना आरम्भ किया।

शिक्षा की प्रगति का उत्तरदायित्व केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों के अतिरिक्त उन सभी अध्यापकों और कार्यकर्त्ताओं पर है जो शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। अध्यापकों और कार्यकर्त्ताओं का प्रथम कर्त्तव्य है कि वे शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में अनुसंधान करें। आयोगों ने जो सुझाव रखे हैं, उनको कार्यान्वित करने से पहले प्रयोग तथा विस्तारपूर्वक विश्लेषण की आवश्यकता है। उदाहरणार्थ, बहुमुखी विद्यालयों (Multilateral School) की स्थापना से पहले उनकी विस्तृत रूप-रेखा बनाने को, अध्यापकों की नियुक्ति का, विद्यार्थियों की बुद्धि परीक्षा और उपलब्धि परीक्षाओं द्वारा प्रवेश का और विद्यालय व्यवस्था का उचित प्रबन्ध करने की आवश्यकता है। उसके लिए विद्वानों और शिक्षा परिषदों को काम में जुटाना पड़ेगा, जांच-पत्र बनाने पड़ेंगे और सारा ब्यौरा उपस्थित करना पड़ेगा। उसी प्रकार अन्य सुझावों के बारे में भी अनुसंधान की आवश्यकता है।

अनुसंधान के अन्य विषयों में एक प्रमुख विषय हिन्दी भाषा भी है। या तो विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले सभी विषयों से पढ़ाने की आन्तरिक समस्याओं को हल करने के लिए अनुसंधान की आवश्यकता है, परन्तु हिन्दी सभी भाषाओं में प्रमुख होने ... और राष्ट्र भाषा के प्रतिष्ठित पद पर आसीन होने के कारण इस काम की अपेक्षा रखती है।

हिन्दी में शोध कार्य की आवश्यकता

अत्यन्त खेद से कहना पड़ता है कि जहां हिन्दी के तथाकथित हितैषी गला ... कर 'हिन्दी भाषा खतरे में है', 'हिन्दी का प्रचार हो' आदि सिंहनाद सुनाते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
हैं, संसद् में हिन्दी के लिए वाद-विवाद करते हैं और सम्मेलनों में हिन्दी प्रचार के प्रस्ताव पास करते हैं, वहां वे हिन्दी के ठोस कार्य के प्रति कम ध्यान देते हैं। उदाहरणार्थ हिन्दी की शिक्षा हिन्दी भाषी क्षेत्र में और अहिन्दी भाषी क्षेत्र में किस प्रकार दी जाए इस विषय पर कोई प्रमाणिक मंत्रणा उपलब्ध नहीं। जहां अंग्रेजी भाषा में बुद्धि परीक्षाएं (Intelligence Test) उपलब्धि परीक्षाएं (Achievement Test) 60 वर्ष पहले बन चुके वहां हिन्दी भाषा में ऐसे प्रश्न-पत्रों का नितान्त अभाव है। अंग्रेज़ी भाषा शिक्षण में प्रत्येक पहलू पर विचार किया गया, अनुसंधान हुआ है, विभिन्न प्रयोग हुए हैं, सैंकड़ों ग्रन्थ छप चुके हैं और पूरी मन्त्रणा (Guidance) प्राप्त है, परन्तु भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी उस दिशा में भी घुटनों के बल ही चल रही है और निर्देशहीन अध्यापकों के नेतृत्व में लड़खड़ा कर गिर पड़ती है। पढ़ने वालों की आम शिकायत है कि हिन्दी कठिन है।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि हिन्दी शिक्षण के किस-किस क्षेत्र में अनुसंधान की आवश्यकता है। नीचे कतिपय समस्याएं दी जाती हैं जिनके समाधान की अविलम्ब मांग है।

§ 196. हिन्दी शिक्षण में अनुसंधान के क्षेत्र—

1. हिन्दी की एक आधारभूत शब्दावली (Basic Vocabulary) का निर्माण करना।

2. हिन्दी की सभी कक्षाओं के लिए मानसिक अवस्था के अनुसार उपलब्धि परीक्षा पत्र (Achievement Tests) तैयार करना।

3. हिन्दी की अक्षर-विन्यास की अशुद्धियों की जांच करना।

4. हिन्दी का लिंगानुशासन और अहिन्दी भाषी प्रदेशों में उसकी शिक्षण विधि।

5. हिन्दी की व्याकरण-सम्बन्धी अशुद्धियों की जांच।

6. हिन्दी की व्याकरण शिक्षण प्रणालियों की जांच और तुलनात्मक प्रयोग।

7. हिन्दी के अक्षर-ज्ञान की विभिन्न प्रणालियों पर तुलनात्मक प्रयोग।

8 हिन्दी लिपि का विभिन्न विधियों पर तुलनात्मक प्रयोग।

9. हिन्दी की ध्वनियों का भारत की अन्य भाषा की ध्वनियों के साथ तुलना और हिन्दी उच्चारण की शिक्षा में प्रयोग।

10. विभिन्न राज्यों में प्रचलित हिन्दी पाठ्य-पुस्तकों की शिक्षा सिद्धान्तों की दृष्टि वैज्ञानिक जांच।

11. रुचि और मानसिक अवस्था के अनुकूल बाल-साहित्य की आवश्यकताएं।

12. हिन्दी परीक्षाओं में सुधार।

13. अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी-शिक्षण की समस्याओं की जांच।

14. विभिन्न कक्षाओं के लिए हिन्दी पाठ्यक्रम की जांच तथा निर्माण।

15. साप्ताहिक समय विभाग चक्र (Time Table) में हिन्दी का उचित स्थान निर्धारित करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

16. हिन्दी शिक्षण के विभिन्न साधनों की जांच।

17. समवाय प्रणाली से हिन्दी शिक्षण में उचित स्थान निर्धारित करना।

18. हिन्दी के अध्यापकों की जांच। उनकी प्रशिक्षण, नियुक्ति, वेतन आदि समस्याए तथा उन समस्याओं का समाधान।

19. बाल साहित्य तथा किशोर साहित्य का निर्माण।

20. विद्यालयों के पाठ्यक्रम में हिन्दी का स्थान।

अनुसंधान के विभिन्न क्षेत्रों का निम्न रीति से विभाजन किया जा सकता है।

(क) मसविदा (documents) संकलन, जैसे

(i) विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षण की वर्तमान व्यवस्था।

(ii) प्रशिक्षण महाविद्यालयों में हिन्दी शिक्षकों के प्रशिक्षण की वर्तमान व्यवस्था।

(iii) विभिन्न आयोगों की सिफारिशें।

(iv) हिन्दी के सम्बन्ध में संविधान।

(v) विभिन्न राज्यों में हिन्दी के सम्बन्ध में अधिनियम।

(ख) उद्‌देश्य निर्धारण, जैसे

(i) मातृ-भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य तथा अधिगम-अनुभव (learning experiences)।

(ii) अन्य भाषा/इतर भाषा के रूप में।

(iii) हिन्दी तथा क्षेत्रीय भाषा/अंग्रेजी की तुलना।

(ग) शिक्षण सामग्री, जैसे

(i) मौखिक कार्य, वचन, व्याकरण और रचना के लिए पाठ्य पुस्तकें आदि शिक्षण-सामग्री तैयार करना।

(ii) निर्देश पुस्तिकाओं (Guide books) के सम्बन्ध में शोध।

(घ) शिक्षण-विधियां, जैसे भाषा के प्रत्येक अंग (उच्चारण, लिपि, वाचन, व्याकरण, कविता, रचना आदि) के लिए शिक्षण विधियां निर्धारित करना।

§ 197. अनुसन्धान की विधियां

हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र मे अनुसंधान की निम्न विधियां अपनाई जा सकती हैं : –

(1) सर्वेक्षण विधि (Survey Method)—

अनुसंधान के कई विषय सर्वेक्षण की अपेक्षा रखते हैं जैसे –

(i) हिन्दी के अध्यापकों की वर्तमान अवस्था।

(ii) हिन्दी की वर्तमान परीक्षाओं की जांच।

(iii) हिन्दी शिक्षण की वर्तमान व्यवस्था।

(iv) प्रचलित पाठ्य-पुस्तकें।

ऐसे विषयों की अभीष्ट सामग्री का सकलन करने के लिए निम्न रीतियां अपनाई जा सकती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(क) परीक्षा-पत्र (Tests)

(ख) प्रश्नावली (Questionairies)

(ग) साक्षात्कार (Interview)

(घ) निरीक्षण (Observation)

(ङ) वर्ग क्रमांक (Rating Scale)

(2) **प्रयोग विधि** (Experimental Method)—कई विषयों या समस्याओं के सम्बन्ध में प्रयोग की आवश्यकता होती है, जैसे (i) अक्षर-ज्ञान की विधियों का तुलनात्मक प्रयोग, (ii) शिक्षण की विधियां का तुलनात्मक प्रयोग, (iii) आधारभूत शव्दावली का निर्माण, (iv) अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में मातृभाषा की सहायता से हिन्दी पढ़ाने का फल। ऐसी समस्याओं के समाधान के लिए विद्यार्थियों पर प्रयोग करना आवश्यक है। प्रयोग का फल जानने के लिए या तो एक वर्ग लिया जाता है या दो समान वर्ग लिए जाते हैं। उदाहरणार्थ एक वर्ग को साधारण विधि से अक्षर ज्ञान कराया जाए, और दूसरे वर्ग को वाक्य विधि द्वारा। अवधि के बीतने पर दोनों वर्गों की उपलब्धियों की जांच हो सकती है, जिस से दोनों विधियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है। समान वर्गों से तात्पर्य यह है कि दोनों वर्गों के विद्यालयों की मध्यमान बुद्धि उपलब्धि मध्यमान अवस्था, पूर्वयोग्यता, अध्यापकों की योग्यता और कक्षा-प्रबन्ध, समान होना चाहिए।

(3) **व्यक्ति अध्ययन विधि** (Case study Method)—भाषा शिक्षण के क्षेत्र में कभी ऐसे बच्चों की शिक्षा की समस्या उत्पन्न होती है जो या तो पिछड़े हुए होते हैं, या पाठ में ध्यान ही नहीं देते, घर के लिए दिया गया काम करते ही नहीं, बहुत समय तक सिखाने पर भी भाषा किसी अंग जैसे (उच्चारण, अक्षर-विन्यास, वाचन, सुलेख आदि) में संतोषजनक प्रगति नहीं करते, कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के साथ नहीं चल सकते, अथवा जो अधिक प्रतिभाशाली होते हुए विशेष ध्यान की अपेक्षा रखते हैं। ऐसे सभी विद्यार्थियों का विशिष्ट अध्ययन करना पड़ता है। अमुक विद्यार्थी यदि पीछे हैं तो क्यों ? उसके मूल में कई कारण हो सकते हैं जैसे घरेलू परिस्थितियों में रुचि या अरुचि, शारीरिक या मानसिक दुर्बलताएं; असाधारण (न्यून व अधिक) बुद्धि, अध्यापक तथा सहपाठियों के प्रति भावना, स्कूल, वातावरण, कोई पुराना रोग इत्यादि। निदान के उपरान्त उचित उपाय अपनाए जा सकते हैं।

4) **सांख्यकी विधि** (Statistical Method) कई विषयों या समस्याओं का अध्ययन तत्सम्बन्धी आंकड़ों के द्वारा किया जा सकता है, जैसे पंजाब प्रांत में विभिन्न कक्षाओं में हिन्दी तथा पजाबी पढ़ने वालों की संख्या, तथा उनकी शिक्षा के प्रबन्ध के लिए अध्यापकों की आवश्यकता। इन आंकड़ों के अध्ययन से भावी समस्याओं पर प्रकाश डाला जा सकता है।

(5) **ऐतिहासिक विधि** (Historical M[illegible]od)—कभी-कभी किसी विषय का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ऐतिहासिक अध्ययन भी रखना पड़ता है, जैसे 'पिछले 60 वर्षों में हिन्दी शिक्षण की प्रगति'।

अध्यापक को चाहिए कि वह अनुसंधान की विधियों का सूक्ष्म अध्ययन करके अपने स्कूल की या अन्य कोई हिन्दी शिक्षा सम्बन्धी समस्या हाथ में ले। उपर्युक्त क्षेत्रों के अतिरिक्त सहस्रों छोटी-छोटी समस्याएं हमारे सामने उपस्थित हैं, जिनके समाधान के लिए अटूट परिश्रम, लग्न और अध्यवसाय की आवश्यकता है।

अभ्यासात्मक प्रश्न

1. अनुसन्धान से क्या तात्पर्य है ? हिन्दी भाषा को शिक्षा में अनुसन्धान की कितनी आवश्यकता है। [§ 195, 196]

2. हिन्दी भाषा की शिक्षा में अनुसंधान के कौन-कौन से क्षेत्र हैं ? कुछ महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए और उनकी आवश्यकताओं पर प्रकाश डालिए। [§ 196]

3. हिन्दी भाषा की शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान की कौन-कौन सी विधियों अपनाई जा सकती है ? प्रत्येक का सोदाहरण विवरण दीजिए। [§ 197]

4. भाषा-शिक्षा सम्बन्धी ऐसी दस समस्याओं का उल्लेख कीजिए जो आपके सम्मुख उपस्थित हैं। उन पर शोध-कार्य करने के लिए शोध की जिन विधियों को आप अपनाएगे, उनका पृथक् विवरण दीजिए।

सहायक पुस्तकें

1. Good, Barr and Scates : Methodology of Educational Research.
2. Oliver : Research in Education.
3. Fleming, C. M. Research and Basic Curriculum (University of London Press) Ch. 2, 4, 5, 6, 7.

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

35

पाठ योजना

§ 198. सामान्य परिचय—

कार्य के प्रत्येक क्षेत्र में योजना की आवश्यकता पड़ती है। मकान बनाना हो, तो योजना तैयार करनी पड़ती है। योजना के बिना अभीष्ट सफलता नहीं मिल सकती। हमारी सरकार भी देश के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक निर्माण के लिए प्रथम पंचवर्षीय योजना, द्वितीय पंचवर्षीय योजना आदि बनाती है। अध्यापक को भी इस प्रकार पाठ पढ़ाने से पहले योजना आदि बनानी पड़ती है। यदि शिक्षण पाठ शिक्षण के लिए भली-भांति तैयार नहीं, तो विद्यार्थी की समझ में भी कुछ नहीं आता।

(क) पाठ योजना के लाभ—

(1) पाठ योजना से यह निश्चित हो जाता है कि कब कितना पढ़ाना है।

(2) पाठ-योजना बनाने से शिक्षक नियम और क्रम से कार्य करता है और उसकी पाठन-विधि सुव्यवस्थित हो जाती है।

(3) योजना बनाते समय, विषय का चुनाव, दृश्य और श्रव्य साधनों का चुनाव तथा पाठ सम्बन्धी अन्य क्रियाओं का चुनाव तथा प्रबन्ध करना पड़ता है। जिस से पाठ सफल हो जाता है।

(4) पाठ-योजना से शिक्षक में आत्मविश्वास बढ़ता है। आने वाली कठिनाइयों को जान कर और उनका सामना करने के लिए तैयार होकर वह आत्मविश्वास के के साथ कक्षा में पढ़ाता है।

(ख) पाठ योजना की आवश्यकता—

1. अध्यापक की पढ़ाने में रुचि हो।
2. वह पढ़ाने में आनन्द प्राप्त करता हो?
3. उसे अपने विषय की पूरी जानकारी हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

4. उसे शिक्षण-विधि का पूरा ज्ञान हो।

5. वह शिक्षा-मनोविज्ञान के सिद्धान्तों से अनभिज्ञ न हो।

6. उसे विद्यार्थियों की अवस्था, रुचि, पूर्व-ज्ञान और योग्यता का पूरा ज्ञान हो।

7. उसे दृश्य और श्रव्य साधनों का तथा उनके प्रयोग का ज्ञान हो।

(ग) योजना के दो प्रकार—

1. **साल भर के काम की योजना बनाना**—पाठ्यक्रम (Syllabus) को मासिक, साप्ताहिक और दैनिक इकाइयों में बांटना और भाषा के विभिन्न प्रकार के पाठों (जैसे गद्य, पद्य, नाटक, व्याकरण, रचना, सुलेख, श्रुतलेख आदि) के लिए समय-पत्रक (Time Table) तैयार करना।

2. **एक दिन के प्रत्येक पाठ की योजना तैयार करना**—प्रथम प्रकार की योजना सरल होने पर भी अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि इसके बिना पाठ्य-क्रम अभीष्ठ समय में समाप्त न होने की आशंका रहती है और बहुधा ऐसे हो भी जाता है। ऐसी योजना तैयार करने के लिए अध्यापक को पाठ्यक्रम का अध्ययन तथा पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए और सम्पूर्ण कार्य को बांट कर, मास, सप्ताह और दिन का काम निश्चित कर लेना चाहिए।

द्वितीय प्रकार की योजना तैयार करने के लिए अध्यापक को एक पाठ की सीमा निर्धारित करके उसकी शिक्षण विधि पर विचार करना चाहिए। ऐसी पाठ-योजना भी दो प्रकार की होती है :

(i) **विस्तृत पाठ योजना**—यह योजना उन अध्यापकों के लिए है, जो ट्रेनिंग कालेजों के छात्राध्यापक हों। क्योंकि ट्रेनिंग प्राप्त करनी होती है, अतः उनको विस्तृत पाठ योजना बनानी होती है जिससे वे सफल और परिपूर्ण योजना द्वारा पाठ-शिक्षण में सफल हो जाएं। एक बार वे इस कार्य में प्रवीण बन गए तो उनको फिर विस्तृत पाठ योजना बनाने की आवश्यकता नहीं रहती।

(ii) **संक्षिप्त पाठ योजना** साधारण अध्यापकों को, जो प्रशिक्षित हों और जो विस्तृत पाठ-योजना तथा अध्यापनकला में प्रवीण हों, विस्तृत पाठ-योजना की कोई आवश्यकता नहीं रहती। वे संक्षेप में पाठ की सीमा (जहां तक एक दिन में पढ़ाया जाए), पाठ के दृश्य और श्रव्य साधन, पाठन विधि, व्याख्या की टिप्पणियाँ तथा आवश्यक प्रश्न निर्धारित करके तथा अपनी डायरी में उसे लिख कर पाठ पढ़ाना आरम्भ करेंगे।

नीचे विस्तृत पाठ-योजना की रूप रेखा बताई जाती है—

§ 199. पाठ योजना की रूप रेखा—

पाठ-योजना बनाने के निम्न सोपान होते हैं :—

1. अध्यापक, कक्षा, विषय आदि का उल्लेख जैसे—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिनांक——————4 नवम्बर, 1983

अध्यापक का नाम———चन्द्रधर शर्मा

कक्षा——————छठी

विद्यार्थियों की औसत आयु=14 वर्ष

विषय—————गद्य-पाठ

प्रकरण— —ताजमहल

समय— —30 मिनट

2, **सहायक सामग्री**—इस सम्बन्ध में उन सभी दृश्य और श्रव्य साधनों का उल्लेख करना चाहिए, जिनका प्रयोग पढ़ाने में करना हो। जैसे—श्यामपट, मानचित्र, चित्र, फ्लैश कार्ड, आदि।

3. **उद्देश्य**—प्रत्येक प्रकार के पाठ के अपने उद्देश्य हैं। जिनका उल्लेख पीछे हो चुका है। प्रस्तुत पाठ के सभी उद्देश्य निश्चित करने चाहिएं और उनका उल्लेख यहां पर करना चाहिए।

हिन्दी शिक्षण के उद्देश्य सम्बन्धी प्रकरण में पीछे यह स्पष्टीकरण किया गया है कि ये उद्देश्य ज्ञान, कौशल, सौन्दर्यबोध आदि विभिन्न प्रकार के हैं। किसी भी पाठ को पढ़ाते समय, उद्देश्यों का वर्गीकरण करना चाहिए। पुरानी परिपाटी के अनुसार उद्देश्य दो प्रकार के लिखे जाते हैं—सामान्य (General) और विशेष (Specific)। लेकिन अब नई परिपाटी के अनुसार ज्ञानात्मक, भावात्मक और कौशलात्मक आदि विभिन्न प्रकार के उद्देश्य पृथक् रीति से स्पष्ट किए जाते हैं, जैसे पाठ संकेत 12, 13 और 14 में किया गया है।

4 **पूर्व-ज्ञान**—यहां पर यह बताना चाहिए कि विद्यार्थी प्रस्तुत पाठ के सम्बन्ध में कितनी जानकारी रखते हैं, अर्थात् उन्होंने इस विषय में अब तक क्या-क्या पढ़ा है। और उनकी इस विषय में पृष्ठ-भूमि कितनी है।

कल का पढ़ाया हुआ पाठ आज के पाठ का पूर्व-ज्ञान हो सकता है, यदि आज उसी पाठ का अगला भाग पढ़ाना हो। यदि पाठ नया हो, तो उस पाठ के विषय में विद्यार्थी जो कुछ जानते हैं, उसी का उल्लेख करना चाहिए। नीचे एक-दो उदाहरण दिए जाते हैं :-

(i) पाठ— ———गद्य

प्रकरण — ——किसान

पूर्व ज्ञान -————बच्चों ने किसान को खेत में काम करते देखा है।

(ii) पाठ———————पद्य

प्रकरण ————भारत-देश (कविता)

पूर्व ज्ञान——— विद्यार्थी भारत-देश के सम्बन्ध में कुछ पद्य पढ़ चुके हैं और उसकी जानकारी रखते हैं तथा कई कविताएं इसी विषय पर पढ़ चुके हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) पाठ - ------ व्याकरण
प्रकरण— — ——विशेषण के भेद
पूर्व ज्ञान— — - — —विद्यार्थी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया विशेषण आदि पहचान सकते हैं। वे विशेषण के लक्षण आदि पढ़ चुके हैं।

5. **प्रस्तावना अथवा भूमिका** (Introduction)—प्रस्तावना में विषय को विद्यार्थी के सामने उनकी रुचि तथा पूर्वार्जित ज्ञान के आधार पर उपस्थित करने का यत्न किया जाता है। शिक्षक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान की सहायता से उन्हें ऐसे प्रश्न पूछता है, जिनके उत्तर से पाठ का उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है तथा प्रस्तुत पाठ से सम्बन्ध जुड़ जाता है। इसके अतिरिक्त अध्यापक नए पाठ में रुचि उत्पन्न करता है और विद्यार्थियों का ध्यान भी उसकी ओर आकर्षित करता हैं। इस प्रकार इस अवस्था में विद्यार्थियों को पाठ पढ़ने के लिए तैयार किया जाता है। संक्षेप में प्रस्तावना के अनेक लाभ हैं :–

(i) पीछे की घण्टियों में विद्यार्थियों का मन अन्य विषयों तथा पाठ में लगा रहता है। उन विषयों में या पाठों से उनका ध्यान हटाने के लिए प्रस्तावना की आवश्यकता है।

(ii) मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के अनुसार भी नए विचार का पुरानी विचार-शृंखला के साथ जोड़ने के लिए प्रस्तावना रूपी कड़ी की आवश्यकता पड़ती है।

विचारानुबन्ध या पूर्वानुवर्ती ज्ञान (Appreception of thought) समझे बिना अध्यापक की शिक्षण-विधि सफल नहीं हो सकती। बुनियादी शिक्षा में समवाय का सिद्धान्त (Principle of Correlation इसी मनोवैज्ञानिक तथ्य पर अवलम्बित है। अत: नए पाठ के साथ अथवा पूर्व परिचित अन्य विषयों के साथ सम्बन्ध जोड़ना चाहिए। सम्बन्ध न तो बनावटी हो और न जटिल। ज्ञात से अज्ञात की ओर जाने के स्थान पर अज्ञात से ज्ञात की ओर नहीं जाना चाहिए। एक ही विषय, जैसे उद्योग के सम्बन्ध में प्रश्न पूछते हुए, प्राचीन काल में तथा महात्मा बुद्ध के समय में तकली के प्रयोग पर पहुंचना और फिर उद्देश्य कथन करना कि आज हम महात्मा बुद्ध का पाठ पढ़ेंगे, बनावटी सम्बन्ध जोड़ना, नहीं तो और क्या है ?

(iii) प्रस्तावना में उद्देश्य कथन (कि आज हम अमुक पाठ पढ़ेंगे), पाठ के लिए आवश्यक है, नहीं तो आरम्भ में ही उद्देश्य कथन करना, अस्वाभाविक, आकस्मिक असामयिक और अनुचित होता है।

(iv) [illegible] से नए पाठ में [illegible] हो जाती है। विद्यार्थियों के मन में नया पाठ पढ़ने के लिए उत्सुकता और जिज्ञासा पैदा हो जाती है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रस्तावना निम्न प्रकार से की जा सकती है :—

(क) प्रश्नों द्वारा, (ख) चित्र द्वारा, (ग) मूर्तियों Models) द्वारा, (घ) प्रसंग द्वारा।

6. उद्देश्य कथन - प्रस्तावना के बाद स्वाभाविक रीति से उद्देश्य कथन की बारी आती है। अध्यापक कहेगा, अच्छा आज हम अमुक विषय के सम्बन्ध में (जैसे किसान के सम्बन्ध में) एक पाठ पढ़ेंगे', अथवा 'आओ आज हम होली पर एक प्रस्ताव लिखेंगे।' इस प्रकार उद्देश्य कथन संक्षिप्त तथा स्पष्ट होना चाहिए।

7 विषय प्रवेश या मूल पाठ –(Presentation)—यहां अध्यापक पाठ्य-सामग्री को विधिपूर्वक उपस्थित करता है। इस प्रकरण में पाठ पढ़ाने की विधि का पूरा ब्यौरा लिखना चाहिए। भाषा के प्रत्येक प्रकार के पाठ की अपनी-अपनी शिक्षण विधि होती है। उस शिक्षण विधि के अनुसार विषय प्रवेश की भी भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का वर्णन करना चाहिए। उन अवस्थाओं या सोपानों का वर्णन पीछे अपने-अपने प्रसंग में भली-भांति हो चुका है। फिर भी संक्षेप में उन सोपानों की रूप रेखा नीचे बताई जाती है :—

(क) गद्य पाठ -

(i) अध्यापक द्वारा आदर्श।
(ii) विद्यार्थियों का व्यक्तिगत वाचन।
(iii) व्याख्या।
(iv) मौन-पाठ।
(v) बोध परीक्षा के प्रश्न।

व्याख्या विभाग में उन कठिन शब्दों, वाक्यों तथा मुहावरों की सूची लिखनी चाहिए, साथ ही व्याख्या करने की विधि भी बतानी चाहिए। इस प्रकार पृष्ठ के दो भाग करके, एक ओर वस्तु और दूसरी ओर विधि लिखनी चाहिए।

(ख) पद्य-पाठ के लिए—

(i) अध्यापक का सुन्दर वाचन।
(ii) विद्यार्थियों का व्यक्तिगत वाचन।
(iii) व्याख्या तथा भावविश्लेषण।
(iv) वाचन तथा आवृत्ति।

(ग) नाटक पाठ के लिए—

(i) आदर्श वाक्य-पाठ प्रणाली के अनुसार अध्यापक द्वारा वाचन।
(ii) व्याख्या।
(iii) कक्षाभिनय-प्रणाली द्वारा विद्यार्थियों का वाचन।
(iv) समीक्षा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(घ) व्याकरण के लिए—

(i) आगमन प्रणाली से उदाहरण उपस्थित करना।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ii) उदाहरण की समीक्षा ।

(iii) नियमीकरण (Generalisation) ।

(iv) निगमन प्रणाली द्वारा सिद्धान्त का प्रयोग (Application) ।

(ङ) रचना पाठ के लिए

रचना की किसी न किसी विधि द्वारा रचना का विस्तार । यदि रूप-रेखा विधि अपनाई जाए तो रचना की रूपरेखा तथा प्रष्टव्य प्रश्न भी लिखने चाहिएं ।

प्रत्येक पाठ के पढ़ने की विधि विस्तार-पूर्वक पहले लिखी जा चुकी है । उसी के अनुसार यहां पर पाठ्य पाठ को विस्तारपूर्वक लिखना चाहिए ।

पाठ योजना का यही मार्ग प्रमुख और महत्त्वपूर्ण है । इसी में पाठ में सफलता या असफलता का ज्ञान हो जाता है । पीछे भाषा शिक्षण के सम्बन्ध में जितनी भी विधियां या प्रणालियां बताई गई हैं, उनका प्रयोग यहां किया जा सकता है ।

शब्दार्थ, उदाहरण, रूपरेखा, मानचित्र, तालिका आदि लिखने के लिए श्यामपट का भी प्रयोग करना पड़ता है । पाठ योजना में उसका भी उल्लेख करना चाहिए ।

सामाजिक अध्ययन के पाठों में इस सोपान को विषय और विधि (Matter and Method), दो भागों में बांटा जा जाता है परन्तु हिन्दी शिक्षण में यह समीचीन नहीं । हां, एक महत्त्वपूर्ण सुधार है । मूलपाठ को विभिन्न अन्वितियों (Units) में बांटना । प्रत्येक अन्विति के बारे में यदि तालिका बनानी हो तो इस प्रकार होगी :

अन्विति और सोपान	अध्यापक क्रिया	छात्र क्रिया

इस प्रकार के पाठ संकेत को **अन्विति योजना** (Unit Plans) कहते हैं । पाठ 12-14 तक यही योजना अपनाई गई है ।

8. **आवृत्ति** (Recapitulation)—मूल पाठ पढ़ाने के बाद उसे दोहराने की आवश्यकता भी पड़ती है । क्योंकि दोहराने के बिना पाठ अधूरा रह जाता है । दो-तीन मिनटों में समस्त पाठ के सम्बन्ध में कुछ चुने-चुने, आवश्यक प्रश्न पूछने चाहिएं । जिनसे सारे पाठ की एक आवृत्ति (Revision) हो जाए और सभी विचार चल-चित्र की भांति विद्यार्थियों के सामने क्रमपूर्वक आ जाएं ।

9. **प्रयोग, अभ्यास या गृह कार्य** (Application and Home Task)--अर्जित ज्ञान को स्थायी रखने के लिए प्रयोग (Application) की आवश्यकता है । यदि सीखे हुए ज्ञान को प्रयोग का अवसर नहीं मिलता, तो वह लुप्त हो जाता है । इस सम्बन्ध में दिए हुए अभ्यासात्मक प्रश्नों का उत्तर घर पर लिख कर लाने के लिए कहना चाहिए । गद्य का पाठ हो, तो शब्दों का वाक्यों में प्रयोग, शब्दार्थ, वाक्यार्थ, गद्यांश सार, समीक्षा कथा वर्णन आदि प्रश्न पूछने चाहिएं । पद्य का पाठ हो तो किसी पद की व्याख्या लिख कर लाने के लिए कहना चाहिए । नाटक पाठ में किसी पात्र का चरित्र चित्रण अथवा कथासार लिखने का आदेश देना चाहिए । व्याकरण पाठ में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पढ़ाए हुए सिद्धान्त के प्रयोग के लिए कुछ प्रश्न पूछने चाहिएं। जिनका उत्तर वे घर पर लिख कर लाएं। कक्षा में मौखिक रचना समाप्त होने के बाद, उसी विषय को घर पर लिखित रूप में लाने के लिए कहना चाहिए। इसी प्रकार द्रुत पाठ के अन्त में पाठ के सम्बन्ध में कई प्रश्नों का उत्तर घर पर लिख कर लाने के लिए कहना चाहिए। इन सभी प्रश्नों का घर पर लिख लाना ही पर्याप्त नहीं, लिखित कार्य का संशोधन जब तक न हो, तब तक प्रयोग या अभ्यास पूर्ण नहीं। संशोधन की विधि पहले बताई जा चुकी है।

सक्षेप में यह पाठ योजना की रूपरेखा है, जो अध्यापक का पथ निर्देश कर सकती है, परन्तु कभी-कभी इस प्रकार की योजना का दुरुपयोग हुआ है। इसलिए योजना प्रयोग के सम्बन्ध में कुछ आवश्यक बातें आगे बताई जाती हैं :—

§ 200. योजना का उचित प्रयोग—

(1) उपर्युक्त योजना का उद्देश्य पाठ सफल बनाना है। यह केवल साधन है, न कि साध्य। अतः यदि पाठ सफल हो, तो योजना भी सफल है। असफल पाठ की योजना कितनी भी विस्तृत हो, असफल कहलाएगी। हमारी मोटर मूल्यवान होकर भी तभी उपयोगी कहलाएगी, जब वह हमें अभीष्ट स्थान पर पहुंचा सकेगी। पाठ-योजना को भी इसी दृष्टिकोण से देखना चाहिए।

(2) पाठ-योजना में रूढ़िवादी नहीं बनना चाहिए। उपयुक्त सोपान सहायक-मात्र हैं। इन निर्देशों का पालन करना या न करना, अध्यापक के अपने हाथ में है। यह केवल निर्देश (Sugges ions) है, आदेश नहीं। अध्यापक उनमें अपनी इच्छानुसार परिवर्तन कर सकता है। बहुधा देखा गया है कि रूढ़ि के बन्धन में पड़कर अध्यापक को कक्षा में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसे आवृत्ति भी करानी है और गृह-कार्य के लिए प्रश्न भी लिखाने हैं, इस विचार से पाठ जल्दी-जल्दी समाप्त करने लगते हैं। रुचि बढ़ाने के लिए अवश्य ही चित्र भी उपस्थित करते हैं—इस विचार से वे बेढंगे चित्र लाकर अस्वाभाविक रूप में, जबकि पाठ का उन चित्रों के साथ कोई विशेष सम्बन्ध नहीं होता, दिखाने लगते हैं। इस प्रकार की शब्दार्थ या व्याख्या अधूरी रहती है, कभी स्वाभाविकता आ जाती है, कभी विद्यार्थियों के मन में शंकाएं बनी रहती हैं और कभी अध्यापक भी स्वयं अनुभव करता है कि पाठ सफल नहीं रहा। अध्यापक को याद रखना चाहिए कि पाठ की सफलता ही उसका लक्ष्य है। यदि उसकी शिक्षण विधि ठीक हो, यदि विद्यार्थी पाठ भली-भान्ति समझ सकें और यदि विद्यार्थी पाठ में रुचि के साथ ध्यानमग्न रहें तो अध्यापक का काम सिद्ध हुआ। सफल अध्यापक तैयारी खूब करते हैं, परन्तु योजना के बन्धन में नहीं पड़ते।

(3) बहुत समय से ट्रेनिंग कालेजों में एक पुराने शिक्षा-विचारक हर्बार्ट (Herbart) के पांच सोपान (Five Steps) सिखाए जाते रहे हैं। ये पांच सोपान अग्र लिखित हैं —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) प्रस्तावना (Introduction or Prepration)

(2) विषय प्रवेष (Presentation)

(3) व्यवस्था और तुलना (Comparison or Association)

(4) नियमीकरण (Generalisation)

(5) अभ्यास (Application)

उपर्युक्त सोपानों में तीसरा और चौथा सोपान भाषा शिक्षण के सम्बन्ध में उपयोगी नहीं। नियमीकरण केवल व्याकरण में होता है, गद्य या पद्य से नहीं। तुलना गद्य पढ़ाने में कभी यह नियम काम आ सके अन्यथा नहीं। अत: ये सोपान सर्वथा प्रचलित नहीं रह सके। इनका संशोधित रूप ही उस प्रकरण में प्रस्तुत किया गया है, और ये सोपान भी, जैसे पहले कहा गया है, सहायक मात्र हैं, आदर्श नहीं।

— — —

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

36
पाठ योजना के नमूने

पाठ योजना 1.

दिनांक

अवधि : 35 मिनट

विषय--हिन्दी

प्रकरण : श्रुतलेख

कक्षा—पांचवीं

विद्यार्थियों की आयु 10 वर्ष

सामान्य उद्देश्य :— बच्चों के सूक्ति भण्डार तथा शब्द भण्डार में व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि कराना ।

कठिन शब्दों को समझाना ।

विशेष उद्देश्य :— बच्चों को श्रुतलेख लिखवाना तथा शब्दों को ठीक रूप से लिखवाना ।

बच्चों को दत्तचित्त होकर बोली हुई भाषा को शुद्धता एवं स्वच्छता-पूर्वक लिखने का अभ्यास करना ।

बच्चों को भाषा के क्लिष्ट शब्दों शुद्धतापूर्वक लिखने के योग्य बनाना तथा उनमें सुलेख लिखने की इच्छा उत्पन्न करना ।

सहायक सामग्री :— कक्षा में साधारणतया प्रयोग किए जाने वाला सामान (चाक, डस्टर, श्यामपट तथा पाठ्य-पुस्तक)

पूर्व ज्ञान :— बच्चे पाठ्य-पुस्तकों के कई पाठ पढ़ चुके हैं तथा बोली हुई सरल भाषा को सुगमतापूर्वक लिख सकते हैं ।

प्रस्तावना :— श्रुतलेख के लिए चुने गए अनुच्छेद को एक बार पढ़कर बच्चों को सुनाया जाएगा । बोले हुए गद्य खण्ड के क्लिष्ट शब्दों को श्यामपट पर लिख दिया जाएगा ।

उद्देश्य कथन :— बच्चो ! आज हम श्रुतलिपि लिखेंगे इसलिए अपनी अभ्यास पुस्तिकाएं तथा लेखनी इत्यादि निकालो ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

प्रस्तुतीकरण :— बच्चों के पूर्ण ज्ञान के आधार पर विषय उपस्थित करने का प्रयत्न किया जाएगा और नीचे लिखी विधि के अनुसार अनुच्छेद लिखाया जाएगा।

शुद्ध तथा साफ आवाज़ में पहले एक लाइन बोली जाएगी और बच्चे लिखेंगे। एक-एक लाइन को दो तीन बार बोला जाएगा ताकि बच्चे अच्छी तरह समझ सकें। उचित विरामों और शुद्ध उच्चारण तथा उदात्त अनुदात्त का विशेष तौर पर ध्यान रखा जाएगा।

सारा गद्यांश बच्चों के लिख लेने पर वही गद्यांश एक बार फिर बोला जाएगा ताकि बच्चों का यदि कोई शब्द रह गया हो तो वे उसे ठीक कर लें।

कक्षा में भी बच्चों का भली प्रकार निरीक्षण किया जाएगा ताकि बच्चे एक-दूसरे की नकल न कर सकें।

बच्चों के बैठने और लिखने के आसन पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा।

गद्यांश लिखने के बाद प्रत्येक बालक की अभ्यास पुस्तिका बदलवा कर उसे तीसरे बालक के पास दी जाएगी।

श्यामपट पर कठिन शब्द लिखे जाएंगे। अशुद्धियों के ऊपर श्यामपट पर लिखे हुए क्लिष्ट शब्दों की सहायता से छात्र गुणा × का चिन्ह लगा देंगे।

इसके पश्चात् प्रत्येक बच्चे को अभ्यास-पुस्तिका वापस दी जाएगी।

पुनरावलोकन प्रयोग पाठ की आवृत्ति के लिए प्रत्येक अशुद्धि को पांच-पांच बार अभ्यास-पुस्तिका के बाएं पृष्ठ पर लिखने के लिए कहा जाएगा।

श्यामपट कार्य :— अशुद्धियां ठीक करने के लिए कठिन शब्द श्यामपट पर लिख कर समझाए जाएंगे।

गृह कार्य :— उसी गद्यांश को घर से फिर लिख लाने के लिए कहा जाएगा।

पाठ योजना 2.

कक्षा—सातवीं विद्यार्थियों की औसत आयु = 13 वर्ष

विषय—हिन्दी (गद्य) प्रकरण = गुरुदेव रवीन्द्रनाथ

समय 40 मिनट

सहायक सामग्री—श्यामपट, चाक, झाड़न, पाठ्य-पुस्तक और महर्षि टैगोर का चित्र।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठ उद्देश्य –

सामान्य उद्देश्य—पाठ को आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक बनाते हुए छात्रों को पाठ पढ़ने के लिए प्रेरित करना ।

छात्राओं के शब्द भण्डार और सूक्ति भण्डार की वृद्धि करना ।

छात्राओं को लिपि का ज्ञान प्रदान करना तथा भिन्न-भिन्न शैलियों से परिचित कराना ।

छात्राओं की बोध शक्ति का विकास करना ताकि छात्राएं विचार तथा भाव ग्रहण कर सकें ।

बालिकाओं की व्यावहारिक ज्ञान वृद्धि करना ताकि वे आनन्द प्राप्त कर सकें ।

बालिकाओं की कल्पना शक्ति का विकास करना ।

विशेष उद्देश्य—

छात्राओं का उच्चारण सुधारना ।

छात्राओं को गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के विषय में ज्ञान प्रदान करना ।

निम्नलिखित शब्दावली का ज्ञान-भण्डार प्रदान करना । विद्वत्ता, चिरकाल, कुशाग्र बुद्धि, हृदय-हारिणी, वक्तृता तथा आराधक ।

पूर्वज्ञान—बालिकाओं ने ' रवीन्द्र नाथ टैगोर" का नाम तो सुना है तथा अन्य कुछ कवियों के जीवन-चरित्र के विषय में भी अधिक मात्रा में ज्ञान प्राप्त किया है ।

प्रातःकाल उन्होंने टैगोर जयन्ती मनाई जिसमें कई छात्राओं ने टैगोर जीवनी पर किंचित प्रकाश डाला ।

समवाय का केन्द्र ————सामाजिक वातावरण ।

समवाय की इकाई ———टैगोर जयन्ती ।

समवाय———प्रस्तुत पाठ का सम्बन्ध प्रातःकाल मनाई गई टैगोर जयन्ती के साथ जोड़ा जाएगा । समवाय के लिए निम्न प्रश्न पूछे जाएंगे (1) सवेरे हमने किस महापुरुष की जयन्ती मनाई ।

(2) महाकवि टैगोर का स्वर्गवास कब हुआ ?

(3) रवीन्द्र नाथ टैगोर का नाम क्यों प्रसिद्ध है ?

इस प्रकार उपरोक्त प्रश्नों द्वारा छात्राओं की पूर्व ज्ञान परीक्षा ली जाएगी और प्रस्तुत पाठ के साथ सम्बन्ध स्थापित करते हुए और पाठ को प्रभावशाली बनाते हुए छात्राओं को पाठ के लिए प्रेरित किया जाएगा ।

उद्देश्य कथन—अध्यापिका छात्राओं से कहेगी, "आज हम पृष्ठ तीन पर 'गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर' नामक पाठ पढ़ेंगे ।

विषय उपस्थापन—छात्राओं के पूर्व ज्ञान के आधार पर अध्यापिका द्वारा विषय उपस्थित करने का प्रयत्न किया जाएगा और छात्राओं के सामने विधिपूर्वक पाठ्य-सामग्री को उपस्थित करने की चेष्टा की जाएगी और बालिकाओं को पुस्तके निकालने के लिए कहा जाएगा ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदर्श वाचन—जब सभी छात्राएं पुस्तकें निकाल लेंगी तो पहले अध्यापिका स्वयं पढ़ेगी अर्थात् आदर्श वाचन करेगी। ताकि छात्राओं को पढ़ते समय किसी प्रकार का कष्ट अनुभव न हो।

विद्यार्थियों द्वारा व्यक्तिगत वाचन—अध्यापिका के वाचन करने के पश्चात् बालिकाओं द्वारा व्यक्तिगत वाचन कराया जाएगा। यदि कोई छात्रा अशुद्ध वाचन करेगी तो पहले उसे अन्य छात्राओं द्वारा शुद्ध कराने का प्रयत्न किया जाएगा, छात्राओं को न आने पर अध्यापिका शुद्ध करके बताएगी।

व्याख्या—छात्राओं द्वारा व्यक्तिगत वाचन समाप्त करने के पश्चात् अध्यापिका द्वारा ''गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर'' नामक पाठ अच्छी प्रकार विस्तार से सरल बना कर अर्थात् कहानी रूप में छात्राओं के सामने उपस्थित किया जाएगा तथा कठिन शब्दों के अर्थ पहले बालिकाओं से पूछे जाएंगे, असमर्थ रहने पर अध्यापिका इस प्रकार बताएगी।

शब्दों की व्याख्या

शब्द	
विद्वता	इस शब्द का पर्यायवाची शब्द अध्यापिका (महानता) बताएगी।
चिरकाल	इस शब्द को अध्यापिका खण्ड-खण्ड करके समझाएगी। चिर+काल। 'चिर' का अर्थ होता है देर और 'काल' का अर्थ है समय, अर्थात् देर से।
कुशाग्रबुद्धि	कुशाग्र+बुद्धि। कुशाग्र का अर्थ है प्रखर या तेज़, बुद्धि का अर्थ है दिमाग। अत: प्रखर बुद्धि वाला।
वक्तृता	वक्तृता शब्द वक्ता से बना है। वक्ता का अर्थ है बोलने वाला और वक्तृता का अर्थ है वाणी।
हृदय-हारिणी	हृदय+हारिणी। हृदय का अर्थ मन और हारिणी का अर्थ है आकर्षित करना। अत: मन को प्रसन्न करने वाली व आकर्षित करने वाली।
आराधक	''आराधक'' शब्द आराधना से बना है। आराधना का अभिप्राय है पूजा करना। इसलिए आराधक का अर्थ पुजारी होगा।
आख्यायिकाएं	आख्यायिकाएं शब्द का अर्थ पर्यायवाची शब्द कहानियां आदि द्वारा बताया जाएगा। अतः किस्से कहानियां।

व्याकरण तथा प्रयोग—कठिन शब्दावली को सरल करने के लिए बालिकाओं को वाक्यों में प्रयोग करने के लिए कहा जाएगा उनके असमर्थ होने पर अध्यापिका द्वारा ठीक करने का प्रयास किया जाएगा और निम्नलिखित स्थानों की पूर्ति व्याकरण का ज्ञान प्रदान करने के लिए कराई जाएगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(1) रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी— —का परिचय दिया।

(2) वह – भी अच्छे थे।

(3) उनकी वक्तृता बड़ी ही— ।

(4) गुरुदेव रवीन्द्रनाथ —।

इस प्रकार बालिकाओं को प्रयोग का समय दिया जाएगा।

मौन पाठ इस प्रकार व्याख्या और व्याकरण तथा प्रयोग के पश्चात् बालिकाओं को मौन पाठ करने के लिए कहा जाएगा ताकि जो कुछ बालिकाओं ने पढ़ा है उसके विषय में वह स्वाध्याय कर पाए तथा कुछ सोच-विचार से काम लें।

बोध परीक्षा—'गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर' के विषय में जो कुछ बालिकाओं ने पढ़ा है उसकी आवृत्ति के लिए मालूम करने के लिए कि बालिकाओं ने इस विषय में कितना ज्ञान प्राप्त किया है निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाएंगे :—

(1) रवीन्द्र नाथ टैगोर का जन्म कब हुआ ?

(2) टैगोर के पिता का क्या नाम था ? और टैगोर ने शिक्षा कहां प्राप्त की थी ?

(3) गुरुदेव ने अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय कैसे दिया ?

(4) टैगोर ने कौन-कौन सी पत्रिकाओं का सम्पादन किया हुआ है ?

(5) 'रवीन्द्र नाथ टैगोर देशभक्त थे' यह युक्ति कहां तक सिद्ध है ? इस पर अपने विचार प्रकट करो।

गृह कार्य—गृह कार्य के लिए बालिकाओं को "गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर" के विषय में अपने शब्दों में एक लेख लिखने के लिए दिया जाएगा।

(6) **श्यामपट कार्य**—पाठ विचार में पाठ की व्याख्या करते समय तथा व्याकरण और प्रयोग के सम्बन्ध में आवश्यकतानुसार भली-भान्ति श्यामपट का प्रयोग किया जाएगा।

पाठ योजना 3

कक्षा...	...	...	छठी
औसत आयु ..	...	...	11 वर्ष
विषय...	...	...	हिन्दी
उपविषय...	...	...	निबन्ध 'रेलवे स्टेशन का दृश्य।

सहायक सामग्री—

एक सहायक कमरा या कक्षा भवन, श्यामपट, झाड़न, चाक. एक रेलवे स्टेशन का बड़ा चार्ट, संकेत करने के लिए एक बड़ा फुट्टा।

सामान्य उद्देश्य—

(1) भाव अभिव्यंजन को प्रकट करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(2) लेखन शक्ति को बढ़ाना।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(3) शब्द भण्डार में वृद्धि करना ।

(4) बच्चों के व्यवहारिक ज्ञान में वृद्धि करना ।

(5) बच्चों के शुद्ध विचार व्यक्ति को प्रोत्साहित करना ।

विशेष उद्देश्य—

(1) बच्चों को रेलवे स्टेशन से परिचित कराना तथा उनके मौखिक भाव प्रकाशन को उन्नति देना ।

(2) चार्ट पर भिन्न वस्तुओं को दिखा कर उनकी तीव्र बुद्धि का विकास करना ।

समवाय का केन्द्र—सामाजिक वातावरण ।

समवाय का अवसर—बच्चे ताजमहल देखने के लिए रेल द्वारा यात्रा करके वापिस आए हैं और वह रेलवे स्टेशन के विषय के कुछ ज्ञान प्राप्त करके आए हैं । बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न पूछे जाएंगे :—

(1) बच्चो ! आने-जाने के कौन से साधन हैं ?

(2) जब आप ताजमहल देखने गए तो आपने किस साधन से यात्रा की ?

(3) जहां रेलगाड़ी ठहरती है उस स्थान को क्या कहते हैं ?

(4) स्टेशन पर गाड़ी आते समय कैसा दृश्य होता है ।

उद्देश्य कथन—इन प्रश्नों का उत्तर पाकर अध्यापिका उद्देश्य कथन करेगी कि आज हम 'रेलवे स्टेशन' के दृश्य पर लिखेंगे ।

प्रस्तावना—शिक्षिका विधि को भिन्न-भिन्न भागों में विभाजित कर प्रश्नोत्तर प्रणाली का अनुकरण करेगी । साथ ही साथ श्यामपट का यथायोग्य प्रयोग भी करेगी ।

प्रस्तुतीकरण

वस्तु	विधि
	अध्यापिका चार्ट खोलेगी और बुकिग आफिस की ओर सकेत करती हुई बच्चों से पूछेगी ।
यह टिकट घर है ।	(1) बच्चो ! यह क्या है ?
गाड़ी पर यात्रा करने के लिए हमें टिकट घर से टिकट खरीदनी पड़ती है, तभी यात्रा करने की आज्ञा मिलती है ।	(2) गाड़ी पर यात्रा की आज्ञा कैसे मिलती है ?
बगैर टिकट के गाड़ी पर यात्रा करने से यात्री पुलिस द्वारा टी०टी० द्वारा पकड़ा जाता है ।	(3) टिकट न खरीदने से क्या होता है ?
गाड़ी आने से पहले यात्री लोग विश्राम गृह में बैठते हैं ।	(4) गाड़ी आने से पहले यात्री लोग कहां पर बैठते हैं ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

[चार्ट में रेलगाड़ी की ओर संकेत करते हुए अध्यापिका बच्चों से प्रश्न पूछेगी]

यह रेलगाड़ी है।	(5) यह क्या है ?
यह लकड़ी और लोहे की बनी हुई है।	(6) यह किस चीज़ की बनी हुई है ?
रेल में बैठने के लिए सीट्स का प्रबन्ध होता है।	(7) रेल में बैठने का क्या प्रबन्ध होता है ?
यह लकड़ी और लोहे की बनी होती हैं।	(8) सीटें किस चीज़ की बनी हुई हैं ?
इनमें बिजली के पंखे, बिजली, टट्टी व गुसलखाने का प्रबन्ध भी होता है।	(9) रेल के डिब्बों में यात्रियों के आराम के लिए और क्या-क्या वस्तुएं होती हैं ?
रेल में दो प्रकार के दर्जे होते हैं। (फस्ट, सैकिण्ड)।	(10) रेल में कितने प्रकार के दर्जे होते हैं ?
ये गद्दीदार होती हैं।	(11) पहले और दूसरे दर्जे की सीटें कैसी बनी होती हैं ?
	[चार्ट में कुली की तरफ संकेत करते हुए :—]
यह कुली है।	(12) यह खास कपड़ों वाला कौन है ?
यह मुसाफिरों का सामान गाड़ी पर रखता है व कईयों का सामान उतारता भी है।	
	[गार्ड की तरफ संकेत करते हुए :—]
यह गार्ड है।	(13) यह कौन है ?
इसके हाथ में हरी झण्डी है।	(14) इसके हाथ में क्या है ?
हरी झण्डी के दिखाने से गाड़ी चल पड़ती है।	(15) हरी झण्डी से क्या अभिप्राय : है ?
गाड़ी आने पर रेलवे स्टेशन का दृश्य देखने योग्य होता है। कई यात्री गाड़ी से नीचे उतरते हैं। कई यात्री गाड़ी में चढ़ते हैं। कुली लोग इधर-उधर सामान उठाने के लिए तथा ...	(16) स्टेशन पर गाड़ी के समय कैसा दृश्य होता है ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमाने के लिए भागते हैं। छाबड़ी वाले अपनी चीज़ों को बेचने के लिए ऊंची-ऊंची आवाजें लगाते हैं।

स्टेशन पर बड़ी भाग-दौड़ होती है। पुल पर भी लोग आते-जाते दिखाई देते हैं।

गाड़ी चले जाने से स्टेशन पर सन्नाटा-सा छा जाता है। दुकानदार व छाबड़ी वाले अपनी-अपनी जगह चले जाते हैं। वही स्टेशन जिस पर कि पांच मिनट पहले मेला लगा हुआ था अब दो-चार दुकानदारों के अतिरिक्त और कोई दिखाई नहीं देता।

(17) गाड़ी चले जाने पर स्टेशन की दशा कैसी होती है ?

पुनरावृत्ति यह ज्ञात करने के लिए बच्चों को पढ़ाए गए पाठ की समझ आ गई या कि नहीं अध्यापिका निम्नलिखित प्रश्न पूछेगी :—

(1) रेल के ठहरने के स्थान को क्या कहते हैं ?
(2) हम यात्रा कैसे करते हैं ?
(3) स्टेशन पर आप क्या देखते हैं ?
(4) रेल चले जाने पर स्टेशन कैसे दिखाई देता है ?
(5) बगैर टिकट यात्रा करने से क्या होता है ?

श्यामपट कार्य—बच्चों को निबन्ध की रूप-रेखा श्यामपट पर लिखी जाएगी तथा बच्चों को कापी-पैंसिल निकालने के लिए कहा जाएगा ताकि वह रूप-रेखा लिख कर घर से पूरा करके आ सकें।

रेल ठहरने के स्थान को यहां पर बुकिंग आफिस, विश्राम गृह, स्टाल इत्यादि गाड़ी के आने पर रेलवे स्टेशन का दृश्य —कुलियों का उधर-इधर भागना—गार्ड का हरी झण्डी दिखाना गाड़ी का चल पड़ना—गाड़ी के चले जाने पर रेलवे स्टेशन का दृश्य — — ?

पाठ योजना 4

हिन्दी कहावतें

कक्षा — —सातवीं, औसत आयु — — —12 वर्ष   **विषय** — — हिन्दी

प्रकरण — — — —कहावतें (लोकोक्तियां),   **समय**— — — — —40 मिनट

सहायक सामग्री :— कक्षा का साधारण सामान, श्यामपट, चाकू आदि कहावतों के चार्ट—

उद्देश्य— (1) विद्यार्थियों को कहावतों के शुद्ध प्रयोग करने में सहायता करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(2) कहावतों के सरल तथा छोटे वाक्य बनाने में उनकी सहायता करना।

(3) उनकी शब्दावली में वृद्धि करना।

पूर्व ज्ञान — विद्यार्थी पहले से ही कुछ मुहावरों के अर्थ जानते हैं और उनका वाक्य में प्रयोग करते हैं।

पर्वज्ञान परीक्षा — विद्यार्थियों से एक-दो मुहावरों के तथा एक-आध कहावत का अर्थ पूछ कर मुहावरे तथा कहावतों के अन्तर का स्पष्ट कर दिया आएगा—

(1) ईंट से ईंट बजाना—नष्ट-भ्रष्ट कर देना।

(2) जी चुराना परिश्रम से भागना।

( ) मान न मान मैं तेरा महमान—हठात् किसी के गले पड़ना।

लोगों के अनुभवों का सार संक्षिप्त रूप में अत्यन्त प्रसिद्ध हो जाए तो उसे लोकोक्ति या कहावत कहते हैं। मुहावरा केवल एक वाक्यांश होता है। जैसे राम ने लंका की ईंट से ईंट बजाई एक मुहावरा है—लेकिन कहावत एक स्वतन्त्र वाक्य है जैसे— मान न मान मैं तेरा महमान

उद्देश्य कथन — आओ! आज हम कुछ कहावतें करेंगे और देखेंगे कि आप उनमें से कुछ जानते हैं या नहीं।

पाठ विस्तार

विषय	शिक्षण-विधि
(1) हवाई किला बनाना—	सर्वप्रथम शिक्षिका विद्यार्थियों को एक चार्ट दिखाएगी जिसमें **"हवाई किला बनाना"** नामक कहावत के चित्र बने हुए होंगे—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्यार्थियों से यह पूछा जाएगा कि क्या वह इस प्रकार की कोई कहावत जानते हैं ? यदि बच्चे जवाब न दे सकें तो नीचे लिखे प्रश्न पूछ कर उनसे कहावतें निकलवाई जाएंगी ।

(1) पहले चित्र में औरत ने क्या उठाया हुआ है ?

औरत ने अपने सिर पर दूध का मटका बेचने के लिए उठाया हुआ है ।

(2) जब उसका मटका टूटा तो वह क्या सोच रही थी ?

यह सोच रही थी वह कैसे अमीर बन जाएगी ।

(3) तो इससे कौन सी कहावत प्रसिद्ध हुई ?

''हवाई किले बनाना''

(4) इस कहावत का क्या अर्थ है ?

दिन को स्वप्न देखना लेकिन उसे कार्य रूप में परिणत न करना ।

(5) इस कहावत को वाक्य में प्रयोग करो ।

प्राय: लड़कियां अपने भविष्य के दिन को स्वप्न देखा करती हैं लेकिन कोई ऐसा काम नहीं करतीं जिससे वह प्राप्त कर सकें । वास्तव में वह तो केवल हवाई किले वनाती रहती है ।

(2) अभिमान का सिर नीचा :—

अब शिक्षिका विद्यार्थियों को दूसरा चार्ट दिखाएगी जिसमें कछुआ और खरगोश नामक कहानी के चित्र होंगे । शिक्षिका निम्न प्रश्नों द्वारा उस कहानी का सार बच्चों से निकलवाएगी ।

(1) पहले चित्र में आप क्या देखते हैं अर्थात् कछुआ और खरगोश क्या करने का निश्चय कर रहे हैं ?

खरगोश ने अपनी तेज़ गति का अभिमान करते हुए एक छोटे से कछुए से मुकाबला करने का फ़ैसला किया ।

(2) खरगोश जब कछुए से काफी आगे निकल गया तो उसने क्या किया ?

अभिमान के कारण वह रास्ते में एक झाड़ी में छिपकर सो गया था

(3) कछुए ने क्या किया ?

लेकिन कछुआ लगातार चलता ही रहा जिससे वह निश्चित स्थान पर खरगोश से पहले पहुंच गया ।

(4) तो इससे क्या कहावत बन गई ?

''अभिमान का सिर नीचा''

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वाक्य—अभिमान कभी नहीं करना चाहिए क्योंकि अभिमानी का सिर सदा नीचे रहता है।

(5) इस कहावत को वाक्य में प्रयोग करो।

(3) डूबने को तिनके का सहारा

कष्ट में पड़े हुए को थोड़ा सा सहारा मिलना—

वाक्य - दुर्भिक्ष पीड़ित बंगाल को यदि कुछ भी अन्य मिल गया होता तो डूबते को तिनके का सहारा हो जांना।

शिक्षिका बच्चों को एक और चार्ट दिखाएगी जिससे यह कहावत अधिक स्पष्ट हो जाए।

(4) एक पंथ दो काज —

परिश्रम एक, फल दो : —

वाक्य - राम ने सांप को चिड़ी डसते समय देखा उसी समय उसने अपने तरकस से बाण छोड़ दिया। सांप मर गया इससे एक तो चिड़ी की जिन्दगी बच गई दूसरा, सांप की खाल से पर्स आदि बनाए गए।

इस प्रकार एक पंथ दो काज की कहावत प्रसिद्ध हो गई।

इस प्रकार कभी शिक्षिका कहावतो के चार्ट दिखाएगी कभी उन्हें कहावत बताकर उसे स्पष्ट करने के लिए चार्ट दिखाएगी।

(5) 'आधी छोड़ सारी को धावे आधी रहे न सारी पावे।'

लालच बुरी बला है।

वाक्य लालच कभी नहीं करना चाहिए।

शिक्षिका कुत्ता और उसकी परछाई नामक कहानी सुना कर इसका सार पूछेगी।

(6) एकता में बल—

मिलाप में बहुत शक्ति है। कोई भी बड़े से बड़े काम अकेला मनुष्य नहीं कर सकता।

वाक्य - सदा एकता के सूत्र में बन्धे होना चाहिए क्योंकि एकता में बहुत बल है जबकि फूट से घर जल कर राख हो जाते हैं।

शिक्षिका फिर चार्ट दिखाकर बच्चों से कहावत बनाने की चेष्टा करेगी।

यदि बच्चे न बता सकें तो शिक्षिका कहानी सुनाकर इस कहावत को स्पष्ट कर देगी।

(7) आवश्यकता अविष्कार की जननी है।

अब शिक्षिका पहले कहावत बता कर इसका अर्थ निकलवाने का यत्न

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करेगी। यदि ऐसे बच्चों ने न बताया तो कहानी सुना दी जाए और अधिक स्पष्ट करने के लिए बच्चों को चार्ट भी दिखाया जाएगा।

शिक्षिका बारी-बारी से सभी मुहावरे, और कहावतें श्यामपट पर लिखती जाएगी। कुछ वाक्य स्वयं भी बताएगी ताकि सभी कहावतें स्पष्ट हो जाएं।

पुनरावृत्ति —

यह जानने के लिए कि बच्चे अच्छी प्रकार समझ गए हैं शिक्षिका कुछ चार्ट मेज़ पर रख कर एक-एक बच्चे को वहां बुलाएगी। उसके हाथ में एक कागज़ का टुकड़ा जिस पर कहावत लिखी होगी उसे रखने को कहेगी जिस चार्ट पर वह मुहावरा बनता होगा।

तत्पश्चात् बच्चों से वाक्य बनवाए जाएंगे तथा बच्चे अपनी-अपनी अभ्यास-पुस्तिका पर लिखेंगे।

शिक्षिका कक्षा में जाकर बच्चों के काम को देखेगी तथा अशुद्धियां ठीक करेगी।

पाठ योजना

हिन्दी पद्य

अध्यापक का रोल नं० 107 कक्षा VIII

बच्चों का औसत आयु—13 वर्ष विषय—हिन्दी पद्य

प्रकरण राणा प्रताप समवाय का केन्द्र—सामाजिक वातावरण

समवाय की इकाई—स्वतन्त्रता प्रियता तथा वीरता

समय 40 मिनट

उद्देश्य—

(क) सामान्य उद्देश्य—

(1) छात्रों में कवि की अनुभूतियों तथा कल्पनाओं को समझाने की शक्ति का पोषण करना।

(2) छात्रों को काव्य सौंदर्य से प्रभावित करके कविता के प्रति आकर्षित करना और कविता में उनकी रुचि बढ़ाना।

(3) छात्रों को काव्यानन्द रसास्वादन के योग्य बनाना।

(4) छात्रों के चरित्र पर नायक के आदर्श का प्रभाव डाल कर उनके चरित्र निर्माण में सहायता देना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(ख) विशेष उद्देश्य—

(1) छात्रों को राणा प्रताप जी की दी गई श्रद्धांजलि में भाव तथा शैली से परिचित कराना।

(2) वीर रस से परिचित करा कर छात्रों में स्वदेश प्रेम उत्पन्न कराना।

(3) स्वतन्त्रता प्रेम का आदर्श उपस्थित करके अपनी तथा अपने देश की रक्षा के लिए बालकों में उत्तेजना उत्पन्न करना।

तैयारी—अध्यापक पाठ के उद्देश्यों को समझेगा और उनके अनुकूल पाठ्य-सामग्री जुटाएगा। प्रसन्नचित् होकर विश्वास के साथ अध्यापक कक्षा में जाएगा।

सामग्री—अध्यापक अपने साथ राणा प्रताप जी का चित्र तथा कविता की कई प्रतिलिपियां ले जाएगा। इसके अतिरिक्त कक्षा की अन्य सामग्री जोकि साधारण होनी चाहिए ले जाएगा।

समवाय तथा प्रस्तावना—अध्यापक बालकों के पूर्व ज्ञान की सहायता से उनके सामाजिक वातावरण से समवाय जोड़ कर निम्न प्रकार के प्रश्न पूछेगा :—

(1) स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व भारत पर कौन राज्य करते थे? (अंग्रेज़)

(2) क्या हम उनके राज्य से सन्तुष्ट थे? (नहीं)

(3) हमने उनके विरुद्ध क्या किया था? (संघर्ष)

(4) अंग्रेज़ों से पूर्व भारत पर कौन राज्य करते थे? (मुसलमान)

(5) क्या हमारे पूर्वज उनके राज्य से सन्तुष्ट थे? (नहीं)

(6) यदि नहीं तो क्या उन्होंने उससे मुक्त होने का यत्न किया था?

(7) वह कौन-कौन से राजा थे जिनकी अध्यक्षता में हमारे पूर्वज भारत की स्वतन्त्रता के लिए लड़े? (अध्यापक श्यामपट पर बच्चों द्वारा गिनाए गए महापुरुषों के नाम लिखेगा। राणा प्रताप, राणा सांगा तथा शिवाजी के साथ गुरु गोविन्द सिंह और वीर वैरागी का नाम सम्भवतः बालक लेंगे।)

तत्पश्चात् अध्यापक राणा प्रताप जी का चित्र लटकाए और चित्र के बारे में प्रश्न करेगा।

आपने जिन पुरुषों के नाम बताए हैं उनमें से यह किस महापुरुष का चित्र है।

यह महापुरुष किस काल में हुए थे अतः इन्होंने किस मुसलमान राजा के विरुद्ध संग्राम किया था।

तत्पश्चात् अध्यापक बालकों को बताएगा कि आज हम इसी राणा प्रताप के बारे में उन्हें भेंट की गई श्रद्धांजलि के रूप में एक कविता पढ़ेंगे। वह राणा प्रताप जिस का प्रभुत्व समस्त उत्तरी भारत पर था। उसने अपनी मातृ-भूमि की रक्षा के लिए, उसे स्वतन्त्र रखने के लिए अकबर के विरुद्ध कई बार युद्ध किया था।

अध्यापक बालक को अपनी-अपनी पुस्तकें 71 पृष्ठ पर खोलने के लिए कहेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अध्यापक ध्यान-पूर्वक देखेगा कि प्रत्येक बालक के पास पुस्तक हो । जिस बालक के पास पुस्तक न होगी अध्यापक अपने पास से उस बालक को प्रतिलिपि देगा ताकि प्रत्येक बालक के पास अपनी अपनी कविता हो और उसके पूर्ण लाभ उठा सके । कविता निम्नलिखित होगी :—

I. यज्ञ-अनल सा धधक रहा था, वह स्वतन्त्र अधिकारी ।
रोम-रोम से निकल रही थी, स्वतन्त्रता चिंगारी ।।

II. अपना सब कुछ लु ा दिया, जननी पद नेह लगाकर ।
कलित कीर्ति फैला दी, निद्रित मेवाड़ जगा कर ।।

III. जगा वैभव उत्सर्ग किया, भारत का वीर कहा कर ।
माता मुख लाली प्रताप ने, रख ली लहू बहा कर ।।

IV. भीषण तम प्रण किया रक्त से, समर सन्धु भर डाला ।
ले नंगी तलवार बढ़ा, सब कुछ स्वाह कर डाला ।।

आदर्श वाचन—अध्यापक तत्पश्चात् स्वयं आदर्श वाचन करेगा । वाचन इस प्रकार किया जाएगा कि छात्र श्रवण द्वारा कविता के मर्म को समझ जाए । वाचन विधि को आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक बनाया जाएगा ताकि पाठकों का पाठ के प्रति उत्साह तथा प्रेम बढ़े । कविता का वाचन भावानुकूल होगा । कविता वीर रस प्रधान है । अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा तथा स्वतन्त्रता के प्रति प्रेम उत्पन्न करना इसका उद्देश्य है । इस प्रकार पाठ पूर्ण विधि से किया जाएगा ताकि छात्रों के हृदय देश प्रेम तथा श्रद्धा से भर जाएं । आवश्यकतानुसार भावानुकूल अंग संचालन भी किया जाएगा ।

अध्यापक छन्द, मात्रा, ताल, सुर आदि का भी पूर्ण ध्यान रखेगा । कविता के शब्द सौंदर्य को भी स्पष्ट किया जाएगा ।

विद्यार्थियों द्वारा वाचन—आदर्श पाठ के पश्चात् बच्चों द्वारा वाचन की बारी आती है । अतः आदर्श वाचन के पश्चात् बालकों को वाचन का अवसर दिया जाएगा । वह इस प्रकार वाचन करें कि उनके हृदय में आनन्द की लहरें तरंगित हो उठें । वाचन व्यक्तिगत होगा । प्रत्येक छात्र उठेगा तथा अध्यापक का अनुकरण करता हुआ सस्वर वाचन करेगा, जहां वह अशुद्ध बोलेगा, किसी वर्ग का उच्चारण अशुद्ध तथा अस्पष्ट करेगा, यदि बल, विराम आदि के अनुसार बोलने में भूल करेगा वहां अध्यापक उन्हें स्वयं ठीक करेगा । दूसरे विद्यार्थियों से भी सहायता ली जा सकती है ।

शब्द तथा मुहावरों की व्याख्या—कविता रसास्वादन के लिए है शब्द भण्डार की वृद्धि इसका लक्ष्य नहीं । शब्द विवेचन इसके आनन्द की अनुभूति में एक प्रकार की बाधा है । इसलिए शब्दार्थ पर अधिक बल नहीं दिया जाएगा और कठिन शब्दों का अर्थ मात्र ही प्रवचन विधि द्वारा बताया जाएगा । आवश्यकता पड़ने पर शब्दों के अर्थ का स्पष्टीकरण भी किया जाएगा । निम्नलिखित कठिन शब्दों का अर्थ बताया

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाएगा ताकि बालकों को कविता का भाव समझने में कठिनाई का सामना न करना पड़े ।

(अध्यापक बालकों को कठिन शब्दों के अर्थ बताकर श्यामपट पर लिखेगा)

यज्ञ-अनल	=समास विग्रह द्वारा	(यज्ञ की अग्नि)
कीर्ति	=पर्यायवाची शब्द देकर	(यश)
कलित	=पर्यायवाची शब्द देकर	(सुन्दर)
उत्सर्ग	= ,,	(त्याग)
नेह	=स्नेह से सम्बन्ध जोड़ कर	(प्यार)
मुख की लाली रखना	=व्याख्या करके	(मान रखना)
प्रण		(प्रतिज्ञा)

भावार्थ तथा विवेचन —

तत्पश्चात् अध्यापक कविता के पहले पद्य को पूर्ण पढ़ कर उसका सरलार्थ करता हुआ भावार्थ करेगा । वह राणा प्रताप जी स्वतन्त्रता के अधिकारी थे । यज्ञ-अनल के समान धधक रहे थे । उसके रोम-रोम से स्वतन्त्रता की चिंगारी निकल रही थी । अध्यापक बालकों की सहायता से उन्हें बताएगा कि राणा प्रताप जी किस प्रकार स्वतन्त्रता के अधिकारी थे । वह राजा थे राजा और सिंह को स्वतन्त्र रहने का अधिकार है । इसी कारण राणा प्रताप को स्वतन्त्र रहने का पूर्ण अधिकार था और कवि ने उन्हें स्वतन्त्रता का अधिकारी कहा है । वह यज्ञ अनल के समान धधक रहे थे । अर्थात् जिस प्रकार यज्ञ से अग्नि की ज्वालाएं प्रबल होती हैं उसी प्रकार राणा प्रताप जी का मन आग से जल रहा था । परन्तु वह आग साधारण आग की ज्वालाएं न थीं । वह स्वतन्त्र रहने की आग थी । उनमें स्वतन्त्र रहने की प्रबल इच्छा थी । वह अकबर के अधीन नहीं होना चाहते थे । उनके रोम-रोम से स्वतन्त्रता की चिंगारियां निकल रही थीं । इसके साथ बालकों को आकर्षित करने तथा रुचि स्थिर रखने के लिए अध्यापक प्रश्न करेगा कि क्या शरीर से चिंगारियां भी निकला करती हैं कि नहीं ? उनके शरीर में स्वतन्त्र रहने की आग थी, इच्छा थी । इस इच्छा या आग की चिंगारियां उनके शरीर से निकल रही थीं । अर्थात् उनका अंग-अंग उनका रोम-रोम स्वतन्त्रता के लिए तड़प रहा था । अध्यापक बताएगा कि किस प्रकार कवि ने राणा प्रताप का स्वतन्त्रता के प्रति प्रेम सुन्दर तथा ओजपूर्ण शब्दों में चित्र-चित्रित् किया है ।

2. तत्पश्चात् अध्यापक दूसरे पद्य का वाचन किसी बालक से करवा कर उसी से ही सरलार्थ करवाएगा । फिर अध्यापक स्वयं बताएगा कि राणा प्रताप ने जनता के पांव से नेह लगा कर अपना सब कुछ लुटा दिया और उसने निद्रित मेवाड़ को जगा कर कलित कीर्ति फैला दी । अध्यापक बताएगा कि उस समय के राजपूत राजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर अपनी मातृ-भूमि को स्वतन्त्र बना दिया था ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मानसिंह, बिहारी मल आदि राजपूत राजाओं ने धन के लोभ में आकर माता से धोखा किया था। उनके पास धन था, ऊंचे-ऊंचे पद थे परन्तु थे, परतन्त्र, मगर राणा प्रताप ने माता के चरणों को नहीं छोड़ा, उन्हें अपनी मातृ-भूमि से प्यार था। माता जननी को कहा जाता है अतः राणा प्रताप की जननी कौन थी ? हम सब की जननी कौन है ? भारत। इसे हम भारत माता कहते हैं क्योंकि इसका हम जल पी कर, अन्न खाकर, इसकी वायु में सांस लेकर बड़े होते हैं। इसी प्रकार राणा प्रताप की माता उसका मेवाड़ देश था, यदि ये चाहते तो अन्य राजपूत राजाओं की तरह अपनी माता को परतन्त्र बना कर अकबर से धन ले सकते थे, ऊंचे से ऊंचे पद भी पा सकते थे परन्तु नहीं उन्हें अपनी माता से प्यार था। उन्होने अकबर द्वारा धन तथा पद के दिए गए लोभ को ठुकरा दिया और अपनी माता की स्वतन्त्रता की रक्षार्थ अपने सुख, अपने धन तथा अपने राज पाट को लुटा दिया। उन्होंने माता के प्रेम में हर वस्तु का बलिदान किया। उस समय मेबाड़ सो रहा था। राजपूत भूल चुके थे कि वह स्वतन्त्र रहने के लिए हैं। अपनी प्राचीन परम्पराओं को भूल कर उन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी। परन्तु राणा प्रताप ने उन्हें नया रास्ता दिया। उन्हें वता दिया कि वह स्वतन्त्र रह सकते हैं। अपनी परम्पराओं का पालन कठिनाई में कर सकते हैं। उस समय अकबर से लड़ना आसान नहीं था। मेवाड़ के प्रत्येक युवक तथा वृद्ध को अपने देश के रक्षार्थ मर मिटने के लिए तैयार किया आज उन राजपूतों को जिन्होंने अकवर की अधीनता स्वीकार कर ली, कोई नहीं जानता। परन्तु राणा प्रताप का नाम, भारत का प्रत्येक बालक आदर तथा गौरव के साथ लेता है। इतिहास में उनका नाम सुनहरी अक्षरों में लिखा है। जिसने भी देश रक्षा के लिए कष्ट सहे हैं उनका नाम सदा के लिए अमर हो गया। आज ही नहीं हजारों वर्ष तक भारतवासी गांधी, सुभाष, गुरु गोबिन्दसिंह, भगत सिंह आदि का नाम लेते रहेंगे।

3. अध्यापक तीसरे पद्य का वाचन किसी विद्यार्थी से करवा कर सरलार्थ निकलवाएगा। बालकों की सहायता से भावार्थ उन्हें निम्न प्रकार से बताएगा। राणा प्रताप जी ने भारत का वीर कहा कर धन के वैभव का त्याग किया और लहू बहाकर माता के मुख की लाली रख ली। माता के मुख पर लाली कब होती है ? जब वह प्रसन्न होती है। जब उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता। राणा प्रताप वीर थे। अकबर ने उन्हें अपने दरबार के ऊंचे पद पेश किए। परन्तु अपनी मातृ-भूमि को उन्होंने परतन्त्र नहीं किया। संसार के सुखों को छोड़ दिया। अकबर की अधीनता स्वीकार न करने का परिणाम यह हुआ कि उन्हें अकबर सम्राट् से लड़ना पड़ा, भाई भी अकबर से मिल चुका था। हार हो गई। राजपाट छिन गया। नर्म-नर्म गदेलों पर सोने वाले बच्चे भूमि की गोद में सोते रहे। जगलों की खाक छानते रहे। दाने-दाने को तरसते रहे। वह राणा और उसके बच्चे जो मनमानी वस्तु खा सकते थे। जगलों में घास के तिनकों की रोटी पका कर खाते हैं। एक बार बच्चे भूख से बिलख रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घास के तिनकों की अड़ाई रोटियां पकाई गई ! आधी रोटी बच्चे के हाथ में दी गई परन्तु वह भी जंगली विल्ली उठा कर ले गई। उस समय एक बाप की क्या अवस्था हो सकती थी इसका अनुमान करें, परन्तु उन्होंने तो सब का त्याग किया था, वह वीर थे। उन्होंने प्रण किया। हल्दी घाटी में अकबर ने एक लाख सेना देकर भेजा परन्तु राणा के पास दस हज़ार सैनिक थे। 10 हज़ार का युद्ध एक लाख सेना के साथ था। अकबर की भेजी हुई सेना में से 90 हज़ार मारे गए परन्तु राजपूत 9 हज़ार कुल मिलाकर 99 हज़ार सैनिक रणक्षेत्र में मारे गए। सोचें कितना खून वहा होगा। राणा ने खून तो वहा दिया परन्तु माता की लाज रख ली, माता के मुख की लाली रख ली। आज भी माता को ऐसे युवकों की आवश्यकता है जो अपना बलिदान देकर अपने देश की रक्षा कर सकें।

4. अध्यापक चौथे पद्य का सरलार्थ बताने के पश्चात् भावार्थ निम्न प्रकार से बताएगा। राणा प्रताप ने भीषण प्रण किया और हाथ में तलवार लेकर समर सिन्धु को रक्त से भर डाला और सब कुछ स्वाह कर डाला अर्थात् राणा प्रताप ने कठिन प्रतिज्ञा की। उस प्रतिज्ञा की पूर्ति के लिए कई संग्राम किए। अनेकों सैनिकों को मौत के घाट उतारा। अध्यापक बालकों को प्रश्न करेगा कि राणा प्रताप ने कौन सा भीषण प्रण किया था। उनकी सहायता से अध्यापक बताएगा कि राणा ने जब देखा कि वह अकबर से हार गया है तो उन्होंने यह प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं अपनी मातृ-भूमि को स्वतन्त्र नहीं करवा लूंगा खाट पर नहीं सोऊंगा, अपितु भूमि पर सोऊंगा, सोने और चांदी के बरतनों में पानी नहीं पीऊंगा, अपनी मूंछों को ताव नहीं दूंगा। यह घोर तथा कठिन प्रतिज्ञा राणा ने की थी। इसकी पूर्ति के लिए अनेक युद्ध भी किए। अकबर को सुख तथा चैन का सांस नहीं लेने दिया। अन्त में मेवाड़ पर अधिकार कर ही लिया परन्तु चित्तौड़ को प्राप्त न कर सका। इसी प्रतिज्ञा का पालन करते हुए राजपूत अपनी बैल गाड़ियां लेकर आज तक एक स्थान से दूसरे स्थान तक फिरते रहे, जब भारत स्वतन्त्र हुआ तभी प्रधान मंत्री श्री नेहरू ने उनका चित्तौड़ में स्वागत किया और उनको बसाया देखिए कितनी कठिन प्रतिज्ञा थी और इसका पालन किस प्रकार किया गया।

आवृत्ति—व्याख्या के पश्चात् अध्यापक बालकों को भाव ग्रहण के लिए वाचन का अवसर देगा ताकि वह भावों को स्वतन्त्र रूप से समझ जाए और भाव-अनुकूल वाचन करने में समर्थ हो जाएं और कविता के सौंदर्य की पूर्ण अनुभूति कर सकें।

ज्ञान बोध—यह जानने के लिए कि बालक कविता के मर्म को समझ गए हैं नहीं। प्रत्येक पद्य की व्याख्या को उन्होंने ग्रहण कर लिया या नहीं, अध्यापक निम्न प्रकार का प्रश्न करेगा :-

(1) राणा प्रताप को स्वतन्त्रता का अधिकारी क्यों कहा है ?
(2) उनका यश तथा कीर्ति संसार में फैली ?
(3) उन्होंने धन वैभव का त्याग क्यों किया ?
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant
(4) उन्होंने (राणा प्रताप ने) अकबर की अधीनता क्यों स्वीकार न की ?

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गृह कार्य—बोध परीक्षा के पश्चात् अध्यापक गृह-कार्य देगा। बालकों को प्रथम तथा दूसरे पद्य की व्याख्या घर से लिख कर लाने के लिए कहेगा।

पाठ योजना 6.

हिन्दी व्याकरण

कक्षा———नवमीं मध्यमान आयु – ——पन्द्रह वर्ष

विषय————व्याकरण प्रकरण————— स्वर संधि

सहायक सामग्री

(i) एक चार्ट जिसमें एक त्रिशूल और हाथ का चित्र होगा, त्रिशूल से स्वर संधि, विसर्ग संधि और व्यंजन संधि का बोध होगा।

(ii) दूसरा चार्ट संधि का होगा, उसकी सहायता से स्वर संधि के भेद समझाए जाएंगे।

(iii) श्यामपट, चाक, झाड़न आदि।

उद्देश्य (सामान्य)—

(i) व्याकरण द्वारा बालकों को शुद्ध तथा परिमार्जित भाषा व्यवहार में लाने के योग्य बनाना।

(ii) बच्चों को भाषा के वास्तविक तथा सैद्धान्तिक रूप को पहचानने के योग्य बनाना।

(iii) बच्चों को केवल व्यावहारिक व्याकरण पढ़ाना।

(विशेष)—

(i) बच्चों की साधारण अशुद्धियों को दूर करना। संधि का पाठ बच्चों को इस उद्देश्य से दिया जाएगा।

(ii) बालकों को स्वर सन्धि का ज्ञान करवाना तथा उसके पांचों भेदों को संक्षेप में बताना।

पूर्व ज्ञान—

बच्चे स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग के सम्बन्ध में पहले ही जानते हैं। ह्रस्व स्वर तथा दीर्घ स्वरों का भी ज्ञान है। साथ-साथ वे सन्धि शब्द से भी परिचित हैं, क्योंकि उन्होंने आठवीं कक्षा में भी संधि के विषय में सामान्य जानकारी प्राप्त की है।

प्रस्तावना—

पूर्व ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न—सर्वप्रथम पूर्व ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाएं जिससे कि बच्चों की योग्यता का मान दण्ड विदित हो जाएगा। बच्चों के इसी पूर्व ज्ञान के आधार पर आज का विषय बालकों के सम्मुख रखा जाएगा।

(क) पूर्व ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न—

(i) स्वर किसे कहते हैं?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(ii) ह्रस्व स्वर कौन से हैं और दीर्घ स्वर कौन से हैं?

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iii) स्वर कितने प्रकार के होते हैं ?

(iv) व्यंजन किसे कहते हैं ?

(v) विसर्ग किसे कहते हैं ?

(ख) तदुपरान्त निम्न शब्द श्यामपट पर लिखे जाएंगे ।

बालकों को पहले निम्न शब्दों में स्वर तथा व्यंजन तथा विसर्ग छंटवाए जाएंगे । फिर इन्हीं संयुक्त शब्दों की सहायता से स्वर संधि, व्यंजन संधि, तथा विसर्ग संधि के तीनों भेद स्पष्ट किए जाएंगे ।

1. विद्यालय	2. विद्यार्थी	3. जगदीश
4 नमस्ते	5. प्रात:काल	6. निष्फल

जब बालक इन शब्दों में स्वर, व्यंजन तथा विसर्गों को छांट लेंगे, तो अध्यापक उनसे कहेगा कि अब संयुक्त शब्दों को अलग करो ।

जब बालक शब्दों को अलग-अलग करेंगे तो अध्यापक कहेगा कि अच्छा बताओ कि इन शब्दों में परिवर्तन कैसे-कैसे आया ।

उद्देश्य कथन—इस प्रकार बच्चों में शब्दों के विषय में होने वाले विकार के विषय में जिज्ञासा उत्पन्न कर अन्त में कहेगा कि आज हम आपको बताते हैं कि दो वर्ण परस्पर मिलकर तथा आपस में विकार उत्पन्न कर नवीन संयुक्त बनाते हैं ।

विषय प्रवेश—

सन्धि के तीन भेद तथा स्वर सन्धि के भेद प्रयोग प्रणाली की सहायता से पढ़ाए जाएंगे अर्थात् पहले आगमन विधि अपना कर बच्चों के सम्मुख उदाहरण उपस्थित किए जाएंगे । फिर उदाहरणों की मीमांसा की जाएगी तथा अन्त में नियम तथा सिद्धान्त बताए जाएंगे ।

(क) **प्रथम इकाई—स्वर संधि**

आगमन विधि

(1) उदाहरण—संधि के तीनों भेद पढ़ाने के लिए उपयुक्त शब्द ही जोकि भूमिका में श्यामपट पर लिखे गए थे प्रयोग में लाए जाएंगे ।

(i) विद्या+अर्थी=विद्यार्थी ।

(ii) देव+ऋषि=देवर्षि ।

(iii) भगवत्+गीता=भगवद्गीता ।

(iv) नम:+ते=नमस्ते ।

(v) नि:+फल=निष्फल ।

(2) **उदाहरणों की मीमांसा**—

(i) विद्यार्थी शब्द में कौन-कौन से वर्णों का संयोग हुआ है ?

(ii) क्या दोनों स्वर हैं ?

(iii) भगवद्गीता में कौन-कौन से वर्णों का संयोग हुआ ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(iv) क्या दोनों स्वर या व्यंजन हैं ?

(v) नमस्ते शब्द में कौन-कौन से वर्णों का संयोग हुआ है ? व्याकरण में वे क्या हैं ?

मीमांसा—यहीं पर अध्यापक यह बता देगा कि कोई भी व्यंजन बिना किसी स्वर की सहायता के नहीं बोला जा सकता।

(3) **सिद्धान्त**—देखिए विद्यार्थी शब्द में दोनों स्वर वर्णों का परस्पर मेल हुआ है। अस्तु स्वर वर्णों के आपस में मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

अध्यापक "भगवद्गीता" शब्द के सम्बन्ध में कहेगा कि देखिए इस शब्द में त् तथा ग व्यंजनों में परस्पर विकार उत्पन्न हुआ है। अस्तु यहां पर पहले शब्द का व्यंजन दूसरे शब्द के व्यंजन अथवा किसी स्वर से मिलता है उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं।

"नमस्ते" शब्द में अध्यापक बालकों को दिखाएगा कि विसर्ग तथा त् वर्ण में परस्पर विकार उत्पन्न हुआ है। अस्तु जहां विसर्ग किसी दूसरे वर्ण से मिलकर विकार उत्पन्न करता है वहां पर विसर्ग सन्धि होती है। यही भेद चार्ट में बने त्रिशूल की सहायता से बताए जाएंगे। त्रिशूल में प्राकृतिक रूप से तीन भाग होते हैं। अतएव त्रिशूल की सहायता से तीनों भेद बालकों को बताने से उनको सदैव के लिए स्मरण रहेंगे।

(ख) **निगमन विधि**—ग्रामोद्योग, चिकित्सालय, जगन्नाथ, निष्फल आदि कई शब्दों को उपस्थित किया जाएगा। उनका सन्धिछेद कराया जाएगा और सन्धि के तीनों भेदों की पड़ताल कराई जाएगी। इसके पश्चात् स्वर सन्धि के पांचों भेद संक्षिप्त रूप में बताए जाएंगे और तत्पश्चात् पांचों भेदों में से पहले भेद दीर्घ सन्धि की विशद् व्याख्या की जाएगी।

स्वर सन्धि के भेद—

द्वितीय इकाई—(क) आगमन विधि

उदाहरण—

1. पुरुष + अर्थी = पुरुषार्थी
2. महा + आतमा = महात्मा
3. कवि + इन्द्र = कवीन्द्र
4. साधु + उपदेश = साधुपदेश
5. मातृ + ऋण = मातृण
6. महा + इन्द्र = महेन्द्र
7. सूर्य + उदय = सूर्योदय
8. देव + ऋषि = देवर्षि
9. एक + एक = एकैक
10. परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य
11. वन + औषधि = वनौषधि
12. महा + ओदार्य = महौदार्य
13. यदि + अपि = यद्यपि
14. सु + अच्छ = स्वच्छ
15. मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा
16. ने + अन = नयन
17. भौ + अन = भवन
18. गै + अक = गायक
19. भौ + अक = भावुक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदाहरण मीमांसा—पहले पांच उदाहरणों में एक ही जाति के वर्णों में विकार उत्पन्न हुआ है 'छ' उदाहरणों में आ और इ मिल कर "ए" बन गए हैं। इसी प्रकार सातवें आठवें उदाहरण में क्रमशः अ और उ मिलकर ओ, अ और ऋ मिलकर अर बन गए हैं। नौवें उदाहरण में अ और ए मिलकर "ऐ" बन गए हैं। इसी प्रकार श्यामपट की सहायता से अन्य उदाहरणों की मीमांसा की जाएगी।

नियम निर्धारण तथा सिद्धान्त—

(i) ह्रस्व तथा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के परे ह्रस्व तथा दीर्घ अ, इ, उ, ऋ हो तो दोनों को मिलाकर स्वर्ण दीर्घ हो जाता है। ऐसी सन्धि को दीर्घ सन्धि कहते हैं। यथा पहले पांच उदाहरण।

(ii) अ या आ के परे इ या ई हो तो दोनों मिलाकर ए, उ या ऊ हो तो, अ और ऋ हो तो दोनों के स्थान पर अर हो जाता है। ऐसी सन्धि को गुण सन्धि कहते हैं।

(iii) अ या आ के आगे ए या ऐ हो तो दोनों के स्थान पर ऐ, उ और ओ या औ हो तो औ हो जाता है। इसी प्रकार की सन्धि को वृद्धि सन्धि कहते हैं। जैसे नौ से ग्यारह तक के उदाहरणों से स्पष्ट है।

(iv) यदि इ, उ, ऋ से आगे किसी भिन्न जाति का स्वर आ जाए तो क्रमशः य, व और ऋ हो जाते हैं।

(v) ए, ओ, ऐ से परे यदि कोई स्वर हो तो क्रमशः ए के स्थान पर 'अय', ओ के स्थान पर 'अव', ऐ के स्थान पर 'अय्', और औ के स्थान पर 'आव' हो जाता है। ऐसी सन्धि को अयादि कहते हैं। जैसे अन्तिम चार उदाहरणों से स्पष्ट हैं।

यदि परिभाषाएं बताते समय अध्यापक चार्ट में से हाथ का चित्र दिखाएगा जिसमें स्वर सन्धि के पांचों भेदों के नाम लिखे हुए हैं, क्योंकि हाथ की उंगलियां पांच होती हैं तथा स्वर सन्धि के भाग भी पांच हैं अस्तु उन्हें पांचों नियम स्मरण रखने में सरलता रहेगी।

इसी स्थान पर अध्यापक अपना दूसरा चार्ट दिखाएगा जिसमें स्वर व्यंजनों की आपस में मिलने की विधियां हैं। यह चार्ट निगमन प्रणाली की सहायता द्वारा बच्चों को पाठ अभ्यास कराने में सहायता देगा।

(ख) निगमन विधि—

(i) निम्न शब्दों का सन्धिच्छेद करो। यह भी बताओ कि इनमें कौन सी सन्धि है और क्यों?

(1) शिवालय (2) रत्नाकर (3) कवीन्द्र (4) महीन्द्र (5) गुरुपदेश (6) साधुपदेश (7) महेन्द्र (8) देवोत्सव (9) सदैव (10) स्वर्गेश्वर्य (11) महौषधि (12) इत्यादि (13) अत्यर्थ (14) मात्रानन्द।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बालकों द्वारा श्यामपट पर कुछ शब्दों का सन्धिछेद करवाया जाएगा और बाकी शब्दों का मौखिक रूप में ही सन्धिछेद करवाया जाएगा।

(ii) निम्न शब्दों की सन्धि करवाई जाएगी तथा बालकों से यह भी कहा जाएगा कि जब वे संयुक्त वर्ण बनाते हैं तो यह भी बताएं कि स्वर सन्धि के किस नियम के अनुसार वे सन्धि कर रहे हैं।

(1) परम+अर्थ, (2) शची+इन्द्र, (3) मही+ईश, (4) जरा+इन्द्र, (5) पर+उपकार, (6) यथा+ऊर्मि, (7) तथा+एव, (8) महा+औत्सुक्य, (9) अति+आचार, (10) नदि+अर्पण, (11) कि+ऊन, (12) सु+आगत, (13) पितृ+अनुकृति, (14) प्रति+उपकार, (15) रीति+अनुकूल, (16) सु+अल्प।

कुछ शब्दों की सन्धि श्यामपट पर बालकों द्वारा की जाएगी तथा कुछ शब्दों की सन्धि मौखिक रूप से की जाएगी। इस प्रकार निगमन विधि द्वारा नियम से अभ्यास की ओर जाकर पांचों भेद स्पष्ट हो जाएंगे।

श्यामपट कार्य—श्यामपट पर निम्न चीजें लिखी जाएंगी :—

(1) प्रस्तावना सम्बन्धी संयुक्त शब्दों के उदाहरण जिनके द्वारा स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग की परिभाषा बालकों को पूछी जाएंगी। प्रस्तावना में निम्न शब्द श्यामपट, पर लिखे जाएंगे।

(i विद्यालय, (ii) विद्यार्थी, (iii) जगदीश, (iv) नमस्ते, (v) प्रातः-काल आदि।

(2) विषय प्रवेश के समय श्यामपट पर ये शब्द लिखे जाएंगे जिनकी सन्धि करनी है। ये शब्द जरा क्रमिक ढंग से लिखे जाएंगे।

उदाहरण **सन्धि** **नियम**

(1) पुरुष+अर्थ=पुरुषार्थ, अ+आ, अ या अ के आगे इसी जाति का वर्ण हो तो यह दीर्घ हो जाते हैं।

(2) महा+आत्मा=महात्मा, अ+आ, ऊपर वाला नियम।

(3) साधू+उपदेश=साधुपदेश, ऊ+उ=ऊ, ऊपर वाला नियम।

(4) सूर्य+उदय=सूर्योदय, अ+उ=ओ, 'अ' और 'उ' मिलकर 'ओ' हो जाते हैं।

(5) देव+ऋषि=देवर्षि अ+ऋ=अर् अ और ऋ मिलकर 'अर' हो हैं।

(6) एक+एक=एकैक, अ+ए=ऐ, अ और ए मिलकर 'ऐ' हो जाते हैं।

(7) परम+एश्वर्य=परमैश्वर्य, अ+ए=ऐ, उपरोक्त नियम।

(8) वन+औषधि=वनौषधि, अ+ओ=औ, अ और औ मिलकर औ हो जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(9) यदि + अपि = यद्यपि, इ + अ = य और अ मिलकर य बन जाता है ।
(10) सु + अच्छ = स्वच्छ, उ + अ - व, अ + अ मिलकर व बन जाते हैं ।
(11) मातृ + आज्ञा = मात्राज्ञा, ऋ + आ = रा ऋ + अ मिलकर रा बनते हैं ।
(12) ने + अन = नयन, ए + अ = अय, ए और अ मिलकर अय बनते हैं ।
(13) भो + उन = भवन, ओ + अ = अव्, ओ और अ मिलकर 'अव' बनते है ।
(14) गै + यक = गायक, ऐ + अ = आय, ऐ और अ मिलकर आये बनते हैं ।
(15) भौ + अक = भावुक, औ + उ = आवु, औ और अ मिलकर आव बनते हैं ।

(3) पाठ को रुचिकर बनाने के लिए श्यामपट पर कुछ शब्दों से ग्राफ भी बनाए जाएंगे । जैसे सूर्योदय शब्द का सन्धि करते समय श्यामपट पर ही सूर्योदय का चित्र बनाया जाएगा ।

तृतीय इकाई : दीर्घ सन्धि

दीर्घ सन्धि का विस्तार— दीर्घ सन्धि जो कि स्वर सन्धि का पहला भाग है उसको सविस्तार पढ़ाया जाएगा ।

उदाहरण (1) कोष + अध्यक्ष = कोषाध्यक्ष । (2) वाचन + आलय = वाचनालय । (3) गिरि + ईश = गरीश । (5) लघु + उर्मि = लघूर्मि । (5) मातृ + ऋण = मातृण ।

उदाहरण मीमांसा—पहले उदाहरण में तथा दूसरे उदाहरण में 'अ' और वर्ण आपस में मिले हैं ।

तीसरे उदाहरण में इ और ई वर्ण आपस में मिलकर अपनी जाति का दीर्घ स्वर बनाते हैं ।

चौथे उदाहरण में उ और उ मिलकर अपनी जाति का दीर्घ स्वर बनाते हैं ।

पांचवें उदाहरण में ऋ और ऋ मिलकर अपनी जाति का दीर्घ स्वर बनाते हैं ।

सिद्धान्त—वही सिद्धान्त है जो सन्धि के पांच भेद बनाते समय दीर्घ सन्धि का बताया गया था । अर्थात् सजातीय स्वर वर्ण आपस में मिलकर दीर्घ हो जाते हैं । यह वर्ण अ, इ, उ तथा ऋ हैं ।

फिर निगमन विधि द्वारा सिद्धान्त से उदाहरण की ओर चला जाएगा । निम्न शब्द का सन्धिछेद करवाया जाएगा :—

(1) पुस्तकालय । (2) रजनीश । (3) बन्धुपदेश । (4) पितृण ।

आवृत्ति—बोध परीक्षा के हेतू निम्न प्रश्न पूछे जाएंगे ?

(1) सन्धि किसे कहते हैं ?
(2) सन्धि के कितने भेद होते हैं ?
(3) स्वर सन्धि किसे कहते हैं । परिभाषा के साथ उदाहरण भी दो ?
(4) स्वर सन्धि के कितने भेद हैं ?
(5) दीर्घ सन्धि किसे कहते हैं ?
(6) गुण सन्धि के कुछ उदाहरण उपस्थित करो ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभ्यास (गृह कार्य)—गृह-कार्य में बालक दो कार्य करके लाएंगे एक तो स्वर सन्धि के भेदों की परिभाषा करके लाएंगे। दूसरे निम्न शब्दों का सन्धिच्छेद तथा सन्धि कर लाएंगे।

सन्धिच्छेद - (1) अभ्युदय, (2) प्रत्येक, (3) महोषधि, (4) सिन्धूर्मि, (5) वनमहोत्सव, (6) राकेश, (7) नदीश, (8) भानूदय, (9) अन्वेषण, (16) मात्राज्ञा।

सन्धि करो—( )—पितृ+अनुमति, (2) वधू+आगमन, (3) नदा+अम्बु, (4) अभि+उदय, (5) परम्+औषधि, (6) गंगा+उर्मि, (7) परम+ईश्वर, (8 दातृ+ऋण।

पाठ-संकेत-7.

समयावधि—40 मिनट

कक्षा—नवम ई

विषय—हिन्दी (एकांकी नाटक)

मूल इकाई—तैमूर की हार

औसत आयु—14

लक्ष्य — उद्देश्य

(1) ज्ञान
(1) तैमूर के आक्रमण के आतंक का ज्ञान कराना।
(2) भारतीय बालक की वीरता का ज्ञान कराना।
(3) विदेशी एवं स्वदेशी वेश-भूषा का ज्ञान देना।
(4) मातृत्व प्रेम का बोध करना।

(2) भावना
(1) वीरता की भावना को प्रोत्साहन देना।
(2) प्रेम, सहयोग, कर्त्तव्य-परायणता तथा देश प्रेम की भावनाओं को प्रोत्साहन देना।
(3) अपने चरित्र में सुधार की भावना को विकसित करना।
(4) उत्तम गुणों को आत्मसात करने की भावना उत्पन्न करना।

(3) कौशल
(1) रंगमंचीय कला अभ्यास कराना।
(2) विभिन्न पात्रों के कथोप-कथनों को बोलने का कौशल उत्पन्न करना।
(3) समय पर कर्त्तव्य-पालन की कुशलता उत्पन्न करना।
(4) रंगमंचीय अभिनय के समय भावानुकूल, अवसरानुकुल शुद्ध एवं प्रभावोत्पादक भाषा प्रयोग का कौशल उत्पन्न करना।

सहायक सामग्री — पाठ्य-वस्तु-पत्र, पात्र-परिचय-चाकू और चित्र आदि।

पूर्व ज्ञान — छात्र 'मालव-प्रेम' 'रघु के राज्य में', 'शालीन शिवाजी' आदि एकांकियों का ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं तथा तैमूर के नाम से परिचित हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"भारत को गारत में कर दो वीरो तुम सब हो तैमूर सैन्य।
महमूद और गौरी पहल कर गए इसे इस भान्ति धन्य ॥
काफिर हैं ये सब देशवासी मारो इनको बढ़ते जाओ।'
है आन तुम्हें इस बार वीर लूटो वैभव सब ले जाओ ॥"

(श्याम नारायण पाण्डे)

प्रस्तावना

(1) तैमूर अपनी सेना को भारत के लिए क्या आदेश दे रहा है ?

(2) भारत पर आक्रमण पहले किन-किन व्यक्तियों ने किया था ?

(2) तैमूर के सिपाही इस चित्र में क्या-क्या कर रहे हैं ?

(4) यदि कोई तुम्हें लूटे तो तुम क्या करोगे ?

उद्देश्यकथन आज हम 'तैमूर की हार' नामक एकांकी नाटक पढ़ेंगे। उसने (तैमूर) भारत पर सन् 1398 में आक्रमण किया। तैमूर एक प्रसिद्ध लुटेरा था। उसका कद लम्बा था उसके हाथ मोटे-मोटे और चेहरा भद्दा था और वह बलिष्ठ व्यक्ति था। जब भारत को लूटता हुआ दीपलपुर के समीप वन प्रान्त के एक छोटे से गांव में पहुंचा तो बलकरन नाम के बालक ने तैमूर का सामना कैसे किया यही हमें पढ़ना है।

मूल पाठ
(तैमूर की हार)

काल सन् — 1398 (डॉ० रामकुमार वर्मा) समय प्रातः काल ४ बजे

स्थान—दीपलपुर के समीप वन प्रान्त में एक छोटा सा गांव।

कल्याणी—बेटा, आज तो तेरी वर्षगांठ है।

बलकरन — मां, आज वर्षगांठ में क्या-क्या करोगी ?

कल्याणी—क्या करूंगी ? अपने प्यारे बेटे को नहलाऊंगी, चन्दन लगाऊंगी, फूलों की माला पहनाऊंगी। फिर मिठाइयों के साथ खीर खिलाऊंगी।

बलकरन — पर मां, मेरे साथ तुझे भी खाना पड़ेगा।

कल्याणी — सूरज चढ़ आया, अभी तक सुजान दूध लाया ही नहीं। जाने क्यों नहीं लाया।

बलकरन—मुझे एक बर्तन दे दो। मैं अभी दूध लेकर आता हूं।

कल्याणी — अच्छा यह लो बर्तन। बेटा, जल्दी ही लौटना।

बलकरन—(प्रस्थान करते हुए) अच्छा मां, मैं अभी आया।

ग्रामीण—(घबराते हुए स्वरों में) तुरक आ गया। तुरक आ गया। भागो, भागो .... तुरक आ गया, भागो।

कल्याणी — यह भगदड़ कैसी मच रही है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रामीण=बहन भाग चलो। जल्दी——जल्दी। वह तैमूर तुरक आ गया। मैंने अपनी आंखों से देखा है। लूटते हुए आ रहे हैं। हम लोग मरे ——चलो बहन।

कल्याणी—(घबराहट से) बलकरन। मेरा बलकरन तो अभी नहीं आया।

ग्रामीण—बहन चुप रहो। कोई सुन लेगा। जल्दी चलो——जल्दी चलो।

तैमूर—(बर्तनों को देखता हुआ) सब खाली। कम्बख्तों ने कुछ भी नहीं छोड़ा! लेकिन कोई बात नहीं।

बलकरन—मां, मां, मैं यह दूध ले आया।

तैमूर यह दूध इधर ला——इस वक्त खुदा ने मेरे लिए भेजा है।

बलकरन—यह दूध—— यह दूध मेरी वर्षगांठ के लिए है। यह मैं मां के सिवाय किसी को नहीं दे सकता।

(तैमूर दूध छीनकर पीता है। बलकरन उसकी तलवार उठा लेता है)।

बलकरन—तुम्हारी तलवार अब मेरे हाथ में है। अब तुम मुझ से लड़ सकते हो, सामने आओ।

तैमूर—(दुहरा कर) सामने आओ? शाबास। लेकिन मेरी तलवार तुमसे सम्हलेगी नहीं, बच्चे। इधर ला।

बलकरन—छीन लो? लेकिन यह तुम्हारी बहादुरी नहीं है। मेरे पास चाकू है। मैं इसी से लड़ूंगा। चलाओ अपनी तलवारें मैं भागूंगा नहीं।

तैमूर—भागेगा नहीं। तू बहादुर शेर है। मैं तुम्हारी बहादुरी देख कर तुझे अपना दुश्मन भी नहीं मानता। तेरा नाम क्या है चाकू वाले?

बलकरन—बलकरन।

तैमूर—बलकरन। बलकरन। हिन्दुस्तान की दौलत में तू भी एक दौलत है बलकरन। गाजी तैमूर एहसान नहीं भूलता। जो उसकी थकावट दूर करने के लिए दूध हाजिर कर सकता है, वह उसके खून से अपनी तलवार नहीं रंगेगा। मैं तेरी एक मुराद पूरी कर सकता हूं। मांग।

बलकरन - आप हमारे गांव से बाहर चले जाइए।

तैमूर—जरूर। अपने छोटे बहादुर दोस्त की मुराद पूरी करूंगा। तेरा दूध और चाकू मुझे हमेशा याद रहेंगे।

(शीघ्रता से तैमूर का प्रस्थान तथा कल्याणी का प्रवेश)

कल्याणी - बेटा——बेटा—— बलकरन। तुझे तो कहीं चोट नहीं आई।

बलकरन—नहीं मां। मुझे तो कहीं चोट नहीं आई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कल्याणी - बेटा, आज तेरी वर्षगांठ है न। (चारों तरफ देखकर) तुरक के सिपाहियों ने सारा घर ध्वस्त कर डाला। तेरे लिए मैंने कितनी अच्छी-अच्छी मिठाइयां बनाई थीं। सब नष्ट हो गई। अब तेरी वर्षगांठ कैसे मनाऊं ?

बलकरन—अपना आशीर्वाद भर दे, मां। और ———

कल्याणी तेरे खून का ही तिलक लगाऊं। यही सही मेरे लाल वीर बालक की वर्षगांठ है।

(बलकरन गम्भीर है। कल्याणी रक्त चन्दन लगाती है।)

पाठ्य वस्तु	अध्यापक क्रिया	छात्र क्रिया
परिचयात्मक पाठ	"तैमूर की हार" नामक एकांकी प्रसिद्ध एकांकीकार डॉ राम-कुमार वर्मा द्वारा लिखा गया है। यह एक ऐतिहासिक एकांकी नाटक है। इस एकांकी नाटक के प्रमुख पात्र कल्याणी, बलकरन की मां, बलकरन कल्याणी का बेटा, विदेशी आक्रमणकारी तैमूर और कुछ ग्रामीण हैं।	परिचयात्मक पाठ सुनेंगे
आदर्श-पाठ	अध्यापक छात्रों में पाठ्य-वस्तु-पत्र वितरित करेगा। तत्पश्चात् उचित आरोह-अवरोह, गीत, विराम चिन्हों तथा भावानुसार तैमूर की हार नामक एकांकी का आदर्श पाठ करेगा।	छात्र पाठ्य-वस्तु-पत्र प्राप्त करेंगे। तत्पश्चात् आदर्श पाठ ध्यान से सुनते हुए हाव-भाव भी देखेंगे।
पात्र चयन	अध्यापक अभिनयात्मक पाठ के लिए छात्रों में से पात्रों का चयन करेगा।	छात्र पात्र चयन में भाग लेंगे।
अभिनयात्मक पाठ	अध्यापक चुने गए पात्रों से अभि-नयात्मक पाठ करवाएगा। वह उन्हें बीच-बीच में उचित निर्देश भी देता रहेगा तथा अनुशासन बनाए रखेगा।	चुने हुए छात्र अभि-नयात्मक पाठ करेंगे। तथा अन्य छात्र पाठ सुनेंगे और हाव-भाव देखेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुन: आदर्श पाठ	अध्यापक अभिनयात्मक पाठ के छात्र सुधार हेतु पुन: आदर्श पाठ करेगा।	आदर्श पाठ सुनेंगे तथा अग संचालन देखेंगे।
	शब्द — **अर्थ**	
शब्दार्थ कार्य	वर्षगांठ — जन्म दिन	(नालन्दाशब्द कोश)
	मुराद — मन की इच्छा, आशा	हिन्दी शब्द कोश
	ध्वस्त — नष्ट हुआ, टूटा-फूटा	(डा० सूर्य कान्त)
विचार-विश्लेषणात्मक प्रश्न—	(1) वर्षगांठ के अवसर पर क्या-क्या तैयारियां की जाती हैं? संवाद पाठ करते हुए बताइए।	छात्र संवाद पाठ करते हुए उत्तर देंगे।
ग्रामीण—तुरक... ....भागो।	(2) ग्रामीण घबराए हुए स्वरों में क्यों बोल रहे हैं?	छात्र उत्तर देंगे।
	(3) वे कल्याणी को 'चलो बहन' क्यों कहते हैं।	छात्र उत्तर देंगे।
कल्याणी बलकरन ......नहीं आया।	(4) कल्याणी बलकरन को घबरा कर क्यों पुकारती है?	छात्र उत्तर देंगे?
तैमूर सब......	(5) तैमूर सब बर्तनों को क्यों देखता है?	छात्र उत्तर देंगे।
......बात नहीं	(6) बर्तनों को देखने से क्या बात ज़ाहिर होती हैं?	,,
	अध्यापक कथन - तैमूर भूखा था इसलिए बर्तनों को देखना था ताकि खाने को कोई वस्तु मिल जाए जिससे वह अपनी भूख मिटा ले। इसलिए वह बलकरन से दूध छीनकर पीता है।	छात्र अध्यापक कथन सुनेंगे।
तैमूर सामने... ......इधर ला	(7) तैमूर 'सामने आओ' शब्द को क्यों दुहराता हैं।	छात्र प्रश्न का उत्तर देंगे।
	अध्यापक कथन—तैमूर बलकरन की निर्भीकता से प्रसन्न होता है। अत: वह इस शब्द को दुहराता है और उसे शाबासी देता है।	छात्र अध्यापक कथन सुनेंगे।
	तैमूर और बलकरन के चरित्र में क्या अन्तर है?	
	अध्यापक कथन—तैमूर एक वीर है और वह वीरता की इज्जत भी करता है। वह अहसानमंद भी है वह अपनी बात को पूरा करने वाला है।	छात्र सुनेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

	बलकरन, वीर, निर्भीक, साहसी, कर्त्तव्यपरायण और देशभक्त है। उसकी बहादुरी के कारण तैमूर उसे अपना छोटा बहादुर दोस्त मानता है।	
बलकरन छीन ...भागूंगा नहीं	(9) इस संवाद से बलकरन के चरित्र की क्या विशेषता मालूम पड़ती है ?	छात्र उत्तर देंगे।
	(10) गाज़ी तैमूर की पोशाक के लिए किन-किन चीज़ों की आवश्यकता होगी ? (चित्र दिखाकर)	छात्र चित्र देख कर उत्तर देंगे।
	(11) बलकरन के लिए किन-किन चीज़ों की आवश्यकता होगी ?	छात्र उत्तर देंगे।
बलकरन-बलकरन	(12) इन दोनों संवादों में क्या अन्तर है ?	छात्र उत्तर देंगे।
तैमूर बलकरन ......मांग।	(13) बलकरन का संवाद शीघ्र याद क्यों हो सकता है ?	छात्र उत्तर देंगे।
	(14) एकांकी नाटक के संवाद कैसे होने चाहिएं।	छात्र उत्तर देंगे।
तैमूर-बलकरन ..... मांग।	(15) इस संवाद में उर्दू भाषा के शब्द क्यों हैं ?	
	(16) इससे क्या बात मालूम पड़ती हैं ?	
	अध्यापक कथन—तैमूर जाति से मुसलमान था। इनकी मातृ-भाषा उर्दू होती है। जैसे हमारी मातृ-भाषा हिन्दी है। अत: उसके संवादों में उर्दू भाषा के शब्द अधिक हैं।	छात्र सुनेंगे।
	(18) मातृ-भाषा का ज्ञान कौन संवाद से होता है ?	छात्र उत्तर देंगे।
	(1·) अन्त में बलकरन गम्भीर क्यों हो जाता है ?	छात्र सुनेंगे।
	अध्यापक कथन—बलकरन अपने द्वारा किए गए वीरता के कार्यों पर विचार करता हुआ गम्भीर हो जाता है।	
कथनीय—	हमारे देश के वैभव से प्रभावित होकर बहुत से विदेशी शासक इसे लूटने आए। गाज़ी तैमूर भी उनमें से एक था। एक बार उसे एक फकीर ने कहा कि तुम अपनी एक टांग कटवा दो तो बादशाह बन सकते हो, उसने ऐसा ही किया। उसका उद्देश्य भारत को लूटना था। वह अपने साथ भारत से अपार धनराशि लेकर गया था।	छात्र सुनेंगे
श्यामपट—	अध्यापक छात्रों को श्यामपट कार्य अपनी	छात्र अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

	कापियों में उतारने के लिए कहेगा तथा स्वयं उनका निरीक्षण करेगा।	कापियों में श्याम-पट कार्य उतारेंगे।
पुनरावृत्ति से प्रश्न—	(1) कल्याणी के घर का दृश्य उपस्थित करने के लिए किन-किन चीज़ों की आवश्यता होगी।	छात्र प्रश्नों के उत्तर देंगे
	(2) रंगमंच तैयार करने में क्या कठिनाइयां आती हैं।	
	(3) यदि बलकरन के स्थान पर तुम होते तो क्या करते।	
	(4) संवाद पाठ करते हुए बलकरन के चरित्र की विशेषताएं बताइए।	
	(5) निम्न शब्दों में से उचित शब्द द्वारा रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए— तैमूर के सामने बलकरन .... हुआ। (विजयी, पराजित, नतमस्तक)	
अन्तिम संवाद पाठ —	अध्यापक छात्रों से अन्तिम संवाद पाठ करवाएगा तथा उनके पाठ के सुधार हेतु स्वयं भी पाठ करेगा।	छात्र अन्तिम संवाद पाठ करेंगे तथा सुनेंगे।
गृहकार्य —	अध्यापक छात्रों को भिन्न-भिन्न पात्रों के संवादों को बोलने का अभ्यास करने के लिए कहेगा।	छात्र संवाद पाठ करने का अभ्यास करेंगे।

———

पाठ योजना 8.

विषय—हिन्दी

प्रकरण – मुहावरे कक्षा—6 अ अवधि—40 मिनट

(हाथ सम्बन्धी)

उद्देश्य	विषय वस्तु	व्यवहार परिवर्तन
(1) भाषा तत्त्व	(1) हाथों हाथ रखना	1. विद्यार्थी इनका प्रत्यभिज्ञान कर सकें।
	(2) हाथ लगना	
हाथ सम्बन्धी मुहावरे	(3) हाथ पसारना	2. इनका प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।
	(4) हाथ पर हाथ रखना	
(2) मौखिक अभिव्यक्ति	(5) हाथ रखना	(3) छात्र मुहावरा वाणी में
	(6) हाथ लगाना	बोल सकेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

(7) हाथ छोड़ना
(8) हाथ जोड़ना
(9) हाथ मलना
(10) हाथ उठाना
(11) हाथ साफ करना
(12) हाथ का मैल

4. छात्र प्रसंगानुसार उचित गति से बोल सकेंगे।

5. वे उचित विराम के साथ बोल सकेंगे।

6. वे प्रवाह के साथ बोल सकेंगे।

7. वे प्रसंगानुसार उचित शब्दों, मुहावरों तथा सूक्तियों का प्रयोग कर सकेंगे।

8. वे सरल मुहावरेदार भाषा का प्रयोग कर सकेंगे।

9. वे उचित हाव-भाव के साथ बोल सकेंगे।

10. वे प्रसंग तथा विषय के अनुसार शैली का प्रयोग कर सकेंगे।

सहायक सामग्री—कक्षा-कक्ष के सामान्य उपकरणों के अतिरिक्त दो लपेट-फलक (जिन पर मूल्यांकन लिखा जावेगा) एवं दोहे लिखे हुए चार्ट इत्यादि।

पूर्वज्ञान—

छात्र अपने शरीर के अत्यधिक उपयोगी अंग हाथ से तथा उसकी क्रियाओं से परिचित है। शब्दों या क्रिया-प्रयोगों के योग से कुछ विशिष्ट पद बन जाते हैं जो परिचित हैं। शब्दों या क्रिया-प्रयोगों के योग से कुछ विशिष्ट पद बन जाते हैं जो मुहावरे कहलाते हैं। छात्र मुहावरे तथा लोकोक्ति के बारे में साधारण ज्ञान रखते हैं।

उत्प्रेरणा उपक्रम

अरे बन्धु ! यदि रोगी हो तो,
चलो वैद्य को हाथ दिखा दूं।
भाग्य चक्र यदि वाम हुआ तो,
हाथ ज्योतिषी को दिखला दूं।
हाथ दिखाए थे सेना ने,
हिन्द पाक के रण में भी।
हाथ दिखाता चौराहे पर,
प्रतिदिन पुलिस सिपाही भी॥

प्रश्न संख्या— 1. उपर्युक्त कविता में बार-बार किस वाक्यांश की आवृत्ति हुई ?

2. रोगी के प्रसंग में 'हाथ दिखाने' का क्या अर्थ है ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

3. ज्योतिषी को क्यों हाथ दिखाया जाता है ?

4. चौराहे पर सिपाही संकेत करने के लिए क्या करता है ?

कार्याभिसूचना एवं—

प्रस्तुतीकरण—रोगी, भाग्य, सेना एवं चौराहे के प्रसंग में हाथ दिखाने के तरीके भिन्न-भिन्न हो गये हैं हाथ दिखाना मुहावरे के प्रयोग से अर्थ में चमत्कार आ गया है। हाथ से सम्बन्धित अन्य अनेक मुहावरे हैं, जिनमें से कुछ का हम आज अध्ययन करेंगे।

पाठ दो अन्वितियों में पढ़ाया जाएगा। द्वितीय अन्विति पहले पढ़ाई जायेगी।

शिक्षण बिन्दु	अध्यापिका क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
	कवि ने एक गरीब लड़के को अपनी आवश्यक पुस्तक दे दी और उसने उसे लौटाया नहीं। उस प्रसंग से सम्बन्धित है यह कविता— हाथों हाथ रखी जो पुस्तक, लगी न मेरे हाथ कभी। हाथ पसारे फिरा अभी तक, रखा हाथ पर हाथ अभी। हाथ रखा है जिस अशक्त पर, उससे पुनः मांगना क्या ? हाथ लगाकर जिसे पढ़ाया, उस पर हाथ छोड़ना क्या ?	
	1. उपर्युक्त कविता में प्रयुक्त मुहावरे कौन-कौन से हैं ?	1. हाथों हाथ रखना 2. हाथ न लगना 3. हाथ पसारना 4. हाथ पर हाथ रखना 5. हाथ रखना 6. हाथ लगाकर 7. हाथ छोड़ना
हाथों-हाथ रखना···	हाथों हाथ रखी जो पुस्तक में हाथों हाथ रखना मुहावरे का क्या अर्थ है ?	(1) बहुत प्रिय होना (2) अभी-अभी रखना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	अध्यापिका क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
	1. अध्यापक के कहते ही छात्रों ने जुर्माना हाथों हाथ जमा करवा दिया।	
	2. हाथों हाथ कोई भी कार्य करने में बड़ी कठिनाई आती है।	
	3. इस पत्र का उत्तर हाथों हाथ नहीं मिलेगा, डाक से भिजवा दिया जावेगा।	
हाथ लगना	'लगो न मेरे हाथ कभी' पंक्ति में हाथ लगना से क्या तात्पर्य है ?	प्राप्त होना
	2 बहुत चेष्टा करने पर भी रमेश की पुस्तक मेरे हाथ न लगी।	
	3. ऐसा लगता है कि मेरा खोया हुआ कलम किसी छात्र के हाथ लग गया है।	
	4. मेरा पर्स सड़क पर गिर गया, और अभी तक नहीं मिला ! ऐसा लगता है कि पर्स किसी चोर के हाथ लग गया।	
हाथ पसारना	हाथ पसारे फिरा अभी तक पंक्ति में हाथ पसारना से क्या अभिप्राय है ?	मांगना
	2. दूसरों के सामने हाथ पसारना लज्जा की बात है।	
	3. बीड़ी पीने वाले लोग सदैव दूसरों के सामने हाथ पसारते रहते हैं।	
	4. [illegible] के सामने हाथ मत पसारो।	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	अध्यापिका क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
हाथ पर हाथ रखना—	'रखा हाथ पर हाथ अभी' पंक्ति में हाथ पर हाथ रखना से क्या अभिप्राय है ? 1. हाथ पर हाथ रखे क्यों बैठे हो ! कुछ काम करो । 2. जो हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता है, भाग्य भी उनका साथ छोड़ देता है । 3. जो छात्र, हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं । वे परीक्षा में असफल हो जाते हैं ।	निराश होना (खाली बैठना)
हाथ लगना—	'हाथ लगाकर जिसे पढ़ाया' पंक्ति में हाथ लगाना से क्या अभिप्राय है ? 1. कृष्ण के साथ सभी ग्वाल-बालों ने गोवर्धन उठाने में हाथ लगाया था । 2. किसका हाथ लगा है ? काम स्वयं ही बता देता है । 3. आपका हाथ लगा और काम तुरन्त हुआ ।	सहायक बनना
हाथ छोड़ना	'उस पर हाथ छोड़ना क्या' पंक्ति में हाथ छोड़ना से क्या अभिप्राय है ? 1. विपत्ति आने पर सच्चे मित्र भी हाथ छोड़ देते हैं । 2. रमेश ! मुझे जाल में फंसा कर हाथ मत छोड़ देना । 3. समय आने पर हाथ छोड़ना अच्छे मित्र का लक्षण नहीं ।	धोखा देना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	अध्यापिका क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
द्वितीय अन्विति		
हाथ जोड़ना—	[हाथ जोड़ते हुए] मैं क्या कर रही हूं ?	आप हाथ जोड़ रही हैं।
	1. उपर्युक्त वाक्य में हाथ जोड़ना का क्या अर्थ है ?	1. साधारण अर्थ में प्रयुक्त हुआ है हाथ जोड़ना नमस्ते करने से अभिप्राय है।
	2. मैं ऐसे नीच को दूर से ही हाथ जोड़ती हूं।	
	3. मूर्ख मित्रों को तो दूर से ही हाथ जोड़ लेना चाहिए ।	2. दूसरे वाक्य में सम्बन्ध न रखना से तात्पर्य है। या पीछा छुड़ाना से।
	4. केवल हाथ जोड़ने से काम न चलेगा, कुछ हर्जाना भी देना होगा।	
	5. मोहन ने सोहन से कहा. पहले तुमने मुझे बुलाया क्यों था ? अब हाथ जोड़ने से काम नहीं चलेगा।	
हाथ मलना—	[हाथ मलते हुए] अब मैं क्या कर रही हूं ?	आप हाथ मल रही हैं।
	2. मैं हाथ मल रही हूं। इस पंक्ति में हाथ मलना साधारण अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।	1. प्रथम वाक्य हाथ मलना के अर्थ में आया है।
	2. गरीब के घर में चोरी हो गई और वह हाथ मलता ही रह गया।	2. दूसरे वाक्य में हाथ मलना से अभिप्राय पछताना से है।
	3. अब हाथ मलने से क्या फायदा ! मेहनत करते तो अवश्य पास होते।	
	4. दसवीं कक्षा के फार्म भरने की तारीख निकल गई तो राम हाथ मलता ही रह गया।	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	अध्यापिका क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
	5. दौड़ने में जल्दी करो, नहीं तो मित्र बाज़ी मार ले जायेगा और तुम हाथ मलते रह जाओगे।	
हाथ उठाना—	[किसी हाथ उठाए हुए छात्र की ओर संकेत करके]	वह हाथ उठा रहा है।
	1. वह छात्र क्या कर रहा है।	1+2 प्रथम और द्वितीय वाक्य में साधारण अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
	2. वह हाथ उठा रहा है। पंक्ति में हाथ उठाना से क्या अभिप्राय है?	
	3. अपने से बड़ों पर हाथ उठाना उचित नहीं होता।	3. तीसरे वाक्य में हाथ उठाना से अभिप्राय पीटने से है।
	4. एक कक्षा के विद्यार्थी सभी भाई-भाई हैं। एक दूसरे पर हाथ उठाना ठीक नहीं।	
	5. छोटे बच्चों पर हाथ उठाना उनके कोमल मन पर बुरा प्रभाव डालता है।	
	6. किसी औरत पर हाथ उठाना ठीक नहीं होता है। [रूमाल से हाथ साफ करते हुए]	
हाथ साफ करना—	1. मैं इस समय क्या कर रही हूं?	1. द्वितीय वाक्य में हाथ साफ करना से अभिप्राय साधारण अर्थ से है।
	2. मैं हाथ साफ कर रही हूं, से क्या अभिप्राय है?	2. हाथ साफ करना से तात्पर्य चोरी करना है।
	3. आजकल चोर लोग गरीबों पर भी हाथ साफ करने लगे।	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शिक्षण बिन्दु	अध्यापिका क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
	4. सोहन बड़ा ही बेईमान लड़का है। रमेश के घर गया और 5 रुपये पर हाथ साफ कर गया।	
	5. जेब कतरे यात्रियों की जेब पर बड़ी चतुराई से हाथ साफ करते हैं।	
हाथों का मैल	मैं अपने हाथों का मैल उतार रही हूं।	
	1. इस वाक्य में हाथों का मैल उतारने से क्या अभिप्राय है ?	1. साधारण अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।
	2. धनी लोगों के लिए थोड़े से रुपये हाथों का मैल होता है।	2. द्वितीय वाक्य में हाथ का मैल से तात्पर्य तुच्छ वस्तु से है।
	3. पैसा हाथों का मैल है किन्तु समय पर खर्च करने में ही इसकी उपयोगिता है।	
	4. गरीब रुपये पैसे को ललचाई दृष्टि से देखते हैं लेकिन धनवानों के लिए वह हाथ का मैल होता है।	
	1. उपर्युक्त वाक्यों में मुहावरों के प्रयोग से भाषा कैसी हो गई है ?	3. मुहावरों के प्रयोग से भाषा में चमत्कार आ गया है। तथा विशिष्ट लक्षणा जन्य अर्थ निकलता है।
पुनरावृत्ति	निम्नलिखित मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करो— 1. हाथ मलना 2. हाथ लगना 3. हाथ पसारना 4. हाथ उठाना	

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूल्यांकन

रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

1. छोटी-छोटी चीजों के लिए पड़ौसियों के सामने हाथ......ठीक नहीं।

2. ......पर हाथ रखने से काम नहीं चलेगा, अगले वर्ष की परीक्षा के लिए तैयारी करो।

3. अबलाओं पर हाथ......पुरुषत्व नहीं।

4. प्रात: भ्रमणार्थ जाते हुए एक सुन्दर छड़ी हाथ ..... गई।

5. मज़दूर ने दिन भर मेहनत की फिर भी उसे ..... हाथ घर जाना पड़ा।

पाठ योजना 9.

कक्षा IX समय 40 मिनट

विषय हिन्दी गद्य प्रकरण : भारत की सांस्कृतिक एकता

मूल पाठ

भारत की सांस्कृतिक एकता (गद्यांश)

देश राष्ट्रीयता का एक आवश्यक उपकरण है। भारत-भूमि की नदियों के प्रवाह को प्राकृतिक विभाजन रेखाएं बतलाकर तथा भाषा और धर्मों एवं रीति-रिवाजों के भेद आधार बनाकर हमारी राष्ट्रीयता को चुनौती देने के निमिति उत्तर-दक्षिण, अवर्ण-सवर्ण, हिन्दू-मुसलमान सिख-ईसाई और जैन के भेद खड़े करके हमारी संगठित इकाई को क्षति पहुंचाई है भाषा का बवण्डर उठाया गया ताकि आपसी झगड़ों और भेद-भाव में हमारी शक्ति का ह्रास हो और विदेशी शासकों का राज्य अटल बना रहे।

पहले तो प्राय: सभी देशों में जाति, भाषा और धर्म गत भेद हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में कई जातियां हैं। वहां भाषाएं कई बोली जाती हैं, किन्तु एक केन्द्रीय भाषा सबको मिलाए हुए है स्विटज़रलैंड में जर्मन, फांसीसी तथा इतालवी तीन भाषाएं बोली जाती हैं। फिर भी एक सुसंगठित राष्ट्र है। इंगलैंड व आस्ट्रेलिया एक भाषा-भाषी होते हुए भी भिन्न-भिन्न राष्ट्र हैं। जिस देश में भेद नहीं उसकी इकाई शून्य या गणित शास्त्र की इकाई की भांति दरिद्र इकाई है। सम्पन्नता भेदों में ही है, किन्तु भेद इतने नहीं होने चाहिये कि उनमें सामंजस्य न रहे।

वैसे तो केंचुआ भी एक इकाई है उसमें आंख, कान, नाक और हाथ-पैर का भेद नहीं, केवल एक ही स्पर्शेन्द्रिय सारी ज्ञानेन्द्रियों का प्रतिनिधित्व करती है, किन्तु क्या उसका जीवन सम्पन्न कहा जायेगा ? मनुष्य अवयवों के बाहुल्य और उनके समायोजन और संगठन के कारण जीवधारियों में सबसे अधिक विकसित और श्रेष्ठ गिना जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भेदों के अस्तित्व से इन्कार करना मूर्खता होगी और उनकी उपेक्षा करना अपने को धोखा देना होगा। हमारे समाज में भेद और अभेद दोनों ही हैं। हमारे पूर्व-शासकों ने अपने स्वार्थवश हमारे भेदों को अधिक विस्तार दिया जिससे हमारे देश में फूट की बेल पनपे और इस भेद-नीति से उनका उल्लू सीधा हो। हमारे अभेदों की अपेक्षा की गई या उनको नगण्य समझा गया। हम में हीनता की मनोवृति पैदा की गई। देश की नदियां, जिनको विभाजन-रेखाएं कहा जाता है, हमारी भूमि को उर्वरा और स्स्य-श्यामला बनाती हैं हमारी भौगोलिक इकाई हिमालय पर्वत और सागर से है उस प्राचीन काल में राष्ट्रीयता की धारा अबाधित तो नहीं रही है आन्तरिक द्वेष कभी-कभी प्रबल हो उठे : किन्तु भारतवासी एक छात्र सार्वभौम राज्य से अपरिचित नहीं थे। राजसूर्य, अश्व-मेघ यज्ञ ऐसे ही राज्य की स्थापन्न के ध्येय से किये जाते थे। इनके द्वारा टूटी हुई राष्ट्रीयता एकता जुड़कर अविरल धारा का रूप धारण कर लेती थी।

—बाबू गुलाब राय

उद्देश्य	विषय वस्तु	व्यवहार परिवर्तन
भाषातत्व	राष्ट्रीयता, भारत-भूमि, प्रवाह चुनौती, अवर्ण-सवर्ण, ह्रास	(i) छात्र शब्दों का प्रत्यास्मरण कर सकेंगे।
शब्द भण्डार	धर्मगत, सुसंगठित, भाषा-भाषी अटल, स्पर्शेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय	(ii) छात्र शब्दों का प्रत्यभिज्ञान कर सकेंगे।
	प्रतिनिधित्व, श्रेष्ठ अस्तित्व	(iii) छात्र शब्दों का संश्लेषण कर सकेंगे।
	अपेक्षा, अभेद, उल्लू सीधा	(iv) छात्र शब्दों का विश्लेषण कर सकेंगे।
	करना, मनोवृत्ति, उर्वरा	(v) शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे।
उच्चारण	चुनौती, प्रवाह, ह्रास,	(vi) छात्र शुद्ध शब्द बोल सकेंगे।
	सामंजस्य, स्पर्शेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय, मनोवृति, अश्वमेघ यज्ञ, द्वेष, अबाधित	(vii) छात्र शुद्ध-अशुद्ध शब्दों को छांट सकेंगे।
वर्तनी	अस्तित्व स्पर्शेन्द्रिय, प्रबल द्वेष सामंजस्य, मनोवृति	(viii) छात्र वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्दों को छांट सकेंगे।
	उर्वरा, राष्ट्रीयता, अविरल	(xi) छात्र सही शब्द लिख सकेंगे।
उपसर्ग	अभेद अविरल, अभेद्य,	छात्र उपसर्ग शब्दों को छांट सकेंगे।
	सुसंगठित, अटल	छात्र उपसर्ग शब्दों का विश्लेषण-संश्लेषण कर सकेंगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उद्देश्य	विषय वस्त	व्यवहार परिवर्तन
		अन्य उपसर्ग शब्दों का उदाहरण दे सकेंगे ।
प्रत्यय	सुसंगठित, सम्पन्नता, अबाधित, राष्ट्रीयता	छात्र प्रत्यय शब्दों को छांट सकेंगे । छात्र प्रत्यय शब्दों का संश्लेषण विश्लेषण कर सकेंगे । छात्र प्रत्यय शब्दों के अन्य उदाहरण दे सकेंगे ।
समास	भारत-भूमि, सार्वभौम अवर्ण-सवर्ण शस्य-श्यामला	छात्र समास शब्दों को छांट सकेंगे । समास शब्दों का पद विग्रह कर सकेंगे । समास शब्दों के अन्य उदाहरण दे सकेंगे ।
संधि	स्पर्शेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय समायोजन	छात्र शब्दों की सन्धि विच्छेद कर सकेंगे एवं उनका विश्लेषण कर सकेंगे ।
पुनरुक्ति शब्द	भिन्न-भिन्न	पुनरुक्ति शब्दों का संश्लेषण कर सकेंगे ।
मुहावरे	उल्लू सीधा होना	छात्र मुहावरे शब्दों को छांट सकेंगे । मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कर सकेंगे ।
विषय	सम्पूर्ण अंश	छात्र विषय वस्तु सम्बन्धी बिन्दुओं को छांट सकेंगे ।
मानसिक योग्याएं (i) अर्थ ग्रहण		छात्र अवतरणों का सारांश ग्रहण कर सकेंगे । छात्र सुनने का अर्थ ग्रहण करने की स्थिति बनाये रख सकेंगे ।
(ii) सुनकर (iii) पढ़कर अभिव्यक्ति बोलकर लिखकर	सम्पूर्ण अंश	छात्र मुख्य-मुख्य बिन्दुओं को अपने भावों के अनुसार बोल सकेंगे ।

सहायक सामग्री कक्षा-कक्ष की सामान्य सामग्री ।

उत्प्रेरणा उपक्रम हमारे देश में किन-किन धर्मों के मानने वाले लोग रहते हैं ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारे देश में किन-किन भाषाओं को बोलने वाले लोग रहते हैं ।

स्वतन्त्रता से पहले हमारे देश में किस का शासन था ?

उद्देश्य कथन आज हम भारत की सांस्कृतिक एकता के बारे में अध्ययन करेंगे जिसमें भारतीय संस्कृति एकता की विविधता में एकता के गुण, अनेक धर्मों में समन्वय बतलाया गया है ।

प्रस्तुतिकरण—प्रस्तुत पाठ एक अन्विति में पढ़ाया जायेगा ।

अध्यापन बिन्दु—देश राष्ट्रीय का..... रूपधारण कर लेती है ।

आदर्श वाचन—अध्यापक उचित-आरोह-अवरोह के साथ वाचन करेगा ।

अनुकरण वाचन—छात्र पाठ का उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन करेंगे ।

बोध प्रश्न :—

छात्र-क्रियाएं	अध्यापक-क्रियाएं
राष्ट्रीयता का आवश्यक उपकरण किसे बता गया है ?	राष्ट्रीयता का आवश्यक उपकरण देश को बतलाया गया है ।
मनुष्य को अन्य जीवधारियों से श्रेष्ट क्यों माना है ?	मनुष्य को अन्य जीवधारियों की अपेक्षा अवयवों की बाहुलता व उनके समायोजना व संगठन के कारण श्रेष्टं माना गया है ।
किस कारण वश पूर्व-शासकों ने हमारे देश में फूट-बेल को पनपाया गया ?	स्वार्थवश हमारे देश में पूर्वशासकों ने भेद को अधिक विस्तार दिया गया ।
स्विटजरलैण्ड में कितनी भाषाएं बोली जाती हैं ?	स्विटजरलैण्ड में तीन भाषाएं बोली जाती हैं । जर्मनी, फ्रांसीसी, इतालबी ।

भाषा कार्य :—

शब्द	अर्थ	विधि	प्रयोग
सम्पन्नता	धन से युक्त, धनी	प्रत्यय बताकर	(ता) सरलता, कठिनता
प्रवाह	पानी का बहाव	समान उच्चरित शब्दों को बतला कर	गंगा नदी का प्रवाह उत्तर से पूर्व की ओर है । प्रभाव—पाश्चात्य शिक्षा का भारतीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा ।
उपेक्षा	लापरवाही	समान उच्चरित शब्द बतलाकर एवं वाक्य प्रयोग द्वारा	उपेक्षा – हमें बड़े-बूढ़ों की बातों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये । अपेक्षा—राम की अपेक्षा श्याम का खेल अच्छा रहा है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अभेद	अभिन्नता	उपसर्ग एवं समान उच्चरित शब्द बतलाकर अभेद्य — जिसे तोड़ा नहीं जा सके अवैध = कानून के विपरीत	**अभेद**—भारतीय समाज के अभेदों की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया। **अभेद्य**—रणथम्भोर किला शत्रुओं द्वारा अभेद्य था। **अवैध** अवैध कार्य करने पर मनुष्य को हानि उठानी पड़ती है।
उर्वरा	उपजाऊ	विलोम शब्द बताकर एवं वाक्य प्रयोग ऊसर	ऊसर भूमि में पैदावार नहीं होती है। उर्वरा प्राकृतिक एवं कृत्रिम खादों से भूमि की उर्वराशक्ति बढ़ाई जा सकती है।
सामंजस्य	विरोध एवं विषमता से रहित, समन्वय, मेल	समानार्थी शब्द बतला कर, वाक्य प्रयोग द्वारा	अकबर के द्वारा मुस्लिम और हिन्दू संस्कृति का **सामंजस्य** किया गया था।
समायोजन	प्रबन्ध-इन्तजाम	सन्धि-बताकर सम+आयोजन	अगले बजट में कृषि के लिए 50 करोड़ रु० का **समायोजन** किया गया है।
ह्रास	कमी, पतन, नाश,	विलोम शब्द बताकर विकास वाक्य प्रयोग द्वारा समानार्थी शब्द	ह्रास उसकी शक्ति का दिनों दिन ह्रास होता जा रहा है कुछ ही दिनों में वह क्षीण हो जाएगा।
क्षति	नुकसान		अंग्रेजों ने हमारी संगठित इकाई को क्षति पहुंचाई।
अबाधित	बाधा रहित	(अ) उपसर्ग बताकर	अबोध, अजान, अज्ञान अपरिचित
प्रबल	बल सहित बहुत बली, प्रचंड	उपसर्ग (प्र) बताकर	प्रताप, प्रचंड, प्रचार
मनोवृति	मन का रुझान	विशेषण बताकर	मनः+वृति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्द	अर्थ	विधि	प्रयोग
अश्वमेध यज्ञ	प्राचीन काल में किया जाने वाला यज्ञ	अर्थ कथन द्वारा	सम्राट द्वारा किया जाने वाला यज्ञ, इस में सम्राट द्वारा एक घोड़ा छोड़ा जाता था, घोड़े के पीछे उसकी सेना अगर भ्रमण कर सभी देशों से वापिस आ जाती थी तो सम्राट मान लेते थे, और यदि किसी देश के शासक द्वारा घोड़ा पकड़ लिया जाता तो उसके साथ में उस फौज द्वारा युद्ध लड़ा जाता है ।
द्वेष	वैर	समानार्थी व समान उच्चरित शब्द बता कर, ईर्ष्या द्वेश, अर्थ कथन द्वारा देश	ईर्ष्या—किसी की उन्नति कर देख कर जलना, द्वेष—में वैर भाव आ जाता है । हमारी पृथ्वी पर अनेक देश हैं ।
अविरल	निरन्तर, लगातार	(अ) उपसर्ग बताकर	अ + विरल अज्ञान, अभेद अभेद्य, अजान,
ध्येय	लक्ष्य	वाक्यों में प्रयोग द्वारा	विद्यार्थियों का प्रमुख ध्येय शिक्षा प्राप्त करना है न कि राजनीतिक झगड़ों से उलझना ।
उल्लू सीधा करना	अपना काम बनाना	वाक्यों में प्रयोग	अंग्रेजों ने केवल अपना ही उल्लू सीधा किया, भारतीय सांस्कृति की कोई परवाह न की ।
भाषा-भाषी	भाषा बोलने वाला	समास बताकर के	हिन्दी-भाषी, उर्दू भाषी
सार्वभौम	विश्व के सब देशों में मान्य सारी भूमि का	शब्द प्रयोग अर्थकथन	भारत वर्ष सार्वभौम देश है सर्व सम्मति मान्यता प्राप्त देश है ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्द	अर्थ	विधि	प्रयोग
राष्ट्रीय	देश की	प्रत्यय (ईय) बताकर समास	राजकीय मानवीय
स्पर्शेन्द्रिय	जो इन्द्रियों के स्पर्श से अनुभव हो	संधि एवं वाक्य प्रयोग द्वारा	स्पर्श + इन्द्रिय
ज्ञानेन्द्रियां	जिन इन्द्रियों से अनुभव होता	अर्थ कथन एवं संधि विच्छेद द्वारा	इन्द्रियां—पांच होती हैं। (i) नेत्र (ii) नासिक (iii) कर्ण, (iv) जिह्वा, (v: त्वचा ज्ञान + इन्द्रियां, इसी प्रकार पांच ही रिपु= काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद। पांच तत्व = क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर।

व्याख्या विश्लेषण:—

शिक्षण बिन्दु	अध्यापक क्रियाएं	छात्र क्रियाएं
"सम्पन्नता भेदों में ही है किन्तु भेद इतने नहीं होने चाहियें कि उनमें सामंजस्य नहीं रहे"	ये शब्द किसके बारे में कहे गए हैं और क्यों ?	ये शब्द साँस्कृतिक विकास के लिए आवश्यक विशेषताओं के बारे में कहे गए हैं। क्योंकि विभिन्नता में एकता और उनका आपस में समन्वय होना भी आवश्यक है।
(ii) अश्वमेध यज्ञ	अश्वमेघ यज्ञ के बारे में आप क्या जानते है ?	सम्राट द्वारा किया जाने वाला यज्ञ, इसमें सभी देशों से भ्रमण कर लौटने वाले घोड़े के बाद, सम्राट की आधीनता स्वीकार कर ली जाती थी, एवं घोड़े को पकड़ लेने वाले शासक के साथ उसके पीछे जाने वाली सेना का युद्ध होता था एवं जिसकी विजय होती थी उसी के आधीन साम्राज्य हो जाता था।
इतालवी भाषा	इतालवी भाषा के बारे में बताइये ?	स्विटज़रलैण्ड में बोले जाने वाली इटालियन भाषा को कहते हैं।
"केंचुआ भी एक इकाई है और मनुष्य		मनुष्य—जीवधारियों में एक विकसित इकाई का रूप है क्योंकि इसने अपने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भी''		शरीर के अवयवों की बाहुलता एवं उनके प्रवन्ध और संगठन से उनके विकसित होने से श्रेष्ठ माना गया है केंचुआ (वर्षा) बरसाती जीव, यह भी जीव की इकाइयों में सम्मिलित है परन्तु इसकी इन्द्रियों का विकास नहीं हुआ है। केवल अपनी त्वचा स ही देखने सुनने अथवा सूंघने का कार्य करता है। मनुष्य अपनी विकसित इन्द्रियों द्वारा सब कार्य सम्पन्न कर लेता है।
हमारे देश के पूर्व शासक	किनको बताया गया है	पूर्व शासक अंग्रेज़ों को बताया गया है।
पूर्व शासकों ने हमारे भेदों को विस्तार दिया	क्यों दिया ?	अपने स्वार्थवश अंग्रेज़ों ने हमारी राष्ट्रीय संगठित इकाई को क्षति पहुंचाई।

पाठ योजना नं० 9

पुनरावृत्ति—निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए :—

1. हमारी सांस्कृतिक इकाई को कौन से तत्व क्षति पहुंचाते हैं ?
2 अन्य देशों में सांस्कृतिक इकाई की क्या दशा है ?
3. वे कौन से तथ्य हैं जिनके आधार पर हम कह सकते हैं कि भारत देश की संस्कृति एक है ?

गृह-कार्य—देश की सांस्कृतिक इकाई पर एक निबन्ध लिखें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिशिष्ठ 1

नवीन वस्तुगत प्रश्न पत्र

विषय : हिन्दी की शिक्षा

(1) नीचे दो कालमों में ऐसे शब्द दिए हुए हैं, जिनका परस्पर सम्बन्ध है। बाएं कालम से प्रत्येक शब्द को जोड़ा, दाएं कालम मे से चुने और रिक्त स्थानों पर सारा शब्द लिखने के बदले उसका अंक लिखें।

द्रुत पाठ	(........)	व्याकरण	1
छव ग्रं	(. ......)	नाट्य प्रणाली	2
लिपि	(.......)	वाद विवाद	3
बाल गीत	(.........)	प्रयत्न लाघव	4
मौखिक रचना	(.......)	पठन	5
उच्चारण	(........)	श्रवण	6
आगमन विधि	(...)	सहायक पुस्तक	7

(2) नीचे दी हुई उक्तियों के साथ तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। उनमें से प्रत्येक उक्ति के साथ केवल एक ऐसे विकल्प की दाईं ओर जोड़ चिह्न + लगाएं जो आप की दृष्टि में ठीक हों।

(क) निबन्धात्मक प्रश्न-पत्रों के साथ वस्तुगत प्रश्न-पत्र अपेक्षित हैं क्योंकि वस्तुगत प्रश्न-पत्र :—

(1) छोटे होते हैं। ....

(2) सरल होते हैं। ....

(3) परीक्षा को विश्वसनीय बनाते हैं। ....

(ख) भाषा शिक्षण में दृश्य-श्रव्य साधन महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि

(1) इनके द्वारा अमूर्त्त रूप में उपस्थित किया जा सकता है। ....

(2) ये पुस्तक के बदले काम में लाए जा सकते हैं। ....

(3) शिक्षा शास्त्रियों ने इनकी प्रशंसा की है। ....

(ग) वाचन सिखाने के लिए 'देखो और कहो विधि' अक्षर-

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विधि से श्रेष्ठतर हैं क्योंकि :—

(1) घर में अक्षरों के बदले ध्वनियों से प्रारम्भ किया जाता है।

(2) उस में निरर्थक अक्षरों के बदले सार्थक अक्षरों से आरम्भ किया जाता है।

(3) यह व्यय-साध्य नहीं हैं।

(3) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए। कोष्टक में कई शब्द दिए हुए हैं जिन से सहायता ली जा सकती—

(क) बच्चों के सामने पुस्तक पर छपे हुए अक्षरों का आदर्श रहता है, जिसका वे अनुकरण करते हैं इसको............कहते हैं। (श्रुतलिपि, अनुलिपि, प्रतिलिपि)

(ख) भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में सर्व प्रथम.........का नाम दिया जाता है वाचन, उच्चारण, लिखाई, मौखिक कार्ण, पाठ्य-पुस्तक)

(4) बेमेल शब्द काटिए—

(क) भाषण, संवाद, नाटक, चित्र रचना, कविता पाठ।

(ख) कहानी, जीवनी, वर्णन, कविता, यात्रा।

(ग) मातृ भाषा, राष्ट्र भाषा, सास्कृतिक भाषा, शिक्षा का माध्यम।

(5) निम्न वाक्यों में जो सत्य हैं उनके आगे कोष्टक में 'स' लिखें और जो असत्य है उनके आगे 'अ'

(1) अशुद्ध उच्चारण का प्रभाव अक्षर विन्यास पर पड़ता है।

(2) हाई कक्षाओं की पाठ्य-पुस्तक में रंगीन चित्रों का होना आवश्यक है।

(2) कविता पाठ में पहले व्याख्या और फिर मौन पाठ होना चाहिए।

(4) प्राइमरी कक्षाओं में व्याकरण की प्रयोग प्रणाली अपनानी चाहिए।

(5) द्रुत पाठ या व्याकरण की प्रयोग प्रणाली अपनानी चाहिए।

(6) प्राईमरी कक्षाओं में केवल मौखिक परीक्षा होनी चाहिए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न की कुंजी

(1) 7, 6, 5, 2, 3, 4, 1, ।

(2) (क) (3)+; (ख) (1)+:

(3) (क) प्रति लिपि (ख) मौखिक कार्य (ग) (2)+

(4) (क) चित्र-रचना (ख) कविता

(5) (1) स, (2) अ, (3) अ

(4) अ, (5) अ, (6) अ

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिशिष्ठ 2.

पारिभाषिक शब्दावली

अक्षर —Alphabet
अक्षर बोध विधि —Alphabetic Method
अक्षर-विन्यास—Spelling
अक्षर-व्यक्ति —Articulation
अभिव्यक्ति —Expression
अर्थ-बोध - Comprehension
अर्थ विचार —Semantics
अनुकरण—Imitation
अनुतान —Intonation
अनुदात्त —Low pitch
अनुभव-कोण—Cone of Experience
अनुलिपि —Calligrapy
अनुपात—Proportion
अनुसंधान—Research
अनुच्छेद—Paragraph
अमूर्त —Abstract
आगमन विधि—Inductive Method
आत्म भाषण—Soliloguy
आयोजित अनुभव—Contrived Experience
आधार-भूत-शब्दावली—Basic Vocabulary
अंक निर्धारण—Scoring
आयोग—Commission
आशु लिपि—Stenography
उद्बोधन—Eliciting
उदात्त—High pitch
उपसर्ग—Brefix
उपकरण—Equipment
एकाधिकरण —Monopoly
एक-मुद्र —Mono-type
कथा-वस्तु —Plot
कवि समय—Poetic Convention
कृत्रिम-संसद्—Mock Parliament
केन्द्रीकरण—Concentration
क्रियाशीलन—Activity
कौशल—Skill
क्षैतिज सहसंबंध—Horizontal Correlation
गठन—Structure
गवेषणा—Investigation Research
गुण—Quality
गुर—Formula
ग्रहण—Reception
चरित्र चित्रण—Characterisation
चित्र लिपि Pictogram

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चित्र—Chart
चित्र-विस्तारक यन्त्र—Epidiascope
चेष्टा शक्ति—Motor power
छन्द—Metre
झुकाव—Slant
टकसाली भाषा—Standard Language
तर्क-पूर्ण—Logical
द्रुत पाठ—Rapid Reading
दृष्टि विराम—Eye span
दृष्टि-केन्द्र—Fixation point
दृश्य-श्रव्य साधन—Audio-visual Aids
द्विभाषी—Bilingual
ध्वनि—Sound
ध्वनि इकाई Language units
ध्वनि तत्त्व Phoneme
ध्वनि यन्त्र—Mechanism of Speech
ध्वनि प्रकाशन—Voice Production
ध्वनि-विधि—Phonetic
ध्वनि-विचार—Phonology
नाड़ी-कोष—Nerve cells
निगमन-विधि—Deductive Method
नियमीकरण—Generalisation
निरीक्षण—Observation
निर्बाण-विधि—Direct Method
निदान—Diagnosis
पदार्थ—Object
पदार्थ-विषयक—Ostentive
पर्याय—Synonym
परिचर्चा—Seminar
परिशिष्ठ—Appendix
पंक्ति-मुद्र—Lino-type
परिणाम Quantity
पाठ—Lesson
पाठ योजना—Lesson Planning
पाठ्य-क्रम—Syllabus
अनुभावात्मक—Experince Curriculum
क्रियात्मक—Activity Curriculum
पाठांतर क्रियाएं—Co-curricular Activities.
पुनरुत्थान काल—Renaissance
पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण—Refresher Course
पुनर्रचना—Reproduction
पात्र—Character
परिभाषिक शब्द—Technical term
पूरक—Complementary
प्रक्षेप—Project
प्रत्यय Suffix
प्रभुत्व कामना—Self-assertion
प्रयोगात्मक व्याकरण—Applied Grammar
प्रतिलिपि—Copying
प्रस्तावना—Introduction
प्रशासन—Administration
प्रशिक्षण—Training
प्रवचन - Telling, conversation
प्रतियोगिता—Competition
प्रादेशिक भाषा—Regional Language
प्रासंगिक—Incidental
प्रयत्न लाघव—Economy of effort

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बल—Emphasis
बुद्धि— Intelligence
बुद्धि उपलब्धि—Intelligence Quotient
बालोद्यान—Kindergarton
बौद्धिक क्षितिज—Intellecual horizon
भाषा परिवार—Family of Language
भाव लिपि—Ideogram
भावात्मक एकता - Emotional Integration
भित्ती पत्रिका— Wall Magazine
भौतिक वातावरण— Physical Environment
मंत्रणा—Guidance
मानसिक विकास—Mental Development
माणक—Standard
मूक नाटक— Pantomime
माध्यम—Medium
युगलीकरण—Matching
राष्ट्र-भाषा—National Language
रूप-रेखा—Outline
रेचन—Purging
रंगमंच— Stage
लिपि—Script
लम्बीय सहसम्बन्ध — Vertical Correlation
वर्णन—Description
वर्ग क्रमांक - Rating Scale
वस्तुगव - Objective
वाक्य विचार—Syntax
विराम— Pause, punctuation
विकास लेखा—Cummulative Record
विवरण—Narration
विचार प्रतिमा— Image of Ideas
विषयगत—Subjective
विषय प्रवेश—Presentation
विश्लेषण—Analysis
वाचन—Reading
वाचन मुद्रा—Posture of Reading
वातावरण— Environment
वैयक्तिक विभिन्नता—Individual Difference
व्यापार—Action, Behaviour
व्याख्या — Explanation
व्यतिक्रम—Interfrence
व्यक्तिगत—Individual
विस्तार—Range
शब्द विचार – Morphology
श्वास नलिका— Wind Pipe
शोध Research
श्रुत लिपि—Dictation
शिक्षा शास्त्र—pedagogy
शिक्षा अनुभव—Learning Experiences
समवाय— Correlation
स्वरतन्त्री—Vocal chorde
स्वराघात—Accent
सक्रिय शब्दावली—Working vocabulary
समय पंत्रक—Time table
समय सारणी—Time table.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहायक पुस्तक — Supplementary Reader

संयोजन – Coordination

संप्रत्यक्ष — Apperception

समाजस्यीकरण—Integration

साहचर्य्य —Association

सामान्य सिद्धान्त – General Principles

सांख्यकी — Statistics

सामूहिक पाठ—Chorus Reading

सादृश्य —Analogy

सार्थक ध्वनियां · Phonemes

सीधापन—Alignment

स्थानांतरण – Transfer

साक्षात्मक — Interview

स्पष्टीकरण—Elucidating

सिद्धान्त सूत्र—Maxims of Teaching

सुलेख—Hand writing

सुलेख विकास मास—Handwriting Scale

सुव्यवस्थित — Organised

सैद्धान्तिक व्याकरण — Formal Grammar, Theoretical Grammar

सौन्दर्यानुभूति Aesthetic Experience

———

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

परिशष्ठ 3.

पुस्तक सूची

Bibliography

अंग्रेज़ी पुस्तकें

1. Agrad and Dankel — An Investigation of Sound Language Teaching.
2. Anand Balwant Singh — Aims and Methods of Teaching English in India.
3. Anna, Cochran — Modern Methods of Teaching as a Foreign Language.
4. Atlenis — Teaching of Modern Foreign Language in School and University.
5. Ballard — 1. Language and thought. 2. The Teaching of Mother Tongue.
6. Block, Benard. and others — Outline of Linguistic Analysis Linguistic Society of Amelyca Baltimore.
7. Blook, Benjamin S. — Taxonomy of Educational Objectives Longmans Green Co. N.Y. 1956.
8. Blair, G. M. — Diagnostic and Remedial Teaching in Secondary Schools.
9. Bloom field, Leonard — 1. Language (New York, Henry Holt and Co) 2. Outline Guide for the practical (Linguistic society of America)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

10. Breirel karl — The Teaching of Modern Foreign Language and the Teaching of Teachers, (Cambridge, England)
11. Brooks, F. D. — The Applied Psychology of Reading.
12. Bodmer, Fredrichk — The Loom of the Language (N. W. Norton and Co. New York)
13. Bongers H. — History and Principles of Vocabulay Control.
14. Broom, Duncan, Smig and Stueber — Effective Reading Instructions in tne Elementary Schools.
15. Brown T. A. O. — Silent Reading.
16. Brown. T. I. — Effcient Reading (D. C. Heath and Co. Bosgton)
17. Carrel, J. B. — The Study of Language. A Survey of Linguistics and Related Disciplines in America. Harvard University Press. 1953.
18. Carter and Megines. — Learning to Read (Mc. Craw Hill Series)
19. Catford J. C. — A Linguistic Theory of Translation.
20. Cole, Robert D. — Modern Foreign Language and their Teaching.
21. Cornclius, E. T. — Language Teaching (New York)
22. Coleman — Teaching of Modern Foreign Language.
23. Caldwel Cook — Play-way.
24. Cross. E. A. and Elizabeth Carney. — Teaching ofEngli·h inHigh School (Macmillan)
25. Daniel Jones — An Outline of English Phonetics.
26. De Boer, Kaulfers and Miller. — Teaching of Secondary English.
27. Dolth. E.W. — The Teaching of Primary Reading
28. Duff — How to Teach a Foreign Language?
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

29. Edgar Dale — Audio Visual Aids in the Teaching.

30. Edward Sapir. — Language.

31. Eisonson J. — Speech Correction the School.

32. Faucet — Teaching of English in Far East.

33. Findlay, J.J. — Modern Language Teaching.

34. Flower R. D. — " " "

35. French F. G. — The Teaching of English Abroad (Part I and II and III)

36. Faye L. Bumpass — Teaching English as a Foreign Language.

37. Fleming — Reserch and Basic Curriculum.

38. Fries, Charlse C — 1. Teaching and Learning English as a Foreign Language.
2. The Structure of English (University of Michigan)

39. Gagg and Gagg — Teaching Children to Read.

40. Gelb, I- G. — History of Writing.

41. Gardner — Theory of Speech and Language

42. Gates, I. A. — The improvement of Reading.

43. Gatenby, E. V. — English as Foreign Language.

44. Gilbert, Highett. — Art of Teaching.

45. Gouin, F. — The Art of Teaching and Language (Longman)

46. Gray, William S. — 1. On their Own in Reading.
2. Development of Meaning.
3. The Teaching of Reading and Writing.
4. Vocabularies in Reading.

47. Gray, Louis Herbert — Foundation of Language (Macmillan New York)

48. Gordon — Teaching of English of Indians.

49. Gurry — 1. Teaching of Poetry.
2. Teaching English as a Foreign Language.
3. Teaching of Written English.

50. Hadow A. — On the Teaching of Poetry.

51. Hagbolt — Language Learning (University Chicago)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

52. Harly, A. H. — Colloqual Hindustani (Kegan), Paul·

53. Harris, A J. — How to Increase Reading Ability

54. Harris, Z. S. — Methods in Structural Linguistics.

55. Haffner, R. M. S. — General Phonetics.

56. Henry Cecil Wyld — Place of Mother-tongue in National Education.

57. Henry Sweet — A Handbook of Phonetics.

58. Herrick and Jaccobs — Language Arts.

59. Hulbert — Voice Training.

60. Henings wald, Henry M. — Spoken Hindustani (Henry Hoet and Co.

61. Hudson — Introduction to the study of Literature.

62. Hufe H. R. — The Psychology of Foreign Language Study Uuiversity of Caroline Press Chapter Hill No.

63. I. A.A.M. — The teaching of Mod rn Languages.

64. Jagger, J. H. —
1. The Teaching of Modern Languages.
2. Poetry in School,

65. Jesperson, Otto —
1. Language (Macmillan and Co, New York)
2. How to teach a Foreign Language.
3. Mankind, National and Individual from a Linguistic Point of View (London, Alien and Unwin)

66. John Duncan — Backwardness in Reading.

67. Joshua Whatmough — Language and Modern Synthesis. (The New American Library)

68. Karl Vossler — The Spirit of Language and Civilization.

69. Kaulfers, Waller V. — Modern Language for Modern Schools.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

70. Kelcham. Roland and Greece Jay — Improving your Vocabulary and Spellings. (Noble and Noble, New York)

71. Kellogg. S. H. — A Grammar of the Hindi Language.

72. Kitson, E. C. — Theory and Practice of Learning Teaching.

73. Lamborn — Expression in speech and Writing.

74. Lee W. R. — English Intonation, A New Approach Austerdom : North Holand, 1958.

75. Lee W. R. — Simple Audio Visual Aids & Foreign Language Teaching.

76. Lee W. R. — Language Teaching Games and Contents Oxford University Press.

77. Lado, Ropert — Linguistics Accross Cultures. The University Michigan Press. 1957.

78. Lado, Robert — Language Teaching – A scientific Approach New York. Mc. Graw Hill

79. Lado, Robert — Language—Teaching, The Construction & Use of Foreign Lauguage Tests, Mc. Graw Hill New York.

80. Lewis, M. M. — Language in School.

81. Mathur, V. S. — Studies in the Teaching of English in India.

82. Maria A, Pei — 1. The Story of Language. 2. World's Chief Language.

83. Mays, Kuth — A Guide for Teachers of Modern Foreign Language. (South West Gress, Dallas. Texas)

84. Morris, I. — Teaching of English as a Second Language (Macmillan and Co.).

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

85.	Menzel. Emil W	1. The Teaching of Reading. 2. How to Study. 3. The Use of New Type Tests in India.
86	Mackenzine, A.F.	Learning to Read,
87.	Margaret, G.Mekim	Guiding Growth in Reading.
88.	Menon, T. K.N.	Recent Trends in Education (Orient Langmans)
89.	New mark. Maxim	20th Century Modern Learning Teaching. (Philosophical Library, New York)
90.	Nida, Eugene A	Learning a Foreign Language (N. Y.)
91.	Ogden Charles.	1. The Basic Vocabulary. 2. Learning the English Language 3. The System of Basic English.
92	Ogden and Richards.	The Meaning of Meaning.
93.	Ogilvie	Speech in Elementary School (Mc. Graw Hill series)
94.	Oliver, Z. E.	Modern Language Teachers Handbook. (D. C. Heath Company)
95.	Palmer, Harold E.	1. Oral Method of Teaching Language. 2. Principle of Language Study. 3. Scientific study of Teaching of Language (Harrap and Co.)
96.	Piaget	Language and Thought of the Children.
97.	Richards, I. A.	1. Basic English and its uses. 2. Practical Criticism.
98.	Ryburn, W. M.	1. The Teaching of Mother Tongue.
99.	Safaya, Raghunath	1. The Teaching of Sanskrit (Punjab Kitab Ghar, Jalandhar.) 2. Innovations and Recent Trends in Education [Associated Publishers, Ambala]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

		3. Some Thoughts on Education (Associated Publishers Ambala)
		4. School Organisation and Administration
100.	Schonell, J. J.	The Psychology and Teaching of Reading.
101.	Simeon Potter	Our Languag English.
102.	Smith, H. L.	Linguistic Science and the Teachinge.
103.	Smith A.	I. Aims and Methods in the Teaching English.
104.	Smith, Stephenson	I. How to Double your Vocabulary.
		2. The Common of words. (Jaico Publishing Co, Newyork)
105.	Stome, C. R.	Silent and Oral Reading.
106.	Strang and Traxler	Problems in the Improvement of Reading.
107.	Tarapore wala	Element of the Science of Language.
108.	Thimann, I. C.	Teaching Language. (George G. Harrap and Co.)
109.	Thompson and Wyatt	Teaching of English in India.
110.	Tidyman and Butter-field	Teaching the Language Arts. (Mc. Graw Hill Series)
111.	Throndike and Hagen	Measurement and Evaluation.
112.	Tomkins on	Teaching of Appreciation.
113.	Tarr John E	Good Hand-writing.
114.	Valentine	Psychology of Early Childhood
115.	Vernon, Maliuson	Teaching a Modren Language.
116.	Vivan De Sola Pinto	Teaching of English in Schools.
117.	Wadia A. R.	Future of English in India.
118.	Wards, Ida C.	Defects of speech, the Nature and Cure (Dent, London).
119.	Watts. A. F.	Language and Mental Development.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

120. Weighman, J. C. — On Language and Writing (London, Solvan Press)

121. West, Michael —
1. Bilingulism.
2. Learning in Education.
3. Learning to Speak a Foreign Language.
4. Learning to read a Foreign Language.

122. Whipple Carolyn — English as a Foreign Language.

123. Whorf, B. L. — Language, Thought and Reality.

124. Wilder Penfield — Learni g to Read a Second Language.

125. Woolf and Woolf — Remedial Reading.

126. Yoaken — Basal Reading Instuctions. (Mc. Graw Hill, Series)

(ख) हिन्दी पुस्तकें

127. अब्दुल ग़फार मुदहौली — पहली श्रेणी को हिन्दी पढ़ाने की जामिया विधि।

128. आत्मानन्द मिश्र — शिक्षण कला।

129. ओड, लक्ष्मी के० — भाषा शिक्षा की नवीन प्रणालियां।

130. उमाशंकर श्रीवास्तव — भाषा-शिक्षण विधि।

131. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा — भाषा शिक्षण तथा भाषा विज्ञान।

132. वरुणपति त्रिपाठी — भाषा शिक्षण।

133. कामता प्रसाद गुरु — हिन्दी व्याकरण।

134. गुलाबराय —
1. काव्य के रूप।
2. सिद्धान्त और अध्ययन

135. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा — भारतीय प्राचीन लिपिमाला

136. देवनाथ उपाध्याय — भाषण-सम्भाषण
किताब महल, इलाहाबाद

137. द्वारिका सिंह — बुनियादी शिक्षा में समवाय

138. धीरेन्द्र वर्मा — हिन्दी भाषा का इतिहास

139. भोलानाथ तिवारी —
1. भाषा विज्ञान
2. पर्यायवाची शब्द कोष
3. शब्दों का जीवन
4. हिन्दी साहित्य की अन्तंकथाएं
5. मुहावरा कोष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

140. मिलाप चन्द दुब्बे — समवायी शिक्षण

141. मंगल देव शास्त्री — भाषा-विज्ञान

142. योगेन्द्र नाथ वर्मा — भाषा कैसे पढ़ाएं

143. रघुनाथ सफाया — 1. हिन्दी अक्षर विन्यास (पंजाब किताब घर, जालन्धर)
2. भाषा और साहित्य का विवेचन (एस० चन्द एण्ड को, दिल्ली)
3. हिन्दी व्याकरण (पंजाब किताब घर
4. इतर भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की समस्याएं (रेखा, जालन्धर, जुलाई 1958)

144. राम चन्द्र शुक्ल — चिन्तामणि (भाग 1, 2)

145. रामचन्द वर्मा — 1. शब्द साधन, 2. अच्छी हिन्दी

146. रमणी कांत शूर एवं ब्रज भूषण शर्मा — हिन्दी कविता पाठन

147. लज्जाशंकर ओझा — भाषा शिक्षण पद्धति

148. शिवनारायण श्रीवास्तव — कविता की शिक्षा

149. श्याम सुन्दर दास — भाषा-विज्ञान

150. श्रीधर नाथ मुकर्जी — राष्ट्र-भाषा की शिक्षा

151. सुनीति कुमार चैटर्जी — आर्य भाषा हिन्दी

(ग) प्रतिवेदन (Reports)

152. Govt. of India — 1. Report of the Secondary Education Commission.
2. Report ot official Language Commission.
3. Report of the Sanskrit Commission.
4. Hand book of Teachers for Basic Schools.

153. Deptt. of Extension — Report of All India Seminar on Teaching of IndianLanguage.

154. Govt. of Central Pedagogical Institute, Allahabad. — 1. हिन्दी वर्तनी
2. हिन्दी शिक्षक परिषद्
3. हिन्दी प्रशिक्षण सेमीनार
4. कतिपय शिक्षणोपयोगी सामग्री

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

155. South Pacific Commission — Survey of Linguistic Research.

156. Unesco

1. The Use of Vernecular Languages in Education.
2. The Teaching of Modern Languages.
3. The Teaching of Hand Writing.
4. The Teaching of Reading and Writing.

(घ) पत्रिकाएं (Journals)

157. **Language, Quarterly-** — Baltimore, Linguistic Society of America.

158. **Modern Language** — (Mt. Royal and Guilford Awes) Monthly, Modern Language Teachers Association, Washington.

159. **Modern Language** — 3 times a year, London.

160. **Review of Educational Research** — Quarterly, American Educational Research Association Washington.

161. **गवेषणा** — त्रैमासिक केन्द्रीय हिन्दी शिक्षण मण्डल, आगरा।

162. **समन्वय** — ,, ,, ,,

163. **जन शिक्षण** — मासिक, उदयपुर।

164. **साहित्य सन्देश** — मासिक, आगरा।

165. **हिन्दी शिक्षण पत्र** — मासिक केन्द्रीय विद्यालय संगठन, दिल्ली।

166. **हिन्दी अनुशीलन** — (त्रैमासिक), भारतीय, हिन्दी परिषद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 3478
Date 2002

G.M.C.E.J
3478

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant